

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

[अभिनवखिलन, सन्धि, शुक्ल, धोत्रमय, वारन, ममन,
सदित, तित्तव वृत्त, नाममातु सम्बन्धो अनुशासनों के माप
मातु कोर; शीलेनो, अर्चनगतो, पारस्य प्रभुति विभिन्न प्राक्तों
के सिद्धिमातुशासनों एवं भाषावैज्ञानिक विद्वानों के समनं]

टा० नेमिचन्द्र शास्त्री

ज्योतिषचार्य, व्यापतीर्थ, एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी धीर-प्राक्त एवं
जैनोतोंजी), पी०एच०डी०, मोल्डमेन्सिट

संस्कृत एवं प्राकृत विभाग, एच०डी० जैन रालेज, आरा
(मगध विश्वविद्यालय)

५

तारा पब्लिकेशन्स

कमञ्जा, वाराणसी

१९६३

प्रथम संस्करण १९६३

मूल्य पन्द्रह रुपये

शारदा प्रिण्टिंग यन्त्र, धाराणखो

प्राच्य भारतीय भाषाओं एवं उनके वाङ्मय

के

पारङ्गत विद्वान्

समादरणीय

डा० हिरालालजी जैन

एम०ए०, एल०एल०बी०, डी०लिट०

की

सादर

—श्रद्धावन्त

नेमिचन्द्र शान्नी

विषय-सूची

प्रस्तावना

अध्याय १

वर्ण विचार और संज्ञाएँ

स्वर	१-५
व्यञ्जन	१
वर्णों के उच्चारण स्थान	१
प्रत्यक्ष विचार	२
घोष	२
अघोष	३
अल्पप्राण	३
महाप्राण	३
स्पर्श	३
अयोपवाह	३
ऊष्म	३
शान्तःस्थ	३
स्व-विभक्ति-दादि स-शु-सु-रु-ग-कु-तु संज्ञाएँ	४
घट्ट-रित-लुक्-उद्भूतस्वर संज्ञाएँ	५

अध्याय २

सन्धि-विचार

सन्धि परिभाषा	६-२०
सन्धि के भेद और उनके विश्लेषण	६
स्वर सन्धि के भेद	७
दीर्घ सन्धि : नियम और उदाहरण	७
दीर्घसन्धि : निषेध और विशेष उदाहरण	८
गुणसन्धि : नियम और उदाहरण	९
विशिष्ट उदाहरण	९
गुणसन्धि : अपवाद् और सन्धि वामाद्य	१०
ह्रस्व-दीर्घ विधान सन्धि : नियम और उदाहरण	११
प्रकृतिभावसन्धि : नियम और उदाहरण	११-१२

प्रवृत्ति-भाव सन्धि : अपवाद	१३
नित्यसन्धि : नियम और उदाहरण	१३
व्यञ्जन सन्धि : नियम और उदाहरण	१४
पदान्त के सकार की व्यवस्था : नियम और उदाहरण	१५
अनुस्वार की व्यवस्था	१६
अनुस्वारागम : नियम और उदाहरण	१८
अनुस्वार लुक् : नियम और उदाहरण	१९
अव्यय सन्धि : स्वरूप, व्यवस्था और उदाहरण	१९
अव्यय सन्धि के अपवाद	२०

अध्याय ३

वर्ण विकृति

२१-८२

वर्ण विकृति के सामान्य नियम और उदाहरण	२१
अन्त्य हल् व्यञ्जन की व्यवस्था	२३
सप्तद्विगण के शब्दों में ह्रस्व-दीर्घ स्वर व्यवस्था	२७
जाकृति गण और स्वप्नादि गण : स्वर विकृति	२८
प्रथम प्रवृत्ति शब्द : स्वाविकृति	३०
पानीयगण : स्वर विकृति	३८
मुकुलादि गण : स्वर विकृति	३९
कृपादिगण : स्वर विकृति	४२
अतु प्रवृत्ति शब्दों में ककार विकृति	४४
दैत्यादि और धीरादिगण : स्वर विकृति	४८
सौम्यादि गण : स्वर विकृति	५९
कौशेय और पौरादि गण : स्वर विकृति	५०
व्यञ्जन विकृति : नियम और उदाहरण	५१
मध्यवर्ती क-ग-च ज-त लोप : उदाहरण	५१
मध्यवर्ती द-प-य व लोप : उदाहरण	५२
लोप के अपवाद	५३
ख-घ-थ-ध-भ के स्थान पर ह्र : उदाहरण	५४
ट-ठ-ड के स्थान पर ढ-ड-ळ उदाहरण	५६
त के स्थान पर द : उदाहरण	५८
श्रुत्यादि गण में तकार के स्थान पर द : उदाहरण	५९
न के स्थान पर ण : नियम और उदाहरण	६१

ट = ड, ढ, ल :	नियम और उदाहरण	१११
ठ = छ, ह, ढ :	" "	११२
ड = ल :	" "	११२
ण = ल :	" "	११२
त = च, छ, ट, ड, ण, र, ल, व, ह :	" "	११२
थ = ड, ध, ह :	" "	११४
द = ड, ध, र, ल, व, ह :	" "	११५
ध = ड, ह : नियम और उदाहरण		११६
न = ण, ण्ह, ल :	" "	११७
प = फ, म, व, र :	" "	११७
ब = भ, म, य :	" "	११८
भ = व, ह	" "	११८
म = ड, व, स :	" "	११८
य = झ, ज, त, ल, व, ह :	" "	११९
र = ड, ण, ल :	" "	१२०
ल = र, ण :	" "	१२१
व = म, स :	" "	१२१
श = छ, स, ह :	" "	१२१
ष = छ, ण्ह, स, ह :	" "	१२२
स = छ, ह :	" "	१२२
ध्वनि लोप : उदाहरण		१२३
क्ष = ख, छ, झ :	नियम और उदाहरण	१२४
क्क, क्क = ख, कख :	" "	१२५
त्थ = च, छ :	" "	१२६
त्थ = च, त्थ = छ, द्द = ज, ध्व = झ :	नियम और उदाहरण	१२६
त्थ, ध, त्थ, प्त = च्छ :	" "	१२७
ध, त्थ, र्य = ज :	" "	१२७
ध्य, द्ध = झ :	" "	१२८
र्त्त = ट :	" "	१२९
म्भ, श = ण :	" "	१२९
स्त = थ, त्थ :	" "	१२९
ष्ट = ण्ह, ह :	" "	१३०

इकारान्त-उकारान्त विभक्ति चिह्न	१५१
हरि : रूपावली	१५५
गिरि, णरवद्, इसी : रूपावली	१५६
अरिग, भाणु : रूपावली	१५७
वाड : रूपावली	१५८
पद्मी, गामणी, खलपू : रूपावली	१५९
सर्वभू : रूपावली	१६०
ऋकारान्त शब्दों में विभक्ति चिह्न जोड़ने के नियम	१६०
कत्तार, रूपावली	१६१
भत्तार, भायर, : रूपावली	१६२
पिड, दाड : रूपावली	१६३
सुरेअ : रूपावली	१६४
गिलोअ : रूपावली	१६५
स्वरान्त खीलिङ्ग शब्दों की व्यवस्था	१६५
आकारान्त खीलिङ्ग शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति चिह्न	१६६
रुदा, माला : रूपावली	१६६
डिदा, हलिदा, मटिआ : रूपावली	१६७
इकारान्त खीलिङ्ग शब्दों के विभक्ति चिह्न	१६८
मई : रूपावली	१६८
मुत्ति, राह : रूपावली	१६९
ईकारान्त खीलिङ्ग शब्दों के विभक्ति चिह्न	१६९
लच्छी, रपिरगी : रूपावली	१७०
यहिणी, धेणु : रूपावली	१७१
तणु, रज्जू, पट्ट : रूपावली	१७२
सामू, चमू : रूपावली	१७३
माआ, ससा, नणन्दा : रूपावली	१७४
माउसिआ, धूआ : ,,	१७५
गादी, नावा ,,	१७६
नपुंसकलिङ्ग के विभक्ति चिह्न	१७७
घण, धण : रूपावली	१७७
वदि, वारि, मुरदि, मट्टु : रूपावली	१७८
जाणु, अंसु : रूपावली	१७९

अप्याण, अप्प, अच : रूपावली	१७९
राग, मह्य, सुद्ध : रूपावली	१८१
जग्गो, चन्दमो : रूपावली	१८२
जसो, उसणो : रूपावली	१८३
हसन्त, हसमाण : रूपावली	१८३
भगवन्तो, सोहिल्लो : रूपावली	१८४
मेहाल्लु, तिरिच्छ, मिसअ, सरअ, कम्मा : रूपावली	१८५
महिमा, गरिमा, अच्चि : रूपावली	१८६
हसई : रूपावली	१८७
भगवदे, सरिआ : रूपावली	१८८
तडि, पडिआ, संपया, धुहा : रूपावली	१८९
फडहा, तिरा, दिसा, अऊआ, तिरिच्छी . रूपावली	१९०
विञ्जु, शम : रूपावली	१९१
नाम, पेम्म, अइ, सेय्य, वय्य : रूपावली	१९२
हसन्त, भगवन्त, आउसो, आउ : रूपावली	१९३
सअ, सुव : रूपावली	१९४
अन्न, पु-व, पुमि : "	१९५
ण, त (तद्), ज (यद्) : रूपावली	१९६
ळ (फिम्), पृत्त, एअ (एतद्) : रूपावली	१९७
अमु, इम (इदम्) : रूपावली	१९८
सअ : "	१९८
गुआ, अण्णा, दाहिणा : "	१९९
सा (तद्), जा (यद्) : "	२००
का (किम्), पृई, एआ (एतद्) : रूपावली	२०१
अमु (अदम्) इमो, इमा (इदम्) : "	२०२
नपुंसक सअ, सुअ, पुअ : "	२०३
त (तद्), ज (यद्), कि (रिम्), एअ, अमु, इम : रूपावली	२०४
पु-मद् : रूपावली	२०५
अस्मद् : "	२०६
संज्ञाभावक शब्द : रूपावली	२०७

अध्याय ७

अव्यय और निपात

अव्यय परिभाषा और भेद

२१३-२३३

२१३

उपसर्ग : विश्लेषण	२१३
प्राकृत के बीस उपसर्ग सोदाहरण	२१४
क्रियाविशेषण	२१५
समुच्चय बोधक अव्यय	२१९
मनोविकार सूचक अव्यय	२१९
निपातों की अनुक्रणिका	२२१

अध्याय ८

<u>कारक, समास और तद्धित</u>	२३४-२६२
कारक परिभाषा और व्यवस्था	२३४
प्रथमा विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३५
कर्मकारक की परिभाषा और द्वितीया विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३६
करण कारक की परिभाषा और तृतीया विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३७
सम्प्रदान कारक की परिभाषा और चतुर्थी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३९
अपादान कारक की परिभाषा और पञ्चमी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२४०
षष्ठी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२४१
अधिकरण कारक का स्वरूप और सप्तमी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२४२
समास : परिभाषा और भेद	२४४
वाच्ययीभाव : नियम और उदाहरण	२४४
तत्पुरुष : नियम और उदाहरण	२४५
प्रादितत्पुरुष, उपपद और कर्मधारय : नियम और उदाहरण	२४८
शिष्ट : परिभाषा, भेद और अनुशासन	२४९
षड्विंशति : अनुशासन	२५०
द्वन्द्व : अनुशासन	२५३
तद्धित : परिभाषा और भेद	२५५
इदमर्थक प्रत्यय, उदाहरण	२५५
व्य, इमा, तण, हुत्तं, ळाल, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, मन्त : प्रत्यय और उदाहरण	२५६
चो, दो : प्रत्यय और उदाहरण	२५७
हि, स्वार्थिक इल्ल, ल, उल्ल; इत्तिअ : प्रत्यय और उदाहरण	२५८
पत्तिअ, पत्तिळ, पद्द, सि, सिअं, इमा : प्रत्यय और उदाहरण	२५९
अय, इय, आलिअ, ल, ललो, इअ, गय : प्रत्यय और उदाहरण	२६०
तर, तम : प्रत्यय और उदाहरण	२६१

अध्याय ९

क्रिया विचार

२६३-३८२

क्रियारूपों की जानकारी के आवश्यक नियम

२६३

कर्त्तरि धातुओं के विकरण सम्बन्धी नियम

२६४

वर्तमान, भूत, भविष्यत्, विधि-आज्ञा पृथक् क्रियातिपत्ति ५ प्रत्यय

२६७

हस् धातु : सभी फाँलों की रूपावली

२६८

हो (भू) : रूपावली

२६९

ठा (स्था) : "

२७०

भा (ध्यै) : "

२७१

ने (नी) : "

२७२

उठ्ठे (उठ्ठी) : "

२७३

पा : रूपावली

२७४

पहा (स्था) : रूपावली

२७५

गा (गी) : रूपावली

२७६

विकरण भिन्नता से हो (भू) : रूपावली

२७७

रव (रु) : रूपावली

२७८

कर (कृ) रूपावली

२७९

अस् : रूपावली

२८०

एप् (एप्) : रूपावली

२८१

उग (उग) : "

२८२

हरिस् (हरि) : "

२८३

गठ्ठ (गम्) : "

२८४

घोल्ल, जंप, कह (कथ) : "

२८५

शुव (शु) : "

२८६

कर्मणि—

हस : रूपावली

२८७

हा (भू) : "

२८८

ने (नी) : "

२८९

म्हा (ध्यै) : "

२९०

चिञ्चि वि) : "

२९०

ठा (स्था) : "

२९२

पा : "

२९२

भाण : "

२९३

लिङ्ग :	रूपावली	२९६
<u>प्रेरणार्थक—</u>		
हस :	रूपावली	२९६
फर (फु) :	"	२९८
खक (खू) :	"	३००
हो (भू) :	"	३०१
कुछ क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूपों का संकेत		३०३
कर्मणि और भाज में प्रेरकरूप		३०३
प्रेरक भाज और कर्मणि—हास, ह्माप्ति : रूपावली		३०४
खाम, जमावि (क्षम्) :	"	३०६
पित्रास (पा) :	"	३०७
सन्नन्त—लिङ्ग (लम्) :	"	३०९
उगुङ्ग (गुप्) :	"	३०९
उहुङ्ग (भुज्) :	"	३१०
सुत्सुल (धु) :	"	३११
यङन्त : विश्लेषण और उदाहरण		३१२
यङ्लुगन्त : विश्लेषण और उदाहरण		३१२
नाम धातु बनाने के नियम और उदाहरण		३१३
कृत् प्रत्यय		३१६
वर्तमान कृदन्त , प्रत्यय और उदाहरण		३१६
भावि वर्तमान कृदन्त , , ,		३१७
कर्मणि वर्तमान कृदन्त , , ,		३१८
वर्त्तरि प्रेरक, प्रेरक भाजि और प्रेरक कर्मणि वर्तमान कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३१८
भूतकृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३२०
प्रेरणार्थक, अनियमित भूत कृदन्त		३२१
<u>भविष्यत्कृदन्त</u>		३२३
हेत्वर्थ कृत् : प्रत्यय और उदाहरण		३२३
प्रेरणार्थक हेतु कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३२३
अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त : " "		३२४
सम्यन्ध भूत कृदन्त : " "		३२६
प्रेरणार्थक सम्यन्ध सूचक कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३२६
अनियमित सम्यन्धक भूत कृदन्त : " "		३२७

त्रिधर्मेक कृत् प्रत्यय और उदाहरण	३२॥
प्रत्येक त्रिधर्म कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण	३३१
अनियमित त्रिधर्म कृदन्त	३३२
शीलधर्मवाचक :	३३२
अनियमित शीलधर्मवाचक कृदन्त	३३३
धातु षीप	३२४

अध्याय १०

अन्य प्राकृत भाषाएँ	३८३
शौरसेनी : प्रवृत्तिर्वा और अनुशासन	३८४
शौरसेनी : शब्दरूपावली	३८९
शौरसेनी : किर्यारूपावली	३९०
शौरसेनी : कृत् प्रत्यय	३९१
शौरसेनी की कुछ धातुएँ	३९२
जैन शौरसेनी : ध्वनि परिवर्तन, नियम और उदाहरण	३९४
मागधी : ध्वनिपरिवर्तनसम्बन्धी नियम और उदाहरण	४००
मागधी : शब्दरूपावली	४०५
मागधी : धातुरूपावली	४०७
मागधी के कतिपय विशेष शब्द	४०८
अर्धमागधी : परिभाषा और व्यवस्था	४०९
अर्धमागधी : ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियम और उदाहरण	४१०
अर्धमागधी : शब्दरूपावली	४१९
अर्धमागधी : तद्धित प्रत्यय और उदाहरण	४१३
विकारार्धक और सम्बन्धार्धक प्रत्यय और उदाहरण	४२९
अर्धमागधी धातुरूपावली	४३२
अर्धमागधी : कुछ धातु रूपों का संज्ञेय	४३९
अर्धमागधी : कृत् प्रत्यय और उदाहरण	४३९
जैन महाराष्ट्री : मूल प्रवृत्तिर्वा	४४१
जैन महाराष्ट्री : ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियम और उदाहरण	४४१
पैशाची : ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियम और उदाहरण	४४४
पैशाची : शब्दरूपावली	४४७
पैशाची : धातु रूपावली	४४९
पैशाची : कृदन्त	४५०

पैशाची के कुछ शब्द	४८०
चूलिका पैशाची . ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियम और उदाहरण	४९२

अध्याय ११

अपभ्रंश : इतिहास और व्यवस्था	४९४
अपभ्रंश : ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियम और उदाहरण	४९४
अपभ्रंश : वर्णोद्गम, वर्णविवर्तन और वर्णविकार	४९९
अपभ्रंश : शब्दरूपावली के नियम	४९९
अपभ्रंश : रूपावली [देव, वीर, इति, गिरि, माण्ड,]	५००
श्लोकि [माला, मई, पद्म, पेश, बह]	४९९
नपुंसकलिङ्ग—बहुल रूपावली	४७०
सर्वनाम—सत्त्व, तुम, हर्ष, पद, जु, सो, क, जाय, जा, सा,	
का, ज, त, कि, इमः रूपावली	४७१
सर्वनामशब्दों से निष्पन्न विशेषण [परिमाणवाचक, गुणवाचक,	
सम्बन्धवाचक, स्थानवाचक, समयवाचक]	४७१
अन्य अपभ्रंश—तालिका	४७१
तद्धित : प्रत्यय और उदाहरण	४७६
क्रियारूपों के नियम	४७७
धातुवादेश	४७९
क्रियाओं में जुड़नेवाले प्रत्यय	४७९
वरधातु की रूपावली	४८०
कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण	४८०
भूतकृदन्त	४८१
सम्बन्धक कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण	४८१
हेतुवर्ध कृदन्त : " "	४८१
निधिवर्ध कृदन्त . प्रत्यय और उदाहरण	४८२
शीलार्थक कृदन्त : " "	४८२
क्रियाविशेषण	४८२

प्रस्तावना

भाषा-परिज्ञान के लिए व्याकरण ज्ञान की नितान्त आवश्यकता है। जब किसी भी भाषा के वाङ्मय की विशाल राशि संचित हो जाती है, तो उसकी विधिवत् व्यवस्था के लिए व्याकरण ग्रन्थ लिखे जाते हैं। प्राकृत के जनभाषा होने से आरम्भ में इसका कोई व्याकरण नहीं लिखा गया। वर्तमान में प्राकृत भाषा के अनुशासन सम्बन्धी जितने व्याकरण ग्रन्थ उपलब्ध हैं, वे सभी संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। आश्चर्य यह है कि जब पालि भाषा का व्याकरण पालि में लिखा हुआ उपलब्ध है, तब प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में ही लिखा हुआ क्यों नहीं उपलब्ध है? अर्धमागधी के आगमिक ग्रन्थों में शब्दानुशासन सम्बन्धी जितनी सामग्री पायी जाती है, उससे यह अनुमान लगाना सहज है कि प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में लिखा हुआ अवश्य था, पर आज वह कालकवलित हो चुका है। यहाँ उपलब्ध कुटुकर सामग्री पर विचार करना आवश्यक है।

प्राकृत भाषा में प्राकृत व्याकरण के सिद्धान्त

आचार्यगं में (द्वि० ४, १ रु० ३३९) तीन वचन-लिङ्ग-काल-पुरुष का विवेचन किया गया है। शर्णांग (अष्टम) में आठ कारकों का निरूपण पाया जाता है। इन सारी बातों के अतिरिक्त अनेक नये तथ्य अनुयोगद्वारा सूत्र में विस्तारपूर्वक वर्णित हैं।

इस ग्रन्थ में समस्त शब्दराशि को निम्न पाँच भागों में विभक्त किया है।

१—नामिक—सुस्तों का ग्रहण नाम में किया है। जितने भी प्रकार के संज्ञा शब्द हैं वे नामिक के द्वारा अभिविष्ट किये गये हैं। यथा अस्सो, अस्से, अश्वः आदि।

२—नैपातिक—अव्ययों को निपातन से सिद्ध माना है। अतः अव्यय तथा अव्ययों के समान निपातन से सिद्ध अव्यय देशी शब्द नैपातिक कहे गये हैं। यथा—

सत्तु, अबंतो, जह, जहा आदि।

३—आख्यातिक—धातु से निष्पन्न क्रियारूपों की गणना आख्यातिक में की है। यथा—

धावह, गच्छह आदि।

४—औपसर्गिक—उपसर्गों के संयोग से निष्पन्न शब्दों को औपसर्गिक कहा गया है। यथा—परि, अणु, अव आदि उपसर्गों के संयोग से निष्पन्न अणुभवश्च प्रभृति पद।

१—वचनानामे पंचविधे परणत्ते, तं जहा—(१) नामिक, (२) नैपातिक,

(३) आख्यातिक, (४) औपसर्गिक, (५) मिश्रम् । —अणुयोगद्वार सुतं १२५ सूत्र

६—मिश्र—मिश्र शब्दावली के अन्तर्गत इस प्रकार के शब्दों की गणना की गयी है, जिन्हें हम समास, वृद्धन्त और तद्धित के पद कह सकते हैं। हम छोटी के शब्दों के उदाहरणों में 'संयत' पद प्रस्तुत किया है। वस्तुतः विशेषण शब्दों को मिश्र कहना अधिक तर्कसंगत है।

नाम शब्दों की निष्पत्तियाँ चार प्रकार से वर्णित हैं। आगम, छोर, प्रकृतिभाव और विकार ।^१

१. वर्णागम—वर्णागम कई प्रकार से होता है। वर्णागम भाषाविकास में सहायक होता है। इस वर्णागम का कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है। (दुर्गाचार्य ने निरुक्त का लक्षण बताते हुए वर्णागम, वर्णविपर्यय (Metathesis) वर्णविकार (Change of Syllable) वर्णनाश (Elision of Syllable) और अर्थ के अनुसार धातु के रूप की वृत्ति करना—इन छ' सिद्धान्तों को परिगणित किया है। अनुभवादा सुक्त में इसका उदाहरण कुण्डानि आया है।

२. छोप—भाषा के विकास को प्रस्तुत करनेवाला दूसरा सिद्धान्त छोप है। प्रत्यक्ष छाप्य की दृष्टि से इस सिद्धान्त का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्णछोप के भी कई भेद होते हैं—आदि वर्णछोप, मध्यछोप और अन्त्य वर्णछोप। यहाँ पर पटो + अय = पटोऽय, घटो + अय = घटोऽय उदाहरण उपस्थित किये गये हैं।

३. प्रकृति भाव में दोनों पद ज्यों के त्यों रह जाते हैं, उनमें संयोग होने पर भी विकार उत्पन्न नहीं होता। यथा—माफे + इमे = माले इमे, पटइमौ आदि।

४. वर्णविकार—दो पदों के संयोग होने पर उनमें विकृति होना अथवा ध्वनि-परिवर्तन के सिद्धान्तों के अनुसार वर्णों में विकार का उत्पन्न होना वर्णविकार है। यथा—

वधू > वहु, गृक्षा > गुहा, वधि + इदं = वधीद, नदी + इह = नदीह।

नाम—पदों के स्त्रीलिङ्ग, पुलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग की अपेक्षा से तीन भेद होते हैं। आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त और ओकारान्त शब्द पुलिङ्ग होते हैं। स्त्रीलिङ्ग शब्दों में ओकारान्त शब्द नहीं होते। नपुंसक लिङ्ग शब्दों में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त शब्द ही परिगणित हैं। प. ११—

त पुण नामं तिविहि इत्यी पुरिसं नपुंसग चेव ।

एणसि तिण्हं पि अंतग्मि अ परुवणं वोच्छ ॥१॥

तत्थ पुरिसरस अना आ इ-उ ओ हवति चत्तारि ।

ते चेव इतिआओ हवति ओमार परिहीणा ॥२॥

१. चउणामे पउण्हिहे एणत्ते । त जहा—(१) आगमेण (२) तावेण

(३) पयसे, (४) विगारेण । —अनुभवादा सुक्तं १२४ सू. २।

अंतिम-इतिअ-उंतिअ अंताउ णपुंसगस्स बोद्धव्या ।
एतेसि तिण्हं पि अ बोच्छामि निदंसणे एत्तो ॥३॥
आगारंतो 'राया' ईगारंतो गिरी अ सिहरी अ ।
उगारंतो विण्हू दुमो अ अंताउ पुरिसाणं ॥४॥
आगारंता माला ईगारंता 'सिरी' अ 'लच्छी' अ ।
ऊगारंता 'जवू' 'बहू' अ अंताउ इत्थीणं ॥५॥
अंकारंतं 'घन्नं' ईंकारंतं नपुंसगं 'अत्थि' ।
उंकारंतं धीलुं 'महुं' च अंता णपुंसगं ॥६॥

—अणुयोगदारमुत्तः व्यावर संस्करण स० २०१० सूत्र १२३ ।

इसी ग्रन्थ में भावनाम के चार भेद किये हैं—समास, तद्विष, धातु और निरुक्त ।
समास के सात भेद बतलाये हैं—द्वन्द्व, बहुमीहि, कर्मधारय, द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययीभाव
और एकशेष । यथा—

द्वंद्वे अ बहुव्यीहि, कर्मधारय द्विगु अ ।
तत्पुरिस अव्वईभावे, एकस्सेसे अ सत्तमे ॥१॥

बहुमीहि का उदाहरण देते हुए लिखा है—फुल्ला इमंमि गिरिम्मि कुड्डयकयंवा
सो इमो गिरीफुल्लिय कुड्डयकयंवा ।

कर्मधारय—घबलो बसहो = घबलबसहो, किण्हो मियो = रिण्हमियो ।

द्विगु—तिणिण कहुगाणि = तिरुडुगं, तिणिण महुराणि = तिमहुरं, तिणिण
गुणाणि = तिगुणं, सत्त गया = सत्तगयं, नवतुरंगा = नवतुरंगं ।

तत्पुरुष—तित्थे पागो = तित्थपागो, वणे हत्थी = वणहत्थी, वणे मयूरो =
वणमयूरो, वणे वराहो = वणवराहो, वणे महिसो = वणमहिसो ।

अव्ययीभाव—अमुगामं, अणुणइयं, अणुचरियं ।

एकशेष—जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा, जहा एगो करिसावणो
तहा बहवे करिसावणा जहा एगो साली तहा बहवे साली ।

तद्विष के आठ भेद बतलाये हैं—

१. कर्म नाम—तणहारण, कट्टहारण, पत्ताहारण, कोलात्थि ।

२. तिरुत्त नाम—तंतुत्ता, पट्टत्ता, मुंत्ता, रत्ता, दंतत्ता ।

३. सिलोक नाम—समणे, माहणे, सत्ताविही ।

४. संयोग नाम—रण्णो, समुरण्ण, रण्णो जामाउण, रण्णो साले ।

५. समीप नाम—गिरिसमीवे णयरं गिरिणयरं, वेत्तायडं ।

६. समूह नाम—सरंगवहकारे, मलयवहकारे ।

७. ईश्वरीय नाम—स्वाम्यर्थक—रारिसरे, तलवरे, इन्मे, सेट्टी ।

८. अपत्य नाम—अरिहंतमाया, चक्रवर्दिमाया, रायमाया ।

कम्मे सिप्पसिल्लाप संजोग समीभवो अ संनूहो ।

इत्सरिव अवचेण य तद्धितणामं ॥ अट्टविहं ॥

यद्यपि उपर्युक्त सन्दर्भ तद्धितान्त नामों के वर्णन के समय आया है, वो भी तद्धित प्रकरण पर इससे प्रकाश पड़ता है। इन्हें कर्माव्यय, शिल्पार्थक, संयोगार्थक, समूहार्थक, अपत्यार्थक आदि रूप में ग्रहण करना चाहिए ।

। इस ग्रन्थ में आठों विभक्तियों का उल्लेख है तथा ये विभक्तियाँ किम किस अर्थ में होती हैं, इसका भी निर्देश दिया गया है ।

निदेसे पढमा होइ, बित्तिया उवएसणे ।

तइया करणम्मि कया, चउत्थी संपयावणे ॥१॥

पंचमी अ अवायाणे, छट्ठी सस्सामिवायणे ।

सत्तमी सण्णिहाणत्ये, अट्टमाऽऽमंतणी भवे ॥२॥

—अणुप्रोगदार मुत्त, सू० १२८ ।

वर्थात्—निर्देश—क्रिया वा कर्ण कर्त्ता में रहने पर प्रथमा विभक्ति होती है । यथा—स, इमो, अहं आदि प्रथमान्त रूप हैं । उपदेश में—क्रिया के द्वारा कर्त्ता जिसको सिद्ध करना चाहता है, द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—भण कुणसु हमं व तं व आदि । कर्ण अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है । यथा तेण कर्णं, मप वा कर्णं आदि । सम्प्रदान में चतुर्थी और अवादान में पंचमी विभक्ति होती है । स्वामि-स्वामित्व भाव में षष्ठी, सन्निधानार्थ—अधिस्तरणार्थ में सप्तमी और वामन्ग्रण—सम्बोधन में अष्टमी विभक्ति होती है ।

इस प्रकार प्राकृत भाषा में लिखित शब्दानुशासन सम्बन्धी सिद्धान्त पाये जाते हैं । संस्कृत भाषा में लिखित प्राकृत व्याकरण

संस्कृत भाषा में लिखे गये प्राकृत भाषा के अनेक शब्दानुशासन उपलब्ध हैं । भारत मुनि का नाट्यशास्त्र ऐसा ग्रन्थ है, जिसके १७ वें अध्याय में विभिन्न भाषाओं का निरूपण करते हुए ६-२३ वें पद्य तक प्राकृत व्याकरण के सिद्धान्त बताये हैं और ३२वें अध्याय में उदाहरण प्रस्तुत किये हैं । पर भारत के ये अनुशासन सम्बन्धी सिद्धान्त इतने संक्षिप्त और अस्पष्ट हैं कि इनका उल्लेखमात्र इतिहास के लिए ही उपयोगी है ।

प्राकृतलक्षण

पुत्र सिद्धान्त पाणिनि का प्राकृतलक्षण नाम का प्राकृत व्याकरण बतलाते हैं । हा० विशाल ने भी अपने प्राकृत व्याकरण में इस ओर संकेत किया है, पर वह ग्रन्थ ग

तो भाजतक उपलब्ध हो हुआ है और न इसके होने का ही कोई सत्य प्रमाण मिला है। उपलब्ध शब्दानुशासनों में वररुचि के प्राकृतप्रकाश को कुछ विद्वान् प्राचीन मानते हैं और कुछ चण्डकृत प्राकृतलक्षण को। प्राकृतलक्षण संक्षिप्त रचना है। इसमें प्राकृत सामान्य का जो अनुशासन किया गया है, वह प्राकृत अशोक की धर्मलिपियों की भाषा और वररुचि द्वारा प्राकृतप्रकाश में अनुशासित प्राकृत के बीच की प्रतीत होती है। इस शब्दानुशासन के मत से मध्यवर्ती अल्पप्राण व्यञ्जनों का लोप नहीं होता है, वे वर्तमान रहते हैं। वर्ग के प्रथम वर्णों में केवल क और मृतीय वर्णों में ग के लोप का विधान मिलता है। मध्यवर्ती च, ट, स, और ष वर्ण ज्यों के स्थानों रह जाते हैं। भाषा की यह प्रवृत्ति महारवि अक्षघोष और भास के नाटकों में पायी जाती है। अतः प्राकृतलक्षण का रचनाकाल ईस्वी सन् द्वितीय-मृतीय शती मानने में कोई बाधा नहीं आती है।

इस ग्रन्थ में कुल सूत्र ९९ या १०३ हैं और चार पादों में विभक्त हैं। आरम्भ में प्राकृत शब्दों के तीन रूप—तज्जव, तस्सम और देशज बतलाये हैं। तीनों लिङ्ग और विभक्तियों का विधान संस्कृत के समान ही पाया जाता है। प्रथम पाद के ११वें सूत्र से अन्तिम ३५वें सूत्र तक संज्ञाओं और सर्वनामों के विभक्तिरूपों का निरूपण किया है। द्वितीयपाद के २९ सूत्रों में स्वर परिवर्तन, शब्दादेशों एवं अव्ययों का कथन किया गया है। पूर्वकालिक क्रिया के रूपों में तु, ता, च, ह, तु, तूण, ओ पुत्र पि प्रत्ययों को जोड़ने का नियमन किया है। तृतीय पाद के ३५ सूत्रों में व्यञ्जनपरिवर्तन के नियम दिये गये हैं। चतुर्थ पाद में केवल चार सूत्र ही हैं, इनमें अपभ्रंश का लक्षण, अथोरेफ का लोप न होना, ऐशाची की प्रवृत्तियाँ, मागधी की प्रवृत्ति र् और स् के स्थान पर ल् और श् का आदेश एवं शौरसेनी में ल् के स्थान पर बिकल्प से द् का आदेश किया गया है।

प्राकृतप्रकाश

चण्ड के उत्तरवर्ती समस्त प्राकृत धर्माचार्यों ने रचनाशैली और विषयानुक्रम की दृष्टि से प्राकृतलक्षण का अनुकरण किया है। चण्ड के परचात् प्राकृत शब्दानुशासकों में वररुचि का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। प्राकृतमंजरी की भूमिका में वररुचि का गोत्र नाम कात्यायन कहा गया है। डा० पिशाल ने अनुमान किया था कि प्रसिद्ध ब्राह्मणकार कात्यायन और वररुचि दोनों एक व्यक्ति हैं, किन्तु इस कथन की पुष्टि के लिए एक भी सत्य प्रमाण उपलब्ध नहीं है। एक वररुचि कालिदास के समकालीन भी माने जाते हैं, जो विक्रमादित्य के नरवरों में से एक थे। प्रस्तुत प्राकृतप्रकाश चण्ड के पीछे का है, इसमें कोई सन्देह नहीं। प्राकृत भाषा का शब्दार्थ काव्य के लिए प्रयोग ईस्वी सन् की प्रारम्भिक शतियों के पहले ही होने लगा था। हास कवि ने गाथासतशती

में .८४ प्राकृत कवियों की रचनाओं का संकलन किया है। शक्योबी का मत है कि महाराष्ट्री प्राकृत का व्यापक प्रयोग ईस्वी तीसरी शताब्दी के पहले ही होने लगा था। अतः प्राकृतप्रकाश में वर्णित अनुशासन पर्याप्त प्राचीन है अतएव वररुचि को कालिदास का समकालीन मानना अनुचित नहीं है।

प्राकृत प्रकाश में कुल ५०९ सूत्र हैं। भामहवृत्ति के अनुसार ४८७ और चन्द्रिका टीका के अनुसार ५०९ सूत्र उपलब्ध हैं। प्राकृतप्रकाश की चार प्राचीन टीकाएँ उपलब्ध हैं—

१. मनोरमा—इस टीका के रचयिता भामह हैं।
२. प्राकृतमञ्जरी—इस टीका के रचयिता कात्यायन नामक विद्वान् हैं।
३. प्राकृतसंजीवनी—यह टीका वसन्तराज द्वारा लिखित है।
४. सुबोधिनी—यह टीका सदानन्द द्वारा विरचित है और नवम परिच्छेद के नवम सूत्र की समाप्ति के साथ समाप्त हुई है।

इस ग्रन्थ में चारह परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में स्वर विकार एवं स्वरपरिवर्तन के नियमों का निरूपण किया गया है। विशिष्ट-विशिष्ट शब्दों में स्वरसम्यन्धी जा विकार उत्पन्न होते हैं, उनका ४४ सूत्रों में विवेचन किया गया है। दूसरे परिच्छेद का आरम्भ मध्यवर्ती व्यञ्जनों के लोप से होता है। मध्य में आनेवाले क, ग, च, ज, ञ, स, ष, प, य और व का लोप विधान किया है। तीसरे सूत्र से विशेष, विशेष शब्दों के असंयुक्त व्यञ्जनों के लोप एवं उनके स्थान पर विशेष व्यञ्जनों के आदेश का नियमन किया गया है। यह प्रकरण अन्तिम ४७वें सूत्र तक चला है। तीसरे परिच्छेद में संयुक्त व्यञ्जनों के लोप, विकार एवं परिवर्तनों का निरूपण है। इस परिच्छेद में ६६ सूत्र हैं और सभी सूत्र विशिष्ट-विशिष्ट शब्दों में संयुक्त व्यञ्जनों के परिवर्तन का निर्देश करते हैं। चौथे परिच्छेद में ३३ सूत्र हैं, इनमें संकीर्णविधि—निश्चित शब्दों के अनुशासन वर्णित हैं। इस परिच्छेद में अनुकारी, विकारी और देखी इन तीनों प्रकार के शब्दों का अनुशासन आया है। पाचवे परिच्छेद के ४७ सूत्रों में लिङ्ग और विभक्ति-आदेश वर्णित हैं। छठवें परिच्छेद में ६४ सूत्र हैं, इन सूत्रों में सर्वनामविधि का निरूपण है अर्थात् सर्वनाम शब्दों के रूप एवं उनके विभक्ति प्रत्यय निर्दिष्ट किये गये हैं। सप्तम परिच्छेद में तिष्ठन्त विधि है, धातुरूपों का अनुशासन संक्षेप में लिखा गया है। इसमें कुल ३४ सूत्र हैं। अष्टम परिच्छेद में धात्वादेश निरूपित है। इसमें कुल ७१ सूत्र हैं। संस्कृत की किस धातु के स्थान पर प्राकृत में कौन सी धातु का आदेश होता है, इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। प्राकृत आपा का यह धात्वादेश सम्यन्धी प्रकरण बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। नौवाँ परिच्छेद निपाच का है। इसमें अव्ययों के शार्थ और प्रयोग दिये गये हैं। इस परिच्छेद में १८ सूत्र हैं। दसवें परिच्छेद में पेशाची भाषा का अनुशासन है। इसमें १४ सूत्र हैं। ग्यारहवें परिच्छेद में मागधी

प्राकृत का अनुशासन वर्णित है। इसमें कुल १७ सूत्र हैं। वारहवाँ परिच्छेद शौरसेनी प्राकृत के नियमन का है। इसमें ३२ सूत्र हैं और इनमें शौरसेनी प्राकृत को विशेषताएँ वर्णित हैं। तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर अवगत होता है कि वारचि ने चण्ड का अनुसरण किया है। चण्ड द्वारा निरूपित विषयों का विस्तार अत्रय इस ग्रन्थ में पाया जाता है। अतः दोषी और विषय विस्तार के लिये वारचि पर चण्ड का भ्रम मान लेना अनुचित नहीं कहा जायगा।

इस सत्य से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि वाग्य ज्ञान की दृष्टि से वारचि का प्राकृतप्रकाश बहुत ही महत्वपूर्ण है। संस्कृत भाषा की ध्वनियों में किस प्रकार के ध्वनि-परिवर्तन होने से प्राकृत भाषा के शब्दरूप गठित हैं, इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया गया है। उपर्यागिता की दृष्टि से यह ग्रन्थ प्राकृत व्यंजिताओं के लिये प्राज्ञ है।

सिद्धहेम शब्दानुशासन

इस व्याकरण में सात अध्याय संस्कृत शब्दानुशासन पर हैं और आठवें अध्याय में प्राकृत भाषा का अनुशासन लिया गया है। यह प्राकृत व्याकरण उपलब्ध समस्त प्राकृत व्याकरणों में सबसे अधिक पूर्ण और व्यवस्थित है। इसके ४ पाद हैं। प्रथम पाद में २०१ सूत्र हैं। इनमें सन्धि, व्यञ्जनान्त शब्द, अनुस्वार, लिङ्ग, विभक्ति, स्वर व्यत्यय और व्यञ्जन-व्यत्यय का विवेचन किया गया है। द्वितीय पाद के ११८ सूत्रों में सयुक्त व्यञ्जनो के परिवर्तन, समीकरण, स्वरभक्ति, वर्णविपर्यय, शब्दादेश, लक्षित, निपात और लक्ष्यों का निरूपण है। तृतीय पाद में १८२ सूत्र हैं, जिनमें कारक भिन्नियों तथा क्रियारचनासम्बन्धी नियमों का ब्यथन किया गया है। चौथे पाद में ४४८ सूत्र हैं। आरम्भ के २५९ सूत्रों में धातुवादेश और आगे क्रमशः शौरसेनी, मागधी, पेशावी, शूलिका पेशावी और अपभ्रंश भाषाओं को विशेष प्रवृत्तियों का निरूपण किया गया है। अन्तिम दो सूत्रों में यह भी बतलाया गया है कि प्राकृत में उक्त लक्षणों का ध्यस्तक भी पाया जाता है तथा जो बात यहाँ नहीं बतलायी हैं, उसे संस्कृतवत् सिद्ध समझना चाहिये। सूत्रों के अतिरिक्त वृत्ति भी स्वयं हेम की लिखी है। इस वृत्ति में सूत्र गत लक्षणों की घड़ी विशदता से उदाहरण देकर समझाया गया है।

आचार्य हेम ने प्राकृत शब्दों का अनुशासन संस्कृत शब्दों के रूपों को आदर्श मानकर किया है। हेम के मत से प्राकृत शब्द तीन प्रकार के हैं—तत्सम, तद्भव और देशी। तत्सम और देशी शब्दों को छोड़ जेव तद्भव शब्दों का अनुशासन इस व्याकरण द्वारा किया गया है।

आचार्य हेम ने 'आर्यम्' ८।१।३ सूत्र में 'आर्य प्राकृत का नामोक्तेव रिया है और बतलाया है कि 'आर्य प्राकृत बहुत भवति, तदपि यथास्थानं दर्शयिष्यामः।

जायें हि सर्वे विधयो विकल्पन्ते” अर्थात् अधिक प्राचीन प्राकृत भाषा—आगमिक प्राकृत में प्राकृत के नियम विकल्प से प्रवृत्त होते हैं।

हेम का प्राकृत व्याकरण रचना शैली और विषयानुक्रम के लिए प्राकृतलक्षण और प्राकृतप्रकाश का अभावी है। पर हेम ने विषय विस्तार में बड़ी पड़ता दिखायी है। अनेक नये नियमों का भी निरूपण किया है। ग्रन्थन शैली भी हेम की चण्ड और वरचि की अपेक्षा परिष्कृत है। शूलिका पैशाची और अपभ्रंश का अनुशासन हेम का अपना है। अपभ्रंश भाषा का नियमन ११८ सूत्रों में स्वतन्त्र रूप से किया है। उदाहरणों में अपभ्रंश के पूरे बोधे उद्धृत कर नष्ट होते हुए विशाल साहित्य का संरक्षण किया है। इसमें सन्देह नहीं कि आचार्य हेम के समय में प्राकृत भाषा का बहुत अधिक विकास हो गया था और उसका विशाल साहित्य विद्यमान था। अतः उन्होंने व्याकरण की प्राचीन परम्परा को अपनाकर भी अनेक नये अनुशासन उपस्थित किये हैं।

त्रिविक्रमदेव का प्राकृत शब्दानुशासन

जिम प्रकार आचार्य हेम ने सर्वाङ्गपूर्ण प्राकृत शब्दानुशासन लिखा है, उसी प्रकार त्रिविक्रमदेव ने भी। इनकी स्वोपजडृति और सूत्र दोनों ही उपलब्ध हैं। इस शब्दानुशासन में तीन अध्याय और प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं, इस प्रकार कुल बारह पादों में यह शब्दानुशासन पूर्ण हुआ है। इसमें कुल सूत्र १०३६ हैं। त्रिविक्रमदेव ने हेम के सूत्रों में ही कुछ फेर-फार करके अपने सूत्रों की रचना की है। विषयानुक्रम हेम का ही है। ह, दि, स और ग आदि संज्ञाएँ त्रिविक्रम की नहीं हैं, पर इन संज्ञाओं से निष्पन्निरूपण में सरलता की अपेक्षा जटिलता ही उत्पन्न हो गयी है। इस व्याकरण में देखी शब्दों का वर्गीकरण पर हेम की अपेक्षा एक नयी दिशा की सूचना दी है। यद्यपि अपभ्रंश के उदाहरण हेम के ही हैं, पर संस्कृत टाया देकर इन्होंने अपभ्रंश के दोहों को समझने में पूरा सौकर्य प्रदर्शित किया है।

त्रिविक्रम ने अनेकार्थक शब्द भी दिये हैं। इन शब्दों के शब्दकोश से तात्पर्यिक भाषा की प्रवृत्तियों का परिज्ञान तो होगा ही है, पर इससे अनेक संस्कृतिक बातों पर भी प्रकाश पड़ता है। यह प्रकरण हेम की अपेक्षा विशिष्ट है इनका यह कार्य शब्द शास्त्र का न होकर अर्थशास्त्र का हो गया है।

पद्मभाषाचन्द्रिका

लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रमदेव के सूत्रों का प्रकरणानुसारी संरक्षण कर अपनी नयी वृत्ति लिखी है। इस संरक्षण का नाम ही पद्मभाषाचन्द्रिका है। इस संरक्षण में निम्नागत छौसरी का क्रम रखा गया है। उदाहरण सेतुबन्ध, गउपनहो, गादावपगर्, बह्मसंगरी आदि प्रयोगों से दिये गये हैं। लक्ष्मीधर ने लिखा है—

वृत्ति त्रैविक्रमी गूढां व्याचिरयासन्ति ये युधाः ।
पद्भाषाचन्द्रिका सेतुद्वयव्याख्यारूपा विलोक्यताम् ॥

अर्थात्—जो विद्वान् त्रिविक्रम की गूढ वृत्ति को समझना और समझाना चाहते हैं, वे उसकी व्याख्यारूप पद्भाषाचन्द्रिका को देखें ।

प्राकृत भाषा की जानकारी प्राप्त करने के लिए पद्भाषाचन्द्रिका अधिक उपयोगी है । इसकी तुलना हम भट्टोजिदीक्षित की सिद्धान्तमौमुदी से कर सकते हैं ।

प्राकृतरूपावतार

त्रिविक्रमदेव के मूर्तों को ही लघुसिद्धान्त मौमुदी के ढंग पर संकल्पित कर सिद्धराज ने प्राकृतरूपावतार नामक व्याकरण ग्रन्थ लिखा है । इसमें संक्षेप में सन्धि, शब्दरूप, धातुरूप, समास, सङ्क्षिप्त आदि का विचार किया है । व्यावहारिक दृष्टि से आद्यबोध कराने के लिए यह व्याकरण उपयोगी है । हम सिद्धराज की तुलना वरदाचार्य से कर सकते हैं ।

प्राकृतसर्वस्य

मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्य एक महत्वपूर्ण व्याकरण है । इसका रचनाकाल १५ वीं शती है । मार्कण्डेय ने प्राकृत भाषा के भाषा, विभाषा, अपभ्रंश और पैशाची—ये चार भेद किये हैं । भाषा के मढाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राकषा, अजन्ती और मागधी; विभाषा के शाकरी, चाण्डाली, शायरी, आभीरिणी और शास्वी; अपभ्रंश के नागर, माघड और उपनागर एवं पैशाची के कैकयी, शौरसेनी और पांचाली आदि भेद किये हैं ।

मार्कण्डेय ने आरम्भ के आठ पादों में मढाराष्ट्री प्राकृत के नियम बतलाये हैं । इन नियमों का आधार प्रायः वररचि का प्राकृतप्रकाश ही है । ९ वें पाद में शौरसेनी के नियम दिये गये हैं । इसवें पाद में प्राकषा भाषा का नियमन किया गया है । ११ वें अजन्ती और ब्राह्मीकी का वर्णन है । १२ वें में मागधी के नियम बतलाये गये हैं, इनमें गर्धमागधी का भी उल्लेख है । ९ से १२ तक के पादों का भाषाविशेषण नाम का एक अलग खण्ड माना जा सकता है । १३ वें से १६ वें पाद तक विभाषा का नियमन किया है । १७वें और १८वें में अपभ्रंश भाषा का तथा १९वें और २०वें पाद में पैशाची भाषा के नियम दिये हैं । शौरसेनी के बाद अपभ्रंश भाषा का नियमन करना बहुत ही तर्कसंगत है ।

ऐसा लगता है कि हम ने जहाँ पश्चिमीय प्राकृत भाषा की प्रवृत्तियों का अनुशासन उपस्थित किया है, वहाँ मार्कण्डेय ने पूर्वीय प्राकृत की प्रवृत्तियों का नियमन प्रदर्शित किया है ।

इन व्याकरण ग्रन्थों के अतिरिक्त रामतर्कवागीश का 'प्राकृतकल्पतरु' शुभचन्द्र का शब्दचिन्तामणि, ज्येष्ठकृष्ण का प्राकृत चन्द्रिका और अण्णय दीक्षित का 'प्राकृत-मणिदीप' भी अच्छे ग्रन्थ हैं।

आधुनिक प्राकृत व्याकरणों में ए० सी० कुल्नर का 'इण्ट्रोडक्शन टु प्राकृत' (१९३६ सन्), दिनेशचन्द्र सरकार का 'ए ग्रामर ऑफ दि प्राकृत लैंग्वेज (१९४३ सन्), ए० एन० घांटे का 'एन इण्ट्रोडक्शन टु अर्धमागधी' (१९४० सन्), होएफर का 'डे प्राकृत डिआलेक्टो लिमि डुओ' (बर्लिन १८३६ सन्), लास्सन का 'इन्स्टीट्यूट्सोओनेस लिगुआए प्राकृतिकाए' (यून ६० १८३९), पौवे का 'ए शोर्ट इण्ट्रोडक्शन टु द ओर्डनरी प्राकृत ऑव द संस्कृत ड्रामाज् विथ ए लिस्ट ऑव यामन् इरेगुलर प्राकृत वर्डस्' (लन्दन ६० १८७५) हपीवेश का 'ए प्राकृत ग्रामर विथ इंगलिश ट्रान्सलेशन (कलकत्ता ६० १८८३) रिचर्ड पिराल का 'प्राकृत भाषाओं का व्याकरण' (पटना ६० १९५८) ए० वेचरवास होशी का 'प्राकृत व्याकरण' (अहमदाबाद ६० १९२५); डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल का 'प्राकृत विमर्श' (१९५३ ६०) आदि उपयोगी ग्रन्थ हैं। इन्हीं प्राचीन और नवीन ग्रन्थों से सामग्री ग्रहण कर 'अभिनव प्राकृत व्याकरण' लिखा गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ

उपर्युक्त व्याकरण ग्रन्थों के रहने पर भी सर्वाङ्गपूर्ण प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता घनी हुई थी, ऐसा एक भी प्राकृत व्याकरण नहीं, जिसका अध्ययन कर जिहासु व्याकरण सम्बन्धी समस्त अनुशासनों को अवगत कर सके। हाँ, इस-पाँच ग्रन्थों को मिलाकर अध्ययन करने पर भले ही विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सके, पर एक ग्रन्थ के अध्ययन से यह संभव नहीं है। अतएव संस्कृत व्याकरण 'सिद्धान्त कौमुदी' की शैली के आधार पर प्रस्तुत व्याकरण ग्रन्थ लिखा गया है। इस ग्रन्थ में निम्न विवेक इतिहास उपलब्ध होंगे :—

(१) सन्धि और समास के उदाहरणों में विभिन्न प्राकृत भाषाओं के पदों को रखा गया है। इनके अवलोकन से इस प्रकार की धारांका वर होना स्वाभाविक है कि सामान्य प्राकृत से लेकर कच्चा अर्धमागधी क्या अभिप्राय है ? उदाहरणों में अनेकरूपता रहने से सन्धि और समास के नियम किस प्राकृत भाषा के हैं ? इस धारांका के निराकरण हेतु हमारा यही निवेदन है कि सन्धि और समास के नियम सभी प्राकृतों में समान हैं। जो नियम महाराष्ट्री प्राकृत में लागू होते हैं, वे ही अर्धमागधी या अन्य प्राकृत भाषाओं में भी। अतः सन्धिप्रकरण और समासप्रकरण में महाराष्ट्री, अर्धमागधी और शौरसेनी के उदाहरण मिलेंगे; यतः विभिन्न प्राकृतों के अनुशासन में ध्वनि और वर्णविकार सम्बन्धी अन्तर ही सबसे प्रधान है। कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय सम्बन्धी

त्रिपेताएँ भी पायी जाती हैं। येप बातें समस्त प्राकृतों में प्रायः समान रहती हैं। उदाहरणार्थ दीर्घसन्धि जिन परिस्थितियों में महाराष्ट्री प्राकृत में होती है उन्हीं परिस्थितियों में अर्धमागधी भाषा में भी। अतएव सामान्य प्राकृत से महाराष्ट्री प्राकृत का ग्रहण होने पर भी सन्धि, समास और स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के उदाहरणों में समान नियमों से अनुयासित होनेवाले अर्धमागधी और महाराष्ट्री भाषाओं के उदाहरण संरक्षित हैं।

(२) पद, वाक्य, सन्धि, समास, स्त्री प्रत्यय, कृत्, तद्धित आदि की परिभाषाएँ दी गयी हैं। इन परिभाषाओं में संस्कृत व्याकरण सरणि की गन्ध पायी जा सकती है। पर इस तथ्य को सदा ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी प्राच्य भाषा के अनुशासन प्रसंग में उक्त परिभाषाएँ चे हो रहेंगी, जो संस्कृत में हैं। यतः संस्कृत व्याकरण का सर्वाधिक प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं के व्याकरण ग्रन्थों पर है।

(३) स्त्रीप्रत्यय और कारक के नियम संस्कृत व्याकरण के आधार पर ही प्रस्तुत व्याकरण में निबद्ध किये गये हैं। प्रत्ययों के रूप भी संस्कृत व्याकरण के समान ही हैं।

(४) जितने प्राकृत व्याकरण उपलब्ध हैं, उनसे सभी कोई व्यक्ति अनुशासन सम्बन्धी नियमों की जानकारी प्राप्त कर सकता है, जब संस्कृत व्याकरण की जानकारी हो। संस्कृत व्याकरण की जितनी अच्छी जानकारी रहेगी, उक्त व्याकरण ग्रन्थों से प्राकृत भाषा सम्बन्धी अनुयासनों को उतने ही व्यापक और गम्भीर रूप में अवगत कर सकेगा। पर इस व्याकरण में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि कोई भी व्यक्ति अन्य भाषा के व्याकरण को जाने बिना भी मात्र इस व्याकरण ग्रन्थ के अध्ययन से प्राकृत भाषा के अनुशासन सम्बन्धी समस्त नियमों को जान जाये।

(५) इस व्याकरण में स्त्रीप्रत्यय, कारक, शब्दरूप, धातुरूप, कृदन्त, तद्धित एवं धातुकोप विस्तृत रूप में दिये गये हैं। ये प्रकरण इतने व्यापक रूप में अन्य किसी व्याकरण ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं हो सकेंगे।

(६) शौरसेनी, जैन शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, जैन महाराष्ट्री, पेशाची, खूर्जि पेशाची एवं अपभ्रंश भाषा का अनुशासन भी दिया गया है, जिससे महाराष्ट्री के सिवा अन्य भाषाओं की प्रवृत्तियों की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

(७) पाद टिप्पणियों में रूप, वररुचि और त्रिविक्रम के सूत्र भी दिये गये हैं, जिससे अनुशासन सम्बन्धी नियमों को हृदयंगम करने में सरलता रहेगी।

(८) परिशिष्टों में उदाहरण शब्दानुक्रमणिका के साथ विभिन्न प्रयोगसूचियाँ दी गयी हैं, जिनसे पाठकों को प्राकृत भाषा के अध्ययन में सरलता प्राप्त होगी।

(९) इस शब्दानुशासन में एक विशेषता और उपलब्ध होगी कि जिन विषय को उठाया है, उसका अनुशासन सभी दृष्टिकोणों से पूर्णरूपेण उपस्थित किया है। जहाँ

तक हमारा विरसत है इस एक व्याकरण के अध्ययन के उपरान्त अन्य व्याकरणों की जानकारी की अपेक्षा नहीं रहेगी। मध्यकालीन आर्यभाषाओं की प्रमुख प्रवृत्तियों के साथ 'आधुनिक आर्यभाषाओं की उत्पत्ति के चीज सिद्धान्तों को भी जाना जा सकेगा।

(१०) भाषाविज्ञान के अनेक सिद्धान्त भी इस व्याकरण में समाविष्ट हैं। स्वर-लोप, व्यञ्जनलोप, स्वरागम, व्यञ्जनागम, स्वर-व्यञ्जन-विपर्यय, समीकरण, विपरीकरण, घोषीकरण, अघोषीकरण, अमिश्रुति, अपमिश्रुति और स्वरभक्ति के नियम इसमें अन्तर्हित हैं। अतः भाषाविज्ञान के अध्ययनार्थियों के लिए इस व्याकरण की उपयोगिता कम नहीं है।

आभार

इस व्याकरण को लिखने की प्रेरणा श्री भाई दिनयशंकर जी, सारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी एवं मिश्रर डा० राममोहनदास जी एम० ए०, पी-एच० डी० द्वारा से प्राप्त हुई है। आप दोनों के आग्रह से यह कृति एक वर्ष में लिखकर पूर्ण की गयी है, अतः मैं उक्त दोनों भाइयों के प्रति हृदय से वृत्तज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

आदरणीय डा० एन. टाटिया, निर्देशक प्राकृत जैन विद्यापीठ, मुजफ्फरपुर ने निपयसम्बन्धी सुझाव दिये हैं, जिनके लिए उनका आभारी हूँ। उदाहरणानुक्रमणिका एवं प्रयोगसूची तैयार करने में प्रिय शिष्य श्री सुरेन्द्रकुमार जैन ने अथक धम किया है, अतः उन्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूँ। भाई प्रो० राजारामजी तथा स्वामी द्वारिकानाथ शास्त्री, व्याकरण-पालि-बौद्धदर्शनाचार्य, वाराणसी से प्रूफ-संशोधन में सहयोग प्राप्त होता रहा है, अतः उनके प्रति भी आभारी हूँ।

उन समस्त ग्रन्थकारों का भी आभारी हूँ, जिनकी रचनाओं के अध्ययन से प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण सम्बन्धी सामग्री ग्रहण की गयी है।

भूलों का रहना स्वाभाविक है, अतः त्रुटियों के लिए क्षमायाचना करता हूँ।

{ एच० डी० जैन कालेज, आरा
(मगध विश्वविद्यालय)
आवण, वीर नि० सं० २४८६ }

भेमिचन्द्र शास्त्री

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

पहला अध्याय

वर्ण-विचार और संज्ञाएँ

भाषा की मूल ध्वनियों तथा उन ध्वनियों के प्रतीक स्वरूप लिखित चिह्नों को वर्ण कहते हैं। प्राकृत की वर्णमात्रा संस्कृत की अपेक्षा कुछ भिन्न है। ऋ, ए, ऐ और औ स्वर प्राकृत में प्रयुक्त नहीं किये गये हैं। व्यंजनो में श, ष और स इन तीन वर्णों में से केवल स का ही प्रयोग मिलता है। न का प्रयोग विकल्प से होता है। अतः प्राकृत की वर्णमात्रा में निम्न वर्ण पाये जाते हैं।

स्वर—जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। प्राकृत में स्वर दो प्रकार के हैं—ह्रस्व और दीर्घ।

अ, इ, उ, ए, औ (ह्रस्व)।

आ, ई, ऊ, ऐ, औ (दीर्घ)।

व्यंजन—जिन वर्णों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या ३२ है।

क	ख	ग	घ	ङ	(क्वर्ग)
च	छ	ज	झ	ञ	(चवर्ग)
ट	ठ	ड	ढ	ण	(टवर्ग)
त	थ	द	ध	न	(तवर्ग)
प	फ	ब	भ	म	(पवर्ग)
	य	र	ल	व	(अन्तस्थ)
			श	ह	(ऊष्माक्षर)
			—		(अनुस्वार)

अनुस्वार को भी व्यंजन माना गया है, यतः अनुस्वार म् या न् का रूपान्तर है। प्राकृत में विसर्ग की स्थिति नहीं है। विसर्ग सर्वदा ओ या ए स्वर में परिवर्तित हो जाता है। असंयुक्त अवस्था में ह और ञ का व्यंजहार भी नहीं पाया जाता है। अतः व्यंजन ३० हैं।

घर्णों के उच्चारण

कण्ठ्य—अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ और ह का उच्चारण स्थान कंठ है। अतः ये वर्ण कंठ्य कहलाते हैं।

तालव्य—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ और य का उच्चारण स्थान तालु है, अतः ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं।

मूर्धन्य—ऌ, ॡ, ढ, ढ, ण और र का उच्चारण स्थान मूर्धा है, अतः ये वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं।

दन्त्य—त, थ, द, ध, न, ण और स का उच्चारण स्थान दन्त है, अतः ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।

ओष्ठ्य—उ, ऊ, प, फ, ब, म और भ का उच्चारण स्थान ओष्ठ है, अतः ये वर्ण ओष्ठ्य कहलाते हैं।

अनुनासिक—ज, म, ङ, ण, न और ञ का उच्चारण स्थान नासिका है, अतः ये वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

पे और ए का कण्ठ तालु, औ और ओ का कंठ-ओष्ठ, यस्वर का दन्तोष्ठ और अनुरधार का नासिका उच्चारण स्थान है।

प्रयत्न विचार

घर्णोच्चारण के लिए ध्वनिवर्धन को जो आयास करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है—आभ्यन्तर और बाह्य।

घर्णोच्चारण के पूर्व हृदय में जो आयास—प्रयत्न होता है, उसे आभ्यन्तर और मुख से वर्ण निकलते समय जो आयास करना पड़ता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। आभ्यन्तर प्रयत्न का अनुभव योशनेवाले को ही होता है, किन्तु बाह्य का अनुभव श्रोता भी करते हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है—स्वर, ईषस्वर, ईषद्वित्त, वित्त और संवृत।

क से म पर्यन्त वर्णों का स्वर, य, र, ल और व का ईषस्वर, स और ह का ईषद्वित्त और स्वरों का वित्त प्रयत्न होता है। हस्व उकारका प्रयोगस्थिति—परिनिष्ठित विद्धरूप, में संवृत प्रयत्न होता है; किन्तु प्रक्रिया दृष्टा—साधनास्था, में वित्त प्रयत्न ही रहता है।

बाह्य प्रयत्न ग्यारह प्रकार का है—विशार, संशार, रशास, नाद, घोष, अधोष, शरत्प्राण, महाप्राण, उद्ग्रास, अनुदास और स्वरित।

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विशार हो, उन्हें विशार, जिनके उच्चारण में पद का विशार न हो, उन्हें संशार, जिनका उच्चारण करते समय रशास

चलती रहे, उन्हें स्वाम्; जिनका उच्चारण नाद से हो, उन्हें नाद; जिन वर्णों का उच्चारण करते समय गूंज हो, उन्हें घोष, जिनके उच्चारण में गूंज न हो, उन्हें अघोष, जिनके उच्चारण में प्राणवायु का अल्प उपयोग हो, उन्हें अल्पप्राण पुनं जिन्हें उच्चारण में प्राण-वायु का अधिक उपयोग हो, उन्हें महाप्राण कहते हैं।

क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ और स का निवार, स्वास और अघोष प्रयत्न है।

ग, ज्ञ, ङ, ढ, घ, ण, झ, ञ, झ, भ, म, न, य, र, ल, व और ह या भ्रंश, नाद और घोष प्रयत्न है।

वर्णों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व का अल्पप्राण प्रयत्न है^१।

वर्णों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण तथा स और ह या महाप्राण प्रयत्न है^२।

क से म पर्यन्त पचीस वर्ण स्पर्श कहलाते हैं^३। इनके उच्चारण में जीभ का अगला, पिछला या मध्यभाग फँड, छालु प्रवृत्ति स्थानों का स्पर्श करता है। अतः ये वर्ण स्पर्श वर्ण कहलाते हैं।

य, र, ल और व ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं^४। इनके अन्तस्थ कहलाने का कारण यह है कि ये चारों स्पर्श और ऊष्म के मध्यवर्ती हैं।

स और ह ऊष्म वर्ण हैं। इन वर्णों के उच्चारण में अधिक वायु निराली है, अतः ये ऊष्म कहलाते हैं।

अनुस्वार की अयोगवाह संज्ञा है।

क से म पर्यन्त जिन वर्णों को स्पर्श कहा गया है, उनके उच्चारण के लिए जाने-वाला स्वास हरतन्त्रियों के प्रभाव से घोष या अघोष होकर आता है। अतः इन वर्णों में प्रत्येक के मोटे-मोटे दो भेद हो गये—(१) घोष स्पर्श और (२) अघोष स्पर्श। अघोष स्पर्श के भी प्राणत्व के आधार पर दो भेद हैं—(१) अघोष अल्पप्राण स्पर्श और (२) अघोष महाप्राण स्पर्श। घोष स्पर्श के तीन भेद हैं—(१) घोष अल्पप्राण स्पर्श (२) घोष महाप्राण स्पर्श और (३) घोष अनुनासिक। घोष अनुनासिकों के उच्चारण में कौया (कण्ठविक) बीच में रहता है, जिसके कल्पस्वरूप थोड़ी स्वास मुँह और नाक दोनों से निकलती है। अनुनासिक वर्णों के अतिरिक्त अन्य स्पर्शों के उच्चारण में कौया नासिकागिर को पन्द डिये रहता है, अतः स्वास केवल मुँह से निकलती है।

१. वर्गिका प्रथमतृतीयपञ्चमा यण्वाल्पप्राणा ।

२. वर्गिका द्वितीयचतुर्थी शब्द महाप्राणा ।

३. नादयो मावसाना स्पर्शा ।

४. यणोऽन्त स्वा ।

हम प्रकार कण्ठ्य, मूर्धन्य, तालव्य, दन्त्य और ओष्ठ्य इन पाँचों वर्गों वगैरे से प्रत्येक वर्ग के निम्न पाँच भेद होते हैं—

१. शघोष अल्पप्राण—क, त, प आदि ।
२. शघोष महाप्राण—ख, ध, फ आदि ।
३. घोष अल्पप्राण—ग, द, ब आदि ।
४. घोष महाप्राण—घ, ध, भ आदि ।
५. अनुनासिक या घोष अल्पप्राण अनुनासिक—र, ल, ञ आदि ।

स्व संज्ञा—जिस वर्ण का जिन वर्णों के साथ तात्तु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रत्यक्ष एक हो, उह वर्ण स्व या सवर्ण संज्ञक होता है ।^१

विभक्ति संज्ञाएँ—सु आदि विभक्तिओं में अन्तर इत्संज्ञक वर्णों के साथ उच्चरित आदि वर्ग अपने तथा मध्यवर्ती वर्गों का भी बोधक होता है । जैसे प्रथमा विभक्ति में सु और जस् की सस् संज्ञा, द्वितीया विभक्ति में अस् और शस् की अस् संज्ञा, तृतीया विभक्ति में टा और भिस् की टास् संज्ञा, चतुर्थी विभक्ति में ठे और भ्यस् की ठेस् संज्ञा, पंचमी में दत्ति और भ्यस् की दत्तिस् संज्ञा, षष्ठी में दस् और भाम् की दस् संज्ञा एवं सप्तमी में टि और सुप् की टिप् संज्ञा होती है ।^२

ह संज्ञा^३—हस् वर्णों की "ह" संज्ञा होती है ।

दि संज्ञा^४—द्वय वर्णों की "दि" संज्ञा होती है ।

स संज्ञा^५—समास की "स" संज्ञा होती है ।

शु संज्ञा^६—श, य और स की "शु" संज्ञा होती है ।

सु संज्ञा^७—आदि वर्णों की "सु" संज्ञा होती है । यथा "लोः दन्तुक—" इत्यादि में सु शब्द से आदि वर्णों का बोध होता है ।

स्तु संज्ञा^८—दो संयुक्त व्यञ्जनों की "स्तु" संज्ञा होती है ।

ग संज्ञा^९—गगन्प्रधान को आदि शब्द होता है, कयरी "ग" संज्ञा होती है ।

जिगे—'जिगीरे गुग्गा' में गुग्गा शब्द गुग्गादि का बोधक है ।

कु संज्ञा^{१०}—शब्द के द्वितीय वर्णों की "कु" संज्ञा होती है ।

तु संज्ञा^{११}—द्वितीय विधान की "तु" संज्ञा होती है ।

बहुल संज्ञा^१—विद्युत् की “बहुल” संज्ञा भी होती है।

रिन् संज्ञा^२—रेड की “रिन्” संज्ञा होती है।

लुक् संज्ञा—लुक् की “लुक्” संज्ञा होती है।

उद्बृत्त स्वर व संज्ञा^३—व्यंजन धातु स्वर से व्यंजन का शेष हो जाने से जो स्वर शेष रह जाता है, उसकी “उद्बृत्त स्वर” संज्ञा होती है।

दूसरा अध्याय

सन्धि विचार

प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में ही लिखा हुआ उपलब्ध नहीं होता है। जितने भी प्राकृत व्याकरण हैं, उन्होंने संस्कृत शब्दों में विकार के नियमों का निरूपण कर प्राकृत शब्दों की निरूपण दिखलायी है। अतः यहाँ सन्धि के उन्हीं नियमों का विवेचन किया जायगा, जिनका प्रयोग प्राकृत साहित्य में पाया जाता है।

सन्धि—जब किसी शब्द में दो वर्ण निकट आने पर मिल जाते हैं, तो उनके मेल से उत्पन्न होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं।

संयोग और सन्धि में इतना भेद है कि जहाँ वर्ण अपने स्वरूप से बिना किसी विकार के मिलते हैं, उसे संयोग और जहाँ विच्छिन्न होकर उनके स्थान में कोई आदेश होने से मिलते हैं, उसे सन्धि कहते हैं।

समास और सन्धि में यह अन्तर है कि समास में प्रायः दो या अधिक पद विभक्तियों का त्याग कर मिलते हैं, पर सन्धि में विभक्तियों सहित पदों का संयोग होता है। सन्धे में वर्णविकार सन्धि है और शब्दविकार समास।

प्राकृत में सन्धि की व्यवस्था विकृत से होती है, नित्य नहीं। सन्धि के तीन भेद हैं—स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि और अव्यय सन्धि।

स्वर सन्धि—दो अल्पन्त निकट स्वरों के मिलने से जो ध्वनि में विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे—मगह + अहिर्वा = मगहाहिर्वा (मगधाधिपति)।

व्यञ्जन सन्धि—व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन या स्वर वर्ण के मिलने से जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं, जैसे—उसभम् + अजिर्व = उसभमजिर्व (शृपभम् + अजितम्)। प्राकृत में विसर्ग सन्धि का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि विसर्ग के स्थान पर आ या ए हो जाता है।

अव्यय सन्धि—संस्कृत में इस नाम की कोई सन्धि नहीं है, पर प्राकृत में अनेक अव्यय पदों में यह सन्धि पायी जाती है। यह सन्धि दो अव्यय पदों में होती है। यथा—किं + अपि किं पि। इसमें सन्देह नहीं कि प्राकृत में अव्यय और निपात का महत्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि इस सन्धि को अलग मानना पड़ता है।

स्वर सन्धि

प्राकृत में प्रधानतः चार प्रकार की स्वर सन्धियाँ पायी जाती हैं—दीर्घ, गुण, द्वन्द्व-दीर्घ और प्रकृतिभाव या सन्धि-निषेध । श्रुति सन्धि के भी निश्चित रूप मिलते हैं ।

(१) दीर्घ सन्धि^१—इस्य वा दीर्घ अ, इ और उ ने उनका स्वसर्ग स्वर परे रहे तो दोनों के स्थान में सवर्ण दीर्घ होता है । उदाहरण—

- (क) अ + अ = आ—बुद्ध + अहीमो = बुद्धाहीमो, बुद्ध अहीमो (बुद्धा गीत)
 आ + आ = आ—विसम + आययो = विसमाययो, विसम आययो (विसमातप)
 अ + अ = अ—रमा + अहीणो = रमाहीणो, रमा अहीणो (रमाधोन)
 आ + आ = आ—रमा + आरामो = रमारांमो, रमा आरामो (रमारामः)

ण + अल्लिभइ = णाल्लिअइ

ण + आगअ = णागअ (नागतः)

ण + आलवइ = णालवइ (नात्यति)

न + अभिजाणइ = नाभिजाणइ (नाभिजानाति)

न + अइदूर = नाइदूर (नातिदूरम्)

ण + अल्लंकिदा = णाल्लंकिदा (नाल्लंकिता)

धम्मकहा + अउसान = धम्मउहाउसान (धर्मकथावसानम्)

महा + आवल्लंइ = महावल्लंइ, महाआवल्लंइ (महाउल्लंइः)

बहु + उदग = बहुउदग, बहुउदग (बहुउदम्)

कअ + अउराह = कआउराह (कृताउराह)

आरक्ख + अणिकते = आरक्खाधिराते (आरक्षाधिराताम्)

जेण + अहं = जेणाहं (यनाहं)

महाराअ + अधिराओ = महाराअधिराओ (महाराजाधिराजः)

इह + अइयीय = इहाइयीय (इहाइयाम्)

सहस्र + अतिरेक = सहस्सातिरेक (सहस्रातिरेकः)

इगिय + आमार = इगियामार (इंगितामार)

विलेस + अणल = विलेसाणल (विलेसाणलम्)

दुदिअल + अउमाण = दुदिअल्लवमाण (दूतस्त्राउमाणम्)

अइ + अउरा = अइधिरा (अघोरा)

सास + अणल = सासाणल (स्वापानलम्)

इस सन्धि के निषेध—

अद्वरेग + अद्ववास = अद्वरेगअद्ववास (अतिरेकाष्टवर्षः)

सयल + अत्यमियजियलोअ = सयल अत्यमियजियलोअ (सयलास्तमित-
जीवलोकः)

सन्ध + अत्येसु = सन्ध अत्येसु (सवार्थेषु)

सेलग जक्ख + आरहण = सेलग जक्खआरहण (शीष्टक यक्षारोहणम्)

ण + आणामि = ण आणामि (न जानामि)

ण + आणामि = ण आणासि (न जानासि)

ण + आणीयदि = ण आणीयदि (न जानयति)

अ + आणंतेण = अ आणंतेण (अजानता)

अ + आणिअ = अ आणिअ (अज्ञात्वा)

विशेष—

प्राकृत में प्रथम पद के अ और अण के स्थान पर ण आदेश होता है । यथा—

अ + अणसहिआलोअ = णसहिआलोअ (असोदालोकः)

अ + अणसहिअ पडिओइ = णसहिअपडिओइ (असोदप्रतिशोधः)

अ + अणपहुप्पंत = णपहुप्पंत, णयहुत्त (अग्रभवत्)

(र) इ + इ = ई—मुणि + इणो = मुनीणो, मुणिइणो (मुनीनः)

इ + ई = ई—मुणि + ईमरो = मुणीसरो, मुणि ईसरो (मुनीश्वरः)

इहि + ईमरो = इहीसरो, इहि ईसरो (इधीश्वरः)

ई + इ = ई—गामणी + इइहासो = गामणीइइहासो, गामणी इइहासो
(गामणीतिहासः)

ई + ई = ई—गामणी + ईसरो = गामणीसरो, गामणी ईसरो (गामणीश्वरः)

पुइरी + ईस = पुइवीस (पृथिवीशः)

(ग) उ + उ = ऊ—भाणु + उउम्माओ = भाणुवउम्माओ, भाणु उउम्माओ
(भानूपायायः)

साउ + उअयं = साऊअयं, साउउअयं (सगृहदरम्)

उ + ऊ = ऊ—साहु + ऊसरो = साहुसरो, साहु ऊसरो (साहस्यः)

ऊ + उ = ऊ—पहु + उअरं = पहुअरं, पहु उअरं (पधुदरम्)

ऊ + ऊ = ऊ—कणेरु + ऊसिअं = कणेरुसिअं, कणेरु ऊसिअं
(कणेरुविगतम्)

(२) गुण सन्धि^१— अ वा वा वर्ग से परे ह्रस्व या दीर्घ द्व और उ वर्ण हों तो पूर्व पर के स्थान में ए न गुण आदेश होता है । उदाहरण—

- (क) वा + इ = ए—वास + इमी^२ = वासेमी, वास इमी (व्यापथिः)
 वा + इ = ए—रामा + इमरो = रामेअरो, रामा इअरो (रामेतरः)
 वा + ई = ए—वासर + ईसरो = वासरेसरो, वासर ईसरो (वासरेररः)
 वा + ई = ए—विलया + ईसो = विलयेसो, विलयाईसो (वनितेशः)

- (ख) वा + उ = ओ—गूढ + उअरं = गूढोअरं, गूढ उअरं (गूढोदरम्)
 वा + उ = ओ—रमा + उअचिअं = रमोअचिअं, रमा उअचिअं
 (रमोअचिअम्)

वा + ऊ = ओ—सास + ऊसासा = सासोसासा, सासऊसासा
 (रयामोच्चसासा)

वा + ऊ = ओ—विष्णुवा + ऊसुंभिअं = विष्णुलोसुंभिअं, विष्णुला-
 ऊसुंभिअं (विष्णुलसितम्)

गुण सन्धि के अन्य उदाहरण

- दिवा + इभ = दिसेभ
 संदह + इभमोत्तिअ = संदहेभमोत्तिअ (संदहेभमौत्तिकः)
 पाअउ + उरु = पाअडोरु (प्ररुओरुः)
 सामा + उअअं = सामोअअं (रयामोदरम्)
 गिरि लुलिअ + उअहि = गिरिलुलिओअहि (गिरिलुलितोदधि)
 महा + इसि = महेसि (महविः)
 राभ + इसि = राएसि (राजविः)
 सव्य + उउय = सव्योउय (सर्वभुक्)
 निश्च + उउग = निश्चोउग (नित्यभुक्)
 करिअर + उरु = करिओरु (करिभोरु)
 अण + उउय = अणोउय (अनुभुक्)

१. अवरुणस्येयणादिनेदोदरन् १।२।६ हे० ।

२. पदयोः सन्धिर्वा ८।१।५—संस्कृतो न सन्धिः सर्वः प्राकृते पदयोर्व्यवस्थित-
 विभाषया भवति ।

अपवाद—सन्धि निषेध

पदमसमय + उवसंत = पदमसमयउवसंत (प्रथमसमयोपशान्तः)

आपरिय + उवज्झाय = आपरिय उवज्झाय (आचार्योपाध्यायः)

हेट्टिम + उवरिय = हेट्टिमउवरिय (अधस्तोपरि)

कंठसुत्त + उरत्थ = कंठसुत्तउरत्थ (कंठसूत्रोरत्थः)

अप्प + उदय = अप्पउदय (अरपोदयम्)

दीरदिसा + उददीणं = दीरदिसा उददीणं (दीरदिगुदधीनाम्)

सन्धि अभाव—

महा + उदय = महाउदय (महोदयम्)

ईहामिग + उस्सभ = ईहामिगउस्सभ (ईहानृगव्यभः)

खग + उस्सभ = खगउस्सभ (खगव्यभः)

पवयण + उवघोयग = पवयणउवघोयग (प्रवचनोपघातकः)

संजम + उवघाय = संजमउवघाय (संयमोपघातः)

वसंतुस्सव + उवायण = वसंतुस्सवउवायण (वसन्तोत्सवोपायग)

(३) विच्छिन्न वृद्धि सन्धि—

१—प, ओ से पहले, किन्तु उस प, ओ से पहले नहीं जो संस्कृत में ओर औ से निकले हों, अ और आ का छेप हो जाता है। अर्थात् मूळ प और ओ से परे अ और आ का छेप होता है। उदाहरण—

गाम + एणी = गामेणी

णव + एला = णवेला

खुहुग + एगावलि = खुहुगोगावलि

कुल + एला = कुल्लेला

जाळ + ओलि = जालोलि (ज्वालावलिः)

वण + ओलि = वणोलि (वनावलिः)

वाअ + ओलि = वाओलि (वातावलिः)

पहा + ओलि = पहोलि (प्रभावलिः)

उदअ + ओलि = उदओलि (उदकारः)

वासेण + ओलि = वासेणोलि (वपादिः)

माला + ओदइ = मालोदइ (मालापहतः)

मट्ठिअ + ओलिस्स = मट्ठिओलिस्स (मृत्तिकावलिस्सः)

जल + ओद = जलोद् (जलौघः)

संठाण + ओसप्पिणी = संठाणोसप्पिणी (संस्थानासप्पिणी)

गुड + ओदन = गुडोदन (गुडौदनम्)

कररुह + ओरंप = कररुहोरंप

वाअंदोलण + ओणविअ = वाअंदोलणोणविअ (वातान्दोलनान्नमित)

खंधुम्ब + एव = खंधुम्बेव (स्कन्धोत्थेव)

पातुस्स + एव = पातुस्सेव (पादोत्थेवः)

(४) ह्रस्व दीर्घ विधान सन्धि—प्राकृत में सामासिक पदों में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व होता है। इस ह्रस्व या दीर्घ के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। यह ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ स्वर का ह्रस्व विधान कभी बहुत—विकल्प से और कभी नित्य होता है। यथा—

ह्रस्व स्वर का दीर्घ—

अन्त + वेई = अन्तावेई (अन्तवेई)

सत्त + वीसा = सत्तावीसा (सत्तविंशतिः)

पह + हरं = पईहरं, पइहरं (पतिगृहम्)

वारि + मई = वारीमई, वारिमई (वारिमनी)

भुअ + यंतं = भुआयंतं, भुअयंतं (भुजायनम्)

पेळ + वणं = वेळवणं, वेळुवणं (वेषुवनम्)

दीर्घ स्वर का ह्रस्व—

जउँणा + यडं = जउँणायडं, जउँणायडं (यमुनातटम्)

नई + सोत्तं = नइसोत्तं, नईसोत्तं (नदीस्रोतः)

मणा + सिला = मणसिला, मणासिला (मन, शिला)

गोरी + हरं = गोरिहरं, गोरीहरं (गौरीगृहम्)

बहू + मुहं = बहुमुहं, बहूमुहं (बहुमुखम्)

सिला + खलिअं = सिलखलिअं, सिलाखलिअं (सिखाखलितम्)

(५) प्रकृतिभाव सन्धि—सन्धि कार्य के न होने को प्रकृति-भाव कहते हैं। प्राकृत में संस्कृत की अपेक्षा सन्धि नियम अधिक मात्रा में पाया जाता है। अतः यहां हम सन्धि के आवश्यक नियमों का विवेचन किया जायगा।

१. दीर्घह्रस्वी मिथो वृत्तो वाऽऽऽ—वृत्तौ समाने स्वराणा दीर्घह्रस्वी बहुल भवतः।
निय. परस्परम् : तत्र ह्रस्वस्य दीर्घः ।

(१) इ और उ का त्रितीय स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता ।^१ जैसे—
पहावलि + अरुणो = पहावलिअरुणो (प्रभावत्यरुणः)

बहु + अजऊढो = बहुअजऊढो (बध्वजगूढः)

न वेरिवग्गे वि + अवयासो = न वेरिवग्गे वि अवयासो (न वैरिग्गेऽप्यवकाशः)

दणु + इन्दरुहिरलित्तो = दणुइन्दरुहिरलित्तो (दणुजेन्द्ररुधिरलितः)

वि + अ = विअ (इव)

महु + ई = महुई (मधुनि)

वन्दामि + अजजइरं = वन्दामि अजजइरं

(२) ए और ओ के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो उनमें सन्धि नहीं होती है ।^२ यथा—

हन्खादो + आअओ = स्वरपादो आअओ (वृक्षावागतः)

वगे + अइइ = वगेअइइ (वनेभ्यति)

लच्छीए + आणंदो = लच्छीएआणंदो (लक्ष्म्या आनन्दः)

देवीए + एरथ = देवीएएरथ (देव्या अन्न)

एओ + एरथ = एओएरथ (एकोऽन्)

बहुआइनहुल्लिहणे + माअन्धतीरं कञ्चुअं अंगे = बहुआइनहुल्लिहणे आबन्धतीरं
कञ्चुअं अंगे (बद्धा नलोवल्लेखने आबन्धत्या कञ्चुमङ्गे)

तं चेव मल्लिअ विरदण्ड विरसमाल्लिखमो + एण्हि = तं चेव मल्लिअधिरुण्ड
विरसमाल्लिखमो एण्हि (तदेव सृजितविरदण्डविरसमाल्लिखमः
इदानीम्)

अहो + अछरिअं = अहो अछरिअं (अहो आश्रयम्)

(३) उद्भूत स्वर का किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता ।^३ यथा—

निसा + अरो = निसा अरो (निशावरः)—यहाँ पर शब्द के च का लोप होने से

अ स्वर उद्भूत है ।

गन्ध + उडि = गन्ध उडि (गन्धकुटीम्)—‘कु’ में क व्यञ्जन का लोप होने से उ उद्भूत है ।

निसि + अरो = निसि अरो (निशिचरः)—‘च’ का लोप होने से अ स्वर उद्भूत है ।

रयणी + अरो = रयणी अरो (रजनीचरः)

मणु + अत्तं = मणु अत्तं (मनुजस्यं)—‘ज’ का लोप होने पर अ उद्भूत है ।

१. न युवणोत्पास्वे ८।१।६. इवणोत्स्य उवणोत्स्य च अस्वे यणो परे सन्धिर्न भवति । हे० ।

२. एदोतो स्वरे ८।१।७ एकार-ओवारयो. परे सन्धिर्न भवति । हे० ।

३. स्वरस्योद्भूते ८।१।८. स्वरस्य उद्भूते स्वरे परे सन्धिर्न भवति । हे० ।

- एग + इंदिय = एगिंदिय (एकेन्द्रियः)
 सोअ + इंदिय = सोइंदिय (ओत्रेन्द्रियम्)
 घाण + इंदिय = घाणिंदिय (घ्राणेन्द्रियम्)
 जिभ + इंदिय = जिभिंदिय (जिह्वेन्द्रियम्)
 फास + इंदिय = फासिंदिय (स्पर्शेन्द्रियम्)
 तद्दिअस + इंदु = तद्दिअसिंदु (संक्षिप्तेन्द्रुः)
 राअ + ईसर = राईसर (राजेश्वरः)
 कणग + उप्पल = कणुप्पल (कर्णोत्पलम्)
 नील + उप्पल = नीलुप्पल (नीलोत्पलम्)
 णह + उप्पल = णहुप्पल (नखोत्पलम्)
 रयण + उज्जल = रयणुज्जल (रत्नोत्पलम्)
 पध्वद + उम्मूलिदं = पध्वदुम्मूलिदं (पर्वतोम्मूलितम्)
 कअ + ऊसासा = कऊसासा (कृतोच्छ्वासः)
 गमण + ऊमुअ = गमणूमुअ (गमनोत्सुकः)
 एग + ऊग = एगूण (एकौनः)
 पंच + ऊग = पंचूण (पञ्चोनः)
 भाग + ऊग = भागूण (भागोनः)
 महा + ऊसव = महूसव (महोत्सवः)
 वसंत + ऊसव = वसंतूसव (वसन्तोत्सवः)
 देव + इइदि = देविइदि (देवदिः)
 उत्तम + इइदि = उत्तमिइदि (उत्तमदिः)
 महा + इइदि = महिइदिय (महदितः)
 रिनेम + उवओगो = रिसेमुधओगो (विशेषोपयोगः)

व्यंजन सन्धि

प्राकृत में व्यंजन सन्धि का क्रिस्तृत प्रयोग नहीं मिलता है; यतः प्रायः शान्तिम इत्यस्य व्यंजन का स्पोह हो जाता है। व्यंजन का विकारमात्र अनुनासिक वर्णों में ही उपपन्न होता है। इस सन्धि का प्रमुख नियमों महित विवेचन किया जाता है।

(१) ज के बाद आये हुए संज्ञक वितर्ग के स्थान में उक्त पूर्व “अ” के साथ जो हो जाता है। यथा—

१. अतो हो वितर्गस्य २।१।३७ मंगृत्तमश्रुतोदात्तस्यातः परस्य वितर्गस्य स्थाने हो रूपान्तेन भवति। हे०।

- १ अग्रतः > अग्रओ
अन्त + विस्तम्भ. > अन्तोवीसंभो
- ८ पुरतः > पुरओ
- ८ मनः + शिखा > मणोसिखा ।
- ८ सरितः > सञ्चओ ।
मार्गतः > मगाओ ।
भरतः > भवओ ।
भद्रन्तः > भवन्तो ।
सन्तः > सन्तो ।
- ८ वृत्त. > वृदो ।

८ (१) पद के अन्त में रहने वाले मकार वा अनुस्वार होता है ।^१ जैसे—

गिरिम् > गिरिं
जलम् > जलं
फलम् > फलं
वृक्षम् > वृक्षं

८ (२) मकार से परे स्वर रहने पर विध्य से अनुस्वार होता है ।^२ यथा—

उत्तमम् + अजिभं = उत्तममजिअ, उत्तमंअजियं (उत्तममजितम्)
यम् + आहु = यमाहु, यं आहु
घणम् + एव = घणमेघ, घणं एव (घनमेघ)

८ (४) बहुलाधिकार रहने से ह्रस्व अन्त्य व्यञ्जन का भी मकार होकर अनुस्वार हो जाता है ।^३ यथा—

मशकत् > सकरं
यत् > जं
सत् > तं
विष्वक् > वीसुं
पृथक् > पिहं
सम्पक् > सम्मं

१. मोनुस्वार ८।१।२३. अन्त्यमवारस्यानुस्वारो भवति । हे० ।

२. वा स्वर मध्य ८।१।२४. अन्त्यमवारस्य स्वरे परेनुस्वारो वा भवति । हे० ।

३. बहुलाधिकाराद् अन्त्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकार. ८।१।२४ सूत्र वी वृत्ति । हे० ।

- ✓ (१) ह्, ज्, ण् और न् के स्थान में पश्चात् व्यञ्जन होने से सर्वत्र अनुस्वार हो जाता है । उदाहरण—

ह—परक्ति>पंति, पंती; पराङ्मुक्त>परंमुहो ।

ज—कञ्चुकः>कंचुओ; लाम्छनम्>लंछणं ।

ण—पण्मुम्भः>छंमुहो; उत्कण्ठा>उर्बठा ।

न—विन्ध्यः>विंको, सन्ध्या>संका ।

- ✓ (६) शौरसेनी प्राकृत में इ और ए के परे रहने से अन्त्य म के स्थान पर विकल्प से 'ण' आदेश होता है । जैसे—

युत्तम् + इदम् = युत्तं + इदं = युत्तमिणं, युत्तंणिणं, युत्तं इणं ।

सरिशम् + इदम् = सरिसम् + इणं = सरिसमिणं, सरिसंणिणं, सरिसं इणं ।

विम् + एतत् = किं + एत्थं = किमेत्थं—किणेदं, किमेदं ।

एवम् + एतत् = एवं + एअं = एवमेत्थं, एवणेदं, एवमेदं ।

- (७) अनुस्वार के पश्चात् कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के अक्षर होने से क्रम से अनुस्वार की ह्, ज्, ण्, न् और म् विकल्प से होते हैं । यथा—

क—पं + को = पङ्को, पंको (पङ्कः)

ख—सं + खो = सङ्खो, संखो (सङ्खः)

ग—अं + गणं = अङ्गणं, अंगणं (अङ्गनम्)

घ—लं + घणं = लङ्घणं, लंघणं (लङ्घनम्)

च—कं + चुओ = कञ्चुओ, कंचुओ (कञ्चुकः)

ट—लं + छणं = लङ्छणं, लंछणं (लाम्छनम्)

ण—अं + मिअं = अङ्गिअं, अंजिअं (अङ्गितम्)

क—सं + का = सङ्कमा, संका (संख्या)

ट—कं + टओ = कण्टओ, कंटओ (कण्टकः)

ड—उ + ङंठा = उकण्ठा, उर्बंठा (उत्कण्ठा)

ड—कं + ङं = कण्ठं, कंडं (काण्डम्)

ट—सं + ङो = सण्ढो, संढो (पण्डः)

त—अं + तरं = अन्तरं, अंतरं (अन्तरम्)

य—पं + यो = पण्यो, पंथो (पण्याः)

१. ङ-ज-ण-नो व्यञ्जने ८।१।२५. ङ ख, ण, न इत्येतेषा स्थाने व्यञ्जने परे अनुस्वारो भवति । हे० ।
२. यमैन्त्यो वा ८।१।३०. अनुस्वारस्य ययौ परे प्रत्यासत्तेस्तस्यैव यमस्यान्त्यो वा भवति । हे० ।

- द— चं + दो = चन्दो, चंदो (चन्द्र.)
 ध— धं + धवो = धन्धवो, धंधवो (यान्धवः)
 प— कं + पइ = कम्पइ, कंपइ (कम्पते)
 फ— वं + फइ = वम्फइ, वंपइ (वम्फते)
 य— कलं + वो = कलम्बो, कलंबो (कल्म्वः)
 भ— आरं + भो = आरम्भो, आरंभो (आरम्भः)

(८) प्राकृत में कितने ही शब्दों के प्रयोगानुसार पहले, दूसरे या तीसरे धर्त पर अनुस्वार का आगम होता है।^१ यह अनुस्वारागम भी सन्धि कार्य के अन्तर्गत है।
 उदाहरण :—

प्रथम स्वर के ऊपर अनुस्वार—

- अंसु (अधु) = अंसुं
 तंस (तन्धम्) = तंसं
 धंरु (धम्) = धंरुं
 मसू (रमधु) = मंसू
 पुछं (पुच्छम्) = पुछं
 गुछं (गुच्छम्) = गुछं
 मुहं (मूर्धा) = मुहं
 फसो (स्पर्शः) = फंसो
 बुधो (बुधः) = बुधो
 फकोडो (कर्कोटः) = फंकोडो
 दसणं (दर्शनम्) = दंसणं
 विछिओ (वृश्चिकः) = विंछिओ
 गिठी या गुठी (गृहिः) = गिंठी या गुंठी
 मज्जारो (माज्जारः) = मंसज्जारो, मज्जारो

द्वितीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम—

- इइ = इहं
 पइसुआ = पंसुआ (प्रतिश्रुत)
 मणसी (मनस्वी) = मणंसो ।
 मणसिणी (मनस्विनी) = मणंसिणी ।
 मणसिला (मनःशिला) = मणंसिला, मणंसिला

१. वक्रादावन्त ८१।२६ हे० । वक्र, व्यञ्ज, वयम्प, अशु, रमशु, पुच्छ, प्रतिश्रुतक, गृहि, मनस्विनी, स्पर्श, ध्रुत, प्रतियुत, निवमन और दर्शन प्रभृति शब्द वक्रादि गए पठित हैं । सस्वर में यह गए आहृति गए कहलाता है ।

वयसो (वयस्यः) = वयंसो

पडिमुदं (प्रतिश्रुतम्) = पडिमुदं ।

तृतीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम—

अणिउतयं (अतिमुक्तम्) = अणिउंतयं, अइमुंतयं, अइमुत्तयं

उगि (उपरि) = उवारि

अहिमुको (अभिमुक्तः) = अहिमुको

(९) जिन शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप होता है उनके अन्त्य स्वर के ऊपर अनुस्वार का आगम होता है । जैसे— $\text{दधक्} = \text{पिहं}$ —इस उदाहरण में अन्त्य व्यंजन क का लोप हुआ है और घृ में संयुक्त ऋकार के स्थान पर इकारादेश हुआ है, तथा 'ध' के स्थान पर 'ह' हो जाने से 'पिह' बना है । एभ्रात् उपयुक्त नियमानुसार अनुस्वार का आगम हो गया है ।

(१०) जहाँ स्वादि यदों की हिरक्ति हुई हो, वहाँ यो यदों के बीच में 'य' विकल्प से आ जाता है । यथा—

एक + एहं = एकमेहं, एहेहं (एकैकम्)

एक + एकेण = एकमेकेण, एकेकेण (एकैकेन)

अंग + अंगम्भि = अंगमंगम्भि, अंगअंगम्भि (अङ्गे, अङ्गे)

(११) उण एवं स्यादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार का आगम होता है । यथा—

काडण (कृत्वा) = काडणं, काडण

काडअण = काडआणं, काडआण

काळेण (काळेन) = काळेणं, काळेण

वच्छेण (वृक्षेण) = वच्छेणं, वच्छेण

वच्छेसु (वृक्षेसु) = वच्छेसुं, वच्छेसु

तेण = (तेन) तेणं, तेण

(१२) प्राकृत में अनुरवारागम जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अनुस्वार लोप भी । शत व्यंजन सन्धि कार्य के अन्तर्गत अनुस्वार लोप का प्रकरण भी आया है । यहाँ कुछ नियमों का निरूपण किया जायगा ।

(१३) संस्कृत के विशति, त्रिशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्दों के अनुस्वार का लोप होता है ।^२

१. क्त्वा-स्यादेश-श्रीर्वा ८।१।२७. क्त्वाया स्यादीला च यो णमू तपोरनुस्वारोन्तो वा भवति । हे० ।

२. विशयादेउक् ८।१।२८. विशयादीनाम् अनुस्वारस्य लुग् भवति । हे० ।

प्रिस्तति = यीसा

प्रिस्तत् = तीसा

संस्कृतम् = सधअं

संस्कारः = सकारो

संस्तुतम् = सस्तुअ

~ (१४) मोमादिगण के शब्दों में अनुस्वार या लुक् विकल्प से होता है।^१ जैसे—

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का लोप—

मासं, मंसं (मासम्)

मासलं, मंसलं (मासलम्)

कि, कि (विम्)

वासं, वंसं (वासम्)

सीहो, सिघो (सिंह)

पाव्, पव् (पाव-वृः)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का लोप—

वह, वहं (वथम्)

एव, एवं (एवम्)

नूण, नूणं (नूम्)

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का लोप—

इआगि, इआर्णि (इदानीम्)

संमुह, समुहं (सम्मुहम्)

त्रिस्तुअ, त्रिस्तुभं (त्रिस्तुम्)

अव्यय सन्धि

अव्यय पदों में सन्धिकार्य करने की अव्यय सन्धि कहा गया है। यद्यपि यह सन्धि भी स्वर सन्धि के अन्तर्गत ही है, तो भी विस्तार से विचार करने के लिए इस सन्धि का पृथक् उल्लेख किया गया है। यहाँ अव्यय सन्धि के नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) पद से परे आये हुए अपि अव्यय के अ का लोप विकल्प से होता है। लोप होने के बाद अपि का प् यदि स्वर से परे हो तो उसका व हो जाता है।^२ यथा—

केण + अपि = केणपि, केणापि (केनापि)

वहं + अपि = वहपि वहमपि (कयमपि)

१. मासादीर्घा ८।१।२६. मामादीनामनुस्वारस्य लुक् वा भवति । हे० ।

२. पदादीर्घा ८।१।४१. पदात् परस्य अपरेत्ययस्यादेर्लुग् वा भवति । हे० ।

तीसरा अध्याय

वर्ण विकृति

प्राकृत शब्दावलि को जानने के पूर्व संस्कृत वर्णों में होनेवाली उस विकृति को भी जान लेना आवश्यक है, जिसके आधार पर प्राकृत शब्दराशि खड़ी की जा सकती है। यहाँ वर्ण विकृति के साधारण और आवश्यक नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) विजातीय—भिन्न वर्गवाले संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग प्राकृत में नहीं होता। अतः प्रायः पूर्ववर्ती व्यंजन का लोप होकर शेष को द्वित्व कर देते हैं। उदाहरण—

उत्फण्टा = उछठा—इस उदाहरण में विजातीय त् और क् का संयोग है, अतः पूर्ववर्ती त् का लोपकर शेष क को द्वित्व कर दिया है। ण् का अनुस्वार हो जाने से 'उछंठा' शब्द बना है।

नक्तवर, = नकंचरो—यहाँ भी त् + क् में से त् का लोप हो गया है और क् को द्वित्व हो गया है।

याज्ञवल्क्येन = जणवक्केण—में ज् + न् = ज्ञ में से ज् का लोपकर न् + ण् को द्वित्व कर दिया तथा ल् + क् + य् = क्य में से विजातीय वर्ग ल् + य् का लोपकर शेष क् को द्वित्व कर दिया है।

शक्र > सक्रो—र + क्—में र् का लोप और क् को द्वित्व।

धर्म > धम्मो—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।

विमलय > विक्करो—क् + ल् में से ल् का लोप और क् को द्वित्व।

उत्क्रा > उक्का—ल् + क् में ल् का लोप और क् को द्वित्व।

पञ्चम् > पक्कं, पिक्कं—च् + क् में से च् का लोप और क् को द्वित्व।

खड्ग > खग्गो—ङ् + ग् में से ङ् का लोप और ग् को द्वित्व।

अरनीन् > अरिग्गो—ग् + न् में से न् का लोप और ग् को द्वित्व।

योरयः > जोग्गो—ग् + य् में से य् का लोप और ग् को द्वित्व।

१. क-ग ट-उ त-द-प-श-ष-स-~~व~~-~~व~~ पापध्वं लुग् ८।२।७७. एषा सनुत्तवर्णमवधि-
नामूर्ध्वं स्थितानां लुग् भवति । हे० ।

प्रनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम् ८।२।८६ पदस्थानादौ वर्तमानस्य शेषस्यान्त्येण च द्वित्व
भवति । हे० ।

- वचग्रहः > कअग्रहो—ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 मार्गः > मग्रो—र् + ग् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 वग्गा > वग्गा—ल् + ग् में से ल् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 सप्तविंशतिः > सत्तावीसा—प् + त् में से प् का लोप और त् को द्वित्व ।
 वर्णपुरम् > कण्णवरं—र् + ण् में से र् का लोप और ण् को द्वित्व ।
 मित्रम् > मित्त—त् + र् में से र् का लोप और त् को द्वित्व ।
 कर्म > कम्म—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व ।
 घर्म > घम्म—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व ।
 उत्सवः > उत्सवो—त् + स् में से त् का लोप और स् को द्वित्व ।
 उत्पलम् > उत्पलं—त् + प् में से त् का लोप और प् को द्वित्व ।
 उद्गति > उग्गद्—द् + ग् में से द् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 अभिमहः > अहिग्रहो—ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 भुक्तं > भुत्तं—क् का लोप हुआ और त् को द्वित्व ।
 मुद्ग > मुग्ग—द् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 दुग्धम् > दुस्सं—ग् का लोप और घ् को द्वित्व ।
 षट्फलम् > कपफलं—ट् का लोप और फ् को द्वित्व ।
 पञ्ज. > सज्जो—ज् का लोप और ज् को द्वित्व ।
 पुसः > सुत्तो—प् का लोप और त् को द्वित्व ।
 शुसः > गुत्तो—प् का लोप और त् को द्वित्व ।
 निश्चल. > णिचलो—ञ् का लोप और च् को द्वित्व ।
 गोष्ठी > गोष्टी—प् का लोप और ट् को द्वित्व ।
 षष्ठः > छट्टो—ष का लोप और ट् को द्वित्व ।
 निधुरः > निट्ठुरो—प् का लोप और ट् को द्वित्व ।
 रालिगः + रालिओ—स् का लोप ।
 स्नेहः > नेहो—स् का लोप ।
 अन्तःपाथः > अन्तप्पाथो—विस्र्ग का लोप और प् को द्वित्व ।

अपवाद—ग्, ण्, न्, ज्, ष् और झ ।

(२) वर्ग के पाँचवें वाक्षरों का अपने वर्ग के वाक्षरों के साथ भी वहाँ-वहाँ संयोग होता जाता है । यथा—

भट्टः > अट्टो, अटो—ह् + क् का संयोग है ।

भट्टारः > इट्टारलो ।

छात्रृन्तम् > तालवेण्टं ।

वधनीयम् > वधनीयम् ।
 स्पन्दनम् > फन्दनम् ।
 उदुम्परं > उदुम्बरम् ।

(३) शब्दों के अन्त में रहनेवाले हल्के व्यंजन का सार्ग लोप होता है ।^१ जैसे—

जाव < यावत्—अन्तिम हल्के व्यंजन त् का लोप हुआ है ।

ताव < तावत् " "
 जसो < यशम्—हल्के स् का लोप हुआ है ।

णह < नभम् " "
 सिर < शिरस् " "
 तम < तमस् " "

(४) अत् और उत् हल दोनों शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप नहीं होता ।^२ यथा—

सद्धा < अद्धा—अत् के अन्तिम हल्के व्यंजन त् का लोप नहीं हुआ है ।

उण्णय < उग्रयम्—उत् के अन्तिम हल्के व्यंजन त् का लोप नहीं हुआ है ।

(५) निर् और दुर के अन्तिम व्यंजन र् का लोप शिरोक्षेप से होता है ।^३ जैसे—

निरसहं, नीसह < निर् + सहम्—यहाँ निर् के र् का लोप शिरोक्षेप से हुआ है ।

दुरसहो, दूसहो < दुरस्ह —दुर के र् का लोप होने पर दूसहो और लोपा-
 भाय में दुरसहो शब्द बनता है ।

(६) स्वर वर्ग के पर में रहने पर अन्तर्, निर् और दुर के अन्त्य व्यंजन का लोप नहीं होता ।^४ जैसे—

अन्तरत्पा < अन्तरात्पा—अन्तर् के र् का लोप नहीं हुआ है ।

अन्तरिदा < अन्तरिदा " "

निरुत्तर < निरुत्तरम्—निर् के र् का लोप नहीं हुआ है ।

निराबाधं < निराबाधम् " "

निरवसेसं < निरवसेपम् " "

१. भ्रन्त्यव्यञ्जनस्य दा१।११. शब्दानां यद् अत्यव्यञ्जनं तस्य लुग् भवति । हे० ।

२. न थयुदो दा१।१२. थद् उद् इत्येतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य लुग् न भवति । ह० ।

३. निर्दुंतेवा दा१।१३. निर् दुर इत्येतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य वा लुग् भवति । ह० ।

४. स्वरेन्तरच दा१।१४. अन्तरा निर्दुंतेरन्त्यव्यञ्जनस्य स्वरे परे लुग् न भवति । ह० ।

दुरुत्तरं < दुरुत्तरम्—दुर् के र् का लोप नहीं हुआ है ।

दुरागदं < दुरागतम् " "

दुरवगाहं < दुरावगाहम् " "

विशेष—कहीं-कहीं निर् के रेफ का लोप देखा जाता है ।^१ जैसे—

अन्तोपरि < अन्तर् + उपरि—यहाँ अन्तर् के रेफ का लोप हुआ है ।

णिरुक्कण्ठं < निरुक्कण्ठम्—निर् के रेफ का लोप हुआ है ।

(७) विद्युत् शब्द को छोड़कर स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान सभी व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है ।^२ ईपत्स्पृष्टसर होनेवाली^३ यभ्रुति के अनुसार भा के स्थान पर या भी हो जाता है । जैसे—सरिया, सरिअ < सरित्—अन्तिम हलन्त व्यञ्जन त् का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है ।

संपया, संपआ < संपद्—अन्तिम हलन्त व्यञ्जन का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है ।

वाया, वाआ < वाक् " " "

अच्छरा < अप्सरम् " " "

पडिवया, पडिवआ < प्रतिपद् " " "

वाआच्छलं < वाञ्छलम्—क् के स्थान पर आ हुआ है ।

वाआविहयो < वाग्विभव—ग् के स्थान पर आ हुआ है ।

विशेष—विद्युत् शब्द का प्राकृत में विज्जु होता है ।^४

(८) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान रेफान्त शब्दों के अन्तिम र् को रा आदेश होता है ।^५ जैसे—

गिरा < गिर् (गीः) हलन्त व्यञ्जन र् के स्थान पर रा हो गया है ।

धुरा < धुर् (धूः)— " " "

पुरा < पुर् (पूः)— " " "

महुअमहुरगिरा < मधूअमधुरगिरिः— " "

(९) शुध् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का 'हा' आदेश होता है ।^६ यथा—

१. क्वचिद् भवत्यपि ८।१।१४ की वृत्ति हे० ।

२. त्रियामादविद्युत. ८।१।१५. त्रिया वर्तमानस्य शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य आत्वं भवति विद्युच्छब्दं वर्जयित्वा । हे० ।

३. बहुलाधिवाराद् ईपत्स्पृष्टसरपश्रुतिरपि—८।१।१५ की वृत्ति । हे० ।

४. अविद्युत इति किम्—उपपुंक्तं सूत्र की वृत्ति ।

५. रो रा ८।१।१६. त्रिया वर्तमानस्यान्त्यस्य रेफस्य रा इत्यादेशो भवति । आत्त्वापवाद । हे०

६. शुधो हा ८।१।१७. शुध् शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हादेशो भवति । हे० ।

हुहा < धुत् ता धुप्—अन्त्य व्यञ्जन त् या ध् के स्थान पर 'हा' हुआ है ।

(१०) शरत् प्रभृति शब्दों के अन्तिम हलन्त्य व्यञ्जन के स्थान पर अ आदेश होता है ।^१ यथा—

सरअ < शरत्—त् के स्थान पर अ हुआ है ।

भिसअ < भिक्—क् के स्थान पर अ हुआ है ।

(११) दिन् और प्राट्प् शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों के स्थान में स आदेश होता है ।^२ जैसे—

दिसा < दिक्—क् के स्थान पर स आदेश हुआ है ।

पाउसो < प्राट्—ट् के स्थान पर स आदेश हुआ है ।

(१२) आयुप् और अप्सरात् के अन्त्य व्यञ्जनों का विस्मय से स आदेश होता है ।^३ यथा—

दीहाउसो, दीहाऊ < दीर्घायुस्, दीर्घायुः ।

अच्छरसा, अच्छरा < अपसस्, अपसराः ।

(१३) ककुम् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन को ह आदेश होता है ।^४ जैसे—

कउहा < ककुम्, ककुप्—म् के स्थान में ह हुआ है ।

(१४) धनुप् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान में विस्मय से ह आदेश होता है ।^५ यथा—

धणुहं, धणू < धनुप्, धनुः—प् के स्थान पर विस्मय से ह हुआ है ।

विस्मयाभाव पक्ष में प् का लोप हो गया है और पूरी सर को दीर्घ कर दिया है ।

(१५) स् के अतिरिक्त अन्य व्यञ्जनों के स्थान पर भी विस्मय से अनुस्वार होता है ।^६ यथा—

सकसं < साक्षात्—त् के स्थान पर अनुस्वार हुआ है ।

जं < यत्—त् के स्थान पर अनुस्वार ।

तं < सत्—

”

”

१. शरदादेरत् ८।१।१८. शरदादेरन्त्यव्यञ्जनस्य अन् भवति । हे० ।

२. शरदो व. ४।१०. शरच्छब्दस्यान्यहन्ता दो भवति । यया-मरदो—वर० ।

३. दिन् प्रावृषोः स. ८।१।१६. एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो भवति । हे० ।

४. प्राट्प् अप्सरात् ८।१।२०. एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो वा भवति । हे० ।

५. ककुभो ह. ८।१।२१. ककुम् शब्दस्यान्यव्यञ्जनस्य हो भवति । हे० ।

६. धनुषो वा ८।१।२२. धनु शब्दस्यान्यव्यञ्जनस्य हो वा भवति । हे० ।

७. बहुताधिकाराद् अन्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकार. । ८।१।२४ सूत्र की वृत्ति—हे० ।

संफासो < संफरसो = संस्पर्शः—रू का लोप और स् लोप द्वित्व, पश्चात्
स् लुक् और दीर्घ ।

आसो < आरसो = अरयः—यू लोप, द्वित्व, सणोप और दीर्घ ।

वीससइ < विससइ = विससति— " "

वीसासो < विस्सासो = विस्वातः— " "

दूसासगो < दुश्शामनः—दू का लोप और दीर्घ

मणासिता < मनःतिष्ठा— " "

सीसो < सिरसो = सिध्यः—यू लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।

पूसो < पुस्सो = पुण्यः— " " " "

मणूसो < मणुस्सो = मनुष्यः— " " " "

फासओ < फस्सओ = कपंकः—रू लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।

वासा < वरसा = वर्षा— " " " "

वासो < वरसो = वर्षः— " " " "

वीसागो < विस्साण = विद्याणः—व लोप " "

वीसुं < विस्सुं = विष्युः—वू लोप, उत्तर, स को द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।

निसित्तो < निसिसित्तो = निष्पिनः—यू लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।

सासं < सस्सं = मत्स्यम्—य लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।

कासइ < फरसइ = कस्यचित्— " " "

ऊसो = उरसो > उरमः—रू लोप, स् द्वित्व; स् लोप और दीर्घ ।

धीसंभो = विसंभो > विमंभः—व लोप, " "

विहासरो = विहरसरो > विहस्वरः— " " "

नीसो = निरसो < निरस्य— " " "

नीसदो < निरसदः—स लोप और दीर्घ

(१९) समृद्धगदि गण के शब्दों में आदि अकार को विकल्प से दीर्घ होता है । उदाहरण—

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः ।

पाअडं, पअडं < प्रकटम् ।

१. अतः समृद्धचादौ वा < २।१।४४, समृद्धि इयेवमादिषु शब्देषु आदेवारस्य दीर्घो वा भवति । समृद्धि गण के शब्द निम्न हैं—

समृद्धि प्रतिनिधिश्च प्रमिद्धिः प्रकट तथा ।

प्रमुत्तञ्च प्रतिस्पर्द्धी प्रतिपद्य मनम्बिनी ॥

अभिजाति. महेश्वरच समृद्धादिरयं गण. । —कपालनिवृत्त

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः ।
 पाडिवआ, पडिवआ < प्रतिपदा ।
 पासुत्तं, पसुत्तं < प्रसुप्तम् ।
 पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धिः ।
 सारिच्छो, सरिच्छो < सदृशः ।
 माणंसी, मणंसी < मनस्वी ।
 माणंसिनी, मणंसिनी < मनस्विनी ।
 आहिआई, अहिआई < अभियाति ।
 पारोहो, परोहो < प्ररोहः ।
 पावासु, पवासु < प्रवासी ।
 पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्द्धी ।

विशेष—प्राकृत प्रकाश में इस गण को आकृतिगण माना गया है।^१ हेमचन्द्र^२ ने भी आकृतिगण होने से निम्न शब्दों की भी निष्पत्ति यतलायी है ।

आफंसो < अस्पर्शः
 पारकेरं, पारक्कं < परकीयम् ।
 पावयणं < प्रवचनम् ।
 चाउरन्त < चतुरन्तम् ।

(२०) दक्षिण शब्द में आदि अकार को ह के पर में रहने पर दीर्घ होता है।^३ जैसे—

दाहिणो = दक्षिणः—क्ष के स्थान पर ह होने से दीर्घ हुआ है । क्ष के स्थान पर ह नहीं होने पर 'दक्षिण' का दक्षिणो यह रूप बनता है ।

(२१) स्वप्न आदि शब्दों में आदि अ पा इकार होता है।^४ उदाहरण—

सिधिणो, सिमिणो, मुमिणो < स्वप्नः ।
 इंसि < ईषत् ।
 वेडिसो < वेतस
 विलिअं < व्यलीकम् ।
 विअणं < व्यजनम् ।

१. प्रा सगृह्यादिमु वा १।२ —आकृतिगणोयम् । वर० ।

२. आकृतिगणोयम् तेन अस्पर्शं, आफंसो-इत्यादि वा।१।४४ सूत्र की वृत्ति हे० ।

३. दक्षिणे हे वा।१।४५. दक्षिणसादे आदेरतो हे परे दीर्घो भवति ।

४. इः स्वप्नादी वा।१।४६. स्वप्न इत्येवमादिषु आदेरग्य इत्वं भवति । हे० ।

इदोपपन्न स्वप्नेतेतम्यजनमृदन्नाहारेषु १।३ वर० ।

मुङ्गो < मृदङ्गः ।
 किविणो < कृपणः ।
 उत्तिमो < उत्तमः ।
 मिरिञ्चं < मरिचम् ।
 दिण्णं < दन्तम् ।

(२२) प२२, अङ्कार और लण्ट शब्द को विकल्प में हकार होता है ।^१ जैसे—

पिक्कं, पक्कं < पस्वम्
 इंगालो, अङ्गारो < अङ्कारः
 णिडालं, णडालं < लण्टम्

(२३) मध्यम और क्तम शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर इत्व होता है ।^२ जैसे—

मज्झिमो < मध्यमः
 कट्ठमो < क्तमः

(२४) सप्तर्ण शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर विकल्प से इत्त होता है ।^३ यथा—

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो < सप्तर्णः

(२५) हर शब्द में आदि अकार के स्थान पर विकल्प से ईकार होता है ।^४ यथा—
 हीरो, हरो < हरः

(२६) धनि और विप्प शब्द में अकार के स्थान पर उकार होता है ।^५ जैसे—
 मुण्णो < ध्वनिः—ध् के स्थान पर म् हुआ है और य का सम्प्रसारण होने से उ हुआ है ।

धीसु' < विट्ठम्—यहाँ पर भी घ् का संप्रसारण हुआ है ।

(२७) वण्ण और सण्णित शब्दों में आदि अकार का विकल्प से णकार सहित उत्पन्न होता है ।^६ यथा—

१. पक्काङ्गार-मलाटे वा ८।१।४७. एण्वादेरत्त इत्ति वा भवति । हे० ।

२. मध्यमवत्तमे द्वितीयस्य ८।१।४८. मध्यमशब्दे क्तमशब्दे च द्वितीयात् इत्वं भवति । हे० ।

३. सप्तर्णो वा ८।१।४९. सप्तर्णो द्वितीयस्यात् इत्वं वा भवति । हे० ।

४. ईहरो वा ८।१।५१. हरशब्दे आदेरत्त ईवां भवति । हे० ।

५. ध्वनि विप्पचोर. ८।१।५२. धनयोरादेरस्य उत्वं भवति । हे० ।

६. वण्णसण्णितेण वा ८।१।५३. धनयोरादेरस्य णकारेण सहितस्य उत्वं वा भवति । हे० ।

युन्द्रं, यन्द्रं < वन्द्रं—अकार के स्थान पर नृ (ण्) सहित उत्त्व हुआ है ।
खुड्डिओ, सण्डिओ < खण्डितः—

(२८) गण्य शब्द में वकार के अकार के स्थान पर उत्त्व होता है ।^१ जैसे—
गडओ, गडआ < गवयः ।

(२९) प्रथम शब्द में पकार और थकार के स्थान पर युगपत् और क्रमशः उकार होता है^२ । जैसे—

पुडुमं, पुडमं, पडुमं, पडमं < प्रथमम्

(३०) अभिज्ञ आदि शब्दों में णत्व करने पर श के आकार का उत्त्व होता है ।^३ जैसे—

अहिण्णू < अभिज्ञ.

सव्णणू < सर्वज्ञ—शौरसेनी में सव्णणो और पैशाची में सव्णणो ।

आगमण्णू < आगमज्ञः ।

विशेष—णत्वाभाव में अहिज्जो < अभिज्ञ., सव्ज्जो < सर्वज्ञ होते हैं ।

(३१) शय्या आदि शब्दों में आदि अकार का पकार आदेश होता है ।^४
जैसे—सेज्जा < शय्या—अकार का पकार और य्वा का ज्जा ।

सुंदेरं < सुन्दरम्—दकारोत्तर अकार का पकार ।

उक्केरो < उत्करः—उ का लोप और क को द्वित्व तथा अ को पकार ।

तेरहो < त्रयोदशः—त के र का लोप, अक्षर को पकार तथा दश के स्थान में रहा ।

अच्छेरं < आश्चर्यम्—पूर्वर्तो आ को द्वित्व कर विषा और र्च के अ को पकार तथा र्च के स्थान पर ऊउ ।

पेरंतं < पर्यंतम्—अक्षर को पकार ।

वेल्ली < वल्लि —

१. गवये च ८।१।५४. गण्यशब्दे वकारावरस्य उत्त्वं भवति । हे० ।

२. प्रथमे पयोर्वा ८।१।५५. प्रथमशब्दे पकारयवारायोरकारस्य युगपत् क्रमेण च उकारो वा भवति । हे० ।

३. जी एत्वेभिजादौ ८।१।५६. अभिज्ञ एवं प्रकारेषु ज्ञस्य एत्वे कृते ज्ञस्यैव अत्र उक्तं भवति । हे० ।

४. एच्छम्यादौ ८।१।५७. शय्यादिषु आदेरस्य एत्व भवति । हे० । शय्यात्रयोदशारचयं पर्यन्तोत्तरवत्त्वयः । सीन्दर्यं चेति शय्यादिगणः शेषस्तु पूर्ववत् ।

गोष्ठुअं—कण्डुसम्—क के स्थान पर ग और ककार को पढ़ा, इत्यत्र क के स्थान पर मूर्च्छा द, क का शेष और स्थर नेत्र ।

पदार्थ-द्वय-अत्र-य-का-पूर्व-तया-य-का-एव ।

(३२) मध्ययुग शास्त्र में चरितोत्तरार्ध अ के स्थान पर पुरुष होगा है ? ज्ञेय—

समृद्धिरेवं मन्त्रार्थम् ।

(२१) अन्तर् शब्द में समावेशार्थी प्रकार के स्थान पर पड़ा होगा है ।

११—

અન્તોરં < મન્તપુરં । અન્નેઆરં < મન્તપ્રારં ।

यहाँ आता। वाक्य में सहायोगकर्ता अव्यय को पद नहीं होता है।³ जैसे—

अन्तरादयं < अन्तरागतम् ।

अन्तो-धीसम्भनियेसिआणं < अन्त विष्णुसम्भनियेति।

(३५) पद्म शब्द के नादिके अक्षर के स्थान पर जोरदा होता है ।^४ जैसे—

पोद्गमं, पउमं < पद्मम् ।

(१५) भक्तकार और परंपरा शब्द में द्वितीय अक्षर के स्थान पर ओट्टा होता है । यथा—

नमोऽकारो \triangleleft नमस्कारः ; परोक्षं \triangleleft पारस्वम् ।

(३६) अदि धातु में आदि के अ को रिक्त्य से ओ होता है । जै—

ओष्पेह, अप्पेह अर्पयति—गोश्व के गभाज में गुरा होता है।

ओटिपअं. अटिपअं < अभितम् ।

(१७) स्वप्न धाम में आदि के अ के स्थान पर और और उद्भावेन होते हैं। जैसे सोय, सुय, स्वप्ति ।

(३८) मन् के बाद में आनेवाले पुनर् वाक्य के अ के स्थान में वा और वाह विरूप से आदेश होते हैं । जैसे—

१. ब्रह्मवर्षे च. ८।१।२६. ब्रह्मवर्षेऽक्षरे चम्य द्वा एव भवति । हे० ।

२. तोत्तरि ६।१।६०, अक्षरशब्दे तस्य भाग एव भाति । हे० ।

३. वसपिन्त भवति । हे० ।

४. मोक्षदमे ५।१।६१. पच सन्दे आदेरत मोक्षं भवति । हे० ।

५. ममस्तार-परम्परे द्वितीयस्य ८।१।६२. प्रत्योद्वितीयस्य अथ श्लोके भवति । ६० ।

६. वर्षा ८।१।६३, अश्विनी चानौ आदेरम्य मोत्रं वा भगति । हे० ।

७. राणापुत्र्य द० १६४. स्वपिनी धानी आदेशस्य प्रोक्तं न भवति । हे० ।

८. नापुनर्वादि या ८।१।६५. नत्र. परेपुन रुन्ते आदेशस्य सा आद इत्यादेशौ
या भवत. । हे० ।

ण उणा < न पुनः—आ आदेश हुआ है ।

ण उणाई < न पुनः—आइ आदेश हुआ है ।

ण उण < न पुनः—विस्फ भव पक्ष में ।

(३९) अन्यर्था में और उत्खात, चामर, कालक, स्थापित, प्रतिस्थापित, संस्थापित, प्राकृत, तालवृत्त, हार्मिक, नारायण, बलासा, कुमार, खादित, प्राक्षण एवं पूर्वाङ्ग शब्दों में आदि आकार का अकार विस्फ से होता है ।^१ मञ्जारो माञ्जारो < माजोरः

मरलो, मरालो < मरालः

पहरो, पहारो < प्रहारः

तह, तहा < तथा

उकरअं, उरराअं < उत्खातम्

कलओ, कालओ < कालः

परिठविअं, परिठाविअं < प्रतिष्ठापितम्

पडअं, पाडअं < प्राकृतम्

हलिओ, हालिओ < हारिकः

बलाआ, बलाआ < बलाका

रइअं, खाइअं < खादितम्

पुव्यण्हो, पुवराण्हो < पूर्वाः

चाडू, चडू < चाटुः

पथरो, पथारो < प्रस्तारः

जह, जहा < यथा

अहय, अहया < अथवा

चमरं, चामरं < चामरम्

ठविअं, ठाविअं < स्थापितम्

संठविअं, संठाविअं < संस्थापितम्

तलवेण्टं, तालवेण्टं < तालवृत्तम्

णराओ, णराओ < नारायः

कुमरो, कुमारो < कुमारः

बम्हणो, बाम्हणो < प्राक्षणः

दवगगी, दावगगी < दवाभिः

(४०) घन् को निमित्त मानकर जई आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का विकल्प से अस्व होता है ।^२ जैसे—

पयहो, पयाहो < प्रवाहः

पअरो, पआरो < प्रकारः

पथवो, पथावो < प्रस्तार

अपवाद—कुछ घप्रत्यय शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता । जैसे—

राओ < रागः

(४१) मांस आदि शब्दों में अनुस्वार रहने पर आदि आकार का अस्व होता है ।^३ जैसे—

१. वाध्यपोसातादावदात्त. ७।१।६८. अय्ययेपु उत्खातादिपु च शब्देषु आदेराकारस्य भद्र वा भवति । हे० ।

२. घन् वृद्धेर्वा ८।१।६८ घन् निमित्तो यो वृद्धिरूप आवासरस्त्वादिभूतस्य घद् वा भवति । हे० ।

३. मासदिभनुस्वारे ८।१।७०. मासप्रवारेषु भनुस्वारे सति आदेरात्. घद् भवति । हे० ।

भंसं < मांसम्

पंसू < पांसुः

पंसणो < पांसनः

कंसं < कांसम्

कंसिओ < कांसिकः

कंसिओ < कांसिकः

संसिद्धिओ < सांसिद्धिकः

संजत्तिओ < सांजत्तिरिः

(४२) श्यामाक में मकार के आकार को अत् होता है ।^१ यथा—

सामओ < श्यामाकः

(४३) महाराष्ट्र शब्द में आदि के आकार को अत् होता है ।^२ यथा—

मरहट्ट, मरहट्टो < महाराष्ट्रः—यहाँ वर्ज विपर्यय भी हुआ है ।

(४४) सदा आदि शब्दों में विकल्प से आकार के स्थान पर इकार आदेश होता है ।^३ उदाहरण—

सइ, सआ < सदा—द्वितीय रूप विकल्पाभाव पक्ष का है ।

तइ, तआ < तदा—

”

”

जइ, जआ < यदा—य के स्थान पर ज होता है ।

णिसिअरो, णिसाअरो < निशाचरः—द्वितीय रूप विकल्पाभाव का है ।

(४५) यदि आर्षा शब्द खधु (सास) के अर्थ में प्रयुक्त हो तो ‘य’ के पूर्ववर्ती आकार के स्थान में ऊ होता है ।^४ जैसे—

अज्जू < आर्षा—सास के अर्थ में;

अज्जा < आर्षा—श्रेष्ठ अर्थ में

(४६) आचार्य शब्द में चरारोत्तरवर्ती आकार के स्थान पर इत्व और अत्न होता है ।^५ यथा—

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः

(४७) स्थान और खल्वाटे शब्द में आदि आकार के स्थान पर इकार आदेश होता है ।^६ जैसे—

ठीणं, थीणं, थिण्णं < स्थानम्—स्त् के स्थान में थ और थ के स्थान में थिण्ण व हुआ है ।

खल्लीडो < खल्वाटः

१. श्यामाके मः ८।१।७१. श्यामाके मस्य आतः अद् भवति । हे० ।

२. महाराष्ट्रे ८।१।६६. महाराष्ट्रशब्दे आदेशकारस्य अद् भवति । हे० ।

३. इ. सदादी वा ८।१।७२. सदादिषु शब्देषु आत इत्वं वा भवति । हे० ।

४. आर्षाया य. धश्वाम् ८।१।७७. आर्षाशब्दे श्वञ्चा वाच्याया यस्यात ऊर्भवति । हे० ।

५. आचार्ये चोच्च ८।१।७३. आचार्यशब्दे चस्य आत इत्वं अत्वं च भवति । हे० ।

६. ई. स्थान खल्वाटे ८।१।७४. स्थानखल्वाटयोरादेशात् ईर्भवति । हे० ।

(४८) आसार शब्द में आदि आकार के स्थान पर विकल्प से ऊद् होता है ।^१ जैसे—

ऊसारो, आसारो < आसारः

(४९) द्वार शब्द में आकार के स्थान में विकल्प से एद् होता है ।^२ यथा—
देरं, दुआरं, दारं, वारं < द्वारम्—प्रथम को छोड़, शेष विकल्पाभाव पक्ष के रूप हैं ।

(५०) पारापत शब्द में रकारोत्तरवर्ती आकार के स्थान में एद् होता है ।^३
यथा—

पारेवओ, पारावओ < पारापतः

(५१) आर्द्र शब्द में आदि के आत् के स्थान पर विकल्प से उकार और ओकार होते हैं ।^४ यथा—

उल्लं, ओल्लं, अल्लं, अर्दं < आर्द्रम्—उत्तरवर्ती रूप विकल्पाभाव पक्ष के हैं ।

(५२) ओली शब्द में पंक्तिवाची अर्थ होने पर आकार को ओकार होता है ।^५ जैसे—

ओली < आली, पंक्तिवाची अर्थ न होने पर आमी-सयी ही रहता है ।

(५३) संयोग से अव्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी-कभी ह्रस्व रूप हो जाता है ।^६ यथा—

अयं < आद्यम्

तयं < तद्यम्

पिरहग्गी < विरहाग्निः

आसं < आस्यम्

मुनिदो < मुनीन्द्रः

वित्थं < तीर्थम्

गुरुल्लावा < गुरुल्लापा

घुण्णो < घूर्णः

नरिंदो < नरेन्द्रः

मिलिन्धो < म्लेच्छः

अहरुहं < अघरोष्टम्

नीलुप्पलं < नीलोत्पलम्

विशेष—संयोग नहीं रहने से आयासं, ईसरो, ऊपरो आदि शब्दों में उक्त नियम की प्रवृत्ति नहीं होती ।

१. ऊद्वासादे ङ।१।७६. आमारशब्दे आदेरात् ऊद् वा भवति । हे० ।

२. द्वारे वा ङ।१।७६. द्वारशब्दे आत् एद् वा भवति । हे० ।

३. पारापते रो वा ङ।१।८०. पारापतशब्दे रस्यस्यात् एद् वा भवति । हे० ।

४. उदोद्वाद् ङ।१।८२. आर्द्रशब्दे आदेरात् ऊद् शेष वा भवतः । हे० ।

५. ओलीशब्दां पंक्ती ङ।१।८३. आलीशब्दे पंक्तिवाचिनि आत् ओल्वं भवति । हे० ।

६. ह्रस्वः संयोगे ङ।१।८४. दीर्घस्य यथादरान् संयोगे परे ह्रस्वो भवति । हे० ।

(५४) आदि इकार का संयोग के पर में रहने पर त्रिकल्प से प्रकार होता है ।^१

यथा—

पेण्डं, पिण्डं < पिण्डम्—द्वितीय रूप त्रिकल्पाभावात् पक्ष का है ।

णेदा, णिदा < निदा—

सेदूरं, सिदूरं < सिन्दूरम्—

धम्मेलं, धम्मिलं < धम्मिल्लम्—

वेण्ह, चिण्ह < विण्णः—

पेट्टं, पिट्टं < पट्टम्—

चेण्हं, चिण्हं < चिहम्—

वेल्लं, विल्लं < विस्ल्लम्—

विशेष—शौरसेनी में पिण्डादि शब्दों में एत्व नहीं होता । अतः पिण्डं, णिदा और धम्मिलं ये ही रूप पाये जाते हैं ।

(५५) पथि, पृथिवी, प्रतिभुत्, मूयिक, हरिद्रा और विभीतक में आदि इकार के स्थान पर अकार होता है ।^२ उदाहरण—

पहो < पथि

पुहई, पुठयी < पृथिवी—ह के स्थान पर ठ होने से पुठयी रूप बना है ।

पडंसुआ < प्रतिभुत्

मूसओ < मूयिक

हलही, हलहा < हरिद्रा—हरिद्रा शब्द में रेफ का ल होता है ।

यहेहओ < विभीतकः—‘वि’ की ई के स्थान पर अ हुआ है ।

विशेष—कुछ वैयाकरणों के मत में हरिद्रा शब्द में ईकार के स्थान पर अकार नहीं होता है । अतः हलिही, हलिहा ये रूप बनते हैं ।

(५६) वदर शब्द में दकार सहित अकार के स्थान पर ओकार होता है ।^३ यथा—

घोरं < वदरम्—वदरोत्तर अकार और दकार के स्थान पर ओकार हुआ है ।

(५७) लवण और नवमल्लिका शब्द में वकार सहित आदि अकार को ओकार होता है^४ । यथा—

लोणं < लवणं

णोमल्लिआ < नवमल्लिका

१. इत एदा ८।१।८५. आदेरिआरस्य संयोगे परे एकारो वा भवति । हे० ।

२. पथि-पृथिवी-प्रतिभुन्मूयिक-हरिद्रा विभीतकेष्वत् ८।१।८८ । हे० ।

३. ओ बदरे देन १।६. वर० ।

४. लवणनवमल्लिकयोर्वत् १।७. वर० ।

(५८) मयूर और मयूख शब्द में 'यू' के सहित आदि वर्णस्थ अकार को विकल्प से ओकार होता है ।^१ उदाहरण—

मोरो, मऊरो < मयूरः—यू सहित मऊरोत्तर अकार को ओकार हुआ है ।
विकल्पामाद्य पक्ष में यकार का लोप होने से मऊरो बना है ।

मोहो, मऊहो < मयूखः—

(५९) चतुर्थी और चतुर्दशी शब्द में 'तु' के सहित आदि अकार को विकल्प से ओकार होता है ।^२ यथा—

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी—तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से थ को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती थ् को स् हुआ है ।

चोदसी, चउदशी < चतुर्दशी—तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से द को द्वित्व हुआ है ।

(६०) हृष्टु और वृश्चिक शब्द के इकार को उकार होता है ।^३ यथा—उच्छु < हृष्टुः—छ के स्थान पर छादेश, छ को द्वित्व, पूर्ववर्ती छ् को च् किया है तथा इस सूत्र से इकार को उकार हुआ है ।

विच्छुओ < वृश्चिकः—फकार को इकार, श्र के स्थान पर ञउ और इकार के स्थान पर उकार हुआ है ।

(६१) जज इति शब्द त्रिंशो वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तब तकारवाले इकार का ङकार हो जाता है ।^४ जैसे—

इअ जं, पिअजसाणे < इति यावत् प्रियाजमाने—इति के स्थान पर इअ हुआ है ।

इअ पिअसिअ कुसुमसरो < इति विकसितकुसुमशरः—

इअ उअइ अण्णह यअण्णं < इति परत्ताणया वचनम्—

विशेष—इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर अत्र नहीं होता । जैसे—

पिअोसि < पिग इति—पादय के आदि में इति शब्द के न घामे में इअ नहीं हुआ, वरिष्ठ इ वा लोप होकर त् को द्वित्व हो गया है ।

पुरिमोसि < पुरय इति—

(६०) यहाँ निरू के रेफ का लोप होता है, यहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है ।^५ जैसे—

१. मयूरमयूखयोर्जा या १।८. पर० ।

२. चतुर्थी चतुर्दशीयोगुता १।८. पर० ।

३. अन्तिपुन्रिवक्त्योः १।१५. पर० ।

४. इती सो वाक्पिरी ८।१।११ । हे० ।

५. प्रीति निरः ८।१।११. निरू जगद्वय देवतो तति इज ईरापो भापि । हे० ।

णीसहो < निस्सहः—निर् के र् का छोप होने से नि. णि को दीर्घ हो गया है।

णीसासो < निःश्वास —

विशेष—रेफ का छोप नहीं होने पर ईकार नहीं होता। जैसे—

णिरओ < निरयः—रेफ का छोप न होने से णि को दीर्घ नहीं हुआ है।

णिरसहो < निस्सह —

(६३) द्विशब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है। कहीं-कहीं यह नियम लागू भी नहीं होता और कहीं विरूप से उरख और ओस्व होता है।^१ उदाहरण—

दुवाई, दुवे < द्वौ—द्वि शब्द में नित्य उत्त्व हुआ है।

दुषअणं < द्विषचनम्—

दुअणो, दिउणो < द्विगुणः—विरूप से उरख होने पर दुअणो और

विरूपाभाव पक्ष में दिउणो।

दुइओ, दिउओ < द्वितीयः—विपत्ताभाव पक्ष में दिउओ बनता है।

दिओ < द्विजः—द्विशब्द के विषय में नियम की अप्रवृत्ति।

द्विरओ < द्विरद—

दोषअणम् < द्विषचनम्—द्वि शब्द को ओस्व हुआ है।

गुमज्जइ < निमज्जति—नि उपसर्ग के इकार को उरख।

गुमणो < निगमन —

णिरइइ < निपतति—नि उपसर्ग के विषय में नियम की अप्रवृत्ति।

(६४) कृन् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओस्व और उरख होता है।^२ जैसे—

दोहाकअं < द्विधा कृतम्—ओकार हुआ है।

दुहाकअं < द्विधा कृतम्—उकार हुआ है।

दोहा किज्जइ < द्विधा कियते—ओकार हुआ है।

दुहा-किज्जइ < द्विधा कियते—उकार हुआ है।

विशेष—कृन् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा-गर्म < द्विधागतम् में यह नियम लागू नहीं होता। कहीं-कहीं केवल (कृन् रहित) द्विधा में भी उरख पाया जाता है। यथा—

१. द्विगोत्त्वं ८।१।६४. द्विशब्दे नावुपसर्गो च इत्त उद भवति । हे० ।

२. सोऽप्य द्विधाकृतः ८।१।६७. द्विधाशब्दे कृन्पातो. प्रयोगे इत्त ओत्वं चकारावुत्त्वं च भवति । हे० ।

दुहा रि सो सुर-ग्रह-सत्यो = द्विधापि च सुरवधूसार्थः ;

(६५) पानीय गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है ।^१ जैसे—

पाणिअं < पानीयम्—बहुल अधिकार होने से पाणीअं भी होता है ।

अलिअं < अलीकम्— " " अलीअं भी होता है

जिअइ < जीवति— " " जीअइ "

जिअउ < जीवतु— " " जीअउ "

बिलिअं < वीडितम्— " " विलीअं "

करिसो < करीषः— " " करीसो "

सिरिसो < शिरोपः— " " सिरीसो "

दुइअं < द्वितीयम्— " " दुईअं "

तइअं < तृतीयम्— " " तईअं "

गहिरं < गभीरम्— " " गहीरं "

उयणिअं < उपनीतम्— " " उवणीअं "

आणिअं < आनीतम्— " " आशीअं "

पलिषिअं < प्रदीपितम्— " " पलीषिअं "

ओसिअन्तो < अवसीदन्— " " ओसीअन्तो "

पसिअ < प्रसीद— " " पसीअ "

गहिअं < गृहीतम्— " " गहीअं "

वन्मिओ < वलमीकः— " " वन्मीओ "

तयार्णि < तदानीम्— " " तयार्णो "

१. पानीयादिष्वित् ८।१।१०१. पानीयादिषु शब्देषु ईत् इद् भवति । हे० ।

‘कल्पलतिका’ के अनुसार पानीयगण में निम्नलिखित शब्द हैं—

पानीयव्रीडितालीवद्वितीयं च तृतीयकम् ।

यथागृहीतमानोतं गम्भीरञ्च वरोपवत् ॥

इदानी च तदानीं च पानीयादिगणो यथा ।

‘प्राकृत मञ्जरी’ के अनुसार—पानीयव्रीडितालीवद्वितीयवरोपवत् ।

गम्भीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरयं गणः ॥

‘प्राकृत प्रकाश’ में उपनीत, आनीत, जीवति, जीवतु, प्रदीपित, प्रसीद, शिरोप, गृहीत, वल्मीक और अवसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं है ।

(४६) जीर्ण शब्द में, ईकार और उकार दोनों होते हैं ।^१ यथा—
जुण्णो, जिण्णो < जीर्णः

(६७) हीन और विहीन शब्दों में ईकार और ऊकार होते हैं ।^२ जैसे—
हूणो, हीणो < हीन ; विहूणो, विहीणो < विहीनः

(६८) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार सप्त होना है, जब कि उसके आगे का ध्वं ह हो गया हो ।^३ यथा—

तूर्ह < तीर्थम्—थ के स्थान में ह हुआ है और ईकार को ऊकार ।

तित्थं < तीर्थम्—थ के स्थान में ह नहीं होने से ऊकार का आभाव है ।

(६९) पीयूष, आपोड, विभीतक, कीदृश और ईदृश शब्दों में ईकार को पुकार होता है ।^४ जैसे—

पेऊसं < पीयूषम्

आमेलो < आपोडः—पकार को मकार और ईकार को पुकार तथा ड को ल ।

बहेडओ < विभीतक—

केरिसो < कीदृशः

एरिसो < ईदृश.

(७०) नीड और पीड शब्दों में ईकार को णिकृष्ण से पृथ होता है ।^५ जैसे—

नेडं, नीडं < नीडम्

पेडं, पीडं < पीडम्—ड को ठ हुआ है ।

(७१) मुकुटादिगण के शब्दों में आदि डकार के स्थान में अकार आदेश होता है ।^६ जैसे—

मडलं < मुकुटम्—क का लोप होकर उकार जय है ।

गरुहं < गुर्वी—य के स्थान पर उ हुआ है और र तथा ह पृथक् हो गये हैं ।

मडडं < मुकुटम्—का का लोप और ट के स्थान पर ड हुआ है ।

जहुट्टिलो, जहिट्टिलो < युधिष्ठिर—य के स्थान पर ज, इकार के स्थान पर तत्त्व ।

१. जीर्णो ऽऽ१।१०२. जीर्णशब्दे इत उद् भवति । हे० ।

२. ३ ऊर्हीन-विहीने वा ऽऽ१।१०३. अनयोरीत ऊर्त्वं वा भवति । हे० ।

३. तीर्थे हे ऽऽ१।१०४. तीर्थशब्दे हे सति इत उत्प भवति । हे० ।

४. एषीयूपापीड विभीतक-कीदृशेशो ऽऽ१।१०५. एणु इत एत्वं भवति । हे० ।

५. नीड-पीडं वा ऽऽ१।१०६. अनयोरीत एत्वं वा भवति । हे० ।

६. उतो मुकुलादिष्वत् ऽऽ१।१०७. मुकुल इत्येवमादिषु शब्देषु आदेशत्वत्वं भवति । हे० ।

मुकुटं मुकुलं गुर्वीं मुकुमारो युधिष्ठिर ।

अणुस्परि शब्दौ च मुकुटादिरयं गणः । प्राकृतमंजरी ।

प्राकृत प्रकाश मे इसे मुकुटादिगण कहा है ।

सोअमल्लं < सौसुमार्थम्—र्य के स्थान पर ल, लकार का द्वित्व, फ का लोप और शेष उकार के स्थान पर अ ।

गलोई < गुडुधी—गकारोत्तरवर्ती उकार के स्थान पर अ, ड के स्थान पर ल, उकार का ओ और घ्र का लोप ।

विरोप—फर्हीं-कहीं प्रथम उकार का आकार भी होता है । यथा—

विहरओ < विद्रुतः—द्रु में से रेफ का लोप और द को द्वित्व तथा उकार को वा हुआ है ।

(७२) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ में क प्रत्यय दिया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार को विकल्प से अ आदेश होता है ।^१ जैसे—

गरुओ, गुरुओ < गुरुकः

स्वाधिक क के अभाव में गुरुओ (गुरुकः) होता है ।

(७३) झुकुटी शब्द में उकार के स्थान पर हकार होता है ।^२ जैसे—

भिठडि < भुकुटी—भु के रेफ का लोप और उकार के स्थान पर हत्व, फ का लोप तथा ड के स्थान पर ड ।

(७४) पुरुष शब्द में रु के उकार को ह्रस्व होता है ।^३ जैसे—

पुरिसो < पुरुषः—रु के स्थान पर रि हुआ है ।

पउरिपं < पौरपम्—पौ के स्थान पर प + उ, र के स्थान पर रि ।

(७५) क्षुत्त शब्द में आदि के उकार को ईत्वं होता है ।^४ यथा—

छीअं < क्षुत्तम्—क्षु के स्थान पर छी और त का लोप ।

(७६) सुभग और मुमल शब्दों में उकार को विकल्प से ऊत्वं होता है ।^५ यथा—

सूहओ, सुहओ < सुभग, मुहओ < मुमल—सु के स्थान पर सू, भ के स्थान पर ह और ग का लोप ।

मूसलं, मुसलं < मुप्पम्—विस्वप्पमाय पक्ष में मुमलं ।

(७७) उल्लाह और उल्लन्न शब्दों को छोड़कर इसी प्रकार के अन्य शब्दों में लस और लज के पर में रहने पर र्ण के आदि उकार का दीर्घ अकार होता है ।^६ जैसे—

१. पुरी के वा ८।१।१०६. । हे० ।

२. झुंझुटी ८।१।११०. । हे० ।

३. पुरे रोः ८।१।१११. । हे० ।

४. ईः दुते ८।१।११२. । हे० ।

५. उल्लुग मुमले वा ८।१।११३. । हे० ।

६. पनुगादोप्यन्ते लप्ये ८।१।११४. । हे० ।

ऊसुओ < उत्सुरुः—उ के स्थान पर ऊ, त् का लोप तथा क का लोप और विसर्ग की भोत्व ।

ऊसुयो < उत्सवः— " " ष का लोप और विसर्ग की भोत्व ।

ऊसित्तो < उत्सित्तः—उ के स्थान पर ऊ त् का लोप और संयुक्त स में से फ् का लोप तथा अवशेष त् की द्वित्व ।

ऊच्छुओ < उच्छुकः—उ के स्थान में ऊत्त और क का लोप, विसर्ग की भोत्व ।

विशेष—उच्छाहो < उत्साह—यहाँ दीर्घ ऊकार नहीं हुआ है ।

उच्छणो < उच्छन्न— " " "

(७८) वुर् उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है । जैसे—

वूसहो, वूसभो < दुस्तदः—दूसरा रूप विकल्पाभाव पक्ष का है ।

वूहभो, वूहभो < दुर्भगः— " "

(७९) संयुक्त अक्षरों के पर में रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकार होता है । जैसे—

तोण्डं < तुण्डम्—उकार के स्थान पर ओकार हुआ है ।

मोण्डं < मुण्डम्— " " "

पोक्करं < पुक्करम्—पु में रहनेवाले उकार के स्थान पर ओकार तथा फ् के स्थान पर पक्ष ।

कोट्टिमं < कुट्टिमम्—उकार के स्थान पर ओकार ।

पोत्थर्धं < पुत्थर्धम्—उकार के स्थान पर ओकार तथा स्त के स्थान पर थ और क का लोप, घेष अ ।

लोद्धओ < लुद्धकः—उकार के स्थान पर भोत्व, ष् का लोप और थ की द्वित्व ।

मोत्ता < मुत्ता—उकार के स्थान पर ओकार, संयुक्त क् का लोप और त् की द्वित्व ।

६. लुंकि दुरो वा ८।१।११५. । हे० ।

१. प्रोत्संयोगे ८।१।११५. हे०

तुण्डादिगण के शब्द—

तुण्डकुट्टिमकुदालमुक्तामुदगरलुब्धवाः ।

पुत्तकज्वैवमन्येऽपि कुम्भीनुत्तलपुण्डराः ॥ नत्पनत्तिका

भिगारो < भृंगारः—भृ की ऋ के स्थान पर इ ।

किसो < कृशः—कृ की ऋ के स्थान पर इ ।

चिञ्चुओ < चृञ्चिकः—चृ की ऋ के स्थान पर इ और च के स्थान पर अ तथा इकार को उकार ।

विहिओ < वृंहितः—वृ की ऋ के स्थान पर वि ।

तिट्पं < तृप्तम्—तृ की ऋ के स्थान पर इ, त का लोप और प को द्वित्व ।

किञ्चं < कृत्तम्—कृ की ऋ के स्थान पर इ और त्व के स्थान पर च ।

हिअं < हृत्तम्—हृ की ऋ के स्थान पर इ, त का लोप तथा अ इतर शेष ।

यित्तं < युत्तम्—यृ की ऋ के स्थान पर इकार ।

यित्ती < युत्तिः—यृ की ऋ के स्थान पर इकार और ति को दीर्घादेश ।

विसी < वृषिः—वृ की ऋ के स्थान पर इकार और पि को दीर्घ तथा दन्त्य ।

सइ < सट्—कृ की ऋ के स्थान पर इ तथा अन्तिम ह्रस्व व्यंजन त् का लोप ।

हिअअं < हृदयम्—हृ की ऋ के स्थान पर इकार, व और य का लोप और स्वर शेष ।

दिट्ठी < दृष्टिः—दृ की ऋ के स्थान पर इत्त्व तथा संयुक्त प का लोप और ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ ।

गिट्ठी < गृष्टिः—गृ की ऋ के स्थान पर इकार और ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ ।

भिगो < भृंगः—भृ की ऋ के स्थान पर इकार ।

सियालो < शृगालः—शृ की ऋ के स्थान पर इत्त्व, ग का लोप और स्वर शेष ।

विड्डी < वृद्धिः—वृ की ऋ के स्थान पर इकार, दन्त्य के स्थान पर मूर्धन्य वर्ण और दीर्घ ।

चिणा < चृणा—चृ की ऋ के स्थान पर इकार ।

किर्छं < कृच्छ्रम्—कृ की ऋ के स्थान पर इकार ।

निघो < नृप—नृ की ऋ के स्थान पर इकार और प को य ।

विहा < वृहा—वृ की ऋ के स्थान पर इ और प को व ।

गिड्डी < गृद्धिः—गृ की ऋ के स्थान पर इ और दन्त्य वर्णों का मूर्धन्य ।

किसरो < कृशरः—कृ की ऋ के स्थान पर इ ।

धिई < धृति—धृ की ऋ के स्थान पर इ, त्त्वर का लोप और स्वर शेष ।

किवाणं < कृषाणम्—कृ की ऋ के स्थान पर इ और त का लोप, स्वर शेष ।

वाहित्तं < व्याहृतम्—व्या के स्थान पर वा, हृ की ऋ के स्थान पर इकार ।

इसी < ऋषिः—ऋ के स्थान पर इ और पि के स्थान पर दीर्घ सी ।

वितिण्हो < वितृण्—वृ की ऋ के स्थान पर इ और ण के स्थान पर ण्ह ।

मिट्ठं < मृष्टम्—मृ की ऋ के स्थान पर इकार ।

सिट्ठुं < सृष्टम्—सृ की ऋ के स्थान पर इ तथा संयुक्त सकार का लोप, ट को द्वित्व ।

पिट्ठी < पृथ्वी—पृ की ऋ के स्थान पर इ तथा ऋ के स्थान पर एठी ।

समिद्धी < समृद्धिः—सृ की ऋ के स्थान पर इकार और ह्रस्व को दीर्घ ।

क्रियो < कृपः—कृ की ऋ के स्थान पर इ और प का व ।

उक्किट्टुं < उत्कृष्टम्—ठ की ऋ के स्थान पर उत्त्व, त् का लोप और क् को द्वित्व, प् का लोप तथा ट को द्वित्व ।

विकल्प से ह्रस्व—

बिसो, घसो < वृषः

किण्हो, कण्हो < कृणः

महिबिद्धं < महीपृष्ठम्—यहाँ उत्तरपद रहने से पृष्ठ शब्द में विकल्प से ह्रस्व नहीं हुआ ।

(८२) कृत प्रभृति शब्दों में आदि ऋकार को उकार होता है । उदाहरण—

उट्टु < ऋतुः—ऋकार के स्थान पर उ और त के स्थान पर द ।

पउत्ती < प्रवृत्तिः—प्र के स्थान पर प, व का लोप और ऋ के स्थान पर उ तथा ति को दीर्घ ।

परामुट्टो < परामृष्टः—सृ की ऋ के स्थान पर उकार, प् का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट को ट ।

पाउसो < प्रावृट्—प्र का प, व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और ट् को त

परहुओ < परभृतः—भृ की ऋ के स्थान पर उरत्त्व, भ के स्थान पर ह ।

णिव्युअं, णिव्युदं < निर्वृतम्—रेफ का लोप, व को द्वित्व, ऋ के स्थान पर उ, त का लोप और स्वरक्षेप ।

उसहो < ऋषभः—ऋ के स्थान पर उ और भ के स्थान पर ह ।

भाउओ < भ्रातृः—भ्रा में से रेफ का लोप, शृ में त का लोप, ऋ के स्थान पर उ ।

पहुदि < प्रभृति—प्र का प, भृ के स्थान पर हु और त के स्थान पर द ।

संवुदं < संवृत्तम्—वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा त को द ।

मुह्ढो < वृद्धः—वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा दन्त्ययणों को मूर्धन्य ।

मुहालं < मृणालम्—सृ की ऋ के स्थान पर उ तथा ण के स्थान पर ट ।

पाहुडं < प्रावृत्तम्—प्र के स्थान पर प, भ के स्थान पर ह और त के स्थान पर ट ।

पुट्टं < पुष्टम्—पु की ऋ के स्थान पर उ, घ्र का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय
ट को ठ ।

पुहइ, पुहवी < पुथिवी—पु की ऋ के स्थान पर उ और थ के स्थान पा ह ।

पाउअं < प्रावृत्तम्—प्रा के स्थान पर पा, वृ के व का लोप, ऋ के स्थान पर
उ, त का लोप तथा विमर्ग को भोत्व ।

भुई < भृतिः—भृ की ऋ के स्थान पर उ तथा तकार का लोप ।

पिउअं < विवृत्तम्—वृ के व का लोप, इसी के ऋ के स्थान पर उत्त्व ।

बुंदावणं < वृन्दावनम्—वृ के ऋ के स्थान पर उत्त्व ।

जामाउओ, जामादुओ < जामावृकः—वृ के तकार का लोप, ऋ के स्थान पर
उ और क का लोप तथा हरशेष ।

पिउओ < पितृकः—वृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप,
तथा ओह्र ।

णिहुअं, णिहुवं < निभृत्तम्—भृ में भ के स्थान पर ह और ऋ के स्थान पर उ ।

णिवृहुइ < निवृत्तिः—वृ में से रेक का लोप, ऋ को उत्त्व तथा व को द्वित्व ।

बुड्डी < वृद्धिः—वृ के ऋ के स्थान पर उत्त्व और वृत्त्य वर्णों को सूर्यन्ध ।

माउआ < मावृका—वृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप,
स्वरशेष ।

णिउअं < निवृत्तम् = वृ के व का लोप, ऋ का उत्त्व तथा त का लोप, हरशेष ।

बुत्तान्तो < वृत्तान्त — ऋ का उत्त्व ।

उजू < ऊतुः— ऋ का उत्त्व ।

पुहुवी < पुथिवी—पु में ऋ के स्थान पर उत्त्व, थ का को ह आदेश ।

बुंदं < वृन्दम्—वृ के ऋ के स्थान पर उत्त्व ।

माऊ, मादु < मावृ—वृ में से तकार का लोप, ऋ के स्थान पर उत्त्व । तकार
का लोप न होने पर द ।

(८३) निवृत्त और वृन्दारक शब्द में ऋ के स्थान पर विकल्प से उत्त्व होता
है । यथा—

निवृत्तं, निअत्तं < निवृत्तम्—विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान पर अ हुआ है ।

बुन्दारया, वन्दारया < वृन्दारवा—

(८४) वृषभ शब्द में ऋ के स्थान पर विकल्प से वकार सहित उत्त्व होता
है । यथा—

उसहो, घसहो = वृषभः—विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान में अ हुआ है ।

(८५) समास आदि में जो पद प्रधान न होकर गौण होता है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान में उकार आदेश होता है ।^१ जैसे—

माउमंडलं, मादुमंडलं < मातृमण्डलम्—तकार का लोप न होने पर त का द हुआ है और ऋ के स्थान पर उकार ।

माउहरं, मादुहरं < मातृपृष्ठम्

पाउघणं < पितृघनम् तकार का लोप और ञ के स्थान पर उकार ।

(८६) गौण—अप्रधान मातृशब्द के ऋकार को विकल्प से इकार होता है ।^२ जैसे—

माइ-हरं, माउ-हरं < मातृपृष्ठम्

माइ-मंडलं, माउ-मंडलं, मादु-मंडलं < मातृमंडलम्

(८७) मृषा शब्द में ऋकार के स्थान पर उत्, ऊत् और ओत् होते हैं ।^३ जैसे—

मुसा, मूसा, मोसा < मृषा

मुसा-याओ, मूसा-याओ, मोसा-याओ < मृषायादः

(८८) वृष्ट, वृष्टि, पृथक्, मृदन् और नसृक शब्दों में ऋकार के स्थान पर इकार और उकार होते हैं ।^४ जैसे—

विट्टो, वुट्टो < वृष्टः

विट्टी, वुट्टी < वृष्टिः

पिहं, पुहं < पृथक्

मिइंगो, मुइंगो < मृदन्

नत्तिओ, नत्तुओ < नसृकः

(८९) वृहस्पति शब्द में ऋकार के स्थान पर विकल्प से इकार और उकार होते हैं ।^५ जैसे—

विहृफई, वुहृफई, यहृफई < वृहस्पतिः

(९०) वृन्त शब्द में ऋकार के स्थान पर इत् एत् और ओत् होते हैं ।^६ जैसे—

यिण्टं, वेण्टं, योण्टं < वृन्तम्

(९१) व्यञ्जन के सम्पर्क रहित—केवल ऋ के स्थान पर रि आदेश होता है । यह वहाँ निरूप से और वहाँ निरूप होता है ।^७ जैसे—

रिद्धी < ऋद्धिः

रिणं < ऋणम्

रिज्जू, उज्जू < ऋजुः

रिसहो, उसहो < यृषभः

१. नीलान्तस्य ८।१।१३४. । हे० ।

२. मातृदिवा ८।१।१३५. । हे० ।

३. उद्गोत्तुपि ८।१।१३६. । हे० ।

४. दृष्टी वृष्ट-पृष्टि-पृथक्-मृदन्-नसृके ८।१।१३७. । हे० ।

५. वा वृत्तान्ती ८।१।१३८. । हे० ।

६. इदेदोदृष्टे ८।१।१३९. । हे० ।

७. रिः वेत्तस्य ८।२।१४०. । हे० ।

रिऊ, उदू < क्तुः

रिसो, इसी = कपि.

रिद्धी < क्रद्धिः

(१२) जिस दृश् धातु के आगे कृत्, क्तव, स्क् और सकृ प्रत्यय आये हों, उसके अफा नि आदेश होता है।^१ जैसे—

एआरिसो < एतादृशः—तू का लोप स्वर शेष, दू का लोप और अ के स्थान पर 'रि' ।

तारिसो < तादृशः—त में से दू का लोप और अ के स्थान पर रि ।

सरिसो < सदृशः—

”

”

सरिच्छो < सदृशः—

”

”

”

क्ष के स्थान पर छ ।

भवारिसो < भ्रादृशः— दू का लोप और अ के स्थान पर रि ।

जारिसो < यादृशः—

”

”

केरिसो < कीदृशः—की के स्थान पर के और दू का लोप, अ के स्थान पर रि ।

अम्हारिच्छो < अस्मादृशः—दू का लोप, अ के स्थान पर 'रि', क्ष के स्थान पर छ ।

अन्नारिसो < अग्न्यादृशः—ग्न्या के स्थान पर न्ना, दू का लोप, अ के स्थान पर 'रि' ।

अम्हारिसो < अस्मादृशः—स्मा के स्थान पर म्हा, दू का लोप, अ के स्थान पर रि ।

तुम्हारिसो < युष्मादृशः—ष्मा के स्थान पर म्हा, दू का लोप, अ के स्थान पर रि ।

विरोप—यौरीसेनी में उक्त शब्दों के रूप निम्नप्रकार होते हैं ।

जादिसं < यादृशम्

तादिसं < तादृशम्

पैशाची में—जातिसं < यादृशम्

तानिसं < तादृशम्

अपभ्रंश में—जइसं < यादृशम्

तइसं < तादृशम्

(१३) किसी भी शब्द में आदि ऐकार का एकार होता है।^२ यथा—

सेणो = शैलः—श के स्थान पर स और ऐकार को एकार ।

तेल्लुकं, तेत्थोकं < त्रैलोक्यम्—त में से रू का लोप, ऐकार को एकार, च् का लोप और क को द्वित्व ।

सेत्थं < शैल्यम्—ऐकार का एकार, त्य के स्थान पर थ ।

एरावणो < ऐरावत —ऐकार का एकार और त के स्थान पर ण ।

१. दृशः क्विप्-टक्त्तकः ८।१।१४२. । हे० ।

२. ऐत् एत् ८।१।१४८. । हे० ।

केलासो < कैलाशः—ऐकार का एकार ।

केढवो < कैतवः—ऐकार का एकार और त के स्थान पर ढ ।

वेह्व्यं < वैषव्यम्—ऐकार का एकार, घ के स्थान पर ह, और य लोप तथा व् को द्वित्व ।

(१४) दैत्यादि गण में ऐ के स्थान में अइ आदेश होता है । यह नियम ए का अपवाद है । जैसे—

दइच्चं < दैत्यम्—ऐ के स्थान पर अइ, त्य के स्थान पर च ।

दइण्णं < दैत्यम्— ” ”, भ्य के स्थान पर ण्ण ।

अइसरिअं < ऐरवर्दम्— ” ”, व का लोप और र्यम् का रिअं ।

भइरवो < भैरवः—ऐकार का एकार

दइषअं < दैषतम्—ऐकार का एकार, त लोप और स्वर शेष ।

वइआलीओ < वैतालिकः—ऐकार का एकार, त लोप, स्वर शेष तथा क लोप और स्वर शेष ।

वइएसो < वैदेशः—ऐकार का अइ, इ लोप और स्वर शेष ।

वइएहो < वैह— ” ”

वइअब्भो < वैभ्रं—ऐकार का अइ, इ लोप, स्वर शेष, ऐकलोप और न को द्वित्व, पूर्ववर्ती न को य ।

वइस्सानरो < वैश्वानरः—ऐकार का अइ, व लोप, स को द्वित्व, न को ण ।

कइअयं < कैतयम्—ऐकार का अइ, त लोप, स्वर शेष ।

यइसाहो < वैशाखः—ऐकार का अइ, ख के स्थान में ह ।

यइसालो < वैशाखः—ऐकार का अइ ।

(१५) वैरादिगण में ऐकार के स्थान में विरत्व से अइ आदेश होता है । यथा—

घइरं, वेरं < वैरम्—ऐकार के स्थान पर अइ, विरत्वाभाव में ए ।

कइलासो, केलासो < कैलाशः— ” ”

कइरयं, केरयं < कैरवम्— ” ”

१. भइदैत्यादी च ८।१।१५१. हे० । दैत्यादि गण के शब्द—

दैत्यादी वैश्यवैशाखवैशम्पायनवैशवाः ।

स्वैरवैदेहवैदेशवैषमिना ग्रपि ।

दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिनादयः ॥—भट्टललिता

२. वैरादी या ८।१।१५२. हे० । वैरादिगण के शब्द—

दैत्यः स्वैरं वैश्यं वैटभवंदेहवो च वैशाख ।

वैशिाभैरववैशम्पायनवैदेशिवारच दैत्यादि ॥—प्राकृत मंत्ररी ।

वइसवणो, वेसवणो < वैश्ववणः—रेफार के स्थान पर अइ, श्र के र का लोप, वभाव पत्र में प ।

वइसंपाअणो, वेसंपाअणो < वैशम्पायनः— „ „ य लोप और स्वरधेप ।

वइआलिओ वेआलिओ < वैताळिक — „ „ क का लोप और स्वरधेप ।

वइसिओ, वेसिओ < वैशिकः—

” ” ”
” ” न के र का लोप और स्वर को

द्वित्व ।

(१६) शब्द के आदि औंकार को ओंसार आदेश होता है ।^१ जैसे—

मोमुई < मौमुदी—औं के स्थान पर ओंकार, इ लोप और स्वरधेप ।

जोठरण < यौवनम्—य के स्थान पर ज, औं का लोप और व को द्वित्व ।

मोत्थुहो < मौत्थुभः—औंकार का ओ, स्तु के स्थान पर ल्थु और भ के स्थान पर ह ।

सोहगं < सौभाग्यम्—औंकार का ओ, म के स्थान पर ह, य् लोप और ग को द्वित्व ।

दोहगं < दौभाग्यम्—

” ” ”

गोदमो < गौतमः—औंकार का ओ और त का द ।

कोसंयी < कौशाम्बी—औंकार का ओ हुआ है ।

कोंचो < कौच —

”

”

कोसिओ < कौशिकः— ” ” और क का लोप तथा स्वर धेप ।

(१७) सौन्दर्यादिगण के शब्दों में औं के स्थान पर उअ आदेश होता है ।^२
पथा—

सुन्देरं, सुंदरिअं < सौन्दर्यम्—औं के स्थान पर उ होने से ।

सुंडो < शौण्डः—औं के स्थान पर उअ आदेश ।

दुयारिओ < दौवारिकः—औं के स्थान पर उअ और क का लोप, स्वर धेप ।

मुंजायणो < मौञ्जायन —औं के स्थान पर उअ आदेश ।

सुगंचत्तणं < सौगन्ध्यम्—औं के स्थान पर उअ आदेश ।

पुलोमी < पौलोमी—

”

”

सुवणिगओ < सौवर्णिकः—

”

”

१. मौत मोत ८।१।१५६. । हे० ।

२. उत्सौन्दर्यादी ८।१।१६०. हे० ।

(९८) कौशेयक और पौरादिगण के शब्दों में ओ के स्थान पर अउ आदेश होता है ।^१ यथा—

कउक्खेअओ, कुक्खेअओ < कौशेयकः ।

पउरो < पौरः

कउरवो < कौरवः

पउरिसं < पौरुषम्

सउहं < सौधम्

गउडो < गौडः

मउली < मौलिः

मउणं < मौनम्

सउरा < सौराः

कउल्लो < कौल्लो

(९९) अब और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगेवाले सस्वर व्यंजन के साथ विकल्प से ओत् होता है ।^२ जैसे—

ओआसो, अवआसो < अवकाशः—अव के स्थान पर ओ और क का शोर, स्वर छेप ।

ओसरइ, अवसरइ < अपसरति—अप के स्थान पर ओ, स का शेष और स्वर छेप ।

ओहणं, अअहणं < अपघनम्—अप के स्थान पर ओ तथा घ के स्थान पर ह ।

विशेष—निम्न रूपों में यह नियम लागू नहीं होता—

अवगअं < अपगतम्—प के स्थान पर व ।

अवसदो < अपसदः— " "

(१००) आगेवाले सस्वर व्यंजन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में विकल्प से ऊत् और ओत् आदेश होते हैं ।^३ जैसे—

ऊहसिअं, ओहसिअं < उअसितम्—उप के स्थान पर ऊ और ओ हुआ है ।

ऊआसो, ओआसो < उअरासः—उप के स्थान पर ऊ और ओ, व का शोर और स्वर छेप ।

इन सामान्य स्वरविकृति नियमों के पश्चात् व्यंजनविकृति के नियमों का निर्देश किया जाता है—

(१०१) स्वर से पर में रहनेवाले भनादिभूत तथा दूमेरे हिमो व्यञ्जन ते

१. अउः पौरादी ष ८।१।१६२. हे० ।

सौन्दर्यादिगण के शब्द—

सौन्दर्यं शौण्डिहरी दीरास्तिः शौण्डोर्गच्छिम् ।

कौशेयः पौरवः पौमासि मीमन्तीत्यादिनादयः ॥ —बल्परजिता ।

पौरादिगण के शब्द—

पीरपीरपरीरानि, मीमन्तीस्तिमीरवाः ।

शौरान् मीमन्तीविर्यं, मीमन्तीविर्यं मवा । —बल्परजिता ।

२. यथाशेते ८।१।१७२. हे० ।

३. ऊषोते ८।१।१७३. हे० ।

संयोगरहित क, ग, घ, ज, त, द, प, य और व वर्णों का प्रायः लोप होता है ।
उदाहरण—

क लोप—

लोओ < लोऊः—क का लोप, स्वर झेप और विभर्ग को ओत्तर ।

सअढं < सअडम्—क का लोप, स्वर झेप और ढ के स्थान पर ढ ।

मउलं < मुकुलं—मु के उ के स्थान पर अ, क का लोप और उ स्वर झेप ।

णउलो < नकुलः—न का ण और क का लोप, स्वरझेप ।

णोआ < नौआ—न का ण और औ का आ तथा क का लोप, स्वरझेप ।

तिरथयरो < तीर्थकरः—ती को ह्रस्व, रेक का लोप, थ कां द्विरथ, क लोप और स्वरझेप, य भुति ।

ग लोप—

णओ < नगः—ग लोप, स्वरझेप ।

णअरं, नयरं, णयरं < नगरम्—ग लोप और ओप स्वर के स्थान में य भुति ।

मयंको < मृगाष्टः—ष्ट का म, ग का लोप और ओप स्वर को य भुति ।

साअरो, सायरो < सागरः—ग लोप और ओप स्वर को य भुति ।

भाइरही < भागीरथी—ग लोप, स्वर झेप और थ के स्थान पर ह ।

च लोप—

सई < शची—श को ङ और चकार का लोप, स्वर झेप ।

कअग्गहो, कयग्गहो < कवग्गुदः—च लोप, ओप स्वर को य भुति ।

सुई < सूची—च लोप और स्वर झेप ।

रोअदि < रोचते—च लोप और स्वर झेप ।

उईदं < उचितम्—च लोप और स्वर झेप, त को द ।

सूअअं < सूचम् ।

ज लोप—

रअओ < रअऊ—ज और क दोनों का लोप और स्वर झेप ।

पआवई < प्रजापतिः—ज लोप, स्वर झेप और प के स्थान पर व ।

गओ < गजः—ज लोप और स्वर झेप ।

रअढं < रअडम्—ज का लोप, स्वर झेप और ढ के स्थान पर ढ ।

त लोप—

विआणं < वितानम्—त लोप और स्वर झेप ।

क्रिअं < कृतम्—कृ में रहनेवाली क के स्थान पर ल और त लोप, स्वर झेप ।

रसाअलं < रसातलम्—त लोप और स्वर झेप ।

रअणं, रयणं < रत्तम्—त लोप और स्वर शेष, स्वर शेष के स्थान में य मृति ।

द लोप—

जइ < यदि—य को ज और द लोप ।

नई < नदी—द लोप और स्वर शेष ।

गआ < गदा— „ „

मअणो < मदनः— „ „

वअणं < वदनम्— „ „

मओ < मदः— „ „

प लोप—

रिऊ < रिपुः—प लोप और उ शेष तथा उकार को दीर्घ ।

सुउरिसो < सुपुरपः— „

कई < कपिः—प लोप और स्वर शेष ।

विउलं < विपुलं— „ „

य लोप—

दआलू < दयालुः—य लोप, स्वर शेष और लु को दीर्घ ।

णअणं < नयनम्— „ „

विओओ < वियोगः—य और ग वा लोप स्वर शेष ।

वाउणा < वायुना—य लोप और स्वर शेष ।

व लोप—

जीओ < जीपः—व लोप और स्वर शेष ।

दिअहो < दिउसः—उ लोप, स्वर शेष और स के स्थान पर ह ।

लाअणं < लावण्यम्—व लोप, स्वर शेष, य लोप और ण को द्वित्व ।

विओहो < विगोधः—व लोप, स्वर शेष और ध के स्थान पर ह ।

वहआणलो < वडवानलः—व लोप, स्वर शेष ।

विशेष—प्रायः शब्द का प्रयोग होने से कहीं-कहीं लोप नहीं होता । यथा—

सुकुसुमं < सुकुसुमम् पयागजलं < प्रयागजलम् ।

पियगमणं < प्रियगमनम् सुगओ < सुगवः

अगरु < अगुरु सचावं < सचापम्

समवाओ < समवायः

(क) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण उक्त वर्णों का लोप नहीं हुआ—

संकरो < संकरः णवंचरो < नवचरः

धणंजओ < धनञ्जयः पुरंदरो < पुरन्दरः

संवरो < संवरः

(ग) निम्न शब्दों में संयुक्त होने के कारण लोप नहीं हुआ—

अघो < अर्घः
अगो < अर्गः
घग्गो < वर्गः
मग्गो < मर्गः

(ग) निम्न शब्दों में आद्यक्षर होने के कारण उक्त वर्गों का लोप नहीं हुआ—

फालो < फालः
गंधो < गन्धः

घोरो < घोरः—औंकार के स्थान पर ओंकार ।

जालो < जालः

तरु < तरुः—र के हर उकार को दीर्घ हुआ है ।

द्वयो < द्वयः

पायं < पायम्—द्वितीय प के स्थान पर य हुआ है ।

(घ) समास में उपरपद के आदि का विकल्प से लोप होता है—

सदअरो, सद्वरो < सदधः

जलअरो, जलवरो < जलधः

सहअरो, सहकारो < सहकारः

(ङ) कुछ विद्वानों के मत में क का लोप नहीं होता, बल्कि उसके स्थान पर न होता है । जैसे—

एगत्तणं < एगस्वम्

एगो < एकः

अमुगो < अमुकः

आगारो < आकारः

आगरिसो < आनयः

(च) कहीं कहीं आदि में अनेकाले कादि वर्गों का भी लोप देखा जाता है—

स लण < स पुनः

सो य, सो सोअ < स च—च का लोप होने पर शेष स्वर अ के स्थान में य भ्रुति होने से च का य होता है ।

द्वयं < द्विभम्—आदि च का लोप और ह के स्थान पर य ।

(छ) आप्रारुत में च के स्थान पर ट पाया जाता है । यथा—

आउण्टणं < आउण्णम्

(१०२) क, ग, घ, ज, त, द, प, य और व का लोप होने पर अग्रलिखित स्वर अ वा या के स्थान में लघु प्रत्यय-स्वर यकार का उच्चारण होता है । यथा—

नयरं < नगरम्—ग का लोप होने पर अव्ययेय अ के स्थान पर य ।

फयग्गहो < फचाद्दः—च का लोप होने पर अव्ययेय अ के स्थान पर य ।

फायमणी < फायमणिः—

रययं < रज्जम्—ज और त का लोप होने पर अव्ययेय स्वर अ के स्थान में य ।

पयावई < प्रजापति:—ज का लोप और अवशेष आ के स्थान में या, प का व और त का लोप, दीर्घ ।

रसायलं < रसातलम्—त का लोप और अवशेष अ को य ।

पायालं < पातालम्—त का लोप और अवशेष आ को या ।

(१०३) असवर्ण से पर में अनादि प का लोप लृक् नहीं होता, बल्कि पकार को वकार होता है ।^१ उदाहरण—

उवसग्गो < उपसर्गः—प का व, रेफ का लोप और ग को द्वित्व ।

कवालो < कपालः—यहाँ प का लोप नहीं हुआ, उसके स्थान पर व हुआ है ।

उल्लाओ < उल्लापः—

”

”

कवोलो < कपोलः—

”

”

महिषालो < महिषालः—

”

”

उवमा < उपमा—

”

”

पाधं < पापम्—प का व हुआ है ।

सवहो < शपथः—प का व तथा थ का ह हुआ है ।

साधो < क्षापः—प का य हुआ है ।

विशेष—(क) संयुक्त होने पर प का व नहीं होता । यथा—

विप्पो < विप्रः—प्र में प् + द् + अ का संयोग है अतः रेफ का लोप और प को द्वित्व ।

सप्पो < सर्पः—रेफ का लोप और प को द्वित्व ।

(ख) आदिस्थ होने पर प का व तो लोप होता है और व उसके स्थान में व ही होता है । यथा—

पई < पति:—त का लोप तथा इकार को दीर्घ ।

पडिओ < पण्डित:—त का लोप और विसर्ग को भोत्व ।

(१०४) आपीठ शब्द में पकार को म होता है ।^२ यथा—

आमेलो < आपीठः—प का म और ठ को छ हुआ है ।

(१०५) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि ए, घ, ध, च और झ यणों के स्थान में प्रायः ह आदेश होता है ।^३ वास्तविकता यह है कि इन व्यंजनों में ह संयुक्त है । जैसे—

ए = क् + ह्, घ = ग् + ह्, य् = त् + ह्, ध = द् + ह्, फ = प् + ह्, भ् = म् + ह् । अतः उक्त व्यंजनों में विजातीय का लोप होकर ह शेष रह जाता है । उदाहरण—

१. पो वः २।१५. वर० ।

२. आपीठे मः २।१६. वर० ।

३. रा-घ-य-ध-भां ८।१।१८७. हे० ।

- मुहं < मुखम्—ख का ह हुआ है ।
 महो < मयः—ख का ह हुआ है ।
 मेहला < मेखला—,, ”
 लिहइ < लिपति—,, और त् का लोप तथा इ शेष ।
 पमुहेण < प्रमुणेण—प्र के स्थान पर प और ख का ह हुआ है । ।
 सही < सखी—ख के स्थान पर ह ।
 अलिहिदा < अलिखिता—ख के स्थान पर ह और त के स्थान पर द ।
 मेहो < मेवः—घ के स्थान पर ह हुआ है ।
 जहणं < जयनम्—,, ”
 माहो < माघः—,, ”
 लाहअं < लाघमम्—घ के स्थान पर ह और व का लोप तथा स्वर अ शेष ।
 लहु < लतुः—घ के स्थान पर ह ।
 नाहो < नथः—घ के स्थान पर ह ।
 गाहा < गाथा—,, ”
 मिहुणं < मिधुनम्—,, ”
 सवहो < शपथः—घ के स्थान पर व और थ के स्थान पर ह ।
 कहेहि < कथय—घ के स्थान पर ह ।
 फहं < कथम्—,, ”
 मणोरहो < मनोरथः—,, ”
 साहू < साधुः—घ के स्थान पर ह ।
 राहा < राधा—,, ”
 वाहा < वाधा—,, ”
 वहिरो < वधिरः—,, ”
 वाहइ < वाधते—घ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ ।
 ईवहणू < इन्द्रधनुः—रेफ का लोप और ध के स्थान पर ह ।
 अहिअं < अधिनम्—घ के स्थान पर ह ।
 माहवीलदा < माधवीलत—घ के स्थान पर ह तथा त के स्थान पर द ।
 महुअर < मधुकरः—घ के स्थान पर ह तथा क का लोप, ञ शेष ।
 सहा < सभा—भ के स्थान पर ह ।
 सहावो < स्वभावः—व का लोप और भ के स्थान पर ह ।
 णहं < नभः—भ के स्थान पर ह ।
 सोहइ < शोभते—भ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ ।
 सोहणं < शोभनम्—भ के स्थान पर ह ।

आहरणं < आभरणम्—भ के स्थान पर ह ।

दुल्लहो < दुर्लभः—रेफ का लोप और ल को द्वित्व त्तरा म के स्थान पर ह ।

विशेष—(क) स्वर से पर में नहीं रहने से—

संखो < बह्वः—यहाँ ख स्वर से पर नहीं है, बल्कि अनुस्वार व्यञ्जना से परे है ।

संधो < सन्धः— " " " " " "

कंधा < कन्धा— " थ " " " " "

रंभो < स्तम्भः— " भ " " " " "

(ख) उपर्युक्त वर्णों के असंयुक्त होने पर इ आदेश होता है, संयुक्त होने से नहीं । जैसे—

अक्खइ < अक्षति—ख के स्थान पर ह नहीं हुआ ।

अग्घइ < अर्घति—घ के स्थान पर " "

कत्थइ < कथयति—थ के " "

यग्घइ < यन्धति—घ के " "

लढभइ < लभते—भ के " "

(ग) गज्जइ घणो < गर्जयति घनः—घ आदि में रहने से ह नहीं हुआ ।

गज्जन्ते ते मेढा < गर्जयन्ते ते मेघाः—ए आदि " "

पज्जलो < प्रजलः—प्रायः वधन के कारण ह नहीं हुआ ।

पल्लघणो < प्रलम्बणः— " "

अधीरो < अधीरः— " "

अधण्णो < अधश्नः— " "

जिणधम्मो < जिनधर्मः— " "

पणट्ठभओ < प्रणमनः— " "

(१०६) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनारि ट, ठ और ड के स्थान में प्रमराः ङ, ञ और ञ आदेश होते हैं । उदाहरण—

मढो < मठः—ठ के स्थान में ङ हुआ है ।

सढो < सठः— " "

पमढो < पमठः— " "

मुढारो < मुठारः— " "

णढो < नः—ट के स्थान में ङ हुआ है ।

भढो < भठः— " "

घिडघो < गिरपः—ट के स्थान पर ड और प के स्थान पर व ।

घडो < घटः—ट के स्थान पर ड ।

घडइ < घटते—ट के स्थान पर ड और विभक्ति चिह्न इ ।

यलया-मुँह < वडयामुम्यम्—ड के स्थान पर ल, य लोप और आ स्वर के स्थान पर य श्रुति तथा ए के स्थान पर ह ।

गरुलो < गरुडः—ड के स्थान पर ल ।

कीलइ < कीडति—रेफ का लोप, ड के स्थान पर ल और विभक्ति चिह्न इ ।

तलायो < तडामा—ड के स्थान पर ल, ण लोप और अ स्वर के स्थान में यश्रुति ।

यलही < वडधिः—ड के स्थान में ल और घ के स्थान में ह तथा दीर्घ ।

घंटा < घण्टा—स्वर से पर में ट के न होने से ट के स्थान में ड नहीं हुआ ।

वेयुँठो < वैडुण्डः—स्वर से पर में ड के न होने से ड नहीं हुआ ।

मौडं < मुण्डम्—स्वर से पर में ड के न होने से ल नहीं हुआ ।

फौडं < वुण्डम्—

खट्टा < खट्टा—संयुक्त रहने के कारण ट का ड नहीं हुआ ।

चिट्टइ < तिष्ठति—संयुक्त रहने से ट का ड नहीं हुआ ।

खड्गो < लडगः—संयुक्त रहने से ड का ल नहीं हुआ ।

टक्को < टङ्कः—अनादि-आदि भिन्न होने से ट को ड नहीं हुआ ।

ठाई < स्थायी—

डिंभो < डिम्भः—

(१०७) व्यन्त पर धातु में ट का ल आदेश विक्रम से होता है ।^१ यथा—

चयिला, चविडा < चण्टा—प के स्थान पर व और ट के स्थान में ल तथा

विकल्पाभावपक्ष में ड ।

फालेइ, फाडेइ < पाटयति—ट का ल तथा विकल्पाभाव में ड और विभक्ति चिह्न इ ।

(१०८) सडा, शरुड और कैटम शब्द में ट को ड होता है ।^२ यथा—

सडा < सडा—ट के स्थान पर ड ।

सयडो < शकटः—फ का लोप और अ स्वर के स्थान पर य श्रुति, तथा ट का ड ।

कैडवो < कैटमः—ऐकार का एकार और ट का ड तथा म का व 'कैटमे वा' २।२९. सूत्र से ।

१. चपेटा-पाटो वा ८।१।१६८ । हे० ।

२. सडा-शकट-कैटमे डः ८।१।१६६. हे० ।

(१०९) स्फटिक में टकार के स्थान पर ल होता है ।^१ यथा—
फलिहो < स्फटिकः—ट का ल और क का ह ।

(११०) प्रति उपसर्ग में तकार के स्थान में प्रायः ङकार आदेश होता है ।^२
जैसे—

पडिवण्णं < प्रतिपन्नम्—प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ङ और प का व ।

पडिहासो < प्रतिभासः—प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ङ और भ के स्थान पर ह ।

पडिहारो < प्रतिहारः—प्र को प और त को ङ ।

पाडिप्फट्टी < प्रतिस्पृष्टी—त के स्थान पर ङ, ह्न के स्थान पर ण्, रेफ का लोप और थ को द्विष्व ।

पडिसारो < प्रविसारः—त के स्थान पर ङ ।

पाडिसरोः < प्रतिसरः—त के स्थान पर ङ ।

पडिसिद्धि < प्रतिसिद्धिः—

पडिनिअत्तं < प्रतिनिवृत्तम्—त के स्थान पर ङ, थ का लोप और ऋ के स्थान पर अ ।

पडिमा < प्रतिमा—त के स्थान पर ङ ।

पडियया < प्रतिपत्—त के स्थान पर ङ, प को थ और शान्त्य उपजन त् के स्थान पर आ तथा य भुति ।

पडंसुआ < प्रतिधुम्—त के स्थान पर ङ, रेफ का लोप और शान्तिम उपजन त् के स्थान में आ ।

पडिअरुड् < प्रतिक्रोति—त के स्थान में ङ, क्रियापद् वरह ।

पहुडि < प्रभुति—भ के स्थान पर ह, ऋ के स्थान में तकार और त वा ङ ।

पाहुडं < प्राभुतम्—भ के स्थान में ह और त के स्थान में ङ ।

पायडो < व्याडः—व्य के स्थान में वा, य के स्थान में व और ऋ के स्थान में अ तथा त को ङ ।

पहाया < पनाया—त को ङ, क् का लोप और आ शर के स्थान में य भुति ।

यहेडओ < विभीतकः—भ के स्थान पर ह, ईकार को यूकार, त को ङ और क लोप तथा श शर भेय, विभर्ग को ओल्य ।

हुरहई < ह्रीगहो—त को ङ, क का लोप और ई शर भेय ।

१. पाणिनि वः ८।१।१६७. हे० ।

२. प्रपरी डः ८।१।२०६. हे० ।

दुक्कडं < दुक्कृतम्—आर्य में ष लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ तथा त को ड ।

सुकडं < सुकृतम्—आर्य में ऋ के स्थान पर अ और त का ड ।

आहडं < आहृतम्—

”

”

अवहडं < अवहृतम्—

”

”

पइसमयं < प्रतिसमयं—ति के स्थान पर ड नहीं हुआ और त का लोप हो जाने से इ स्वर शेष ।

पईधं < प्रतीपम्—त के स्थान पर ड नहीं हुआ, त् का लोप होने से ई शेष ।

संपइ < सम्प्रति—त लोप और इ स्वर शेष ।

पइट्टाणं < प्रतिष्ठानम्—त् लोप और इकार शेष तथा टा में से ष का लोप ड को द्वित्व ।

पइट्ठा < प्रतिष्ठा—

”

”

”

पइण्णा < प्रतिष्ठा—त लोप और ञ के स्थान पर ण्य ।

(१११) ऋत्वादि गण के शब्दों में तकार का दकार होता है ।^१ जैसे—

तदू < ऋतुः—ऋ के स्थान पर ड और त के स्थान में द तथा उ को दीर्घ ।

रअदू < रजतम्—ज का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द ।

आअदो < आगतः—ग का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द ।

निव्वुदी < निर्वृतिः—रेफ का लोप, व को द्वित्व और ऋ के स्थान पर ड तथा त को द ।

आउदी < आवृत्तिः—व का लोप, ऋ के स्थान पर ड और त को द ।

संवुदी < संवृत्तिः—ऋ के स्थान पर ड तथा त को द ।

सुइदी < सुट्टिः—क का लोप, ऋ के स्थान पर इ और त को द एवं दीर्घ ।

आइदी < आवृत्तिः—

”

”

”

हदो < हतः—त के स्थान पर द ।

संजदो < संयतः—य के स्थान पर ज और त के स्थान पर द ।

१. ऋत्वादिषु तो द. २॥७ वर०; ऋत्वादि गण मे निम्न शब्द परिगणित है—

ऋतुः किरातो रजतश्च तात सुसंगतं सयत साम्प्रतश्च ।

सुसंस्कृतिश्रीतिसमग्रशब्दास्तथाकृतिनिर्वृतितुल्यमेतत् ॥

उपसंगसमायुक्ते कृतिवृत्तौ वृतागती ।

ऋत्वादिगणने नेया अन्ये शिष्टानुसारतः ॥

विउदं < वितृत्—व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और त के स्थान में द ।

संजादो < संजातः—य के स्थान पर ज और त को द ।

संपदि < संप्रति—प्र के स्थान पर प और त को द ।

पडिघदी < प्रतिपत्तिः—प्रति उपसर्ग की ति के स्थान पर डि, प षो ष और त को द तथा इकार को दीर्घ ।

विशेष—त के स्थान पर द होना शौरसेनी की विशेषता है । साधारण प्राकृत में शब्दरूप निम्न प्रकार चनेंगे ।

उऊ < ऊवुः—ऊ के स्थान पर उ और त का लोप तथा उ को दीर्घ ।

रअर्ज < रजत्तम्—ज और त का लोप तथा इनके स्थान पर अ, अ स्वर घोप ।

एअं < एतम्—त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर घोप ।

गओ < गतः—त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर घोप, विसर्ग का ओस्व ।

संपअं < साम्प्रतम्—म् का अनुस्वार, ण के स्थान पर प और त का लोप, अ स्वर घोप ।

जओ < जतः—य का ज और त का लोप, अ स्वर घोप, विसर्ग का ओस्व ।

तओ < ततः—त का लोप, अ स्वर घोप और ओस्व ।

कअं < क्तम्—त का लोप, अ स्वर घोप और म् का अनुस्वार ।

हआसो < हतासः—त का लोप, अ स्वर घोप तथा अ का स ।

ताओ < तातः—त का लोप अ स्वर घोप और विसर्ग का ओस्व ।

(११२) हुंन और दह, प्रक्षिपि और क्षीप धातुओं के दकार के स्थान में तमराः ट, ल और पैरन्तिठ ध आदिता होते हैं ।^१ जैसे—

टसइ < दशति—द के स्थान पर ट, तात्पत्र द के स्थान पर द्दत्त त तथा तकार का लोप और इकार स्वा घोप ।

टदइ < दहति—द के स्थान पर ट, त और इ स्वर घोप ।

पट्टेयेइ < प्रक्षिपति—द के स्थान पर प, प का व और व का संयमरण इ, गुण तथा त का लोप और इ स्वर घोप ।

पलितं < प्रक्षीपम्—द का ल, द्दत्त, व का लोप और त को क्षिप ।

पिप्पट्, दिप्पट् < दीप्पति—द के स्थान पर पैरन्तिठ प, प लोप और प को क्षिप, त लोप और इ स्वर घोप ।

१. दश-टो: ८१।२१८. हे० । प्रक्षि-टो: म: ८१।२२१. हे० । क्षी-पो का ८१।२२३. हे० ।

(११३) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि न का ण आदेश होता है ।^१ पर आदि में वर्तमान असंयुक्त न का विकल्प से ण आदेश होता है ।^२ उदाहरण—

सअणं < सअनम्—य का लोप और अ स्वर घेप तथा स्वर से ण अनादि और असंयुक्त न का ण ।

फणअं < फनरम्—स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण, क लोप और अ स्वर घेप ।

घअणं < घचनम्—घ लोप और अ स्वर घेप और न का ण ।

माणुसो < मानुषः—न का ण और मूर्धन्य ष का इत्थ स ।

णरो, नरो < नरः—न के स्थान पर विकल्प से ण ।

णई, नई < नदी—न के स्थान पर ण तथा इ का लोप और ई स्वर घेप ।

(११४) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि क के स्थान में वहीँ भ, कहीं ह और कहीं दोनों—भ और ह होते हैं ।^३ उदाहरण—

रेभ < रेकः—क के स्थान पर भ ।

सिभा < शिफा—शालघ्य श के स्थान पर इत्थ स और क के स्थान पर भ ।

मुक्ताहलं < मुक्ताफणम्—फ के स्थान पर ह ।

सेभालिआ, सेहालिआ < जेकापिका—विकल्प से क के स्थान पर भ और ह तथा क लोप और अ स्वर घेप ।

सभरी, सहरी < सफरी—फ के स्थान में भ और ह ।

सभलं, सहलं < सफणम्—फ के स्थान में भ और ह ।

यिशेष—

गुंफह < गुंफति—स्वर से पर में नहीं रहने के कारण फ का भ नहीं हुआ ।

पुप्फं < पुष्पम्—संयुक्त रहने के कारण उक्त नियम लागू नहीं हुआ ।

फणी < फनिः—आदि में होने से फ को भ या ह नहीं हुआ ।

(११५) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि घ का विकल्प से व आदेश होता है ।^४ जैसे—

अलावू, अलाऊ < अलावू—घ के स्थान पर विकल्प से व और विकल्पाभाव-पक्ष में व का लोप तथा क घेप ।

सबलो < सबलः—व के स्थान पर व ।

१. नो छः ८१।२२८. हे० ।

२. वादी ८१।२२६ हे० ।

३. फो म-ही ८१।२३६. हे० ।

४. नो वः ८१।२३७. हे० ।

(११६) विमिनी शब्द के व के स्थान पर म आदेश होता है ।^१ यथा
मिसिणी < विसिनी—व के स्थान पर म और न के स्थान पर ण ।

(११७) वयन्ध शब्द में व के स्थान पर म और य होते हैं ।^२ यथा—
कमन्धो, कयन्धो < वयन्धः—व के स्थान पर म होने से कमन्ध और य होने से कयन्ध रूप बना है ।

(११८) विषम शब्द में म के स्थान पर म्रिरूप से द होता है ।^३ यथा—
विसढो, विसमो < विषम—म के स्थान पर म्रिरूप से द हुआ है ।

(११९) मन्मथ शब्द में म के स्थान पर विकृन्प से व होता है ।^४ यथा—
यम्महो < मन्मथः—म के स्थान व, संयुक्त न का लोप और म को द्विरूप तथा थ के स्थान पर ह ।

(१२०) अभिमन्यु शब्द में म के स्थान पर व और म विकृत्प से होते हैं ।^५
यथा—

अहिवन्नु, अहिमन्नु < अभिमन्यु—म के स्थान पर ह, म के स्थान पर विकृत्प से व, विकृत्पाभाज पक्ष में म तथा संयुक्त य का लोप और न को द्विरूप, दीर्घ ।

(१२१) भ्रमर शब्द में म के स्थान पर म्रिरूप से स आदेश होता है ।^६
यथा—

भसलो, भमरो < भ्रमर—संयुक्त रेफ का लोप, म के स्थान पर विकृत्प से स और रेफ के स्थान पर लृत्प ।

(१२२) पद के आदि में य का ज आदेश होता है ।^७ यथा—

जसो < यशः—य के स्थान पर ज और ताण्ड्य श को दृश्य स ।

जमो < यमः—य के स्थान पर ज हुआ है ।

जाइ < याति—य के स्थान पर ज और त का लोप, इ स्वर शेष ।

त्रिरूप—

अययशो < अयवर—य के आदि में न रहने के कारण उक्त नियम चरितार्थ नहीं हुआ ।

संजमो < संयमः—उपवर्ग पुन होने से जनादि य का ज हुआ है ।

संजोओ < संयोगः—

” ” ”

मयजसो < मयजगः—य का य हुआ है और य का ज तथा ताण्ड्य श का दृश्य म ।

१. मिसिनी म ङा१।२३८. हे० । २. वयन्धे मन्धो ङा१।२३९. हे० ।

३. विषमे मो ङा१।२४१. हे० । ४. मन्मथे व. ङा१।२४२. । हे० ।

५. माभिमन्यो ङा१।२४३. हे० । ६. भ्रमरे सो ङा१।२४४. हे० ।

७. आदेशो यः ङा१।२४५. हे० ।

गाढ-जोव्यणा < गाढयौवना—कल्पवृत्तिका के निष्प्रानुसार सामान्यतः उत्तर-पदस्थ य का भी ज होता है ।

अजोगो < अयोऽयः—

” ” ”

अहाजाअं < यथाजातम्—आदि य का लोप हुआ है और अ स्वर शेष है, य के स्थान पर ह तथा त का लोप और अ स्वर शेष ।

(१०३) तीथ पूर्व वृत् प्रत्ययों के यकार के स्थान में द्विशफ ग (ज) विकल्प से आदेश होता है ।^१ यथा—

दीज्जो, दीओ < द्वितीयः—तीथ प्रत्यय के यकार के स्थान पर ज ।

उत्तरिज्जं, उत्तरीअं < उत्तरीयः—य के स्थान पर ज ।

करणिज्जं, करणीअं < करणीयम्—अनीय प्रत्यय के य के स्थान पर विकल्पा-भार पक्ष में य का लोप और अ स्वर शेष ।

रमणीज्जं, रमणीअं < रमणीयम्—

” ” ”

विम्हयणिज्जं, विम्हयणीअं < विस्मयनीयम्—

” ” ”

जयणिज्जं, जयणीअं < जयणीयम्—

” ” ”

विइज्जो, वीओ < द्वितीयः—तीथ प्रत्यय के य के स्थान पर ज ।

पेज्जा, पेआ < पेया—यत् प्रत्यय के य के स्थान पर विकल्प से ज, विस्मया-भारपक्ष में य का लोप और अ स्वर शेष ।

(११०) युष्मद् वाक्य के य के स्थान में त आदेश होता है ।^२ जैसे—

तुम्हारिसो < युष्माश्च—य के स्थान में त तथा अ के स्थान में स् तथा दशः के स्थान पर रिसो हुआ है ।

(१२९) यष्टि शब्द में य के स्थान पर ल आदेश होता है ।^३ यथा—

लट्टी < यष्टिः—य के स्थान पर ल और य का लोप और ट को द्विश्व तथा ट को ठ ।

वेणु-लट्टी < वेणु-यष्टि

” ” ”

उच्छु-लट्टी < इक्षु-यष्टिः—इक्षु के स्थान पर उच्छु तथा शेष पूर्वयत् ।

महु-लट्टी < मधु-यष्टिः—ध के स्थान पर ह, य को ल और य का लोप, ट को द्विश्व, उत्तरवर्ती के ट स्थान पर ठ तथा दीर्घ ।

१. योत्तरीयानोय-तीथ-कृत्वे जः ८।१।२४८. हे० ।

२. युष्मद्यर्थपरे तः ८।१।२४९. हे० ।

३. यष्ट्यां लः ८।१।२४७. । हे० ।

(१२६) छविहीन अर्थ में छाया शब्द में यकार के स्थान पर निरूप से हकार आदिरा होता है । यथा—

छादा < छाया—या के स्थान पर हा ।

यच्छ्रुत्सच्छादा < वृक्षस्य छाया—य के स्थान पर ह ।

मुहच्छाया < मुतच्छाया—कान्ति अर्थ होने से छाया शब्द के य को ह नहीं हुआ ।

(१२७) हरिद्रादि गण के शब्दों में असंयुक्त र के स्थान में ल आदिरा होता है । उदाहरण—

हलिद्दी < हरिद्रा—र के स्थान पर ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा ह को द्वित्व और वाकार को ईकार ।

दलिद्दाइ < दरिद्राणि—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का लोप और ह को द्वित्व तथा त का लोप और इ स्वर प्रेप ।

दलिद्दी < हरिद्रा—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा इ को द्वित्व ।

दालिद्दं < दालिद्रम्—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा इ को द्वित्व ।

दलिद्दी < हरिद्रा—र को ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा इ को द्वित्व ।

जहुट्टिलो < जुधिष्ठिर—य के स्थान पर अ, य के स्थान पर ह, य का लोप और ङ को द्वित्व और र को ल ।

सिद्धिलो < मिथिल—मिथिल शब्द का द्वयम स, य के स्थान पर ङ और रेफ को ल ।

मुहलो < मुषाः—म के स्थान पर ह और र को ल ।

चललो < चरणः—र के स्थान पर ल ।

पगुगो < पदगः—

" "

पगुगो < पदगः—

" "

हंगालो < गंगारः—ग के स्थान पर ह और र को ल ।

सगमलो < गमगाः—संयुक्त स का लोप और ग को द्वित्व तथा रेफ को ल ।

सोमालो < सुमनसः—ह का लोप, न को सन्धि और र को ल ।

चिच्छिओ < चिरागः—चिराग शब्द में 'चिर ते च' का १।२।३ में च को च हुआ है, र के स्थान पर ल ।

फलिहा < परिहा—र के स्थान पर ल, ख के स्थान पर ह ।

फलिहो < परिघः—र के स्थान पर ल और घ के स्थान पर ह ।

फलिहदो < परिभद्रः—र के स्थान पर ल, म को ह और संयुक्त र का लोप तथा द को द्वित्व ।

काहलो < कातरः—त को ह और र को ल हुआ है ।

लुम्को < रुणः—र के स्थान पर ल, ण को क रु हुआ है ।

अयदालं < अपदारम्—अप के स्थान पर अय, य् का लोप, द को द्वित्व और र को छ ।

भसलो < भमरः—संयुक्त रेफ का लोप, म के स्थान पर स और र को ल ।

जडलं < जडम्—र के स्थान पर ल और ड को ङ होता है यथा यद्वा यर्ण-विपर्यय होने से जडलं हुआ है ।

वडलो < वडरः—ड को ङ तथा र को ल हुआ है ।

निट्ठुलो < निष्ठुरः—प् का लोप, ठ को द्वित्व तथा र को ल हुआ है ।

(१३८) स्थूल शब्द के एकार को र होता है ।^१ यथा—

थोरं < स्थूम्—संयुक्त स का लोप और ल के स्थान पर र ।

(१३९) लाहल, लाङ्गल और लाङ्गल शब्दों में विकल्प से ल को ण आदेश होता है ।^२ यथा—

गाहलो < लाहलः—ल के स्थान पर ण होता है ।

णङ्गलं < लङ्गलम्—

णाङ्गूलं < लङ्गूम्—

(१३०) एलाट शब्द में आदि ल को ण होता है ।^३ यथा—

णिडालं, णडालं < एलाटम्—ल के स्थान पर ण, ट का ड और वर्णविपर्यय ।

(१३१) स्वप्न और नीवी शब्द में व को विकल्प से म होता है ।^४ यथा—

सिमिगो, सिमिणो < स्वप्नः ।

नीमी, नीमी < नीवी ।

(१३२) संस्कृत वर्णमाला के श और ष के स्थान में प्राकृत में ण आदेश होता है ।^५ यथा—

१. स्थूले लो र ८।१।२५५, हे० ।

२. लाहल-लाङ्गल-लाङ्गूले आदेश ८।१।२५६, हे० ।

३. ललाटे व ८।१।२५७, हे० ।

४. स्वप्ननीव्योर्वा ८।१।२५८, हे० ।

५. श-पो. स ८।१।२६०, हे० ।

कुसो < कुशः—तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स ।

सेसो < शेषः—तालव्य और मूर्धन्य दोनों के स्थान पर दन्त्य ण ।

सदो < णदः—तालव्य श को दन्त्य स, संयुक्त व् वा लोप और द को द्वित्व ।

निसंसो < नृसंसः—नकारोत्तर ऋ को इ और तालव्य श को दन्त्य स ।

वंसो < वंसः—तालव्य श को दन्त्य स ।

दस < दश—

सोहृद् < शोभते—तालव्य श को दन्त्य स, भ के स्थान पर ह और विभक्ति

विहृद् ह ।

सण्डो < पण्डः—मूर्धन्य प को दन्त्य स ।

कसाओ < कषायः—

विसेसो < विशेषः—दोनों ही श, ष को दन्त्य स ।

(१३३) दसन् और पापाण शब्दों में ष और प के स्थान पर विकल्प से ह होता है ।^१ यथा—

दसमुहो, दहमुह < दशमुष्कः ।

दहबलो, दसबलो < दशबलः ।

दहरहो, दसरहो < दशरथः ।

पहाणो < पापाणः ।

(१३४) अनुस्वार से पर में रहने वाले ह के स्थान में विकल्प से घ आदेश होता है ।^२ यथा—

सिघो, सीहो < सिंहः ।

संघारो, संहारो < संहारः ।

(१३५) व्याकरण, प्राकार और आगत शब्दों में क, ग और ख्य का रिक्त्य से लोप होता है ।^३

धारणं, वायरणं < व्याकरणम्—प्रथम रूप व्य का सर्वाङ्गारी लोप होने से बनता है और द्वितीय में अ स्वर शेष तथा इसके स्थान पर य ।

पारो, पयारो < प्राकारः—

आओ, आगओ < आगतः—प्रथम रूप ग का सर्वाङ्गारी लोप होने से और द्वितीय लोप न होने से बनता है ।

१. दश-पापाणौ हः ८।१।२६२. हे० ।

२. हो धोनुस्वारात् ८।१।२६४. हे० ।

३. व्याकरण-प्राकाराने वगोः ८।१।२६८. हे० ।

उक्ता < उक्ता—संयुक्तादि ल लुक् और क को द्वित्व ।

यवत्तं < यवत्तम् " " "

सण्हं < सण्हम्—संयुक्तान्त्य ल लुक् और द्वित्वाभाव ।

विषयो < विषयः—संयुक्तान्त्य ल लुक् और क को द्वित्व ।

सहो < सहः—संयुक्तादि य लुक् और द को द्वित्व ।

अहो < अहः— " "

पिषां < पिषम्—संयुक्तान्त्य य लुक् और क को द्वित्व, पसारोपसर्ग को

हकार ।

धर्धं < धर्धम्—संयुक्तान्त्य लुक्, ध को द्वित्वाभाव, स्त में संयुक्तान्तिम् लोप और त को द्वित्व, उपाख्यर्धों त को ध ।

अफो < अर्यः—रेफ का लोप और क को द्वित्व ।

यगो < यगः—संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व ।

चघं < चघम्—संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व ।

गहो < गहः—संयुक्तान्त्य र लुक् और द्वित्वाभाव ।

रप्ती < राप्ति—संयुक्तान्त्य र लुक् और त को द्वित्व ।

चंटो. चंटो < चण्डः—संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और द्वित्वाभाव; गतागतर से

अप्पञ्जो, अप्पण्णू < अपञ्ज — संयुक्तादि ए लुक्, ण द्वित्व, ज के ज का लोप और ज द्वित्व; ण् लोपाभावपक्ष में ण द्वित्व और अकार को ऊकार ।

अहिञ्जो, अहिण्णू < अभिञ्जः—भ को ह, ण् लोप, ज को द्वित्व, विस्त्वाभाव पक्ष में ण को द्वित्व, अकार को ऊकार ।

जाणं, पाणं < जानम्—ज लोप और ज शेष, नकार को णत्वं, विस्त्वाभाव में ज के स्थान पर ण ।

दइयञ्जो, दइयण्णू < दैयजः—ये के स्थान पर णइ, य लोप और य को द्वित्व ।
इंगिअञ्जो, इंगिअण्णू < इंगितजः—म लोप और अ स्वर शेष, य लोप, ण द्वित्व ।

मणोञ्जं, मणोण्णं < मनोजम्—ज लोप और ज को द्वित्व ।

पज्जा, पण्णा < प्रज्ञा—ज लोप, ज को द्वित्व, विस्त्वाभाव पक्ष में ज लोप और ण को द्वित्व ।

अज्जा, अण्णा < आज्ञा—

संजा, सण्णा < संज्ञा—ज लोप और ज शेष, स्था से पर न होने से द्वित्वाभाव; विस्त्वाभाव पक्ष में ज लोप और अवशेष ण को द्वित्व ।

(१४१) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्गों के द्वित्व होने पर द्वितीय वर्ग के पूर्व उसी वर्ग के प्रथम और तृतीय अक्षर हो जाते हैं ।^१ यथा—

यस्त्वाणं < व्याख्यानम्—य लोप, शेष त्वा को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती त्वा को क ।

अगघो < अर्घ—संयुक्त रेफ का लोप, घ को द्वित्व और पूर्ववर्ती घ को ग ।

(१४२) दीर्घ स्वर पूर्व अनुस्वार से पर में रहनेवाले संयुक्त शेष व्यञ्जन का द्वित्व नहीं होता ।^२ जैसे—

ईसरो < ईश्वरः—संयुक्तान्त्य व का लोप और पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर होने से स को द्वित्व का अभाव ।

लासं < लाश्यम्—संयुक्तान्त्य य का लोप, पूर्व में दीर्घ स्वर होने से द्वित्वाभाव ।

सकंठो < संक्रान्त—संयुक्तान्त्य र का लोप, पूर्व में अनुस्वार रहने से द्वित्वाभाव ।

संम्ल < संम्लया—संयुक्तान्त्य य का लोप,

१. द्वितीय तुर्ययोपरि पूर्व ८।२।६०. हे० ।

२. ॥ दीर्घानुस्वारान् ८।२।६२. हे० ।

(१४४) रेफ और हकार को द्वित्व नहीं होता है ।^१ यथा—

सुंदरं < सौन्दर्यम्—संयुक्तादि ण का लोप होने पर रेफ को द्वित्व नहीं हुआ ।

बम्हचेरं < बम्हचर्यम्—

”

”

”

धीरं < धैर्यम्—

”

”

”

विहलो < विहल्यः—संयुक्तान्त्य व का लोप और ह को द्वित्वाभाव ।

यद्वायणो < कार्पायणः—संयुक्तादि रेफ का लोप, ण के स्थान पर ह और ह को द्वित्वाभाव तथा ण को व ।

(१४५) समासान्त पदों में पूर्वोक्त नियम की प्रवृत्ति विकल्प से होती है ।^२
यथा—

नइ-गामो, नइ-गामो < नदी-ग्रामः—इ लोप, ई स्वर लोप, संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और विकल्प से ग को द्वित्व ।

कुसुमप्पयरो, कुसुम-पयरो < कुसुम प्रसरः—रेफ का लुक् होने पर प को विकल्प से द्वित्व ।

देय-रथुई, देय-थुई < देव-स्तुतिः—स लोप, त् को विकल्प से द्वित्व, द्वितीय त के स्थान पर थ ।

तेह्लोकं, तेलोकं < त्रैलोक्यम्—र लोप, ल को विकल्प से द्वित्व ।

आणालखम्भो, आणाल-खम्भो < आलानस्तम्भः—समास होने से विकल्प से द्वित्व एवं वर्णव्यत्यय ।

मलय-सिहरक्खण्डं, मलय-सिहर-खण्डं < मलयसिहरक्खण्डम्—समास में विकल्प से ख को द्वित्व ।

पम्मुकं, पमुकं < प्रमुक्तम्—समास होने से म को विकल्प से द्वित्व हुआ है ।

(१४६) तैलादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत वाचायों के निर्णयानुसार कहीं अनन्त्य और अन्त्य व्यञ्जनों को द्वित्व होता है ।^३ उदाहरण—

तेह्लं < तैलम्—अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व ।

१. र-होः ८।२।६३. हे० ।

२. समासे वा ८।२।६७. हे ।

३. तैलादी ८।२।६८. हे० ।

४. प्राकृत प्रकाश में तैलादिगण के बदले नीडादि गण का उल्लेख मिलता है । ‘नीडादिपु’ ३।५२ में इस गण के शब्दों का नियमन किया है । ‘वत्पसतिका’ में नीडादिगण के शब्द निम्न यत्ताये भये हैं—

नीडब्बाहूतपण्डकसोतासि प्रेमयौवने ।

अजुः स्थूलं तथा तैलं तैलोत्थं च गणो यया ॥

मंडुको < मंडकः—अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व ।

उज्जू < जजु—अन्त्य व्यञ्जन ज को द्वित्व ।

सोत्तम् < सोतम्—अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व ।

पेम्मं < प्रेमम्—अन्त्य व्यञ्जन म को द्वित्व ।

विट्टा < मीडा—अन्त्य व्यञ्जन ट को द्वित्व ।

जोव्यणं < यौवनम्—अनन्तर—मध्य व्यञ्जन व को द्वित्व ।

बहुत्तं < बहुत्वम्—अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व ।

(१४६) सेरादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के मतानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य व्यञ्जनों को विकल्प से द्वित्व होता है ।

उदाहरण—

सेव्वा < सेरा—अन्त्य व्यञ्जन व को द्वित्व ।

विहित्तो, विहित्तो < विहित्त—अन्त्य व्यञ्जन त को विकल्प से द्वित्व ।
विकल्पाभाव में त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओरत्त ।

कोउहल्लं, कोउहल्लं < कौतूहलम्—अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व ।

घाउल्लो, घाउल्लो < व्याकूलः—संयुक्तान्त्य य का लोप, क का लोप, उ स्वर शेष और विकल्प से ल को द्वित्व ।

नेह्णं, नीहं, नेहं < नीहम्—अन्त्य व्यञ्जन ण को विकल्प से द्वित्व ।

नक्कता, नह्णं < नह्णः—अन्त्य व्यञ्जन ण को विकल्प से द्वित्व ।

माउक्कं, माउक्कं < मृदुक्कम्—अ को आ, द का लोप, शेष अ के स्थान पर उरत्त और विकल्प से क को द्वित्व ।

एक्को, एक्को < एकः—अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व, विकल्पाभावापक्ष में क का लोप अ स्वर शेष, विसर्ग को ओरत्त ।

थुल्लो, थोरो < स्थूलः—संयुक्तादि स् का लोप, ल को द्वित्व ।

हुत्तं, हूअं < हुतम्—त को द्वित्व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष ।

१. सेनादी वा ८।२।१६ हे० । सेनादि गण मे निम्न शब्द परिणमित हैं—

सेना कोतूहलं देवं विहितं मखजानुनी ।

पिवादयः नत्वा शब्दा एतादाद्या मयार्थका ॥

त्रैलोक्यं कणिकारश्च वेश्या भूर्जञ्च दुःखितम् ।

रात्रिविरासनिश्वासा मनोऽस्तेस्वररश्मयः ॥

दीपैकं शिवतूष्णीनं मित्रगुणादिदुर्लभाः ।

दुष्करोनिष्ठपुनर्मकरेणासपरस्परम् ।

नायकाद्यास्तथा शब्दाः सेनादिगणसम्भवाः ॥ कल्पलता ॥

मच्छिआ < मक्षिका—क्ष के स्थान पर च्छ और क छोप तथा या स्वर श्रेय ।
सरिच्छो < सक्षः—द लोप और ऋ के स्थान पर रि तथा क्ष को च्छ
हुआ है ।

छेत्तं < छेत्तम्—क्ष को छ तथा त्र में से र लोप और त को द्वित्व ।

छुदा < क्षुधा—क्ष को छ और घ को द हुआ है ।

वच्छो < वक्षः—क्ष को च्छ हुआ है ।

कुच्छी < कुक्षिः— " "

घच्छं < वक्षम्— " "

छुण्णो < क्षुण्णः—क्ष के स्थान पर छ हुआ है ।

कच्छा < वक्षा—क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है ।

छारो < क्षार—क्ष के स्थान पर ॥ हुआ है ।

कुच्छेअयं < कौक्षेयवं—क्ष के स्थान पर च्छ और य छोप तथा अ स्वर श्रेय ।

छुरो < क्षुर—क्ष को छ हुआ है ।

उच्छा < उक्षन्—क्ष को च्छ हुआ है ।

छयं < क्षतम्—क्ष को छ हुआ है ।

सारिच्छं < साक्ष्यम्—क्ष के स्थान पर च्छ ।

(१४९) उभय अर्थ के वाचक छ शब्द में क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है । यथा—

छणो < क्षणः—उत्सव अर्थ होने से क्ष के स्थान पर ॥ हुआ है ।

रणो < क्षणः—समय वाचक होने से क्ष के स्थान ख हुआ है ।

(१५०) पृथ्वी अर्थ होने पर क्षमा शब्द में क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है ।^१

यथा—

छमा < क्षमा—पृथ्वी अर्थ होने से क्ष के स्थान पर छ ।

रमा < क्षमा—माफी माँगना अर्थ होने से क्ष के स्थान में र ।

(१५१) ऋक्ष शब्द में ॥ के स्थान पर छ विकल्प से होता है ।^२ यथा—

रिच्छं, रिक्खं < ऋक्षम्—ऋ के स्थान पर रि, क्ष के स्थान पर च्छ तथा विकल्पाभाव पक्ष में वत्त हुआ है ।

(१५२) संयुक्त कम और डम् के स्थान में प आदेश होता है ।^३ यथा—

रप्पं, रूप्पणी < रक्कम्, रक्किणी—कम के स्थान पर प्प आदेश हुआ है ।

वुप्पलं < वुड्मलम्—डम् के स्थान पर प्प आदेश हुआ है ।

१. क्षमा उत्सव ८।२।२०. हे० ।

२. क्षमाया की ८।२।१८. हे० ।

३. ऋक्षे वा ८।२।१६. हे० ।

४. डममोः ८।२।३२. हे० ।

(१५३) ष्क और स्क के स्थान में ण आदेश होता है, यदि उन संयुक्ताक्षरों से घटित शब्द द्वारा किसी संज्ञा की प्रतीति होती हो ।^१ यथा—

पोक्स्वरं < पुष्स्वरम्—ष्क के स्थान पर क्स हुआ है ।

पोक्स्वरिणी < पुष्स्वरिणी " "

संघो < स्क्न्धः—स्क के स्थान पर ख ।

संघाचारो < स्क्न्धाचारः—स्क के स्थान पर ख ।

अप्स्वरदो < अपस्वरन्दः—स्क के स्थान पर क्स हुआ है ।

हुक्स्वरं < हुष्काम्—संज्ञा न होने से ष्क के स्थान पर ख आदेश नहीं हुआ, किन्तु संयुक्त ष का लोप और क को द्वित्व ।

निकार्म < निष्कामम्—

सक्कयं < संस्कुतम्—संज्ञा न होने से स्क के स्थान पर क्स नहीं हुआ, किन्तु स् का लोप और क को द्वित्व ।

निष्कपं < निष्कम्पम्—ष्क के स्थान पर ख नहीं हुआ किन्तु प् लोप, क को द्वित्व ।

निकओ < निष्कृत—स्क के स्थान पर क्स नहीं हुआ, किन्तु प् का लोप, क को द्वित्व, क का थ ।

नमोक्षारो < नमस्कारः—स्क को क, थ को ओ, स लोप और क को द्वित्व ।

सक्षारो < सत्क्षारः—स् लोप और क को द्वित्व ।

तक्षरो < तत्क्षरः—स्क के स्थान पर ख नहीं, स लोप और क को द्वित्व ।

(१५४) ऊट्ट, इट्ट और मंदट शब्द के ट को छोड़कर अन्य ट के स्थान में ठ आदेश होता है ।^२ यथा—

लट्टो < लटि—य के स्थान पर ल और ट के स्थान पर ठ तथा द्वित्व, पूर्व ट के स्थान पर ट एवं ईकार को दीर्घ ।

मुट्टो < मुटि—ट के स्थान पर ट्ट और ट्ट इकार को दीर्घ ।

दिट्टो < दिटि—ट में रहनेवाणी क के स्थान पर इकार; ट के स्थान में ट्ट और इकार को दीर्घ ।

सिट्टो < धेटि—संयुक्त रेफ का लोप, ताण्ठ्य श के स्थान पर ट्टत्थ म, पक्षा को इकार तथा ट को ट्ट और इकार को दीर्घ ।

१. ण-मोर्गमि ऋ३।४. हे० ।

२. ट्ठानुट्टे ट्ठसंठे ऋ३।३४—हे०

पुट्टो < पुट्टः—पू में रहनेवाली ऋ के स्थान पर उकार और ए के स्थान पर ट्ट, विसर्ग को ओत्व ।

कट्टं < कटम्—ए के स्थान पर ट्ट ।

सुरट्टो < सुराट्टः—रा को ह्रस्व, ए के स्थान पर ट्ट, रेफ का लोप और विसर्ग को ओत्व ।

इट्टो < इट्टः—ए को ट्ट, विसर्ग को ओत्व ।

अणिट्टं < अणिटम्—न को ण, ए के स्थान पर ट्ट ।

उट्टो < उट्टः—ए के ए का लोप और ट फो द्वित्व ।

संदट्टो < संदट्टः—द में रहनेवाली ऋ के स्थान पर ण, ए का लोप और ट को द्वित्व ।

(१५५) चैतप शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान में च आदेश होता है । जैसे—

सत्थं < सत्थम्—त्य के स्थान पर थ हुआ है ।

पथओ < प्रथयः—त्य के स्थान पर थ और य लोप और थ स्वर शेष, ओत्व ।

णिथं, निथं < नित्यम्—न के स्थान पर वैरुत्पिक ण और त्य को थ ।

पथच्छं < प्रथक्षम्—त्य को थ और क्ष के स्थान पर चउ ।

(१५६) प्रथूप शब्द में त्य को च और प को त्रिरूप से ह होता है । जैसे—

पथूहो, पथूसो < प्रथूपः—त्य को थ और प को ह ।

(१५७) कुछ स्थानों में त्व, थ्व, द्व और ध्व के स्थान में क्रमशः थ, चउ, ज और ञक आदेश होते हैं । यथा—

भोथा < भुत्त्वा—त्य के स्थान पर थ्व और क का लोप ।

णथा < णात्वा—त्व के स्थान पर थ ।

सोथा < भुत्त्वा—रेफ का लोप, साक्य श को दन्त्य स, उकार को ओत्व और त्व को थ ।

पिच्छी < पृथ्वी—थ्व को चउ हुआ है और पृ की ऋ को इकार ।

विज्जं < विज्ञान्—ज्ञा के स्थान पर ज्ञ और न को अनुस्वार ।

जुग्गा < जुद्ध्वा—ध्व के स्थान पर ञक हुआ है ।

१. त्यो चैत्थे पा२।१३. हे० ।

२. प्रथूपे परच हो वा पा२।१४. हे० ।

३. त्य थ्व द्व-त्त्वा च-छ-थ-भाः क्वचित् पा२।१५. हे० ।

जज्जो < जज्यः—ज्य के स्थान पर ज् ।

सेज्जा < शज्या— " "

भज्जा < भाज्या—ज्या के स्थान पर ज् ।

ऊज्जं < कार्ज्यम्— " "

यज्जं < यज्यम्—ज्य के स्थान में ज्ज ।

पज्जाओ < पज्याय— " "

पज्जन्तं < पर्यन्तम्— " "

विशेष—शौरसेनी में ज्य के स्थान पर ज्य भी पाया जाता है ।

(१९१) ज्य के स्थान में क्क पुरं म्म और ज के स्थान में ण आदेश होते हैं । यथा—

क्काणं < क्यानम्—ज्य के स्थान पर क्क आदेश

खयउक्काओ < उपाख्यायः—प का व, ज्य का क्क, य खोप, अ स्वर दोष और विसर्ग को ओत्व ।

सउक्काओ < स्वाख्याय—ज्य के स्थान पर उक्क ।

मउक्कं < मध्यं— " "

अउक्काओ < अख्यायः— " " तथा य खोप अ स्वर दोष और ओत्व ।

निण्णं < निम्नम्—म्न के स्थान पर ण्ण ।

पज्जुण्णो < प्रधुम्न—प्र के स्थान पर प, धु के स्थान पर ज्जु और म्म के स्थान पर ण्णो ।

णाणं < शाणम्—ज के स्थान पर ण्ण आदेश ।

संण्णा < संज्ञा— " "

पण्णा < प्रज्ञा— " "

विण्णाणं < विज्ञानम्— " " और न के स्थान पर ण ।

(१९२) समस्त और स्तम्भ शब्द के स्त को छोटकर अन्त्य स्त के स्थान में थ आदेश होता है । यथा—

हृत्यो < हस्तः—स्त के स्थान पर त्थ आदेश हुआ है ।

थोत्तं < स्तोत्रम्—स्तो के स्थान पर थ तथा त्र में संयुक्त त् + र में से र का लोप और त को द्वित्व ।

१. साध्वस ध्य-क्षा ज् ८१२।२६. हे० तथा म्मजोर्णं ८१२।४२. हे० ।

२. स्तस्य थोत्तमस्त-स्तम्ये ८१२।४५. हे० ।

पुञ्जहो < पूराङ्—संयुक्त रेफ का लोप, ण को द्वित्व, ह्ण के स्थान में ण् ।
 अवरणहो < अपराङ्—अप के स्थान पर अण और ङ के स्थान में ण् ।

(१६६) संयुक्त रम, पम, स्म और ह्य के स्थान में म्ह आदेश होता है ।^१

उदाहरण—

कम्हारो < काश्मीरः—रम के स्थान पर म्ह आदेश और ईकार का आकार ।
 पम्हाइ < पद्म—रमन् में से संयुक्त क् का लोप और रम के स्थान पर म्ह ।
 कुम्हाणो < कुमानः—रम के स्थान पर म्ह और न को णत्व ।
 कम्हारा < कश्मीराः—रम के स्थान पर म्ह और ईकार के स्थान पर आकार ।
 गिरहो < ग्रीष्मः—पम के स्थान पर म्ह और विसर्ग को ओत्व ।
 उम्हा < ऊष्मा—ऊकार को उ और पम के स्थान पर म्ह ।
 अम्हारिसो < अस्मादस्य—रम के स्थान पर म्ह और दस्यः के स्थान पर रिसो ।
 विम्हओ < विस्मयः—रम के स्थान पर म्ह और म लोप, अ स्वर भेप और ओत्व ।

वम्हा < वस्त्रा—संयुक्त रेफ का लोप, ह्य के स्थान पर म्ह आदेश ।

सुम्हा < सुखा—ह्य के स्थान में म्ह आदेश ।

वम्भणो, वम्हणो < वामाण—संयुक्त रेफ का लोप, ह्य के स्थान में म्ह और विकल्पाभाव में वम्भ होता है ।

वम्भचेरं, वम्हचेरं < वम्वचर्यम्—ह्य के स्थान पर म्ह तथा चर्यम् का चेरं ।^२

ररसी < ररिमः—उक्त नियम लागू न होने से म लोप और स को द्वित्व ।

सरो < स्मर—उक्त नियम लागू न होने से म लोप ।

(१६७) संयुक्त ह्य के स्थान पर ञ आदेश होता है ।^३ यथा—

सम्हो < सहाः—ह्य के स्थान पर ञ ।

मर्मं < मरम्—

” ”

गुग्मं < गुग्मम्—

” ”

(१६८) संयुक्त ङ के स्थान में ल्ह आदेश होता है ।^३ जैते—

कल्हारं < कल्हारम्—संयुक्त ङ के स्थान में ल्ह आदेश ।

पल्हाओ < प्रदादः—संयुक्त रेफ का लोप, ङ के स्थान में ल्ह और द का लोप, अ स्वर भेप तथा ओत्व ।

१. पम-रम-पम-रम ह्य म्हः ५।२।७४. हे० ।

२. वी. शो. ५।२।१२४. हे० ।

३. हो. ल्हः ५।२।७६. हे० ।

थोअं < स्तोक्म्—स्तो के स्थान पर थो, क छो, और अ स्वर श्लेष ।

पत्थरो < प्रस्तरः—स्त के स्थान पर त्थ, विसर्ग को ओत्व ।

थुई < स्तुतिः—स्तु के स्थान पर धु और त का श्लेष, इकार को दीर्घ ।

समत्तं < समस्त्वम्—स्त्व संयुक्त में से आदि वर्ण सु का श्लेष और त् को द्वित्व ।

तंचो < स्तम्भः—आदि संयुक्तस् का श्लेष, म् को अनुस्वार और विसर्ग को ओत्व ।

(१६३) संयुक्त न्म के स्थान में म आदेश होता है ।^१ तथा—

जम्मो < जन्म—न्म को म्म आदेश ।

मम्महो < मन्मथः—न्म के स्थान पर म्म और थ के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व ।

(१६४) ण्य और ष्य के स्थान में फ आदेश होता है ।^२ जैसे—

पुष्फं < पुष्पम्—ण्य के स्थान पर फ्क आदेश ।

सप्फं < शपम्—

निष्फेसो < निष्पेपः—

फावृणं < स्पन्दनम्—ष्य के स्थान में फ आदेश और न को णत्य ।

पडिप्फद्दी < प्रतिस्पर्धा—ष्य के स्थान पर फफ, संयुक्त रेफ का श्लेष ।

प्रति को षडि ।

फासो < स्पर्शः—ष्य के स्थान पर फ, संयुक्त रेफ का श्लेष, ओरप और अकारण अनुस्वार ।

(१६५) संयुक्त न्न, ण्न, स्न, ह, और सून्म शब्द के न्म के स्थान में ण्ह आदेश होता है ।^३ उदाहरण—

घिएवू < विष्णुः—ण्न के स्थान पर ण्ह तथा उकार को दीर्घ ।

कण्हो < कृगः—कृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर अ और ण्न को ण्ह ।

उएहीसं < उष्णीषम्—ण्न के स्थान में ण्ह, मूर्धन्य ष को सत्य ।

जोएह्वा < ज्योत्स्ना—संयुक्तान्त्य य का श्लेष और त्सना के स्थान पर ण्हा ।

एह्वाऊ < स्नायुः—स्न के स्थान पर ण्ह, यकार का श्लेष और ऊ स्वर श्लेष तथा दीर्घ ।

एह्वाणं < स्नानम्—स्न के स्थान में ण्ह और न को णत्य ।

यण्हो < वडिः—ड्ड के स्थान में ण्ह तथा इत्थ इकार को दीर्घ ।

जण्हू < जङ्गू—

१. न्मो मः ८।२।६१. हे० ।

२. ण्य-स्पयोः फः ८।२।५३. हे० ।

३. सूदम-श्न-ण्ण-स्न-ह-ह्ण-श्ना एहः ८।२।७५. हे० ।

सुवे कअ८स्वः वृत्तम्—श् और व् का वृथक्करण, णा को स, उत्व ।

सुवे जना८स्वे जनाः—स् और व् का वृथक्करण एवं उत्व ।

(१६२) ज्या शब्द में वृथक्करण और अन्त्य व्यंजन से पूर्व ईकार होता है ।^१ यथा—

जोआ८ज्या—ज और या का वृथक्करण, ईस्व और य लोप तथा आ स्वर दोष ।

—

१. ज्यायामीत् ८।२।११५ हे० ।

चौथा अध्याय

वर्ण-परिवर्तन

वर्ण ग्रहति अध्याय में वर्ण परिवर्तन (स्वर और व्यंजनों का परिवर्तन) दिखलाया गया है, पर यह इतना वैयक्तिक और शास्त्रीय है, जिससे प्राकृतभाषा की शब्दावली को अवगत करने में जिज्ञासुओं को आघात करना होगा। अतः इस अध्याय में सरलता-पूर्वक अग्नि-परिवर्तन के नियमों का सौदाहरण प्रियेयन किया जायगा। तथ्य यह है कि संस्कृत अग्नियों में परिवर्तन कर प्राकृत शब्द गढ़े जाते हैं। अतः प्राकृत भाषा के पैयाकरणों ने प्राकृत की शब्दावली संस्कृत को प्रकृति—मूल शब्द मानकर सिद्ध की है।

स्वर-परिवर्तन

(१) संस्कृत की अ अग्नि प्राकृत में आ, इ, ई, उ, ए, ओ, अइ और आइ में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरण—

(क) अ = आ—संस्कृत की अ अग्नि का विकल्प से आ में परिवर्तन ।

आहिआई, अहिआई < अभिवाति—अ को विकल्प से दीर्घ, मध्य और अन्त्य य तथा त का लोप, अ और इ स्वर छेप, दीर्घ ।

आफंसो, अफंसो < अस्पृशः—अ को विकल्प से दीर्घ, संयुक्त स का लोप, प को फ, संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओस्व ।

चाउरंतं, चउरंतं < चतुरन्तम्—चकारोत्तर अ को दीर्घ, त छेप, उ नेप ।

दाहिणो, दक्खिणो < दक्षिणः—दकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क्ष को विकल्प से ह, विकल्पाभावपक्ष में वत् ।

पारकेरं, परकेरं < परकीयम्—पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीय के स्थान पर केर ।

पारक्कं, परक्कं < परकीयम्—पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीय को वक्कं ।

पुणा, पुण < पुनः—न जो न एवं विकल्प से दीर्घ ।

पायडं पयडं < प्रकटम्—प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क लोप, अन्तर और य ध्रुति, ट को ड ।

पाडिवा, पडिवा < प्रतिपत्—प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, प का व और त का वा ।

पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धिः—प्र के संयुक्त रेफ का छोप और अ को विकल्प से दीर्घ, अन्तिम हकार को दीर्घ ।

पाडिफदी, पडिफदी < प्रतिस्पर्धी—प्र के संयुक्त रेफ का छोप, अ को विकल्प से दीर्घ, स छोप और प को फ तथा संयुक्त रेफ का छोप, ध को द्वित्व और पूर्व को द ।

पावयणं, पवयणं < प्रवचनम्—प्र के संयुक्त रेफ का छोप, अ को विकल्प से दीर्घ, च छोप और स्वर को य भुवि, न को ण ।

पारोहो, परोहो < प्ररोहः—प्र के संयुक्त रेफ का छोप और अ को विकल्प से दीर्घ ।

पावासु, पयासु < प्रवासी—

” ” ”

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः—

” ” ”

पासुतो पासुतो < प्रसुतः—

” ” ” संयुक्त

प छोप और त को द्वित्व ।

माणंसी, मणंसी < मनस्वी—मकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, न को ण, अनुस्वार और संयुक्त व का छोप ।

माणंसिणी, मणंसिणी < मनस्विनी

” ” ”

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः—सकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, मकारोत्तर ऋ को इ और इकार को ईकार ।

सारिच्छो, सरिच्छो < सारक्षः—सकारोत्तर अ को दीर्घ और दक्ष के स्थान पर रिच्छो ।

(ख) अ = इ संस्कृत की अ ध्वनि का इ में परिवर्तन ।

इसि < ईषत्—दीर्घ ईवार को ह्रस्व इकार, पकारोत्तर अ को इकार और अन्तिम ह्रस्वस्य व्यञ्जन त् का छोप ।

उचिमो < उत्तमः—तकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग का ओह्र ।

फइमो < फतमः—सकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग का ओह्र ।

किचिणो < कृपणः—कू में रहनेवाली ऋ को इ, प को घ और अकार को इकार, विसर्ग को ओह्र ।

दिर्णं < दर्तः—दकारोत्तर अकार को इह्र तथा र्ध के स्थान पर णं ।

मिरिअं < मरिचम्—मकारोत्तर अकार को इकार, च का छोप और अ स्वर छेप ।

मजिमो < मज्जमा—संयुक्त य का छोप, ध के स्थान पर भ, द्विह्र और पूर्ववर्ती ऋ को ज् तथा अ को इकार ।

मुईगो < मृदङ्गः—मृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर उ, द छोप और अ स्वर के स्थान पर इह्र ।

पेडिसो < येतसः—त को ढ और अकार के स्थान पर इत्य ।

यिअणं < व्यजनम्—संयुक्त य का छोप और अ को इत्य, न छोप तथा अ स्वर शेष ।

चिखीअं < व्यखीरम्—संयुक्त य का छोप और अ को इत्य, क छोप और अ स्वर शेष ।

सिचिणो < स्थणः—स्व का वृथस्करण, स को इत्य तथा न को गत्य, तिसर्ग का ओत्य ।

इंगारो, अंगारो < अङ्गात्—विरुद्ध से अ के स्थान पर इत्य ।

पिककं, पक्कं < परम्—पकारोत्तर अकार को विकल्प से इत्य, संयुक्त र का छोप और क को इत्य ।

णिडालं, णडालं < लडात्—ककारोत्तर अ को विकल्प से इत्य, ट को ढ ।

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो < सप्तपर्गः—सप्त के स्थान पर छत्त, अकार को इत्य, प को य तथा संयुक्त रेफ का छोप, न को इत्य पूर्व तिसर्ग का ओत्य ।

(ग) अ = ई—शब्द के आदि में रहनेवाली संस्कृत की अ ध्वनि ई में परिवर्तित हो जाती है ।

हीरो, हरो < ह्राः—हकारोत्तर अकार को ईत्य ।

(प) अ = उ—संस्कृत की अ ध्वनि का उ ध्वनि में परिवर्तन अर्थात् संप्रसारण ।

गउओ < गवयः—पकारोत्तर अ के स्थान पर उ और य छोप, अ शेष, तिसर्ग को ओत्य ।

गउआ < गयथाः—पकारोत्तर अ के स्थान पर उ, य छोप और स्वर शेष, खोलीग ।

भुणी < ध्वनिः—संयुक्त व का छोप, ध को ऋ, अकार को उत्त्य, न को ण ।

घोसुं < विष्वक्—संयुक्त य छोप, अ को उत्त्य ।

तुरिअं < श्वरितम्—संयुक्त य छोप, अ को उत्त्य ।

सुअइ, सुअइ < स्वपिति—संयुक्त व छोप, अ को उत्त्य ।

खुडिओ, खडिओ < खण्डितः—विरुद्ध से खकारोत्तर अकार को उ, व छोप और अ स्वर शेष ।

चुडं, चडं < चण्डम्—चकारोत्तर अकार को वैकल्पिक उ ।

पुडम, पडुमं, पुडुमं, पडमं < प्रथमम्—विरुद्ध से पकारोत्तर अकार को उ यकारोत्तर अकार को क्रमशः दोनों अकार को उ तथा य के स्थान पर ढ ।

(ङ) अ = ऊ—संस्कृत की अ ध्वनि का ऊ में परिवर्तन ।

अदिण्णू < अभिड्ड—भ के स्थान पर ढ, ङ के स्थान पर ण्ण तथा अ का ऊ ।

आगमण् < आगमन्—अ के स्थान पर ण् और अ को उत्तर ।

कयण् < कृतन्—क का लोप, इ के स्थान पर ण और अ को उत्तर ।

विण् < विज्—अ को ण और अ को उत्तर ।

सव्वण् < सर्वन्—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, श्व को ण तथा अ को उत्तर ।

(घ) अ = ए—संस्कृत की अ ध्वनि का प्राकृत में एकार परिवर्तन होता है ।

एत्थ < अत्थ—अ के स्थान पर ए, त्र के स्थान पर थ ।

अंतेउरं < अन्तःपुरम्—तकारोत्तर अकार को एकार, पत्तर का लोप और उ स्वर शेष ।

अंतेआरी < अन्तरचारी—तकारोत्तर अकार को एकार, चकार लोप और आ स्वर शेष ।

गेंदुअं < कन्दुवम्—क के स्थान पर ग तथा अकार को एकार और क लोप, अ स्वर शेष ।

वन्हचेरं < मल्लधर्मम्—संयुक्त रेफ का लोप, ह के स्थान पर म्, चकारोत्तर अकार को एकार, संयुक्त य का लोप ।

सेज्जा < सज्जा—तालव्य ज को दन्त्य स, अकार को एकार और य को अ ।

हुंदेरं < सौन्दर्यम्—तकारोत्तर औकार को उकार, दकारोत्तर अ को एकार और संयुक्त य का लोप ।

अच्छेरं, अच्छरिअं < आरव्यम्—र के स्थान पर छ तथा त्रिकल्प से अकार को एकार ।

उकरो, उकरो < उत्तरः—संयुक्त त का लोप, का को द्वित्व और ककारोत्तर अकार को एकार ।

पेरंतो, पजंतो < पर्यन्तः—पकारोत्तर अकार को त्रिकल्प से एकार, त्रिकल्पाभास में र के स्थान पर ज ।

वेल्ली, वल्ली < वल्ली—तकारोत्तर अकार को त्रिकल्प से एकार ।

(छ) अ = ओ—संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में ओ रूप में परिवर्तित होती है ।

तमोकारो < नमस्कारः—मकारोत्तर अकार को ओकार, संयुक्त स का लोप और क को द्वित्व ।

परोप्परं < परस्परम्—रकारोत्तर अकार को ओकार, संयुक्त त का लोप और प को द्वित्व ।

ओप्पेइ, अप्पेइ < अर्पयति—अ को त्रिकल्प से ओ, संयुक्त रेफ का लोप, प को द्वित्व और य को पश्च तथा त लोप और इ स्वर शेष ।

सोवइ, सुवइ < स्वपिति—संयुक्त व का लोप, परचात् सकारोत्तर अकार को ओकार, व को व और त्रिभक्ति चिह्न इ ।

ओप्यिअं, अप्यिअं < अर्पितम्—विकल्प से अकार को ओकार, रेफ का लोप और य को द्वित्व, त लोप और ज स्वर शेष ।

पोम्मं < पदूमम्—पकारोत्तर अकार को ओकार, दूम के स्थान पर म्म ।

(ज) अ अइ—संस्कृत के मय प्रत्ययान्त शब्दों में विकल्प से मकारोत्तर अकार को प्राकृत में अइ होता है ।

जलमइअं, जलमअं < जलमयम्—मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष ।

विसमइअं, विसमअं < विपमयम्—मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष ।

दुहमइअं, दुहमअं < दुःखमयम्—ख के स्थान पर ह, मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप, अ स्वर शेष तथा न के स्थान पर यभुति ।

सुहमइअं, सुहमअं < सुखमयम्— " " "

(ऋ) अ = आइ—संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में आइ भी होती है ।

वणाइ, न वणो < न पुनः—प का लोप, उ स्वर शेष तथा नकारोत्तर अकार को विकल्प से आइ ।

पुणाइ, पुणो < पुनः— " " "

(२) संस्कृत की आ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ऊ, ए और ओ में परिवर्तित हो जाती है ।

(क) आ = अ—संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में अ रूप में परिवर्तित हो जाती है ।

आचरिओ < आचार्यः—च लोप, अ स्वर शेष और य भुति, चा में रहनेवाके आ को अ, र्य को रिओ ।

कंसिओ < कंसिकः—क के स्थान पर कं आकार को अकार ।

कंसं < कंसम्— " " " संयुक्त व लोप ।

पंडवो < पाण्डवः—प के स्थान पर प ।

पंसणो < पांसनः— " " "

पंसू < पांसुः— " " "

मरहट्टो < महाराष्ट्रः—ह्रा और रा के स्थान पर ह, र तथा वर्णव्यत्यय, संयुक्त प और रेफ का लोप, ट को द्वित्व ।

मंसं < मांसम्—मां के आकार को अकार ।

बंसियो—गंशिकः—गां के आकार को अकार, ताल्प्य त को दन्त्य स, उ छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

सामओ < स्यामाऊ—संयुक्त मा का छोप, मा के दाकार को अकार, उ छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

संजत्तिओ < सांयत्तिकः—सां के स्थान पर स, य को ज, संयुक्त रेफ का छोप त को द्वित्व, क छोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

ससिद्धिओ < सांसिद्धिकः—सां के स्थान पर स, क छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

उक्खयं, उम्मायं < उत्खातम्—संयुक्त त का छोप, ख को द्वित्व, पूर्ववर्ती क को ल तथा विकल्प से ला को ख, त छोप, अ स्वर शेष, य ध्रुति ।

पुब्बएहो, पुब्बाएहो < पूर्वाद्भः—संयुक्त रेफ का छोप, व को द्वित्व, भा को विकल्प से भ ।

कलओ, कालओ—फालकः—झ में रहनेवाले आ को विकल्प से अ, क छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

कुमरो, कुमारो—कुमारः—भा में रहनेवाले आ को विकल्प से अ ।

एइरं, एाइरं < एादिभ्यः—एा के स्थान पर विकल्प से ख, द छोप और इ स्वर शेष ।

चमरो, चामरो < चामरः—चा को विकल्प से च ।

तलवेंट, तालवेंट < तालवृत्तम्—ता को विकल्प से त भा वृत्तम् को वेंट ।

नराओ, नाराओ < नाराधः—निकरं से ना को न, च छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

पययं, पायय < प्राट्ठम्—संयुक्त रेफ का छोप, धा को विकल्प से अ, त छोप, स्वर शेष त भा यधुति ।

बलया, बलाया < बलाका—का के स्थान पर विकल्प से ल, क खार्व, आ स्वर शेष और यधुति ।

बम्हणो, बाम्हणो < बाम्हाणः—संयुक्त रेफ का छोप, भा को विकल्प से भ, झ को म्द ।

ठविओ, ठाविओ < स्थापितः—संयुक्त स का छोप, थ को द तथा आकार को विकल्प से अकार, प को च, त छोप, अ स्वर शेष, ओहर ।

परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ < परिष्ठापितः—थ को विकल्प से ठ ।

संठविओ, संठाविओ < संस्थापितः—संयुक्त स का छोप, था को विकल्प से थ और थ के स्थान पर ठ ।

हलिओ, हलिओ < हलिः—ह के स्थान पर विकल्प से ह, क छोप, स्वर घेप और विसर्ग को ओह्य।

अह्य, अह्या < अयवा—य के स्थान पर ह और या को विकल्प से व।

तह, तहा < तथा—थ के स्थान पर ह और था में रहनेवाले आकार को विकल्प से अकार।

जह, जहा < यथा—

य, या < वा—य में रहने वाले आकार को विकल्प से व।

ह, हा < हा—हा

(ख) आ = इ—संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में इ के रूप में परिवर्तित होती है।

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः—च का छोप, आ स्वर घेप और इत आ के स्थान पर विकल्प से इत्य।

कुप्पिसो, कुप्पासो < कृपायः—ऊकार के स्थान पर उकार, संयुक्त रेफ का छोप और प को द्वित्व तथा आकार को विकल्प से इकार।

निसिअरो, निसाअरो < निशाचरः—तालाच्च वा को वृक्ष्य स तथा सा में रहने वाले आ को विकल्प से इकार, क छोप, अ स्वर घेप और विसर्ग को ओह्य।

(ग) आ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की आ ध्वनि ई में परिवर्तित होती है।

सलीडो < पल्लवः—संयुक्त प का छोप, ल का द्वित्व और आकार को ईकार तथा ट को ड, विसर्ग को ओह्य।

ठीणं, थीणं < स्थानम्—संयुक्त स का छोप, स्थ के स्थान में थ और थ को ड तथा आकार को ईकार, न को ण।

- (घ) आ = उ

उहं < आर्द्रम्—भा के स्थान पर उ, र्द्र को हु।

सुपदा < सास्ना—सा में रहने वाले भा को उकार और स्वर के स्थान पर णदा।

शुवओ < स्तावरु—स्त के स्थान पर थ और आकार को उकार, क छोप और अ स्वर घेप, विसर्ग को ओह्य।

(ङ) आ = ऊ

अज्जू < आर्या—सात्थ्य वर्ण होने से र्य के स्थान पर ज और आकार को उकार।

ऊसारो, आसारो < आसारः—आ के स्थान पर विकल्प से ऊ।

(च) आ = ए—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की अ ध्वनि ए में परिवर्तित होती है।

रोज्जम् < प्राद्यम्—संयुक्त रेफ वा लोप, आकार को एकार, हा के स्थान पर जम् ।
 असहेज्जो, असहज्जो < असहाज्य—दा के स्थान पर विरूप से हे और व्य
 को ज, विसर्ग को ओत्व ।

एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं < एतावन्मात्रम्—एतावन् के स्थान पर एत्तिअ, ता
 के स्थान पर विरूप से मे, संयुक्त रेफ वा लोप, त को द्वित्व ।

भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं < भोजनमात्रम्—ज कर लोप और अ स्वर शेष, मा
 के स्थान पर मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व ।

देर, दार < द्वारम्—संयुक्त व का लोप, आकार को विकल्प से एकार ।

पारेवओ, पारावओ < पारावत्.—रा में रहने वाले आ के स्थान पर विकल्प
 से ए, प के स्थान पर व, त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

पच्छेस्मम्, पच्छास्मम् < पश्चास्मम्—पश्चात् के स्थान पर पच्छा और आकार
 को विकल्प से एकार ।

(छ) आ = ओ

ओल्ल < आर्द्धम्—आ के स्थान पर ओ, द्र के स्थान पर ल ।

ओली < आली—आ के स्थान पर ओ ।

(३) सस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, उ, ए और ओ के रूप में परिवर्तित
 होती है ।

(क) इ = अ—निम्नलिखित शब्दों में इ ध्वनि प्राकृत में अ हो जाती है ।

इअ < इति—तरार का लोप और इ स्वर शेष तथा इ के स्थान पर अ ।

वित्तिरो < तित्तिरि.—रकार में रहने वाली इकार के स्थान पर अ ध्वनि ।

पहो < पथिन्—थ के स्थान पर ह और इकार के स्थान पर अ, हुलन्त्य भन्त्य
 व्यंजन का लोप ।

पुहई < पृथिवी—पृ में रहने वाली न के स्थान पर उ, थ के स्थान पर ।
 हुकार को अकार और व लोप, ई स्वर शेष ।

पडसुआ < प्रतिभृत्—प्रति के स्थान पर पड संयुक्त रेफ का लोप, ताल्० प श
 को दन्त्य स और त् को आ ।

वहेडओ < विभीषण—व में रहने वाली इ के स्थान पर अ, अ के स्थान पर इ,
 इ को ए, त के स्थान पर ड, फ लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

मुसओ < मृषिः—मृधन्त्य प को दन्त्य स तथा इकार को अकार, क लोप,
 अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व ।

हलदा < हलिदा—र के स्थान पर ल, इकार को अकार और द्रा में से रेफ का
 लोप और द को द्वित्व ।

इंगुअं, अंगुअं < इंगुदम्—इ के स्थान पर विकल्प से अ, इ छोप और अ स्वर शेष ।

सिदिलं, सडिलं < सिथिलम्—तालव्य श का दन्त्य स, स में रहनेवाली इ के स्थान पर विकल्प से अ तथा थ को ढ ।

पसिदिलं, पसडिलं < पसिथिलम्—संयुक्त रेफ का छोप, तालव्य श को दन्त्य स, विकल्प से इ के स्थान पर अ, थ को ढ ।

(ङ) इ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में ई हो जाती है ।

जीहा < जिह्वा—जि में रहने वाली इ के स्थान पर ईकार, संयुक्त व का छोप ।

धीसा < धिंशति—धि में रहने वाली इकार के स्थान पर ईकार, अनुस्वार का छोप ।

सीसा < सिंशत्—सि में से संयुक्त रेफ का छोप, इकार को ईकार, अनुस्वार छोप ।

सीहो < सिहः—सि में संयुक्त इकार को ईकार, अनुस्वार छोप ।

नीसरई, निस्सरई < निस्सरति—नि में रहनेवाली इकार को विकल्प से दीर्घ ।

नीसई, निस्सई < निस्सदम्— " " "

(ग) इ = उ—निम्न शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में उ हो जाती है ।

उच्छू < इक्षुः—इ के स्थान पर उ और क्षु के स्थान पर च्छु ।

दु < द्वि—संयुक्त व का छोप और इकार को उकार ।

दुविहो < द्विविधः—संयुक्त व का छोप और इकार को उकार तथा ध के स्थान पर ह, विसर्ग को आंतर ।

णु < नि—नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, न को ण ।

दुआई < द्विजातिः—संयुक्त व का छोप और इकार के स्थान पर उकार, ण छोप और आ स्वर शेष, त छोप और इकार को दीर्घ ।

नु < नि—इकार को उकार ।

दुहा < द्विधा—संयुक्त व का छोप, इकार को उकार, ण को ह ।

णुमज्जई < निमज्जति—नि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ और न को णत्त, त का छोप, इ स्वर शेष ।

दुमत्तो < द्विमात्रः—संयुक्त व का छोप, इकार को उकार, मात्रः को मत्तो ।

णुमन्नो < निमन्नः—नि में रहनेवाली इकार के स्थान पर उकार, संयुक्त ण का छोप और न को द्विस्व ।

दुरेहो < द्विरेखः—संयुक्त व का छोप, इकार को उकार, ख को ह ।

पावासु < प्रवासिन्—संयुक्त रेफ का छोप, प को दीर्घ, सि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ ।

रोज्जम् < ग्राहम्—संयुक्त रेफ वा छोप, आकार को एकार, ३ के स्थान पर उम् ।
 असहेज्जो, असहज्जो < असहाय्यः—हा के स्थान पर विकल्प से हे और य
 को ज, विसर्ग को ओत् ।

एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं < एतावन्मात्रम्—एतावन् के स्थान पर एत्तिअ, मा
 के स्थान पर विकल्प से मे, संयुक्त रेफ वा छोप, त को द्वित्व ।

भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं < भोजनमात्रम्—ज का छोप और अ स्वर शेष, भा
 के स्थान पर मे, संयुक्त रेफ का छोप, त को द्वित्व ।

देरं, वारं < द्वारम्—संयुक्त व का छोप, आकार को विकल्प से एकार ।

पारेवओ, पारावओ < पारापत्तः—रा में रहने वाले आ के स्थान पर विकल्प
 से ए, व के स्थान पर व, त छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत् ।

पच्छेकम्मं, पच्छाकम्मं < पश्चात्कर्म—पश्चात् के स्थान पर पच्छा और आकार
 को विकल्प से एकार ।

(छ) आ = ओ

ओहं < आहंम्—आ के स्थान पर ओ, ह के स्थान पर छ ।

ओली < आली—आ के स्थान पर ओ ।

(३) संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, उ, ए और ओ के रूप में परिवर्तित
 होती है ।

(क) इ = अ—निम्नलिखित शब्दों में इ ध्वनि प्राकृत में अ हो जाती है ।

इअ < इति—तकार का छोप और इ स्वर शेष तथा इ के स्थान पर अ ।

तित्तिरो < तित्तिरिः—रकार में रहने वाली इकार के स्थान पर अ ध्वनि ।

पहो < पयिन्—य के स्थान पर ह और इकार के स्थान पर अ, इहन्त्य अन्त्य
 व्यंजन का छोप ।

पुहई < पृथिवी—थ में रहने वाली ऋ के स्थान पर उ, थ के स्थान पर ई
 हकार को अकार और व छोप, ई स्वर शेष ।

पडंसुअ < प्रतिभुत्—प्रति के स्थान पर पड संयुक्त रेफ का छोप, तात्त्व्य श
 को दन्त्य स और त् को आ ।

वहेडओ < विभीतकः—व में रहने वाली इ के स्थान पर अ, भ के स्थान पर ह,
 इ को ए, त के स्थान पर ड, क छोप और अ स्वर शेष, विभर्ग को ओत् ।

मुसओ < मूपिक—मूर्धन्य प को दन्त्य ३ तथा इकार को अकार, क छोप,
 अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत् ।

हलहा < हनित्रा—र के स्थान पर ल, इतर को अकार और द्रा में से रेफ का
 छोप और द को द्वित्व ।

इंगुअं, अंगुयं < इंगुदम्—इ के स्थान पर विकल्प से अ, द लोप और अ स्वर शेष ।

सिद्धिलं, सद्धिलं < सिधिलम्—तालव्य श का दन्त्य स, स में रहनेवाली इ के स्थान पर विकल्प से अ तथा य को उ ।

पसिद्धिलं, पसद्धिलं < प्रसिधिलम्—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विकल्प से इ के स्थान पर अ, य को उ ।

(ल) इ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में ई हो जाती है ।

जीहा < जिह्वा—जि में रहने वाली इ के स्थान पर ईकार, संयुक्त व का लोप ।

वीसा < विसति—वि में रहने वाली इकार के स्थान पर ईकार, अनुस्वार का लोप ।

वीसा < विशत्—वि में से संयुक्त रेफ का लोप, इकार को ईकार, अनुस्वार लोप ।

सीहो < सिहः—सि में संयुक्त इकार को ईकार, अनुस्वार लोप ।

नीसरई, निस्सरइ < निस्सरति—नि में रहनेवाली इकार को विकल्प से दीर्घ ।

नीसई, निस्सई < निस्सहम्—

" " "

(ग) इ = उ—निम्न शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में उ हो जाती है ।

उरु < इरुः—इ के स्थान पर उ और रु के स्थान पर उरु ।

दु < दि—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार ।

दुयिहो < द्विषिषः—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार तथा ध के स्थान पर ह, विसर्ग को ओष्ठ ।

गु < नि—नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, न को ण ।

दुआई < द्विजातिः—संयुक्त व का लोप और इकार के स्थान पर उकार, ल लोप और आ स्वा शेष, ण लोप और इकार को दीर्घ ।

गु < नि—इकार को उकार ।

दुहा < द्विधा—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ध को ह ।

गुमज्जइ < निमज्जति—नि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ और न को णत्व, त का लोप, इ स्वर शेष ।

दुमत्तो < द्विमात्रः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, मात्रः को सतो ।

गुमत्तो < निमग्नः—नि में रहनेवाली इकार के स्थान पर उकार, संयुक्त ग का लोप और न को द्वित्व ।

दुरेहो < द्विरेखः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ख को ह ।

पावामु < प्रवासिन्—संयुक्त रेफ का लोप, प को दीर्घ, सि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ ।

दुवयणं < द्विवचनम्—संयुक्त व का छोप, इकार को उकार, च के स्थान पर य, न को णत्व ।

पाचासुओ < प्रवासिरुः—संयुक्त रेफ का छोप, अ को दीर्घ, सि में रहने वाली इकार को उकार, क छोप और विसर्ग को ओत्व ।

जहुट्टिलो, जहिट्टिलो < युधिष्ठिरः—य को ज, घ को इ तथा इकार के स्थान पर विकल्प से उकार, संयुक्त प का छोप, ठ को द्वित्व, पूरं ठ को ट और र को ल ।

दुउणो, विउणो < द्विगुणः—संयुक्त व का छोप, इकार को उकार, ग छोप और उ स्वर षेप । विकल्प से इ का छोप होने पर विउणो रूप बनेगा ।

दुइओ, विइओ < द्वितीयः—संयुक्त व का छोप, इकार को उत्त्व, स छोप, ई षेप और हस्व, य छोप और अ स्वर षेप, विसर्ग का ओत्व ।

(घ) इ = ए

मेरा > मिता—मि में रहनेवाली इ को एकार ।

केसुअं, किंसुअं < किंशुनम्—इकार को एकार, क छोप और अ स्वर षेप । इकार को एत्व न होने पर किंसुअं रूप बनता है ।

(ङ) इ = ओ

दोवयणं < द्विवचनम्—संयुक्त व का छोप और इकार को ओत्व, सभ्यवर्ती व छोप, अ स्वर षेप और य भुति ।

दोहा, दुहा < द्विधा—संयुक्त व का छोप, इकार को विकल्प से ओत्व, घ को ह ।

(च) नि = ओ

ओज्झरो, निज्झरो < निर्झरः—निर्झर शब्द में विकल्प से नि के स्थान पर ओ होता है, तथा संयुक्त रेफ का छोप, ऋ को द्वित्व, पूर्ववर्ती ऋ को ज ।

(४) संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में अ, आ, इ, उ, ऊ और ए में परिवर्तित होती है ।

ई = अ

हरडई < हरीतकी—री में की ई के स्थान पर अ, त को ट और क छोप तथा ई स्वर षेप ।

ई = आ—

कम्हारा < कश्मीराः—रम के स्थान पर म्ह तथा ईकार के स्थान पर आ ।

इ = इ—निम्न शब्दों में संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में इ हो जाती है ।

ओसिअंतं < अवसीदत्—अव = ओ, सी के स्थान पर सि, इत् = अंतं ।

आणिअं < आनीतम्—नी के स्थान पर इस्व इकार होने से णि, त छोप और अ स्वर षेप ।

विहूणो, विहीणो < विहीनः—इकारोच्चर ईकार को विकल्प से उकार तथा न को गत्व, विसर्ग को ओत्व ।

हूणो, हीणो < हीनः—

(च) ई = ए—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों में ई ध्वनि को ए हो जाता है ।

आमेलो < आपीडः—पकारोच्चर ईकार को एकार और ड को छ ।

केरिसो < कीदृशः—ककारोच्चर ईकार को एकार, दृशः के स्थान पर रिसो ।

एरिसो < ईदृशः—ई के स्थान पर एकार, दृशः के स्थान पर रिसो ।

पेऊसं < पीयूषम्—पकारोच्चर ईकार को एत्व, य लोप और ऊ एवा लोप, मूर्धन्य प को इत्व स ।

घट्टेडओ < विभीतकः—इकार को अकार, मकारोच्चर ईकार को एकार, अ के स्थान पर ह, त को ड और क लोप, अ स्वर लोप, विसर्ग को ओत्व ।

नेडं, नीडं < नीडम्—नकारोच्चर ईकार को विकल्प से एकार ।

पेडं, पीडं < पीडम्—पकारोच्चर ईकार को विकल्प से एकार तथा ड को ड ।

(५) संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ इ, ई, ऊ और ओ में परिवर्तित हो जाती है ।

उ = अ—निम्न लिखित शब्दों में संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ में परिवर्तित होती है ।

अगरुं < अगुरुम्—गकारोच्चर उकार के स्थान पर अ ।

गलोइ < गुहूची—गकारोच्चर उकार को अ, उ को छ और ऊ को ओ, पकार का लोप, ई स्वर लोप, परचात् इत्व ।

गरुई < गुर्वी—गकारोच्चर उकार को अ, र्वी का ट्थन्यकरण अतः र्वी ।

सउडो < सुडुः—मकारोच्चर उकार को अ, क लोप और ड को ड ।

मउरं < मुडुम्—

” ”

मउलो < मुडुः—

” ”

मउलं < मुडुम्—

” ”

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्—भौ यो भोकार होने से सो, क पर लोप और उसके स्थान में उ स्वर लोप, उकार को अ तथा मार्य पर मल्लं ।

अयरिं, उयरिं < उपरि—उ के स्थान पर विकल्प से अ, य को य ।

गरुओ, गुरुओ < गुरुः—गकारोच्चर उ के स्थान पर विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर लोप, विसर्ग को ओत्व ।

(५) उ = इ—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों की उ ध्वनि का प्राकृत में इ हो जाता है ।

पुरिसो < पुरयः—रकारोच्चर उकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य प को इत्व म ।

पउरिसं < पौरुषम्—औ के स्थान पर ओ, पश्चात् अ + उ, द्भारोत्तर उ को इत्थ ।

भिउद्धी < भुद्धिः—संयुक्त रेफ का छोप, उकार को इकार, क छोप, उ स्वर शेष और ट को ड ।

(ग) उ = ई

. छीअं < क्षुत्तम्—क्ष के स्थान पर छ, उकार को ईकार, छ छोप और अ स्वर शेष ।

(घ) उ = ऊ

दूहयो, दूहओ < दुर्भगः—द्वारोत्तर उकार को विकल्प से उकार, संयुक्त रेफ का छोप, भ को ह और ग छोप, अ स्वर शेष तथा ओत्त्व ।

मूसलं, मुसलं < मुषलम्—गद्वारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्थ ।

दूसहो, दुस्सहो < दुस्तहः—द्वारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्थ ।

सूहयो, सुहओ < सुभगः—पद्वारोत्तर उकार को विकल्प से उकार, भ को ह, ग छोप और अ स्वर शेष ।

(ङ) उ = ओ

कोउहलं, कुउहलं < कुतूहलम्—कद्वारोत्तर उकार को ओत्थ, तकार का छोप, उ स्वर शेष तथा ऊ को विकल्प से इत्थ ।

(६) संस्कृत की ऊ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ए और ओ रूप में बदल जाती है ।

(फ) ऊ = अ—निम्न लिखित प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऊ ध्वनि विकल्प से अ में परिवर्तित होती है ।

दुअलं दुऊलं < दुनूलम्—मध्यवर्ती क छोप, उ स्वर शेष और ऊ के स्थान पर विकल्प से अ ।

सणहं, सुणहं < सूक्ष्मम्—सकारोत्तर उकार के स्थान पर विकल्प से अकार, क्ष के स्थान पर ण ।

(ख) ऊ = ई

निउरं, नुउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर विकल्प से इकार, प का छोप उ शेष ।

(ग) ऊ = ई—

उव्वीढं, उव्वूढं < उव्व्यूढम्—यू का छोप और व को द्वित्व और उकार को विकल्प से ईकार ।

(घ) ऊ = उ—निम्न लिखित शब्दों में उकार के स्थान पर उस्व होता है ।

कंहुअइ < कण्डूयते—ऊकार के स्थान पर उकार और यकार का छोप, अ स्वर शेष, विभक्ति चिह्न इ ।

विहूणो, विहीणो < विहीनः—द्वकारोत्तर ईकार को विकल्प से उकार तथा न को णत्व, विसर्ग को ओत्व ।

हूणो, हीणो < हीनः—

(च) ई = ए—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों में ई ध्वनि को ए हो जाता है ।

आमेल्यो < आपीडः—पकारोत्तर ईकार को एकार और ड को छ ।

केरिसो < कीटशः—नकारोत्तर ईकार को एकार, टश के स्थान पर रिसो ।

एरिसो < ईटशः—ई के स्थान पर एकार, टशः के स्थान पर रिसो ।

पेऊसं < पीयूषम्—पकारोत्तर ईकार को एत्व, य लोप और ऊ स्वा शेष, मूर्धन्य प को दस्य स ।

यहेडओ < विभीतक—इकार को अकार, भशरोत्तर ईकार को एकार, भ के स्थान पर ह, त को ड और क लोप, भ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

नेडं, तीडं < नीडम्—नकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार ।

पेडं, पीडं < पीडम्—पकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार तथा ठ को ड ।

(५) संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ इ, ई, ऊ गौर ओ में परिवर्तित हो जाती है ।

उ = अ—निम्न लिखित शब्दों में संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ में परिवर्तित होती है ।

अगरुं < अगुरुम्—गकारोत्तर उकार के स्थान पर अ ।

गलोइ < गुह्यो—गकारोत्तर उकार को अ, उ को छ और ऊ को ओ, चकार का लोप, ई स्वर शेष, परचात् हस्य ।

गरुई <—गुर्वी—गकारोत्तर उकार को अ, वी का वृथक्करण भत्त रई ।

मडडो < मुडुट—मकारोत्तर उकार को अ, क लोप और ट को ड ।

मडरं < मुकुमम्—

मडलो < मुकुलम्—

मडल < मुडलम्—

सोअमल्लं < सौमार्म्यम्—औ को ओकार होने से सो, क का लोप और उसके स्थान में उ स्वर शेष, उकार को अ तथा मार्म्य का मल्लं ।

अवरिं, उवरिं < उपरि—उ के स्थान पर विकल्प से अ, प को व ।

गरुओ, गुरुओ < गुरुक—गकारोत्तर उ के स्थान पर विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

(ख) उ = इ—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों की उ ध्वनि का प्राकृत में इ हो जाता है ।

पुरिसो < पुरुष—रकारोत्तर उकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य प को दस्य स ।

पउरिसं < पौरुषम्—औ के स्थान पर ओ, पश्चात् अ + उ, रकारोत्तर उ को इत्व ।

भिउडी < भृकुटिः—संयुक्त रेफ का छोप, उकार को इकार, क छोप, उ स्वर शेष और उ को इ ।

(ग) उ = ई

. छीअं < क्षुतम्—क्ष के स्थान पर छ, उकार को ईकार, त छोप और अ स्वर शेष ।

(प) उ = ऊ

दूइवो, दुइओ < दुर्भगः—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, संयुक्त रेफ का छोप, भ को ह और ग छोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व ।

मूसलं, मुसलं < सुसलम्—मकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व ।

दूसहो, दुस्सहो < दुस्तहः—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व ।

सुहवो, सुहओ < सुभगः—सकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, भ को ह, ग छोप और अ स्वर शेष ।

(ङ) उ = ओ

कोउहलं, कुउहलं < कुतुहलम्—ककारोत्तर उकार को ओत्व, तकार का छोप, उ स्वर शेष तथा उ को विकल्प से इत्व ।

(ढ) संस्कृत की ङ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ए और ओ रूप में बदल जाती है ।

(क) ङ = अ—निम्न लिखित प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ङ ध्वनि विकल्प से अ में परिवर्तित होती है ।

तुअलं तुउलं < तुलम्—मध्यवर्ती क छोप, उ स्वर शेष और उ के स्थान पर विकल्प से भ ।

सणहं, सुणहं < सूभम्—सकारोत्तर ऊकार के स्थान पर विकल्प से अकार, धम के स्थान पर ण ।

(ख) ऊ = ई

निउरं, नुउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर विकल्प से इकार, प का छोप व शेष ।

(ग) ऊ = ई—

उव्वीढं, उव्वूढं < उव्व्यूढम्—व्यू का छोप और व को द्वित्व और उकार को विकल्प से ईकार ।

(घ) ऊ = उ—निम्न लिखित शब्दों में ऊकार के स्थान पर उत्व होता है ।

कंडुअइ < कण्डूयते—ऊकार के स्थान पर उकार और यकार का छोप, अ स्वर शेष, विभक्ति चिह्न इ ।

कंडुया < कण्डूया—ऊकार के स्थान पर उकार ।

कंडुयणं < कण्डूयणम्—ऊकार को उत्त्व तथा न को णत्व ।

भुमया < भू—ऊकार के स्थान पर उतर ।

वाउलो < वात्तु—तकार का छाप और ऊ स्वर छेप, ऊ के स्थान में उत्त्व ।

हणुमंतो < हनुमान्—नकार को णत्व और ऊकार को उत्त्व ।

कोउहलं, कोऊहलं < कुत्तहम्—ककारोत्तर उकार को ओकार, तकार का छेप और ऊकार के स्थान पर विकल्प में उतर ।

महुअं, महुअं < मधूस्—ध के स्थान पर ह और ऊकार को विकल्प से उतर ।

(छ) ऊ = ए

नेउरं, नूउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर एस्व और पकार का छेप और उ स्वर छेप ।

(घ) ऊ = ओ—निम्न लिखित शब्दों में ऊ को ओ होता है ।

फोप्परं < वृषम्—ऊकार को ओकार, संयुक्त रफ का छेप, प को द्वित्व ।

फोहण्डी < वृष्माण्डी—ऊकारोत्तर ऊकार को ओस्व, णा के स्थान पर ह ।

गडोई < गुहूची—ऊकार के स्थान पर ल, वकारोत्तर ऊकार को ओ एवं पकार का छेप, ई जेप ।

तंदोलं < ताम्बूलम्—ता को हस्व, वकारोत्तर ऊकार को ओस्व ।

तोणीरं < तूणीरम्—ऊकार को ओस्व ।

मोल्तं < मूल्तम्—मकारोत्तर ऊकार को ओस्व, संयुक्त ण का छेप और ल को द्वित्व ।

धोरं < रूधूलम्—संयुक्त स का छेप, धकारोत्तर ऊकार को ओस्व एवं ल को रकार ।

तोणं, तूणं < तूणम्—तकारोत्तर ऊकार को रिक्त्य से ओस्व ।

थोणा, थूणा < रूथूणा—संयुक्त स का छेप और वकारोत्तर ऊकार को रिक्त्य से ओस्व ।

(ञ) प्राकृत यजमाणा में ञ को स्थान नहीं दिया गया है । अतः संस्कृत की ञ का परिवर्तन अ, आ, इ, उ, ऊ, ए, ओ, अरि और रि के रूप में होता है ।

(क) ञ = आ—निम्न लिखित शब्दों में आदि में अनेत्राक्षी ञ अ के रूप में प्रयुक्त जाती है ।

वर्यं < वृतम्—ककारोत्तर ञ के स्थान पर अ, त छेप, ण स्वर छेप और व भुति ।

घर्यं < घृतम्—घकारोत्तर

”

”

”

घट्टो < घृष्टः—घकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व ।
तर्ण < तृणम्—तकारोत्तर ऋ के स्थान अ ।

मओ < मृगः—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ग लोप और अ स्वर शेष,
विसर्ग का ओत्व ।

मट्ट < मृष्टम्—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त प का लोप और ट
को द्वित्व ।

घसहो < वृषभः—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, मूर्धन्य प को दन्त्य स, भ
के स्थान पर ह और विसर्ग का ओत्व ।

दुक्कडं < दुष्कृतम्—संयुक्त प का लोप, क को द्वित्व, ऋ के स्थान पर अ एवं
त के स्थान पर ड ।

पुरेकडं < पुरस्कृतम्—रकारोत्तर अ को पठ्, संयुक्त स का लोप, ऋ के स्थान
पर अ, त को ड ।

मट्टिया < मृत्तिका—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, त को ट तथा ककार का
लोप, आ स्वर शेष, य भुक्ति ।

णिअत्तं < निवृत्तम्—न को णत्व, वकारोत्तर ऋकार को अ ।

मञ्जु < मृज्यु—मकारोत्तर ऋ को अ और ट के स्थान पर अ ।

मउओ < मृवुक.—, , , , द लोप, उ स्वर शेष, क लोप, अ स्वर शेष
और विसर्ग को ओत्व ।

वन्दारओ < वृन्दारकः—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, क लोप, अ स्वर शेष
और विसर्ग को ओत्व ।

वगी < वृगी—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ तथा क को ग ।

कसणपक्खो < कृत्तणपक्षः—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ण का पृथकरण
मूर्धन्य प् को दन्त्य स तथा क्ष को क्ख ।

पाययं < प्राकृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ और इस अ को य भुक्ति,
व लोप, अ स्वर शेष और अ को य ।

यइप्फई < वृहस्पतिः—रकारोत्तर ऋकार को अत्व, स्फ के स्थान पर फ ।

सिलवटो < शिलावृष्ट —तालव्य स को दन्त्य स, लकार को हत्व, प का व
और ऋ को अ ।

मअलाठणं < मृगलाञ्छनम्—मकारोत्तर ऋकार को अत्व, ग लोप और अ
स्वर शेष ।

मअवहू < मृगवधू—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, घ के स्थान पर द ।

रामरुण्णो < रामरुणः—ककारोत्तर ऋकार को अ और ण को ण्ण ।

(ख) ऋ = आ—निम्न शब्दों में चित्र से ऋ के स्थान पर आ आदेश होता है ।

कासा, किसा < कृषा—ककारोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व ।

माउक्कं, मउत्तणं < मृदुत्वम्—मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व ।

मानक्कं, मउअं < मृदुक्कम्—

(ग) ॠ = इ—निम्न शब्दों में संसृष्ट की ॠ ध्वनि इ में परिवर्तित होती है ।

उक्किट्ठं < उट्ठम्—संयुक्त स का लोप, क को द्वित्व और ऋ के स्थान पर इ ।

इद्धी < ऋद्धिः—ऋ के स्थान पर इ ।

इसी < ऋषिः—ऋ के स्थान पर इ, मूर्धन्य प को सत्व और इकार को दीर्घ ।

ठिच्छम् < छच्छम्—क ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ ।

किविणो < वृषणः— " " तथा प का घ और विसर्ग का आदेश ।

किई < कृतिः—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, स लोप और इ स्वर को दीर्घ ।

किथी < वृत्तिः—क में रहनेवाली ऋ के स्थान पर इ, त के स्थान पर घ ।

किष्ठा < वृष्टा—क में रहने वाली ऋ के स्थान पर इ, थ के स्थान पर घ ।

किवो < कृपः—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ और प को य ।

किया < कृपा—

कियाणं < कृपाणम्— " " " "

किदो < कृशः— " " " श के स्थान पर 'इ' ।

किसाणु < कृशाणुः— " " " साधन्य श को स, उकार को ऊपर ।

किसिओ < कृषितः—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य प लोप, स लोप और स्वर घेप तथा आदेश ।

किसण < कृषा—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ ।

गिट्ठी < गृत्तिः—गकारोत्तर ऋकार को इत्थ, मूर्धन्य प लोप, त को द्वित्व ।

गिद्धी < गृद्धिः—गकारोत्तर ऋकार को इत्थ ।

घुसिणं < घुसणम्—घकारोत्तर ऋ को इत्थ ।

घिणा < घृणा—घकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ ।

वित्तं < वृत्तम्—वकारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ । संयुक्त प लोप और व को द्वित्व ।

विट्ठं < वृत्तम्—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, संयुक्त प लोप, त को द्वित्व, द्वितीय त को ठ ।

दिट्ठी < वृत्तिः—

"

"

"

धिई < धृतिः—घकारोत्तर ऋकार को इत्वं, त छोप और ओप स्वर इ को दीर्घ ।
नत्तिओ < नन्तृकः—संयुक्त प का छोप, त को द्वित्व, ऋकार को इत्वं, क छोप
और अ स्वर ओप, विसर्ग को ओत्वं ।

नियो < नृपः—नकारोत्तर ऋकार को इत्वं और प को घ, विसर्ग को ओत्वं ।

निसंसो < नृसंसः—नकारोत्तर ऋकार को इत्वं, टाष्टव्य श को दृष्टव्य स, विसर्ग
को ओत्वं ।

पिहं < पृथक्—पकारोत्तर ऋकार को इत्वं, थ को ह, अन्त्य हलन्त का छोप,
अनुस्वारोगम ।

पिच्छी < पृथ्वी—पकारोत्तर ऋ को इत्वं, ध्वी के स्थान पर च्ठी ।

विहिओ < वृद्धितः—घकारोत्तर ऋकार को इत्वं, त का छोप, अ स्वर ओप और
विसर्ग को ओत्वं ।

भिगो < भृङ्गः—भकारोत्तर ऋकार को इत्वं, विसर्ग को ओत्वं ।

भिगरो < नृङ्गारः— ” ” ”

भिऊ < भृगु—भकारोत्तर ऋकार को इत्वं, ग का छोप और उ स्वर,
ओप, दीर्घ ।

माई < मातृ—तकारोत्तर ऋ को इत्वं तथा दीर्घ ।

मिहूंगो < मृदंगः—मकारोत्तर ऋकार को इत्वं, द का छोप, अ स्वर ओप तथा
ओप अ को इत्वं, विसर्ग को ओत्वं ।

मिटुं < मृष्टम्—मकारोत्तर ऋकार को इत्वं, संयुक्त प का छोप, ट को द्वित्व
तथा द्वितीय ट को ठ ।

विहृण्हो < विनृणः—तकारोत्तर ऋकार को इत्वं, ण, के स्थान पर ण्हो ।

विञ्चुओ < वृश्चिकः—वकारोत्तर ऋकार को इत्वं, च के स्थान पर च्च तथा
इ को उत्वं, क छोप, अ स्वर ओप और विसर्ग को ओत्वं ।

वित्त < वृत्तम्—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर इत्वं ।

यिती < युतिः—वकारोत्तर ऋ को इत्वं, तकारोत्तर इकार को दीर्घ ।

विद्वकई < वृद्धकविः—वकारोत्तर ऋ को इत्वं, व का छोप और ओप स्वर इ
को दीर्घ ।

विटो < वृष्ट—वकारोत्तर ऋ को इत्वं, संयुक्त प का छोप, ट को द्वित्व तथा
द्वितीय ट को ठ ।

विट्टो < वृष्टिः— ” ”

विसी < वृसी—वकारोत्तर ऋ को इत्वं ।

याहिअ < व्याहृतम्—संयुक्त य का छोप, वकारोत्तर ऋकार को इत्वं, त का छोप
और अ स्वर ओप ।

सिआलो < श्मालः—तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर झकार को इत्, ण का लोप और आ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त्व ।

सिंगारो < श्मंगारः—तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर न्न को इत्, और विसर्ग को ओत्त्व ।

सइ < सइत्—क का लोप और ककारोत्तर झकार को इत्, अन्त्य इच्छन्त त का लोप ।

समिद्धी < समृद्धिः—मकारोत्तर झकार को इत्, न्नकारोत्तर इकार को दीर्घ ।

सिट्टु < सट्टम्—सकारोत्तर झकार को इत्, संयुक्त प का लोप, ढ को द्वित्व और द्वितीय ढ को ढ ।

सिट्ठी < सट्ठिः—॥॥॥ अन्तिम इकार को दीर्घ ।

बिहा < स्पृहा—स्व में रहनेवाली न्न को इत्, स्व के स्थान पर ॥ ।

बिअयं < हवयम्—ह में रहने वाली न्न को इत् तथा व का लोप और अ स्वर शेष ।

माइहरं < मातृष्टम्—तकारोत्तर न्न का इत् और गृह को हरं ।

मियतण्हा < मृगतृणा—मकारोत्तर झकार को इत्, म का लोप, अ स्वर शेष और य ध्रुति, तकारोत्तर न्न को अ तथा ण्य के स्थान पर ण्हा ।

मियंको, मयंको < मृगान्—मकारोत्तर झकार को इत्, म का लोप और अ स्वर को य ध्रुति ।

इहामियो < इहामृमः—मकारोत्तर न्न को इत्, म का लोप, अ स्वर शेष तथा य ध्रुति, विसर्ग को ओत्त्व ।

मियसिआओ < मृगशिरा—मकारोत्तर झकार को इत्, ण लोप, अ स्वर शेष तथा य ध्रुति, तालव्य श को दन्त्य स ।

इसिगुत्तो < अपिगुत्तः—झकार को इत्, मूर्धन्य प को स, संयुक्त प का लोप, व को द्वित्व ।

इसिदत्तं < अपिदत्तम्—झकार को इत्, मूर्धन्य प को दन्त्य स ।

घिट्टो, धट्टो < एष्टः—घकारोत्तर झकार को विकल्प से इत्, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्त्व ।

पिट्टं, पट्टं < एष्टम्—पकारोत्तर झकार को विकल्प से इत्, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ ।

विहण्फई, यहण्फई < वृहण्विः—पकारोत्तर झकार को विकल्प से इत्, ए को ण्, वकार का लोप और इ स्वर शेष को दीर्घ ।

मादमंडलं, माउमंडलं < मरुमण्डलम्—तकारोच्चर ऋकार को विकृत्य से इत्य ।

मिच्छू, मच्छू < मृत्सुः—मकारोच्चर ऋकार को विकृत्य से इत्य और स्युः को णू ।

घिद्धो, चुद्धो < दुवः—यकारोच्चर ऋकार को विकृत्य से इत्य ।

विंटं, वेंटं < वृन्तम्—यकारोच्चर ऋकार को विकृत्य से इत्य तथा ष को ट ।

सिंगं, संगं < भृङ्गम्—ताण्ड्य ष को दन्त्य स, शकारोच्चर ऋकार को विकृत्य से इत्य ।

(प) ऋ = उ—निम्न प्रारुत शब्दों में संसृष्ट की ऋ ण्यनि उकार में परिवर्तित है ।

उऊ < ऋतुः—ऋकार को उ तथा ऋकार का छोप और णेप इत्य उ को दीर्घ ।

उसहो < ऋषभः—ऋ को उत्त्व, मूर्धन्य ण को दन्त्य स, भ को ह, विसर्ग को ओत्त्व ।

जामाउओ < जामातृकः—तकारोच्चर ऋकार को उत्त्व, तकार का छोप, क छोप, अ इत्य और विसर्ग को ओत्त्व ।

नत्तुओ < नन्तृकः—संयुक्त ण का छोप, त को द्वित्य, ऋकार को उत्त्व, क का छोप और णेप इत्य अ को ओत्त्व ।

निहुअं < निवृत्तम्—भकार को ह तथा ऋ को उत्त्व, तकार का छोप और अ इत्य णेप ।

निउअं < निवृत्तम्—यकारोच्चर ऋकार को उत्त्व, व का छोप, तकार का छोप और अ इत्य णेप ।

निव्युअं < निवृत्तम्—संयुक्त रेफ का छोप, य द्वित्य, ऋकार को उत्त्व, स छोप और अ इत्य णेप ।

निव्युई < निवृत्तिः—संयुक्त रेफ का छोप, य को द्वित्य, ऋकार को उत्त्व, त छोप और इकार णेप तथा इसको दीर्घ ।

परहुओ < परभृतः—भकारोच्चर ऋकार को उत्त्व, भ को ह, त छोप और अ इत्य णेप, विसर्ग को ओत्त्व ।

पराधुटो < पराधृष्टः—मकारोच्चर ऋकार को उत्त्व, संयुक्त ज का छोप, ट को द्वित्य, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्त्व ।

पिउओ < पितृकः—तकारोच्चर ऋकार को उत्त्व, क का छोप अ इत्य णेप और विसर्ग का ओत्त्व ।

पुहई < श्विनी—यकारोच्चर ऋकार को उत्त्व, ण के स्थान पर ह, इ इत्य को अ, यकार का छोप और ई इत्य ।

पहुडि < प्रभृति—संयुक्त रेफ का छोप, ऋकारोच्चर ऋकार को उत्त्व, त को ट ।

पउत्ती < प्रवृत्तिः—संयुक्त रेफ का छोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, व का छोप, अन्तिम स्वर इ को दीर्घ ।

पउट्टो < प्रवृद्धः—संयुक्त रेफ का छोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, व का छोप, संयुक्त प का छोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ ।

पाहुडं < प्राभृवम्—संयुक्त रेफ का छोप, भ को ह, ऋकार को उत्त्व, त को ड ।

पाउओ < प्रावृतः—संयुक्त रेफ का छोप, वकार का छोप और अवरोप ऋ को उत्त्व, त का छोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्त्व ।

पाउसो < प्रावृषः—संयुक्त रेफ छोप, ष छोप और अवरोप ऋकार को उत्त्व, मूर्धन्य प को इत्त्व स, विसर्ग को ओत्त्व ।

भुई < भृतिः—भकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, तकार का छोप और शेष स्वर इ को दीर्घ ।

भाउओ < भावृकः—संयुक्त रेफ का छोप, तकार का छोप, ऋकार को उत्त्व, क का छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त्व ।

माउओ < मावृकः—तकार का छोप, ऋकार को उत्त्व, क का छोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त्व ।

माउआ < मावृका—तकार का छोप, शेष स्वर ऋ को उत्त्व, क का छोप और आ स्वर शेष ।

मुणालं < मृणालम्—मकारोत्तर ऋकार को उत्त्व ।

युत्ततो < वृत्तान्तः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व ।

बुद्धो < वृद्धः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, इत्त्व वर्णों को मूर्धन्य, विसर्ग को ओत्त्व ।

बुद्धी < बुद्धिः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, इत्त्व वर्णों को मूर्धन्य, इकार को दीर्घ ।

वुंदं < वृन्दम्—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व ।

वुदावणो < वृन्दावनः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, न को णत्त्व और विसर्ग को ओत्त्व ।

विउअं < वितृप्तम्—मध्यवर्ती वकार का छोप, शेष ऋ को उत्त्व, त छोप और अ स्वर शेष ।

बुट्टो < वृष्टः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, संयुक्त प का छोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ ।

बुट्टी < वृष्टिः—वकारोत्तर, ऋकार को उत्त्व, संयुक्त प का छोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ, इकार दीर्घ ।

पुटो < एष्ट—संयुक्त ष का छोप, पकारोत्तर ऋकार को उत्प, संयुक्त य का छोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, त्रिसर्ग को ओत्प ।

संयुअं < संयुतम्—यकारोत्तर ऋकार को उत्प, यकार का छोप, अ दोष ।

मुसा, मोसा < मृष—मकारोत्तर ऋकार को त्रिरूप से उ, उ के अभाव में ओ तथा मूर्धन्य य को इत्प स ।

उसहो, यसहो < वृषभः—यकारोत्तर ऋकार को त्रिरूप से उत्प, विकल्पाभाव पक्ष में ऋकार को अ ।

(घ) ऋ = ऊ ।

मूसा, मुसा, मोसा < मृषा—मकारोत्तर ऋकार के स्थान पर त्रिरूप से ऊकार, विकल्पाभाव पक्ष में उकार तथा ओकार होने से तीन रूप बनते हैं ।

(ङ) ऋ = ए—

घँट, घिटं < वृन्तम्—यकारोत्तर ऋकार को त्रिरूप से एकार, विकल्पाभावपक्ष में इकार तथा त को ट ।

(च) ऋ = ओ—

मोसा < मृषा—मकारोत्तर ऋ को त्रिरूप से ओत्प ।

घोंटं < वृन्तम्—यकारोत्तर ऋकार को त्रिरूप से ओत्प ।

(छ) ऋ = अरि—

दरिओ < दस—दकारोत्तर ऋकार को अरि, संयुक्त य और अन्तिम स का छोप, अ स्वर छेप, त्रिसर्ग को ओत्प ।

(ज) ऋ = ङि—

आदिओ < आदतः—मध्यवर्ती इकार का छोप और जेप ऋ के स्थान पर ङि, स छोप, अ स्वर छेप, त्रिसर्ग को ओत्प ।

(क) ऋ = रि—निम्न प्रागुक्त शब्दों में वर्तमान भाषा प्रवृत्ति के समान संस्कृत की ऋ के स्थान पर रि मिलता है ।

रिच्छो < रक्ष—ऋ के स्थान पर रि और क्ष को ऋ, त्रिसर्ग को ओत्प ।

अन्नारिसो < अन्नादसः—संयुक्त य का छोप, न को द्वित्व, दकार का छोप और छेप स्वर ऋ को रि, स को स, त्रिसर्ग को ओत्प ।

अन्नारिच्छो < अन्नादसः—संयुक्त य का छोप, न को द्वित्व, दकार का छोप और छेप स्वर ऋ को रि, क्ष को ऋ तथा त्रिसर्ग को ओत्प ।

अमूरिसो < अमूरस—दकार का छोप, छेप स्वर ऋ को रि, वाच्य स को इत्प स, त्रिसर्ग को ओत्प ।

अमूरिच्छो < अमूहक्षः—दकार का छोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को चउ ।

अम्हारिसो < अस्मादक्षः—दकार का छोप, शेष स्वर ऋ को रि, टालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

अम्हारिच्छो < अस्मादक्षः—दकार का छोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को चउ, विसर्ग को ओत्व ।

एरिसो < ईदक्षः—ई के स्थान में ए, दकार का छोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, टालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

एरिच्छो < ईदक्षः—ई के स्थान में ए, दकार का छोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, क्ष को चउ और विसर्ग को ओत्व ।

एआरिसो < एतादक्षः—मध्यवर्ती सकार का छोप, आ स्वर शेष, दकार का छोप और शेष स्वर ऋ को रि, टालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

एआरिच्छो < एतादक्षः—मध्यवर्ती सकार का छोप, आ स्वर शेष, दकार का छोप और शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को चउ और विसर्ग को ओत्व ।

केरिसो < कीदक्षः—फकारोत्तर ईकार को एकार, दकार का छोप और शेष स्वर ऋकार को रि ।

केरिच्छो < कीदक्षः—

तारिसो < तादक्षः—दकार का छोप, शेष स्वर ऋकार को रि, श को स, विसर्ग को ओत्व ।

तारिच्छो < तादक्षः—दकार का छोप, शेष स्वर ऋकार को रि, क्ष को चउ तथा विसर्ग का ओत्व ।

तारिक् < तादक्—दकार का छोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त्य क् का छोप ।

भवारिसो < भवादक्षः—

भवारिच्छो < भवादक्षः—

भवारि < भवादक्—

जारिसो < यादक्षः—आदि यकार को जकार, द का छोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, टालव्य श को दन्त्य स विसर्ग को ओत्व ।

जारिच्छो < यादक्षः—आदि यकार को जकार, द का छोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, क्ष को चउ, विसर्ग को ओत्व ।

जारि < यादक्—आदि य को ज, दकार का छोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त्य क् का छोप ।

तुम्हारिसो < युष्माद्दशः—युष्मा के स्थान पर तुम्हा, दकार का जोष, शेष स्वर न को रि, साहचर्य श को दन्त्य स ।

तुम्हारिच्छो < युष्मादसः— " " क्ष को चउ, विसर्ग को ओत्त ।

तुम्हारि—युष्माद्क्— ” ” अन्त्य ह्यन्त्य क् का छोप ।

सरिसो < सदशः—दकार का छोप, केष स्वर न को रि, तालव्य श को दन्त्य स त्रिसर्ग का ओत्व ।

सरिच्छो ऽ सदक्षः— " " क्ष को ञ्ठ, विसर्ग को ओस्व ।

सरि८सहक्— " " अन्त्य ह्रस्वस्य क् वा लोप ।

रिज्जू, उज्जू < ऋजू:—ऋ के स्थान में विकल्प से रि, विकल्पाभाय में उ ।

रिणं, अणं < ऋणम्— " " विकल्पाभाव में अ ।

रिज, उज्ज्वलः— " " तकार का खोप, शेष स्वर उ
को दीर्घ ।

रिसहो, उसहो रूपम.— „ „ विकल्पाभाय पक्ष में उ ।

रिसी, इसी कल्पः— " " विस्मयभाव पक्ष में इ ।

(८) प्राकृत में संस्कृत की एकार ध्वनि इ और ऊ में बदल जाती है ।

(क) ए = इ—

किसरं, केसरं < केसाम्—कसारोत्तर एकार को विकल्प से इत्थ ।

चविडा, चवेडा < चपंटा—प को व, पराशेत्तर ए को विकल्प से ह।

विअरो, देयरो < देवर:—दकारोत्तर प्रकार को इत्थ, वकार का लोप और अ स्वर जोष ।

यिअणा, वेअणा = वेदना — वकारोत्तर एकार को इह, इकार का क्षोप और अ स्वर क्षेप ।

(ख) ए = ऊ—

यूगो, धेणो-स्तेनः—स्त के स्थान पर थ और एकार के स्थान पर विकल्प से ऊकार ।

(१) प्राकृत में संस्कृत की पेकार ध्वनि का क, ख, झ, ञ, अइ और ए में परिवर्तन होता है ।

(क) ऐ = अअ ।

उच्च अ Δ उच्चैस्—चक्रोत्तर ऐकार के स्थान पर अअ ।

नीचअं नीचैस्—

कइरयं, केरयं < कैरवम्—ककारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव पक्ष में ए ।

कइलासो, केलासो < कैलासः—

चइत्तो, चेत्तो < चैत्रः—चकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए ।

यइरं, येरं < वैरम्—वकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए ।

वइसंपायणो, वेसंपायणो < वैशम्पायनः—

” ” ”

वइसवणो, वेसवणो < वैश्रवणः—

” ” ”

वइसिअं, वेसिअं < वैशिमम्—

” ” ”

(ढ) ऐ = ए—

एरावणो < ऐरावणः—ऐकार को एकार ।

केढवो < कैढभः—ककारोत्तर ऐकार को एकार, ढ को ढ और भ को ष, विसर्ग का भोत्व ।

तेल्लुकं < त्रैलोक्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, तकारोत्तर ऐकार को एत्व, संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व ।

वेज्जो < वैज्जः—वकारोत्तर ऐकार को एत्व, ज के स्थान पर ज्ज ।

वेह्ठयं < वैधव्यम्—वकारोत्तर ऐकार को एत्व, ध को ह, संयुक्त य लोप और व को द्वित्व ।

सेला < दीला—सकारोत्तर ऐकार को एत्व ।

(९) प्राकृत में संस्कृत की ओ ध्वनि का अ, ऊ, अउ और आभ में परिवर्तन होता है ।

(क) ओ = अ—

अन्नन्, अन्नुन्नं < अन्नोन्नम्—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और ओ के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ ।

आवज्जं, आउज्जं < आतोद्यम्—तकारोत्तर ओकार के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ, य के स्थान पर ज्ज ।

पयट्ठो, पउट्ठो < प्रकोष्ठः—क का लोप और ओ के स्थान पर अ, विकल्पाभाव में उ, संयुक्त य का लोप और ठ को द्वित्व ।

मणोहरं, मणोहरं < मनोहरम्—नकारोत्तर ओ के स्थान पर विकल्प से अ ।

सिरोविअणा, सिरोविअणा < शिरोवेदना—रकारोत्तर ओ के स्थान में विकल्प से अ ।

सररुहं, सरोरुहं < सरोरुहम्—

”

”

”

(ख) ओ = ऊ—

सुसासो < सोच्वासः—सकारोत्तर ओकार को ऊकार ।

(ग) ओ = अउ—

गउओ < गोकः—गकारोत्तर ओकार को अउ, क खोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

गउआ < गोआ—गकारोत्तर ओकार को अउ, क खोप, अ स्वर शेष ।

गउ, गऊ < गो—

” ” ”

(घ) ओ = आऊ—

गाऊ < गो—ओकार को आऊ हुआ है ।

(१०) संस्कृत की औ ध्वनि का प्राकृत में अउ, आ, उ, आव और ओ में परिवर्तन होता है ।

(क) औ = अउ—

कउरधो < कौरधः—ओकार के स्थान पर अउ तथा विसर्ग को ओत्व ।

कउलो < कौलः—

” ” ”

कउसलं < कौशलम्—ककारोत्तर औकार को अउ, तालव्य श को दन्त्य स ।

गउडो < गौडः—गकारोत्तर औकार को अउ ।

गउरधं < गौरधम्—

” ”

पउरो < पौरः—पकारोत्तर औकार के स्थान पर अउ ।

पउरिसं < पौरसम्—

”

” मूर्धन्य प को स तथा ह को रि ।

मउणं < मौनम्—मकारोत्तर औकार के स्थान में अउ, न को ण ।

मउली < मौलिः—

”

”

सउहं < सौधम्—सकारोत्तर औकार को अउ तथा ध के स्थान पर ह ।

सउरा < सौराः—

”

”

”

(ख) औ = आ—

गारवम् < गौरवम्—औकार के स्थान आकार ।

(ग) औ = उ—

दुवारिओ < दौवारिकः—दकारोत्तर औकार के स्थान पर उ, क का खोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व ।

पुलोमी < पौलोमी—पकारोत्तर औकार को उत्प ।

मुंजायणो < मौञ्जायन—मकारोत्तर औकार को उत्प ।

मुंडो < मौण्डः—शकार के स्थान में दन्त्य स तथा औकार को उत्प ।

सुद्धोअणी < शौद्धोदनिः—तालव्य ष को दन्त्य स, औंशर को उत्थ, द का छेप, अ स्वर छेप, न को ण ।

सुगंधत्तणं < सौगन्धम्—औंकार को उत्थ ।

सुन्दरं < सौन्दर्यम्—

सुपणिओ < सौर्वाणिक —औंकार को उत्थ ।

(प) औ = आव—

नावा < नौः—औंकार के स्थान पर आगदेश ।

(ष) औ = ओ—

गौरी < गौरी—गकारोत्तर औंकार को ओत्थ ।

कोमुई < कौमुदी—ककारोत्तर औंकार को ओत्थ, दकार का छेप और ई स्वर छेप ।

कोसंधी < कौशांधी—रकारोत्तर औंकार को ओत्थ, तालव्य ष को दन्त्य स ।

कोसिओ < कौशिकः—

”

”

” क छेप,

॥ स्वर छेप, विसर्ग को ओत्थ ।

कोत्थुहो < कौत्थुभः—ककारोत्तर औंकार को ओत्थ, स्तु के स्थान में थु, भ को ह और विपर्ग का ओत्थ ।

जोष्यणं < जौषनम्—यकार को ज और औंकार को ओत्थ ।

कोचो < कौचः—फकारोत्तर औंकार को ओत्थ ।

व्यंजन परिवर्तन

(११) संस्कृत की क ध्वनि का प्राकृत में ख, ग, घ, भ, म, य और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) क = ख—

खप्परं < कर्परम्—क के स्थान पर ख, संयुक्त रेफ का छेप और प को द्वित्व ।

खीलो < कीलः—क के स्थान पर ख, विसर्ग को ओत्थ ।

खीलओ—कीलकः—क के स्थान पर ख, अन्त्य क का छेप अ स्वर छेप और विसर्ग को ओत्थ ।

खुज्जो < कुब्जः—क के स्थान पर ख, संयुक्त ज का छेप और ज को द्वित्व ।

(ख) क = ग—

अमुगो < अमुक —क के स्थान पर ग और विसर्ग को ओत्थ ।

अमुगो < अमुकः—

”

”

आगारिसो < आकर्षः—क के स्थान पर ग, र्घ के स्थान पर रिस, विसर्ग का

ओत्थ ।

आगारो < आकरः—क के स्थान पर ग और दीर्घ ।

उवासगो < उपाशकः—प के स्थान पर व, तालव्य श को दन्त्य, क को ग ।

एगो < एकः—क के स्थान पर ग, विसर्ग को ओत्व ।

गेंदुअं < कन्दुकम्—क के स्थान पर ग और अकार को एकार अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष ।

दुगुलं < दुकूलम्—क का ग और उकार को ह्रस्व उकार ।

मयगलो < मद्रकलः—द का लोप, अ स्वर शेष तथा य भुति, क के स्थान में ग ।

मरगयं < मरकतम्—क के स्थान में ग, त लोप और शेष अ स्वर को य ।

साधगो < धावकः—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, क को ग तथा विसर्ग को ओत्व ।

लोगो < लोकः—क को ग, विसर्ग को ओत्व ।

(ग) क = च—

चिलाओ < किरातः—क के स्थान पर च और र को छ ।

(घ) क = भ—

सीमरो, सीअरो < शीकरः—तालव्य श को दन्त्य स, क को विकल्प से म, विकल्पाभाव में क का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व ।

(ङ) क = म—

चंदिमा < चन्द्रिका—संयुक्त रेफ का लोप और क को म ।

(च) क = व—

पवट्टो < प्रकोष्ठः—संयुक्त रेफ का लोप, क के स्थान पर व, संयुक्त प का लोप, ठ को द्वित्व और पूर्ववर्ती ठ को ट ।

(छ) क = ह—

चिहुरो < चिहुरः—क को ह, विसर्ग को ओत्व ।

निहसो < निकषः—क को ह, मूर्धन्य प को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

फलिहो < स्फटिकः—संयुक्त स का लोप, ट का लोप, क के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व ।

सीहरो < सीमरः—तालव्य श को दन्त्य स, क को ह और विसर्ग को ओत्व ।

(१२) संस्कृत की ख छत्रि प्राकृत में क में बदल जाती है ।

ए = क—

संकलं < शङ्कलम्—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और स के स्थान पर क ।

संख्या < श्रृंखला—संयुक्त रेखा का छोप, तादृश्य श को दृश्य स और ग के स्थान पर क ।

(१३) संस्तर की ग ध्वनि का प्राकृत में म, छ और व में परिवर्तन होता है ।

(क) ग = म—

पुंनामाई < पुंनागानि—ग के स्थान पर म तथा न छोप और इ स्वर, अनुस्वार ।

भामिणी < भमिनी—ग के स्थान पर म और न को णत्व ।

(ख) ग = ल—

छालो < छलगः—ग के स्थान पर ल और विसर्ग को ओत्व ।

छाली < छाली—ग के स्थान पर ल ।

(ग) ग = व—

वृहयो < वृर्भगः—उपसर्ग के वृ को दीर्घ, भ को इ और ग के स्थान में व तथा विसर्ग को ओत्व ।

सूहयो < सुभगः—उपसर्ग के सु को दीर्घ, भ को इ और ग के स्थान पर व तथा विसर्ग को ओत्व ।

(१४) प्राकृत में संस्तर का च वर्ण ज, ट, छ और स में परिवर्तित होता है ।

(क) च = ग—

पिसागी < पिशाची—तादृश्य श को दृश्य स और च को ग ।

(ख) च = ट—

आउंटण < आकुण्डनम्—क का लोप, उ स्वर शेष तथा च के स्थान पर ट स्वर, न को णत्व ।

(ग) च = ल—

पिसहो < पिशाचः—तादृश्य श को दृश्य स और च के स्थान में ल, विसर्ग को ओत्व ।

(घ) च = स—

खसिओ < खचितः—च के स्थान पर स, अन्विम स का छोप, भ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व ।

(१५) संस्कृत का ज वर्ण प्राकृत में क में परिवर्तित होता है ।

झडिलो, जडिलो < जटिलः—ज के स्थान पर चिह्न से क आदेश, ट के स्थान में छ तथा विसर्ग का ओत्व ।

(१६) संस्कृत का ट वर्ण प्राकृत में छ, व और ल के रूप में परिवर्तित होता है ।

(क) ट = ड —

घडो < घटः — ट के स्थान में ड, विसर्ग का भोत्व ।

नडो < नटः —

”

”

भडो < भटः —

”

”

(ल) ट = ड —

केडयो < कैटमः — ऐकार को एकार, ट को ड और म को व, विसर्ग को ओर ।

सयडो < शकटः — साखण्य श को स, ककार का खो, अ स्वर दोष और य भृति तथा ड को ड ।

सडा < सटा — ट को ड ।

(ग) ट = ल —

फलिहो < स्फटिः — संयुक्त स का खोप, ट के स्थान पर ल और क को ह ।

चयिला < चपेटा — प को व, एकार को ह्रस्व और ट को ल ।

फालेइ < पाटयति — पा के स्थान पर फा, ट को ल, अकार को एकार तथा विभक्ति चिह्न इ ।

(१७) संस्कृत की ठ ध्वनि का प्राकृत में ल, ट और ड में परिवर्तन हो जाता है ।

(क) ठ = ल —

अंफोहो < अङ्गोठ — ठ के स्थान पर ल हुआ है ।

अंफोहोतेहं < अङ्गोठैरम् — ठ के स्थान पर ल, तकारोत्तर ऐकार को एकार ।

(ल) ठ = ड —

पिहडो < पिठरः — ठ का ह और र का ड हुआ है ।

(ग) ठ = ड —

पड < पठ — ठ का ड हुआ है ।

पिठरो < पिठरः — ठ को ड तथा विसर्ग का भोत्व ।

(१८) संस्कृत का ड वर्ण प्राकृत में ल हो जाता है ।

यलयामुहं < यडयामुलम् — ड के स्थान पर ल ।

तलयं < तडायम् —

”

फीला < फीडा —

”

(१९) संस्कृत का ण वर्ण प्राकृत में विरूप से ल में बदल जाता है ।

पेल्ल, पेणू < पेणुः —

(२०) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में च, छ, ड, ट, ण, र, फ, य और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) त = च—

चुच्छं < चुच्छम्—त के स्थान पर च आदेश हुआ है ।

(ख) त = छ—

छुच्छं < चुच्छम्—त के स्थान पर छ आदेश हुआ है ।

(ग) त = ट—

टगरो < तगरः—त के स्थान पर ट और विसर्ग को ओत्त्व ।

टूवरो < तूवरः—

टसरो < तसरः—संयुक्त रेफ का लोप, शेष त के स्थान पर ट, विसर्ग को ओत्त्व ।

(घ) त = ड—

पडाया < पताया—त के स्थान पर ड, फ का लोप, अ स्वर शेष और य ध्रुति ।

पडिऊरइ < प्रतिऊरोति—त के स्थान पर ड और करोति का ऋह ।

पडिनिअत्तं < प्रतिनिवृत्तम्—त के स्थान पर ड, व का लोप, ऋ के स्थान पर अ ।

पडियया < प्रतिपत्—त के स्थान पर ड, प को व और त के स्थान पर आ

तथा यधुति होने से या ।

पडिहासो < प्रतिभासः—त को ड, भ को ह और विसर्ग को ओत्त्व ।

पडिमा < प्रतिमा—त को ड ।

पंडसुआ < प्रतिभुत्—त के स्थान पर ड ।

पडिसारो < प्रतिसारः—

पडिहासो < प्रतिहासः—

पहुडि < प्रभृति—भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को ड, त को ड ।

पाहुडं < प्रानृत्तम्—भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को ड, त को ड ।

मडयं < मृतम्—मृ की ऋ के स्थान पर अ, त को ड, क लोप, अ स्वर शेष

और यधुति ।

अचहडं, अवहयं < अवहत्तम्—ह में रद्वेराखी ऋ को अ, त को विकल्प से ड, विकल्पाभास में त का लोप और यधुति ।

ओहडं, ओहयं < अरहत्तम्—अर के स्थान पर ओ, त का ड, विकल्पाभास में त लोप और य ध्रुति ।

कहं, रयं < हत्तम्—ककारोत्तर ऋ को अ, विकल्प से त को ड विकल्पाभास में त लोप, अ स्वर शेष और यधुति ।

हुक्कडं, हुक्करयं < दुण्णम्—संयुक्त प् का लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ और त के स्थान पर विकल्प से ड ।

मडं, मयं < मृतम्—ऋ को अ, त को ड, विकल्पाभाव में तकार का लोप तथा अ स्वर की यभुति ।

वेडिसो, वेअसो < वेतसः—त को ड और इत्थ, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष ।

सुकडं, सुकयं < सुकृतम्—ककारोत्तर ऋकार को अ, त को ड, विकल्पाभाव में त का लोप, अ स्वर शेष तथा यभुति ।

(ङ) त = ण—

अणिवेतयं < अतिमुत्तम्—त के स्थान पर ण, मकार का लोप, शेष ड को अनुनासिक, संयुक्त क का लोप, अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष और यभुति ;

गडिभणो < गडित्—संयुक्त रेफ का लोप, म को द्वित्व, पूर्वर्ती महाप्राण के स्थान पर अल्पप्राण, त को ण विसर्ग को ओत्त्व ।

(च) त = र—

सत्तरी < ससति—संयुक्त ष का लोप, त को द्वित्व और ति के स्थान पर रि तथा दीर्घ ।

(छ) त = ल—

अलसी < अतसी—त के स्थान पर ल ।

सालवाहणो < सातवाहनः—त के स्थान पर ल, न को णत्वं, विसर्ग को ओत्त्व ।

पल्लिं, पल्लिअं < पलितम्—त के स्थान पर विकल्प से ल, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष ।

(ज) त = घ—

आवज्जं, आउज्जं < आतोयम्—त के स्थान पर विकल्प से व और घ को ज ।

पीवलं, पीअलं < पीतलम्—त के स्थान पर विकल्प से व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष ।

(ऋ) त = ह—

विहत्थी < वितस्तिः—त के स्थान पर ह और स्ति के स्थान पर थ्थी ।

वाह्लो, वायरो < वातरः—त के स्थान पर विकल्प से ह और रेफ को छ ।

माहुलिगं, माउलिगं < माहुलिङ्गम्—त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और उ स्वर शेष ।

वसही, वसई < वसति—त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में तस्य का लोप और इ स्वर शेष तथा दीर्घ ।

(२१) संस्कृत का य वर्ण प्राकृत में ढ, ध और ह में परिवर्तित हो जाता है ।

(क) थ = ढ—

पढमो < प्रथमः—य को ढ और अनुस्वार को ओत्त्व ।

मेढी < मेथिः—थ को ढ और इकार को दीर्घ ।

सिद्धिलोपस्थितिः—तालव्य दा की दन्त्य स, थ फो व, रेफ को छ ।

निसीद्धो ऽ निशीथः—ताण्य $\frac{1}{2}$ को दन्त्य स तथा य को ङ ।

पुढवी < वृथिरी—पकारोत्तर ऋकार को उकार और थ को द ।

(ष) ध = ध—

विधि—पृथक्—पकारोपर पर को हत्व तथा थ के स्थान पर घ, अनुस्वार और अन्त्य वृणन्त व्यंजन क का छाप ।

(ग) थ = ह—

निसीहो < निशीथः—तालव्य स को इन्त्य स भीर थ को न ।

कहूँ < कथयति—य के स्थान पर ह, विभक्ति रिद्ध ह ।

नाहो \triangle नाथः—थ को ह ।

मिहुणं < मिधुनम्—ध के स्थान पर ह और न का णत्व ।

आवसहो \triangle आवसथः—य के स्थान पर ह ।

(२२) संस्कृत का द्रव्य प्राकृत में अ, ध, र, ल, ञ और ह में परिवर्तित हो जाता है ।

(क) द = ख -

हंस-दंश—इ के स्थान पर इ और ताछव्य श को वरह्य स ।

हृदय \triangle रक्त—द के स्थान पर ड ।

फटणं, कयणं—ददनम्—द के स्थान पर विकृत्य से द, त्रिखण्डामात्र में द का लोप, अ इय शेष और य भूति ।

बुलबुलो \triangle दग्ध.—द के स्थान में द और दध के स्थान पर दू ।

ढंडो \triangle दृग्. — द के स्थान पर ढ और विसर्ग को बोध्य ।

बंभो एदम्भ —

ढढडो < ढरुडः—द के सुथन डर ३, संयुक्त रेड का डोड, ड को दुसुत और डरुडरुण को डरुडरुण ।

ढरो ँदरः—द को ढ और रिसर्ग को भोत्य ।

डसणं < दशनं—द को ड, सामान्य श को दन्त्य म तथा न को णत् ।

हाहो \triangleleft दाहः—द को ह और विसर्ग को ओह्य ।

ढोला < दोष — विकल्प से द को ङ ।

डोहलो, दोहला दोहलः—द के स्थान में मिश्रण से ड और अन्तिम द को ह।

(ख) द = ध—

धीप < दीप—द को ध ।

धिप्यइ < दीप्यते—द के स्थान में ध, दीर्घ ई को इत्थ और विभक्ति चिह्न इ ।

(ग) द = र—संख्याशचक्र शब्दों में अनादि और असंयुक्त संस्कृत का द वर्ण प्राकृत में र हो जाता है ।

एआरह < एकादश—क का छाप और आ स्वर होय, द के स्थान पर र और श को ह ।

वारह < द्वादश—संयुक्त द का छाप, द के स्थान पर र, श को ह ।

तेरह < त्रयोदश—त्र के स्थान पर ते, द को र, द को ह ।

परली < चतुर्थी—द को र ।

(घ) द = ल—

पलीयेइ < प्रक्षेपयति—संयुक्त रेफ का छाप, द को ल, ए को य, अकार को प और विभक्ति चिह्न इ ।

पलित्तं < प्रक्षेप्यम्—संयुक्त रेफ का छाप, द को ल, संयुक्त व का छाप और त को ह्रस्व ।

दोहलो < दौहलः—अन्तिम द को ल ।

फलंरो, कयंपो < पश्य—विरुद्ध से द को ल और विकल्पाभाव पक्ष में द का छाप, अ स्वर होय और व भ्रुति ।

(ङ) द = य—

ऊयट्टिओ < उदयति—द के स्थान पर य, रेफ का छाप और य को ट तथा ह्रस्व, यकार का छाप, य स्वर होय, त्रिदश का ओष्ठव ।

(ष) द = ह—

कडहं < ऊडहम्—मध्यस्थों क का छाप, उ होय तथा द के स्थान पर ह ।

(२३) प्राकृत में सप्तम वष ष वर्ग उ और ह में परिवर्तित होता है ।

(क) ध = ठ—

निसठो < निषथः—मूर्धन्य प को दन्त्य त और ध को उ ।

ओसठं < ओत्थम्—भोकार को ओकार, मूर्धन्य प को दन्त्य त तथा प को ष ।

(ग) ध = ह—

इंदहणू < इन्द्रपुत्र—मूर्धन्य द का छाप, ध को ह, न को दन्त और उकार को दीर्घ ।

पाह्यो < पथि।—ध को ह और विभक्ति को ओष्ठव ।

वाह्इ < बाधस्—ध के स्थान में इ और विभक्ति चिह्न इ ।

वाहो < व्याधः—संयुक्त य का लोप और ध को इ ।

साहू < साधुः—ध को इ और हस् उकार को दीर्घ ।

(२४) प्राकृत में संस्कृत के न वर्ण का ण, ण्ह और छ में परिवर्तन होता है ।

(क) न = ण—स्वर परन्तर्ती, एकपदस्थित और असंयुक्त न को ण होता है ।

कणयं < कनयम्—न को णत्व, क लोप और अ स्वर को य भ्रुति ।

नयणं < नयनम्—न को णत्व ।

मयणो < मदनः—मध्ययर्ती द का लोप, और शेष अ स्वर के स्थान पर न भ्रुति न को णत्व ।

ययणं < ययनम्—मध्ययर्ती च का लोप, अ स्वर के स्थान पर य, न को णत्व ।

ययणं < यदनम्—मध्ययर्ती द का लोप, अ के स्थान पर य तथा न को णत्व ।

णई < नदी—न को णत्व, दकार का लोप और ईस्वर शेष ।

णरो < नरः—न को णत्व, विसर्ग को ओत्व ।

णोइ < नयति—न को णत्व और विभक्ति चिह्न इ ।

(ख) न = ण्ह—

ण्हायिओ < नापित्—न के स्थान पर विकल्प से ण्ह, प को व, तनार का लोप अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व, विकल्पाभाव में—नायिओ रूप ।

(ग) न = ल—

लियो < निम्बः—न को ल, विसर्ग को ओत्व ।

(२५) संस्कृत के प वर्ण का प्राकृत में फ, म, व और र में परिवर्तन होता है ।

(क) प = फ—

फणसो < पनसः—प के स्थान पर फ, न को णत्व और विसर्ग को ओत्व ।

फलिहो < परिधः—प के स्थान पर फ, र को ल, ध को इ और विसर्ग को ओत्व ।

फलिहा < परित्—प के स्थान पर फ, र को ल और ख के स्थान में ह ।

फरुसो < परुषः—प को फ और मूर्धन्य प को दन्त्य ल ।

फाडि < पाटि—प को फ और ट को ड ।

फालिहो < पारिमदः—प को फ, र को ल, भ को इ और संयुक्त रेफ का लोप, द को द्वित्व तथा विसर्ग को ओत्व ।

(ख) प = म—

आमेलो < आपीडः—प के स्थान पर म, ईकार को एकार, ड को ल, विसर्ग को ओत्व ।

नीमो < नीपः—प को म, विसर्ग को ओत्व ।

(ग) प = घ—

यहुत्तं < प्रभूतम्—संयुक्त रेफ का छोप और प को घ, भ को ह तथा त को द्वित्व ।

(घ) प = र—

पारद्धी < पापद्धिः—यहाँ प के स्थान पर र, संयुक्त रेफ का छोप और दीर्घ ।

(२६) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में, भ, म और य में परिवर्तन होता है ।

(क) घ = भ—

भिसिणी < विसिनी—व के स्थान पर भ हुआ है ।

(ख) घ = म—

कर्मन्धो < कवन्धः—मध्यवर्ती य को मकार ।

(ग) व = य—

कयन्धो < कयन्धः—व के स्थान पर य और विसर्ग को ओत्व ।

(२७) संस्कृत के म वर्ण का प्राकृत में व और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) भ = व—

केढवो < कैढभः—ऐकार को एत्व, ट को ढ और भ को व ।

(ख) भ = ह—

नहं < नभस्—भ के स्थान पर ह ।

पहा < प्रभा—संयुक्त रेफ का छोप और भ को ह ।

सहा < सभा—भ को ह ।

सहायो < स्वभावः—संयुक्त व का छोप, भ के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व ।

सोद्दह < शोभते—तालव्य श को दन्त्य स, भ को ह और विभक्ति चिह्न इ ।

(२८) संस्कृत का म वर्ण प्राकृत में ढ, व और स में परिवर्तित होता है ।

(क) म = ढ—

विसढो < विपमः—मूर्धन्य प को दन्त्य स और म को ढ ।

(ख) म = व—

यम्महो < मन्मथः—म के स्थान पर व तथा संयुक्त न का छोप और म को द्वित्व, य को ह ।

अहिवन्धू < अभिमन्युः—भ को ह और म को व, संयुक्त य का छोप, न को द्वित्व और इत्य को दीर्घ ।

(ग) म = स—

भसलो < भ्रमरः—संयुक्त रेफ का छोप, म को स और रेफ को ल ।

(घ) म = अनुनासिक—निम्न शब्दों में म के मकार का छोप हो जाता है और शेष स्वर उ के स्थान में अनुनासिक ऊँ हो जाता है ।

अणिऊँतयं < अतिमुचम्—मकार का छोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक ॐ ।

फाँँओ < कामुः—मकार का छोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक ॐ ।

चाँँडा < चामुण्डा— " " "

जँँणा < यमुना— " " "

(२९) संस्कृत के य धर्ष का प्राकृत में आह, ज, ज, त, ल, व और इ में परिवर्तन होता है ।

(फ) य = आह—

फइवाहं < फतिपयम्—तकार का छोप, इ स्वर शेष, प के स्थान में व और य को आह ।

(ज) य = ज—

उत्तरिज्जं < उत्तरीयम्—री को ह्रस्व और य को ज ।

तइज्जो < तृतीयः—तकारोत्तर ऋकार को अ, त का छोप और शेष स्वर ई को ह्रस्व और य को ज ।

विइज्जो < द्वितीयः—संयुक्त इ का छोप, मध्यवर्ती त का छोप, शेष स्वर ई को ह्रस्व, य को ज ।

(ग) य = ज—संस्कृत शब्दों में आदि में आनेवाला य प्राकृत में ज में बदल जाता है ।

जमो < यमः—य के स्थान पर ज, विसर्ग को ओस्व ।

जसो < यश — " तालम्ब श को दन्त्य स और विसर्ग को ओस्व ।

जाइ < याति—य को ज, त का छोप और इ स्वर शेष ।

(घ) य = त—

तुम्हकेरो < तुष्मदीयः—तुष्मद् के स्थान पर तुम्ह और ईय को केर ।

तुम्हारिसो < तुष्माद्या — तुष्मद् के स्थान पर तुम्ह और द्य के स्थान पर रिस ।

तुम्ह < तुष्मद्—तुष्मद् के स्थान पर तुम्ह ।

(ङ) य = ल—

लट्टी < यष्टिः—य के स्थान पर ल, संयुक्त पू का छोप, ट का द्वित्व और द्वितीय अल्पप्राण का महाप्राण, इकार को दीर्घ ।

(च) य = व—

कइअवं < कतिपयम्—त का छोप और इ स्वर शेष, प का छोप और अ स्वर शेष तथा य का व ।

(छ) य = ह—

छाही < छाया—य के स्थान पर ह और आकार को ईत्य ।

सच्छाहं < सच्छायम्—य को ह ।

(३०) संस्कृत का र वर्ण प्राकृत में ड, ण और र में बदल जाता है ।

(क) र = ड—

किडो < किरिः—र के स्थान पर ड, इकार को दीर्घ ।

पिहडो < पिडरः—ड के स्थान पर ह और र को ड ।

भेडो < भेरः—र के स्थान पर ड ।

(ख) र = ण—

कणवीरो < कणवीरः—र के स्थान पर ण ।

(ग) र = ल—

अवहालं < अपद्वारम्—संयुक्त व का छोप और द को द्वित्य, र को ल ।

झंगालो < झङ्गारः—अकार को झकार और र को ल ।

फलुणो < फलणः—र को ल ।

फाहलो < फातरः—त को ह और र को ल ।

दलिहो < दलिद्रः—र को ल, संयुक्त रेफ का छोप और द को द्वित्य ।

दलिहाइ < दलिद्राति—

दालिहं < दारिद्र्यम्— और य का छोप

फलिहा < परिखा—प का फ, र को ल और य को ह ।

फलिहो < परिपः—प को फ, र को ल और य को ह ।

फालिहो < पारिभद्रः—प को फ, र को ल, भ को द तथा संयुक्त रेफ का छोप

और द को द्वित्य ।

भसलो < भमरः—संयुक्त रेफ का छोप, म को स और र को ल ।

मुहलो < मुपरः—प को ह और र को ल ।

जहुटिलो < युधिष्ठिरः—ग को ज, ध को ह, संयुक्त प का छोप, ठ को द्वित्य

और पूर्वार्त्ता महाभाग को भद्रप्राण, र को ल ।

लुको < लणः—र को ल और ण को ल ।

वलुणो < वरुणः—र को ल ।

सिदिलो < सिधिरः—साध्य स को दस्य स, ध को ठ और र को ल ।

सफालो < सस्त्यारः—संयुक्त स का छोप, क को द्वित्य और र को ल ।

सोमालो < सुमारः—फ का लोप, नेप स्वर ठ का कोप तथा पूर्व स्वर उ को

ओस्वर, र को ल ।

थूलो—स्थूलः—संयुक्त स का छोप और र को छ ।

थूलभदो < स्थूलभद्रः—संयुक्त स का छोप, र को छ, संयुक्त र का छोप तथा द को द्वित्व ।

हलिदो < हरिद्रः—र को छ, संयुक्त रेफ का छोप और द को द्वित्व ।

हलिदा < हरिद्रा— ” ” ”

जडलं, जडरं < जडरम्—ठ को ड और र को विकल्प से छ ।

निट्टुलो, निट्टुरो < निट्टुरः—संयुक्त ष का छोप, ट को द्वित्व द्वितीय अल्प-प्राण की मदीप्राण और र को छ ।

(३१) संस्कृत का छ वर्ण प्राकृत में ण और र में परिवर्तित होता है ।

(क) णडाल, णिडालं < छल्लडम्—छ के स्थान पर ण, ट को ड, षर्ण व्यस्य होने से णडालम्, अकार को इत्त्व होने से णिडालं ।

णंगल, लगलं < लल्लणम्—ल को ण तथा इत्त्व ।

णाहलो, लाहलो < लाहलः—ल को ण ।

(ख) ल = र—

थोरं < स्थूलम्—संयुक्त स का छोप, ऊकार को ओह्य, र को ल ।

(३२) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में भ और म में परिवर्तन होता है ।

(क) व = भ—

भिम्भलो, विम्भलो, विहलो < विहलः—व के स्थान पर भ ।

(ख) व = म—

समरो < शशरः—तालव्य ण के स्थान पर दन्त्य स, व को म ।

वैसमणो < वैश्रवण—पेकार को एकार, संयुक्त रेफ का छोप, तालव्य श को दन्त्य स, व को ण और विसर्ग को ओह्य ।

नीमी < नीवी—व के स्थान पर म ।

सिमिणो < स्वप्नः—संयुक्त वर्णों का पृथक्करण, इकारागम और ण को म तथा न को णह्य ।

(३३) संस्कृत के श वर्ण का छ, स और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) श = छ—

छमी < शमी

छिरा < शिरा

छावो < शावः

(ख) श = स—

कुसो < कुश—श को स ।

दस < दश— ”

निसंसो < नृशंस — संयुक्त ऋकार को ह्रस्व और श को स ।

विसइ < विशति—अनुस्वार को छोप, श को स और त का छोप, इ शेष ।

वंसो < वंशः—श के स्थान पर स ।

सहो < शब्द—श को स, संयुक्त व् का छोप और द को द्वित्व ।

सामा < श्यामा—संयुक्त या का छोप, य को स ।

सुद्वं < शुद्धम्—श को स ।

सोहइ < शोभते—श को स, भ को ह और विभक्ति चिह्न ॥ ।

(ग) श = ह—

एआरह < एकादश—क छोप, अ स्वर शेष, व को र और श को ह ।

वह < दश—श को ह ।

वहवलो < दशवला— ”

वहमुहो < दशमुखः— ” और ख को ह ।

वहरहो < दशरथः—श को ह और थ के स्थान में भी ह ।

वारह < द्वादश—संयुक्त द का छोप, व को र, त्र को ह ।

तेरह < त्रयोदश—त्रय के स्थान में ते, द को र, श को ह ।

(३४) संस्कृत के प वर्ण का प्राकृत में छ, षह, स और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) प = छ—

छप्पहो < पट्पदः—पट् के स्थान पर छ और द को ह ।

छमुहो < पण्मुहः— ”

छट्टो < पठः—प के स्थान पर छ, संयुक्त प का छोप और ठ को द्वित्व तथा

प्रथम महाप्राण का अल्पप्राण ।

छट्टी < पठी— ” ” ”

(ख) प = षह—

सुण्हा < स्नुषा—संयुक्त न का छोप और प के स्थान में षह ।

(ग) प = स—

कसायो < कषायः—प के स्थान में स ।

निहसो < निकषः—क को ह और प को स ।

संडो < पण्डः—प को स ।

(३५) संस्कृत के त वर्ण का प्राकृत में छ और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) त = छ—

छत्तपण्णो < सप्तपर्णः—स को छ, संयुक्त प का छोप, त को द्वित्व, प को प,

संयुक्त रेफ का छोप और ण को द्वित्व ।

छुहा < सुधा—स के स्थान में छ आदेश और घ को ह ।

(ख) स = ह—

दिवहो < दिवसः—स के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व ।

(३६) संस्कृत का ह वर्ण प्राकृत में घ और र में बदलता है ।

सिंघ < सिंहः—ह के स्थान पर घ ।

उत्थारो < उत्साहः—ह को स्थ और ह के स्थान पर र ।

(३७) संस्कृत की कई ध्वनियों का प्राकृत में छोप हो जाता है ।

(क) स्वर लोप—

रणं < अरण्यम्—अ का लोप ।

लाज < अलाप— ”

(ख) व्यञ्जन लोप—

पारो < प्राकारः—र का लोप ।

घारणं < व्याकरणम्— ”

आओ < आगतः—ग का लोप ।

दणू < दनुजः—ज का लोप ।

वणुवहो < दनुजघ्नः— ”

भाणं < भाजनम्— ”

रावलं < राजकुलम्— ”

वंवरो < वदुम्बरः—व का लोप ।

दुग्गाधी < दुग्गदीवी— ”

पावडणं < पादपतनम्— ”

पाधीढं < पादपीठम्— ”

किसलं < किसलयम्—य का लोप

फालासं < फालासम्— ”

हिअं < हृदयं— ”

सहिओ < सहृदयः— ”

अडो < अवडो—व लोप ।

अत्तमाणो < आवर्तमानः— ”

एमेव < एवमेव—व कोप

जीअं < जीवितम्— ”

देवलं < देवकुलम्— ”

पारओ < प्रावारः— ”

जा < यावत्— ”

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन

(३८) संस्कृत की क्ष ध्वनि का प्राकृत में ख, छ और क होता है; परन्तु पद के मध्य या अन्त में क्ष के आने पर कख, कछ और कक हो जाता है ।

(क) क्ष = ख—

खओ < क्षयः—क्ष के स्थान पर ख और य छोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओस्व ।

खीणं < क्षीणम्—क्ष के स्थान पर ख ।

खीरं < क्षीरम्—

” ”

खेडओ < क्षेडकः—क्ष का ख, ट को ड और क छोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को उस्व ।

खोडओ < क्षोडकः—

इक्खु < इक्षुः—पद के मध्य में क्ष के होने से कख और उच्चार को दीर्घ ।

रिक्खो < रिक्षः—र को रि ” ” विसर्ग को ओस्व ।

रिक्खं < रिक्षम्—

”

”

”

मक्खिअ < मक्षिका—पद मध्य में रहने से क्ष को कख, कच्चार का छोप और अ स्वर शेष ।

लक्खणं < लक्षणम्—पद के मध्य में रहने से क्ष को कख ।

पक्खीणं < प्रक्षीणम्—संयुक्त रेफ का छोप, पद के मध्य में रहने से क्ष को कख ।

पक्खेवो < प्रक्षेपः—

”

”

”

सारिक्खं < सादक्ष्यम्—ड के स्थान पर रि और पद के मध्य में रहने से क्ष का कख ।

जक्खो < यक्षः—य को ज और क्ष का कख । --

(ख) क्ष = छ—

छणो < क्षणः—क्ष के स्थान पर छ ।

छयं < क्षतम्—क्ष के स्थान पर छ, उच्चार का छोप, अ स्वर शेष और य भुति ।

छमा < क्षमा—क्ष के स्थान छ ।

छारो < क्षारः—

”

”

छीणं < क्षीणम्—

”

”

छीरं < क्षीरम्—

”

”

छुण्णो < क्षुण्णः—

”

”

छीयं < क्षुयम्—” ” और त छोप, अ स्वर शेष तथा य भुति ।

छुहा < क्षुधा—क्ष को ह तथा ध को ह ।

छुरो < क्षुरः—क्ष को छ ।

छेत्तं < छेप्पम्—छ को छ ।

अच्छि < अक्षि—पद के मध्य में छ के रहने से छ के स्थान पर छ ।

उच्छू < उंशुः—इ के स्थान पर उर, पद के मध्य में छ के होने से छ ।

उच्छा < उक्षा—पद के मध्य में होने से छ के स्थान में छ ।

रिच्छो < रक्षः—क के स्थान पर रि और पद के मध्य में होने से छ का छ ।

कच्छो < कक्षः—पद के मध्य में होने से छ के स्थान में छ ।

कच्छा < कक्षा—

कुच्छो < कुक्षि—

कुच्छंअयं < कुंशेयम्—भीकार को उर, पद के मध्य में छ के होने से छ,

य और क का लोप, अ इर येन अभितम ये न धुनि ।

यच्छो < दक्षः—पद के मध्य में होने से छ को छ ।

यच्छीर्णं < यक्षीर्णम्—

मच्छिआ < मक्षिआ—

लच्छो < लक्ष्मीः—

यच्छं < यक्षम्—

यच्छो < यक्ष—

सरिच्छो < सरक्ष—

सारिच्छं < सारक्षम्—

(ग) क्ष = क्—

क्षीर्णं < क्षीर्णम्—क्ष के स्थान पर क् ।

क्षिज्जद् < क्षीजते—क्ष के स्थान पर क्, ईकार को इर, य को उ और द्विर, रिभक्ति विद् इ ।

पक्ष्मीर्णं < पक्षीर्णम्—पद मध्य में होने से क्ष के स्थान पर क् ।

(३१) संस्कृत के संयुक्त रूप ण्क और क्क के स्थान में ख होता है, पर पद के मध्य में आने से क्क हो जाता है ।

(क) क्क = क्—

निक्करं < निक्कम्—पद के मध्य में क्क रहने से क् ।

पोक्करं < पुक्कम्—

पोक्करिणी < पुक्करिणी—

(ख) क्क = क्क—

अक्करन्दो < अक्कन्दः—पद के मध्य में क्क रहने से क्क ।

खंदो < क्कन्दः—पद के आदि में क्क रहने से क्क आदि ।

खंधो < क्कन्धः—

खंधावाधो < क्कन्धावाधः—

(४०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण त्थ का प्राकृत में च होता है, पर पद के मध्य में आने से छव ।

(क) त्थ = च ।

चाओ < त्यागः—पदादि में रहने से त्थ के स्थान में च ।

चाई < त्यागी— " "

चयइ < त्यजति— " "

पच्छओ < प्रत्ययः—पद के मध्य में रहने से त्थ के स्थान में च ।

पच्छूसो < प्रत्युषः— " " "

सत्तचं < सत्यम्— " " "

(४१) प्रयोगानुसार त्थ को च, छव को छ, द्व को ज और भ को झ आदेश होता है, किन्तु पद के मध्य में इनके आने से उक्त वर्ण छ, छ्च, ज्ज और र्जक हो जाते हैं ।

(क) त्थ = च्च—

किच्चा < कृत्वा—पद के मध्य में होने से त्थ के स्थान पर च ।

चक्चरं < चत्वरम्— " "

णक्चा < ज्ञात्वा—उ के स्थान में ण तथा पद के मध्य में होने से त्था के स्थान पर च्चा ।

दृक्चा < दृत्वा—पद के मध्य में होने से त्थ के स्थान में ण ।

भोक्चा < भुक्त्वा— " "

सोक्चा < श्रुत्वा—संयुक्त रेफ का छोप, तात्पर्य भा को इत्थं स तथा उरार को ओत्थ, पद मध्य में त्थ के होने से च्च ।

(घ) थ्थ = छ्छ—

पिच्छी < पृथ्वी—प में संयुक्त झ के स्थान पर इत्थ और पद के मध्य में थ्थ के होने पर छ्छ ।

(ग) द्व = ज्ज—

विज्जं < विज्ञान्—पद के मध्य में होने से द्व के स्थान पर ज्ज और भा को इत्थ अन्य इत्थं व्यंजन न् का अनुस्वार ।

(घ) ध्ध = झ्झ—

झओ < ध्वजः—पदादि में होने से ध्र का झ, ज का छोप, भा स्वर छोप और विसर्ग का ओत्थ ।

जुज्झ < जुधा—पद के मध्य में होने से ध्र के स्थान पर झ्झ ।

सज्जसं < साध्यसम्—सा को इत्थ, पद के मध्य में होने से ध्र को झ्झ ।

(४२) इत्स् स्वर से परे संवृत्त के संयुक्त वर्ण ध्य, ध, स्स और प्स को प्राकृत में ऋ होता है ।

(क) ध्य = ऋ—

पच्छं < पध्यम्—ध्य के स्थान पर ऋ ।

पच्छा < पध्या— " "

मिच्छा < मिध्या— " "

सामच्छं < सामध्याम्— " "

(ख) ध = ऋ—

अच्छेरं < आधर्यम्—आ को इत्स्, य को ऋ, र को इत्स् ।

पच्छा < पध्यात्—ध के स्थान पर ऋ और अन्त्य या अंत्य ।

पच्छिमं < पधिमम्—ध के स्थान पर ऋ ।

विच्छिओ < वृद्धिः—र में संयुक्त ऋ को इ, य को ऋ तथा ऋ को, य स्स दोष और विसर्ग को ओत्स्व ।

(ग) स्स = ऋ—

संवच्छरो < संवत्सराः—स्स के स्थान पर ऋ ।

वन्द्यो < वत्सवः— " "

वच्छाहो < वत्साहः— " "

वच्छुलो < वत्सुलः— " "

मच्छरो < मत्सराः— " "

(घ) प्स = ऋ—

अच्छरा < अप्परा—प्प के स्थान पर ऋ ।

लुच्छद < लुप्पति— " "

लिच्छद < लिप्पति— " "

(४३) षद के आदि में रहने वाले षरङ्ग के संयुक्त र्ण ध, ण और वं धों प्राकृत में ऋ होता है, पर षद के मध्य में ध्व र्णों के आने पर य हो ब न्त है ।

(क) य = ऋ—

लुद्धे < लुप्तिः—षदादि में ष के रहने में य, छमा स णो और इत्स् इत्स् को दीर्घ होता ।

लोओ < लोत्तः—षदादि में रहने में य के स्थान में य, य स को, य स्स को, विसर्ग का अंत्य ।

अज्जं < अवजम्—पद के मध्य में रहने से ज का ज् ।

मज्जं < मजम्— " " "

वेज्जो < वैज— " " "

(ख) ज्य = ज—

जज्जो < जज्यः—ज्य के पद मध्य में होने से ज् ।

सेज्जा < शज्या— " " ताल-य श को दन्त्य स और अकार को पत्य ।

(ग) र्य = ज—

कज्जं < कार्यम्—पद के मध्य में र्य के रहने से ज् ।

पज्जत्तं < पर्याप्तम्— " " " तथा संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व ।

पज्जाओ < पर्याय—पद के मध्य में रहने से र्य को ज् ।

भज्जा < भार्या—भा को ह्रस्व और पद के मध्य में होने से र्य को ज् ।

मज्जाया < मर्शदा—पद के मध्य में होने से र्य को ज तथा द का लोप, भा स्वर शेष और य क्षुति ।

वज्जं < वर्यम्—पद के मध्य होने से र्य को ज् ।

(४४) पद के आदि में रहनेवाले संस्कृत के संयुक्त वर्ण ष्य और ह्य को प्राकृत में झ होता है, किन्तु पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर ज्झ होता है ।

(फ) ध्य = झ—

भज्जरां < ध्यानम्—पदादि में ध्य के रहने से उसके स्थान में झ तथा न को णत्य ।

भज्जयइ < ध्यायति—पदादि में ष्य के रहने से उसके स्थान में झ ।

विज्जो < विज्यः—पद के मध्य में ध्य के रहने से ज्झ ।

सज्जन्तं < साज्यम्—सा को दन्त्य और पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ ।

सज्जमाओ < सजाध्यायः—संयुक्त व का लोप और ह्रस्व, पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ ।

(ख) ह्य = झ—

गुज्जन्तं < गुह्यम्—पद के मध्य में रहनेवाले ह्य के स्थान पर ज्झ ।

नज्जन्तं < नह्यति— " "

मज्जन्तं < मज्यम्— " "

सज्जन्तो < सह्यः— " "

(४६) संस्कृत का संयुक्ताक्षर तं सामान्यतः प्राकृत में ट् ही जाता है ।

केवट्टो ऽ कैरर्तः—ऐकार को एकार और तं को ट् तथा विसर्ग को ओत्त्व ।

जट्टो ऽ जर्तः—ज के स्थान पर ट् और विसर्ग का ओत्त्व ।

नट्टई ऽ नर्वकी—तं के स्थान पर ट् तथा ककार का लोप, ई स्वर दोष ।

पयट्टइ ऽ प्रयर्तते—संयुक्त रेफ का लोप, य को व, तं को ट्, निभक्ति चिन्ह इ ।

राययट्टयं ऽ राजयर्तयम्—य का लोप, अ स्वर दोष, य ध्रुति, तं को ट् तथा क का लोप अ स्वर को य ध्रुति ।

बट्टी ऽ बर्ती—र्त को ट् ।

वट्टलं ऽ वर्तुलम्— ”

वट्टा ऽ वार्ता— ”

संवट्टिर्त्वं ऽ संवर्तितम्— ”

(४७) संस्कृत के संयुक्ताक्षर म्न और ङ के स्थान पर प्राकृत में ण होता है, पर पद के मध्य में इन वर्णों के आनेपर इनके स्थान में ण्य होता है । व्यञ्जन से आगे रहने या दीर्घ स्वर के परे रहने से ण ही होता है ।

(क) म्न = ण—

निर्णं ऽ निम्नम्—पद के मध्य में म्न के आने से इसके स्थान में ण्य ।

पञ्जुण्णो ऽ प्रयुम्नः—संयुक्त रेफ का लोप, ङ को ङु और म्न के स्थान में ण्य ।

(ख) झ = ण—

आण्ण ऽ आज्ञा—दीर्घ स्वर से परे ङा के रहने से ङ के स्थान में ण ।

पण्णो ऽ प्रज्ञा—पदमध्य में ङा के होने से ण्य ।

विण्णणं ऽ विज्ञानम्— ” ”

णार्णं ऽ शार्णम्—पदादि में ङ के होने से ण ।

संणो ऽ संज्ञा—अनुस्वार-म् के परे रहने के कारण ङ को ण ।

(४८) संस्कृत का संयुक्त वर्ग स्त प्राकृत में थ हो जाता है, पर पदमध्य में आने पर स्थ होता है ।

धयो ऽ स्तयः—पदादि में स्त के होने से, उसके स्थान में थ ।

थंभो ऽ स्तम्भः— ” ” ”

थद्धो ऽ स्तब्धः— ” ” ”

थुई ऽ स्तुति— ” ” ”

थोअं ऽ स्तोत्रम्— ” ” ”

थोत्तं ऽ स्तोत्रम्— ” ” ”

थीणं ऽ स्त्वानम्— ” ” ”

अत्थि < अस्ति—पदमध्य में स्त के होने से स्थ हुआ है ।

पत्त्यो < पर्यस्तः— " " "

पसत्यो < प्रशस्तः— " " "

पत्थरो < प्रस्तरः— " " "

हत्थो < हस्तः— " " "

विशेष—बुद्ध शब्दों में स्त का ख हो जाता है । यथा—

खंभो < स्तम्भः—यहाँ स्त के स्थान पर ख हुआ है ।

(४८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ए प्राकृत में ठ हो जाता है, पर पदमध्य में आने से ए का ट्ट होता है ।

अणिट्टं < अनिष्टम्—पदमध्य में रहने से ए के स्थान पर ट्ट ।

इट्टो < इष्टः— " "

कट्टं < कष्टम्— " "

फट्टं < फाष्टम्— " "

दट्टो < दष्टः— " "

दिट्टी < दृष्टिः— " "

पुट्टो < पुष्टः— " "

मुट्टी < मुष्टिः— " "

लट्टो < लक्षिः—पदमध्य में रहने से ए के स्थान पर ट्ट ।

सुरट्टा < सुराष्ट्रा— " "

सिट्टी < सृष्टिः— " "

कोट्टागारं < कोष्ठागारम्— " "

मुट्टु < मुष्टु— " "

(४९) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ह्रस्व और वम के स्थान पर प्राकृत में व हो जाता है, पर पदमध्य में इन वर्णों के आने से एव हो जाता है ।

कुपलं < कुप्लमम्—ह्रस्व के स्थान पर व हुआ है ।

रुत्पिणी < रुत्पिनी—पदमध्य में होने से वम के स्थान में एव हुआ है ।

(५०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण एव, एव को प्राकृत में फ होता है, किन्तु पदमध्य में इन वर्णों के आने से एक्क हो जाता है ।

(क) एव = फ—

निष्पाओ < निष्पावः—पद मध्य में रहने से एव के स्थान पर एक्क हुआ ।

निष्पेसो < निष्पेव— " "

पुष्कं < पुष्कम्— " "

सष्कं < सष्कम्— " "

(ख) स्प = फ—

फन्दण < स्पन्दनम्—पदादि में रहने से स्प के स्थान पर फ ।

पडिप्फदी < प्रतिस्पर्धी—पद के मध्य में रहने से स्प के स्थान में फ ।

बुह्फई < बृहस्पतिः—

”

”

(५१) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ह् प्राकृत में भ हो जाता है, पर पदमध्य में आने पर विकल्प से ब्भ होता है ।

जिबभा, जीहा < जिह्वा—पद मध्य में रहने से ह् के स्थान में विकल्प से ब्भ, विकल्पाभाव में संयुक्त व का लोप और पूर्व इकार को दीर्घ ।

बिबभलो, बिहलो < बिह्वल—पदमध्य में रहने से ह् को विकल्प से ब्भ तथा विकल्पाभाव पक्ष में संयुक्त व का लोप और विसर्ग का ओत्व ।

(५२) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ञ्म प्राकृत में म्म हो जाता है ।

जम्मो < जन्म—न्म के स्थान पर म्म ।

यम्महो < मन्मथः—न्म के स्थान पर म्म तथा थ के स्थान में ह, विसर्ग को ओत्व ।

मम्मणं < मन्मनः—न्म के स्थान पर म्म तथा नकार को णत्व ।

(५३) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ञ्म के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से म्म का परिवर्तन हो जाता है ।

तिम्म, तिगं < तिमम्—न्म के स्थान पर विकल्प से म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व ।

जुम्म, जुगं < जुग्मम्—य को ज, ञ्म को विकल्प से म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व ।

(५४) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ञ्म, ण्म, स्म, ह्म और क्ष्म के स्थान पर प्राकृत में म्ह हो जाता है ।

(क) र्म = म्ह—

कम्हारा < कर्मोराः—र्म के स्थान में म्ह तथा ईकार को आकार ।

कुम्हाणो < कुरमाणः—र्म के स्थान में म्ह आदेश और नकार को णत्व ।

(ख) ण्म = म्ह—

उम्हा < ऊष्मा—ण्म के स्थान पर म्ह तथा ऊ को ह्रस्व ।

गिम्हो < ग्रीष्म—ण्म को म्ह, संयुक्त रेफ का लोप और ईकार को ह्रस्व ।

(ग) स्म = म्ह—

अम्हारिसो < अस्मादृशः—स्म के स्थान पर म्ह, दृश के स्थान पर रिस, विसर्ग को ओत्व ।

विम्हओ < विस्मयः—स्म के स्थान में म्ह, यकार का लोप, अ स्वर ङेप और विसर्ग को ओत्व ।

(घ) ह्य = म्ह—

यम्हा < ब्रह्मा—ह्य के स्थान पर म्ह, संयुक्त रेफ का लोप ।

यम्हणो < ब्राह्मणः— " " " और आ को ह्रस्व ।

यम्हचैरं < ब्रह्मचर्यम्—ह्य के स्थान पर म्ह, ङ के संयुक्त रेफ का लोप और चर्य को चैरं ।

सुम्हा < मुह्यः—ह्य के स्थान पर म्ह ।

(ङ) क्षम = म्ह—

यम्हलं < पक्ष्मलम्—क्षम के स्थान पर म्ह ।

यम्हाईं < पक्ष्माणि— " "

(११) संस्कृत के संयुक्त वर्ण श्न, ण, स्न, ह्न, ङ्न, क्षम और सूक्ष्म शब्द के क्षम के स्थान में प्राकृत में ण्ह हो जाता है ।

(क) श्न = ण्ह—

पण्हो < प्रश्न—प्र में से संयुक्त रेफ का लोप, और श्न के स्थान पर ण्ह, विसर्ग को ओत्व ।

सिण्हो < शिरः—तालन्त्य श के स्थान में दन्त्य स तथा श्न के स्थान पर ण्ह ।

(ख) ण्न = ण्ह—

उण्हीसं < उण्णीपम्—ण्न के स्थान में ण्ह, मूर्धन्य प को दन्त्य स ।

कण्हो < कृष्ण—क में रहनेवाली क के स्थान में अ और ण्न के स्थान में ण्ह, विसर्ग को ओत्व ।

जिण्हू < जिष्णुः—ण्न के स्थान पर ण्ह, उकार को दीर्घ ।

विण्हू < विष्णुः— " "

(ग) स्न = ण्ह—

जोण्हो < ज्योत्स्ना—संयुक्त य का लोप तथा संयुक्त त का लोप और स्न के स्थान में ण्ह ।

पण्हुओ < प्रस्तुतः—य में से संयुक्त रेफ का लोप, स्न के स्थान पर ण्ह, व का लोप और अ स्वर ङेप, विसर्ग को ओत्व ।

ण्होओ < स्नातः—स्न के स्थान में ण्ह, त का लोप और अ स्वर ङेप तथा विसर्ग को ओत्व ।

(ष) छ = ण्ह—

जण्ह < जहः—छ के स्थान पर ण्ह और उकार को दीर्घ ।

यण्ह < यहिः— " " और इकार को दीर्घ ।

(ङ) ण्ह = ण्ह—

अयरण्हो < अपराहः—प के स्थान पर य, ह के स्थान पर ण्ह ।

गुव्यण्हो < गुवाङः—संयुक्त रेफ का लोप, य को द्विरूप और भा को अक्षर तथा ह के स्थान में ण्ह ।

(ष) क्षण = ण्ह—

तिण्ह < तीक्ष्णम्—ती को ह्रस्व, क्षण के स्थान में ण्ह ।

सण्ह < सक्ष्णम्—संयुक्त ल का लोप, सूर्यस्य प को द्विरूप त, क्षण के स्थान में ण्ह ।

क्षम = ण्ह—

सण्ह < सूक्ष्मम्—सू के स्थान पर स और क्ष को ण्ह ।

(५६) संस्कृत का संयुक्त वर्ण छ प्राकृत में ण्ह हो जाता है ।

पल्हारं < पल्लारम्—ल के स्थान में ण्ह ।

पल्हाओ < पल्लाहः—

(५७) संस्कृत का ज वर्ण प्राकृत में विकल्प से ज होता है, पर पद्मस्य में जाने से ज्ञ होता है ।

अहिज्जो, अहिण्णो < अभिजः—भ के स्थान पर ह, पद्मस्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ञ, विकल्पाभाव में ण्ण ।

अज्जा, आणा < आज्ञा—पद्मस्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर ज, विकल्पाभाव में ण्ण ।

अप्पज्जो, अप्पण्णू < आत्मजः—आत्म के स्थान पर अप्प, ज के स्थान पर पद्मस्य में रहने से ज्ञ, विकल्पाभाव में ण्ण ।

इंगिअज्जो, इंगिअण्णू < इंगितजः—पद्मस्य में ज के रहने से विकल्प से ज्ञ, विकल्पाभाव में ण्ण ।

देवज्जो, देवण्णू < देवजः—देकार को एकार, पद्मस्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ञ, विकल्पाभाव में ण्ण ।

पज्जा, पण्णा < प्रजा—पद्मस्य में ज के रहने से ज्ञ को विकल्प से ज्ञ तथा विकल्पाभाव में ण्ण ।

पज्जो, पण्णो < प्राज्ञः—

मणोज्जं, मण्णुणं < मनोदण्—

सव्यज्जो, सव्वण्णू < सर्वजः—

संजा, संणा < संजा—व्यञ्जन से परे रहने के कारण ज को ञ, विकल्पाभावे में ण ।

(१८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण है प्राकृत में रिद्ध हो जाता है ।

अरिहृइ < अर्हति—अर्ह के स्थान पर रिद्ध, त का लोप और इ शेष ।

अरिहो < अर्हः—

”

”

गरिहा < गर्हा—

”

”

घरिहो < वर्हः—

”

”

(१९) संस्कृत के संयुक्त व्यञ्जन र्श और र्ष के स्थान पर प्राकृत में रिस होता है ।

(क) र्श = रिस—

आयरिसो < आदर्श —र्श के स्थान पर रिस हुआ है ।

दरिसणं < दर्शनम्—

”

”

सुदरिसणं < सुदर्शनम्—

”

”

(ख) र्ष = रिस—

घरिसं < वर्षम्—र्ष के स्थान पर रिस हुआ है ।

घरिससयं < वर्षाशतम्—

”

”

घरिसा < वर्षा—

”

”

(२०) संस्कृत के संयुक्त ल के स्थान पर प्राकृत में इल होता है ।

अंयिलं < अम्लम्—संयुक्त ल के स्थान पर इल हुआ है, म के स्थान पर पूर्व स्वर पर अनुस्वार के साथ य हुआ है ।

किलम्मइ < काम्यति—संयुक्त ल के स्थान पर इल, म्य को म्म, विभक्ति ३ ।

किलंतं < वलाम्गत—संयुक्त ल को इल ।

किलिट्ठं < क्लिष्टम्—

”

किलिन्नं < क्लिन्नम्—

”

किलेसो < क्लेशः—

”

गिलाइ < ग्लायति—

”

गिलाणं < ग्लानम्—

”

पिलुट्ठं < प्लुष्टम्—

”

पिलेसो < प्लोषः—

”

मिलाइ < म्ब्लायति—

”

मिलाणं < म्लानम्—

”

सिलेसो < श्लेषः—

”

सिलिम्हा < श्लेष्मा—संयुक्त ल को हल ।

सिलोओ < श्लोकः—

सिलिट्टं < श्लिष्टम्—

सुदलं < शुक्लम्—

॥ संयुक्त क का लोप, तालव्य श को दन्त्य ल ।

(६१) संस्कृत के 'य' संयुक्त व्यञ्जन को प्राकृत में रिभ होता है ।

आयरिओ < आचार्यः—चकार का लोप, आ शेष, य भुवि, ह्रस्व और य के स्थान पर रिभ ।

गंभीरिअं < गाम्भीर्यम्—दीर्घ को ह्रस्व और य को रिभ ।

गहीरिअं < गाम्भीर्यम्—

॥ ॥

चोरिअं < चौर्यम्—औठार को ओठार और य के स्थान पर रिअं ।

धीरिअं < धैर्यम्—पेठार को ईठ्य और य को रिअं ।

वम्हचरिअं < वल्लभ्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, ह्र को म्द और य को रिभ ।

भरिआ < भायां—य को रिभ ।

वरिअं < वर्यम्—

॥

वीरिअं < वीर्यम्—

॥

थेरिअं < थैर्यम्—संयुक्त स का लोप, ऐकार को एकार, य को रिभ ।

सूरिओ < सूर्यः—य को रिभ ।

सुन्दरिअं < सौन्दर्यम्—औठार को उठार, य को रिभ ।

सोरिअं < सौर्यम्—य को रिभ ।

(६२) संस्कृत के संयुक्त व्यञ्जनों में कुछ विशेष परिवर्तन भी होता है ।

(क) ग्ग = क्क—

लुक्को < लङ्गः—ङ्ग के स्थान पर क्क और ङ को लु ।

(ण) क्ष्ण = क्ख—

तिक्खं < तीक्ष्णम्—ती को ह्रस्व तथा क्ष्ण के स्थान पर क्ख ।

(ग) स्त = स्स—

खंभो < स्तम्भ—स्त के स्थान पर स्स ।

(ष) स्फ = स्स—

खेडओ < स्फोटकः—स्फ के स्थान पर स्स ।

(छ) त्त = च्च—

किच्ची < कृत्ति—त्त के स्थान पर च्च ।

(घ) द्य = च्च—

तर्धं < तर्ध्यम्—द्य के स्थान पर च्च ।

(छ) स्प = छ—

छिदा < स्पृहा—

(ज) त्त = ट्ट—

पट्टणं < पत्तनम्—त्त के स्थान पर ट्ट ।

मट्टिआ < मृत्तिका—त्त के स्थान पर ट्ट ।

(ऋ) र्थ = ठ्ठ—

अठ्ठो < अर्थः—र्थ के स्थान पर ठ्ठ ।

चउठ्ठो < चतुर्थः—

(ञ) र्त = ङ्ग—

गङ्गो < गर्तः—र्त के स्थान पर ङ्ग ।

(ट) र्द = ङ्ग—

फयङ्गो < फपर्वः—र्द के स्थान पर ङ्ग ।

छङ्गो < छर्वः—

छङ्गी < छर्दिः—

मङ्गिओ < मर्दितः—

विच्छङ्गो < विच्छर्वः—

संसङ्गो < संमर्दः—

(ठ) र्ध, र्द, रध, रध = ङ्ग—

अङ्गो < अर्थम्—र्ध के स्थान पर ङ्ग ।

ईङ्गो < ईद्विः—र्द के स्थान पर ङ्ग ।

वङ्गो < वरधः—रध के स्थान पर ङ्ग ।

विअङ्गो < विद्वधः—

बुङ्गो < बुद्धः—र्द के स्थान पर ङ्ग ।

बुङ्गो < बुद्धिः—

सङ्गो < धदा—

ठङ्गो < स्तब्धः—र्ध के स्थान पर ङ्ग ।

(ङ) ञ्ज = ञ्ज—

पण्णरह् < पण्णदश—ञ्ज के स्थान पर ञ्ज ।

पण्णासा < पण्णासत्—

(ढ) त्त = ञ्ज—

दिण्णं < दणम्—त्त के स्थान पर ञ्ज ।

(ण) त्म = त्प—

अप्पा < आत्मा—त्म के स्थान पर प्प ।

अप्पाणो < आत्मानः— " "

(त) म्र = म्व—

अंवं < आम्रम्—म्र के स्थान पर म्व ।

तंवं < ताम्रम्— " "

(थ) ह्य = भ्य—

वम्भणो < मात्स्यः—ह्य के स्थान पर भ्य ।

वंभ्येरं < मत्स्यवर्यम् " "

(ढ) क्ष, ख, र्थ, र्घ, र्ण, प्य और ष्य = ह—

दाहिणो < दक्षिणः—क्ष के स्थान पर ह ।

तुहं < दुःखम्—ख के स्थान पर ह ।

तूहं < तीर्थम्—र्थ के स्थान पर ह ।

दीहो < दीर्घः—र्घ के स्थान पर ह ।

काहावणो < कार्पाषणः—र्ष के स्थान पर ह ।

वाहो < वाप्यः—प्य के स्थान पर ह ।

कोहण्डी < कुष्माण्डी—प्प के स्थान पर ह ।

कोहण्डं < कुष्माण्डम् — " "

(६३) निम्न वर्णों को प्राकृत में द्वित्व हो जाता है ।

उज्जू < मज्जुः—ज को द्वित्व । जोव्वणं < यौवनम्—व को द्वित्व ।

तेल्लं < नेल्लम्—ल को द्वित्व । चटुत्तं < प्रभूतम्—त को द्वित्व ।

पेम्मं < पेम—म को द्वित्व । मंडुक्को < मण्डूकः—फ को द्वित्व ।

विड्डा < मीडा—ड को द्वित्व । एक्को < एकः—क को द्वित्व ।

कणिआरो < कर्णिकारः—ण को द्वित्व । कोउहलं < कुतुहलं—ल को द्वित्व ।

तुण्हक्को < तूणीकः—क को द्वित्व । नक्खो < नखः—ख को द्वित्व ।

दइव्यो < देवः—व को द्वित्व । नेड्डं < नीडम्—ड को द्वित्व ।

मुक्को < मूकः—क को द्वित्व ।

(६४) निम्न शब्दों में अनियमितः परिवर्तन होते हैं—

अच्छअरं, अच्छरिअं, अच्छरिज्जं, अच्छरीअं < आश्चर्यम् ।

केलं, कयलं < कदलम् । कोहलं < कुतुहलम् ।

चोग्गुणो < चतुर्गुणः । चोत्थो, चउत्थो < चतुर्थः ।

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी । चोइह, चउइह < चतुर्दश ।

चोहसी, चलहसी < चतुर्दशी ।	चोव्वारो, चतव्वारो < चतुर्वारः ।
तेत्तीसा < त्रयस्त्रिंशत् ।	तेरह < त्रयोदश ।
तेयीसा < त्रयोविंशतिः ।	तीसा < त्रिंशत् ।
नोणीअं, लोणीअं < नवनीतम् ।	नोहलिआ < नवकलिका ।
नोमालिआ < नवमल्लिमा ।	पोप्फलं < पूगफलम् ।
पोरो < पुरः ।	पाउरणं, पगुरणं < प्रावरणम् ।
बोरं < बद्धम् ।	मोहो, मऊहो < मयूखः ।
रुणं < रुद्रितम् ।	लोणं < लवणम् ।
वीसा < विंशतिः ।	सोमालो < सुकुमारः ।
थेरो < स्थविरः ।	

(६२) निम्न शब्दों में आमृन् परिवर्तन हो जाता है ।

हेट्टं < अधस् ।	ओ, अव < अप ।
अच्छरसा < अप्सस ।	आउसं < आयुः ।
आढत्तो < आरन्धः ।	धूआ < दुहिता ।
दाढा < दंष्ट्रा ।	हरो < हयः ।
धणुहं < धनुष् ।	इसि < ईषत् ।
ओ < उत ।	ओ < उप ।
अवहं उवहं < उभयस् ।	कउदा < कडुम् ।
छूदं < क्षिप्तम् ।	घरं < गृहम् ।
पिक्को < पुष्पः ।	तिरिच्छि < तिर्यक् ।
पाइक्को < पदाति ।	वहिणी < भगिनी ।
मइलं < मलिनम् ।	मंजरो < मात्राः ।
विलया < वनिता ।	रुम्भरो < रुक्षः ।
वेसलिअं < वैदुर्यम् ।	सिप्पी < शुक्तिः ।
थेवं, थोवं, थोफं < स्तौयम् ।	मुसाणं, मसाणं < रममाणम् ।

(६३) निम्न शब्दों में वर्णव्यत्यय हुआ है ।

अलचपुरं < अचलपुरम् ।	आणालो < आलानः ।
फणेरु < कणेरुः ।	मरहट्टं < महराष्ट्रम् ।
हलुअं < लघुम् ।	णडालं < पण्डारम् ।
वाणासो < वासागमो ।	हलिआरो < हरिमाणः ।
ददो < द्रव, ददः ।	

पाँचवाँ अध्याय

लिङ्गानुशासन

प्राकृत में संस्कृत के समान पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ये तीन ही लिङ्ग माने गये हैं। प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक समस्त संज्ञाएँ उक्त तीनों लिङ्गों में विभक्त हैं। साधारण लिङ्गव्यवस्था संस्कृत के समान ही है, किन्तु जिन शब्दों में अन्तर है, उन्हींका यहाँ निर्देश किया जाता है।

(१) प्राट्प्, शब्द और तरणि शब्दों का पुलिङ्ग में प्रयोग होता है।^१ यथा—
पाडसो < प्राट्प्—संस्कृत में यह शब्द स्त्रीलिङ्ग है।

सरओ < शरद्—

” ”

तरणी < तरणी—

” ”

(२) दामन्, शिरस् और नभस् को छोड़ कर शेष सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।^२

(क) सकारान्त शब्द—

जसो < पशस्—पश—संस्कृत में यह शब्द नपुंसकलिङ्ग है।

पओ < पयस्—पयः—

” ”

तमो < तमस्—तमः—

” ”

तेओ < तेजस्—तेजः—

” ”

सरो < सरस्—सरः—

” ”

(ख) नकारान्त शब्द

जम्मो < जग्मन्—जग्म—

” ”

नम्मो < नग्मन्—नग्म—

” ”

कम्मो < कग्मन्—कग्म—

” ”

वम्मो < वग्मन्—वग्म—

” ”

विशेष—

(क) वयं < वयस्—वयः—संस्कृत में यह नपुंसकलिङ्ग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिङ्ग ही माना गया है।

१. प्रावृट्शस्तरण्यः पुलिङ्ग—दा१।३१. हे०।

२. लमदाम-शिरो-नभः—दा१।३२. हे०।

सुमणं < सुमन्—सुमन्—संस्कृत में यह नपुंसकलिङ्ग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिङ्ग ही माना गया है ।

सम्मं < शर्मन्—शर्म—

चम्मं < चर्मन्—चर्म—

(ख) दामं < दामन्—दाम—सदृश के समान नपुंसकलिङ्ग ही है ।

सिरं < सिरस्—शिरः—

नहं < नभस्—नभः—

(३) अक्षि (आँख) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादिगण के शब्द पुलिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं^१ । अक्षि शब्द का पाठ अम्बल्यादि गण में भी होने से इसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में भी होता है^२ । यथा—

अच्छी < अक्षिणी—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग, पर वहाँ विकल्प से पुलिङ्ग ।

अच्छीइं < अक्षिणी—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग, यहाँ भी विकल्प से नपुंसकलिङ्ग ।

एसा अच्छी < एतदक्षि—यहाँ स्त्रीलिङ्ग में व्यवहार है ।

चक्खु < चक्षुषी—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग किन्तु प्राकृत में पुलिङ्ग ।

णअणो (पुलिङ्ग) } नयनम्—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग, किन्तु प्राकृत में विकल्प
पाअणं (नपुंसकलिङ्ग) } से पुलिङ्ग ।

छोअणो (पुलिङ्ग) } रोचनम्—

छोअणं (नपुंसक) } " "

वअणो (पुलिङ्ग) } वचनम्—

वअणं (नपुंसक) } " "

कुलो (पुलिङ्ग) } कुलम्—

कुलं (नपुंसक) } " "

माहप्पो (पुलिङ्ग) } माहात्म्यम्—

माहप्पं (नपुंसक) } " "

छन्दो (पुलिङ्ग) } छन्द—

छन्दं (नपुंसक) } " "

दुक्खा (पुलिङ्ग) } दुःखानि—

दुक्खाइं (नपुंसक) } " "

भायणा (पुलिङ्ग) } भाजनानि—

भायणाइं (नपुंसक) } " "

१. वाचस्पत्यवचनायाः ८।१।३३. हे० ।

२. प्रम्बल्यादिपाठादक्षिणव्यः स्त्रीलिङ्गेऽपि ८।१।३३. की वृत्ति ।

(४) क्रियो-क्रियी आचार्य के मत से पुष्ट, अक्षि और प्रश्न शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।^१ यथा—

पुष्टी (स्त्रीलिङ्ग) } पुष्टम्—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग है, पर प्राकृत में विकल्प
पुष्टं (नपुंसक) } से स्त्रीलिङ्ग भी है ।
अच्छी (स्त्रीलिङ्ग) } अक्षि— " "
अच्छं (नपुंसक) } " "
पण्हा (स्त्रीलिङ्ग) } प्रश्नः—संस्कृत में यह पुलिङ्ग है, पर प्राकृत में विकल्प
पण्हो (नपुंसक) } से स्त्रीलिङ्ग भी होता है ।

(५) गुणादि शब्द विकल्प से नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।^२

गुणं (नपुंसक) } गुण—संस्कृत में गुण शब्द पुलिङ्ग है, पर प्राकृत में इसका
गुणो (पुलिङ्ग) } व्यग्रद्वार पुलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में होता है ।
देवाणि (नपुंसक) } देवाः—संस्कृत में देव शब्द नित्य पुलिङ्ग है, पर प्राकृत
देवा (पुलिङ्ग) } में यह विकल्प से नपुंसकलिङ्ग भी होता है ।
रत्नम् (नपुंसक) } रत्नम्—अङ्ग शब्द संस्कृत में पुलिङ्ग है पर प्राकृत विकल्प से ।
रत्नो (पुलिङ्ग) }
मंडलग्नां (नपुंसक), मंडलग्नो (पुलिङ्ग) < मंडलग्नम्— " "
करकूहं (नपुंसक), करकूहो (पुलिङ्ग) < करकूह— " "
रुक्ताह (नपुंसक), रुक्ता (पुलिङ्ग) < रुक्ताः— " "

(६) इमान्त—इमन् प्रत्यय जिनके अन्त में आया हो और अजसयादि गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।^३

इमान्त शब्द—

एसा गरिमा (स्त्रीलिङ्ग), एसो गरिमा (पुलिङ्ग) < एष गरिमा ।
एसा महिमा (स्त्रीलिङ्ग), एसो महिमा (पुलिङ्ग) < एष महिमा ।
एसा धुत्तिमा (स्त्रीलिङ्ग), एसो धुत्तिमा (पुलिङ्ग) < एष धुत्तिमा ।

१. पुष्टाक्षिप्रश्ना. जिया वा ४२०. वर० ।

२. गुणाद्याः क्रीये वा ८१३४. हे० ।

३. वेमाञ्जल्याद्या. जियाय ८१३४. हे० ।

अञ्जल्यादिगण में अञ्जलि, पुष्ट, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि और प्रस्थि शब्द गृहीत हैं । कल्पलतािका के अनुसार रश्मि शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग ही है ।

अञ्जल्यादिगण के शब्द—

एसा अंजली (खी), एसो अंजली (पु०) < एष अञ्जलिः ।

चोरिआ (खी०), चोरिओ (पु०) < चौर्यम् ।

निही (खी), निही (पु०) < निधिः ।

विही (खी०), विही (पु०) < विधिः ।

गंठी (खी०), गंठी (पु०) < गन्धिः ।

रस्सी (खी०), रस्सी (पु०) < रस्मिः ।

(७) जब वाहु शब्द खीलिग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है । पर जब पुल्लिग में प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर बाहु रूप ही रह जाता है । यथा—

एसा वाहा (खी), एसो वाहु (पु०) < एष वाहुः ।

स्त्रीप्रत्यय

खीलिग शब्द दो प्रकार के होते हैं—मूल खीलिग शब्द और प्रत्यय के योग से घने खीलिग शब्द । जिन शब्दों का अर्थ मूल से ही स्त्रीवाचक है और रूप पुल्लिग और नपुंसकलिग में नहीं होते, उनको मूल स्त्रीवाचक शब्द कहते हैं । यथा—लदा, माका, लिहा, हलिहा, मदिआ, छच्छी, लप्पिणी आदि ।

प्रत्यय के योग से -ने खीलिग शब्द मूल से खीलिग नहीं होते, किन्तु स्त्रीप्रत्यय जोड़ देने से उनमें स्त्रीत्व आता है । ऐसे शब्द जोड़ीदार होते हैं अर्थात् पुल्लिग और खीलिग दोनों लिगों में व्यवहृत होते हैं । अतः स्त्रीप्रत्यय—ये प्रत्यय हैं, जिनके लगाने पर पुल्लिग शब्द खीलिग हो जाते हैं । संस्कृत में डाप्, डाप्, पाप् (मा); दीप्, दीप्, दीन् (ई); ऊङ् (ऊ) और ति ये आठ स्त्रीप्रत्यय हैं; पर प्राकृत में आ; ई और ऊ प्रत्यय ही होते हैं । अधिकांश प्राकृत शब्दों में संस्कृत के समान ही स्त्रीप्रत्यय का विधान किया गया है ।

(१) सामान्यतया प्राकृत में अकारान्त शब्दों से खीलिग बनाने के छिप भा प्रत्यय लगता है । यथा—

अआ + आ = अआ < अजा; चउआ + आ = चउआ < चउआ ।

मू मज + आ = मूमिया < मूमिया; माण + आ = माआ < माण ।

वउउ + आ = वउआ < वउआ, हाउ + आ = होआ (पंउरी)

काण + आ = कोइआ < काण्डा; चयल < चयल, फुराल < फुराल ।

निउण—निउणा, अचल—अचला, मलिग—मलिगा, चउर—चउरा,
पढम—पढमा ।

वीय—वीया ।

(२) स्त्रीलिङ्ग में सत्—स्वत् आदि शब्दों से पर में आ प्रत्यय जोड़ने से सत्ता
आदि रूप होते हैं ।^१

(३) संस्कृत के नकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है ।
यथा—राधा + ई = राणी, माहण + ई = माहणी; बंभण + ई = बंभणी । हरिथ—
हरिथणी ।

(४) रकारान्त, लकारान्त और भय्, भज्, ठक् और ठण् प्रत्ययों में घने संस्कृत
शब्दों से प्राकृत में प्रायः स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जुड़ता है । यथा—

रकारान्त—कुंभआर + ई = कुंभआरी, कुम्हारी; लोहआर—लोहआरी;
कुमार—कुमारी ।

लकारान्त—सिरीमअ + ई = सिरीमई; पुत्तअ—पुत्तई; धणअ—
धणई ।

(५) संस्कृत के चित् शब्दों—नर्तक, खनक, बधिर प्रभृति तथा गौर, मनुष्य,
महत्त्व, भ्रंग, पिङ्गल, हय, गजघ, फण, हुग, हरिण, कौश्य, अणक, भाषक, दासुल,
वदर, उभय, नर और मंगल शब्दों में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए प्राकृत में ई प्रत्यय जोड़ा
जाता है । यथा—

गड्ढअ + ई = गड्ढई, खणअ + ई = खणई, पडिअ + ई = पडिई, उमार +
ई = कुमारी, किमोर—किसोरी, मुअर—मुअरी, नअ—नई, पड—पडो, कभल—
कभली, थल—थली, फल—फली, मंडल—मंडली आदि ।

(६) जाति अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए
ई प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

सोइ + ई = सोही, वग्ग + ई = वग्गी, मअ + ई = मई, हरिण—
हरिणी, कुंरंग—कुंरंगी, सूअर—सूअरी, जंजुअ—जंजुई, सिगाअ—सियाली,
बिडाअ—बिडाली, घोइ—घोडी, महिअ—महिसी, हंस—हंसी, सारअ—
सारसी, गोव—गोवी, चंडाअ—चंडाली, बंभअ—बंभणी, रक्खअ—रक्खसी,
निसाअर—निसाअरी ।

(७) पाणिनि के 'टिड्ढाणश् इत्यादि (४।१।६९) से ण् आदि प्रत्यय निमित्तक
शेष होता है, पर प्राकृत में विकल्प से ई होता है ।^२ यथा—साहजो—साहजा;
कुरुचो—कुरुचा आदि ।

(८) संस्कृत के अजातिराघर पुलिङ्ग शब्दों से प्राकृत में खोलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय होता है ।^१ यथा—

नीली—नीला; काली—काला, इसमाणी—इसमाणा, सुष्पण्दी—सुष्पण्हा;
इमीप—इमाए; इमीणं—इमाणं, पईप—एआए; पईण—एआण ।

(९) संस्कृत के छाया और हरिदा शब्दों को प्राकृत में खोलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जुड़ता है ।^२ यथा—

छादी—छाया; हलदी—हलदा ।

(१०) सु, अम् और आम्, तुप् (सभी रिभक्तियों) के पर में रहने पर रिम्, यद् और लद् शब्दों से प्राकृत में खोलिङ्ग में ई प्रत्यय विकल्प से होता है ।^३ यथा—

कीओ—काओ; कोप्—काए; कीउ—कासु; जीओ—जाओ; तीओ—ताओ ।

(११) पुलिङ्ग शब्द जो नर-र चोतरु है, उससे खोलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है । पर पालकान्त शब्दों में ई प्रत्यय नहीं जुड़ता है । वंभणस्सा जाया वंभणी, मुहस्स जाया मुदी, गणअस्स जाया गणई, गाविअस्स जाया गाविई, गित्ताअस्स जाया गित्ताई ।

(१२) संस्कृत के जानपद, कुण्ड, गोन, स्थल, भाग, नाग, कुत्त, कायुक आदि शब्दों से प्राकृत में खोलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जोड़ा जाता है । ई प्रत्यय के अभाव में था होता है । यथा—

जानपद + ई—जाणपदी; कुंडी—कुंडा, थली—थला, गोना—गोणी,
भागा—भागी, कुसी—कुसा ।

(१३) संस्कृत के इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृद, आचार्य, हिम, अरण्य, यवन, मातुल और उपाध्याय शब्दों से प्राकृत में ई लगने के पूर्व आण जोड़ दिया जाता है—

इंद + ई = इइणी, भव + ई = भवणी; सव्य + ई = सव्यणी, रुद्राणी,
मिहणी, आयरियाणी, जवणाणी, मातुलाणी, उवग्गयाणी ।

(१४) धर्मविधि से पाणिग्रहण (विवाह) अर्थ प्रकट हो तो संस्कृत के पाणिग्रहण शब्द से प्राकृत में ई प्रत्यय होता है । यथा—

पाणिगद्दीदी—धर्मविधि पूर्वक विवाह की गयी पत्नी ।

पाणिगद्दीदा—अन्य किसी प्रकार से विवाह की गयी पत्नी ।

(१५) आर्य और क्षत्रिय शब्दों से ई प्रत्यय और आन का आगम विरूप से होता है । यथा—

अर्या—अर्याणी, रक्षित्या—रक्षिताणी ।

(१६) पटुबोहि समास होने पर अवररागक शब्द के उत्तर में विकल्प से ई प्रत्यय होता है । यथा—

चन्दमुही—चन्दमुहा, सुएसा—सुएसी, तंयणहा—तंयणही ।

(१७) नस्मान्त और मुत्तान्त शब्दों से प्राकृत में विकल्प से ई होता है । यथा—

यज्जणहा—यज्जणही, गोरमुहा—गोरमुही, ऱालमुहा—ऱालमुही ।

(१८) जिन शब्दों के उत्तरपक्ष में पाऊ, वर्ण, पर्ण, पुण्य, फण, मूल और चाल हों, उन शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है । यथा—

संउअणी; सालरणणी; संखपुण्डी, दामीइली, इडममूली, गोवाली ।

(१९) नासिका, उदर, ओष्ठ, जंघा, दन्त, कर्ण और शृंग शब्दों से विकल्प से ई प्रत्यय होता है । यथा—

तुंगनासिभा, तुंगनासिई; दोहोअरा, दोहोअरी ।

कतिपय अध्ययनीय शब्द

पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
राया < राजा	राणी < रानी
विउसो < विद्वान्	विउसी < विदुषी
माणुसो < मनुष्य	माणुसी < मातुषी
माउलो < मातुलः	माउली, मानलाणी < मातुलानी
मच्छो < मत्स्यः	मच्छी < मत्सी
गिहवइ < गृहपतिः	गिहवणी < गृहपत्नी
अहिवइ < अधिपतिः	अहिवणी < अधिपत्नी
तुअ < तुदन्	तुअंती < तुदन्ती
सहा < सखा	सही < सखी
मुणि < मुनिः	मुणी < मुनिः
साहु < साधुः	साहु < साधुः
जुवा < जुवा	जुवई < जुवती
सुएसो < सुरेशः	सुएसी, सुएसा < सुरेशी, सुरेशा
धीवरो < धोवरः	धीवरी < धीवरी
सुहो < शूद्रः	सुहा, सुही < शूद्रा, शूद्री

आयरिओ < आचार्यः

खत्तियो < क्षत्रियः

उयज्झायो < उपाध्यायः

पढ < पठन्

अरुथ

धीवर < धीवरो

कुंभआरो < कुम्भकारः

सुवण्णआरो < स्वर्णकारः

वालओ < वालकः

पुरिसो < पुरुषः

किन्नरो < किन्नरः

माहणो < माहणः

गोवो < गोपः

मऊरो < मयूरः

पिओ < पिता

भाया < भ्राता

कच्छवो < कच्छपः

सुत्तगारो < सूतकारः

वुत्तिगारो < वृत्तिगारः

सीसो < शिष्यः

हत्थि < हस्तिः

सेट्ठि < श्रेष्ठी

गंधिओ < गन्धिकः

पइ < पतिः

नडो < नटः

चन्दमुहो < चन्द्रमुखः

पीवरो < पीवरः

इंदो < इन्द्रः

गोवालओ < गोपालकः

कामुओ < कामुकः

आयरिआणी, आयरिआ < आचार्यानी,
माचार्या

खत्तिया, खत्तियाणी < क्षत्रिया, क्षत्रियाणी

उवज्झाया, उवज्झायाणी < उपाध्याया,
उपाध्यायानी

पढन्ती < पठन्ती

अरुज्जमा

धीवरी < धीवरी

कुंभआरी < कुम्भकारी

सुवण्णआरी < स्वर्णकारी

वालिआ < वालिका

इत्थी < स्त्री

किन्नरी < किन्नरी

माहणी < माहणी

गोवी < गोपी; गोवा < गोपा

मऊरी < मयूरी

माआ < माता

वहिणी < भगिनी

कच्छवी < कच्छपी

सुत्तगारी < सूतकारी

वुत्तिगारी < वृत्तिगारी

सीसा < शिष्या

हत्थिणी < हस्तिनी

सेट्ठिनी < श्रेष्ठिनी

गंधिआ < गन्धिका

भज्जा < भार्या

नडो < नटी

चन्दमुही < चन्द्रमुखी

पीवरी < पीवरी

इंदाणी < इन्द्राणी

गोवालिआ < गोपालिका

{ कामुआ < कामुका

{ कामुई < कामुकी

पढमो < प्रथमः	पढमा < प्रथमा
वीयो < द्वितीयः	वीया < द्वितीया
निउणो < निउणः	निउणा < निउणा
चवलो < चपलः	चवला < चपला
अयलो < अचलः	अयला < अचला
सुप्पणहो < शूर्पनक्षः	सुप्पणहा, सुप्पणही < शूर्पनक्षी, शूर्पनक्षा
महिसो < महिषः	महिसो < महिषी
अओ < अजः	अआ < अजा
चडओ < चटकः	चडआ < चटका
भयो < भयः	भयाणी < भयानी
संखपुप्फो < संखपुष्पः	संखपुप्फी < संखपुष्पी
तरुणो < तरुणः	तरुणी < तरुणी
णायओ < नायकः	णायिआ < नायिका
रुहो < रुद्रः	रुदाणी < रुद्राणी

छठवाँ अध्याय

सुबन्त या शब्दरूप प्रकरण

भाषा का आधार वाक्य है और वाक्य का आधार शब्द। शब्दों की रचना ध्वनों के मेल से होती है।

जो वान से सुनायी पड़ता है, वह शब्द है। एक या एक से अधिक अक्षरों के योग से बनी हुई स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। जैसे—‘देवा पि तं नमसंति’ वाक्य में देवा, पि—अपि, तं और नमसंति शब्द हैं। शब्द दो प्रकार के होते हैं—सार्थक और निरर्थक। सार्थक शब्द की पदमञ्जा होती है। व्याकरणशास्त्र में सार्थक शब्द या ही विवेचन किया जाता है। पद—सार्थक शब्द मूलतः दो प्रकार के हैं—संज्ञा और क्रिया।

प्राकृत में रूपान्तर के अनुसार पदों के दो भेद हैं—विकारी और अविकारी। जिस सार्थक शब्द के रूप में विभक्ति या प्रत्यय जोड़ने से विकार या परिवर्तन होता है, उसे विकारी कहते हैं। यथा—देवो, देवा, पठह, पठन्ति आदि। विकारी—परिवर्तनशील सार्थक शब्दों के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विभेपण ये चार मूल भेद हैं। अविकारी पद अव्यय कहलाते हैं।

प्राचीन वैयाकरणों ने नाम, आख्यात और अव्यय ये तीन ही प्रकार के शब्द माने हैं। सर्वनाम, संख्यावाचक और विभेपण भी नाम के भन्तर्गत हैं। नाम को प्रातिपदिक कहा गया है। प्रातिपदिकों के साथ सुप् प्रत्यय लगाने से संज्ञा पद बनते हैं। प्रत्येक संज्ञा के पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ये तीन लिङ्ग होते हैं।

प्राकृत भाषा में संस्कृत के समान लिंगभेद स्वाभाविक स्थिति पर निर्भर नहीं है, यद्यपि यह लिंगभेद वृत्तिम है। उदाहरणार्थ स्त्री का अर्थ बतलाने के लिए दारो, भज्जा और कलत्त—ये तीन शब्द प्रचलित हैं। इनमें दारो पुल्लिङ्ग, भज्जा स्त्रीलिङ्ग और कलत्त नपुंसकलिङ्ग हैं। इसी प्रकार शरीर का बोध करानेवाले शब्दों में लिंगभेद वर्तमान है। यथा—तणू स्त्रीलिङ्ग, देहो पुल्लिङ्ग और सरीर नपुंसकलिङ्ग हैं। कई शब्द ऐसे हैं, जिनके रूप एक से अधिक लिंगों में चलते हैं। किन्हीं पुल्लिङ्ग शब्दों में प्रत्यय जोड़ने से भी स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं और किन्हीं प्रत्ययों के योग से नपुंसक लिङ्ग के शब्द बन जाते हैं। इतना जाने पर भी प्राकृत में संस्कृत के समान ही शब्द प्रायः नियतलिङ्गी हैं—शब्दों के लिङ्ग निर्धारित है।

(३) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले अम् के अकार का लोप होता है^४ । यथा—

देव + अम् = देवं < देवम्, णउल + अम् = णउलं < नकुलम् ।

(४) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले टा—तृतीया विभक्ति के एकवचन और आम्—पष्ठो के बहुवचन के स्थान में ण आदेश होता है और ट प्रत्यय के रहने से अ को एत्व हो जाता है । तृतीया एकवचन और पष्ठो के बहुवचन में ण के ऊपर विकल्प से अनुस्वार हो जाता है^१ । यथा—

देव + टा = देवेण, देवेणं < देवेन; देव + आम् = देवाण, देवाणं < देवानाम् ।

(५) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले भिस् के स्थान में हि आदेश होता है और अकार को एत्व हो जाता है, तथा हि के ऊपर विकल्प से अनुनासिक और अनुस्वार भी होते हैं^२ । यथा—

देव + भिस् = देवेहि, देवेहिं, देवहि < देवैः ।

णउल + भिस् = णउलेहि, णउलेहिं, णउलेहिं < नकुलैः ।

(६) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले वसि—पंचमी एकवचन के स्थान में चो, दो, दु, हि और हिन्तो आदेश होते हैं^३ । दो और दु के दशर का लुक् भी होता है । जैसे—

देव + वसि = देवचो, देवादो—देवाओ, देवादु—देवाड, देवाहि और देवाहितो < देवात्—यहाँ नियम २ के अनुसार अ का आस्व हुआ है ।

(७) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले भस्—पंचमी बहुवचन के स्थान में चो, दो, दु, हिं, हिंओ और सुंओ आदेश होते हैं^४ । तथा विकल्प से दीर्घ होता है । यथा—

देव + भस् = देवचो, देवादो—देवाओ, देवाड,—देवाड, देवाहि, देवेहि, देवाहितो, देवेहितो, देवेसुंओ, देवासुंओ < देवेभ्यः ।

(८) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले इस्—पष्ठो एकवचन के स्थान में 'इस्' आदेश होता है^५ । यथा—

देव + इस् = देवरस < देरस्य, णउल + इस् = णउलरस < नकुलस्य ।

(९) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले डि—सप्तमी एकवचन के स्थान में ए और मि आदेश होते हैं^६ तथा अकार को एत्व होता है । यथा—

१. टा-ग्रामोः ८।३।६. हे० ।

२. भिओ हि हिं हि ८।३।७. हे० ।

३. इतेस् चो दो दुर्नह हिन्तो तुक् ८।३।८. हे० ।

४. भ्यसस् चो-दो दु-हि-हिन्तो गुन्तो ८।३।९. हे० ।

५. इतः सः ८।३।१०. हे० ।

६. डे मि डेः ८।३।११. हे० ।

देव + हि = देवे, देवेस्मि < देवे; णउत्ते, णउलस्मि < नउत्ते ।

(१०) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले सुप्—सप्तमी विभक्ति बहुवचन में ह्रस्वत्वं ए का छोप हो जाता है और अकार को पश्च तथा सु के ऊपर विकल्प से अनुस्वार होता है । यथा—

देव + सुप् = देवेसु, देवेसुं < देवेषु ।

(११) उक्त नियमों के अनुसार पुंलिङ्ग अकारान्त शब्दों के लिए विभक्ति-चिह्न निम्नांकित हैं—

प्राकृत विभक्ति चिह्न			संस्कृत विभक्ति चिह्न		
प्रा०	सं०	पृ०	यहु०	एक०	बहु०
पदमा < प्रथमा—ओ		आ	सु (:)	जस् (आः)	
वीआ < द्वितीया—		ए, आ	अम्	शस् (आन्)	
तइआ < तृतीया—ण, णं		दि, दिँ, हिं	टा (गा)	भिस् (मिः)	
चउत्थी < चतुर्थी—[य, आ,		ण, णं	हे (ए)	अप्स (अपाः)	
ए विकल्पसे]					
पंचमी < पञ्चमी—तो, ओ, उ,		चो, ओ, उ, वसि (अः)		भ्यस् (भ्यः)	
		दि, हितो	दि, हितो, सुंतो		
छट्ठी < षष्ठी—स्स		ण, णं	इस् (अः)	आम्	
सप्तमी < सप्तमी—ए, स्मि		सु, सुं	डि (इ)	सुप् (सु)	
संयोहण < संयोधन—भा, ओ, लुक्		आ	सु	अस्	

अकारान्त शब्दों के रूप

देव

एकवचन	बहुवचन
प०—देवो	देवा
पी०—देवं	देवा, देवे
त०—देवेण, देवेयं	देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं
च०—देवस्स, (देवाय)	देवाण, देवाणं
पं०—देवसो, देवाआ, देवाउ,	देवसो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवेहि,
देवाहि, देवाहितो, देवा	देवाहितो, देवेहितो, देवासुंतो, देवेसुंतो
छ०—देवस्स	देवाण, देवाणं
स०—देवे, देवस्मि	देवेसु, देवेसुं
सं०—हे देवो, हे देवा	हे देवा

बहुवचन

एकवचन	बहुवचन
प०—देवो	देवा
पी०—देवं	देवा, देवे
त०—देवेण, देवेयं	देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं
च०—देवस्स, (देवाय)	देवाण, देवाणं
पं०—देवसो, देवाआ, देवाउ,	देवसो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवेहि,
देवाहि, देवाहितो, देवा	देवाहितो, देवेहितो, देवासुंतो, देवेसुंतो
छ०—देवस्स	देवाण, देवाणं
स०—देवे, देवस्मि	देवेसु, देवेसुं
सं०—हे देवो, हे देवा	हे देवा

वीर

एकवचन

- प०—वीरो
 धी०—वीरं
 त०—वीरेण, वीरेणं
 च०—वीरस्स (वीराय)
 पं०—वीरत्तो, वीराओ, वीराउ,
 वीराहि, वीराहितो, वीरा
 छ०—वीरस्स
 स०—वीरे, वीरम्मि (वीरंस्ति)
 सं०—हे वीरो, हे वीरा

बहुवचन

- वीरा
 वीरे, वीरा
 वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहि
 वीराण, वीराणं
 वीरत्तो, वीराओ, वीराउ, वीराहि, वीरेहि,
 वीराहितो, वीरेहितो, वीरासुतो, वीरेसुतो
 वीराण, वीराणं
 वीरेसु, वीरेसुं
 हे वीरा

जिण (जिन)

एकवचन

- प०—जिणो
 धी०—जिणं
 त०—जिणेण, जिणेणं
 च०—जिणस्स, जिणाय
 पं०—जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ,
 जिणाहि, जिणाहितो, जिणा
 छ०—जिणस्स
 स०—जिणे, जिणम्मि, जिणंस्ति
 सं०—हे जिणो, हे जिणा

बहुवचन

- जिणा
 जिणा, जिणे
 जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहि
 जिणाण, जिणाणं
 जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि,
 जिणेहि, जिणाहितो, जिणेहितो,
 जिणासुतो, जिणेसुतो
 जिणाण, जिणाणं
 जिणेतु, जिणेतुं
 हे जिणा

वच्छ < वृक्ष

एकवचन

- प०—वच्छो
 धी०—वच्छं
 त०—वच्छेण, वच्छेणं
 च०—वच्छस्स, वच्छाय
 पं०—वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ,
 वच्छाहि, वच्छाहितो, वच्छा

बहुवचन

- वच्छा
 वच्छा, वच्छे
 वच्छेहि, वच्छेहिं, वच्छेहि
 वच्छाण, वच्छाणं
 वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छेहि,
 वच्छाहि, वच्छाहितो, वच्छेहितो,
 वच्छासुतो, वच्छेसुतो

छ०—वच्छस्स	वच्छाण, वच्छाणं
स०—वच्छे, वच्छमि, वच्छंसि	वच्छेमु, वच्छेसुं
सं०—हे वच्छो, हे वच्छा	हे वच्छा

धम्म < धम्म

एकवचन

बहुवचन

प०—धम्मो	धम्मा
दी०—धम्मं	धम्मा, धम्मे
त०—धम्मेण, धम्मेयं	धम्मेहि, धम्मेहिं, धम्मेहि
च०—धम्मस्स, धम्माय	धम्माण, धम्माहं
पं०—धम्मत्तो, धम्माओ, धम्माठ	धम्मत्तो, धम्माओ, धम्माउ, धम्माहि, धम्मेहि,
धम्माहि, धम्माहितो, धम्मा	धम्माहितो, धम्मेहितो, धम्मासुतो, धम्मेसुतो
छ०—धम्मस्स	धम्माण, धम्माहं
स०—धम्मे, धम्ममि, धम्मंसि	धम्मेसु, धम्मेसुं
सं०—हे धम्मो, हे धम्मा	हे धम्मा

अवमान (अपमान), अलोक (अलोक), आचार (आचार), उज्जम (उद्यम), उउएम (उपदेश), कुठार (कुठार), कोह (कोप), चन्द (चन्द्र), जिगेसर, देह, नाय (न्याय), नरिह (नरेन्द्र), निरय (नरक), बधिर (बधिर), बभण (माह्वण), भाउ (भाव), मणोरह (मनोरथ), महिवाल (महिपाल), मिग, मभ (मृग), मुक्ख, मोरख (मोक्ष), मेह (मेघ), रोस (रोष), लोभ (लोक), बह (वध), धम्मह (मम्मथ), वाह (व्याध), विनय (विनय), वीचराभ (वीतराग), संघ (सङ्घ), सज्जन (सज्जन), सड (सड), सहाव (स्वभाव), सर (सर), लग (स्वर्ग), सावग (धावक), हस्य (हस्त), पायव (पादप), कच्छव (कच्छप), अहिव (अधिप), गिहस्थ (गृहस्थ), सुत्तगार (सूतकार), वुत्तिगार (वृत्तिकार), भासगार (भाष्यकार), सूरिअ (सूर्य), वरिअ (वर्य), सोरिअ (शौर्य), फसण, कसिण (कृष्ण), पज्जुण (प्रद्युम्न), नमोउकार (नमस्कार), सीह, (सिंह), वरघ (व्याघ्र), सियाल, सिगाल (शृगाल), गय (गज), वसह (वृषभ), ओठ (ओष्ठ), दंत (दन्त), कुंभार (कुम्भकार), चम्मार (चर्मकार), छोह (छोम), दोस (दोष), राग (राग), घड (घट), पड (पट), मड (मठ) एवं मड आदि अकारान्त शब्दों के रूप देव, धम्म, वीर, वच्छ के समान ही चलते हैं। साधारणतः चतुर्थी के रूप पण्यी के समान ही होते हैं, पर संस्कृत के प्रभाव के कारण य और ए प्रत्यय संयुक्त रूप भी मिलते हैं। यथा—वहाय और वहाए।

आकारान्त शब्द

(१२) आकारान्त शब्दों के रूप प्रायः ह्रस्व अकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं, पर पंचमी विभक्ति में द्वि प्रत्यय नहीं जुड़ता है। तृतीया में एत्व भी नहीं होता।

आकारान्त हाहा शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—हाहा

हाहा

वी०—हाहां

हाहा

त०—हाहाण, हाहाण्य

हाहाहि, हाहाहिं, हाहाहि

च०—हाहस्त्र, हाहणो

हाहाण, हाहाण्य

पं०—हाहचो, हाहाओ, हाहाउ,
हाहाहितोहाहचो, हाहाओ, हाहाउ,
हाहाहितो, हाहाणुओ

छ०—हाहणो, हाहस्त्र

हाहाण, हाहाण्य

स०—हाहमि

हाहाणु, हाहाणु

सं०—हे हाहा

हे हाहा

इसी प्रकार किलाळवा (किलाळपा), गोमा (गोपा) और सोमवा (सोमपा) शब्दों के रूप चलते हैं।

इकारान्त और उकारान्त शब्द

(१३) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में सु, जस्, भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्तियों के पर में रहने पर अन्त इ और उ को दीर्घ होता है।

(१४) आचार्य हेमचन्द्र के मतानुसार इकारान्त और उकारान्त शब्दों में द्वितीया विभक्ति बहुवचन में शस् प्रत्यय का छोप और अन्तिम स्वर को दीर्घ हो जाता है।^१

(१५) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् के स्थान में ओ और णो आदेश होते हैं। वही-कहाँ जस् का लुक् भो हो जाता है।^२

(१६) आचार्य हेम के मतानुसार इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में जस् के स्थान में डित्, षड्, अओ आदेश और उकारान्त से केवल डित्, अओ आदेश होते हैं। णो

१. इदुतो दीर्घः ८।३।१६ हे०।

२. लुप्ते शसि ८।३।१८ हे०।

३. जस्-शसोर्णो वा ८।३।२२ हे०।

आदेश भी होता है। इति से यहाँ यह तात्पर्य है कि अन्त के इकार और उकार का लोप हो जाता है।^१

(१०) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले दास् और दस् के स्थान में विकल्प से णो आदेश होता है।^२

(१८) इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले दा—तृतीया एकवचन के स्थान में 'णा' आदेश होता है।^३

(१९) उकारान्त चउ चतुर शब्द से पर में आनेवाले भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्ति को विकल्प से दीर्घ होता है।

(२०) ऐ॥ के मत में इकारान्त और उकारान्त शब्दों में दसि और दस् के के पर रहने में विकल्प से णो आदेश होता है।^४

(२१) णेय रूपों की सिद्धि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के समान ही होती है।

इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के विभक्तिचिह्न

एकवचन	बहुवचन
पदमा—श्लय्य लृक्, दीर्घ	अउ, अओ, णो, ई
वीआ—, ,	णो, ई
तइया—णा	हि, हिँ, हिं
चउत्थी—णो, स्स	ण, णं
पंचमी—णो, णो, ओ, उ, हितो	ओ, ओ, उ, हितो, सुंतो
छट्ठी—णां, स्स	ण, श
सप्तमी—न्मि, सि	उ, लं
संयोजन—ई, प्रत्ययलृक्	अउ, अओ, णो, ई

इकारान्त हरि शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
य०—हरी	हरउ, हरओ, हरिणो, हरी
वी०—हरि	हरिणो, हरी
त०—हरिणा	हरीहि, हरीहिँ, हरीहिं
च०—हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
प०—हरिणो, हरिचो, हरीओ,	हरिचो, हरीओ, हरीउ, हरीहितो
हरीउ, हरीहितो	हरीसुंतो

१. पुसि जसो डउ डओ वा ८।३।२० हे० । २. डसो वा ५।१५ वर० ।

३. दो एा ८।३।२४ हे० ।

४. चतुरो वा ८।३।१७ हे० ।

५. इमि डसो पुं वजीवे वा ८।३।२३ हे० ।

छ०—हरिणो हरिस्स
स०—हरिम्मि, हरिंसि
सं०—हरी, हरि

हरीण, हरीणं
हरीसु, हरीसुं
हरउ, हरओ, हरिओ, हरी

इकारान्त गिरि शब्द के रूप

एकवचन

प०—गिरी
धी०—गिरिं
त०—गिरिणा
च०—गिरिणो, गिरिस्स
पं०—गिरिणो, गिरिचो, गिरीओ,
गिरीउ, गिरीहिउ
छ०—गिरिणो, गिरिस्स
स०—गिरिम्मि, गिरिंसि
सं०—गिरी, गिरि

बहुवचन

गिरी, गिरओ, गिरउ, गिरिणो
गिरिणो, गिरी
गिरिहि, गिरिहिं, गिरोहि
गिरीण, गिरीणं
गिरिचो, गिरीओ, गिरीउ,
गिरीहिउ, गिरीसुतो
गिरीण, गिरीणं
गिरीसु, गिरीसुं
गिरउ, गिरओ, गिरिणो, गिरी

इकारान्त णरवइ (नरपति) शब्द के रूप

एकवचन

प०—णरवई
धी०—णरवईं
त०—णरवइणा
च०—णरवइणो, णरवइस्स
पं०—णरवइणो, णरवइचो,
णरवईओ, णरवईउ, णरवईहिउ
छ०—णरवइणो, णरवइस्स
स०—णरवइम्मि, णरवइंसि
सं०—हे णरवई, हे णरवइ

बहुवचन

णरवउ, णरवओ, णरवइणो, णरवई
णरवइणो, णरवईं
णरवईहि, णरवईहिं, णरवईहिं
णरवईण, णरवईणं
णरवइचो, णरवईओ, णरवईउ,
णरवईहिउ, णरवईसुतो
णरवईण, णरवईणं
णरवईसु, णरवईसुं
हे णरवउ, हे णरवओ,
हे णरवइणो, हे णरवई

इकारान्त इसी-रिसी (ऋषि)

एकवचन

प०—इसी
धी०—इसिं

बहुवचन

इसउ, इसओ, इसिणो, इसी
इसिणो, इसी

त०—भाणुण	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहि
च०—भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
पं०—भाणूणो, भाणुत्तो, भाणूओ	भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ, भाणूहिंतो
भाणूउ, भाणूहिंतो	भाणूसुंतो
छ०—भाणुणा, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
स०—भाणुसि, भाणुमि	भाणूत्तु, भाणूत्तुं
सं०—हे भाणु, हे भाणू	हे भाणुओ, हे भाणुओ, हे भाणुओ,
	हे भाणउ

उकारान्त वाउ (वायु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—वाऊ	वाउणो, वाउओ, वाउओ, वाऊ
वी०—वाउ	वाउणो, वाऊ
त०—वाउणा	वाऊहि, वाऊहिं, वाऊहिं
च०—वाउणो, वाउस्स	वाऊण, वाऊण
पं०—वाउणो, वाउत्तो, वाउओ	वाउत्ता, वाऊओ, वाऊउ, वाऊहिंतो,
वाऊउ, वाऊहिंतो	वाऊपु तो
छ०—वाउणो, वाउस्स	वाऊण, वाऊण
स०—वाउसि, वाउमि	वाऊत्तु, वाऊत्तुं
सं०—हे वाउ, हे वाऊ	हे वाउणो, हे वाउओ, हे वाउओ, हे वाऊ

इसी प्रकार जउ (यडु), धम्मणु (धर्मज), स०उणु (सर्मज) दइउणु (देवज), गउ (गो), गुरु, साटु (साधु), उणु, वणु (वणुप्), मेरु, छरु, धणु (धनुप्), सिधु, केउ (केतु), विउउ (वित्तु), राहु, सउ (शकु), उउउ (इधु), ववामु (प्रवासिन्), वेणु (वेणु), सेउ (सेतु), मउउ (मृत्यु), खणु (खणू), गोचणु (गोचरु), सरणु (सरभू), अभिणु (अभिभू) और सयणु (स्वयम्भू) आदि शब्दों के रूप चलते हैं। प्राकृत में खणू, गोचणू, सरणू, अभिणू, और सयणू शब्द विकल्प से ह्रस्व उकारान्त होते हैं। अतः इन शब्दों के रूप वाउ के समान भी चलते हैं।

ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप भी इकारान्त और उकारान्त शब्दों के समान होते हैं। हेमचन्द्र ने दीर्घ ई, ऊ के लिए ह्रस्व का रिधान किया है और लवोधन के एकरचन में अपने नियम को वैकल्पिक माना है।

दीर्घ ईकारान्त पही (प्रधी) शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—पही
 यो०—पहिं
 त०—पहिणा
 च०—पहिणो, पहिस्स
 पं०—पहिणो, पहित्तो, पहीओ
 पहीउ, पहीहित्तो
 छ०—पहिणो, पहिस्स
 स०—पहिम्मि, पहिंमि
 सं०—हे पहि

पहउ, पहओ, पहिणो, पही
 पहिणो, पही
 पहीदि, पहीहिं, पहीहिं
 पहीण, पहीणं
 पहित्तो, पहीओ, पहीउ
 पहीहित्तो, पहीसुंतो
 पहीण, पहीणं
 पहीसु, पहीसुं
 हे पहउ, हे पहओ, हे पहिणो, हे पही ।

दीर्घ ईकारान्त गामणी (ग्रामणी)

एकवचन

बहुवचन

प०—गामणी
 यो०—गामणिं
 त०—गामणिणा
 च०—गामणिणो, गामणिस्स
 पं०—गामणिणो, गामणित्तो,
 गामणीओ, गामणीउ, गामणीहित्तो
 छ०—गामणिणो, गामणिस्स
 स०—गामणिम्मि, गामणिंमि
 सं०—हे गामणी

गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी
 गामणिणो, गामणी
 गामणीदि, गामणिहिं, गामणीहिं
 गामणीण, गामणीणं
 गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ,
 गामणीहित्तो, गामणीसुंतो
 गामणीण, गामणीणं
 गामणीसु, गामणीसुं
 हे गामणउ, हे गामणओ, हे गामणिणो,
 हे गामणी

दीर्घ ऊकारान्त खलपू शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—खलपू
 यो०—खलपुं
 त०—खलपुणा

खलपओ, खलपउ, खलपओ,
 खलपुणो, खलपू
 खलपुणो, खलपू
 खलपूदि, खलपूहिं, खलपूहिं

प०—सम्भुगो, सम्भुस	सम्भुस, सम्भुस
पं०—सम्भुगो, सम्भुगो, सम्भुगो	सम्भुगो, सम्भुगो, सम्भुगो,
सम्भुग, सम्भुगितो	सम्भुगितो, सम्भुगितो
छ०—सम्भुगो, सम्भुस	सम्भुग, सम्भुस
स०—सम्भुगि, सम्भुगि	सम्भुग, सम्भुग
सं०—हे सम्भु	हे सम्भुगो, हे सम्भुग,
	हे सम्भुगो, हे सम्भुगो, हे सम्भु

दीर्घ ऊकारान्त सयंभू (सयंभू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सयंभू	सयंभुगो, सयंभुग, सयंभुगो, सयंभुगो,
	सयंभू
वी०—सयंभू	सयंभुगो, सयंभू
त०—सयंभुगो	सयंभुगि, सयंभुगि, सयंभुगि
प०—सयंभुगो, सयंभुस	सयंभुग, सयंभुग
पं०—सयंभुगो, सयंभुगो, सयंभुगो,	सयंभुगो, सयंभुगो, सयंभुग,
सयंभुग, सयंभुगितो	सयंभुगितो, सयंभुगितो
छ०—सयंभुगो, सयंभुस	सयंभुग, सयंभुग
स०—सयंभुगि, सयंभुगि	सयंभुग, सयंभुग
सं०—हे सयंभु	हे सयंभुगो, सयंभुग, सयंभुगो,
	सयंभुगो, सयंभू

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

(२२) ऊकारान्त शब्दों के आगे किसी भी विभक्ति के आने पर अन्त्य ऊ के स्थान पर 'आर' आदेश होता है और उसके रूप ऊकारान्त शब्दों के समान चलते हैं ।

(२३) सु और अम् को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों में ऊकारान्त शब्द के अन्त्य ऊ के स्थान में विकल्प से उकार होता है ।^१ उत्पन्न में ऊकारान्त शब्दों के समान रूप होते हैं ।

१. आरः स्यादी—दा३।४५ हे० ।

२. श्रवामुदत्तमौसुवा—दा३।४५ हे० ।

(२४) सम्बोधन पदवचन में ऋकारान्त शब्दों के अन्तिम ऋ के स्थान पर विकल्प से अ आदेश होता है^१ । पर जो ऋकारान्त शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, उसके स्थान पर यह नियम लागू नहीं होता । ऋकारान्त शब्दों में तु विभक्ति के परे विकल्प से 'आ' आदेश होता है^२ ।

(२५) पितृ, भ्रातृ और जामातृ शब्दों से पर में किसी भी विभक्ति के आने पर ऋकार के स्थान में अर आदेश न होकर अर आदेश होता है^३ । अर आदेश होने पर भी रूप अकारान्त के समान ही चलते हैं ।

(२६) प्रथमा पदवचन में ऋकारान्त शब्दों के ऋ के स्थान पर विकल्प से आ आदेश होता है^४ ।

(२७) अकारान्त होने पर अकारान्त शब्दों के रूप अकारान्त जिन के समान और उकारान्त हो जाने पर 'भाणु' के समान होते हैं । विभक्तिचिह्न भी अकारान्त और उकारान्त शब्दों के समान ही जोड़े जाते हैं ।

ऋकारान्त कर्तृ शब्द—कत्तार और कत्तु

पदवचन

बहुवचन

प०—कत्ता, कत्तारो

कत्तारा, कत्तवो, कत्तभो, कत्तउ,

कत्तुणो, कत्तू

धी०—कत्तारि

कत्तारे, कत्तारा, कत्तुणो, कत्तू

त०—कत्तारेण, कत्तारेणं, कत्तुणा

कत्तारेहि, कत्तारेहिं, कत्तारेहिं, कत्तूहि,

कत्तूहिं, कत्तूहिं

च०—कत्ताराय, कत्तारस्स, कत्तुणो,

कत्ताराण, कत्ताराणं, कत्तूण, कत्तूणं

कत्तुस्स

पं०—कत्तारसो, कत्ताराभो, कत्ताराउ, कत्तारसो, कत्ताराभो, कत्ताराउ,

कत्ताराहि, कत्ताराहितो, कत्तारा, कत्ताराहि, कत्ताराहितो, कत्तारासुतो,

कत्तुणो, कत्तुतो, कत्तूथो, कत्तूउ, कत्तारेहि, कत्तारेहितो, कत्तारेसुतो,

कत्तूहिवा, कत्तूथो, कत्तूथो, कत्तूउ, कत्तूहिन्तो,

कत्तूमुन्तो

छ०—कत्तारस्स, कत्तुणो, कत्तुस्स

कत्ताराण, कत्ताराणं, कत्तूण, कत्तूणं

स०—कत्तारे, कत्तारम्मि, कत्तुम्मि

कत्तारेसु, कत्तारेसुं, कत्तूसु, कत्तूसुं

सं०—दे कत्त, दे कत्तारो

दे कत्तारा, दे कत्तवो, दे कत्तभो, दे कत्तउ,

कत्तुणो, कत्तू

१. श्रुतोदा ८।३।३६ हे० ।

२. पितृभ्रातृजामातृणां १।३४. वर० ।

३. आ सौ न वा ८।३।४८. हे० ।

४. आ ष सौ १।३५. वर० ।

मर्तु--भत्तार, भत्तर, भत्त शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—भत्ता, भत्तारो, भत्तरो

भत्तुणो, भत्तारो, भत्तवो, भत्तओ,

भत्तड, भत्त

दी०—भत्तारं, भत्तरं

भत्तारे, भत्तरे, भत्तारा, भत्तू, भत्तुणो

त०—भत्तरेण, भत्तारेण, भत्तुणा

भत्तारेहि, भत्तरेहि, भत्तारेहिं, भत्तरेहिं,

भत्तारेहिं, भत्तरेहिं, भत्तूहि, भत्तूहिं,

भत्तूहि

च०—भत्तारस्, भत्तरस्, भत्तुणो,

भत्तूणं, भत्तूण, भत्ताराणं, भत्ताराण,

भत्तुस्त

भत्तारणं, भत्ताराण

पं०—भत्तरतो, भत्ताराओ, भत्तराड,

भत्तरतो, भत्तराओ, भत्तराड, भत्तराहि,

भत्तराहि, भत्तराहिन्तो, भत्तुणो,

भत्तराहिन्तो, भत्तराहिन्तो, भत्तरेहि,

भत्तुतो, भत्तूओ, भत्तूड,

भत्तरेहिन्तो, भत्तरेहिन्तो, भत्तुतो, भत्तूओ,

भत्तूहिन्तो, भत्ताराओ, भत्तराड, भत्तूड, भत्तूहिन्तो, भत्तूहिन्तो

भत्ताराहि, भत्ताराहिन्तो, भत्तरा

छ०—भत्तरस्, भत्तरस्, भत्तुणो,

भत्तराण, भत्तराणं, भत्तराण, भत्तराणं,

भत्तुस्त

भत्तूण, भत्तूणं

स०—भत्तरे, भत्तरम्मि, भत्तारे,

भत्तरेसु, भत्तरेसुं, भत्तारेसु, भत्तारेसुं,

भत्तरम्मि, भत्तरम्मि

भत्तूसु, भत्तूसुं

सं०—हे भत्त, हे भत्तर, हे भत्तरो,

हे भत्तरा, भत्तारा, हे भत्तुणो, भत्तू

हे भत्तार

भ्रातृ--भायर, भाउ शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—भाया, भायरो

भायारा, भायवो, भायवो, भायवो,

भाउणो, भाऊ

दी०—भायरं

भायारे, भायारा, भाउणो, भाऊ

त०—भायरेण, भायरेण, भाउणा

भायरेहि, भायरेहिं, भायरेहिं, भाऊहि,

भाऊहिं, भाऊहिं

च०—भायराय, भायरस्, भाउणो,

भायराण, भायराण, भाऊण, भाऊणं

भाउस्त

पं०—भायरत्तो, भायराओ, भायराउ, भायरत्तो, भायराओ, भायराउ, भायराहि,	
भायराहि, भायराहिन्तो,	भायराहिन्तो, भायरासुन्तो, भायरेहि,
भायरा, भाउणो, भाउत्तो,	भायरेहिन्तो, भायरेसुन्तो, भाउत्तो,
भाऊओ, भाऊउ, भाऊहिन्तो	भाऊओ, भाऊउ भाऊहिन्तो, भाऊसुन्तो
छ०—भायरस्स, भाउणो, भाउस्स	भायराण, भायराणं, भाऊण, भाऊणं
स०—भायरे, भायरम्मि, भाउम्मि	भायरेसु, भायरेसुं, भाऊसु, भाऊसुं
सं०—हे भाय, भायर, भायरो, भायरं	भायरे, भायरा, भाओ, भाओओ,
	भाओउ, भाऊणो, भाऊ

पितृ—पिउ, पिअर शब्द

पृथक्चन

बहुवचन

प०—पिअरो, पिआ (पिता)	पिअरा, पिउणो, पिअओ, पिअओ,
	पिअउ, पिऊ
वी०—पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
त०—पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा	पिअरेहि, पिअरेहि, पिअरेहिं, पिऊहि,
	पिऊहि, पिऊहिं
च०—पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं
पं०—पिअराओ, पिअराउ, पिअरा,	पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि,
पिउणो, पिऊओ, पिऊउ	पिअराहिन्तो, पिअरेहिन्तो, पिअरासुन्तो,
	पिअरेसुन्तो, पिऊओ, पिऊसुन्तो, पिऊउ,
	पिऊहिन्तो
छ०—पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं
स०—पिऊरंस्सि, पिअरम्मि, पिअरे,	पिअरेसु, पिअरेसुं, पिऊसु, पिऊसुं
पिउलि, पिउम्मि	
सं०—पिअरं, पिअ, पिअरो, पिअरा,	पिउणो, पिअओ, पिअओ, पिअउ, पिउ
पिअर	

दातृ—दाउ, दायार शब्द

पृथक्चन

बहुवचन

प०—दायारो, दाया	दायारा, दाउणो, दायओ, दायओ, दायउ,
	दाऊ

घी०—दायारं	दायारे, दायारा, दाउणो, दाऊ
त०—दायारेण, दायारेणं, दाउणा	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिं, दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिं
च०—दायारस्स, दाउणो, दाउस्स	दायाराण, दायाराणं, दाऊण, दाऊणं
पं०—दायाराओ, दायाराउ, दायारा, दाउणो, दाऊणो, दाऊउ	दायाराओ, दायाराउ, दायाराहि, दायारेहि, दायाराहिन्तो, दायारेहिन्तो, दायारासुन्तो, दायारेसुन्तो, दाऊओ, दाऊउ, दाऊहिन्तो, दाऊसुन्तो
छ०—दायारस्स, दाउणो, दाउस्स	दायाराण, दायाराणं, दाऊण, दाऊणं
स०—दायारंसि, दायारम्मि, दायारे दाउंसि, दाउम्मि	दायारेसु, दायारेसुं, दाऊसु, दाऊसुं
सं०—दायार, दाय, दायारो, दायारा	दायारा, दाउणो, दायओ, दायओ, दायउ, दाऊ

एकारान्त, ऐकारान्त, ओकारान्त और औकारान्त

पुल्लिग शब्द

(२८) प्राकृत में एकारान्त और ओकारान्त शब्दों का प्रायः अभाव है। संस्कृत के एकारान्त और ओकारान्त शब्दों में स्वारधिक क—अ प्रत्यय जोड़ने से प्राकृत शब्द बनते हैं, पर उनके रूप जिग शब्द के समान होते हैं।

(२९) संस्कृत के ऐकारान्त और औकारान्त शब्द प्राकृत में अकारान्त हो जाते हैं, अतः इनके रूप प्रायः वीर या जिग शब्द के समान चलते हैं।

एकारान्त सुरैः सुरेअ शब्द

एकारान्त	सुरैः सुरेअ
प०—सुरैओ	सुरेआ
घी०—सुरैअं	सुरेआ, सुरेए
त०—सुरैएण, सुरैएणं	सुरैएहि, सुरैएहिं, सुरैएहिं
च०—सुरैअस्स, सुरैआय	सुरैआण, सुरैआणं
पं०—सुरैअओ, सुरैआओ, सुरैआउ, सुरैआहि, सुरैआहिन्तो, सुरैआ	सुरैअओ, सुरैआओ, सुरैआउ, सुरैआहि, सुरैएहि, सुरैआहिन्तो, सुरैआसुन्तो
छ०—सुरैअस्स	सुरैआण, सुरैआणं
स०—सुरैअंसि, सुरैआम्मि	सुरैएसु, सुरैसुं
सं०—हे सुरैओ	हे सुरेआ

ओकारान्त ग्लो-गिलोअ शब्द

पुनरचन	बहुवचन
प०—गिलोओ	गिलोआ
द्वी०—गिलोअं	गिलोए, गिलोआ
त०—गिलोएण, गिलोएणं	गिलोएहि, गिलोएहिं, गिलोएहिं
च०—गिलोअस्स, गिलोआय	गिलोआण, गिलोआणं
पं०—गिलोअचो, गिलोआओ, गिलोआठ, गिलोआहि, गिलोआहिन्तो, गिलोआ	गिलोअचो, गिलोआओ, गिलोआठ, गिलोआहि, गिलोएहि, गिलोआहिन्तो, गिलोआसुन्तो, गिलोएहिन्तो, गिलोएसुन्तो
छ०—गिलोअस्स	गिलोआण, गिलोआणं
स०—गिलोअंसि, गिलोअम्मि	गिलोएसु, गिलोएसुं
सं०—हे गिलोओ	हे गिलोआ

स्वरान्त पुल्लिङ्ग शब्दरूप समाप्त ।

स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग

(३०) स्त्रीलिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में विरुद्ध से उत् और ओत् आदेश होते हैं और उनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर को विरुद्ध से दीर्घ हो जाता है ।

(३१) स्त्रीलिङ्ग में टा, डस् और हि में प्रत्येक के स्थान में अत्, आत्, इत् और एत् ये चार आदेश होते हैं । पूर्व के ह्रस्व स्वर को दीर्घ हो जाता है । पर डस् प्रत्यय के स्थान में आदेश होनेपर पूर्व के ह्रस्व एर को विरुद्ध से दीर्घ होता है ।

(३२) अम् विभक्ति में—द्वितीया पुनरचन में अन्तिम दीर्घ को विरुद्ध से ह्रस्व होता है ।

(३३) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान दीर्घ ईकारान्त शब्द से पर में आनेवाले तु, जस् और शस् के स्थान में विरुद्ध से आ आदेश होता है ।

(३४) संज्ञोपन में आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में आ के स्थान पर एस्व होता है ।

१. ब्रियामुदोती या ८१३।२७ हे०

२. टा-डस्-ङेरदादि वेदा तु ङसे: ८१३।२६ हे०

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति चिह्न

एकवचन

बहुवचन

प०—(लुक्)

उ, ओ, (लुक्)

वी०—

उ, ओ, (लुक्)

त०—अ, इ, ए

हि, हिं, हिँ

च०—अ, इ, ए,

ण, णं

प०—अ, इ, ए, ओ, ओ, उ, हिन्तो

ओ, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो

छ०—अ, इ, ए

ण, णं

स०—अ, इ, ए

सु, सुं

सं०—(लुक्)

उ, ओ, (लुक्)

लदा < लता शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—लदा

लदा, लदाओ, लदाउ

वी०—लदं

लदा, लदाओ, लदाउ

त०—लदाए, लदाइ, लदाअ

लदाहि, लदाहिँ, लदाहिँ

च०—लदाए, लदाइ, लदाअ

लदाण, लदाणं

प०—लदाए, लदाइ, लदाअ, लदतो,

लदतो, लदाओ, लदाउ, लदाहिन्तो,

लदाओ, लदाउ, लदाहिन्तो

लदासुन्तो

छ०—लदाए, लदाइ, लदाअ

लदाण, लदाणं

स०—लदाए, लदाइ, लदाअ

लदासु, लदासुं

सं०—हे लदे, हे लदा

हे लदा, हे लदाओ, हे लदाउ

माला

एकवचन

बहुवचन

प०—माला

मालाउ, मालाओ, माला

वी०—मालं

मालाउ, मालाओ, माला

त०—मालाअ, मालाइ, मालाए

मालाहि, मालाहिँ, मालाहिँ

च०—मालाअ, मालाइ, मालाए

मालाण, मालाणं

प०—मालाअ, मालाइ, मालाए,

मालतो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो,

मालतो, मालाओ, मालाउ,

मालासुन्तो

मालाहिँतो

छ०—माछाअ, माछाह, माछाप	माछाण, माछाणं
स०— " " "	माछासु, माछासुं
सं०—माछे, माछा	माछाओ, माछाउ, माछा

छिहा (स्पृहा)

एकवचन	बहुवचन
प०—छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा
धी०—छिहं	" " "
त०—छिहाअ, छिहाह, छिहाप	छिहाहि, छिहाहिं, छिहाहिं
च०— " " "	छिहाण, छिहाणं
प०—छिहाअ, छिहाह, छिहाप, छिहाओ, छिहाओ, छिहाउ, छिहाहिन्तो	छिहाओ, छिहाओ, छिहाउ, छिहाहिन्तो, छिहासुन्तो
छ०—छिहाअ, छिहाह, छिहाप	छिहाण, छिहाणं
स०— " " "	छिहासु, छिहासुं
सं०—छिहे, छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा

हलिहा, हलहा (हरिद्रा)

एकवचन	बहुवचन
प०—हलिहा	हलिहाउ, हलिहाओ, हलिहा
धी०—हलिहं	" " "
त०—हलिहाअ, हलिहाह, हलिहाप	हलिहाहि, हलिहाहिं, हलिहाहिं
च०— " " "	हलिहाण, हलिहाणं
प०— " " "	हलिहाओ, हलिहाउ, हलिहाओ, हलिहाओ, हलिहाओ, हलिहाउ, हलिहाहिन्तो
छ०—हलिहाअ, हलिहाह, हलिहाप	हलिहाण, हलिहाणं
स०— " " "	हलिहासु, हलिहासुं
सं०—हलिहे, हलिहा	हलिहाउ, हलिहाओ, हलिहा

मट्टिआ (मृत्तिका)

एकवचन	बहुवचन
प०—मट्टिआ	मट्टिआउ, मट्टिआओ, मट्टिआ
धी०—मट्टिअं	" " "

त०—	मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआहि, मट्टिआहिं, मट्टिआदि
च०—	" " "	मट्टिआण, मट्टिआणं
पं०—	" " "	मट्टिआओ, मट्टिआओ
	मट्टिआओ, मट्टिआओ, मट्टिआउ, मट्टिआउ, मट्टिआहिन्तो, मट्टिआसुन्तो	मट्टिआहिन्तो
छ०—	मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआण, मट्टिआणं
स०—	" " "	मट्टिआसु, मट्टिआसुं
सं०—	हे मट्टिए, मट्टिआ	हे मट्टिआउ, मट्टिआओ, मट्टिआ

इकारान्त स्त्रीलिंग विभक्तिचिह्न-प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प०—(लृक्)	उ, ओ, (लृक्)
वी०—म्	" "
त०—अ, आ, इ, ए	हि, हिं, हि
च०— " "	ण, णं
पं०— " , , ओ, ओ, उ, हिन्तो	ओ, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो
छ०— " "	ण, णं
स०— " "	सु, सुं
सं०—ई (लृक्)	उ, ओ (लृक्)

मई (मति)

एकवचन	बहुवचन
प०—मई	मईउ, मईओ, मई
वी०—मई	" " "
त०—मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईहि, मईहिं, मईहि
च०— " " "	मईण, मईणं
पं०— " " "	मईओ, मईओ, मईउ, मईहिन्तो, मईसुन्तो
छ०—मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईण, मईणं
स०— " " "	मईसु, मईसुं
सं०—हे मई, मई	हे मईउ, मईओ, मई

मुचि (मुक्ति)

प०—मुत्ती	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती
वी०—मुत्ति	" "
त०—मुत्तीअ, मुत्तीआ, मुत्तीइ, मुत्तीए	मुत्तीहि, मुत्तिहिँ, मुत्तीहिँ
च०— " " "	मुत्तीण, मुत्तीणं
पं०— " " "	मुत्तिचो, मुत्तीओ, मुत्तीउ, मुत्तीहिन्तो, मुत्तीमुन्तो
सं०—दे मुत्ती, मुत्ति	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती

राइ (रात्रि)

एकवचन	बहुवचन
प०—राई	राईओ, राईउ, राई
वी०—राई	" "
त०—राईअ, राईआ, राईइ, राईए	राईहि, राईहिँ, राईहिँ
च०— " " " "	राईण, राईणं
पं०—राईअ, राईआ, राईइ, राईए, राईचो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो	राईओ, राईओ, राईउ, राईहिन्तो, राईमुन्तो
सं०—दे राई, राइ	राईण, राईणं
	राईसु, राईसुं
	दे राईउ, राईओ, राई

ईकारान्त स्त्रीलिंग विभक्तिचिह्न—प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प०—[लक्], आ	आ, उ, ओ, [लक्]
वी०—स	" " " "
त०—अ, आ, इ, ए	हि, हिँ, हिँ
च०— " " " "	ण, णं
पं०— " " " "	चो, ओ, उ, हिन्तो, मुन्तो
चो, ओ, उ, हिन्तो	

छ०—अ, आ, इ, ए	ण, णं
स०—, , , ,	सु, सुं
सं०—[लक्]	आ, उ, ओ [लक्]

लच्छी (लक्ष्मी)

एकवचन

बहुवचन

प०—लच्छी, लच्छीआ	लच्छीआ, लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छी
पी०—लच्छिउ	" " " "
त०—लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीहि, लच्छीहिं, लच्छीहिं
च०—, , , ,	लच्छीण, लच्छीणं
पं०—, , , ,	लच्छीणो, लच्छीओ, लच्छीउ,
	लच्छीणो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीसुतो
	लच्छीहिंतो
छ०—लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीण, लच्छीणं
स०—, , , ,	लच्छीसु, लच्छीसुं
सं०—हे लच्छिउ	हे लच्छीआ, लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छी

रुप्पिणी (रुक्मिणी)

एकवचन

बहुवचन

प०—रुप्पिणी, रुप्पिणीआ	रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणी
पी०—रुप्पिणि	रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणी
त०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीहि, रुप्पिणीहिं, रुप्पिणीहिं
च०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीण, रुप्पिणीणं
पं०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीणो, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीहिंतो, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीसुतो
	रुप्पिणीउ, रुप्पिणीहिंतो
छ०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीण, रुप्पिणीणं

स०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, . रुप्पिणीसु, रुप्पिणीसुं
रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए

सं०—हे रुप्पिणि हे रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ,
रुप्पिणी

बहिणी (भगिनी)

एकवचन

बहुवचन

प०—बहिणी, बहिणीआ

बहिणीआ, बहिणीउ, बहिणीओ, बहिणी

बी०—बहिणि

” ” ”

त०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीहि, बहिणीहिं, बहिणीहिं
बहिणीए

च०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीण, बहिणीणं
बहिणीए

पं०— ” ” बहिणिओ, बहिणीओ, बहिणीउ,
बहिणिओ, बहिणीओ, बहिणीउ, बहिणीसुओ, बहिणीहिंओ
बहिणीहिंओ

छ०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीण, बहिणीणं
बहिणीए

स०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीसु, बहिणीसुं
बहिणीए

सं०—हे बहिणि हे बहिणीआ, बहिणीउ, बहिणीओ,
बहिणी

उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु-शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—धेणू

धेणूउ, धेणूओ, धेणू

बी०—धेणुं

” ” ”

त०—धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए

धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिं

च०—

”

धेणूण, धेणूणं

पं०—

”

धेणुओ, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंओ,

धेणुओ, धेणूओ, धेणूउ,

धेणूसुओ

धेणूहिंओ

त०—	पहूअ, पहूआ, पहूइ, पहूए	पहूदि, पहूदिहँ, पहूदि
च०—	" " "	पहूण, पहूणं
प०—	" " "	पहूणो, पहूओ, पहूउ, पहूदिन्तो,
	पहूणो, पहूओ, पहूउ, पहूदिन्तो	पहूणुन्तो
छ०—	पहूअ, पहूआ, पहूइ, पहूए	पहूण, पहूणं
स०—	" " "	पहूणु, पहूणुं
सं०—	हे पहू	हे पहूआ, पहूउ, पहूओ,

सास् (श्वथू)

पङ्कजन	बहुवचन
प०—सासू, सासूआ	सासूआ, सासूउ, सासूओ, सासू
धी०—सासुं	" " "
त०—सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए	सासूदि, सासूदिहँ, सासूदि
च०— " " "	सासूण, सासूणं
प०— " " "	सासूणो, सासूओ, सासूउ, सासूदिन्तो,
सासूणो, सासूओ, सासूउ, सासूदिन्तो	सासूणुन्तो
छ०—सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए	सासूण, सासूणं
स०— " " "	सासूणु, सासूणुं
सं०—हे सासू	हे सासूआ, सासूउ, सासूओ, सासू

चमू

एकवचन	बहुवचन
प०—चमू, चमूआ	चमूआ, चमूउ, चमूओ, चमू
धी०—चमुं	" " "
त०—चमूअ, चमूआ, चमूइ, चमूए	चमूदि, चमूदिहँ, चमूदि
च०— " " "	चमूण, चमूणं
प०— " " "	चमूणो, चमूओ, चमूउ, चमूदिन्तो,
चमूणो, चमूओ, चमूउ, चमूदिन्तो	चमूणुन्तो
छ०—चमूअ, चमूआ, चमूइ, चमूए	चमूण, चमूणं
स०— " " "	चमूणु, चमूणुं
सं०—हे चमू	हे चमूआ, चमूउ, चमूओ, चमू

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—

माया

एकवचन

बहुवचन

प०—माया

मायाओ, मायाउ, माया

वी०—मायै

" "

त०—मायाअ, मायाइ, मायाए

मायाहि, मायाहिँ, मायाहिँ

च०— " " "

मायाण, मायाणं

पं०— " " "

मायाओ, मायाउ, मायाहिन्तो,

मायात्तो, मायात्तो, मायाओ,

मायासुन्तो

मायाउ, मायाहिन्तो

छ०—मायाअ, मायाइ, मायाए

मायाण, मायाणं

स०— " " "

मायासु, मायासुँ

सं०—हे माया

हे मायाओ, मायाउ, माया

ससा (स्वसृ)

एकवचन

बहुवचन

प०—ससा

ससाओ, ससाउ, ससा

वी०—ससै

" " "

त०—ससाअ, ससाइ, ससाए

ससाहि, ससाहिँ, ससाहिँ

च०— " " "

ससाण, ससाणं

पं०— " " "

ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो,

ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो

ससासुन्तो

छ०—ससाअ, ससाइ, ससाए

ससाण, ससाणं

सं०— " " "

ससासु, ससासुँ

सं०—हे ससा

हे ससाओ, ससाउ, ससा

नणन्दा (ननन्द)

एकवचन

बहुवचन

पं०—नणन्दा

नणन्दाओ, नणन्दाउ, नणन्दा

वी०—नणन्दै

" " "

त०—नणन्दाअ, नणन्दाइ, नणन्दाए

नणन्दाहि, नणन्दाहिँ, नणन्दाहिँ

च०— " " "

नणन्दाण, नणन्दाणं

पं०— " " "

नणन्दत्तो, नणन्दाओ, नणन्दाउ,

नणन्दत्तो, नणन्दाओ, नणन्दाउ,

नणन्दाहिन्तो, नणन्दासुन्तो

नणन्दाहिन्तो

छ०—नणन्दाभ, नणन्दाइ, नणन्दापु नणन्दाण, नणन्दाणं

सं— ११ १२ १३ नणन्दासु, नणन्दासं

सं०—हे नणन्दा हे नणन्दाभो, नणन्दाव, नणन्दा

माउसिया (मातृष्वसू)

प्रकाशचन

बहुवचन

५०—माडसिखा

માડસિઆઓ, માડસિઆડ, માડસિઆ

बी०—माइसिअं

** ** **

त०—माउसिभाज, माउसिभाइ,
माउसिभाए

माडसिआहि, माडसिआहि, माडसिआहि

५०- " "

માહિતિભાણ, માહિતિભાણ

माउसिभत्तो, माउसिभात्तो,
माउसिभाउ, भाउमिआहिन्तो

माउसिभत्तो, माउसिआओ, माउसिआउ,
माउसिआहितां, माउसिआसुतो

छ०—माउसिभाअ, माउसिभाइ,
माउसिभाए

माउसिभाण, माउसिभाणं

सं-१, २, ३

माउसिभासु, माउसिभासं

सं०—हे साउसिआ

हे माडसिभाओ, माडसिभाउ,
माडसिभा

धूआ (दुहितृ)

पुष्पवृत्त

सहायचने

प०—धूआ

ધૂઆઓ, ધૂઆડ, ધૂઆ

दी०—भूअं

11 12 13

त०—धूआअ, धूमाह, धूमाप

धूआहि, धूआहि, धूआहि

च०—

धूआण, धूआणं

५०— „ „ „
धूमत्तो, धूमाओ, धूमाड,
धूमाह्न्तो

धूम्रतो, धूमाग्नौ, धूमात्, धूमाद्भिन्तो,
धूमासन्तो

छ० - धूमात्र, धूमाइ, धूमाए

ધૂઆળ, ધૂઆળં

स०—, ११ ११ ११

धूआस, धूआसं

सं०—ह धूआ

હે ધૂળાઓ, ધૂઆર, ધૂઆ

ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

गावी (गो)

एकवचन	बहुवचन
प०—गात्री, गावीआ	गात्रीआ, गात्रीउ, गावीओ, गावी
दी०—गावि	" " "
त०—गावीअ, गात्रीआ, गात्रीइ, गात्रीए	गात्रीहि, गावीहि, गावीहि
च०—, " "	गात्रीण, गावीणं
प०—, " " गात्रित्तो, गावीओ, गात्रीउ, गावीहित्तो	गात्रित्तो, गावीओ, गात्रीउ, गावीहित्तो, गात्रीसुत्तो
छ०—गावीअ, गात्रीआ, गात्रीइ, गावीए	गात्रीण, गात्रीणं
स०—, " "	गावीसु, गावीसुं
सं०—हे गावि	हे गावीआ, गात्रीउ, गावीओ, गावी

औकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

नावा (नौ)

एकवचन	बहुवचन
प०—नावा	नावाओ, नावाउ, नावा
दी०—नावं	" " "
त०—नावाअ, नावाइ, नावाए,	नावाहि, नावाहि, नावाहि
च०—, " "	नावाण, नावाणं
प०—, " " नावात्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहित्तो	नावात्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहित्तो नावासुत्तो
छ०—नावाअ, नावाइ, नावाउ	नावाण, नावाणं
स०—, " "	नावासु, नावासुं
सं०—हे नावा	हे नावाओ, नावाउ, नावा

स्वरान्त छीलिङ्ग शब्दरूप समास ।

स्वरान्त नपुंसक लिंग शब्द

(३५) नपुंसक लिंग में स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले तु के स्थान में प्रथमा पुरुषवचन में मृ होता है ।

(३६) नपुंसक लिंग में स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले ऋतु और शत के स्थान में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में हं, हं और णि आदेश होते हैं ।

(३७) नपुंसक लिंग के सम्बोधन पुरुषवचन में 'तु' का छोप होता है ।

(३८) तु के पर में रहने पर प्रथमा के पुरुषवचन में इकारान्त और उकारान्त शब्दों के अन्तिम ह और उ को दीर्घ नहीं होता ।

नपुंसकलिंग के विभक्तिचिह्न

पुरुषवचन	वस्तुवचन
प०—मृ	णि, हं, हं
द्वी०—मृ	णि, हं, हं
सं०—०	" "

ये विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के समान विभक्ति चिह्न होते हैं

वण (वन) शब्द

पुरुषवचन	वस्तुवचन
प०—वर्ण	वणाहं, वणाहं, वणाणि
द्वी०—वर्ण	" "
त०—वणेण	वणेहि, वणेहि
च०—वणस्म	वणाणं
प०—वणत्तो, वणाभो, वणाउ, वणाहि, वणाहिन्तो, वणा	वणत्तो, वणाभो, वणाउ, वणाहि, वणाहिन्तो, वणासुन्तो
द्वि०—वणस्स	वणाणं
सं०—वणे, वणम्मि	वणेसु, वणेसुं
सं०—हे वण	हे वणाहं, हे वणाहं, हे वणाणि

धण (धन) शब्द

पुरुषवचन	वस्तुवचन
प०—धर्ण	धणाहं, धणाहं, धणाणि
द्वी०—धर्ण	धणाहं, धणाहं, धणाणि

इसके आगे वीर शब्द के समान रूप होते हैं ।

इकारान्त दहि (दधि) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—दहि	दहीहैं, दहीहं, दहीणि
वी०—दहि	दहीहैं, दहीहं, दहीणि
त०—दहिणा	दहीहि
च०—दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
पं०—दहिणो, दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो	दहित्तो, दहीओ, दहीव, दहीहिन्तो, दहीमुन्तो
छ०—दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
स०—दहिम्मि	दहीसु, दहीसुं
सं०—हे दहि	हे दहीहं, दहीहं, दहीणि

वारि

एकवचन	बहुवचन
प०—वारि	वारीहैं, वारीहं, वारीणि
वी०—वारि	वारीहैं, वारीहं, वारीणि

इसके भागे इकारान्त पुलिग शब्दों के समान रूप होते हैं ।

सुरहि (सुरभि)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुरहि	सुरहीहैं, सुरहीहं, सुरहीणि
वी०—सुरहि	सुरहीहैं, सुरहीहं, सुरहीणि

इसके भागे पुलिग शब्दों के समान रूप होते हैं ।

उकारान्त महु (मधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—महु	महुहैं, महुहं, महुणि
वी०—महु	महुहैं, महुहं, महुणि
त०—महुणा	महुदि, महुहिं, महुहिं
च०—महुणो, महुस्स	महुण, महुणं
पं०—महुणो, महुओ, महुओ,	महुत्तो, महुओ, महुउ, महुहिन्तो,

महुउ, महुहिन्तो
छ०—महुणो, महुस्स
स०—महुस्मि
सं०—इ महु

महुसुन्तो
महुण, महुणं
महुस्, महुसुं
दे महुई, महुई, महुणि

जाणु (जानु)

एकवचन

बहुवचन

प०—जाणुं
वी०—जाणुं

जाणुई, जाणुई, जाणुणि
जाणुई, जाणुई, जाणुणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

अंसु (अशु) शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—अंसुं
वी०—अंसुं

अंसुई, अंसुई, अंसुणि
अंसुई, अंसुई, अंसुणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

स्वरान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द समाप्त।

व्यञ्जनान्त पुलिङ्ग शब्द

प्राकृत में व्यञ्जनान्त या ह्रस्वन्त शब्द नहीं होते। कुछ ह्रस्वन्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जनों का छोप होता है और कुछ ह्रस्वन्त शब्द अञ्जन्त—स्वरान्त के रूप में परिणत हो जाते हैं। अतः ह्रस्वन्त शब्दों के साधनार्थ स्वरान्त शब्दों के समान ही नियम समझने चाहिए।

अप्पाण, अत्ताण, अप्प और अत्त (आत्मन्)

एकवचन

बहुवचन

प०—अप्पाणो, अप्पा, अप्पो;
अत्ताणो, अत्ता, अत्तो

अप्पाणो, अप्पाणा, अप्पा;
अत्ताणो, अत्ताणा, अत्ता

वी०—अप्पाणं, अप्पं, अत्ताणं, अत्तं

अप्पाणो, अप्पाणे, अप्पाणा, अप्पे,
अप्पा; अत्ताणो, अत्ताणे, अत्ताणा,
अत्ते, अत्ता।

त०—अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणेहि-हि-हि, अप्पेहि-हि-हि;
 अप्पणा, अप्पणेण, अप्पणेणं, अत्ताणेहि-हि-हि, अत्तेहि-हि-हि
 अप्पेण, अप्पेणं; अत्तणा,
 अत्ताणेण, अत्ताणेणं, अत्तेण,
 अत्तेणं

च०—अप्पाणस्स, अप्पणो, अप्पस्स; अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पाण,
 अत्ताणस्स, अत्तणो, अत्तस्स अप्पाणं; अत्ताणाण, अत्ताणाणं, अत्ताण,
 अत्ताणं

पं०—अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणउ,
 अप्पाणाड, अप्पाणाहि, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणा-
 अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणा, सुन्तो, अप्पाणेहि, अप्पाणेहिन्तो,
 अप्पाणेसुन्तो,

अप्पाणो, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाड, अप्पाहि,
 अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पाहिन्तो, अप्पाहिन्तो, अप्पासुन्तो, अप्पेहि,
 अप्पा; अप्पेहिन्तो, अप्पेसुन्तो;
 अत्ताणत्तो, अत्ताणाओ, अत्ताणाउ,
 अत्ताणाड, अत्ताणाहि, अत्ताणाहि, अत्ताणाहिन्तो, अत्ताणासुन्तो,
 अत्ताणाहिन्तो, अत्ताणा अत्ताणेहि, अत्ताणेहिन्तो, अत्ताणेसुन्तो;
 अत्ताणो, अत्तणो, अत्ताओ, अत्तत्तो, अत्ताओ, अत्ताउ, अत्ताहि,
 अत्ताड, अत्ताहि, अत्ताहिन्तो, अत्ताहिन्तो, अत्तासुन्तो, अत्तेहि,
 अत्ता अत्तेहिन्तो, अत्तेसुन्तो

छ०—अप्पाणस्स, अप्पणो, अप्पस्स; अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पाण, अप्पाणं;
 अत्ताणस्स, अत्तणो, अत्तस्स अत्ताणाण, अत्ताणाणं, अत्ताण, अत्ताणं

स०—अप्पाणम्मि, अप्पाणे, अप्पम्मि, अप्पाणेसु, अप्पाणेसुं, अप्पेसु, अप्पेसुं;
 अप्पे, अत्ताणम्मि, अत्ताणे, अत्ताणेसु, अत्ताणेसुं, अत्तेसु, अत्तेसुं
 अत्तम्मि, अत्ते

सं०—हे अप्पाणो, अप्पाण, अप्पो, हे अप्पाणो, अप्पाणा, अप्पा;
 अप्पा, अप्प, हे अत्ताणो, हे अत्ताणो, अत्ताणा, अत्ता
 अत्ताण, अत्तो, अत्ता, अत्त

राय (राजन्) शब्द

पुनरुचन

- प०—राया
 वी०—रायं, राइणं
 त०—राइणा, राइणा, रायण, रायणं
 य०—रायणो, राइणो, रायस्स
 पं०—रायणो, राइणो, रायचो;
 रायोओ, रायाउ, रायाहि,
 रायाहिन्तो
 छ०—रायणो, राइणो, रायस्स
 स०—राये, रायस्मि, राइस्मि
 सं०—हे राया, राय

यदुचन

- राया, रायाणो, राइणो
 राय, राया, रायाणो, राइणो
 रायहि-हि-हिं; राइहि-हि-हिं
 राइण, राइयं, रायाण, रायाणं
 रायचो, राइचो, राइउ, राइओ, राइहिन्तो,
 राइमुन्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहिन्तो,
 रायामुन्तो
 राइण, राइयं, रायाण, रायाणं
 राइतु, राइसुं, रायसु, रायसुं
 हे राया, रायाणो, राइणो

महय, महवाण (मधवन्) शब्द

पुनरुचन

- प०—महया, महवो
 वी०—महयं
 त०—महयगा, महयेण, महयेगं
 य०—महयणो, महयस्स,
 पं०—महवाणो, महयचो, महयाओ,
 महवाउ, महयाहि, महवाहिन्तो,
 महया
 छ०—महयणो, महयस्स
 स०—महये, महयस्मि
 सं०—हे महवा, महवो

यदुचन

- महया
 महये, महया
 महयेहि-हि-हिं
 महवाण, महवाणं
 महयचो, महयाओ, महयाउ, महयाहि,
 महवाहिन्तो, महवामुन्तो, महयेहि,
 महयेमुन्तो, महयेमुन्तो

मुद्ध, मुद्धाण (मूर्धन्) शब्द

पुनरुचन

- प०—मुद्धा, मुद्धो
 वी०—मुद्धं

यदुचन

- मुद्धा
 मुद्धे, मुद्धा

त०—चन्दमेण, चन्दमेषं	चन्दमेहि, -हि-हिं
च०—चन्दमाय, चन्दमस्त	चन्दमाण, चन्दमाणं
प०—चन्दमत्तो, चन्दमात्रो, चन्दमाउ, चन्दमत्तो, चन्दमात्रो, चन्दमाउ, चन्दमाहि, चन्दमाहि, चन्दमाहिन्तो,	चन्दमाहिन्तो, चन्दमासुन्तो आदि
चन्दमा	
छ०—चन्दमस्त	चन्दमाण, चन्दमाणं
स०—चन्दमे, चन्दममि	चन्दमेसु, चन्दमेसुं
सं०—हे चन्दम, चन्दमा, चन्दमो	हे चन्दमा

जसो (यशस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—जसो	जसा
दी०—जसं	जसे, जसा

इससे भागे चन्दमो के समान रूप होते हैं ।

उसणो (उशनस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—उसणो	उसणा
दी०—उसणं	उसणे, उसणा

वेष रूप चन्दमो के समान होते हैं ।

वर्तमानकृदन्त पुल्लिङ्ग

हसन्तो, हसमाणो (हसत्, हसमाण) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—हसन्तो, हसमाण	हसन्ता, हसमाणा
दी०—हसन्तं, हसमाणं	हसन्ते, हसन्ता, हसमाणे, हसमाणः
त०—हसन्तेण, हसन्तेणं	हसन्तेहि-हि-हिं
हसमाणेण, हसमाणेणं	हसमाणेहि-हि-हिं
च०—हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताण, हसमाणाण, हसन्ताणं, हसमाणाणं

प०—हसन्तत्तो, हसन्ताओ, हसन्ताड०; हसमाणत्तो, हसमाणाओ, हसमाणाड०	हसन्तत्तो, हसन्ताहि, हसन्ताहिन्तो, हसन्तासुन्तो, हसमाणत्तो, हसमाणाहि, हसमाणाहिन्तो, हसमाणासुन्तो
छ०—हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताणं, हसन्ताण, हसमाणाण, हसमाणणं
स०—हसन्ते, हसन्तम्मि, हसमाणे, हसमाणम्मि	हसन्तेसु, हसन्तेसुं, हसमाणेसु, हसमाणेसुं
सं०—हे हसन्तो, हे हसमाणो	हे हसन्ता, हे हसमाणा

चतुप्रत्ययान्त पुल्लिङ्ग

भगवन्तो (भगवत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भगवन्तो	भगवन्ता
धी०—भगवन्तं	भगवन्ते, भगवन्ता
त०—भगवन्तेण, भगवन्तेणं	भगवन्तेहि-हिं-हिं
च०—भगवन्तस्स	भगवन्ताणं, भगवन्ताण
दं०—भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताड, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिन्तो	भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिन्तो, भगवन्तासुन्तो इत्यादि
छ०—भगवन्तस्स	भगवन्ताण, भगवन्ताणं
स०—भगवन्ते, भगवन्तम्मि	भगवन्तेसु, भगवन्तेसुं
सं०—हे भगवन्त, भगवन्तो	हे भगवन्ता

सोदिहो (शोभावत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सोदिहो	सोदिहो

दोष रूप भगवन्तो शब्द के समान होते हैं ।

इसी प्रकार धनवन्तो (धनवान्), पुण्यमन्तो (पुण्यवान्), भस्मिन्तो (भस्मिवान्), सिरीमन्तो (श्रीमान्), जडाणो (जटवान्), ज्योत्स्नावान्, दण्डुणो (दर्पवान्), सदाणो (शब्दवान्), कव्वइत्तो (काव्यवान्), माणइत्तो (मानवान्) आदि शब्दों के रूप चक्षते हैं ।

नेहालु (स्नेहवान्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—नेहालु	नेहालुओ, नेहालवो, नेहालउ, नेहालणो, नेहालू
दी०—नेहालुं	नेहालुणो, नेहालू

शेष रूप भाणु शब्द के समान होते हैं ।

इसी प्रकार दयालु (दयामान्), ईसालु (ईर्ष्यावान्), लज्जालु (लज्जामान्) प्रभृति शब्दों के रूप धनते हैं ।

तिरिच्छ, तिरिक्ख, तिरिअ, तिरिअंच (तिर्यश्च्)

एकवचन	बहुवचन
प०—तिरिच्छो, तिरिक्खो, तिरिओ तिरिअंचो	तिरिच्छा, तिरिक्खा, तिरिआ, तिरिअंवा, तिरिअंघो
दी०—तिरिच्छं, तिरिक्खं, तिरिअं, तिरिअंचं	तिरिच्छे, तिरिक्खे, तिरिक्खे, तिरिक्खा, तिरिअ, तिरिआ, तिरिअंघं, तिरिअंचा

इससे आगे सभी रूप देव शब्द के समान होते हैं ।

भिसओ (भिषज्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भिसओ	भिसआ

शेष शब्द देव के समान होते हैं ।

सरओ (शरद्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सरओ	सरआ

आगे के सभी रूप देवशब्द के समान होते हैं ।

हलन्त स्त्रीलिंग शब्द

कम्मा (कर्मन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—कम्मा	कम्माओ, कम्माउ, कम्मा
दी०—कम्मं	कम्माओ, कम्माउ, कम्मा

त०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्मादि-हि-हिं
च०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माग, कम्माख
पं०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए, कम्मत्तो, कम्माओ, कम्माउ, कम्माहिन्तो	कम्मत्तो, कम्माओ, कम्माउ, कम्माहिन्तो

छ०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माग, कम्माज
स०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्मापु, कम्मासुं
सं०—हे कम्मा	हे कम्माओ, कम्माउ, कम्मा

महिमा (महिमन्)

एकवचन

बहुवचन

प०—महिमा	महिमाओ, महिमाइ, महिमा
पी०—महिमं	महिमाओ, महिमाउ, महिमा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं ।

गरिमा (गरिमन्)

एकवचन

बहुवचन

प०—गरिमा	गरिमाओ, गरिमाइ, गरिमा
पी०—गरिमं	गरिमाओ, गरिमाउ, गरिमा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं ।

अधि (अर्निस्)

एकवचन

बहुवचन

प०—अधी	अधीओ, अधीइ, अधी
पी०—अधि	अधीओ, अधीइ, अधी
त०—अधीअ, अधीआ, अधीइ, अधीइ	अधीइ, अधीइ, अधीइ
पु०—अधीअ, अधीआ, अधीइ, अधीइ	अधीअ, अधीअ

- प०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचित्तो, अचीओ, अचीउ, अचीहिन्तो,
अचीए, अचित्तो, अचीओ, अचीसुन्तो
अचीउ, अचीहिन्तो
- छ०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीण, अचीणं
अचीए
- स०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीमु, अचीमुं
अचीए
- सं०—हे अचि, अची हे अचीओ, अचीउ, अची

चर्तमानकृदन्त स्त्रीलिङ्ग

हसई, हसन्ती, हसमाणी (हसन्ती)

एकवचन

बहुवचन

प०—हसई, हसईआ, हसन्तो,
हसन्तीआ, हसमाणी,
हसमाणीआ

हसईआ, हसईउ, हसईओ, हसई,
हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ,
हसन्ती, हसमाणीआ, हसमाणीउ,
हसमाणीओ, हसमाणी

धी०—हसई; हसन्ति; हसमाणि

हसईआ, हसईउ, हसईओ, हसई;
हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ,
हसन्ती; हसमाणीआ, हसमाणीउ,
हसमाणीओ, हसमाणी

त०—हसईअ, हसईआ, हसईइ,
हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ,
हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ,
हसमाणीआ, हसमाणीइ,
हसमाणीए

हसईदि-हि-दि; हसन्तीदि-हि-दि;
हसमाणीदि-हि-दि

प०—हसईअ, हसईआ, हसईइ,
हसइए; हसन्तीअ, हसन्तीआ,
हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ,
हसमाणीआ, हसमाणीइ,
हसमाणीए

हसईअ, हसईआ, हसन्तीअ, हसन्तीअं,
हसमाणीअ, हसमाणीअं

प०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईए, हसइत्तो, हसईओ, हसईउ, हसईहिन्तो,
हसइत्तो, हसईओ, हसईउ, हसईसुन्तो; हसन्तित्तो, हसन्तीओ, हस-
हसईहिन्तो, हसन्तीअ, हसन्तीआ, न्तीउ, हसन्तीहिन्तो, हसन्तीसुन्तो; हस-
हसन्तइ, हसन्तीए, हसन्तित्तो, माणित्तो, हसमाणीओ, हसमाणीउ, हस-
हसन्तीओ, हसन्तीउ, हसन्ती- माणीहिन्तो, हसमाणीसुन्तो
हिन्तो; हसमाणीअ, हसमाणीआ
हसमाणीइ, हसमाणीए, हसमा-
णित्तो, हसमाणीओ, हसमाणीउ,
हसमाणीहिन्तो

छ०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईण, हसईणं, हसन्तीण, हसन्तीणं;
हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसमाणीण, हसमाणीणं,
हसन्तीइ, हसन्तीए,
हसमाणीअ, हसमाणीआ,
हसमाणीइ, हसमाणीए

स०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईसु, हसईसुं, हसन्तीसु, हसन्तीसुं;
हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसमाणीसु, हसमाणीसुं, हसमाणीसुं
हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ,
हसमाणीआ, हसमाणीइ,
हसमाणीए

सं०—हे हसइ; हे हसन्ति; हे हसमाणि हे हसईआ, हसईउ, हसइओ, हसइ; हे
हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ, हसन्ती,
हे हसमाणिआ, हसमाणीउ, हसमाणीओ,
हसमाणी

भगवई (भगवती)

पङ्कजचन

यदुवचन

प०—भगवई, भगवईआ

भगवईआ, भगवईउ, भगवईओ, भगवई

शेष रूप छप्पी के समान होते हैं ।

सरिआ (सरित्)

पङ्कजचन

यदुवचन

प०—सरिआ

सरिआओ, सरिआउ, सरिआ

शेष शब्दरूप माला के समान होते हैं ।

तडिआ, तडि (तडिच्)

एकवचन

प०—तडिआ

बहुवचन

तडिआओ, तडिआउ, तडिआ

‘तडिआ’ शब्द के शेष रूप साछा के समान होते हैं ।

तडि

एकवचन

प०—तडी

यी०—तडि

त०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

च०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

प०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

छ०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

स०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

सं०—हे तडि, तडी

पादुवचन

तडीओ, तडीउ, तडी

तडीओ, तडीउ, तडी

तडीहि-हि-ति

तडीण, तडीण

तडीगो, तडीउ, तडीदिन्तो, तडीमुन्तो

तडीण, तडीण

तडीमु तडीसुं

तडीओ, तडीउ तडी

पाडिअआ, पडिअआ (प्रतिपद्)

एकवचन

प०—पाडिअआ

च०—पडिअआ

बहुवचन

पाडिअआओ पाडिअआउ, पाडिअआ

पडिअआओ पडिअआउ, पडिअआ

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

संपया (संपद्)

एकवचन

प०—संपया

बहुवचन

संपयाआ, संपयाउ, संपया

शेष रूप कम्मा के समान हैं

छुहा (छुघ्)

एकवचन

प०—छुहा

यी०—छुह

बहुवचन

छुहाओ, छुहाउ, छुहा

छुहाओ, छुहाउ, छुहा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

कउहा (ककुम्)

एकवचन

बहुवचन

प०—कउहा

कउहाओ, कउहाउ, कउहा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

गिरा [गिर्]

एकवचन

बहुवचन

प०—गिरा

गिराओ, गिराउ, गिरा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

गिरा के समान घुरा (घुर्) और पुरा (पुर्) शब्द के रूप होते हैं ।

दिसा [दिश्]

एकवचन

बहुवचन

प०—दिसा

दिसाओ, दिसाउ, दिसा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

अच्छरसा, अच्छरा (अप्परस्)

एकवचन

बहुवचन

प०—अच्छरसा

अच्छरसाओ, अच्छरसाउ, अच्छरसा,

बी०—अच्छरा

अच्छराओ, अच्छराउ, अच्छरा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं ।

तिरच्छी (तिरञ्ची)

एकवचन

बहुवचन

प०—तिरछी, तिरछीआ

तिरछीआ, तिरछीओ, तिरछीउ,
तिरछी

बी०—तिरचित्त

तिरछीआ, तिरछीओ, तिरछीउ,
तिरछी

अवशिष्ट रूप नइ शब्द के समान होते हैं ।

विज्जु (विद्युत्)

एकवचन

प०—विज्
पी०—विज्
त०—विज्भ, विज्भा, विज्भइ,
विज्भए

च०—विज्भ, विज्भा, विज्भइ,
विज्भए

पं०—विज्भ, विज्भा, विज्भइ,
विज्भए; विज्भो, विज्भो,
विज्भउ, विज्भइन्तो

छ०—विज्भ, विज्भा, विज्भइ,
विज्भए

स०—विज्भ, विज्भा, विज्भइ,
विज्भए

सं०—हे विज्, विज्

बहुवचन

विज्भो, विज्भउ, विज्भ
विज्भो, विज्भउ, विज्भ
विज्भइ-हि-हि

विज्भू, विज्भू

विज्भूतो, विज्भूभो, विज्भूउ, विज्भूइन्तो,
विज्भूसुन्तो

विज्भू, विज्भू

विज्भू, विज्भू

हे विज्भो, विज्भउ, विज्भू

व्यञ्जनान्त नपुंसकलिङ्गशब्द

दाम (दामन्)

एकवचन

प०—दामं
पी०—दामं
त०—दामेण, दामेणं
च०—दामाव, दामस्त
पं०—दामचो, दामाभो, दामाउ,
दामाहिन्तो, दामा
छ०—दामस्त
स०—दामे, दामस्मि
सं०—हे दाम

बहुवचन

दामाई, दामाई, दामाणि
दामाई, दामाई, दामाणि
दामेहि, दामेहि, दामेहि
दामाण, दामाणं
दामचो, दामाभो, दामाउ, दामाहि,
दामाहिं, दामाहिन्तो, दामासुन्तो
दामाण, दामाणं
दामेसु, दामेसु
हे दामाई, दामाई, दामाणि

नाम (नामन्)

एकवचन

प०—नामं

दी०—नामं

बहुवचन

नामाहं, नामाहं, नामाणि

नामाहं, नामाहं, नामाणि

इससे आगे के रूप दाम के समान होते हैं ।

पेम्म (प्रेमन्)

एकवचन

प०—पेम्मं

दी०—पेम्मं

बहुवचन

पेम्माहं, पेम्माहं, पेम्माणि

पेम्माहं, पेम्माहं, पेम्माणि

द्वेष शब्दरूप दाम के समान होते हैं ।

अह (अहन्)

एकवचन

प०—अहं

दी०—अहं

बहुवचन

अहाहं, अहाहं, अहाणि

अहाहं, अहाहं, अहाणि

अव्ययेष रूप दाम के समान हैं ।

सान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सेयं (श्रेयस्)

एकवचन

प०—सेयं

दी०—सेयं

बहुवचन

सेयाहं, सेयाहं, सेयाणि

सेयाहं, सेयाहं, सेयाणि

इससे आगे के रूप यन शब्द के समान होते हैं ।

ययं [ययस्]

एकवचन

प०—ययं

दी०—ययं

बहुवचन

ययाहं, ययाहं, ययाणि

ययाहं, ययाहं, ययाणि

इससे आगे के रूप यन शब्द के समान होते हैं ।

वर्तमान कृदन्त नपुंसक लिङ्ग—हसन्त, हसमाण

एकवचन	बहुवचन
प०—हसन्ते	हसन्ताइ, हसन्ताई, हसन्ताणि
हसमाणं	हसमाणाई, हसमाणाई, हसमाणाणि
वी०—हसन्तै	हसन्ताई, हसन्ताई, हसन्ताणि
हसमाणं	हसमाणाई, हसमाणाई, हसमाणाणि

अत्रलिष्ट रूप वण शब्द के समान होते हैं ।

हसी प्रकार घेरन्तं, घेरमाणं; धरन्तं, धरमाणं, सरन्तं, सरमाणं; मद्दन्तं, मद्दमाणं आदि शब्दों के रूप भी होते हैं ।

वत्प्रत्ययान्त नपुंसकलिङ्ग भगवन्तं (भगवत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भगवन्तं	भगवन्ताई, भगवन्ताई, भगवन्ताणि

शेष रूप वण के समान होते हैं ।

आउसो, आउ (आउय्)

एकवचन	बहुवचन
प०—आउसं	आउसाई, आउसाई, आउसाणि
वी०—आउसं	आउसाई, आउसाई, आउसाणि

शेष रूप वण शब्द के समान होते हैं ।

आउ

एकवचन	बहुवचन
प०—आउं	आऊइं, आऊइं, आऊणि
वी०—आउं	आऊइं, आऊइं, आऊणि
त०—आउणा	आऊदिन्हिं हिं
च०—आउणो, आउस्य	आऊय, आऊयं
प०—आउणो, आउणो, आऊओ, आऊउ, आऊदिन्तो	आऊणो, आऊओ, आऊउ, आऊदिन्तो, आऊमुन्तो

छ०—आउणो, आउस्स

आऊण, आऊणं

स०—आउम्मि

आऊसु, आऊसुं

सं—हे आउ

हे आऊहं, आऊहें, आऊणि

सर्वनाम शब्द -

सव्व (सर्व)

एकवचन

बहुवचन

प०—सव्वो

सव्वे

वी०—सव्वं

सव्वे, सव्वा

त०—सव्वेण, सव्वेणं

सव्वेहि-हिं-हिं

च०—सव्वाय, सव्वस्स

सव्वेसि, सव्वाण, सव्वाणं

प०—सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ,

सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि,

सव्वाहिन्तो, सव्वा

सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहिन्तो,

सव्वेसुन्तो

छ०—सव्वस्स

सव्वेसि, सव्वाण, सव्वाणं

स०—सव्वहिं, सव्वम्मि, सव्वस्सि

सव्वेसु, सव्वेसुं

सं—हे सव्व, हे सव्वो

हे सव्वे

सुव (स्व)

एकवचन

बहुवचन

प०—सुवो

सुवे

वी०—सुवं

सुवे, सुवा

त०—सुवेण, सुवेणं

सुवेहि-हिं-हिं

च०—सुवाय, सुवस्स

सुवेसि, सुवाण, सुवाणं

प०—सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहि,

सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहि, सुवा-

सुवाहिन्तो, सुवा

हिन्तो, सुवासुन्तो, सुवेहि, सुवेहिन्तो,

सुवेसुन्तो

छ०—सुवस्स

सुवेसि, सुवाण, सुवाणं

स०—सुवहिं, सुवम्मि, सुवस्सि, सुवत्थ

सुवेसु, सुवेसुं

सं—हे सुव, हे सुवो

हे सुवे

अन्न (अन्य)

एकवचन	बहुवचन
प०—अन्नो	अन्ने
वी०—अन्नं	अन्ने, अन्ना
त०—अन्नेण, अन्नेणं	अन्नेहि-हि-हिं
च०—अन्नाय, अन्नस्स	अन्नेसि, अन्नाण, अन्नाणं
प०—अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाड, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्ना	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाड, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्नेहिन्तो, अन्नासुत्तो, अन्नेसुन्तो
छ०—अन्नस्स	अन्नेसि, अन्नाण, अन्नाणं
स०—अन्नाहि, अन्नम्मि, अन्नासि, अन्नस्स	अन्नेसु, अन्नेसुं
सं०—हे अन्न, हे अन्नो	हे अन्ने

पुव्व, पुरिम (पूर्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—पुव्वो	पुव्वे
पुरिमो	पुरिमे
वी०—पुव्वं	पुव्वे, पुव्वा
पुरिमं	पुरिमे, पुरिमा
त०—पुव्वेण, पुव्वेणं	पुव्वेहि-हि-हिं
पुरिमेण, पुरिमेणं	पुरिमेहि-हि-हिं
च०—पुव्वाय, पुव्वस्स	पुव्वेसि, पुव्वाण, पुव्वाणं
पुरिमाय, पुरिमस्स	पुरिमसि, पुरिमाण, पुरिमाणं
पं०—पुव्वत्तो, पुव्वाओ, पुव्वाड, पुव्वाहि, पुव्वा	पुव्वत्तो, पुव्वाओ, पुव्वाड, पुव्वाहि, पुव्वाहिन्तो, पुव्वासुत्तो, पुव्वेहिन्तो,
पुरिमत्तो, पुरिमाओ, पुरिमाड, पुरिमाहि, पुरिमाहिन्तो, पुरिमा	पुरिमत्तो पुरिमत्तो, पुरिमाओ, पुरिमाड, पुरिमाहि, पुरिमाहिन्तो, पुरिमासुत्तो, पुरिमा

छ०—पुवस्स; पुरिमस्स

पुव्वेस्सि, पुव्वाण, पुव्वाणं

पुरिमेस्सि, पुरिमाण, पुरिमाणं

स०—पुव्वेहिं, पुव्वम्मि, पुव्वस्सि,

पुव्वेसु, पुव्वेसु, पुरिमेसु, पुरिमेसु*

पुव्वत्थ

पुरिमहिं, पुरिमम्मि, पुरिमस्सि,

पुरिमत्थ

सं०—हे पुव्वो, हे पुव्व

हे पुव्वे

" हे पुरिम, हे पुरिमो

हे पुरिमे

वीस (विस), उह, उभ (उभ), अवह, उवह, उभय (उभय), अण, अन्न (अन्न), अण्णार (अन्नतर), इअर (इतर), कयर, (कतर), कइम (कत्तम), नेम, नेम (नेम), सम, सिम, अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दक्षिण), उत्तर, अवर, अहर (अधर), स और अंतर शब्दों के 'रूप' सव्व के समान होते हैं ।

पुल्लिग ण, त (तत्)

एकवचन

बहुवचन

प०—सो, ण

ते, ने

दी०—रं, णं

ते, ता, ने, णा

त०—सिणा, तेण, तेणं, णिणा,

तेहिं-हिं-हिं; नेहिं-हिं-हिं*

णेण, नेणं

च०—तास, तस्स, से

तास, तेस्सि, सिं, ताण, ताणं

प०—तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ,

तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो,

ताहि, ताहिन्तो, ता

तामुन्तो, तेदि, तेदिसुन्तो, तेदिन्तो

छ०—तास, तस्स, से

तास, तेस्सि, सिं, ताण, ताणं

स०—ताहे, ताला, तइआ, तहिं

तेसु, तेसु*

तम्मि, तस्सि, तत्थ

ज (यद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—जो

जे

दी०—जं

जे, जा

त०—जिणा, जेण, जेणं

जेहिं-हिं-हिं*

ख०—जास, जस्य	जे, जान, जानं
प०—जम्हा, जत्तो, जाभो, जाउ, जादि, जाहिन्तो, जा	जत्तो, जाभो, जाउ, जादि, जादिन्तो, जायुन्तो, जेदि, जेदिन्तो, जेमुन्तो
छ०—जास, जस्य	जेसि, जाण, जायं
स०—जाहे, जाहा, जहा, जाहि, जमि, जसि, जस्य	जेषु, जेषुं

क (किम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—को	के
वी०—कं	के, का
त०—किना, केण, केणं	केदि हिं-दिं
च०—कास, कस्य	कास, केसि, काण, काणं
प०—कियो, कीस, कम्हा, कत्तो, काभो, काउ, कादि, काहिन्तो, का	कत्तो, काभो, काउ, कादि, कादिन्तो, कायुन्तो, केदि, केदिन्तो, केमुन्तो
छ०—कास, कस्य	कास, केसि, काण, काणं
स०—काहे, काहा, कहा, काहि, कमि, कसि, कस्य	केसु, केसुं

एत, एअ (एतद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—एसो, एम, इणं, इणमो	एते, एए
वी०—एतं, एअं	एते, एता, एम, एमा
त०—एतेणा, एतेण, एतेणं; एहणा, एएण, एएणं	एतेदि-दिं-दिं एएदि-दिं-दिं
च०—ते, एतस्स, एअस्स	सि, एतेसि, एताण, एताणं, एएमि, एआणं, एआणं
प०—एत्तो, एताहे, एतत्तो, एताभो, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एता; एमात्तो, एमाभो, एमाउ, एमाहि, एमाहिन्तो, एमा	एतत्तो, एताभो, एताउ, एतादि, एताहिन्तो, एतायुन्ता, एतेदि, एतेदिन्तो, एतेमुन्तो, एमात्तो, एमाभो, एमाउ, एमाहि, एमाहिन्तो, एमायुन्तो

छ०—से, एअस्स, एतस्स सि, एतेसि, एताण, एआणं, एएसि,
एआण, एआणं

स०—आयम्मि, इअम्मि, एउम्मि, एतेसु, एतेसुं, एएसु, एएसुं
एतस्मि, एअम्मि, एअस्सि, एस्थ

अम् (अदस्)

एकवचन

प०—अम्

वी०—अम्

त०—अमुणा

च०—अमुणो, अमुस्स

प०—अमुणो, अमुत्तो, अमूओ,
अमूउ, अमूहिन्तो

छ०—अमुणो, अमुस्स

स०—अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि

बहुवचन

अमुणो, अमणो, अमओ, अमउ, अम्

अम्, अमुणो

अमूहि-हि-हिं

अमूण, अमूणं

अमुओ, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो,
अमूसुन्तो

अमूण, अमूणं

अमूसु, अमूसुं

इम (इदम्)

एकवचन

प०—अयं, इमो

वी०—इणं, इमं, णं

त०—इमिणा, इमेण, इमेणं, णिणा,
णेण, णेणं

च०—से, इमस्स, अस्स

प०—इमत्तो, इमाओ, इमाउ,
इमाहि, इमाहिन्तो, इमा

छ०—से, इमस्स, अस्स

स०—अस्सि, इमम्मि, इमस्सि, इह

बहुवचन

इमे

इमे, इमा, ने, णा

इमेहि-हि-हिं; नेहि-हिं हिं; एहि-हिं-हिं

सि, इमेसि, इमाण, इमाणं

इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि,
इमाहिन्तो, इमासुन्तो

सि, इमेसि, इमाण, इमाणं

इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं

स्त्रीलिङ्ग सर्वनाम शब्द

सव्वा (सर्वा)

एकवचन

प०—सव्वा

वी०—सव्वं

बहुवचन

सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा

सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा

त०—सञ्वाअ, सञ्वाइ, सञ्वाए	सञ्वादि हिं हिं
च०—सञ्वाअ, सञ्वाइ, सञ्वाए	सञ्चेसि, सञ्वाण, सञ्वाणं
प०—सञ्वाअ, सञ्वाइ, सञ्वाए, सञ्चो, सञ्वाओ, सञ्वाउ, सञ्वाहिनतो	सञ्चो, सञ्वाओ, सञ्वाउ, सञ्वाहिनतो, सञ्वासुन्तो
छ०—सञ्वाअ, सञ्वाइ, सञ्वाए	सञ्चेसि, सञ्वाण, सञ्वाणं
स०—सञ्वाअ, सञ्वाइ, सञ्वाए	सञ्वासु, सञ्वासुं
सं०—हे सञ्चे, सञ्वा	हे सञ्वाओ, सञ्वाउ, सञ्वा

सुवा (स्वा)

एकवचन

बहुवचन

प०—सुवा	सुवाओ, सुवाउ, सुवा
वी०—सुव	सुवाओ, सुवाउ, सुवा
त०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए	सुवादि-हिं हिं
च०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए	सुचेसि, सुवाण, सुवाणं
प०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए, सुवो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहिनतो	सुवो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहिनतो, सुवासुन्तो,
छ०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए	सुचेसि, सुवाणं, सुवाणं
स०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए	सुवासु, सुवासुं
सं०—हे सुचे, सुवा	हे सुवाओ, सुवाउ, सुवा

अण्णा-अन्ना (अन्या)

एकवचन

बहुवचन

प०—अण्णा	अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णा
वी०—अण्ण	अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णा

येष रूप सञ्वा शब्द के समान होते हैं ।

दाहिणा, दक्खिणा (दक्षिणा)

एकवचन

बहुवचन

प०—दाहिणा, दक्खिणा	दाहिणाओ, दाहिणाउ, दाहिणा दक्खिणाओ, दक्खिणाउ, दक्खिणा
--------------------	---

वी०—दाहिणं,
दक्खिणं

दाहिणाओ, दाहिणाउ, दाहिणा
दक्खिणाओ, दक्खिणाउ, दक्खिणा

घोष रूप सन्धा शब्द के समान हैं ।

सा (तद्)

एकवचन

प०—सा, णा

वी०—सं, णं

त०—सीअ, सीआ, सीइ, सीए,

साअ, साइ, साए

णाअ, णाइ, णाए

च०—तिस्सा, सीसे, सीअ, सीआ

सीइ, सीइ, तास, से, ताअ

साइ, साए

प०—सीअ, साआ, सीइ, सीए;

तिच्चो, सीओ, सीउ, सीहिन्तो,

साअ, साइ, साए, सो, सम्हा,

ससो, सामो, साउ, साहिन्तो

छ०—तिस्सा, सीसे, सीअ, सीआ,

सीइ, सीए, तास, से, ताअ,

साइ, साए

स०—सीअ, सीआ, सीइ, सीए

साअ, साइ, साए

बहुवचन

सीओ, सीआ, सीउ, सी, साओ, साउ, ता

सीओ, सीआ, सीउ, सी, साओ, सा

सीहि हिं-हिं, साहि-हिं-हिं, णाहि-हिं-हिं

सिं, तेसिं, साण, साणं, सास

तिच्चो, सीओ, सीउ, सीहिन्तो, तिसुन्तो,

ससो, सामो, साउ, साहिन्तो, सासुन्तो

सिं, तेसिं, साण, साणं, सास

सीसु, सीसुं

सासु, सासुं

जा (यद्)

एकवचन

प०—जा

वी०—जं

त०—जीअ, जीआ, जीइ, जीए;

जाअ, जाइ, जाए

बहुवचन

जीओ, जीआ, जीउ, जी, जाओ,

जाउ, जा

जीओ, जीआ, जीउ, जी, जाओ,

जाउ, जा

जीहि, जीहिं, जीहिं;

जाहि-हिं-हिं

च०—जिस्सा, जीसे, जीअ, जीआ, जेसि, जाण, जाणं
जीइ, जीए; जाअ, जाइ, जाए

पं०—जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिनतो, जासुतो
जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिनतो;
जाअ, जाइ, जाए, जम्हा, जत्तो,
जाओ, जाउ, जाहिनतो

छ०—जिस्सा, जोसे, जीअ, जीए, जेसि, जाण, जाण
जाअ, जाए

स०—जीअ, जीए, जाअ, जाइ, जाए जीसु, जीसुं, जासु, जासुं

का (किम्)

पुरुषचन

बहुवचन

पं०—का
वी०—क
त०—कीअ, कीए, काअ, काए
च०—किस्सा, कीसे, कीअ,
कास, काए

कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का
कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का
कीहि हि हिं, काहि-हि हिं
केसि, काण, काणं, कास

पं०—कीअ, कीए, कित्तो, कीओ,
कीहिनतो, काअ, कत्तो, काओ,
काहिनतो

कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिनतो, कीसुतो,
कत्तो, काओ, काउ, काहि-वी, कासुतो

छ०—किस्सा, कीसे, कीए, कास,
काइ, काए

केसि, काण, काणं

स०—कीअ, कीआ, कीइ, काअ,
काइ, काए

कीसु, कीसुं; कासु, कासुं

एई, एआ (एत्तु)

पुरुषचन

बहुवचन

पं०—एसा, एस, हण, हणमो, एई,
एईआ

एईआ, एई, एआओ, एआ

वी०—एइं, एअं

एईआ, एईओ, एआओ, एआउ

त०—एईअ, एईआ, एईइ, एईए,
एआअ, एआए

एईहि दि-दिं, एआहि-दि-दिं

च०—एईअ, एआअ, एईइ, एआए	एईण, एईणं; सिं, एआण, एआणं
पं०—एईअ, एईआ, एईइ, एइत्तो, एईहिन्तो, एआअ, एअत्तो, एआहिन्तो	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो, एआसुन्तो
छ०—एईअ, एईआ, एईइ, एआअ, एआए	एईण, सिं, एआण, एआणं
स०—एईअ, एईआ, एआअ, एआइ	एईसु, एईसुं; एआसु, एआसुं

अमृ (अदस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अमृ	अमृओ, अमृउ, अमृ
वी०—अमृं	अमृओ, अमृउ, अमृ
त०—अमृअ, अमृआ, अमृइ, अमृए	अमृहि-हिं हिं
च०—अमृअ, अमृआ, अमृइ, अमृए	अमृण, अमृणं
पं०—अमृअ, अमृइ, अमृए, अमुत्तो, अमृओ	अमुत्तो, अमृओ, अमृउ, अमृहिन्तो, अमृसुन्तो
छ०—अमृअ, अमृआ, अमृइ, अमृए	अमृण, अमृणं
स०—अमृअ, अमृआ, अमृइ, अमृए	अमृसु, अमृसुं

इमी, इमा (इदस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—इमी, इमीअ, इमिआ, इमा,	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाउ, इमा
वी०—इमिं, इमं, इणं, णं	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाउ, णामो, णाउ
त०—इमीअ, इमीआ, इमाअ, इमाए, णाअ, णाये	इमीहि-हिं हिं; इमाहि-हिं-हिं, णाहि-हिं
च०—इमीअ, इमीइ, इमाअ, इमाइ, इमाए	इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पं०—इमीअ, इमीआ, इमीए, इमितो, इमाओ, इमाअ, इमाइ, इमाउ, इमत्तो, इमाहिन्तो	इमितो, इमीहिन्तो, इमीसुन्तो; इमत्तो, इमाओ, इमाहिन्तो, इमासुन्तो

छ०—इमीअ, इमीइ, इमीए,
इमाअ, इमाए

स०—इमीअ, इमीआ, इमीए,
इमाअ, इमाए

इमीण, इमीणं, इमेसि, इमाण, इमाणं

इमीसु, इमीसुं; इमासु, इमासुं

नपुंसकलिङ्ग सर्वनाम शब्द

सञ्च (सर्व)

एकवचन

बहुवचन

प०—सञ्च

सञ्चाइं, सञ्चाइँ, सञ्चाणि

पी०—सञ्चं

सञ्चाइँ, सञ्चाइँ, सञ्चाणि

त०—सञ्चेण, सञ्चेणे

सञ्चेहि-हि-हि

च०—सञ्चाय, सञ्चस्य

सञ्चेसि, सञ्चाण, सञ्चाणं

प० सञ्चतो, सञ्चाभो, सञ्चाउ,
सञ्चादि, सञ्चाहिस्तो, सञ्चा

सञ्चो, सञ्चाभो, सञ्चाउ, सञ्चादि,
सञ्चाहिस्तो, सञ्चासुन्तो, सञ्चेहिस्तो
सञ्चेसुन्त।

छ०—सञ्चाय, सञ्चस

सञ्चेसि, सञ्चाण, सञ्चाणं

स०—सञ्चहि, सञ्चसि, सञ्चन्मि
सञ्चएथ,

सञ्चेसु, सञ्चेसुं,

हे सञ्च

हे सञ्चाइ, सञ्चाइँ, सञ्चाणि

सुच (स्व)

एकवचन

बहुवचन

प०—सुचं

सुचाइँ, सुचाइँ, सुचाणि

पी०—सुचं

सुचाइँ, सुचाइँ, सुचाणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

पुञ्च, पुरिम (पूर्व)

एकवचन

बहुवचन

प०—पुञ्चं

पुञ्चाइँ, पुञ्चाइँ, पुञ्चाणि

पुरिमं

पुरिमाइँ, पुरिमाइँ, पुरिमाणि

पी०—पुञ्चं

पुञ्चाइँ, पुञ्चाइँ, पुञ्चाणि

पुरिमं

पुरिमाइँ, पुरिमाइँ, पुरिमाणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

त (तद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—ते, तं

ताहं, ताहँ, तानि, ताहँ, ताहँ, तानि

दी०—ते, तं

ताहं, ताहँ, तानि, ताहँ, ताहँ, तानि

येष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

ज (यद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—जं

जाहं, जाहँ, जानि

दी०—जं

जाहं, जाहँ, जानि

येष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

किं (किम्)

एकवचन

बहुवचन

प०—किं

काहं, काहँ, कानि

दी०—किं

काहं, काहँ, कानि

येष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

एअ (एतद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—एअं, एस, इणं, इणमो

एआहं, एआहँ, एआनि

दी०—एअं

एआहं, एआहँ, एआनि

येष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

अमु (अदस्)

एकवचन

बहुवचन

प०—अमुं

अमूहं, अमूहँ, अमूनि

दी०—अमुं

अमूहं, अमूहँ, अमूनि

येष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

इम (इदम्)

एकवचन

बहुवचन

प०—इदं, इणमो, इणं

इमाहं, इमाहँ, इमानि

दी०—इदं, इणमो, इणं

इमाहं, इमाहँ, इमानि

येष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

तीनों लिङ्गों में समान-युष्मद् शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—तुमं, तं, तुं, तुयं, तुह

मे, तुम्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुये, उये, तुम्हे,
तुज्जे, उम्हे . .

वी०—तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे,
तुवे

यो, तुज्झ, तुज्जे, तुम्हे, तुये, तुम्हे,
उम्हे, मे

त०—मे, दि, दे, ते, तह, तय, तुमं,
तय, तुमह, तुमय, तुमे, तुमाह

मे, तुम्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्जेहिं, उज्जेहिं,
उम्हेहिं, तुयेहिं, उयेहिं

च०, छ०—तह, ते, तुम्हं, तुह,
तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो,
तुमाह, दि, दे, इ, प, तुम्भ,
तुम्ह, तुज्झ, उज्झ, उम्ह,
उज्झ, उम्ह

ए, वो, मे, तुम्भ, तुम्ह, तुज्झ, तुम्भं,
तुम्हं, तुज्झं, तुम्भाण, तुम्हाण, तुज्झाण,
तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, उम्हाणं,
तुम्भाणं, तुम्हाणं आदि

पं०—तहत्तो, तहंओ, तहंउ, तहंदिन्तो,
तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवादि,
तुवादिन्तो; तुव, तुमत्तो;
तहत्तो, तुहाओ, तुहादि;
तुम्भत्तो, तुम्भादिन्तो; तुम्हत्तो,
तुम्हादिन्तो, तुज्झाउ,
तुज्झादि, तुम्ह, तुम्भ, तुम्ह,
तुज्झ

तुम्भत्तो, तुम्भादिन्तो, तुम्भासुन्तो;
तुम्हत्तो, तुम्हादिन्तो, तुम्हासुन्तो;
तुम्हेहि; तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झा-
दिन्तो, तुज्झासुन्तो; तुम्हत्तो, तुम्हाउ;
उम्हत्तो, उम्वासुन्तो; उम्हत्तो, उम्हाओ,
उम्हादिन्तो, उम्हासुन्तो

स०—तुमे, तुमय, तुमाह, तह, तय
तुम्मि, तुवम्मि, तुवस्सि, तुवत्थ,
तुमम्मि, तुमस्सि, तुमत्थ,
तहम्मि, तहस्सि, तहत्थ,
तुम्भम्मि, तुम्भस्सि, तुम्भत्थ,
तुम्हम्मि, तुम्हस्सि, तुम्हत्थ,
तुज्झम्मि, तुज्झस्सि, तुज्झत्थ

तुल्ल, तुल्लं, तुवेसु, तुवेसुं, तुमेसु, तुमेसं,
तुहेसु, तुहेसुं, तुम्भेसु, तुम्भेसुं, तुम्हेसु,
तुम्हेसुं, तुज्झसु, तुज्झेसुं, तुमसु, तुमसुं,
तुम्हसु, तुम्हसुं, तुज्झासु, तुज्झासुं,
तुम्हासु, तुम्हासुं

तीनों लिङ्गों में समान 'अस्मद्' शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—मि, अमि, अमिह, हं, अहं, अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, मे
अहयं

वी०—जे, णं, मि, अमि, अम्ह, अम्हे, अम्हो, अम्ह, जे
अम्ह, मं ममं, यिम, अहं

त०—मि, मे, ममं, ममप, ममाह, अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, जे
मइ, मप, जे

च०, छ०—मे, मह, मम, मद, मज्झं, जे, जो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे,
मज्झ, मम्हं, अम्ह, अम्हं अम्हो, अम्हाण, ममाण, ममाणं, महाण,
मज्झाणं, महारणं

पं०—मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो; ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममा-
ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, हिन्तो, ममासुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ,
ममाहिन्तो, ममा, महत्तो, अम्हाउ, अम्हाहि, अम्हाहिन्तो, अम्हा-
महाओ, महउ, महाहि, महा- सुन्तो, अम्हेहि, अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो
हिन्तो, महा, मज्झत्तो, मज्झाओ,
मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिन्तो,
मज्झा

स०—मि, मइ, ममाह, मप, मे, अम्हेसु अम्हेसुं, ममेसु, ममेसुं, महेसु,
अम्हमि, अम्हस्ति, अम्हत्थ, महेसुं; मज्झेसु, मज्झेसुं; ममसु, ममसुं;
मममि, ममस्ति, ममत्थ; महसु, महसुं, मज्झसु, मज्झसुं
महमि, महस्ति, महत्थ;
मज्झमि मज्झस्ति, मज्झत्थ

संख्यावाचक शब्द

संख्यावाचक शब्दों में अठारस (अष्टादश) संख्यावाचक शब्द तक पढ़ी विभक्ति के बहुवचन में णह और णहं प्रत्यय जुड़ते हैं।

पुंलिङ्ग इक, एक, एग, एअ (एक)

एकवचन

बहुवचन

प०—एगो, एओ, एक्को; एक्कलो

एगे, एप; एक्के; एक्कले

दी०—एगं, एअं; एअं, एक्कल्लं

एगे, एगा, एप, एआ; एक्के, एका;
एक्कल्ले, एक्कल्ला

शेष रूप सभ्य शब्द के समान होते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग एगा, एआ, एका, एकल्ला (एका)

एकवचन

बहुवचन

प०—एगा, एआ; एका, एल्ला

एगाओ, एगाउ, एगा; एआओ, एआउ,
एआ; एकाओ, एकाउ, एका;

दी०—एगं, एअं

एक्कल्लाओ, एक्कल्ला

एकल्लं, एक्कल्लं

एगाओ, एगाउ, एगा; एआओ, एआउ,
एआ; एकाओ, एकाउ, एका;

एक्कल्लाओ, एक्कल्ला

शेष रूप सभ्य शब्द के समान होते हैं ।

नपुंसकलिङ्ग—एग, एअ, एक, एकल्ल (एक)

एकवचन

बहुवचन

प०—एग

एगाइं, एगाइँ, एगाणि

एअं

एआइं, एआइँ, एआणि

एअं

एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि

एक्कल्लं

एक्काइल्लाइं, एक्काइल्लाइँ, एक्काणि

दी०—एगं

एगाइं, एगाइँ, एगाणि

एअं

एआइं, एआइँ, एआणि

एअं

एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि

एक्कल्लं

एक्काइल्लाइं, एक्काइल्लाइँ, एक्काणि

सं०—हे एग

हे एगाइं, एगाइँ, एगाणि

हे एअ

हे एआइं, एआइँ, एआणि

हे एक्क

हे एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि

हे एक्कल्ल

हे एक्काइल्लाइं, एक्काइल्लाइँ, एक्काणि

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं ।

उभ, उह (उभ)

बहुवचन

प०—उभ

दी०—उभे, उभा

त०—उभेहि, उभेहि, उभेहि

च०, छ०—उभण्ह, उभण्ह

पं०—उभचो उभाओ, उभाउ, उभाहि, उभाहिन्तो, उभासुन्तो, उभेहि ।

सं०—उभेसु, उभेसुं

दु, दो. वे (द्वि) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—दुवे, दोणिण, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

दी०—दुवे, दोणिण, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

त०—दोहि-हि-हि; वेहि-हि-हि

च०, छ०—दोण्ह, दोण्ह, दुण्ह, दुण्ह, वेण्ह, वेण्ह, विण्ह, विण्ह ।

पं०—दुचो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो; वेचो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो, वेसुन्तो

सं०—दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

ति (त्रि) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—तिण्णि

दी०—तिण्णि

त०—तीहि, तीहि, तीहि

च०, छ०—तीण्ह, तीण्ह

पं०—तिचो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो

सं०—तीसु, तीसुं

चउ (चतुर) —तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—चत्तारो, चउरो, चत्तारि

दी०—चत्तारो, चउरो, चत्तारि

त०—चऊहि, चऊहि, चऊहि

च०छ०—चउण्ह, चउण्हं

पं०—चउत्तो, चउओ, चउउ, चउहिन्तो, चउमुन्तो, चउओ, चउहिन्तो,
चउमुन्तो

स०—चउसु, चउसुं, चउसु, चउसुं

पंच (पञ्चन्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—पंच

वी०—पंच

त०—पंचहि-हिं-हिं

च०छ०—पंचण्ह, पंचण्हं

पं०—पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहि, पंचाहिन्तो, पंचामुन्तो पंचेहि

स०—पंचसुं, पंचसुं

छ (पप्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—छ

वी०—छ

त०—छहि, छहिं, छहिं

च०छ०—छण्ह, छण्हं

पं०—छओ, छउ, छहिन्तो, छमुन्तो

स०—छसु, छसुं

सत्त (सत्तन्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—सत्त

वी०—सत्त

त०—सत्तहि हिं-हिं

च०छ०—सत्तण्ह, सत्तण्हं

पं०—सत्तओ, सत्तउ, सत्तहिन्तो, सत्तमुन्तो

स०—सत्तसु, सत्तसुं

अट्ट (अष्टन्) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—अट्ट

बी०—अट्ट

त०—अट्टहि-हिं हिं

च०ल्ल०—अट्टण्ह, अट्टण्हं

पं०—अट्ठाओ, अट्ठाउ, अट्ठाहिनत्तो, अट्ठासुन्तो

स०—अट्ठसु, अट्ठसुं

णव, नव (नवन्) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—णव

बी०—णव

त०—णवहि हिं हिं

च०ल्ल०—णवण्ह, णवण्हं

पं०—णवाओ, णवाउ, णवाहिनत्तो, णवासुन्तो

स०—णवसु, णवसुं

दह, दस (दशन्) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—दह, दस

बी०—दह, दस

त०—दहहि हिं-हिं, दसहि हिं-हिं

च०ल्ल०—दहण्ह, दहण्हं, दसण्ह, दसण्हं

पं०—दहाओ, दहाउ, दहाहिनत्तो, दहासुन्तो, दसाओ, दसाउ, दसाहिनत्तो, दसासुन्तो

स०—दहसु, दहसुं, दससु, दससुं

तेरह (त्रयोदश) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—तेरह

बी०—तेरह

त०—तेरहहि-हिं-हिं

च०छ०—तेरहण्ह, तेरहण्ह

पं०—तेरहओ, तेरहउ, तेरहहिन्तो, तेरहमुन्तो

स०—तेरहसु, तेरहसु

इसी प्रकार चउहह, पण्णहह, सोळ्हह, छहह, सत्तरह और अट्ठारह शब्दों के रूप होते हैं ।

कह (कति) तीनों लिंगों में समान

बहुवचन

प०—कह

वी०—कह

त०—कहिं-हिं-हिं

च०छ०—कहण्ह, कहण्ह

पं०—कहत्तो, कहओ, कहउ, कहहिन्तो, कहसुन्तो

स०—कहसु, कहसु

वीसा (विंशति) तीनों लिंगों में

एकवचन

प०—वीसा

वी०—वीसं

त०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए

च०छ०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए

पं०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए,

वीसत्तो, वीसाओ, वीसाउ,

वीसाहिन्तो

स०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए

सं०—दे वीसा

बहुवचन

वीसाओ, वीसाउ, वीसा

वीसाओ, वीसाउ, वीसा

वीसाहिं-हिं-हिं

वीसाण, वीसाणं,

वीसत्तो, वीसाओ, वीसाउ, वीसाहिन्तो,

वीसामुन्तो

वीसामु, वीसामुं

दे वीसाओ, वीसाउ, वीसा

इसी प्रकार एगुणवीसा, एगवीसा, दुइवीसा, तेवीसा, चउवीसा, पण्णवीसा, छव्वीसा, सत्तवीसा, अट्ठावीसा, एगुणत्तीसा, वीसा, एगवीसा, दुत्तीसा, दोत्तीसा, तेवीसा, चउत्तीसा, पण्णत्तीसा, छत्तीसा, सत्तत्तीसा, अट्ठत्तीसा, एगुणवच्चाळीसा, चच्चाळीसा, एगवच्चाळीसा, धायाळा, तेआलीसा, चउआलीसा, पण्णवच्चाळीसा, छवत्ताळीसा, सत्तवच्चाळीसा, अट्ठाआलीसा, एगुणवन्ना, पन्नासा, एगावन्ना, दोवन्ना, तेवन्ना, चउवन्ना, पणवन्ना, छवन्ना, सत्तावन्ना, अट्ठावन्ना एवं अट्ठवन्ना शब्दों के रूप होते हैं ।

सट्टि (पट्टि) तीनों लिंगों में

एकवचन

बहुवचन

प०—सट्ठी

सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठी

वी०—सट्ठि

सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठी

त०—सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए

सट्ठीहि हिं हिं

च०—सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए

सट्ठीण, सट्ठीण

सट्ठीए

पं०—सट्ठिचो, सट्ठीअ, सट्ठीआ,

सट्ठिचो, सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठीहिन्तो,

सट्ठीइ, सट्ठीए

सट्ठीसुन्वो

स०—सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए

सट्ठीयु, सट्ठीयुं

सं०—हे हे सट्ठि, सट्ठी

हे सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठी

इसी प्रकार एगसट्ठि, दोसट्ठि, तेसट्ठि, चउसट्ठि, पणसट्ठि, छसट्ठि, सत्तसट्ठि, अडसट्ठि, पग्गसत्तरि, सत्तरि, सवरी, एगसत्तरि, दोसत्तरि, तेपत्तरि, तेउसत्तरि, चउसत्तरि, चउसयरी, पणसत्तरि, छसयरी, सत्तसयरी, अडसयरी, पग्गसासीइ, असीइ, एगासीइ, दोसीइ, तेसीइ, चउरासीइ, पणसीइ, ङासीइ, सचासीइ, सगसीइ, अठासीइ, पग्गणउइ, णवइ, एग्गणवइ, दोणवइ, तेणवइ, चउणवइ, पचणवइ, छणवइ, सत्ताणवइ, अट्ठाणवइ और नवणवइ शब्दों के रूप होते हैं।

नपुंसकलिंग सय (शत)

एकवचन

बहुवचन

प०—सयं

सयाइ, सयाहँ, सयाणि

वी०—सयं

सयाइ, सयाहँ, सयाणि

सं०—हे सय

हे सयाइ, सयाहँ, सयाणि

येष शब्द अक्रान्त पुलिग शब्दों के समान होते हैं।

दुसर, तिसण, (त्रिशत), येनयाइ-येस (द्विशत), तिणिण सयाइ-पणमै (त्रिशत), चत्तारिसयाइ-वारमै (चतुरश्र), सइसस (सदस), दइमदसस (दश-सदस), सयुअ (अयुत), एअ (एश), दइएअ (दशएश), पयुअ (प्रयुत), कोटि (कोटि), कोडाकोटि (कोटाकोटि) आदि शब्दों के रूप भी इन्हीं शब्दों के समान होते हैं। सय आदि शब्दों के रूप केवल नपुंसकलिंग में होते हैं, अन्य लिंगों में नहीं।

सातवाँ अध्याय

अव्यय और निपात

ऐसे शब्द, जिनके रूप में कोई विकार—परिवर्तन उत्पन्न न हो और जो सदा एकते—सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिङ्गों में एक समान रहें, अव्यय कहलाते हैं।

अव्यय शब्द का शाब्दिक अर्थ है कि लिङ्ग, विभक्ति और वचन के अनुसार जिनके रूपों में व्यय—घटती-बढ़ती न हो; वह अव्यय है।

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग (२) क्रिया विशेषण (३) समुच्चयादि बोधक (Conjunctions), (४) मनोविकारशब्द (Interjections) और (५) अतिरिक्त अव्यय।

उपसर्ग (उपसर्ग)

जो अव्यय क्रिया के पूर्व आते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उपसर्ग लगाने से क्रिया के अर्थ में परिवर्तन या वैशिष्ट्य आ जाता है। उपसर्ग की स्थिति तीन प्रकार की होती है।

(१) कोई उपसर्ग धातु के मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है।
(२) कोई धात्वर्थ का ही अनुवर्तन करता है और (३) कोई विशेषण होकर उसी धात्वर्थ को और भी स्पष्ट कर देता है।^१ यथा—हरइ—के जाता है; अवहरइ (अप-हरति)—चुराता है, अगुहरइ (अनुहरति)—नकल करता है, परिहरइ (परिहरति)—छोड़ता है, आहरइ (आहरति)—लाता है, पहरइ (प्रहरति)—मारता है, विहरइ (विहरति)—विहार करता है, उग्रहरइ (उग्रहरति)—उपहार देता है^२, आवि।

१. स्वरानिनातमव्ययम्—स्वरानि धोर निपात की प्रत्यय सत्ता है।—१-१-२७ पा०
सदृश त्रिषु लिङ्गेषु सर्वाणु च विभक्तिषु।

वचनेषु च सर्वेषु यन् व्येति तदव्ययम् ॥—सि० कौ० अव्यय प्रकरण

२. धात्वर्थं बाधते कश्चिदधिकतमनुवर्तते।

विशिनाष्ट समेवाभ्यंमुपसर्गगतिभिर्वा ॥

३. उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।

प्रहाराऽऽहार-संहार-विहार-परिहारवत् ॥—स्नातकसंस्कृतव्याकरणम् पृ० १२१

संस्कृत में २२ उपसर्ग हैं, पर प्राकृत में २० उपसर्ग ही मिलते हैं; निस् का अन्तर्भाँर निर् में और दुस् का अन्तर्भाँर दुर में हो जाता है। प, परा, ओ-अ, व, से, अणु, ओ-अव, ओ-नि, दु, अहि, वि, अहि, सु, उ, अइ, णि नि, पडि-पति, परि-पडि, इ पि-वि अवि, ऊ-ओ-उव और आ ये बीस उपसर्ग हैं। संस्कृत में भी निस् का प्रयोग निर् के अन्तर्गत और दुस् प्रयोग दुर के अन्तर्गत पाया जाता है।

प < प्र—प्रकर्ष—अधिकता बतलाने के लिए—परुवेइ (परुपयति), पभावेइ (प्रभापते)

परा < परा—विपरीत अर्थ बतलाने के लिए—पराघाओ (पराघातः); पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अय < अप—दूर अर्थ बतलाने के लिए—ओसरइ, अवसरइ (अपसरति) अवहरइ (अपहरति) दूर के जाता है; ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं < सम्—अच्छी तरह—संखिबइ (संक्षिपति), संखिचं (संक्षिप्तम्)।

अणु, अनु < अनु—पीछे या साथ—रामे अणुगमइ लखणो; अणुजाणइ (अनु-जानाति), अनुमई (अनुमतिः)।

ओ, अव < अव-नीचे, दूर, अभाव—ओभरइ (अवतरति); ओभारो (अवतारः) अवसाणो (अवमानः); ओभासो, अवयासो (अवकाशः)।

ओ, नि, नी < निर्—निषेध, बाहर, दूर—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माद्यम्) निर्गमो (निर्गतः), नीमहो (निस्तहः), रामो तं गिराकरइ।

दु, दू < दुर—कठिन, दुरा—दुन्नयो (दुर्नयः), दूदवो (दुर्भगः)।

अहि, अभि < अभि—ओर—अहिगमयं (अभिगमनम्)—किसी ओर जाना, अभिहणइ (अभिहन्ति), अहिप्पाओ (अभिप्रायः)।

वि < वि—अलग होना, बिना—विडुवइ (विडुवति), विणओ (विनयः), वेण-इआ (वैनयिकाः)।

अहि, अधि < अधि—ऊपर—अहिरोइइ (अधिरोहति)—ऊपर चढ़ता है, अज्झायो (अध्यायः), अहीइ (अधीते)।

सु—सू < सु—अच्छा सहज—सुअरं (सुकरम्), सूदवो (सुभगः)।

उ < उरु—ऊपर, ऊँचा ओष्ठ—उगच्छइ (उद्गच्छति), उगमओ (उद्गतः), उत्पत्तिआ (औत्पत्तिकी)।

अइ, अति < अति—बाहुल्य या उल्लंघन—अईओ (अतीतः), वइकंतो (व्यति-क्रान्तः), अतिसओ (अतिशयः), अचन्तं (अत्यन्तम्)।

णि, नि < नि—अन्दर, नीचे—दुष्टे नियमइ (दुष्टान् नियमति)—दुष्टों को अधीन या नीचे करता है; निचेसो (निचेत्), सन्निचेसो (सन्निचेत्); निचिसइ (निचिगते)।

पडि—पति परि < प्रति—ओर, उल्टा—परिआरो (प्रतिकारः) पडिमा (प्रतिमा), पतिट्टा (प्रतिष्ठा), परिट्टा (प्रतिष्ठा)।

परि, पडि < परि—चारों ओर—मुजो पुइजो परिगमइ—सूर्य पृथ्वी के चारों घूमता है। परिवुडो (परिवृत्तः), परिहो (परिघः)।

इ, पि, वि, अवि < अपि—ओ, निकट—देवदत्तो वि णागओ—देवदत्त भी नहीं आया। किमवि (किमपि), कोइ, कोवि (कोअपि)।

ऊ, ओ उव < उप—निकट, उवासणा (उपासना)—निकट बैठना, प्रार्थना, ऊकायो, ओऊकायो, उवऊकायो (उपाध्याय),

आ < आइ—तऊ—दिओओ आससुइ पुइओ पइ आसि—दिओइ 'समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का राजा था, आवासो (आवास), आयन्तो (आवाप्त)।

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण अव्यय प्राकृत में संस्कृत के समान कई प्रकार के होते हैं। क्रिया-विशेषणों की संख्या प्राकृत में संस्कृत से भी अधिक है। नीचे अकारादि क्रम से प्रमुख क्रियाविशेषणों की शालिका दी जाती है।

अइ < अत्ति—अतिशय,

अइ < अयि—संभावना

अईव < अतीव—विशेष, अधिकता,

अओ < अत—इसलिए

बहुत

अगओ < अगनः—आगे

अगो < अगे—पहले

अज्ज < अत्त—आज

अण (नञ्) < अन—निषेधार्थक

अणमणं (अन्योन्यम्) <

अणगहा < अन्यथा—विपरीत

अन्यो-यम्—आपस में

अणंतरं < अनन्तरम्—परचाह, बिना

अत्यं < अस्तम्—अदर्शन, अस्त-छिपना

अत्थि < अस्ति—सचासूचक, अस्तित्वसूचक

अत्थ < अस्तु—विधित्वाचक, निषेधसूचक

अंतो < अन्तर—भीतर

अतरं < अन्तरम्—अन्तर

अप्पणो < आप्तमनः—अपना

अपरज्जु < अपरेतुः—दूसरे दिन

अप्येव < अप्येवम्—संज्ञाय

अभिकरणं < अभिकरणम्—निरन्तर,
बारम्बार

अभितो < अभितः—चारों ओर

अलं < अलम्—बस, पयाँस

अल्लहि < अल्लहि—निवारण, निषेध

अवस्सं < अवश्यम्—अवरय

अवरिं < उपरि—ऊपर

असई < असकृत्—अनेक बार

अहत्ता < अधस्तात्—नीचे

अह्व, अह्वा < अधवा—पक्षान्तर

अह्वा < यथा—जिस प्रकार

अहे < अध.—नीचे

आविं < आवि.—प्रकट

आहृच्च < आहृत्प—बलात्कार

इ < इ—पारपूर्ति के लिए

इओ < इतः—यहाँ से, वाक्यारम्भ में

इकसरिअं < एकस्मत्—सम्प्रति

इत्थत्तं < इत्थत्तम्—इसप्रकार

इच्चत्थो < इत्थर्थः—इसके निमित्त

इयाणि < इदानीम्—इस समय

इर < किल—निरवय

इह < इह—यहाँ

इहं < कथक्—सत्य

इहयं < कथकक्—सत्य

इहरा < इतरथा—अन्यथा

इं < विम्—प्रत्यय, गहाँ

ईसिं < ईपत्—धोवा

ईसि < ईपत्—धोवा

उत्तरओं < उत्तरतः—उत्तासे

उच्चथ < उच्चैः—ऊँचे

उत्तरसुवे < उत्तररवः—परचात्

उत्पि < उपरि—ऊपर

उवरिं < उपरि—ऊपर

उवरि < उपरि—ऊपर

एअं < एतत्—यह

एकइआ < एकदा—एक समय

एकसरिअं < एकस्मत्—भटिति,
सम्प्रति

एकया < " "

एकसि, इकसि < एकदा—एक समय

एकसिअं, इकसिअं < एकदा—
एक समय

एगइया, एगया < एकदा—एक समय

एगयओ < एकैकतः—एक-एक

एगंततो < एकान्तत—एक ओर

एगज्झं < एकैक्यम्—एक प्रकार

एतावता, एयावया < एतावता—इतना

एत्थं, एत्थ < अथ—यहाँ

एव < एव—ही

एयं < एयम्—इस तरह

एवमेव < एवमेव—इस तरह

फओ < उतः—कहाँ से

फरथइ < कुप्रथित—कड़ों

फहं < कस्यम्—किस

फह, फहं < कथम्—कैसे

फहि, फहिं < इय—कहाँ

फाउओ < काणतः—समय से

काहे < वादि—क, किय समय
किणा, किण्णा, किणो < किन्नु—प्रश्न
केवच्चिरं, केवच्चिरेण < किय-
चिरम्, कियच्चिरेण—जितनी देर से

खलु, खु < खलु—निरवय
जइ < यदि—जो
जत्थ < यत्थ—जहाँ
जहेय < यथैय—जिस प्रकार से
जाव < यावत्—जतक
जह-तहा < यथा-तथा—जैसे-तैसे
जेण < येन—जिससे
भगिति—सम्प्रति
ण < न—निषेधार्थक
णं < नं—याम्बालंकार
णघर—परन्तु, केवल
णवरं < नवरम्—निषेधता
णूण, णूर्ण < नूनम्—निश्चय, तर्क
तं < तत्—वाच्यार्थ, इत्थलिप्
तए < तदा—तब

तत्थ < तत्र—वहाँ
तह, तहाँ < तथा—उस तरह
तहि, तहिं < तत्र—वहाँ
तिरो < तिरः—छिपाना
तु < तु—किन्तु
दर < दर—आवा, बोझा, अल्प
दुद्दु < दुड्डु—दुष्ट, खराब
धुवं < ध्रुवं—निश्चय
पच्चुअ < प्रत्युत—उल्टा
पच्छा < पश्चात्—पीछे
परजु < परेषु—दूसरे दिन, कल

किंचि < किञ्चित्—अल्प, ईषत्, थोड़ा
किर, किल < किल—निरवय, सचमुच
केवलं < केवलम्—सिर्फ

चिअ, चेअ < चैय—और भी
जओ < यतः—क्योंकि
जह, जहाँ < यथा—जैसे
जं < यत्—जो, क्योंकि
जह, जहाँ < यथा-यथा—जैसे-जैसे
जाव < यावत्—जतक
जे < ये—पावपाक
भत्ति < भट्ति—जल्दी
णइ—अवधारण
णमो < नमः—नमस्कार
णवरि—अनन्तर
णाणा < नाना—अनेक
णो < नो—निषेध
तंजहा < तद्यथा—उदाहरणार्थ, जैसे
तओ, तनो, तत्तो < ततः—पुनः इसके
पश्चात्

तप्पमिइं < तत्प्रभृति—इसको आदि कर
तहेव < तथैव—उसी तरह
तिरियं < तिर्यक्—याँका या तिरछा
तीअं < भतीतम्—भतीत
थु < थूय—तिरस्कार
दिवारत्तं < दिवारात्रम्—रात-दिन
दुहओ, दुहा < द्विधा—दो प्रकार
णिच्चं, निच्चं < नित्यम्—नित्य
पगे < प्रगे—प्रातःकाल में
पडिरुव्यं < पतिरूपम्—समान
परं < परम्—परन्तु

समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य में मिलाता है, उसे समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके सात भेद हैं।

- (१) संयोजक—य, अह, अहो, (अथ), उद, उ (तु), किंच आदि।
- (२) वियोजक—था, किंवा, तु, ऊ, क्रि तु आदि।
- (३) संकेतार्थ—जह, चेअ, णोचेअ, (नोचेत्), जहपि, सहावि, जदि, इत्यादि।
- (४) कारणवाचक—दि, तअ, तेण इत्यादि।
- (५) प्रत्यवाचक—अहो, उद, किं, किमुत्त, तणु, णु, क्रिणुत्त, इत्यादि।
- (६) कोलत्राचक—जाअ, ताअ, जदा, तदा, वदा इत्यादि।
- (७) विधि अथवा निषेधार्थक—अहु, अह, ई, आअ, अदा, इत्यादि।

अह फारस और 'इति' कार्यान्त का सूचक है। 'य' शब्द और अर्थ का सूचक है। जहाँ हिन्दी में 'और' दो जोड़े हुए शब्दों के बीच में आता है, वहाँ प्राकृत में 'य' शब्द दोनों के उपरान्त आता है। यथा—रामो लक्खणो य सीआए सह गमीईअ।

मनोविकारसूचक अव्यय

(१) अव्यो—दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आश्चर्य, भय, रोद, विषाद और पश्चात्ताप अर्थों में 'अव्यो' का प्रयोग होता है। अव्यो तस्मेसि—रोद है कि तुम उदास हो। अव्यो तुज्जेरिसो माणो—प्रणययुक्त प्रणयी में—तुम्हारा ऐसा मान ?—इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते हैं। आनन्द अर्थ में—अव्यो पिअस्स समओ—यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का समय है। आश्चर्य अर्थ में—अव्यो सो एह—मेरा प्रियतम यह आ रहा है। भय अर्थ में—रुसणो अव्यो—भय है कि वह थोड़े अपराध पर ही रुठ जानेवाला है। रोद और विषाद अर्थ में—अव्यो कटु—मेरे खिन्न और विषम हैं। पश्चात्ताप अर्थ में—अव्यो कि एसो सहि यए वरिओ—सच्ची ! मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे यरा क्यों ?

(२) आ, हुम् क्रोध सूचक; आ कहमिदं संजाअं—अरे ! यह कैसे हो गया—क्रोध दितलाया गया है। हं ते कइवरा विवरीया वोहा—क्रोध सहित—रोद है कि कविवर विपरीत बोध बाधे हैं।

(३) विषाद, विरूप, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों में 'हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विषाद अर्थ में—हन्दि विदेसो—दुःख है कि हमारे लिए यह विदेश है। विरूप अर्थ में—जीवइ हन्दि पिआ—पता नहीं मेरी प्रियतमा

जीती है अथवा नहीं। पश्चात्ताप अर्थ में—हृन्दि किं पिआ मुका ? क्या हमने त्राह दुःख का बिना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ? निश्चय अर्थ में—हृन्दि मरण—मरना निश्चित है। सत्य अर्थ में—हृन्दि जमो गिम्हो—मौल्य पमराज है, यह बात सच है। शोकसूचक अर्थ में—हा रोगेण पीडितास्मि—रोग से पीड़ित हैं।

(४) भय, वारण और विषाद अर्थ में 'वेण्वे' का प्रयोग होता है। यथा—समुहोद्रीअस्मि भयरे वेण्वे चि भणेइ महिउचिणिरी—समुहोत्थिते भयरे वेण्वे इति भणति महिकामुक्तेष्वी।

(५) निश्चय, वितर्क, संभावना और विस्मय अर्थों में 'हु' और 'खु' का प्रयोग किया जाता है। निश्चय अर्थ में—सो हु अन्नरओ—यह निश्चित है कि यह दूसरी स्त्री में रम गया है। वितर्क और संभावनों अर्थों में—तस्स हु जुग्गा सि सा खु न त—मैं ऐसा अनुमान करता हूँ और यह सभय भो है कि यह दूसरी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके प्रियतम के योग्य नहीं हो। विस्मय अर्थ में—एसो खु तुउम्क रमणो—आश्चर्य है कि यह तुम्हारा प्रिय है।

(६) गद्दी, आशेष, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है। गद्दी अर्थ में—तुउम्क ऊ रमणे—तुम्हारा निन्दित रमण। आशेष अर्थ में—ऊ कि मए भणिअं—अरे मैंने क्या कह डाला। विस्मय अर्थ में—ऊ अक्षरा मह सही—अहो, मेरी सखी अप्सरा है। सूचन अर्थ में—ऊ इअ हसेइ लोओ—तुम्हारे प्रियतम को दोष दे-देकर सखियाँ हँसती हैं।

(७) आश्चर्य अर्थ में अम्मो अव्यय का प्रयोग होता है। यथा—स अम्मो पत्तो खु अएणो—यह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया; आश्चर्य है।

(८) रतिकलह अर्थ में रे, अरे और हरे अव्यय का प्रयोग होता है। यथा—अरे मए समं मा करेसु उवहामं—रतिकल में कगडा हो जाने पर जायिका कइती है—अरे मेरे साथ हँसी मत करो। अरे वहुवह—अरे बहुतों के प्रिय।

(९) हद्दी अव्यय निवेद अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा—

हद्दी, इअ व्व चोरीहि उह्विअं।

(१०) अम्हो आश्चर्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा—अम्हो कहं भाइ—आश्चर्य कथं आसि।

अतिरिक्त अव्यय

निपात

सद्वर्तों और कृत् प्रत्ययों के संयोग से भी कुछ अव्यय बनते हैं। तथा इआणि, इआणि (इदानीम्), इअहरा (इतरथा), एण्हि, एत्ताहे (इदानीम्) कदि (कुत्र), कुओ कुओ (कुतः), जस्थ (यत्र), जहा, जहा, जहि (यथा), सव्वाओ, (सर्वतः); सहामउत्तो (सहस्रवृत्तः), एकहा आदि अव्यय के समान ही प्रयुक्त होते हैं।

प्राकृत में निपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जो पद व्याकरण के नियमों के विपरीत सिद्ध होते हैं, वे निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जनभाषा होने से प्राकृत में ऐसे सहस्रों शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्तिर्था सिद्ध नहीं की जा सकती हैं। ऐसे शब्द निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जितने देशी शब्द हैं, वे प्रायः निपातन से सिद्ध माने गये हैं।

अ

अउभक्तहरो—रहस्यभेदी

अकंतो—बुद्धः

अग्निआयो—इन्द्रगोपः

अंनिअं—आलिङ्गितम्

अच्छिबिअच्छी—परस्परप्राप्तिः

अच्छुद्धिसिरी—मनोरथाधिकफलप्राप्तिः

अजमो—कलः

अहुअणा—पुंछली

अणरहू—नवशू

अणुमिअओ—प्रसक्तः, परिजागरित

अणुसूआ—आमत्रप्रमत्ता

अणगइओ—सर्वार्थप्रस

अत्तिहरी—कृती

अन्तरिज्जं—रक्षणा, कविक्षम्

अपिट्टं—पुनरुत्तम्

अप्पुण्णं—पूर्णम्

अमओ—अमुरः

अम्हत्तो—प्रमृष्टः

अत्तेप्पो—अपराधः

अग्गहिओ—[परिवितः, विप्रगृहीतः]

अग्गुच्छं—प्रसीतम्

अच्छिबुद्धणं—निमीलनम्

अच्छिहुरूहो—द्वेषः

अजडो—जार

अट्टणो—आर्तज्ञ

अणडो—जारः

अणहवणअं—भसितम्

अणुदियं—दिनमुत्तम्

अण्णं—आरोपितम्, खण्डितम्

अण्णासअं—आस्तृतम्

अथकं—अकाण्डम्

अपंडिअं—अनष्टम्

अपुण्णं—आक्रान्तम्

अबुद्धिसिरी—मनोरथाधिकफलप्राप्तिः

अम्मच्छं—असंबद्धम्

अयुजरेवइ—अविश्रुवतिः

अरणी—सरणी
 अदिहो—धमाः
 अवडाहिअं—उरुट्टम्
 अवरिज्जं—अद्वैतम्
 अवदिहो—दक्षिणः
 अवाडिओ—वज्रितः
 अविहिओ—मत्तः
 अरसंगिअं—आसक्तम्
 अहिरोइअं—पूर्णम्
 अहुमाअं—पूर्णम्

अलपलरसहओ—पूरुषवृषभः
 अवगलो—आक्रान्तः
 अवडुहिअं—कृपादिनिपतितम्
 अवसण्णं—स्तुतम्
 अवहोओ—भिरुह
 अविणअवइ—ज्वरः
 अन्ना—भक्ष्य
 अदिअलो—क्रोधः
 अहिसिओ—प्रदुभीतः

आ

आआसत्तअं—इत्थं पृष्टम्
 आकासिअं—पर्याप्तम्
 आणंद्यसो—प्रथमरजस्वलापवस्यम्
 आप्पणं—पिष्टम्
 आरिहो—यातः

आरोग्गरिअं—रक्तम्
 आविअं—प्रोक्तम्
 आवेवओ—व्यासक्तः, प्रवृद्धः
 आहडं—सीस्कारः
 आलिआ—भाषी

आओ—भारः
 आडविओ—चूर्णितः
 आणुअं—माननम्
 आरनालम्—अम्बुजम्
 आरोइअं—मुकुलितम्, मुक्तम्, भ्रान्तम्,
 पुलकितम्

आरोहो—प्रवृद्ध, गृहागतः
 आविलिओ—कुपितः
 आसंधो—आस्था
 आदिहो—रुद्धः, गलितः

इ

इसओ—विस्तीर्णः

ई

ईद्धग्गिधूमो—उद्दिनम्

उ

उओ—ऋद्धः
 उकाअं—प्रखतम्

उओग्गिओ—सन्नद्धः
 उक्कज्जो—अनवस्थितः

उफांडिअ—आरोपितम्, खण्डितम्

उफारिओ—विस्तीर्णः

उफासं—उरुष्टम्

उकरणं—अपकीर्णम्

उचूणम्—पूर्णम्

उचरिअं—पुरस्सृतम्

उचुगो—अनसंस्थितः

उच्छिरणं—उच्छिष्टम्

उच्छुदो—आरूढः

उज्झमाणं—पलायितम्

उज्झलो—प्रपलः

उज्झिअं—शुष्कम्, निम्नीकृतम्

उडाहिअं—उत्क्षिप्तम्

उड्ढिओ—उत्क्षिप्तः

उत्तुवो—दृष्टः

उदूलिअं—अवनतम्

उदूओ—शान्तः

उद्वरिअं—अदितम्

उप्पत्तो—गलितः, विरक्तः

उम्मडो—उदूएत.

उम्मडो—उदूएत.

उम्पलो—अभ्यासितः

उरूमहो—प्रेरितः

उलुहुलअं—अग्नितम्

उल्लिफां—दुरबंछितम्

उल्लुहुडिअं—उन्नतम्

उल्लोफो—श्रुतिः

उवडिअं—अवनतम्

उविरिओ—प्रक्षपितः

उविब्वओ—फुटः

उवदं—विप्रलम्भम्

उवरिअं—आरोपितम्, खण्डितम्

उवोसिअं—पुरस्सृतम्

उगाहिअं—उत्क्षिप्तम्

उच्चदिअं—मूषितम्

उच्चलो—अभ्यासितः, शरितः

उच्चुरणो—उच्छिष्टः

उच्छिद्धो—अवजोः

उज्झणिअं—मिकीतम्, निम्नीकृतम्

उज्झलिअं—प्रक्षिप्तम्, विक्षिप्तम्

उज्झसिअं—उरुष्टम्

उडंवो—विष्टः

उडिअं—अन्विष्टम्

उत्ततो—अभ्यासितः

उदाहिअं—उत्क्षिप्तम्

उद्वारिअं—रणदूतम्, उरुपातम्

उद्वणो—उद्वतः

उद्वलो—पार्थद्वयाप्रवृत्तः

उप्पहो—अभ्यासितः

उम्मरिअं—उन्मूलितम्

उरुयकिअं—शुष्कोकृतम्

उरविअं—आरोपितम्, खण्डितम्

उलुओसिअं—रोमाञ्चितम्

उल्लिओ—उपसर्पितः

उल्लुअं—दूरस्सृतम्, रणम्

उल्लुदो—आरूढः

उवउओ—उपकारी

उविद्वो—सस्तः

उन्विद्वअं—अक्षितम्, वृत्तान्तम्

उसलिअं—रोमाञ्चितम्

ऊ

ऊआ—यूडा
ऊर्णदिअं—आनन्दिअम्
ऊसअं—उपधानीकृतम्
ऊसुंभिअं—रुद्रगणोदनम्

ऊर्गिअं—अलंकृतम्
ऊरिसंक्रिओ—रुद्रः
ऊसविअं—उद्धान्तम्
ऊसुंभिअं—उपधानीकृतम्

ए

एकल्लो = प्रवलः

एल्लिल्लो = धनी, वृषः

ओ

ओओधिअं = आघातम्
ओअल्लम् = विप्रलम्भम्
ओवह्निअं = पुरस्कृतम्
ओज्जरो = भीरुः
ओदुरो—उन्दुकः
ओम्मल्लं—घनीभूतम्
ओषाअओ—आपातपः
ओसडिओ—आकीर्णः
ओसरिओ—आकीर्णः, अक्षिसंकोचात्
संज्ञित.

ओअम्मओ = अभिभूतः
ओअल्लो = कम्प, अपचार.
ओच्छंदिअं = अपहृतशरीरादिव्यथितम्
ओणअं—अवनतम्
ओण्णं—सुष्ठु
ओमंसो—अपसृतः
ओसट्टो—विरसितः
ओसण्णो—वृद्धिः
ओसाअणं—महीशानम्

ओसिअं—अपूर्वम्
ओहल्लो—अपसृतिः
ओहामिओ—अभिभूतः

ओसिरणं—अ्युस्तर्जनम्
ओहरणं—आघातम्

क

कउडं—ककुदम्
कअल्लो—कर्कशः
कडदरिअं—छिन्नम्, छिद्रता
कडिओ—प्रोणितम्

कअरडो—कर्कशः
कअं—कार्यम्
कडप्पो—कलापः
कडिल्लं—आशीः, गहनम्, दौवारिकः,
कटिवरुम्, निर्विवरः, विपक्षः

कणइल्लो—शुकः
कत्तं—कल्लम्
कंदोट्टं—उत्पलम्

कणइ—छता
कथो—उपरतः, क्षीणः
कमणी—निःश्रेणी

कमल—आस्यम्, कण्ठः

करमा—क्षीण

कल्यु—अक्षयः

कञ्चरिञ्च—आरोपितम्, रचितम्

कारिण—वृष्टिमम्

किपाढो—स्फुलितः

किरिकिरिञ्च—उर्णोपसंभारः, उद्विग्नम्

कुञ्जिमर्—गर्भवती

कुडुपीथ—सुरतम्

कुम्भणो—म्लानः

कोटिओ—विशुनः

कोलीर—उद्विग्नम्

करमूरी—दृढता

करिहो—करीः

कलीर—करीकम्

काअपिउला—कोरिञ्च

काल—तमिषम्

किमिधरदसण—कीडेयम्

कियो—किङ्कः

कुडङ्गो—रतागृहम्

कुडुद—कुतुम्भम्

कोज्जिरिञ्च—भापूरितम्

कोडिहो—विशुनः

ख

खंधमसी—स्फुलितः

खुडुओ—धुलकः

खेडु—लेकः

खंधलट्टी—स्फुलितः

खुरदखुडी—प्रणयकोपः

ग

गर्भ—भापूरितम्

गभसाडहो—विरक्तः

गंजोहो—समाकुलः

गत्तो—गतः

गहो—गण्डस्थलम्

गविञ्च—गवष्टम्

गहिञ्चा—ग्राहाः

गामणहं—ग्रामस्थानम्

गायो—गौः

गुञ्जलिओ—संप्रदितः

गुम्भडो—अपरितः, स्फुलितः, आम्ल-
लोचलितः, मूकः, विवर्तितः

गुम्भिओ—मूलाच्छिन्नः

गञ्जलिओ—अहस्पर्शनिमित्तदहासः,
अहस्पर्शनिमित्तकपुच्छः

गत्तडो—गायिका

गमिदो—अपूर्णः, गूढः, स्फुलितः

गलद्वओ—प्रेरितः

गहरो—गूढः

गहिहो—ग्रहः

गामरेहो—ग्राममक्षरः

गायो—गवः

गुमिलो—मूकः

गुलिञ्च—मथितम्

गोणा—गौः
गोदा—गोदावरी
गोला—गोदावरी
गोसो—प्रसूयः

गोणिको—गोसमूहः
गोरडितम्—स्रस्तम्
गोसण्णो—मूलं.

घ

घअअंदं—मुकुटम्
घडं—घरीवृतम्
घडिआ—गोष्ठी
घाअणो—गायनम्
घुसिमं—घसृणम्

घडइअं—संकुचितम्
घडाघडी—गोष्ठी
घसणिअं—अग्निदम्
घुगघुसुअं—अशकं कणितम्

च

चउफं—चतुष्पथम्
चचरिओ—चंवरीकः
चचिको—स्थासकः
चण्डिज्जो—पिशुनः, कोपः
चपेटा—काषातः
चलणाओहो—चरणायुधम्
चिक्कं—स्तोकः, क्षुत्तम्
चित्तलं—रम्भम्
चिमिणं—रोमान्वितम्
चिलिचिलिआ—धारा

चकलं—वर्तुलम्
चच्चा—तलाहतिः
चण्डिको—कोपः
चंदोज्जं—वसुधम्
चप्पलओ—बहुमिध्याघादी
चलणकं—जघनांशुधम्
चिक्खअणो—सदनः
चित्तविअओ—परितोषितः
चिरिचिरिआ—धारा
च्छाड्डो—रूपवान्

छ

छट्टा—छटा
छिक्कं—रुष्टम्
छिच्छओ—जारः
छिण्णालो—जारः
छिल्लं—छिद्रम्
छेणो—स्तेनः

छंडिअं—छन्नम्
छिच्छई—पुंश्चली
छिछि—धिक् धिक्
छिण्णो—जारः
छुद्धिअं—परार्थपरावृतम्

ज

जअल्लो—उद्यः
जंघालुओ—दुतः
जडं—त्यक्तम्
जणहरो—नरराक्षसः
जंभणंभणो—स्वैरभापी
जहणरोहो—ऊहः
जुअणो—युवा
जोअडो—तपोषः
जोइओ—तपोषः
जोइ—विद्युतः
उभहुरायिअं—निर्वासितम्

जंघामओ—दुतः
जच्छंदो—स्वच्छन्दः
जणउत्तो—ग्रामप्रधानः
जपिकिररमगिरओ—दृष्टार्थवाचनशीलः
जरण्डो—वृद्धः
जहणसुअं—जघनांशुकम्
जूसओ—उत्क्षिप्तः
जोअणो—तपोषः
जोइक्खो—दीपः
जोओ—वस्त्रः

झ

झडिओ—ग्रान्तः
झपिअं—पर्यस्तम्

भंदिअं—प्रवृत्तम्

ठ

ठाणिजं—गौरवम्

ड

डंभिओ—शाम्भिकः
डेकुणो—मत्कुणः
डोसिणी—उरोह्वरा

डिडओ—वृक्षान्तः पतितः
डेड् हुरो—पट्टर

ण

णन्दिणी—पेयु
णाली—अस्त
णित्तो—तृणीकः
णिकज्जो—अनप्रस्थितः
णिकर्याविओ—ग्रान्तः
णिगगठो—निर्गतः
णिज्जो—मूसः

णलिअं—निलदम्
णिअद्वणं—परिधानम्
णित्तं—विद्यम्, जीर्णम्
णिकज्जो—निरवयः
णिगमित्तं—निर्वासितम्
णिच्चुद्धो—उद्धतः
णिप्पणिओ—वृक्षधौतः

णिष्फंसो—निष्पिणः

णिम्मीसुओ—निःसम्भुः

णिव्वहइ—उह्वति

णिह्वो—सुप्तः

णिह्वेलणं—निलयम्

णिमिअं—आघातम्

णिरासो—नृशंसः

णिसुद्धो—वातित.

णिहुअं—सुरतम्

णीसंको—धृपः

त

तच्छिलो—तत्परः

तणसोहो—तृणशून्यम्

तण्णाअं—आर्द्रम्

तत्तुरिअं—रञ्जितम्

तंबडुसुमं—कुरवकम्, कुरण्टकम्

तलारो—तलवरः

तल्लडं—तल्पम्

तेआलिसा—त्रिघश्चारिणत्

तोमरिओ—शस्त्रमार्जनम्

तडकडिओ—अनवस्थितः

तणेसी—तृणराशि.

तत्तिलो—तत्परः

तंयक्किमी—इन्द्रगोपः

तलं—तल्पम्

तल्लं—तल्पम्

तित्ति—सात्पर्यम्

तेवण्णा—त्रिपञ्चारात्

थ

थिरण्णेसो—अस्थिरः

थेवो—स्तोकः

थोवो—स्तोकः

थेरोसणं—अम्भुजम्

थोवो—स्तोकः

द

दड्ढाली—दग्धार्ध

दुग्गं—दुःखम्

दुद्धोलना—गौः

दुम्मइणी—वपदकारिणी

दूणो—द्विपः

दोग्गं—युग्मम्

दौदुरो—तुंडरिः

दोसारअणो—चन्द्रः

दरवह्वो—कातरः

दुग्घोटो—द्विपः

दुदुमिअं—रसितम्

दुरिअं—द्वुतम्

दूसलो—दुर्भंगः

दोग्घोटो—द्विपः

दोसणिजन्तो—चन्द्रः

दोसो—भोपः

ध

धणिआ—धन्या
धुअरासो—अमरः
धुअहं—पुरस्कृतम्
धूमरी—तुहिनम्

धाराचासो—दुर्दुरः
धुतो—आक्रान्तः
धूमद्वअमहिसी—तृतिघाः
धोरणी—पट्टिः

न

नंगओ—न्दः

प

पअरो—अर्धदरः
पंगुलो—रुद्रः
पच्छाणिओ—सन्मुखमागतः
पट्टिअं—असंप्रतम्
पडिरिगअं—अभयम्
पडिसोत्तो—प्रतिकृष्टः
पड्वाविअं—समापितम्
पणगवण्णा—पञ्चपञ्चाशत्
पडरंगु—प्रायेयः
पद्वलं—पार्श्वद्वयाप्रवृत्तः
पद्वलो—केसरः
परिअट्टविअं—परिकुप्यम्
परिक्खाइअओ—परिक्षीणः
परिहाइओ—परिक्षीणः
परोट्टं—पर्यस्तम्
पह्लित्तं—पर्यस्तम्
पविगं—विस्तृतम्
पसह्लिओ—प्रेरितः
पाउरणं—प्रावरणम्, कवचम्
पाडहुकः—प्रतिभूः
पासाणिओ—साक्षी
पिउच्चा—पिनुष्यमा, सखी

पअलाओ—फणी
पाङ्गरणं—प्रावरणम्
पञ्जतरं—द्वलितम्
पडिस्सरओ—प्रतिवृत्तः
पडिसिद्धी—प्रतिस्पर्धा
पडिहत्थो—अपूर्वः
पणिलिअं—हस्तम्
पण्णा—पञ्चाशत्
पत्थरं—पादतादनम्
पम्पो—पाणिः
परअत्तो—ओदः
परिअट्टिअं—प्रवृत्तिम्
परिधिअं—उद्दिष्टम्
परेओ—पिशाचः
पलहिअओ—मूर्खः, उपलब्धद्वयः
पल्लोट्टजीहो—रहस्यभेदी
पविरंजवो—स्निग्धः
पहट्टो—उद्धतः, अविरट्टः
पाओ—फणी
पाडिपिट्टी—प्रतिस्पर्धा
पासावो—गवाक्षः
पिठसिआ—पितृव्यता

पिडओ—भादिप्रः

पिप्पडिअं—यत्किंचित्पठितम्

पिण्यं—जज्ञम्

पुण्णाली—पुंभलो

पुरिलो—देशः

पुण्यंगो—मुण्डितः

पेसणाली—वृत्ती

पेकिअं—रूपादितम्

पिबुइअं—प्रशान्तम्

पिलुअं—धुतम्

पुआइ—उन्मत्तः, पिशाचः

पुप्पी—पितृधस्ता

पुल्लघओ—भ्रमरः

पेच्चलिओ—संघटितः

पोरथो—मत्सरी

घ

घइहो—यलीखं:

घन्धोहो—मेळकः

घम्हालो—भपस्मारः

घदिओ—मघितः

घहुल्लिआ—ज्येष्ठभ्रातृवधूः

घाओ—पाळः

घुल्लुलो—उद्धुद्धः

घंदिओ—यन्दी

घम्हहरं—मम्भुजम्

घलामोहो—घलास्कारः

घहुजाणो—घोरः, धूर्णः, जारः

घहुल्ली—घोडोचितशालभजिका

घुड्डिरो—महिषः

भ

भद्यो—भामिनेवः

भाइरो—भीरुः

भिरां—नीलम्, स्वीकृतम्

भेज्जो—भीरुः

भट्टियो—त्रिण्डः

भाउज्जा—भ्रातृजाया

भेज्जलो—भीरुः

भोइओ—मंथः

म

मइमोहिणी—सुरा

मघोणो—मघमान्

मडप्परो—गर्वः

मदोली—वृत्ती

मरिओ—लुटितः, विस्तीर्णः

मइहो—मुखरः

माउच्चा—मातृधस्ता, सखी

माणंसी—मायावी, मनस्वी

मइलपुत्ती—गुणवती

मंजरो—मानार्जः

मत्तयालो—मत्तः

गम्मक्को—गर्वः

महालयपक्खो—महालयपक्षः

माइंदो—माकन्दः

माउसिआ—मातृधस्ता

माभाइ—गभवधू

माहिवाओ—माघवातः
मुसलं—मांसजम्
मुहुरोमराइ—भूः

मिअं—अर्धशतम्
मुदलं—मुषम्
मेहुणिआ—मातुलाश्मजा, स्थाली

र

रअणिद्धअं—कुमुदम्
रगिहो—अभिलषितः
रिहोली—पंक्तिः
रिमिणो—रोदनशीलः
रुवरुइआ—उत्कलिना
रोफअं—प्रोक्षितम्

रइलस्वं—जवनम्
रिअं—रदनम्
रिटो—अरिष्टम्, देश्यः, फारः
रुहो—आक्रान्तः
रुवसिणी—रूपवती

ल

लंवा—पछरी, पेशः
लइणा—लता
लज्जालुइणी—पण्डकारिणी
लववो—पुसः
लुक्को—सुतः
लिह्णो—गतः

लअणी—लता
लकुडो—एगुडः
लडहा—मिलासवती
लाहिहो—अम्पटः
लोहो—स्मृतः

व

वअणीआ—उन्मत्ता, दुःशीला
वक्कं—विष्टम्
वच्छुद्धलिओ—प्रयुद्धतः
वडिणायो—पर्यवण्ड.
वड्ढिमं—स्तुतम्
वडइअं—पीडितम्
वणनत्तडिअं—पुरस्सुतम्
वप्पिअं—रक्तम्
वरइत्तो—नूतनवर.
वरत्तो—पीतः, पतितः, पेटितः
वल्लटं—पुनरुक्तम्

वइरोहो—वारः
वक्करलं—आकाशदितम्
वंज्जर—माज्जरः
वडिसाअं—स्तुतम्
वड्ढअरो—वृहत्तरः
वणइ—वनराजिः
वंदं—वृन्दम्
वप्पिओ—केदारः
वरण्डो—प्राकारः
वल्लकिअं—वत्संगितम्
वल्लविअं—छायावत्

वहिइअं—पर्याप्तम्

वाअडो—शुकः

वाडो—वृत्तिः

वामो—आक्रान्तः

वारिज्जो—विवादः

विअंदुटं—अवरोपितम्, मुचम्

विच्छुरिअं—अपूर्वम्

विड्ढो—सुसोस्थितः

विस्थिरं—विस्तारः

विरुओ—विरुद्धः

विसारो—सैन्यम्

विह्वणो—अनर्थः

विहुंउओ—विधुतम्

वीवी—वीथिः

वेणुसारो—अमरः

वेल्हो—विह्वनम्

वेल्हलो—कोमलः, विहासी

वेल्हरीओ—बहुरी, केशः

व्युडो—विटः

वहुहाडिणी—वध्या उपरि परिणीता

वाउलो—प्रलपितः

वामूलरो—वामलङ्कः

वारडुं—अभिपीडितम्

वाघडो—वुडुम्बी

विउसगो—गुत्सर्गः

विद्धितं—अर्जितम्

विद्धच्छओ—निषिद्धः

विरिचरो—धाराधारेचनशीलः

विउओ—विस्तीर्णः

विसो—वृषः, मूषकः

यिहिमिहिओ—विकसितः

वीली—वीथिः

वेणिअं—वपनीयम्

वेणो—आक्रान्तः

वेल्हअं—संकुचितम्

वेल्हरी—विहासवती

वोडो—सफः

स

संसाओ—भाकटः, चूर्णितः, पीतः,
उद्धितः

सइहासिओ—मयूरः

संकटो—रथा

सघअणं—संहननम्

सद्धिअगिअं—वर्धितम्

सत्थरो—संस्तरः

समराइअं—विधम्

समुदहर्—अम्बुगृहं

सहउत्थिया—वृत्ती

सइकोडो—शतकोटिः

सगहो—शुकः

संगोहं—संघातः

संचारी—वृत्ती

सत्तो—गतः

सदालं—नूपुरम्

समुदणवणीअं—चन्द्रः

सरिसाहुलो—सदृशः

साउलो—अनुरागः

साणिओ—शान्तः
 सालकिआ—शारिका
 सिट्ठो—सुसोत्थितः
 सिद्धबहिहो—वालकः
 सीउट्टं—हिमकालदुर्दिनम्
 सीसक्कं—शीर्षकाम्
 सुद्धरओ—धारिकागृहम्, चटकः
 सूरद्धओ—दिवसः
 सेवालं—सेवालम्
 सोहिअं—पिष्टम्

सामरी—शाल्मरी
 साहुली—शाखा
 सिप्पी—शूची
 सिद्धिणं—स्तनम्
 सीउल्लं—हिमकालदुर्दिनम्
 सुण्हसिओ—निद्रायोक्तः
 सूरंगो—दीपः
 सूरली—मध्याह्नम्
 सोत्ती—तरङ्गिणी

ह

हकिअं—उन्नतम्
 हडहडओ—अनुसंगः
 हिज्जा—ही।
 हीमोर्—भीमरम्
 हेपिअं—उन्नतम्
 हेसमणं—उन्नतम्

हट्टमहट्टो—दुवस्वस्थः
 हल्लपविअं—स्वरितम्
 हिद्धो—क्षस्तः
 हीरणा—जपा
 हेरिवो—देरम्बः
 हेसिअं—रसितम्

आठवाँ अध्याय

कारक, समास और तद्धित प्रकरण

कारकविचार

यरोति क्रियां जनयतीति कारकम्—क्रिया के उत्पादक को कारक कहते हैं; अथवा 'क्रियान्वयि कारकम्'—क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं। हेमचन्द्र ने—'क्रियाहेतुः कारकम्' क्रिया की उत्पत्ति में जो हेतु—सहायक हो, उसे कारक कहा है। प्राकृत में संस्कृत के समान ही कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये छः कारक हैं। प्राकृत के वैयाकरणों ने सम्बन्ध को कारक नहीं माना है और न पछी (छट्ठी) विभक्ति के रूपों को ही पृथक् स्थान दिया है। पछी के रूप चतुर्थी के समान ही होते हैं। वास्तविक बात यह है कि सम्बन्ध कारक का क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं है। यथा—विडसाणं परिसाए मुक्खेहि मडणं सेवीअउ, अन्नह मुक्खन्ति नज्जिहिन्ति—विद्वानों की सभा में मूर्खों को मौन रहना चाहिए, अन्यथा उनकी मूर्खता प्रकट हो जाती है। इस वाक्य में 'सेवीअउ' क्रिया के साथ 'विडसाणं' का किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है और न 'विडसाणं' में 'सेवीअउ' क्रिया का जनकत्व-उत्पादकत्व ही है। अतः यह पद पछी विभक्ति तो है, पर सम्बन्ध-कारक नहीं है।

विभक्ति की परिभाषा करते हुए कहा है—“संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः”—जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध हो, वह विभक्ति है। 'विडसाणं' से विद्वानों के समूह का बोध होता है, अतः यह पछी विभक्ति तो है, पर कारक नहीं।

विभक्ति और कारक में एक अन्तर यह भी है कि कारक कुछ है और विभक्ति कुछ हो जाती है यथा—कर्त्ता में सर्वदा प्रथमा और कर्म में द्वितीया विभक्ति ही नहीं होती; चट्टि कर्त्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा विभक्ति भी होती है। जैसे—'राजगो रामेण हथो' इस वाक्य में इनन क्रिया का वास्तविक कर्त्ता राम है, पर राम प्रथमा विभक्ति में नहीं है, तृतीया विभक्ति में रखा गया है। इसी प्रकार इनन क्रिया का वास्तविक कर्म राजग है, उसे द्वितीया विभक्ति में न रखकर प्रथमा विभक्ति में रखा गया है।

१. कर्त्ता—क्रिया के द्वारा जिस संज्ञा के सम्बन्ध में विधान किया जाता है, उस संज्ञा के रूप को कर्त्ता कारक कहते हैं^१। जैसे—रामो 'भार्द्वाज'—में 'भार्द्वाज' क्रिया राम के सम्बन्ध में विधान करती है कि राम ध्यान करता है।

प्रथमा विभक्ति के नियम—

(१) प्रातिपदिकार्थ—शब्द का मात्र अर्थ, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र अथवा पचन मात्र धतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है^२। प्रातिपदिक शब्द का अर्थ—“नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः”—जिस शब्द की जिस अर्थ के साथ नियम से उपस्थिति हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं। प्रातिपदिकार्थ में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—जिणो, बाज, पञ्चुणो, सर्वभू, णाणं आदि।

संदृष्ट के समान प्राकृत में भी शब्द में जन एक प्रत्यय नहीं लगता, तब एक उसका अर्थ नहीं जाना जा सकता है। प्रातिपदिक (Crude form) में लुप् आदि विभक्तियों को जोड़ने से ही अर्थ प्रकट होता है। उदाहरण के लिए यों समझना चाहिये कि विभक्ति रहित देव शब्द का उच्चारण करें तो यह निरर्थक होगा। जन 'देवो' उच्चारण करते हैं तभी इस शब्द का अर्थ 'देव' ने यह प्रकट होता है। इसलिये संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण में विभक्ति प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

लिङ्गमात्र में—तटो, तटो, तटं; परिमाणमात्र में—उज्ज मात्र का ज्ञान कराने के लिए—दोणोठ्ठोही—यहाँ प्रथमा विभक्ति से व्रीहि का द्वोग रूप परिमाण विहित होता है।

वचनमात्र—एको, वहु आदि।

(२) सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। यथा हे देवो, हे देवा, हे हे पञ्चुणा।

२. कर्म—जिन पदार्थ पर क्रिया के व्यापार का फल प्राप्त होता है; उस पदार्थ से सूचित होनेवाली संज्ञा के रूप को कर्म कारक कहते हैं। किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से जिसको कर्त्ता सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं^३ अर्थात् कर्त्ता के लिए जो अत्यन्त ईप्सित-अभ्यष्ट है, उसीको कर्म संज्ञा होती है। जैसे—'मासेसु अस्सं बंधइ' उड़ने के सेव में घोड़े को बाँधता है, इस वाक्य में बाँधने-

१. स्वतन्त्रः कर्त्ता २।२।२. हे० ।

२. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमाने प्रथमा २।३।४६ पा० ।

३. कर्त्तुं रोप्तिवत्तम कर्म १।४।४६. पा० ।

वाला अपनी बांधने की क्रिया के द्वारा अश्व को चतुर्गत करना चाहता है। अतः दन्धन व्यापार द्वारा अश्व ही कर्त्ता को अभीष्ट है, उद्द नहीं। उद्द की चाह अश्व को हो सकती है और उसके प्रलोभन से उसका बांधना सुगमतर हो सकता है, परन्तु कर्त्ता को उसकी चाह नहीं है। अतः मात्सेयु में कर्म संज्ञा नहीं हुई।

क्रियाविशेष द्वारा जो कर्त्ता को अत्यन्त अभीष्ट है, उसीसे कर्म संज्ञा होती है। जैसे—पयेण ओदनं भुंजइ—दूध से भात खाता है, वास्य में दूध भी भात की तरह कर्त्ता को प्रिय है, पर कर्त्ता अपने भोजन व्यापार द्वारा, जिसे सबसे अधिक पाना चाहता है, वह भात है, दूध नहीं। यतः दूध पेय है, वह तो केवल भोजन क्रिया के सम्पादन में सहायक है, अतः यहाँ पर पयेण की कर्म संज्ञा नहीं है, ओदन की है।

(१) अनुक्त कर्म को बतलाने के लिए कर्म कारक में द्वितीया रिभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—हरिं भजइ, गामं गच्छइ, वेअं पढइ, पुत्थकं पढइ, भाणं भाइअइ, अत्थं चिन्वइ।

(२) सप्तमी और प्रथमा रिभक्ति के स्थान पर क्वचित् द्वितीया रिभक्ति होती है। यथा—विज्जुज्जोमं भरइ रत्ति—विणुदुयोमं भाति रात्र्याम्—यहाँ सप्तमी के स्थान पर द्वितीया हुई है।

चउवीसं पि जिणवरा—चुविरत्तिपि जिणराः—यहाँ प्रथमा के स्थान पर द्वितीया हुई है।

(३) संस्कृत के समान प्राकृत में भी द्विर्भूत धातुओं के योग में अपादान आदि कारकों में भी द्वितीया रिभक्ति होती है। यथा—

(१) माणवअं पई पुच्छइ—यचे से शास्ता पूछता है।

(२) रुक्खं ओचिच्चइ फल्लइ—पुष्प के फलों को इकट्ठा करता है।

(३) माणवअं धम्मं सासइ—माणवक से धर्म रहता है।

(४) दाी, स्था और भास् धातुओं के पूर्व यदि अधि (अहि) उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं के आधार की कर्म संज्ञा होती है। यथा—अहिचिद्धइ पइवठं दरी।

(५) अदि और नि उपसर्ग जब पुञ्ज माय रिन् (रित्) धातु के पहले आते हैं, तो रिन् के आधार को कर्म कारक होता है। यथा—अदि निवसइ सम्मगं।

(६) यदि बम् धातु के पूर्व उव, वणु, जहि और आ में से कोई भी उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार को कर्मकारक होता है। यथा—

हरी वडवंठं उववसइ, अहिवसइ, आरसइ वा ।

(७) अहिओ (अभिओ) :—चारों ओर, परिओ (परितः)—सभ ओर, समया—समीप, गिनहा (निदपा)—समीप, हा, पडि, घिअ, सबओ और उवरि उरि शब्दों को जिनमें सन्निकटता पाई जाय उनमें द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

अहिओ किसणं, परिओ किसणं, गामं समया, निरहा लंकं, हा किसणा मत्तं, परिजणो रायाणं अहिओ चिट्ठइ ।

(८) अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—गई अणुसिआ सेना, अणुहरि सुरा, मोहणं अणुगच्छइ हरी ।

(९) अधिक तथा हीन अर्थ का वाचक होने पर अणु के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—अणुहरि सुरा—देवता हरि से हीन हैं ।

(१०) जब अंगुलि । नदेश करना हो, इत्यर्थ—ये इस प्रकार के हैं—यह बतलाना हो, भाग—यह उनके हिस्से में पड़ा या पड़ता है, यह प्रष्ट करना हो अथवा पुनरुक्ति दिखलानी हो तो पडि, परि और अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

(१) वळ्ठं पडि विज्जुअइ विज्जु—वृक्ष पर विजली चमकती है ।

(२) भओ विसणुं पडि अणु वा—विष्णु के ये भक्त हैं ।

(३) एछी हरिं पडि अणु वा—एमी विष्णु के हिस्से में पड़ी या पड़े ।

(४) वळ्ठं वळ्ठं पडि सिच्चइ—प्रत्येक वृक्ष को सोंघता है ।

(११) एजार्थ में सु अव्यय और उल्लंघन अर्थ में अइ अव्यय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

अइ देवा किसणो—कृष्ण सब देवताओं की अपेक्षा एज्य हैं ।

सुसिप्पअं वळ्ठं—अच्छी तरह सोंघा हुआ वृक्ष ।

३. करण कारक—अपने कार्य की सिद्धि में कर्त्ता जिसकी सत्ते अधिक सहायता देता है, उसे करण कहते हैं । यथा—“रामेण बाणेन हओ वाली” वाक्य में कर्त्ता राम वाली को मारने में सबसे अधिक सहायता धाण की ऐता है; यों तो दास और घनुप भी सहायक हैं, पर ये अत्यन्त सहायक नहीं हैं, अतः इन्हें करणकारक नहीं माना जायगा । तात्पर्य यह है कि जो क्रिया-कर की निष्पत्ति में साधन का बोध कराता है, उसे करणकारक कहते हैं । करण अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है । यथा—रामो जलेन कडं पच्छालइ ।

(१) प्रवृत्ति—रसभागादि अंगों में तृतीया होती है। यथा—पइईअ चारु—रसभार से सुन्दर, गोत्तेण गगो, रसेण महुरो, सुहेण जाद। किं जगणिजोद्यणरिउ-यणमसेण जम्मेण।

(२) दिग् धातु के योग में विकल्प से द्वितीया विभक्ति भी होती है। यथा—अकडेहिं अचउा वा दोधइ—पार्श्वों से या पार्श्वों को मेषता है।

(३) समपूर्वक णा धातु के कर्म की विकल्प से वरण सज्ञा दीती है। यथा—विअरेण, पितरं वा सण्णणइ—पिता के साथ मेल से रहता है।

(४) कप्प्राप्ति या कार्यसिद्धि को वतलने के लिए तृतीया विभक्ति होती है। यथा—दुवाणसरसेहिं वाअरणं मुणइ—आश्चर्यः व्याकरणं भूयते।

(५) सङ्ग, सामं, सायं और सङ्ग के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—पुत्तेण सहाअओ पिआ—पुत्रेण सदागतः पिता, लरुएणो रामेण सार्थं गच्छइ, देवदत्तो जग्यदत्तेण समं नहाति।

(६) पिधं, विना, नाना शब्दों के साथ तृतीया, द्वितीया या पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—पिधं रामेण, रामत्तो, रामं वा; जलेन, जलत्तो, जलं वा; जलं विना कमलं चिट्ठुं ण सकइ।

(७) जिस त्रिरुद्ध अंग के द्वारा अङ्गी का विरार मालूम हो, उस अंग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—पाएण खंजो, ण्णेण बहिरो—पैर का लँगबा; कान का बहिरा।

(८) जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है वा होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

दुडेण घडो जाओ—दण्ड के कारण घड़ा उत्पन्न हुआ।

पुणेण दिट्ठो हरि—पुण्य के कारण हरि दिखलायी पड़े।

अज्झणेण वसइ—अभयन के प्रयोजन से रहता है।

(९) जो जिस प्रकार से जाना जाय, उसके लक्षण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

जडाहिं तावसो—जटाओं से तपस्वी जान पड़ता है।

गमणेण रामं अणुहरइ—गमन में राम के सदृश है।

(१०) कार्य, अर्थ, प्रयोजन, गुण तथा इसी प्रकार उपयोग या प्रयोजन प्रकट करने वाले शब्दों के योग में उपयोध्य या आवश्यक वस्तु को तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

तिणेण कज्जं भवइ ईसराणं—धमी लोगों का कार्य तिनके से भी हो जाता है ।

को अत्थो पुत्तेण जो ण विउसो ण धम्मिओ—उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ है, जो न विद्वान् है और न धर्मात्मा ।

(११) आर्य प्रयोगों में सप्तमी स्थान में तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है । यथा—

तेणं कालेणं, तेणं समएणं—तस्मिन् काले, तस्मिन् समये—उस समय में ।

४. सम्प्रदान कारक—दानकार्य के द्वारा कर्त्ता जिसे सन्तुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं । अर्थात् जिस पदार्थ के लिए कोई क्रिया की जाती है, उसका पोष कराने वाली संज्ञा के रूप को सम्प्रदान कारक कहते हैं । सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा—विप्पाय या विप्पस्स गावं देइ—विपाय गां ददाति ।

(१) रोअ—रुच् धातु तथा इच् के समान अर्धवाली अन्य धातुओं के योग में प्रसन्न होनेवाला सम्प्रदान कहलाता है और सम्प्रदान को चतुर्थी होती है । यथा—

हरिणो रोयइ भत्ती—हरी को भक्ति अच्छी लगती है ।

वाल्लरस मोअआ रोअन्ते—वाल्लरस मोदकाः रोचन्ते, वाल्लर को खट्टू अच्छे लगते हैं । मम तव पियारो रोयइ—मुझे तुम्हारा विचार अच्छा लगता है ।

तरस चाआ मज्झं न रोयइ—उसकी बात मुझे अच्छी नहीं लगती ।

(२) सल्लाह (श्लाघ) हुण, (हूङ्), चिट्ठ (स्था) और (सत्र) इष्ट धातुओं के योग में जिसको जाना जाय उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा—

गोवी समरत्तो किसणाय किसणरस वा सल्लाहइ, चिट्ठइ, सवइ वा—गोपी कामदेव के वल से श्रीकृष्ण के अर्थ अपनी श्लाघा करती है, स्थित होकर पृष्ण को अपना अभिप्राय बताती है तथा कृष्ण के लिए अपना उपाखम्भ करती है ।

(३) धर—धङ् उच्चार लेना—उर्ज लेना धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा—

भत्ताय, भत्तस्स वा धरइ मोवस्सं हरी—हरि भक्त के लिए मोक्ष को धारण करते हैं ।

सामो अस्सपइणो सइं धरइ—श्याम ने अरापति से एक सौ कर्ज लिए ।

(४) सिद्ध (सृष्ट) धातु के योग में जिसे चाहा जाय, वह सम्प्रदानसंज्ञक होता है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति में रहते हैं । यथा—

पुप्फाणं सिद्धइ—पुष्पेभ्यः सृष्टयति—पूजों की चाहना करता है ।

(५) कुम्भ (कुब्ज्) दोह (दुह), ईम (ईर्मा) तथा अमृम (अमृम्) धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्धवाची धातुओं के योग में जिनके उपर क्त्वादि कृिं जाते हैं, उनकी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा हरिणो कुम्भइ, दोहइ, ईसइ, अमृअइ, वा।

(६) निमित्त काल के लिए वेत्तन इत्यादि पर किसी को रत्ता जाना परिष्करण कर्त्तावा है, उस परिष्करण में जो करण होता है, उसकी विरुद्ध से सम्प्रदान संज्ञा होता है। यथा—

सयेण सयस्स वा परिकीणइ—सौ रूपये के वेत्तन पर रत्ता गया।

(७) जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाव, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

मुत्तिणो हरि भजइ—मुक्ति के लिए हरि को भजता है।

भक्ती णायय कप्पइ, संपज्जइ, जाअइ वा।

(८) हेमचन्द्र के मत से तादर्थ्य—उसके लिए—अर्थ में पड़ी विभक्ति विरुद्ध से आती है। यथा—

मुणिरस्स, मुणीणं देइ—मुनीनं मुनिभ्यो वा ददाति।

नमो नाणस्स—नमो ज्ञानाय, नमो गुरुस्स—नमो गुरवे।

देवस्स देवाय नमो।

(९) द्वित और मुख के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

वंभणस्स द्विअं सुहं वा—मालन के लिए द्वितकर या मुखकर।

(१०) नमो, सुत्थि, सुहा, सुभाहा, और अलं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

११ हरिणो नमो—हरि को नमस्कार हो।

पआणं सुत्थि—प्रजा का कल्याण हो।

पिअराणं सुहा—पितरों को यह समर्पित है।

अलं मल्लो मल्लस्स—मल्ल दूसरे मल्ल के लिए पर्याप्त—काफी है।

५ अपादानं वारक—जिससे किसी वस्तु का विक्षेप होता है, उसे अपादान-कारक कहते हैं। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—धावत्तो अस्सत्तो पडइ—झोड़ते हुए घोड़े से गिरता है।

(१) दुगुम्भ, विराम और पमाय तथा इनके समावार्धक शब्दों के साथ पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—पावत्तो दुगुम्भइ, विरमइ वा; धम्मत्तो पमायइ।

(२) जिसके कारण दर मालूम हो अथवा जिसके दर के कारण रक्षा करनी हो, उस कारण को पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा—चोरओ बीहड़, सप्पओ भयं, रामो कलहत्तो बीहड़ ।

(३) प्राथम में 'भी' धातु के योग में पञ्चमी के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति भी पायी जाती है । यथा—दुष्टाण को न बीहड़—दुष्टेभ्यः को न विभेति—दुष्टों से कौन नहीं डरता है ।

(४) पञ्चमी के अर्थ में षष्ठी विभक्ति भी देखी जाती है । यथा—चोरस बीहड़—चौराद्विभेति—चोर से डरता है ।

(५) पञ्चमी के स्थान में कहीं-कहीं तृतीया और सप्तमी विभक्ति भी पायी जाती है । यथा—चोरेण बीहड़—चौराद्विभेति, अन्तेवदे रमिवमागओ राया—अन्तःपुराद् रन्त्यागत इत्यर्थः ।

(६) परापूर्वक जि धातु के योग में जो असत्य होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है और पञ्चमी विभक्ति हो जाती है । यथा—अवकृणत्तो पराजयइ ।

(७) जनधातु के कर्ता का भाविकारण अपादान होता है । यथा—त्रामत्तो कोहो अहिजाअइ, कोहत्तो मोहो अहिजाअइ ।

६. प्रातिपदिक और कारक के भित्तिरिक्त स्वस्वामिभाविक सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है । मुख्यतः सम्बन्ध चार प्रकार का है—स्वस्वामिभाव सम्बन्ध, अन्य जनक भात्र सम्बन्ध, अवयवावयविभात्र सम्बन्ध और स्थान्यादेश । साधुणो धर्ण में स्वस्वामिभाव सम्बन्ध है, वरः साधु धन का स्वामी है । पिअरस्स, पिउणो वा पुत्तं में अन्य-जनकभात्र सम्बन्ध है । पसुणो पाअं में अवयव-अवयविभाव सम्बन्ध है, पत्तः पत्तु अग्रणी है और पैर उसके अग्रपर है । गम् के स्थान में अइकउ, अई और अइअ आदेश होता है, अतः यहाँ स्थान्यादेश सम्बन्ध माना जायगा । इन सम्बन्धों के भित्तिरिक्त कार्य-कारणादि और भी सम्बन्ध हैं सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है । यथा—पाअस्स अंगाणि पससेइ—कौण के अंगों की प्रशंसा करता है । जहा तुह अंगाणि अईय मजोहराणि जहा तुमं सुमहुपाई गोवाडं गावं समत्थो सि—जैसे तुम्हारे अंग सुन्दर हैं, वैसे ही तुम सुमधुर गाना गाने में भी समर्थ हो ।

(१) वर्गादि में भी सम्बन्धमात्र की निवृत्ति होने पर षष्ठी विभक्ति हो जाती है । यथा—तस्स चाहरणत्थं माहावादिहाण्य चेही पेसिया—उठो उठाने के लिए मापनी नाम की दासी को भेज ।

तस्स कहियं—उससे कहा, माआण, माऊण वा रुमरइ—माता को याद करता है ।

(२) हेउ शब्द के प्रयोग में जो शब्द कारण या प्रयोजन रहता है, वह और हेउ शब्द दोनों ही पद्यों में रखे जाते हैं। यथा—अन्नस्स हेउस्स वसइ—अन्न प्राप्ति के प्रयोजन से रहता है। कस्स हेउस्स वसइ—किस कारण रहते हैं।

(३) द्वितीया-तृतीयादि विभक्ति के स्थान पर पद्यों विभक्ति होती है। यथा—सीमाधरस्स वन्दे—सीमाधरं वन्दे; तिस्सा मुहस्स भरिमो—उत्तमा सुखं भरामः, धणस्स लुब्धो—अनेन लुब्धः; तेसिमेअमणाइणं—तेरेतदनाचरितम्; चिरस्स मुक्का—चिरेण मुक्ता; इअराई जाण लहुअक्खराई पायन्तिमल्ल सहिआण—पादान्तेन सहितेभ्यः इतराणि।

७. अधिकरण फाररु—इहाँ और कर्म के द्वारा किसी भी क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है। आधार के तीन भेद हैं—भौतिक, वैयक्तिक और अभिव्यापक। जिसके आधेय का भौतिक संश्लेष हो, उसे औपश्लेषिक आधार कहते हैं। जैसे—रुडे आसइ कागो—यहाँ प्यहाँ से बँडनेवाले का भौतिक संश्लेष प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। जिसके साथ आधेय का बौद्धिक संश्लेष हो, उसे वैयक्तिक आधार कहते हैं। यथा—मोखे इच्छा अत्थि—हृष्टा का मोक्ष में अधिष्ठित होना बौद्धिक संश्लेष है। जिसके साथ आधेय का व्यापक-व्यापक सम्बन्ध हो, उसे अभिव्यापक कहते हैं। यथा—“तिलेसु तेलं” में तैल तिल के किसी एक भाग में नहीं रहता है, बल्कि समस्त तिल में व्याप्त रहता है।

(१) अधिकरण तथा दूर एवं अन्तिक अर्थ वाले शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है। फडे आसइ कागो; गामस्स दूरे अन्ति ए वा।

(२) सामी, ईसर, अहिक्ख, क्षायाद, साखी, पडिहू और पसूभ इन सात शब्दों के योग में पद्यों और सप्तमी ये दोनों ही विभक्तियाँ होती हैं। यथा—

गवाणं गोसु वा सामी, गवाणं गोसु वा पसूओ।

(३) यदि किसी वस्तु का अपने समुदाय की अन्य वस्तुओं में से किसी विशेषण द्वारा वैशिष्ट्यनिर्देश किया जाय तो समुदायवाचक शब्द सप्तमी अथवा पद्यी विभक्ति में रहता जाता है। यथा—रुइसु कईणं वा हरिचन्दो सेट्ठो—रुपियों में हरिश्चन्द्र सबसे बड़े कवि है। गवाणं गोसु वा कसिणा बहुक्खोरा—गायों में काली गाय बहुत वृष देनेवाली है। छत्ताणं छत्तेसु वा गोइन्दो पडु—विद्यापियों में गोविन्द भेष्ट है।

- (४) समृद्धि अर्थ में—महाणं समिद्धि—मुमदं ।
 (५) अभाव अर्थ में—मल्लिकणं अभाओ—निम्मल्लिकं ।
 (६) अत्यय—नाश में—हिमस्स अचओ—अइदिमं ।
 (७) असम्प्रति—अनौचित्य अर्थ में—निदा संपइ न जुज्जइ—अइनिदं ।
 (८) यथा का भाव—योग्यता—रूवस्स जोग्गं—अणुरूपम् (अनु रूपम्) ।
 ” योक्ता—नयरं नयरं ति—पइनयरं (प्रतिनगरम्) ।
 ” ” —दिणं दिणं ति—पइदिणं (प्रतिदिनम्) ।
 ” ” —घरे घरे ति—पइघरं (प्रतिगृहम्) ।
 ” अन्तिकम—सत्ति अणइकमिअ—जहाविहि (यथाविधि) ।
 ” ” —सत्ति अणइकमिऊण—जहासत्ति (यथाशक्ति) ।
 (९) धातुपूर्व—कम—जेट्टस्स अणुपुठ्वेण—अणुजेट्टं (अनुग्येष्टम्) ।
 (१०) यौगपद्य—एक साथ होना—चक्केण जुगय—सचकं (सचक्रम्) ।
 (११) सम्पत्ति—छत्ताणं संपइ—सल्लत्तं (सल्लभम्) ।

(२) तत्पुरुष (तत्पूरिस)

(१) उत्तरपदार्थप्रधानतत्पुरुषः—जिसमें उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता रहती है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। राइणो पुरिसो = रायपुरिसो में उत्तरपद पुरुष की प्रधानता है। तात्पर्य यह है कि तत्पुरुष समास में प्रथम पद विशेषण और द्वितीय पद विशेष्य रहता है, अतः विशेषण की प्रधानता रहने के कारण इसमें उत्तरपद की प्रधानता मानी जाती है।

तत्पुरुष समास के आठ भेद हैं—प्रथमा तत्पुरुष, द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी तत्पुरुष, पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष, सप्तमी तत्पुरुष और अन्य तत्पुरुष ।

(१) प्रथमा तत्पुरुष (पठमा तत्पूरिस)

(१) पुण्ड, अवर, अहर और उत्तर प्रथमान्त पद अपने अवयवी पष्ठान्त के साथ पराधिरण में समास को प्राप्त होते हैं। यथा—पुण्वं कायस्स = पुण्वकायो, अवरं मायस्स = अवरकायो, उत्तरं गामस्स = उत्तरगामो ।

(२) द्वितीया तत्पुरुष (वीया तत्पूरिस)

(२) सिअ, अतोव, पडिअ, मअ, अइअरय, पच और आवण्ण शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति के आने पर द्वितीया-तत्पुरुष समास होता है। यथा—

समासविचार

(१) “समसनं समासः”—संक्षेप को समास कहते हैं अर्थात् दो या अधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रखना, जिससे उनके आकार में कमी आ जाय और शार्थ भी प्रकट हो जाय। तात्पर्य यह है कि परस्पर सम्बद्ध शब्दों के शब्दों का एक रूप में मिलना समास है। समास से सिद्ध पद—सामानाधिकरण या समस्तपद कहलाते हैं। समस्तपद के प्रत्येक पद को विभक्तियों के साथ अलग-अलग करने को विग्रह कहते हैं।

समास मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं—(१) अव्ययीभाव, (२) तत्पुरुष, (३) बहुव्रीहि और (४) द्वन्द्व। अव्ययीभाव में पहले पद के अर्थ की, तत्पुरुष में दूसरे पद के अर्थ की, बहुव्रीहि में अन्य पद के अर्थ की तथा द्वन्द्व में सभी पदों के अर्थों की प्रधानता होती है।

तत्पुरुष समास दो प्रकार का होता है—(१) सामानाधिकरण तत्पुरुष और (२) व्यधिहरण तत्पुरुष। सामानाधिकरण तत्पुरुष का ही दूसरा नाम कर्मधारय समास है। द्विगु समास कर्मधारय का ही भेद है।

एकशेष समास भी स्वतन्त्र नहीं है, यह द्वन्द्व का ही एक उपभेद है। कहा भी है—

वन्दे य बहुव्रीहि कर्मधारय द्विगुयप चैव ।
तत्पुरुषे अव्ययीभावे एकशेषे य सत्तमे ॥

(१) अव्ययीभाव (अव्ययीभाव)

(१) अव्ययीभाव समास में पहले पद बहुधा कोई अव्यय होता है और यही प्रधान होता है। अव्ययीभाव समास का म्यूया पद क्रियाविभक्त अव्यय होता है।

(२) विभक्ति आदि अर्थों में अव्यय का प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास होता है।

(१) विभक्ति अर्थ में—हरिस्मि इदं—अदिहरिः अप्यसि अन्तो—
अरम्भ्यम् ।

(२) स्थानावस्थेय—गुरुगो समीप—उत्पुरुः मित्रगिरियो समीप—
उपसितुगिरि ।

(३) प्रधान अर्थ में—त्रिगुप्त पञ्चा—अनुक्तिः भोगदास पञ्चा —
अनुभोषणम् ।

संसारओ भीओ = संसारभीओ (सगारभीत), दंमगाअ भट्टो = दसण-भट्टो (दसं भट्ट), अत्ताणओ भय = अत्ताणभय (अत्ताणभय), वग्धाओ भय = वग्घभय (व्याघ्रभय), रिणाओ मुत्तो = रिणमुत्तो (रिणमुत्त), चोराओ भय = चोरभय (चोरभय), येणाओ भीओ = येणभीओ (स्तभीत), थोवाओ मुत्तो = थोवमुत्तो (स्तोवाभुव) ।

(६) पट्ठी तत्पुरुष (छट्ठी तत्पुरुष)

(१) जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद पट्ठी विभक्ति में है, उसे पट्ठी तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

देवस्स मन्दिर = देवमन्दिर (देवमन्दिर), कत्ताण मुह = कत्तामुह (कम्पा सुगम), नरस्स इदो = नरिदो (नरेन्द्र), देवस्स इदो = देविदो (देवेश), लेहस्स साला = लेहसाला (लेहसाण), विज्जाण ठाण = विज्जाठाण (विष्णु-रत्ना), समाहिणो ठाण = समाहिठाण (समाधिस्था), देवस्स युई = देवयुई (देवयुई), रिणाण इन्दो = जिणेन्दो, जिणिन्दो (जिनन्द्र), विबुहाण अहिणो = विबुहाहिणो (विबुगधिप), बहूए मुह = बहूमुह (बहु-सुख), धम्मस्स पुत्तो = धम्मपुत्तो (धर्मपुत्र), गणिअस्स अज्जाओ = गणिआज्जाओ (गणिता जापर), देवस्स पुज्जओ = देवपुज्जओ (देवपूजक) ।

(७) सप्तमी तत्पुरुष (सत्तमी तत्पुरुष)

(१) सप्तमी तत्पुरुष समास उस पद में है, जिसका प्रथम पद सप्तमी विभक्ति में रहा है । यथा—

कलासु कुसलो = कलासुसलो (कलासुसल), वभणोसु उत्तमो = वभणो-त्तमो (व्राह्मणोत्तम), जिणोसु उत्तमो = जिणोत्तमो (जिणोत्तम), सभाए पडिओ = सभापडिओ (सभापण्डित) पडाहे पक्को = पडाहपक्को (पडाहपक्क), कम्मो कुसलो = कम्मकुसलो (कर्मकुशल), विज्जाए दक्खो = विज्जादक्खो (विज्जादक्ष), नरेसु सेट्ठो = नरसेट्ठो (नरभेष्ट), नाणम्मि वज्जओ = नाणोवज्जओ, नाणुज्जओ (नाणोवज्ज), गिह्हे जाओ = गिह्हाज्जाओ (गृहजाव) ।

(८) अण्वन्तत्पुरुष (अण्वन्तत्पुरुष)

अण्वन्तत्पुरुष समास के अण्वन्तत्पुरुष, प्रादित्तरपुरुष, मतिन्तत्पुरुष, उपपत्तितत्पुरुष, अलुक्क तत्पुरुष, मध्यमपदगोपी तत्पुरुष, एवं मयूर-पक्षिदि तत्पुरुष में सात भेद हैं ।

(क) नन् तत्पुरुष (न तत्पुरुष)

(१) जब तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द न और दूसरा कोई सत्ता या विद्यमान हो तो उस नन् तत्पुरुष कहते हैं । व्यञ्जन के पूर्व न न में और स्वर के पूर्व न न में पढ़ा जाता है । यथा—

किसणं सिञ्जो = किसणसिञ्जो, इन्दियं अतीतो = इन्दियातीतो (इन्द्रिया-
तीतः), अग्निं पण्डितो = अग्निपण्डितो (अग्निपण्डितः), सिवं गओ = सिवगओ
(सिवगतः), सुहं पत्तो = सुहपत्तो (सुहप्राप्तः), भदं पत्तो = भदपत्तो (भद्र-
प्राप्तः), पलयं गओ = पलयगओ (प्रलयगतः), दिवं गओ = दिवगओ (दिव-
गतः), कट्टं आवण्णो = कट्टावण्णो (कट्टापन्नः), मेहं अइअत्थो = मेघाइअत्थो
(मेघात्यस्तः), वीरं असिसओ = वीरसिसओ (वीरामितः) ।

(३) तृतीया तत्पुरुष (तर्हया तप्पुरिस)

(१) जत्र तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द तृतीया विभक्ति में हो, तत्र उसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

साहूहिं वन्दिओ = साहुवन्दिओ (साहुवन्दितः), जिणेण सरिसो = जिणसरिसो
(जिनसदृशः), ईसरेण कडे = ईसरकडे (ईश्वरकृतः), दयाए जुत्तो = दयाजुत्तो
(दयायुक्तः), गुणेहिं संपन्नो = गुणसंपन्नो (गुणसम्पन्नः), रसेण पुण्णं = रसपुण्णं
(रसपूर्णं), मायाए सरिसो = माउसरिसो (मानसदृशः), कुलगुणेण सरिसी =
कुलगुणसरिसी (कुलगुणसदृशः), रूवेण समाणा = रूवसमाणा (रूपसमाना),
आयारेण निउणो = आयारनिउणो (आचारनिपुणः), णहेहिं भिण्णो = णह-
भिण्णो (नवभिन्नः), गुडेन मिरसं = गुडमिरसं (गुडमिश्रं), महुणा मत्तो =
महुमत्तो (मधुमत्तः), पंकेन लित्तो = पंकलित्तो (पङ्कलितः), बाणेन विहो =
बाणविहो (बाणविद्धः) ।

(४) चतुर्थी तत्पुरुष (चत्थी तप्पुरिस)

(१) जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद चतुर्थी विभक्ति में हो, उसे चतुर्थी तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

कलसाय सुवण्णं = कलससुवण्णं (कलशसुवर्णम्), मोक्खाय नाणं,
मोक्खाय नाणं वा = मोक्खनाणं (मोक्षजातम्), लोयाय हिओ = लोयहिओ
(लोहद्वितः), लोमस्स सुहो = लोमसुहो (लोम्बुलः), कुंभस्स मट्ठिआ =
कुंभमट्ठिआ (कुम्भमृत्तिका), भूयाणं बली = भूयबली (भूतबलि), वंभणाय
हिअं = वंभणहिअं (बाह्यनहितम्), गवस्स हिअं = गवहिअं (गोदितम्), थंभाय
कट्टं = थंभकट्टं (थूपादकः), बहुजणस्स हिओ = बहुजणहिओ (बहुजनदितः) ।

(५) पञ्चमी तत्पुरुष (पंचमी तप्पुरिस)

(१) जत्र तत्पुरुष समास का पहला पद पञ्चमी विभक्ति में रहता है, तत्र उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

(३) जिसमें विशेष्य विशेषण से पूर्व रहे, उसे विशेष्य पूर्वपद कहते हैं।
यथा—वीरो अ एसो जिणिदो = वीरजिणिदो (वीरजिनेन्द्रः), महतो च सो
रायो = महारायो (महाराज.), कुमारी अ सा समणा = कुमारीसमणा,
कुमारसमणा (कुमारीव्रमण), कुमारी अ सा गन्धिणी = कुमारगन्धिणी
(कुमारगन्धिनी) ।

(४) जिसके दोनों पद विशेषणवाचक हों, वह विशेषणोभयपद कहलाता
है। यथा—

रक्तो अ एस 'सेओ = रक्तसेओ आसो (रक्तसेतोऽथः), सीअ च तं
उण्हं य = सीउण्हं जलं (सीतोष्णं जलम्), रत्तं अ तं पीअं य = रत्तपीअं यत्थं
(रत्तपीतं वस्त्रम्) ।

(५) उपमानवाचक शब्द जिसके पूर्वपद में रहे, वह उपमानपूर्वपद कहलाता
है। यथा—

चंदो इय मुहं = चन्द्रमुहं (चन्द्रमुखम्), घणो इय सामो = घणसामो
(घणस्थानम्), वज्जो इय देहो = वज्जदेहो (वज्रहः), चन्दो इय आणणं =
चन्द्राणणं (चन्द्राननम्) ।

(६) उपमानवाचक शब्द जिसके उत्तरपद में हो, उसे उपमानोत्तरपद कहते
हैं। यथा—

मुहं चंदो ङ = मुहचंदो (मुखचन्द्रः), जिगो चंदो ङ = जिगचंदो
(जितचन्द्रः) ।

(७) जिसमें सम्भावना वाची जाय ऐसा विशेषण अपने विशेष्य के साथ
समास को प्राप्त करता है और इस प्रकार के समास को सम्भावनापूर्वपद समास कहते
हैं। यथा—

संजमो एय धणं = संजमधणं (संयमधनम्), तवो चिअ धणं = तवोधणं
(तपोधनम्), पुण्णं चेअ पाहेज्जं = पुण्णपाहेज्जं (पूर्यपापेशम्) ।

(८) जिसमें अवधारणा वाची जाय ऐसा विशेषण पद भी अपने विशेष्य पद
के साथ समस्त हो जाता है। यथा—

अज्जाणं चेअ तिमिरं = अज्जाणतिमिरं (अज्ञानतिमिरम्), जाणं चेअ धणं =
जाणधणं (ज्ञानधनम्), पयमेव पउमं = पयपउमं (पादपदम्) ।

द्विगु (दिगु)

(१) जिस तत्पुरुष के संबन्धवाचक शब्द पूर्वपद में हों, वह द्विगु समास
कहलाता है। द्विगु समास दो प्रकार का होता है—(१) एकवचनी और (२)
अनेकवचनी ।

न लोमो = अलोमो (अलोकः), न देवो = अदेवो (अदेवः), न आयारो = अणायारो (अणायारः), न इट्ठं = अणिट्ठं (अनिट्ठम्), न दिट्ठं = अदिट्ठं (अदिट्ठम्), न अवज्जं = अणवज्जं (अवज्जम्), न विरई = अविरई (अविरिः), न सच्चम् = असच्चम् (असत्त्वम्), न ईसो = अणीसो (अनीशः), न कयं = अरुयं (अरुत्वम्), न वंभणो = अवंभणो (अवभरणः) ।

(ख) प्रादितत्पुरुष (प्रादितत्पुसि)

(१) जय तत्पुरुष समास में प्रथमपद 'प्र-प' आदि उपसर्गों में से कोई हो तो उसे प्रादि तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

: पगतो आयरियो = पायरिओ (प्राचार्यः), उग्गओ वेत्तं = उव्वेलो (उव्वेलः), संगतो अत्थो = समत्थो (समर्थः), अइक्कंतो पल्लं = अइपल्लं (अतिपश्यन्), निग्गओ कासीए = निक्कासी (निक्कासी) ।

(ग) उपपद समास

(१) जय तत्पुरुष समास का प्रथमपद ऐसी संज्ञा या अव्यय में हो, जिसके न रहने से शब्द का रूप ही न रह सकता हो, तो उसे उपपद तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

कुम्भं करइ त्ति = कुम्भआरो (कुम्भकारः), भासआरो (भाष्यकारः), सव्वण्णु (सर्वज्ञः), पायवो (पादपः), कच्छवो (कच्छपः), अहिवो (अधिपः), गिहस्थो (गृहस्थः), सुत्तआरो (सूत्रकारः), वुत्तिआरो (वृत्तिकारः), निव्वया (निम्नगा), नीयगा (नीचगा), नम्मया (नर्मदा), सगडम्मि (सकृदभिन्ना), पायणासओ (पापनाशकः) ।

(घ) कर्मधारय

(१) जय प्रथमपद विशेषण हो और दूसरा विशेष्य हो तो उसे कर्मधारय कहते हैं । इसके सात भेद हैं—(१) विशेषणपूर्वपद (२) विशेष्यपूर्वपद (३) विशेषणोभयपद (४) उपमानपूर्वपद (५) उपमानोत्तरपद (६) सम्भावनापूर्वपद (७) अवधारणापूर्वपद ।

(२) जिसमें विशेषण विशेष्य से पहले रहे, उसको विशेषणपूर्वपद कहते हैं । यथा—रत्तो अ एसो घडो = रत्तघडो (रत्तघटः), सुंदरा य एसा पडिमा = सुंदर-पडिमा (सुंदरप्रतिमा), परमं एअं पयं परमपयं (परमपदम्), योअं तं यत्थं = योअवत्थं (योवत्त्वम्), गोरो सो वसभो = गोवसभो (गौरवपथः), महंतो सो वीरो = महावीरो (महावीरः), वीरो सो जिणो = वीरजिणो (वीरजिनः), कण्हो य सो पक्खो = कण्हपक्खो (कण्हपक्षः), सुद्धो सो पक्खो = सुद्ध-पक्खो (शुद्धपक्षः) ।

सेयं अवरं जेसि ते = सेयं वरा (स्वेताम्बराः); महंता वाहुणो जरस सो महावाहु (महाबाहुः); पंच वत्ताणि जरस सो = पंचवत्तो सीहो (पञ्चवक्त्रः); चत्तारि गुहाणि जरस सो = चउम्मुहो (चतुर्मुखः) ब्रह्मा; तिण्णि नेत्ताणि जरस सो = तिणेत्तो (त्रिनेत्रः) हरो; एगो दंतो जरस सो = एगदंतो (एकदन्तः) गणेसो; पीरा नरा जम्मि गामे सो गामो = वीरणरो (वीरनरः); सुत्तो सिंघो जाए गुहाए सा = सुत्तसिंहा गुहा (सुतसिंहा गुफा); दिण्णाइं वयाइं जेसि ते = दिण्णवयो साहवो (द्वयवताः साधवः); पत्तं नाणं जं सो = पत्तनाणो मुणी (प्राप्तज्ञानः मुनिः) जिओ क़ामो जेण सो = जिअक़ामो अक़लंतो (जितक़ामोऽक़लङ्कः); नट्टं दंसणं जत्तो सो = नट्टदंसगो मुणी (नट्टदर्शनो मुनिः); जिओ अरिगणो जेण सो = जिआरिगणो अजिओ (जितारिगणोऽजितः) ।

(३९) = अधिकरण बहुव्रीहि यह है, जिसके सभी पद प्रथमान्त न हों, केवल एक ही पद प्रथमान्त हो और दूसरा पद पष्ठी या सप्तमी में हो । यथा—

चक्रं पाणिम्मि जरस सो चक्रपागी (चक्रपाणिः); चक्रं हत्थे जरस सो चक्रहत्थो भरहो (चक्रहस्तो भरतः); गंडीघं करे जरस सो गंडीघकरो अग्गुणो (गण्डीयकरोऽर्जुनः) ।

(२) विशेषणपूर्वपद बहुव्रीहि

(४०) जिस बहुव्रीहि का प्रथम पद विशेषण हो, उसे विशेषणपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं । यथा—

णीलो कंठो जरस सो णीलकंठो मोरो (नीलकण्ठो मयूरः) ।

(३) उपमानपूर्वपद बहुव्रीहि

(४१) जिस बहुव्रीहि का प्रथमपद उपमान हो, उसे उपमानपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं । यथा—

चन्दो इय मुहं जाए = चंदमुहो कज़ा (चन्द्रमुखी कन्या); मियनयणाइं इय नयणाणि जाए सा = मियनयणा (युगनयना); कमलनयणाइं इय नयणाणि जाए सा = रमलनयणा (कमलनयना); गजाणण इय आणणो जरस सो = गजाणगो (गजानन); हंसगमणं इय गमणं जाए सा = हंसगमणा (हंसगमना) ।

(४) अवधारणपूर्वपद बहुव्रीहि

(४२) जिसके पूर्वपद में अवधारणा पायी जाय, उसे अवधारणपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं । यथा—

चरणं चेअ घणं जाणं = चरणघणा साहवो (चरणधनाः साधवः) ।

(२) समाहार अर्थ में जो द्विगु समास होता है, वह एकवचन की बहुलता है और उपमें सदा नपुंसकलिङ्ग और पुरुषचन होता है । यथा—

नवपहं वृत्तार्ण समाहारो = नववत्तं (नववत्तरम्), चउपहं कसायाणं समूहो = चउपसायं (चउपसायम्), तिहं लोगाणं समूहो = तिलोयं (तिलोयम्), तिहं लोआणं समूहो = तिलोई (तिलोई) ।

(३) प्राकृत में कोई-कोई समाहारद्विगु पुंलिङ्ग भी हो जाता है । यथा—

तिहं वियप्पाणं समाहारो च्चि = तिवियप्पो (तिवियप्पोम्) ।

(४) संज्ञा में जो द्विगु होता है, वह अव्यक्त्वज्ञा की बहुलता है और इसमें वचन और लिङ्ग का कोई नियम नहीं रहता है । यथा—

विण्णि लोया = तिलोया (तिलोयाः), चउरो विसाओ = चउदिसा (चउदिसाः) ।

(३) बहुव्रीहि (बहुव्रीहि)

(१) जब समास में आगे हुए दो या अधिक वह किसी अन्य शब्द के विशेषण हों तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं । यथा—

पीअं अवरं जस्स सो = पीआंवरो (पीताम्बरः) । इस समास के मुख्य दो भेद हैं—(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि और (२) व्यधिकरण बहुव्रीहि । विशेषा-पेक्षया इसके सात भेद हैं—(१) द्विपद, (२) बहुपद (३) सहपूर्वपद (४) संख्यो-त्तरपद, (५) संख्योभयपद, (६) व्यतिहारलक्षण (७) दिगन्तरलक्षण ।

(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि

(२) समानाधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसके दोनों या सभी शब्दों का समान अधिकरण हो अर्थात् वे प्रथमान्त में हों । यथा—

पीअं अवरं जस्स सो पीआंवरो (पीताम्बरः); आरुद्धो वाणरो जं रुक्खं सो = आरुद्धवाणरो रुक्खो (आरुद्धवाणरः वृक्षः); जिआणि इंदियाणि जेण सो = जिइंदियो सुणी (जितेन्द्रियः सुनिः); जिओ कामो जेण सो = जिअकामो गहादेवो (जितकामः महादेवः); जिआ परीसहा जेण सो = जितपरीसहो गोगमो (जितपरीषदः गौतमः); भट्टो आचरो जाओ सो = भट्टाचारो जणो (भट्टाचारः जनः), चट्टो मोहो जाओ सो = चट्टमोहो साहू (चट्टमोहः साधुः); चोरं बंधचेरं जस्स सो = चोरबंधचेरो जंयू (चोरबन्धचारी—जम्बू); समं चउरसं संठाणं जस्स सो = समचउरससंठाणो रामो (समचउरससंस्थानः रामः); कओ अत्थो जस्स सो = कयत्थो कण्हो (कृतार्थः कृष्णः), आसा अवरं जेसि ते = आसंवरा (दिगम्बराः);

(४) द्वन्द्व समास (द्वंद्व समास)

(१) दो या दो से अधिक संज्ञाएँ एक साथ रखी गई हों और उन्हें च (य) शब्द के द्वारा जोड़ा गया हो तो यह द्वन्द्व समास कहलाता है। इस समास के तीन भेद हैं—

(१) इतरेतर द्वन्द्व । (२) समाहार द्वन्द्व । (३) पुरुषेय द्वन्द्व ।

(१) इतरेतर द्वन्द्व

(२) जिस समास में आई हुई दोनों संज्ञाएँ अपना प्रमाण अग्नित्व रखती हों, उस समास को इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

पुष्पं य पार्थ य = पुष्पपार्थाई (पुष्पपार्थ) ।

अजिभो अ संतो अ = अजियसंतो (अजितराजो) ।

उसहो अ वीरो अ = उसहवीरा (कृष्णवीरो) ।

देवा य दानवा य गंधर्वा य = देवदानवगंधर्वा (देवदानवगन्धर्वाः) ।

पाणरो अ मोरो अ हंसो अ = पानरमोरहंसा (पानरमूरहंसाः) ।

सावभो अ साविभा य = सावभसाविभाभो (सावभसाविके) ।

देवा य देवीभो अ = देवदेवीभो (देवदेव्यः) ।

सामू अ बहू अ = सामूबहूओ (बहूवहूओ) ।

भरत्तं अ अभरत्तो अ = भरत्ताभरत्ताणि (भरत्ताभरत्ते) ।

पत्तं य पुष्कं य फलं य = पत्तपुष्कफलाणि (पत्तपुष्कफलाणि) ।

जीवा य अजीवा य = जीवाजीवा (जीवाजीवो) ।

मुहं य दुक्त्वं य = मुहदुक्त्वाई (मुहदुक्ते) ।

सुरा य असुरा य = सुरासुरा (सुरासुराः) ।

हस्ता य पाया य = हस्तपाया (हस्तपादाः) ।

लाहा ॥ अलाहा ॥ = लाहालाहा (लाहालाहो) ।

सारं य असारं य = सारासारं (सारासारेम्) ।

रुचं य सोदरगं ॥ जीवणं ॥ = रुचसोदरगजीवणाणि (रुचसोदरगजीवणानि) ।

(२) समाहारद्वन्द्व

(३) जिस समास में अ या य शब्द से ङी हुई संज्ञाएँ अपना पृथक् आई रखने पर भी समूह अर्थ का बोध कराती हों, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

असणं य पाणं य पृथुसि समाहारो = असणपाणं (अश्वपानम्) ।

तवो अ संजमो ॥ पृथुसि समाहारो = तवसंजमं (तपःसंयमम्) ।

नानं य दंसगं य चरितं य पृथुसि समाहारो = नानदंसगचरितं

(ज्ञानदर्शनचरित्रम्) ।

(५) बहुपद बहुव्रीहि

(७) साधनदशा में दो से अधिक पदों का जो समास होता है, उसे बहुपद बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

धुओ सन्तो फिलेसो जरस सो = धुअसन्तफिलेसो जिणो (धुतसर्गके शो बिनः) ।

(६) नन्, न बहुव्रीहि

(८) निषेध के अर्थवाचक अ और अण के साथ जो बहुव्रीहि समास होता है, उसे नन् या न बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

न अत्थि भयं जस्स सो = अभयो (भयः); न अत्थि पुत्तो जस्स सो = अपुत्तो (अपुत्रः); न अत्थि पाहो जरस सो = अणाहो (अनाथः); न अत्थि पच्छिमो जरस सो = अपच्छिमो (अपथिमः); न अत्थि उयरं जीए सा = अणुयरा (अनुदश कथा); नत्थि उज्जमो जरस सो = अणुजमो पुरिसो (अनुधमः पुरुषः); नत्थि अवज्जं जस्स सो = अणवज्जो मुणी (अनयो मुनिः) ।

(७) सहपूर्व बहुव्रीहि

(९) सह अभ्यय जिस बहुव्रीहि समास में हो, उसे सहपूर्व बहुव्रीहि कहते हैं। सह अभ्यय का तृतीयान्त पद के साथ समास होता है यथा आशीर्वाद अर्थ को छोड़ घेप श्रौ में सह स्थान पर स आदिष्ट होता है। यथा—पुत्रेण सह = सपुत्रो राया (सपुत्रः राजा); सीसेण सह = ससीसो आयरिओ (ससिप्पः साचार्यः); पुण्णेण सह = सपुण्णो लोयो (सपुण्यः लोकः); पावेण सह = सपावो रक्खसो (सपावः शङ्खः); कम्मणा सह = सकम्मो नरो (सक्कमं नरः); फलेण सह = सकलं (सफलम्); मूलेण सह = समूलं (समूलं) चेत्येण सह = सचेत्तं ण्हाणं (सचैत्तं दानम्); फलत्तेण सह = सकलत्तो नरो (सकलत्रं) ।

(८) प्रादि बहुव्रीहि

(१०) प, नि, वि, अव, अइ, परि आदि उपसर्गों के साथ जो बहुव्रीहि समास होता है, उसे प्रादि बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

प—पमिट्ठं पुणं जस्स सो = पपुणो जणो (प्रपुण्यः जनः) ।

नि—निग्गया एज्जा जस्स सो = निल्लो (निर्लेजः) ।

वि—विग्गओ धवो जाए सा = विहवा (विधवा) ।

अव—अवगतं रुवं जस्स सो = अवरुवो (अपरूपः) ।

अइ—अइक्खो भग्गो जेण सो = अइक्खो रद्धो (अतिमार्गः रथः) ।

परि—परिभयं जलं जाए सा = परिक्खा परिहा (परिक्खा परिखा) ।

निर्—निग्गमा द्वा जस्स सो = निग्गो जणो (निर्गो जनः) ।

जोण्हा + आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नारान्)

सद + आल = सहालो (शब्दवान्)

फडा + आल = फडालो (फटावान्)

आलु—ईसा + आलु = ईसालु (ईर्ष्यावान्)

दया + आलु + दयालु (दयालु)

नेह + आलु = नेहानु (स्नेहवान्)

एज्जा + आलु = छज्जालु (छज्जारान्), स्त्री० छज्जालुभा (छज्जावती)

इत्त—रुवर + इत्त = कव्वइत्तो (काव्यवान्)

माण + इत्त = माणइत्तो (मानवान्)

इर—गव्व + इर = गव्विरो (गर्ववान्)

इछ—सोहा + इछ = सोहिछो (शोभावान्)

छाया + इछ = छाइछो (छायावान्)

जाम + इछ = जामइछो (यामवान्)

उछ—वियार + उछ = वियारछो (विचारवान्)

वियार + उछ = वियारछो (विचारवान्)

मंत + उछ = मंतुछो (रमधुवान्)

इप्प + उछ = इप्पुछो (इर्षवान्)

मण—धण + मण = धणमणो (धनवान्)

सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्)

बोहा + मण = बोहामणा (भोवान्)

मंत—इनु + मंत = इनुमंतो (हनुमान्)

सिरि + मंत = सिरिमंतो (भीमान्)

पुण्ण + मंत = पुण्णमंतो (पुण्यवान्)

वंत—धण + वंत = धणवंतो (धनवान्)

भत्ति + वंत = भत्तिवंतो (भक्तिमान्)

(१०) संस्कृत के तस् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में तो और विकल्प से दो आदेश होते हैं^१ । यथा—

सव्व + तस् (तो) = सव्वतो, सव्वदो, सव्वओ (सर्वतः)

एक + तस् (तो) = एकतो, एकदो, एकओ (एकतः)

अग्र + तस् (तो) = अग्रतो, अग्रदो, अग्रओ (अग्रतः)

१. तो दो तसो वा ५।२।१६० तसः प्रत्ययस्य स्थाने तो, दो इत्यादेशौ नवतः ।

पुर + इत्थ = पुरित्थं (पुरे भवम्), स्त्री० पुरित्थी ।

देह (अधस्) + इत्थ = देहत्थं (अधो भवम्) स्त्री० देहत्थी ।

उपरि + इत्थ = उपरित्थं (उपरि भवम्) ।

उत्त—अप्य + उत्थ = अप्युत्थं (धातमनि भवम्) ।

तरु + उत्थ = तरुत्थं (तरौ भवम्) ।

नगर + उत्थ = नगरत्थं (नगरे भवम्) ।

(६) संस्कृत के वत् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'व्य' आदेश होता है ।

यथा—

व्य—महु + व्य = महुव्य (मधुवम्)

मदुर + व्य = महुस्व्य पाडलिपुत्ते पासाया (मधुराजत् पाडलिपुत्ते पासायाः)

(७) संस्कृत के ह्य के स्थान पर प्राकृत में डिमा और तण विकल्प से आदेश होते हैं । यथा—

पीण + इमा = पीणिमा (पीनस्त्वम्) ।

पीण + तण = पीणतणं, पीण + त्त = पीणत्तं (पीनस्त्वम्) ।

पुष्फ + इमा = पुष्फिमा (पुष्पस्त्वम्) ।

पुष्फ + तण = पुष्फतणं, पुष्फ + त्त = पुष्फत्तं (पुष्पस्त्वम्) ।

(८) पार अर्थ प्रकट करने के लिए—क्रिया की अभ्यावृत्ति की गणना आर्य में संस्कृत के कृत्व् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'हुत्त' आदेश होता है^१ । आर्य प्राकृत में यह प्रत्यय लुप्त हो जाता है । यथा—

पय + हुत्त = पयहुत्तं (पक्कृत्वः—पुक्कवारम्) ।

द्व + हुत्त = दुहुत्तं (द्विवारम्) ।

ति + हुत्त = तिहुत्तं (तिवारम्) ।

सप + हुत्त = सपहुत्तं (सप्तवारम्) ।

सहस्र + हुत्त = सहस्रहुत्तं (सहस्रवारम्) ।

(९) 'घाला' अर्थ बतलानेवाले संस्कृत के मत्तप् प्रत्यय के स्थान पर आलु, इल्ल, उल्ल, आल्ल, वल्ल और मल्ल आदेश होते हैं^२ ।

आल्ल—रस + आल्ल = रसालो (रसवान्) ।

जडा + आल्ल = जडालो (जडामान्) ।

१. बतेव्वं: ८।२।१५० ।

२. त्वस्य डिमा-तणौ वा ८।२।१५४ ।

३. कृत्वसो हुत्तं ८।२।१५८ ।

४. घाल्विल्लोल्लाल वल्ल-मल्लेत्तेर-मण्ण मतो: ८।२।१५६ ।

जोणहा + आल = जोणहालो (ज्योत्स्नावान्)

सह + आल = सहालो (शब्दवान्)

फडा + आल = फडालो (फटावान्)

आलु—ईसा + आलु = ईसालु (ईर्ष्यावान्)

दया + आलु + दयालु (दयालु)

नेह + आलु = नेहालु (स्नेहवान्)

लज्जा + आलु = लज्जालु (लज्जावान्), स्त्री० लज्जालुआ (लज्जावती)

इत्त—कव्व + इत्त = कव्वइत्तो (कान्यवान्)

माण + इत्त = माणइत्तो (मानवान्)

इर—गव्व + इर = गव्विरो (गर्ववान्)

इल्ल—सोहा + इल्ल = सोहिल्लो (शोभावान्)

छाया + इल्ल = छायाल्लो (छायावान्)

जाम + इल्ल = जामइल्लो (पामवान्)

उल्ल—विपार + उल्ल = विपारल्लो (विचारवान्)

विपार + उल्ल = विपारल्लो (विचारवान्)

मंस + उल्ल = मंसुल्लो (शमश्रुवान्)

इप्प + उल्ल = इप्पुल्लो (इर्षवान्)

मण—धण + मण = धणमणो (धनवान्)

सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्)

घोहा + मण = घोहामणा (भावान्)

मंत—हनु + मंत = हनुमंतो (हनुमान्)

सिरि + मंत = सिरिमंतो (भीमान्)

पुण्ण + मंत = पुण्णमंतो (पुण्यवान्)

वंत—धण + वंत = धणवंतो (धनवान्)

भत्ति + वंत = भत्तिवंतो (भक्तिमान्)

(१०) संस्कृत के तस् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में चो और विकल्प से दो आदेश होते हैं^१ । यथा—

सज्ज + तस् (चो) = सज्जचो, सज्जदो, सज्जओ (सर्जतः)

एक + तस् (चो) = एकचो, एकदो, एकओ (एकतः)

अन्न + तस् (चो) = अन्नचो, अन्नदो, अन्नओ (अन्यतः)

१. चो दो तसो वा ५।२।१६० तसः प्रत्ययस्य स्थाने चो, दो इत्यादेशौ भवतः ।

कु + तस् (चो) = कुचो, रुचो, उचो (चुचः)

ज + तस् (चो) = जचो, जचो, जचो (यचः)

त + तस् (चो) = तचो, तचो, तचो (ततः)

इ + तस् (चो) = इचो, इचो, इचो (इतः)

(११) संस्कृत के ऋप् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में हि, ह्र और स्थ प्रत्यय आदेश होते हैं^१। यथा—

ज + ऋ (हि) = जहि, जह, जस्थ (यग्र)

त + ऋ (हि) = तहि, तह, तस्थ (तत्र)

क + ऋ (हि) = कहि, कह, कस्थ (कुत्र)

अग्र + ऋ (हि) = अग्रहि, अग्रह, अग्रस्थ (अन्यत्र)

(१२) स्थायिक क प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से अ, इल और उल प्रत्यय आदेश होते हैं^२। यथा—

अ—चंद् + अ = चंद्अ, चंद्ओ (चन्दकः)

हभय + अ = ह्रिभयअ, ह्रिभयं (हृदयम्)

यहुअ + अ = यहुअअ, यहुअं (यहुम्)

इल—पल्लव + इल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवः)

पुरा + इल = पुरिल्लो, पुरा (पुरा)

उल—पिभ + उल = पिउल्लो, पिभा (पिबा)

हस्थ + उल = हस्थुल्लो, हस्थो (हस्तः)

(१३) अंकोठ शब्द को छोड़ दोष बीजवाचो शब्दों से लगने वाले तैल प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'एल्ल' प्रत्यय जोड़ा जाता है^३। यथा—

कड्ड + तैल = कड्डएल्लं (कड्डतैलम्)

अंकोठ + तैल = अंकोठएल्लं (अंकोठतैलम्)

(१४) यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में इत्तिअ आदेश होता है और एतद् शब्द का लुक् भी होता है^४। यथा—

यद् (ज) + इत्तिअ = जित्तिअं (यावत्)

तद् (त) + इत्तिअ = तित्तिअं (तावत्)

एतद् + इत्तिअ = इत्तिअं (एतावत्)

१. ऋपो हि-हित्याः ८।२।१६१ ऋप् प्रत्ययस्य एते भवन्ति ।

२. स्थाये कथं वा ८।२।१६४

३. अनङ्गुठौठात्तैलस्य डेल्लः ८।२।१५५

४. यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च ८।२।१५६

(१६) इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में डेत्तिअ, डेत्तिल और डेह्द आदेश होते हैं। इन प्रत्ययों के आने पर एतद् शब्द का लुक् हो जाता है^१। यथा—

ज + एत्तिअ = जेत्तिअं	}	यावत्
ज + एत्तिल = जेत्तिलं		
ज + एह्द = जेह्दं		
त + एत्तिअ = तेत्तिअं	}	सावत्
त + एत्तिल = तेत्तिलं		
त + एह्द = तेह्दं		
एत + एत्तिअ = एत्तिअं	}	एतावत्, इयत्
एत + एत्तिल = एत्तिलं		
एत + एह्द = एह्दं		
क + एत्तिअ = केत्तिअं	}	कियत्
क + एत्तिल = केत्तिलं		
क + एह्द = केह्दं		

(१७) भाववाचक संस्कृत के त्व और तल प्रत्यय के स्थान पर ये ही प्रत्यय रह जाते हैं^२। यथा—

मृदुक + त्व = मउअत्ता + ता = मउअत्तता, मउअत्तया (मृदुकत्वता)।

(१७) एक शब्द के उत्तर में होनेवाले दा प्रत्यय के स्थान में सि, सिअ और इआ आदेश होते हैं^३। यथा—

एक + सि = एकसि	}	एवदा
एक + सिअ = एकसिअं		
एक + इआ = एकइआ		

(१८) झू शब्द से स्मार्थ में मया और डमया ये दो प्रत्यय होते हैं^४। यथा—

झू(मु) + मया = मुमया	}	झू
झू(म) + डमया = डमया		

(१९) शनि शब्द से स्वार्थिक डिअम् प्रत्यय होता है^५। यथा—

१. इदकिमथ डेत्तिअ-डेत्तिल-डेह्दः ८।२।१५७

२. स्वादेः सः ८।२।१७२

४. झू वो मया डमया ८।२।१६७

३. वैकाहः सि सिअं इआ ८।२।१६२

५. शनेसो डिअम् ८।२।१६८

शनैः + इअ = सणिअं (शनैः), सणिअमवगूढो ।

(२०) मनाक् शब्द से स्वार्थिक डयम् और छिअम् प्रत्यय विचल्य से होते हैं । यथा—

मनाक् (मण) + अय = मणयं
मनाक् (मण) + इय = मणियं, मणा } मनाक्

(२१) मिध शब्द से स्वार्थिक छालिअ प्रत्यय विकल्प से होता है^२ । यथा—
मिध (मीस) + आलिअ = मीसाछिअं, मीसं (मिधम्)

(२२) दीर्घ शब्द से स्वार्थिक रो प्रत्यय विकल्प से होता है^३ । यथा—
दीर्घ (दीह) + र = दीहरं, दीहं (दीर्घम्)

(२३) विद्युत्, पत्र, पीत और अन्ध शब्द से स्वार्थ में ल प्रत्यय विकल्प से होता है^४ । यथा—

विद्युत् (विज्जु) + ल = विज्जुल्ल, विज्जु (विद्युत्)

पत्र (पत्त) + ल = पत्तलं, पत्तं (पत्रम्)

पीत (पीअ) + ल = पीअलं, पीअलं, पीअं (पीतम्)

अन्ध + ल = अंधल्लो, अंधो (अन्धः)

(२४) नव और एक शब्द को स्वार्थ में विश्व से छो प्रत्यय होता है^५ ।

यथा—

नव + छ = नवल्लो, नवो (नवरुः)

एक + छ = एकल्लो, एको (एकुरुः)

अवरि + ल्ल = अवलिस्सो

(२५) पय शब्द से होने वाले ण के स्थान में इस्स प्रत्यय होता है^६ ।

यथा—

पय + इअ = पदिअो (पान्थः)

(२६) आत्म शब्द से होवेवाले ईय के स्थान में ण्य आदेश होता है^७ ।

यथा—

अप्प + ण्य = अप्पण्यं (आत्मीयम्)

१. मनाको न वा डयं च ८।२।१६६

२. मिआहुत्तिअः ८।२।१७०

३. रो दीर्घादि ८।२।१७१

४. विद्युत्पत्र-पीतान्वाल्लः ८।२।१७३

५. स्तो नवेकाइ ८।२।१६५

६. पयो एत्थेकट् ८।२।१५२

७. ईयस्यात्मनो ण्यः ८।२।१५३

(२) सर्वाङ्ग शब्द से विहित इन के स्थान में इरु आदेश होता है^१ । यथा—
सर्व्वंग + इअ = सर्व्वंगिगो (सर्वाङ्गीणः)

(२८) पर और राजन् शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए क्त प्रत्यय होता है । यथा—

पर + क्त = परवक्तं (परकीयम्)

राय + क्त = रायवक्तं (राजकीयम्)

(२९) संस्कृत तद्धितान्त रूपों के ऊपर से प्राकृत के रूप बनाये जाते हैं ।

यथा—

धनिन् = धनी — धणी

कानीनः = कानीणो

आर्थिकः = अर्थिभो

मदीयम् = मईयं

तपस्विन् = तपस्वी = तपस्सी

पोनसा = पोणथा

भैक्षम् = भिक्षं

राजन्मः = रायण्णो

आस्तिकः = अस्थिभो

कोशेयम् = कोसेयं

आर्पम् = आरिप्तं

पितामहो = पिभामहो

वदा = जया; वदा = कथा, सर्वदा = सव्वया, तदा = तप, उच्यदा = अण्णदा;

सर्वथा = सव्वहा ।

तर और तम प्रत्यय

प्राकृत में एक से भेद और सबसे भेद का मात्र बतलाने के लिए तर (अर), तम (अम), ईयस् (ईअस्) और इष्ट (इह) का प्रयोग संस्कृत के समान ही होता है । इन तुलनात्मक विशेषणों की (Degree of Comparison) की तालिका दी जाती है ।

तिक्ख (तीक्ष्ण)	तिक्खअर (तीक्ष्णतर)	तिक्खअम (तीक्ष्णतम)
उज्जल (उज्जल)	उज्जलअर (उज्जलतर)	उज्जलअम (उज्जलतम)
परमहििय (प्रगृहीत)	परमहिियअर (प्रगृहीततर)	परमहिियतम (प्रगृहीततम)
थोव (स्तोक)	थोवअर (स्तोकतर)	थोवअम (स्तोकतम)
अप्प (अल्प)	अप्पअर (अल्पतर)	अप्पअम (अल्पतम)
अहिअ (अधिक)	अहिअअर, अहिअइर (अधिकतर)	अहिअअम, अहिअयम (अधिकतम)
पिअ (प्रिय)	पिअअर (प्रियतर)	पिअअम (प्रियतम)
इल्ल, एल्ल (लघु)	इल्लअर (लघुतर)	इल्लअम (लघुतम)

अप्य (अल्प)	कणीअस (कनीयस्)	कणिट्ठ, कणिट्ठग (कनिष्ठ)
पट्ट	भूयस (भूयस्)	भूइट्ठ (भूयिष्ठ)
पावी (पापी)	पावीयस (पापीयस्)	पाविट्ठ (पापिष्ठ)
गुरु	गरीयस (गरीयस्)	गरिठ (गरिष्ठ)
जेट्ठ (ज्येष्ठ)	जेट्ठयर (ज्येष्ठतर)	जेट्ठयम (ज्येष्ठतम)
विउल (विपुल)	विउलअर	विउलअम (विपुलतम)
पड्ड (पट्ट)	पड्डीअस, पड्डअर (पटीयस्)	पडिड्ड, पड्डअम (पट्टतम)
धणी (धनी)	धणिअर	धणिअम
महा	महत्तर	महत्तम
जुड्ड (शुद्ध)	जायस (ज्यायस्)	जेठ (ज्येष्ठ)
थूल (स्थूल)	थूलअर (स्थूलतर)	थूलअम (स्थूलतम)
बहुल	बंहीअस (बंहीअस्)	बंदिट्ठ (बंदिष्ठ)
दीहर (दीर्घ)	दीहरअस (दीर्घतर)	दीहरअम (दीर्घतम)
अंतिम (अन्तिम)	नेदीअस (नेदीयस्)	नेदिट्ठ (नेदिष्ठ)
दूर	दवीअस (दवीयस्)	दविट्ठ (दविष्ठ)
पाचअ (पाचक)	पाचअअर (पाचरतर)	पाचअअम (पाचरतम)
विउस (विद्वान्)	विउसअर (विद्वत्तर)	विउसअम (विद्वत्तम)
मिउ (मृदु)	मिउअर (मृदुतर)	मिउअम (मृदुतम)
धम्मी (धर्मी)	धम्मीअस (धर्मीयस्)	धम्मिड्ड (धर्मिष्ठ)
खुइ (क्षुब्ध)	खुइअर (क्षुब्धतर)	खुइअम (क्षुब्धतम)
मइम (मतिमान्)	मईअस (मतीयस्)	मइड्ड (मतिष्ठ)

नवाँ अध्याय

क्रियाविचार

प्राकृत में क्रिया शब्दों के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातुओं में विविध प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के रूप बनते हैं।

प्राकृत में क्रियारूपों के विकास पर सादृश्य का प्रभाव संज्ञा आदि रूपों की अपेक्षा और भी अधिक व्यापक रूप में मिलता है। द्विवचन का लोप, कर्तृवाक्य और कर्मवाक्य के रूपों का प्रायः एकीकरण, आत्मनेपद के रूपों का हास, विविध काल रूपों में अनुरूपता, क्रिया के विभिन्न रूपों में ध्वनिपरिवर्तन के कारण समानता आदि प्राकृत के क्रियाविकास की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं। संस्कृत धातुएँ भ्वादि, भदादि, लुङोत्थादि, स्वादि, लृट्वादि, रुधादि, लनादि, कृवादि और चुरादि इन दश गणों में विभक्त हैं। इन गणों के अनुसार ही विभक्तियों के जुड़ने के पूर्व धातु में परिवर्तन होता है। परन्तु इन सभमें भ्वादि रूपों को ही व्यापकता प्राप्त के क्रियापदों के विस्तार में मिलती है। फाल्गुना की दृष्टि से वर्तमान, भूत, आह्ला, विधि, भविष्य और क्रिया-तिपत्ति के प्रयोग प्राकृत में दिखलायी पड़ते हैं। सदायक क्रिया के साथ कृदन्त रूपों का व्यवहार बहुलता से उपलब्ध होता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि सादृश्य और ध्वनिविकास के कारण क्रिया के रूप अधिक सरल हो गये हैं। संस्कृत के समान क्रिया-रूपों में पेचीदगी नहीं है।

क्रियारूपों की जानकारी के सम्यन्ध में निम्न नियम स्मरणीय हैं—

(१) प्राकृत में लिप् आदि प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं। अकारान्त धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं में आत्मनेपदी और परस्मैपदी का भेद नहीं माना जाता। हाँ, कृदन्त या अकारान्त धातुएँ वभ्यपदी होती हैं।

(२) अकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम और मध्यम पुरुष एकवचन के स्थान में क्रमशः ए और से आदेश विकल्प से होते हैं। यथा—तुवरण < त्वरते, तुवरसे < त्वरसे।

(३) कृदन्त धातुओं से 'मि' के पर में रहने पर पूर्व के 'अ' का आत्प्र विकल्प से होता है। यथा—हसामि, हसमि इत्यादि।

(४) अकारान्त धातुओं से मो, मु और म पर में रह तो पूर्व के अकार के स्थान में इ और आ होते हैं। कहीं-कहीं ए भी हो जाता है। यथा—हसिमो, हसामो, हसेमो, हसिमु, हसेमु इत्यादि।

(५) स्वरान्त धातु से भूतकाल में सभी पुरुषों और वचनों में विहित प्रत्ययों के स्थान पर ही, सी और हीअ आदेश होते हैं। यथा—काही, कासी, काहीअ; ठाही, ठासी और ठाहीअ (आकार्षात्, अकरोत्, चकार; अस्थात्, अतिष्ठत्, तस्थौ)।

(६) व्यञ्जनान्त धातुओं से भूतकाल में विहित सभी प्रत्ययों के स्थान में ह्रस्व आदेश होता है। यथा—गहणीअ < अग्रहीत्, अट्टाट्, जग्राह।

(७) अस धातु के सभी पुरुषों के एकवचन में आसि और श्रुवचन में अहेसि आदेश होता है।

(८) वर्तमानकाल और आज्ञार्थ धातुओं में अन्त्य अ हो तो विकल्प से प्रत्यय के पूर्ववर्ती उस अ को विकल्प से ए हो जाता है। यथा—हसेह < हसति।

(९) वर्तमानकाल के समान ही भविष्यत् काल के प्रत्यय होते हैं, किन्तु मि, मो, मु, ऋ प्रत्ययों से पूर्व विरूप से हिस्ता और हिस्था आदेश होते हैं।

(१०) धातु से परे भविष्यत् काल के मि प्रत्यय के स्थान पर स्तं विकल्प से होता है।

(११) भविष्यत्काल में पूर्व अ के स्थान पर इ और ए होता है।

(१२) विधि और आज्ञार्थ में धातु से परे इज्जसु, इज्जहि, इज्जे प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्यय का लोप होने से धातु का मूल रूप ज्यों का त्यों भी शेष रह जाता है।

(१३) क्रियासिपत्ति में उज्ज, उज्जा, न्त और माण प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(१४) क्रियासिपत्ति में उज्ज, उज्जा प्रत्यय जोड़ने के पूर्व सभी पुरुष और सभी वचनों में अकार को एत्व हो जाता है।

कर्त्तार में धातुओं के विकरणों के नियम

(१५) व्यञ्जनान्त में अ विकरण जोड़ने के अनन्तर प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

यथा—

भण् + अ—भण + इ = भणइ < भणति

कह् + अ—कह, कह + इ = कहइ < कथयति

सम् + अ—सस, सम + इ = समइ < शान्ति

हस + अ—हस, हस + इ = हसइ < हसति

आप् + अ—आव, आव + इ = आवइ < आप्नोति

सिच् + अ—सिच, सिच + इ = सिचइ < सिचति

रन्ध् = अ—रन्ध, रन्ध + रन्ध + इ = रन्धइ < रन्धि

मुष् + अ—मुस, मुस + इ = मुसइ < मुष्णाति

तण् + अ—तण, तण + इ = तणइ < तनोति

(१६) अकारान्त धातुओं के अतिरिक्त जेप स्वरान्त धातुओं में अ विकरण विकल्प से जुड़ता है । यथा—

पा + अ—पाअ, पाअ + इ = पाअइ, पा + इ = पाइ < पाति
जा + अ—जाअ, जाअ + इ = जाअइ; जा + इ = जाइ < याति
धा + अ—धाअ, धाअ + इ = धाअइ; धा + इ = धाइ < धयति, धायति, दधाति
का + अ—काअ, काअ + इ = काअइ; का + इ = काइ < ध्यायति
जंभा + अ—जंभाअ, जंभाअ + इ = जंभाअइ; जंभा + इ = जंभाइ < जम्भते
वा + अ—वाअ, वाअ + इ = वाअइ, वा + इ = वाइ < राति
मिष्ठा + अ—मिष्ठाअ, मिष्ठाअ + इ = मिष्ठाअइ, मिष्ठा + इ = मिष्ठाइ < म्छायति
विह्री—विके + अ—रिक्तेभ, रिक्तेभ + इ = रिक्तेभइ, विक्ते + इ = रिक्तेइ < निमीणाति

हो + अ—होअ, होअ + इ = होअइ, हा + इ = होइ < भयति

(१७) उकारान्त धातुओं में उ के स्थान पर उय आदेश होने के अनन्तर अ विकरण जोड़ा जाता है । यथा—

णु—णइव् + अ—णइव + इ = णइवइ < दुते
नि + णु—निणइव् + अ = निणइव + इ = निणइवइ < निदुते
हु—हृ + अ—हृ + इ = हृइ < जुहोति
लु—लृ + अ = लृ + इ = लृइ < लयते
रु—रृ + अ = रृ + इ = रृइ < रोति
कु—कृ + अ = कृ + इ = कृइ < भौति
सू—सृ + अ = सृ + इ = सृइ < सूते, पवसइ < प्रसूते

(१८) झकारान्त धातुओं में झ के स्थान पर अर् हो जाने के अनन्तर अ विकरण जोड़ा जाता है । यथा—

कृ—कृ + अ = कृ + इ = कृइ < करोति
धृ—धृ + अ = धृ + इ = धृइ < धरति
मृ—मृ + अ = मृ + इ = मृइ < म्रियते
वृ—वृ + अ = वृ + इ = वृइ < वृणोति, वृणते
सृ—सृ + अ = सृ + इ = सृइ < सरति
हृ—हृ + अ = हृ + इ = हृइ < हरति
लृ—लृ + अ = लृ + इ = लृइ < लरति

(१९) उपान्त्य ऋ ऋष्यादी धातुओं में ऋकार के स्थान पर अरि आदेश होता है, पश्चात् अ विकरण जोड़ा जाता है । यथा—

कृप्—कृ = करि—करिस् + अ = करिस + इ = करिसइ < कर्षति

मृप्—मरिस् + अ = मरिस + इ = मरिसइ < मृष्यते

वृप्—वरिस् + अ = वरिस + इ = वरिसइ < वर्धति

हृप्—हरिस् + अ = हरिस + इ = हरिसइ < हृष्यति

(२०) इकारान्त और उकारान्त धातुओं में इकार के स्थान पर ए और उकार के स्थान पर ओ होता है । यथा—

नी—ने + इ = नेइ < नयति, नैति < नयन्ति

उड्डी—उड्दे + इ = उड्देइ < उड्ढयते, उड्ढैति < उड्ढयन्ते

(२१) कुछ व्यञ्जनान्त धातुओं के उपान्त्य स्वर को दीर्घ होता है । यथा—

रुप्—रुस्—रुस + इ = रुसइ < रुषति

तुप्—तुस्—तुस + इ = तुसइ < तुष्यति

शुप्—शुस्—शुस + इ = शुसइ < शुष्यति

पुप्—पुस्—पुस + इ = पुसइ < पुष्यति

शिप् = सीस + इ = सीसइ < शिष्यते

(२२) धातुओं के नियत स्वर के स्थान पर प्रयोगानुसार अन्य स्वर होता है ।

हवइ—हिवइ < भवति

चिणइ—चुणइ < चिनोति

सइदणं—सइदणं < भइदणम्

धावइ—धुवइ < धावति

दा—दे—देइ < दाति, दाति

छा—छे—छेइ < छाति

विहा—विहे—विहेइ < विदधाति, विभाति

मू—वे—वेसि < मरीसि

(२३) कुछ धातुओं के अन्त्य व्यञ्जन को द्वित्व होता है । यथा—

कुडइ, कुदइ < कुटति

चलइ, चलइ < चलति

निमीळइ, निमिल्लइ < निमीळति

संमोळइ, उम्मिल्लइ < सम्मोळति

जिम्मइ

परिअदइ < पर्यटति

सकइ < सकनोति

तुदइ < तुटति

नदइ < नटति

नसइ < नश्यति

कुप्पइ < कुप्पति, नृत्यति

(२४) कुछ धातुओं में संसृष्ट के विकरण जुड़ जाने पर च के स्थान में ञ आदेश होता है । यथा—

संपञ्चइ < सम्पद्यते, सिमइ < स्विद्यति, छिञ्चइ < छिद्यते

वर्तमानकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष (Third Person)	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second Person)	सि, से	इस्था, इ
उत्तम पुरुष (First Person)	मि	मो, मु, म

भूतकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ईअ	ईअ वयन्वनान्त धातुओं के लिष्ट
म० पु०	ईअ	ईअ " "
उ० पु०	ईअ	ईअ " "

स्वरान्त धातुओं में तीनों पुरुष और दोनों वचनों में ली, ही, होअ ये तीन प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।

भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दिइ, दिए	दिन्ति, दिन्ते, दिरे
म० पु०	दिसि, दिसे	दिस्था, दिद
उ० पु०	इसं, स्तामि, हामि, हिमि	स्तामो, हामो, हिमो, स्ताम, हाम, हिम, हिस्ता, हिस्था

विधि और आज्ञाधिक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	न्तु
म० पु०	दि, सु	इ
उ० पु०	मु	मो

इज्जमु, इज्जदि और इज्जे प्रत्यय भी उकारान्त धातुओं में जोड़े जाते हैं और प्रत्यय का लोप भी होता है ।

क्रियातिपत्ति के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ज, ज्जा, न्त, माण	ज्ज, ज्जा, न्त, माण
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

(२६) वर्तमान का अर्थ बतलाने के लिए वर्तमानकाल; अतीत—भूत का अर्थ बतलाने के लिए भूत; भविष्य का अर्थ प्रकट करने के लिए भविष्यत्काल; सम्भावना (Possibility) या संशय (Doubt) विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट (Speaking of honorary Duty), संप्रश्न (Questioning) और प्रार्थना; इच्छा, आशीर्वाद, आज्ञा, शक्ति (Ability) एवं आवश्यकता (Necessity) अर्थ में विधि या अनुज्ञा का प्रयोग और जब परस्पर संवेच्यारे दो वाक्यों का एक संकेत-वाक्य घने और उसका बोध करानेवाली क्रिया कोई सांकेतिक क्रिया जब अशक्य प्रतीत हो, तब क्रियारतिपत्ति का प्रयोग होता है। क्रियारतिपत्ति में क्रिया की अतिपत्ति (असम्भरता) की सूचना मिलती है। The Conditional is used instead of the potential, when the non-performance of an action is implied.

उभयपदी हस् धातु

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसइ, हसए	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे
म० पु०	हससि, हससे	हसित्था, हसद्
उ० पु०	हसामि, हसमि	हसिमो, हसामो, हसमो, हसिमु, हसामु, हसमु, हसिम, हसाम, हसम

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेइ	हसेन्ते, हसेइरे
म० पु०	हसेसि	हसेइत्था, हसेद्
उ० पु०	हसेमि	हसेमो, हसेमु, हसेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअ	हसीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसिहिइ, हसिहिण्	हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिरे
म० पु०	हसिहिसि, हसिहिसे	हसिहित्था, हसिहिद्

उ० पु०	हसिस्सं, हसिस्सामि हसिहामि, हसिहिमि	हसिस्सामो, हसिहामो, हसिहिमो; हसिस्सामु, हसिहामु, हसिहिमु; हसिस्साम, हसिहाम, हसिहिम; हसिहिस्सा, हसिहिस्था
--------	--	---

विधि और आज्ञार्थकरूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसउ	हसन्तु
म० पु०	हसहि, हसमु, हस्सेज्जपु, हस्सेज्जहि, हसज्जे, हस	हसह
उ० पु०	हसिमु, हसामु, हसमु	हसिमो, हसामो हसमो

आज्ञार्थ में एत्थ हो जाता है—

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेड	हसेन्तु
म० पु०	हसेहि, हसेमु	हसेह
उ० पु०	हसेमु	हसेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

हो < भू धातु के रूप—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे
म० पु०	होसि	होइत्था, होइ
उ० पु०	होमि	होमो, होमु, होम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होसी, होही, होहीअ	होमी, होही, होहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होहिह	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे
म० पु०	होहिसि	होहिस्थ, होहिह
उ० पु०	होस्सं, होस्सामि	होस्सामो, होहामो, होहिमो;
	होहामि, होहिमि	होस्सामु, होहामु, होहिमु; होस्साम,
		होहाम, होहिम; होहिस्सा, होहिस्था

चिधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होउ	होमु
म० पु०	होहि, होसु	होइ
उ० पु०	होमु	होमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्ज, होज्जा, होन्तो, होमाणो	होज्ज, होज्जा, होन्तो, होमाणो
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

ठा-स्था धातु (-ठहरना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाइ	ठान्ति, ठान्ते, ठाहरे
म० पु०	ठासि	ठाइस्था, ठाह
उ० पु०	ठामि	ठामो, ठामु, ठाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासो, ठाहो, ठाहीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाहिह	ठाहिन्ति, ठाहिन्ते, ठाहिरे
म० पु०	ठाहिसि	ठाहिस्था, ठाहिह

उ० पु०	ठाहामि, ठाहिमि	ठास्सामु, ठाहामु, ठाहिमु, ठास्साम, ठाहाम, ठाहिम, ठाहिस्सा, ठाहिस्था
--------	----------------	--

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाउ	ठान्तु
म० पु०	ठाहि, ठामु	ठाह
उ० पु०	ठामु	ठामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाज्ज, ठाज्जा, ठान्तां, ठामाणो	ठाज्ज, ठाज्जा, ठान्थो, ठामाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

ज्ञा० ध्यै (= ध्यान करना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाह	भान्ति, भान्ते, भाहरे
म० पु०	भासि	भाइस्था, भाइ
उ० पु०	भामि	भामो, भामु, भाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भासी, भाही, भाहीअ	भासी, भाही, भाहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाहिइ	भाहिन्ति, भाहिन्ते, भाहरे
म० पु०	भाहिंसि	भाहिस्था, भाहिइ
उ० पु०	भाह्वं, भाह्वामि	भाह्वामो, भाह्वामो, भाहिमो; भाह्वामु, भाह्वामु, भाहिमु, भाह्वाम, भाह्वाम, भाहिम; भाहिस्सा, भाहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आठ	आन्तु
म० पु०	आदि, आसु	आह
उ० पु०	आसु	आमो

क्रियाविपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आज्ज, आज्जा, आन्तो, आमणो	आज्ज, आज्जा, आन्तो, आमणो
म० पु०	" - "	" "
उ० पु०	" "	" "

ने८नी (= ले जाना)---वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेइ	नेन्ति, नेन्ते, नेइरे
म० पु०	नेसि	नेइस्था, नेह
उ० पु०	नेमि	नेमो, नेसु, नेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेसो, नेही, नेहीअ	नेसो, नेही, नेहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेहिइ	नेहन्ति, नेहन्ते, नेहिरे
म० पु०	नेहिसि	नेहिस्था, नेहिह
उ० पु०	नेहसं, नेहसामि, नेहामि, नेहिमि	नेहसामो, नेहामो, नेहिमो, नेहसामु, नेहसु, नेहिसु; नेहसाम, नेहाम, नेहिस, नेहिस्ता, नेहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेउ	नेन्तु
म० पु०	नेदि, नेसु	नेह
उ० पु०	नेसु	नेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेज्ज, नेज्जा, नेन्तो, नेमाणो	नेज्ज, नेज्जा, नेन्तो, नेमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

उड्डे < उड्डी (= उड्डना) — धर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्डेइ	उड्डेन्ति, उड्डेन्ते, उड्डेइरे
म० पु०	उड्डेसि	उड्डेइया, उड्डेइ
उ० पु०	उड्डेमि	उड्डेमो, उड्डेसु, उड्डेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्डेसी, उड्डेही, उड्डेहीभ	उड्डेसी, उड्डेही, उड्डेहीभ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्डेहिइ	उड्डेहिन्ति, उड्डेहिन्ते, उड्डेहिरे
म० पु०	उड्डेहिसि	उड्डेहिइया, उड्डेहिइ
उ० पु०	उड्डेस्सं, उड्डेस्सामि, उड्डेहामि, उड्डेहिमि	उड्डेस्सामो, उड्डेहामो, उड्डेहिमो; उड्डेस्सामु, उड्डेहामु, उड्डेहिमु; उड्डेस्साम, उड्डेहाम, उड्डेहिमि

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्डेउ	उड्डेन्तु
म० पु०	उड्डेहि, उड्डेउ	उड्डेह
उ० पु०	उड्डेसु	उड्डेमो

क्रियातिपत्ति

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० उट्टेअ; उट्टेआ, उट्टेन्तो, उट्टेमाणो	उट्टेअ, उट्टेआ, उट्टेन्तो, उट्टेमाणो
म० पु० " "	" "
उ० पु० " "	" "

पा पाने (= पीना) — वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० पाइ	पान्ति, पान्ते, पाइरे
म० पु० पासि,	पाइत्था, पाइ
उ० पु० पामि	पामो, पामु, पाम

भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० पासी, पाही, पाहीअ	पासी, पाही, पाहीअ
म० पु० " "	" "
उ० पु० " "	" "

भविष्यत्काल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० पाहिइ	पाहिन्ति, पाहिन्ते, पाहिरे
म० पु० पाहिमि	पाहित्था, पाहिइ
उ० पु० पस्सं, पास्सामि; पाहामि, पाहिम	पास्सामो, पाहामो, पाहिमो, पास्सामु, पाहामु, पाहिमु, पास्साम, पाहाम, पाहिम, पाहिस्स, पाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० पाउ	पान्तु
म० पु० पाहि, पामु	पाइ
उ० पु० पामु	पामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
१० पु०	पाज्ज, पाज्जा, पान्तो, पामाणो	पाज्ज, पाज्जा, पान्तो, पामाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

ण्हा-स्ना (स्नान करना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाइ	ण्हान्ति, ण्हान्ते, ण्हाइरे
म० पु०	ण्हसि	ण्हाइस्था, ण्हाइ
उ० पु०	ण्हमि	ण्हामो, ण्हामु, ण्हाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हासी, ण्हाही, ण्हाहीम	ण्हासी, ण्हाही, ण्हाहीम
म० पु०	" "	" "
पु० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाहिइ	ण्हाहिन्ति, ण्हाहिन्ते, ण्हाहिरे
म० पु०	ण्हाहिसि	ण्हाहिस्था, ण्हाहिइ
उ० पु०	ण्हास्सं, ण्हास्सामि; ण्हाहिमि, ण्हाहामि	ण्हास्सामो, ण्हाहामो, ण्हाहिमो; ण्हास्सामु, ण्हाहामु, ण्हाहिमु; ण्हास्साम, ण्हाहाम, ण्हाहिम; ण्हाहिस्सा, ण्हाहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाउ	ण्हान्तु
म० पु०	ण्हादि, ण्हामु	ण्हाद
उ० पु०	ण्हामु	ण्हामो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु०	ण्हज्ज, ण्हज्जा, ण्हान्तो, ण्हामाणो
------------------	-------------------------------------

गा-गौ (गाना) — वर्तमान्

एकवचन	वहुवचन
प्र० पु० गाह	गान्ति, गान्ते, गाहरे
म० पु० गालि	गाहस्था, गाह
उ० पु० गामि	गामो, गामु, गाम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० —

गासी, गाही, गाहीम

भविष्यत्काल

एकवचन	वहुवचन
प्र० पु० गाहिइ	गाहिन्वि, गाहिन्ये, गाहिरे
म० पु० गाहिसि	गाहिस्था, गाहिइ
उ० पु० गाहसं, गाहसामि; गाहामि, गाहिमि	गाहसामो, गाहामो, गाहिमो; गाहसामु, गाहामु, गाहियु; गाहसाम, गाहाम, गाहिन; गाहिसा, गाहिसा

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	वहुवचन
प्र० पु० गाह	गान्तु
म० पु० गाहि, गामु	गाह
उ० पु० गामु	गामो

क्रियातिपत्ति

एकवचन	वहुवचन
प्र० पु० गाज्, गाजा, गान्तो, गामाणो	गाज्, गाजा, गान्तो, गामाणो
म० पु० " " " "	" " " "
उ० पु० " " " "	" " " "

(२६) अकारान्त धातुओं के अविरक्त अन्य स्वरान्त धातुओं में विरूप से विकरण अ प्रत्यय जुड़ने के पश्चात् विभक्तिबिन्दु जोड़ा जाता है। यथा—

भा—भा + अ = भाअ + इ = भाअइ, विकृत्याभाव पक्ष में भा + इ = भाइ

या—या + अ = याअ + इ = याअइ, विकृत्याभाव में या + इ = याइ

पा—पा + अ = पाअ + इ = पाअइ, पा + इ = पाइ

य्यै—का + अ = काअ + इ = काअइ, का + इ = काइ

धा—धा + अ = धाअ + इ = धाअइ, धा + इ = धाइ

उच् + वा — उच्वा + अ = उच्वाअ + इ = उच्वाअइ, उच्वा + इ = उच्वाइ

म्लै—मिच्चा + अ = मिच्चाअ + इ = मिच्चाअइ, मिच्चा + इ = मिच्चाइ

त्रि + क्री—त्रिके + अ = त्रिकेअ + इ = त्रिकेअइ, त्रिके + इ = त्रिकेइ

(२६) वर्तमान, भविष्यत् तथा रिधि एवं आज्ञार्थ में स्वरांत पातुओं में /

प्रत्ययों से पूर्ण तथा प्रत्ययों के स्थान पर विकल्प ले ज, जा आदेश होता है । यथा—

हो—भू—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होजइ, होजाइ होज, होजा	होजन्ति, होजन्ते, होजिरे होज, होजा
म० पु०	होजसि, होजासि होज, होजा	होजन्तिथ, होजइ, होजाइ होज, होजा
उ० पु०	होजमि, होजामि होज, होजा	होजन्मो, होजामो, होज, होजा; होजन्मु, होजाम, होज, होजा, होजन्म, होजाम, होज, होजा

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होजहिइ, होजाहिइ, होज, होजा	होजहिन्ति, होजाहिन्ति, होजहिन्ते, होजाहिन्ते, होजहिरे, होजाहिरे, होज, होजा
म० पु०	होजहिसि, होजाहिसि, होज, होजा	होजहिन्तिथ, होजाहितिथ, होजहिइ, होजाहिइ, होज, होजा
उ० पु०	होजहस्सं, होजहस्सामि, होजहामि, होजाहामि; होजहिसि, होजाहिसि, होज, होजा	होजहस्सामो, होजहामो, होजाहामो, होजहामो, होजहस्सामु, होजहामु, होजहामु, होजहिसु, होजाहिसु, होजहस्सामि, होजाहस्सामि, होजहिसि, होजहामि, होजहामि, होजहामि

प्रिधि एवं आशुार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रखठ, रखेठ	रखन्तु, रखेन्तु
म० पु०	रखदि, रखसु, रखेदि, रखेसु, रखेज्जदि, रखेजे, रख	रखद, रखेद
उ० पु०	रखिसु, रखेसु, खामु, रजसु	रखिमो, खामो, रजमो, रखेमा

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रखेज, रखेजा, रजन्तो, रखमाणो	रखेज, रखेजा, रजन्तो, रजमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

उभयपदी कर-कृ (करना) वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करइ, करए	करन्ति, करन्ते, करिरे
म० पु०	करसि, करसे	करिस्था, करह
उ० पु०	करामि, करमि	करिमो, करामो, करमो, करिसु, करामु, करसु, करिम, कराम, करम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करीभ	करीभ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिदिह, करिदिण	करिदिन्ति, करिदिन्ते, करिदिरे
म० पु०	करिदिसि, करिदिने	करिदिस्था, करिदिह
उ० पु०	करिस्स, करिस्सामि, करिहामि, करिदिमि	करिस्सामो, करिहामो, करिदिमो, करिस्सामु, करिहामु, करिदिसु, करिस्साम, करिहाम, करिदिम, करिदिस्सा, करिदिस्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्जउ, होज्जाउ, होज्ज, होज्जन्तु, होज्ज, होज्जा	होज्जन्तु, होज्ज, होज्जा
म० पु०	होज्जदि, होज्जादि, होज्जसु, होज्जह, होज्जाह, होज्ज, होज्जासु, होज्ज, होज्जा होज्जा	होज्जह, होज्जाह, होज्ज, होज्जा
उ० पु०	होज्जसु, होज्जासु, होज्ज, होज्जमो, होज्जामो, होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जामो, होज्ज, होज्जा

इसी प्रकार ने < नी, मिला < म्लै प्रभृति धातुओं के रूप उज्ज, ज्जा प्रत्ययों के जोड़ने से निष्पन्न होते हैं ।

रव < रु (= कहना या धोलना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रवइ, रवप	रवन्ति, रवन्ते, रविरे
म० पु०	रवसि, रवसे	रविस्था, रवइ
उ० पु०	रवामि, रवमि	रविमो, रवामो, रवमो; रविमु, रवामु, रवमु; रविम, रवाम, रवम
प्र० पु०	रवेइ	रवेन्ति, रवेन्ते, रवेइरे
म० पु०	रवेसि	रवेस्था, रवेइ
उ० पु०	रवेमि	रवेमो, रवेमु, रवेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० पु० म० पु० उ० पु०	रवोन
------------------------	------

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रविहिइ, रविहिप	रविहिन्ति, रविहिन्ते, रविहिरे
म० पु०	रविहिसि, रविहिसे	रविहिस्था, रविहिइ
उ० पु०	रविह्मं, रविह्मामि	रविह्मामो, रविह्मामो, रविह्मो, रविह्मामु, रविह्मामु, रविहिमु; रविह्माम, रविह्माम, रविहिम, रविहिस्था, रविहिस्था

उभयपदी पूसं < पुप्—पुष्ट होना—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूयइ, पूयण, पूमेइ	पूसन्ति, पूयन्ते, पूतिरे, पूमेन्ति
म० पु०	पूयासि, पूयसे, पूमेसि	पूसिस्था, पूयइ, पूमेइ ॥
उ० पु०	पूयामि, पूयमि, पूमेमि	पूसिमो, पूयामो, पूयमो; पूसिमु, पूयामु, पूयमु; पूसिम, पूयाम, पूयम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूयीअ	पूयीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूसिहिइ, पूसिहिण	पूसिहिन्ति, पूसिहिन्ते, पूसिहिरे
म० पु०	पूसिहिसि, पूसिहिमे	पूसिहिस्था, पूमिहिइ
उ० पु०	पूसिहस्तं, पूमिस्वामि, पूसिहामि, पूसिहिमि	पूसिस्वामो, पूसिहामो, पूसिहिमो; पूसिस्वामु, पूसिहामु, पूसिहिमु, पूसिस्वाम, पूसिहाम, पूसिहिम, पूसिहिस्वाम, पूसिहिस्था

विशेष—अकार को एत्व कर देने से भी इसके रूप बनते हैं ।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूयउ	पूयन्तु
म० पु०	पूयदि, पूयमु, पूमेज्जमु, पूयज्जहि, पूय	पूयइ
उ० पु०	पूसिम, पूयामु, पूयमु	पूसिमो, पूयामो, पूयमो

विशेष—अकार को एत्व कर देने पर भी इसके रूप बनते हैं ।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० म० उ० पु०	पूसेज्ज, पूमेज्जा, पूयन्तो, पूयमाणो	पूसेज्ज, पूमेज्जा, पूयन्तो, पूयमाणो

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० करउ, करेउ	करन्तु, करेन्तु
म० पु० करहि, करसु, करेज्जसु, करेज्जसु, करेज्जहि, करेजे, कर	करह
उ० पु० करिसु, करामु, करसु	करिमो, करामो, वरमो

क्रियाविपत्ति

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० करेज, करेज्जा, करन्तो, करमाणो	करेज्ज, करेज्जा, करन्तो, करमाणो
म० पु० ,, ,, ,, ,,	
उ० पु० ,, ,, ,, ,,	

इसी प्रकार धर<ध, मर<मृ, वर<वृ, सर<सृ, हर<हृ, तर<तृ एवं जर<जृ आदि सङ्कृत की जकारान्त धातुओं के रूप होते हैं ।

अस् (होना)—वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० अस्ति	अस्ति
म० पु० अस्ति, सि	अस्ति
उ० पु० अस्ति, म्हि, असि	अस्ति, म्हो, म्हु

भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० आसि	अहेसि
म० पु० ,,	,,
उ० पु० ,,	,,

विध्यर्थ, आज्ञार्थ और भविष्यत्काल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० अस्ति	अस्ति
म० पु० ,,	,,
उ० पु० ,,	,,

क्रियातिपत्ति

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० धुणेज्ज, धुणेज्जा, धुणन्तो, धुणेज्ज, धुणेज्जा, धुणन्तो, धुणमाणो
धुणमाणो

म० पु०

"

"

उ० पु०

"

"

इसो प्रकार चिण (चि), जिण (जि), सुण (सु), हुण (हु), लुण (ल), पुण (पु) और धुण (धु) आदि धातुओं के रूप बनते हैं ।

हरिस < हृप् (प्रसन्न होना) -- वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० हरिसइ, हरिसए हरिसन्ति, हरिसन्ते, हरिसिरे

म० पु० हरिससि, हरिससे हरिसिस्था, हरिसइ

उ० पु० हरिसामि, हरिसमि हरिसिमो, हरिसामो, हरिसमो;

हरिसिसु, हरिसासु, हरिसिसु;

हरिसिम, हरिसाम, हरिसम

विशेष—अकार को एह्य कर देने पर हरिसेइ, हरिसेन्ति इत्यादि रूप बनते हैं ।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हरिसीअ

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० हरिसिहिइ, हरिसिहिए हरिसिहिन्ति, हरिसिहिन्ते, हरिसिहिरे

म० पु० हरिसिहिसि, हरिसिहिसे हरिसिहिस्था, हरिसिहिइ

उ० पु० हरिसिस्सं, हरिसिस्सामि हरिसिस्सामो, हरिसिहामो, हरिसिहिमो,

हरिसिहामि, हरिसिहिमि हरिसिस्सामु, हरिसिहामु, हरिसिहिसु;

हरिसिस्साम, हरिसिहाम, हरिसिहिम;

हरिसिहिस्सा, हरिसिहिस्था

विशेष—एह्य दो जाने पर हरिसेहिइ, हरिसेहिन्ति आदि रूप होते हैं ।

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हरिसंज्ज, हरिसंज्जा, हरिसन्तो, हरिसमाणो

इसो प्रकार रुस (रुप्), वृस (वृप्), खस (खप्), वृस (वृप्) एवं सीस (सिप्) धातुओं के रूप होते हैं।

उभयपदी धुण < स्तु (स्तुति करना) — वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० धुणइ, धुणप्	धुणन्ति, धुणन्ते, धुणिरे
म० पु० धुणसि, धुणसे	धुणिरथा, धुणइ
उ० रु० धुणामि, धुणमि	धुणिमो, धुणामो, धुणमो, धुणिम, धुणाम, धुणम, धुणम

विशेष—भकार को एत्व होने पर धुणेइ, धुणेन्ति, धुणेशि आदि रूप होते हैं।

भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
प्र०, म०, उ० पु० धुणीअ	धुणीअ

भविष्यत्काल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० धुणीहिइ, धुणिहिप्	धुणिहिन्ति, धुणिहिन्ते, धुणिहिरे
म० पु० धुणिहिसि, धुणिहिते	धुणिहिरथा, धुणिहिइ
उ० पु० धुणिस्सं, धुणिस्सामि, धुणिहामि, धुणिहिमि	धुणिस्सामो, धुणिहामो, धुणिहिमो, धुणिस्साम, धुणिहाम, धुणिहिम, धुणिहिसा, धुणिहिरथा

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० धुणउ	धुणन्तु
म० पु० धुणहि, धुणसु, धुणेज्जपु, धुणेज्जहि, धुणेज्जे, धुण	धुणइ
उ० पु० धुणिसु, धुणामु, धुणसु	धुणिमो, धुणामो, धुणमो

विशेष—भकार को एत्व हो जाने पर धुणउ, धुणन्तु आदि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो
म० पु०	” ”	” ”
उ० पु०	” ”	” ”

(२७) भविष्यत्काल में सुण (शु) के स्थान पर सोच्छ, सद् के स्थान पर रोच्छ, विद् के स्थान पर वेच्छ, दद् के स्थान पर दच्छ, मुच् के स्थान पर मोच्छ, वच् के स्थान पर वोच्छ, छिद् के स्थान पर छेच्छ, भिद् के स्थान पर भेच्छ, भुज् के स्थान पर भोच्छ आदि होता है तथा गच्छ धातु के समान रूप होते हैं ।

बोल्ल, जंप, कह < कथ (कहना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लह, बोल्लए	बोल्लन्ति, बोल्लन्ते, बोल्लिरे
म० पु०	बोल्लसि, बोल्लसे	बोल्लिस्था, बोल्लह
उ० पु०	बोल्लमि, बोल्लमि	बोल्लिमो, बोल्लामो, बोल्लमो बोल्लिमु, बोल्लामु, बोल्लमु, बोल्लिम, बोल्लाम, बोल्लम

विशेष—एत्वं हो जाने पर बोल्लेइ, बोल्लेन्ति इत्यादि रूप होते हैं ।

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लिहइ, बोल्लिहइ	बोल्लिहन्ति, बोल्लिहन्ते, बोल्लिहिरे
म० पु०	बोल्लिहसि, बोल्लिहसि	बोल्लिहस्था, बोल्लिहह
उ० पु०	बोल्लिहमि, बोल्लिहमि, बोल्लिहामि, बोल्लिहमि	बोल्लिहसामो, बोल्लिहामो, बोल्लिहिमो, बोल्लिहसामु, बोल्लिहामु, बोल्लिहिमु, बोल्लिहसाम, बोल्लिहाम, बोल्लिहिम, बोल्लिहसाम, बोल्लिहाम

विशेष—एत्वं होने से बोल्लेउ, बोल्लेन्तु आदि रूप होते हैं । विधि एवं आज्ञार्थ रूप पूर्ववाक्य होते हैं ।

इसी प्रकार वरिस (वृष्), दरिस (दृष्), करिस (कृष्) और मरिस (मृष्) धातुओं के रूप होते हैं ।

उभयपदी गच्छ-गम् (जाना)—वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० गच्छइ, गच्छउ	गच्छन्ति, गच्छन्ते, गच्छरे
म० पु० गच्छसि, गच्छसे	गच्छन्त्या, गच्छद्
उ० पु० गच्छामि, गच्छमि	गच्छमो, गच्छामो, गच्छमो, गच्छसु, गच्छासु, गच्छसु, गच्छन्, गच्छाम, गच्छम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० गच्छीअ

भविष्यत्काल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० गच्छिइ, गच्छिहिइ	गच्छिन्ति, गच्छिहन्ति, गच्छिन्ते
गच्छिउए, गच्छिहिए	गच्छिहन्ति, गच्छिरे, गच्छिहिरे
म० पु० गच्छिसि, गच्छिहिसि,	गच्छिहन्त्या, गच्छिहन्त्या, गच्छिहन्,
गच्छिसे, गच्छिहिसे	गच्छिहिइ
उ० पु० गच्छं, गच्छिस्सं, गच्छि-	गच्छिस्सामो, गच्छिहामो, गच्छिहो,
स्सामि, गच्छिहामि, गच्छिमि,	गच्छिहिसो, गच्छिहिसासु, गच्छिहिसु,
गच्छिहिमि	गच्छिहिसु, गच्छिहिसु, गच्छिहिसाम,
	गच्छिहिसाम, गच्छिम, गच्छिहिसम,
	गच्छिहिसा, गच्छिहिसा

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० गच्छउ	गच्छन्तु
म० पु० गच्छहि, गच्छसु, गच्छेज्जसु	गच्छइ
गच्छेज्जहि, गच्छेज्जे, गच्छ	
उ० पु० गच्छसु, गच्छासु, गच्छासु	गच्छमो, गच्छामो, गच्छमो

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० शुवउ	शुवन्तु
म० पु० शुवहि, शुवसु, शुवेज्जसु, शुवेज्जहि, शुवुज्जे, शुव	शुवइ
उ० पु० शुविमु, शुवासु, शुवसु	शुविमो, शुवामो, शुवमो

विशेष—आज्ञार्थ में एत्व होने पर शुवेउ, शुवेन्तु इत्यादि रूप होते हैं ।

क्रियातिपत्ति

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० शुवेज्ज, शुवेज्जा, शुवन्तो, शुवमाणो	शुवेज्ज, शुवेज्जा, शुवन्तो, शुवमाणो
म० पु० " " " "	
उ० पु० " " " "	

धातुओं के कर्मणि रूप

(१८) धातुओं के कर्मणि रूपों में वर्तमानकाल और विधि एवं साहार्थ में धातु प्रत्ययों के पूर्व ईअ और इज्ज विकरण टूट जाते हैं । पर यह नियम उन्हीं धातुओं के लिए है, जिन धातुओं के स्थान पर आदेश—धात्वादेश नहीं होता है । भरिष्यत्काळ और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान ही होते हैं ।

हस (हँसना)—वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० हसीअइ, हसीअए हसिअइ, हसिअए	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीइरे हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते, हसिज्जिरे
म० प्र० हसीअसि, हसीअसे हसिअसि, हसिअसे	हसीइत्या, हसीअइ हसिज्जित्था, हसिअइ
उ० पु० हसीअमि, हसीअमि, हसिअमि, हसिज्जामि	हसीअमो, हसीअमो, हसीइमो, हसिअमु, हसीआमु, हसीइमु, हसीअम, हसीआम, हसीइम, हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जमो, हसिज्जमु, हसिज्जामु, हसिज्जिमु, हसिज्जम, हसिज्जाम, हसिज्जिम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्छीअ	बोल्छीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्छेज्ज, बोल्छेज्जा, बोल्छन्तो, बोल्छमाणो	बोल्छेज्ज, बोल्छेज्जा, बोल्छन्तो, बोल्छमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

उभयपदी ध्रुव < ध्रु (कंपाना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ध्रुवइ, ध्रुवए	ध्रुवन्ति, ध्रुवन्ते, ध्रुविरे
म० पु०	ध्रुवासि, ध्रुवमे	ध्रुविस्सा, ध्रुवइ
उ० पु०	ध्रुवामि, ध्रुवमि	ध्रुविमो, ध्रुवामो, ध्रुवमो, ध्रुविमु, ध्रुवामु, ध्रुवमु, ध्रुविम, ध्रुवाम, ध्रुवम

विशेष—एत्व होने पर ध्रुवेइ, ध्रुवेन्ति इत्यादि रूप होते हैं।

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ध्रुवीअ	ध्रुवीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ध्रुविहिइ, ध्रुविहिए	ध्रुविहिन्ति, ध्रुविहिन्ते, ध्रुविहिरे
म० पु०	ध्रुविहिसि, ध्रुविहिये	ध्रुविहिस्सा, ध्रुविहिइ
उ० पु०	ध्रुविहिसं, ध्रुविहिसामि, ध्रुविहामि, ध्रुविहिमि	ध्रुविहिसामो, ध्रुविहामो, ध्रुविहिमो, ध्रुविहिसामु, ध्रुविहामु, ध्रुविहिमु, ध्रुविहिसाम, ध्रुविहाम, ध्रुविहिम, ध्रुविहिससा, ध्रुविहिसा

विशेष—एत्व होने पर ध्रुवेहिइ, ध्रुवेहिए इत्यादि रूप होते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० शुवड	शुवन्तु
म० पु० शुवदि, शुवसु, शुवेज्जसु, शुवेज्जहि, शुवुज्जे, शुव	शुवह
उ० पु० शुविमु, शुवामु, शुवमु	शुविमो, शुवामो, शुवमो

विशेष—आज्ञार्थ में एस्स होने पर शुवेड, शुवेन्तु इत्यादि रूप होते हैं ।

क्रियातिपत्ति

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० शुवेज्ज, शुवेज्जा, शुवन्तो,	शुवेज्ज, शुवेज्जा, शुवन्तो, शुवमाणो
	शुवमाणा
म० पु० " "	" "
उ० पु० " "	" "

धातुओं के कर्मणि रूप

(२८) धातुओं के कर्मणि रूपों में वर्तमानकाल और विधि एवं आज्ञार्थ में धातु प्रत्ययों के पूर्व ईअ और इज्ज विकरण पड़ जाते हैं । पर यह नियम उन्हीं धातुओं के लिए है, जिन धातुओं के स्थान पर आदेश—धात्वादेश नहीं होता है । भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान ही होते हैं ।

हस (हँसना)—वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० हसीअइ, हसीअप्	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीहरे
हसिज्जइ, हसिज्जप्	हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते, हसिज्जिरे
म० प्र० हसीअसि, हसीअसे	हसीइत्था, हसीअह
हसिज्जसि, हसिज्जसे	हसिज्जित्था, हसिज्जह
उ० पु० हसीअमि, हसीआमि,	हसीअमो, हसीआमो, हसीदमो; हसिअमु,
हसिअमि, हसिज्जामि	हसीआमु, हसीदमु, हसीअम, हसीआम,
	हसीदम, हसिज्जमो, हसिज्जामो,
	हसिज्जिमो; हसिज्जमु, हसिज्जामु,
	हसिज्जिमु, हसिज्जम, हसिज्जाम,
	हसिज्जिम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीआईअ, हसीईअ, असिज्जीअ	हसीआईअ, हसीईअ, हसिज्जईअ, हसिज्जोअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

विधि एवं आह्वार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसलीअड, हसिज्जड	हसीअन्तु, हसिज्जन्तु
म० पु०	हसीअहि, हसीअसु, हसीएजसु, हसिइजसु, हसीएजहि, हसीइजहि, हसीएजे, हसीइजे, हसीअ, हसिज्जहि, हसिज्जसु, हसिजे- जसु, हसि'ज्जसु, हसिजेजहि, हसिज्जिजहि, हसिज्जेज्जे, हसिज्जिज्ज, हसिज्ज	हसीअमो, हसीआमो, हसीइमो, हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जिमो
उ० पु०	हसीअसु हसीआलु, हसीइसु, हसिज्जसु, हसिज्जालु, हसिज्जसु	

भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं ।

हो < भू—कर्मणि—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होईअड होइज्जड	होईअन्ति, होईअन्ते, होईइरे, होइज्जन्ति, होइज्जन्ते, होइज्जिरे
म० पु०	होईआसि, होइज्जसि	होईइत्था, होईअड, होइज्जित्था, होइज्जड

शा० छै (कर्मणि)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	काईअइ काइअइ	काईअन्ति, काईअन्ते, हाईइरे काइअन्ति, काइअन्ते, काइअिरे
म० पु०	काहिअसि काइअसि	काहिअत्था, काईअइ काइअित्था, काइअइ
उ० पु०	काईअमि, काईआमि काइअमि, काइआमि	काईअमो, काईआमो, काईइमो, काईअमु, काईआमु, काईइमु, काईअम, हाईआम, काईइम, काइअमो, काइआमो, काइअिमो, काइअिमु, काइआमु, काइअिमु, काइअिम, काइआम, काइअिम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	काईअसी, काइअही, काईअहीअ काइअसी, काइअही, काइअहीअ
----------------	--

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	काईअउ, काइअउउ	काईअन्तु, काइअन्तु
म० पु०	काईअमु, काईअहि काइअमु, काइअहि	काईअइ काइअइ
उ० पु०	काईअमु, काईआमु, काइअमु, काइअमु, काइअमु, काइअिमु	काईअमो, हाईआमो, काईइमो, काइअमो, काइअिमो, काइअिमो

अभिप्यस्काळ, और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं ।

चिच्च० चि (कर्मणि)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिच्चइ, चिच्चइ	चिच्चन्ति, चिच्चन्ते, चिच्चिरे
म० पु०	चिच्चमि, चिच्चिमि	चिच्चित्था, चिच्चइ

उ० पु०	चिन्तामि, चिन्तामि	चिन्तामो, चिन्तामो, चिन्तामो, चिन्तामो, चिन्तामो, चिन्तामो, चिन्तामो, चिन्तामो, चिन्तामो
--------	--------------------	--

एतत् होने पर चिन्तामि, चिन्तामि इत्यादि रूप होते हैं। चिन्तामि के स्थान पर चिन्तामि से चिन्तामि भी होता है।

भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्तामि
म० पु०	”
उ० पु०	”

भविष्यत्काल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्तामिहि, चिन्तामिहि
म० पु०	चिन्तामिहि, चिन्तामिहि
उ० पु०	चिन्तामिहि, चिन्तामिहि

विशेष—एतत् होने पर चिन्तामि, चिन्तामि इत्यादि रूप होते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्तामि
म० पु०	चिन्तामि, चिन्तामि, चिन्तामि, चिन्तामि, चिन्तामि, चिन्तामि
उ० पु०	चिन्तामि, चिन्तामि, चिन्तामि

विशेष—एतत् होने पर चिन्तामि, चिन्तामि आदि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिक्वेज्ज, चिक्वेज्जा, चिक्वन्तो, चिक्वमाणो	चिक्वेज्ज, चिक्वेज्जा, चिक्वन्तो, चिक्वमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

इसी प्रकार कर्मणि में चिम् (चि), चिन् (जि), चुव् (सु), हुव् (हु), धुव् (स्तु), लुव् (ल), पुव् (प), धुव् (ध) प्रभृति धातुओं के रूप होते हैं।

‘चि’ के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से चिण भी होता है। चिण में कर्मणि विकरण और प्रत्यय जोड़ने पर रूप बनते हैं। यथा—

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	नेईअसी, नेईअही, नेईअहीअ नेइज्जसी, नेइज्जही, नेइज्जहीअ
----------------	--

विधि एवं आज्ञार्थ

प्र० पु०	नेईअव, नेइज्जउ	नेईअन्तु, नेइज्जन्तु
म० पु०	नेईअसु, नेईअहि नेइज्जसु, नेइज्जहि	नेईअह, नेइज्जह नेइज्जामो, नेईआमो, नेईइमो, नेइज्जमो, नेइज्जसु, नेइज्जामु, नेइज्जामो, नेइज्जामो
उ० पु०	नेइअसु, नेईआसु, नेईइसु नेइज्जसु, नेइज्जामु, नेइज्जामु	

विशेष—एव्य होने पर नेईएव, नेईएन्तु, नेइज्जएव, नेइज्जएन्तु आदि रूप होते हैं।
अधिष्णत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं।

ठा<स्था (= ठहरना) के कर्मणि रूप—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाईअइ, ठाइज्जइ	ठाईअन्ति, ठाइअन्ते, ठाइइरे, ठाइज्जन्ति, ठाइज्जन्ते, ठाइज्जिरे

वर्तमानकाल के घेप रूप ने<नी के समान होते हैं।

भृतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	ठाइअसी, ठाईअही, ठाईअहीअ ठाइज्जसी, ठाइज्जही, ठाज्जहीअ ठासी, ठाही, ठाहीअ
----------------	--

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० ठाईअउ, ठाइज्जउ	ठाईअन्नु, ठाईज्जन्नु
मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष में 'ने' धातु के समान रूपान्ती होती है ।	

पा (पीना) कर्मणि

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० पाईअइ, पाइज्जइ	पाईअन्ति, पाईअन्ते, पाईइरे पाइज्जन्ति, पाइज्जन्ते, पाईज्जिरे
इसके आगे ठा धातु के समान सभी कालों में रूप वृत्ते हैं ।	

वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० चिणीअइ, चिणीअए चिणिज्जइ, चिणिज्जए	चिणीअन्ति, चिणीअन्ते, चिणीइरे चिणिज्जन्ति, चिणिज्जन्ते, चिणिज्जिरे
इसी प्रकार भाग के रूप वृत्ते हैं ।	

भण, भण (भण्)--कर्मणि--वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० भणअइ, भणअए, भणीअइ भणीअए, भणिज्जइ, भणिज्जए	भणअन्ति, भणअन्ते, भणिइरे, भणीअन्ति, भणीअन्ते, भणीइरे, भणिज्जन्ति, भणिज्जन्ते, भणिज्जिरे,
म० पु० भणजसि, भणजमे, भणीअयि, भणिअसे, भणिज्जसि, भणिज्जसे	भणज म, भणजइ, भणीइरथा, भणीअइ भणिज्जइरथा, भणिज्जइ

उ० पु०	अण्णामि, अण्णामि	अण्णिमो, अण्णामो, अण्णमो, अण्णिमु,
	अण्णिअमि, अण्णीआमि	अण्णामु, अण्णमु, अण्णिम, अण्णाम,
		अण्णम; अण्णीअमो, अण्णीआमो,
		अण्णीइमो; अण्णीअमु, अण्णीआमु, अण्णीइमु,
		अण्णीअम, अण्णीआम, अण्णीइम
	अण्णिज्जमि, अण्णिज्जामि	अण्णिज्जमो, अण्णिज्जामो, अण्णिज्जमो,
		अण्णिज्जमु, अण्णिज्जामु, अण्णिज्जिमु,
		अण्णिज्जम, अण्णिज्जाम, अण्णिज्जिम

पिशोप—एत्थ ज्ञोदने से अण्णेइ, अण्णीएइ, अण्णिज्जेइ इत्यादि रूप होते हैं ।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० अण्णीअ, अण्णीअईअ, अण्णीईअ, अण्णिज्जईअ, अण्णिज्जीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु	अण्णिहिइ, अण्णिहिइ	अण्णिहिन्ति, अण्णिहिन्ते, अण्णिहिरे
	अण्णिहिइ, अण्णिहिइ	अण्णिहिन्ति, अण्णिहिन्ते, अण्णिहिरे
म० पु०	अण्णिहिसि, अण्णिहिसे	अण्णिहिरथा, अण्णिहिइ
	अण्णिहिसि, अण्णिहिसे	अण्णिहिरथा, अण्णिहिइ
उ० पु०	अण्णिस्सं, अण्णिस्सामि	अण्णिस्सामो, अण्णिहामो, अण्णिहिमो
	अण्णिहामि, अण्णिहिमि	अण्णिहिरसा, अण्णिहिरथा
	अण्णिस्सं, अण्णिस्सामि	अण्णिस्सामो, अण्णिहामो, अण्णिहिमो
	अण्णिहामि, अण्णिहिमि	अण्णिहिरसा, अण्णिहिरथा

विशेष—एत्थ हांने पर अण्णेहिइ, अण्णेहिइ आदि रूप होते हैं ।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अण्णउ, अण्णीअउ, अण्णिज्जउ	अण्णन्नु, अण्णिअन्नु, अण्णिज्जन्नु
म० पु०	अण्णहि, अण्णमु, अण्णेज्जमु	अण्णइ
	अण्णेज्जहि, अण्णेज्जे, अण्ण	
	अण्णीअहि, अण्णीअनु, अण्णीएज्जहि	अण्णीअइ

भगीद्वज्जहि, भगीपृज्जु, भगीद्वज्जु
 भगीपृज्जे, भगीद्वजे, भगीभ,
 भगिज्जहि, भगिज्जु, भगिज्जेज्जहि भगिज्ज;
 भगिज्जिज्जहि, भगिज्जेज्जु,
 भगिज्जज्जु, भगिज्जेज्जे, भगिज्जज्जे,
 भगिज्ज

६० पु० भगिज्जु, भगिज्जु, भगिज्जु, भगिज्जो, भगिज्जो, भगिज्जो,
 भगीभज्जु, भगीभज्जु, भगीभज्जु, भगीभज्जो, भगीभज्जो, भगीभज्जो,
 भगिज्जु, भगिज्जु, भगिज्जु, भगिज्जो, भगिज्जो, भगिज्जो,
 भगिज्जु

विशेष—एक वर देने में भगिज्ज, भगिज्ज, भगिज्जे आदि रूप बनते हैं ।

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० भगेज्ज, भगेज्ज, भगेज्जो, भगेज्जो,
 भगेज्जो, भगेज्जो

लिम्भ, लिह, लिह (चाटना)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० लिम्भ, लिहोभ, लिम्भित, लिहोभित, लिहोभित,
 लिहोभित, लिहोभित, लिहोभित, लिहोभित,
 इसी प्रकार आगे के रूप भी होते हैं ।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० लिम्भोभ, लिहोभ, लिम्भोभ, लिहोभ,
 अलिम्भोभ, लिहोभ
 अलिम्भोभ और लिम्भोभ आदि के रूप पूर्वार्थ हो सकते हैं ।

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और पुरुषों में—

लिम्भेज्ज, लिम्भेज्ज, लिम्भेज्जो, लिम्भेज्जो,
 लिम्भेज्ज, लिम्भेज्ज, लिम्भेज्जो, लिम्भेज्जो

गम्म, गम < गम् (जाना) वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० गम्मइ, गमीअइ, गमिज्जइ गम्मन्ति, गमीअन्ति, गम्मन्ते,
गमीअन्ते, गमिज्जन्ति, गमिज्जन्ते
इसी प्रकार आगे रूप भी समझने चाहिए ।

प्रेरणार्थक क्रिया

२६. प्रेरणार्थक क्रिया—क्रिया का वह विभूत रूप है, जिससे यह बोध होता है कि क्रिया के व्यापार में कर्ता स्वतन्त्र नहीं है; यत्कि उसपर किसी की प्रेरणा है। साधारण धातु में जो कर्ता रहता है, वह प्रेरणार्थक में स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से कार्य कराता है। जैसे—पढ़ता है का प्रेरणार्थक—पढ़ाता है।

(३०) प्राकृत में प्रेरणार्थक बनाने के लिए अ, ए, आव और आवे प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(३१) अ और ए प्रत्यय के रहने पर उपान्त्य अ को भा हो जाता है। यथा—

कृ—कृ + अ = कार, कृ + आव = कारावइ—कराता है।

कं + ए = कारे; कं + आवे = कारावेइ—कराता है।

(३२) मूल धातु के उपान्त्य में इ स्वर हो तो ए और उ स्वर हो तो ओ हो जाता है। यथा—

विस् + अ = वेस + इ = वेसइ; विस् + ए = वेसे + इ = वेसेइ

विस् + आव = वेसाव + इ = वेसावइ; विस् + आवे = वेसावे + इ = वेसावेइ

(३३) उपान्त्य दीर्घ स्वर रहने पर धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय जुड़ जाते हैं और उपान्त्य को एकार या ओकार नहीं होता। यथा—

चूस् + अ = चूस + इ = चूसइ; चूस् + ए = चूसे + इ = चूसेइ

चूस् + आव = चूसाव + इ = चूसावइ; चूस् + आवे = चूसावे + इ = चूसावेइ

प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूपावलि

हस (हसाता है)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० हासइ, हासेइ, हमावइ;
हासेवेइ; हापए, हासेप,
हसावए, हमावेप

हासन्ति, हासेन्ति, हसावन्ति, हमावन्ति
हासन्ते, हासेन्ते, हसावन्ते, हमावन्ते
हासिरे हासेइरे, हमाविरे, हमावेरे

- म० पु० हासति, हासेसि, हसायमि, हासद, हासेद, हयाउद, हयायेद,
हसाचेसि
हाससे, हासेसे, हयाउमे, हसायेसे हासिस्था, हासेदस्था, हसायिस्था,
हसायेदस्था
- उ० पु० हातमि, हातेमि, हसायमि हायमो, हासेमो, हयायमो, हयायेमो
हयाचेमि हायमु, हातेमु, हयायमु, हयायेमु
हासम, हासेम, हयायम, हयायेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० हासीअ, हासेईअ, हयायीअ, हयायेईअ

भविष्यत्काल

- | | एकवचन | बहुवचन |
|----------|---|--|
| प्र० पु० | हासिदिइ, हासेदिइ, हया-
विदिइ, हसायेदिइ
हसादिइ, हातेदिइ, हसा-
रिदिइ, हसायेदिइ | हासिदिन्ति, हासेदिन्ति, हसायिदिन्ति,
हयायेदिन्ति,
हासिदिन्ते, हातेदिन्ते, हसायिदिन्ते,
हयायेदिन्ते,
हासिदिरे, हातेदिरे, हसायिदिरे, हसायेदिरे |
| म० पु० | हामिदिमि, हातेदिमि,
हयायिदिमि, हयायेदिमि,
हासिदिमे, हातेदिमे,
हसायिदिमे, हसायेदिमे | हासिदिस्था, हातेदिस्था, हसायिदिस्था,
हयायेदिस्था
हासिदिह, हातेदिह, हसायिदिह
हसायेदिह |
| उ० पु० | हासिस्सं, हातेस्सं,
हसायिस्सं, हसायेस्सं | हासिस्सामो, हातेस्सामो, हसायिस्सामो,
हसायेस्सामो, हयायिस्सामु, हातेस्सामु
हयायिस्सामु, हसायेस्सामु |
| | हासिस्सामि, हातेस्सामि,
हसायिस्सामि, हसायेस्सामि,
हासिदामि, हातेदामि
हसायिदामि, हसायेदामि
हासिदिमि, हातेदिमि, | हासिस्साम, हातेस्साम, हयायेस्साम,
हयायेस्साम
हामिदामो, हातेदामो, हसायिदामो,
हयायेदामो, हातेदामु, हसायिदामु,
हसायेदाम, हासिदाम, हातेदाम, |

हसाविहिमि, हसावेहिमि हुमाविहाम, हसावेहाम, हासिदिमो,
 हासेदिमो, हसाविहिमो, हसावेहिमो,
 हासिदिमु, हासेदिमु, हसाविदिमु,
 हासिदिस्सा, हासेदिस्सा, हसाविदिस्सा,
 हसावेदिस्सा, हासिदिह्या, हासेदिह्या,
 हसाविदिह्या, हसावेदिह्या

विधि एवं आज्ञार्थ

प्र० पु०	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासउ, हासेउ, हसावउ, हसावेउ	हासन्तु, हासेन्तु, हसावन्तु, हसावेन्तु
म० पु०	हाससु, हासेसु, हसावसु, हसावेसु, हासहि, हासेहि, हसावहि, हसावेहि, हासेजसु, हासेहजसु, हासेजसु, हासेजहि, हासेहजहि, हासेजेजहि, हासेजेज, हासेजेज, हासेजेज, हसावेजेज, हास, हासे, हसाव, हसावे	हासद्, हासेद्, हसावद्, हसावेद्
उ० पु०	हासमु, हासेमु, हसावमु, हसावेमु	हासमो, हासेमो, हसावमो, हसावेमो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	हासेज्, हासेज्, हसावेज्, हसावेज्, हासन्तो, हासेन्तो, हासवन्तो, हसावेवन्तो, हासमाणो, हासेमाणो, हसावमाणो हसावेमाणो
----------------	--

कर < कृ (कराना)—वर्तमान

प्र० पु०	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारइ, कारेइ, कारावइ, कारा- वेइ, कारण, कारेण, कारोवण, कारन्ते, कारेन्ते, कारावन्ते, कारावेन्ते कारिरे, कारेइरे, काराविरे, कारावेइरे	कारन्ति, कारेन्ति, कारावन्ति, कारावेन्ति, कारन्ते, कारेन्ते, कारावन्ते, कारावेन्ते

म० पु०	कारसि, कारेसि, करासि, करावेसि, कारसे, कारेसे, करावसे, करावेसे	कारद, कारेद, करावद, करावेद, कारित्था, कारेदत्था, करावित्था, करावेदित्था
उ० पु०	कारमि, कारेमि, करासमि, करावेमि	कारमो, कारेमो, करासमो, करावेमो कारमु, कारेमु, करासमु, करावेमु कारम, कारेम, करावम, करावेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	कारीभ, कारेईभ, करात्रीभ, काराईभ
----------------	---------------------------------

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	कारिहिइ, कारेहिइ, कराविहिइ, करावेहिइ कारिहिप्, कारेहिप्, कराविहिप्, करावेहिप्	कारिहिन्ति, कारेहिन्ति, कराविहिन्ति, करावेहिन्ति, कारिहिन्ते, कारेहिन्ते, कराविहिन्ते, करावेहिन्ते, कारिहिरे, कारेहिरे, कराविहिरे, करावेहिरे
म० पु०	कारिहिमि, कारेहिसि, कराविहिसि, करावेहिसि, कारिहिसे, कारेहिसे, कराविहिसे, कराविहिसे, करावेहिसे	कारिहित्था, कारेहित्था, करावहित्था करावेहित्था, कारिहिद, कारेहिद, कराविहिद, करावेहिद
उ० पु०	कारिस्सं, कारेस्सं, करासस्सं, कारिस्सामि, कारेस्सामि कराविस्सामि, करावेस्सामि कारिहामि, कारेहामि, कराविहामि	कारिस्सामो, कारावेस्सामो, कराविस्सामो, करावेस्सामो कारिहामो, कारेहामो, कराविहामो, करावेहामो, कारिहिमो, कारेहिमो, कारेहिमो, कराविहिमो, करावेहिमो

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	कारउ, कारेउ, करावउ, करावेउ	कारन्तु, कारेन्तु, करावन्तु, करावेन्तु
----------	-------------------------------	--

- म० पु० कारमु, कारेसु, कारामु कारद्, कारेद्, करावद्, करावेद्
 करावेसु, कारद्दि, कारेद्दि,
 करावद्दि, करावेद्दि, कारेज्जमु
 कारेद्ज्जमु, करावेज्जमु,
 करावेद्ज्जमु, कारेज्जद्दि, कारेद्ज्जद्दि,
 करावेज्जद्दि, कारेज्जे, करावेज्जे
- उ० पु० कारमु, कारेसु, करावमु, कारमो, कारेमो, करावमो, करावेमो
 करावेसु

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० कारेज्ज, कारेज्जा, करावेज्ज, करावेज्जा, कारन्तो, कारेन्तो, करावन्तो,
 करावेन्तो, कारमाणो, कारेमाणो, करावमाणो, करावेमाणो

ढक्-छद् (ढक्वाना, वन्द करवाना)-वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

- प्र० पु० ढक्क, ढक्के, ढक्कावद्, ढक्कन्ति, ढक्केन्ति, ढक्कावन्ति, ढक्कावेन्ति,
 ढक्कावेद्
- म० पु० ढक्कसि, ढक्केसि, ढक्कावसि, ढक्कित्था, ढक्केत्तथा, ढक्कावित्था,
 ढक्कावेसि ढक्कावेत्तथा, ढक्कद्, ढक्केद्, ढक्कावद्,
 ढक्कावेद्
- उ० पु० ढक्कमि, ढक्केमि, ढक्कावमि, ढक्कमो, ढक्केमो, ढक्कावमो, ढक्कावेमो,
 ढक्कावेमि ढक्कमु, ढक्केमु—इत्यादि

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

- प्र० पु० ढक्कहिद्दि, ढक्केहिद्दि, ढक्काविद्दि, ढक्केहिन्ति, ढक्केहिन्ति, ढक्काविद्दिन्ति
 ढक्कावेद्दिन्ति, ढक्केहिरे, ढक्कहिरे,
 ढक्काविहिरे, ढक्कावेहिरे
- म० पु० ढक्कहिसि, ढक्केहिसि, ढक्काविहिसि, ढक्कहित्था, ढक्केहित्था, ढक्काविहित्था
 ढक्कावेहित्था, ढक्कहिद्दि, ढक्केहिद्दि
 ढक्काविहिद्दि, ढक्कावेहिद्दि

- उ० पु० दन्त्रिस्सं, दन्त्रेस्सं, दन्त्रिस्सामो, दन्त्रेस्सामो, दन्त्राविस्सामो,
दन्त्राविस्सं, दन्त्रावेस्सं दन्त्रावेस्सामो, दन्त्रिहामो, दन्त्रिहिमो,
दन्त्रिस्सामि, दन्त्रेस्सामि दन्त्रिहिस्सा, दन्त्रिहित्वा
दन्त्रिहामि, दन्त्रिहिमि

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

- प्र० पु० दन्त्रुड, दन्त्रेड, दन्त्रावड, दन्त्रुन्तु, दन्त्रेन्तु, दन्त्रावन्तु,
दन्त्रावेड दन्त्रावेन्तु
म० पु० दन्त्रुसु, दन्त्रेसु, दन्त्रावसु, दन्त्रुद, दन्त्रेद, दन्त्रावद, दन्त्रावेद
दन्त्रावेसु, दन्त्रदि, दन्त्रेदि,
दन्त्रावदि, दन्त्रावेदि, दन्त्रेज्जसु,
दन्त्रेहज्जसु, दन्त्रेहज्जदि
उ० पु० दन्त्रसु, दन्त्रेसु, दन्त्रावसु, दन्त्रमो, दन्त्रेमो, दन्त्रावमो,
दन्त्रावेसु दन्त्रामो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० दन्त्रीअ, दन्त्रेईअ, दन्त्रावीअ, दन्त्रावेईअ

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० दन्त्रेज्ज, दन्त्रेज्जा, दन्त्रावेज्ज दन्त्रावेज्जा, दन्त्रन्तो, दन्त्रेन्तो,
दन्त्रावन्तो, दन्त्रावेन्तो, दन्त्रमाणो, दन्त्रेमाणो, दन्त्रावमाणो,
दन्त्रावेमाणो

हो < भू—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

- प्र० पु० होअद्, होएद्, होआवद्, होअन्ति होएन्ति, होआवन्ति, होआ-
वेन्ति, होअन्ते, होहरे
म० पु० होअसि, होएसि, होहस्था, होएहस्था, होआवित्था,
होआवेहत्था, होअद्, होपद्, होआवद्,
होआवेद्

उ० पु० होअमि, होणमि, होअमो, होणमो, होआमो, होआवेमो,
होआवमि, होआवेमि होअमु, होणमु, होआमु, होअम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

५० म० उ० पु० होअसी, होणसी, होआवसी, होआवेसी, होअही, होणही,
होआवही, होआवेही, होअहीअ, होणहीअ,
होआवहीअ, होआवेहीअ

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० होइहिइ, होणहिइ होइहन्ति, होणहन्ति,
होआविहिइ, होआवेहिइ होआविहन्ति, होआवेहन्ति
म० पु० होइहिसि, होणहिसि, होइहित्था, होणहित्था, होआविहित्था,
होआवेहिसि, होआवेहिसि होआवेहित्था, होइहिइ
उ० पु० होइहस्सं, होणहस्सं, होआविहस्सं, होइहस्सामो, होणहस्सामो, होआविहस्सामो,
होआवेहस्सं, होइहस्सामि, होआवेहस्सामो, होइहामो, होणहामो,
होएहामि—इत्थाहि होआविहामो, होआवेहामो—इत्थावि

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० होअउ, होणउ, होआवउ, होअन्तु, होणन्तु, होआवन्तु, होआवेन्तु
होआवेउ
म० पु० होअउ, होणउ, होआवउ, होअह, होणह, होआवह, होआवेह
होआवेउ, होअहि, होणहि,
होआवहि, होआवेहि
उ० पु० होअमु, होणमु, होआवमु, होअमो, होणमो, होआवमो, होआवेमो
होआवेमु

क्रियातिष च

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० होअज्जा, होणज्जा, होआवेज्ज, होआवेज्जा, होअन्तो, होणन्तो,
होआवन्तो, होआवेज्जो, होअमाणो, होणमाणो, होआवमाणो
होआवेमाणो

कुछ क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूपों का संकेत

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	विधि एवं आज्ञा	क्रियातिपत्ति
पठ (पठ्)	पाठइ	पाठीअ	पाडिहिइ	पाठउ	पाठेज
आहोड (तड्)	आहोडइ	आहोडोअ	आहोडिहिइ	आहोडउ	आहोडेज
नासव (नसृ)	नासवइ	नासवीअ	नासविहिइ	नासउ	नासवेज
हरिस (हृश्)	हरिसइ	हरिसीअ	हरिसिहिइ	हरिसउ	हरिसेज
मिस्स (मिथ्)	मिस्सइ	मिस्सीअ	मिस्सिहिइ	मिस्सउ	मिस्सेज
अप्प (अर्प)	अप्पइ	अप्पीअ	अप्पिहिइ	अप्पउ	अप्पेज
दूम (दू)	दूमइ	दूमीअ	दूमिहिइ	दूमउ	दूमेज
वा (वा)	वाअइ	वाअसी	वाइहिइ	वाअउ	वाएज
ठा (स्था)	ठाअइ	ठाअसी	ठाइहिइ	ठाअउ	ठाएज
फा (फ्रै)	फाअइ	फाअसी	फाइहिइ	फाअउ	फाएज
ण्हा (स्ना)	ण्हाअइ	ण्हाअसी	ण्हाइहिइ	ण्हाअउ	ण्हाएज
गा (गै)	गाअइ	गाअसी	गाइहिइ	गाअउ	गाएज
भमाड (भ्रम्)	भमाडइ	भमाडीअ	भमाडिहिइ	भमाडउ	भमाडेज
सोस (श्रृप्)	सोसइ	सोसीअ	सोसिहिइ	सोसउ	सोसेज
सोस (श्रृप्)	सोसइ	सोसीअ	सोसिहिइ	सोसउ	सोसेज
रूस (रृप्)	रूसइ	रूसीअ	रूसिहिइ	रूसउ	रूसेज
मोह (मुहृ)	मोहइ	मोहीअ	मोहिहिइ	मोहउ	मोहेज
नव (नम्)	नावइ	नारीअ	नाविहिइ	नावउ	नावेज
पूस (पुप्)	पूसइ	पूसीअ	पूसिहिइ	पूसउ	पूसेज
खम् (क्षम्)	खामइ	खामसी	खामिहिइ	खामउ	खामेज

धातुओं के कर्मणि और भाव में प्रेरकरूप

(३४) प्रेरणार्थक धातु में भाव और कर्मणि के रूप बनाने के लिए मूल धातु में भावि प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त कर्मणि और भाव के प्रत्यय ईअ, ईय अथवा इज्ज प्रत्यय जोड़ने चाहिए ।

(३५) मूलधातु में उपान्त्य अ के स्थान पर आ कर दिया जाय और ह्रस्व अंम में ईअ, ईय या इज्ज प्रत्यय जोड़ देने से प्रेरक कर्मणि और भावि के रूप होते हैं ।

कर् + भावि = करावि, करावि + ईअ = करारीअ + इ = करावोअइ < काराप्यते
 कर्—कार + ईअ = कारीअ + इ = कारीअइ, कारीअ + ए = कारीअए < कार्यते
 कराविहिइ, कराविहिइ, कराविस्सए < कारायिष्यते ।

प्रेरक भाव और कर्मणि—हास, हसावि—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

५० पु० हासीअह, हासीअए
हासिज्जह, हासिज्जए,
हसावीअह, हसावीअए
हसाविज्जह, हसाविज्जए

हासीअन्ति, हासीअन्ते, हासीइरे
हासिज्जन्ति, हासिज्जन्ते, हासिज्जिरे,
हसावीअन्ति, हसावीअन्ते, हसावीइरे,
हसाविज्जन्ति, हसाविज्जन्ते, हसाविज्जिरे

म० पु० हासीअसि, हासीअसे,
हासिज्जसि, हासिज्जसे,
हसावीअसि, हसावीअसे
हसाविज्जसे, हसाविज्जसि

हासीइत्था, हासीअह, हासिज्जत्था,
हासिज्जह, हसावीइत्था, हसावीअह,
हसावीअह, हसाविज्जत्था, हसाविज्जह

उ० पु० हासीअमि, हासीआमि,
हासिज्जमि, हासिज्जामि
हसावीअमि, हसावीआमि,
हसाविज्जामि, हसाविज्जमि

हासीअमो, हासीआमो, हासीइमो,
हामीएमी, हासीअमु, हासीआमु, हासीइमु,
हासीएमु, हासीअमु, हासीआम, हासीइम,
हासीएम, हासिज्जमो, हासिज्जामो,
हासिज्जिमो, हासिज्जेमो, हासिज्जमु,
हासिज्जामु, हासिज्जिमु, हासिज्जेमु,
हासिज्जम, हासिज्जाम, हासिज्जिम, हासिज्जेम
हसावीअमो, हसावीआमो, हासीइमो,
हसावीएमो, हसावीअमु, हसावीआमु,
हसावीइमु, हसावीएमु, हसावीअम,
हसावीआम, हसावीइम, हसावीएम,
हसाविज्जमो

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० हासिदिह, हासिदिहए,
हसाविदिह

हासिदिहन्ति, हासिदिहन्ते, हासिदिरे,
हसाविदिहन्ति, हसाविदिहन्ते, हसाविदिरे

म० पु० हासिदिहि, हासिदिसे,
हसाविहि

हासिदित्था, हासिदिह
हसाविदित्था, हसाविदिह

उ० पु० हासिस्समि, हासिस्सामि
हासिहामि, हासिहिमि
हसाविस्समि, हसाविस्सामि

हासिस्सामो, हासिहामो, हासिहिमो
हासिस्सामु, हासिहामु, हासिहिमु,
हासिस्साम, हासिहाम, हासिहिम

हसाविहामि, हसाविहिमि हसाविहामो, हसाविहामो, हसाविहिमो,
हसाविहामु, हसाविहामु, हसाविहामु, हसाविहामु,
हसाविहित्वा

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हासीअ, हसायेअ, हासीईअ, हासीअईअ, हासिजोअ

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० हासीअउ, हासिजउ हासीअन्तु, हासिजन्तु, हसावीअन्तु
हसावीअउ, हसाविजउ हसाविजन्तु

म० पु० हासीअहि, हासीअसु, हासीअह, हासिजइ,
हासीअज्जु, हासीअज्जहि, हसावीअह, हसाविजइ,
हासीअज्जे, हासीअ हासिजहि, हासिजसु,
हासिज्जेज्जु, हासिज्जेज्जहि,
हासिज्जेज्जे, हासिज्ज,
हसावीअहि, हसावीअज्जहि

उ० पु० हासीअमु, हासीअामु, हासीअमो, हासीअामो, हासीइमो,
हासीइमु, हासिजमु, हासिजमो, हासिज मो, हासिजिमो
हासिजामु, हासिजिमु, हसायीअमो, हसाविजमो, हसाविजिमो
हसावीअमु, हसावीइमु

क्रियातिपत्ति

सभी पुरप और सभी वचनों में

हासेज, हासेजा, हसाविज्ज, हसाविजा, हासन्तो, हासेन्तो, हसाविन्तो, हासमानो
हसाविमानो

खाम, खमावि < क्षम् (क्षमा कराना)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० खामीअण, खामीअइ खामीअन्ति, खामीअन्ते, खामीइरे
खामिज्जइ, खामिज्जइ खामिज्जन्ति, खामिज्जन्ते, खामिजिरे

	खमावीअइ, खमावीअए	खमावीअन्ति, खमावीअन्ते,
	खमाविज्जइ, खमाविज्जए	खमावीइरे, खमाविज्जन्ति
म० पु०	खामीअसि, खामीअसे	खामीइत्था, खामीअइ
	खामिज्जसि, खामिज्जसे	खामिज्जित्था, खामिज्जइ
	खमावीअसि, खमावीअसे	खमावीइत्था, खमावीअइ
	खमाविज्जसि, खमाविज्जसे	खमाविज्जित्था, खमाविज्जइ
उ० पु०	खामीअमि, खामीआमि	खामीअमो, खामीआमो, खामीइमो
	खामीज्जमि, खामिज्जामि	खामीएमो,
	खमावीअमि, खमावीआमि	खामिज्जमो, खामिज्जामो,
	खमाविज्जमि, खमाविज्जामि	खामिज्जिमो, खामिज्जिमो
		खमावीअमो, खमावीआमो
		खमावीइमो, खमावीएमो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	खामीईअ, खामीअईअ, खामिज्जोअ, खामिज्जईअ, खमावीईअ, खमावीअईअ, खमाविज्जोअ, खमाविज्जईअ, खामीअ, खमावीअ
----------------	---

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	खामिहिइ, खामिहए	खामिहिन्ति, खामिहिन्ते, खामिहिरे,
	खमाविहिइ, खमाविहिए	खमाविहिन्ति, खमाविहिन्ते, खमाविहिरे
म० पु०	खामिहिसि, खामिहिने	खामिहिस्था, खामिहिइ,
	खामिहिंसि, खामिहिने	खमाविहिस्था, खमाविहिइ
उ० पु०	खामिस्सं, खामिस्सामि	खामिस्सामो, खामिहामो
	खामिहामि, खामिहिमि	खामिहिमो, खमाविस्सामो,
	खमाविस्सं, खमाविहामि	खमाविहामो, खमाविहिमो
		खामिहिस्सा, खामिहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	खामीअउ, खामिज्जउ	खामीअन्नु, खामिज्जन्नु
	खमावीअउ, खमाविज्जउ	खमावीअन्नु, खमाविज्जन्नु

म० पु०	खामीअहि, खामीअमु खामीपञ्चमु, खामीपञ्चहि खामीपञ्चे, खामीअ, इत्यादि	खामीअह, खामिअह खमायीअह, खमाविअह खमायीअ, खमाविअ
उ० पु०	खामीअमु, खामीआमु खामीइमु, खामिज्जमु, खामिज्जामु खमायीअमु, खमायीआमु खमायीइमु खमायिज्जमु, खमायिज्जामु खमाविज्जमु	खामीअमो, खामीआमो खामीइमो, खामिज्जमो, खामिज्जामो, खामिज्जामो खमायीअमो, खमायीआमो खमायीइमो खमायिज्जमो, खमायिज्जामो खमाविज्जमो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और पुरुषों में

खामेज्ज, खामेज्जा, खमायिज्ज, खमाविज्जा, खामन्तो, खामेन्तो,
खमाविन्तो, खाममाणो, खमायिमाणो

पिवास-रूपा (पिलाना, पिलवाना)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	पिवासइ, पिवासए	पिवासन्ति, पिवासन्ते, पिवासिरे
म० पु०	पिवाससि, पिवाससे	पिवासित्था, पिवासइ
उ० पु०	पिवासमि, पिवासामि	पिवासमो, पिवासामो, पिवासिमो, पिवासेमो पिवाससु, पिवासामु, पिवासिसु, पिवासिसु, पिवासम, पिवासाम, पिवासिम, पिवासेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० पिवासीअ

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	पिवासिहिइ, पिवासिहिइए	पिवासिहिन्ति, पिवासिहिन्ते, पिवासिहिरे
म० पु०	पिवासिहिसि, पिवासिहिसे	पिवासिहित्था, पिवासिहिइ
उ० पु०	पिवासिहिसि, पिवासिहिसामि पिवासिहिसि, पिवासिहिसि	पिवासिहिसामो, पिवासिहिसामो, पिवासि- हिसामो, पिवासिहिसामु, पिवासिहिसामु, पिवासिहिसामु, पिवासिहिसाम, पिवासिहिसाम

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिवासउ	पिवासन्तु
म० पु०	पिवासद्दि, पिवाससु, पिवासेज्जमु, पिवासेज्जद्दि, पिवासेज्जे, पिवास	पिवासद्दि
उ० पु०	पिवाससु पिवासासु, पिवासिसु	पिवायसो पिवासायो, पिवासिसो
सभी पुरुष और सभी वचनों में पिवासेज्ज, पिवासेज्जा, पिवासन्तो, पिवास्तमानो		

क्रियातिपत्ति

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	विधि एवं आज्ञा	क्रियातिपत्ति
कार, करावि < कृ	काहीअइ	काहीअ	काहिदिइ	काहीअउ	काहेज
हो, होआवि < भू	होईअइ	होसी	होदिइ	होईअउ	होज
	होआवीअइ	होआविती	होआविदिइ	होआवीअउ	होआविज
ने, नेआवि < नी	नेईअइ	नेसी	नेदिइ	नेईअउ	नेज
	नेआविअइ	नेआविती	नेआविदिइ	नेआविअउ	नेआविज
भा, भाआवि < भू	भाईअइ	भाईअसी	भादिइ	भाईअउ	भाज
	भाआवीअइ	भाआविती	भाआविदिइ	भाआवीअउ	भाआविज
हुगुज < गुप्	हुगुजइ	हुगुजोअ	हुगुजिदिइ	हुगुजउ	हुगुजेज
	हुगुजआइ	हुगुजावीअ	हुगुजाविदिइ	हुगुजावेउ	हुगुजावेज
लिज < कम्	लिजइ	लिजोअ	लिजिदिइ	लिजउ	लिजेज
	लिजआइ	लिजआवीअ	लिजआविदिइ	लिजआउ	लिजआवेज

सन्नन्त क्रिया

(३६) किसी कार्य के करने की हज्ज का अर्थ बतलाने के लिए संस्कृत में धातु से सन् प्रत्यय जोड़ा जाता है। पर प्राकृत में सन्नन्त प्रक्रिया के घनाने के कोई विशेष नियम नहीं हैं। मात्र ध्वनिपरिवर्तन के आधार पर ही इस प्रक्रिया के रूप बनते हैं। यहाँ कुछ किर्यारूप उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं।

लिच्छ < लभ्—लिप्सते (= लाभ की इच्छा करना)

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छद्, लिच्छा	लिच्छन्ति, लिच्छन्ते, लिच्छरे
म० पु०	लिच्छसि, लिच्छसे	लिच्छिस्व, लिच्छद्
उ० पु०	लिच्छामि, लिच्छमि	लिच्छामो, लिच्छामो, लिच्छिमो, लिच्छेमो, लिच्छामु, लिच्छम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० म० उ० पु०	लिच्छीभ	लिच्छीभ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छिद्दि, लिच्छिदि	लिच्छिद्वन्ति, लिच्छिद्वन्ते, लिच्छिद्वरे
म० पु०	लिच्छिद्वसि, लिच्छिद्वसे	लिच्छिद्विस्व, लिच्छिद्विद्
उ० पु०	लिच्छिद्वमि, लिच्छिद्वमि, लिच्छिद्वमि, लिच्छिद्वमि	लिच्छिद्वमो, लिच्छिद्वमो, लिच्छिद्वमो, लिच्छिद्वमो, लिच्छिद्वमो, लिच्छिद्वमो, लिच्छिद्विस्व, लिच्छिद्विस्व

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छत	लिच्छन्तु
म० पु०	लिच्छद्, लिच्छतु, लिच्छन्तु, लिच्छत	लिच्छद्
उ० पु०	लिच्छतु, लिच्छतु, लिच्छतु लिच्छतु, लिच्छतु, लिच्छतु	लिच्छतु, लिच्छतु, लिच्छतु

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० लिच्छन्, लिच्छन्, लिच्छन्, लिच्छन्
जुगुच्छ < गुप् (निन्दा या तिरस्कार करने की इच्छा करना)

जुगुच्छद् < जुगुप्सति—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुगुच्छद्, जुगुच्छद्	जुगुच्छन्ति, जुगुच्छन्ते, जुगुच्छरे
म० पु०	जुगुच्छसि, जुगुच्छसे	जुगुच्छिस्व, जुगुच्छद्

उ० पु० जुगुच्छमि, जुगुच्छामि जुगुच्छमो, जुगुच्छामो, जुगुच्छिमो,
जुगुच्छेमो, जुगुच्छसु, जुगुच्छामु,
जुगुच्छिमु, जुगुच्छम, जुगुच्छाम

भूतकाल

सभी वचन और सभी पुरुषों में जुगुच्छीअ

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० जुगुच्छिहिह, जुगुच्छिहिष जुगुच्छिहिन्ति, जुगुच्छिहिन्ते, जुगुच्छिहिरे
म० पु० जुगुच्छिहिसि, जुगुच्छिहिसं जुगुच्छिहिस्था, जुगुच्छिहिह
उ० पु० जुगुच्छिहसं, जुगुच्छिहस्तामि जुगुच्छिहसामो, जुगुच्छिहामो,
जुगुच्छिहामि, जुगुच्छिहिमि जुगुच्छिहिमो

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० जुगुच्छउ जुगुच्छन्तु
म० पु० जुगुच्छहि, जुगुच्छसु जुगुच्छह
जुगुच्छेज्जसु
उ० पु० जुगुच्छसु, जुगुच्छामु, जुगुच्छमो, जुगुच्छामो, जुगुच्छिमो
जुगुच्छिमु

क्रियाविपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में

जुगुच्छेज्ज, जुगुच्छेज्जा, जुगुच्छन्तो, जुगुच्छमाणो

यदुक्तर < भुज—भोजन करने की इच्छा करना

युहुक्पइ < युभुक्षति—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० उहुक्पइ, उहुक्पप उहुक्पन्ति, उहुक्पन्ते, उहुक्पिरे
म० पु० युहुक्पसि, उहुक्पसे उहुक्पिस्था, उहुक्पह
उ० पु० युहुक्पमि, उहुक्पमि उहुक्पमो, उहुक्पामो, उहुक्पिमो,
उहुक्पेमो, उहुक्पसु, उहुक्पामु,
उहुक्पिमु, उहुक्पेमु,

भूतकाल

सभी वचनों और सभी पुरुषों में

बहुवचन

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	बुहुन्निदिदि, बुहुन्निदिदि	बुहुन्निदिदिन्ति, बुहुन्निदिदिन्ते, बुहुन्निदिदिरे
म० पु०	बुहुन्निदिदिवि, बुहुन्निदिदिसे	बुहुन्निदिदिथा, बुहुन्निदिदिह
उ० पु०	बुहुन्निदिस्सं, बुहुन्निदिस्सामि,	बुहुन्निदिस्सामो, बुहुन्निदिहामो,
	बुहुन्निदिहामि, बुहुन्निदिदिमि	बुहुन्निदिदिमो, बुहुन्निदिस्सामु,
		बुहुन्निदिहामु, बुहुन्निदिदिस्ता

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	बुहुन्निदि	बुहुन्निदिन्तु
म० पु०	बुहुन्निदि, बुहुन्निदि	बुहुन्निदिह
उ० पु०	बुहुन्निदि, बुहुन्निदि	बुहुन्निदिमो, बुहुन्निदिमो,
	बुहुन्निदि	बुहुन्निदिमो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में

बुहुन्निदि, बुहुन्निदि, बुहुन्निदिन्तो, बुहुन्निदिमागो

सुस्सुस < भ्र (सुनने की इच्छा करना)

सुस्सुसइ < शुश्रूषति—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	सुस्सुसइ, सुस्सुसइ	सुस्सुसन्ति, सुस्सुसन्ते, सुस्सुसन्तिरे
म० पु०	सुस्सुससि, सुस्सुससे	सुस्सुसिथा, सुस्सुसह
उ० पु०	सुस्सुसमि, सुस्सुसामि	सुस्सुसमो, सुस्सुसामो, सुस्सुसामो,
		सुस्सुसमु, सुस्सुसामु, सुस्सुसामु

भूतकाल

सभी वचन और सभी पुरुषों में

बहुवचन

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	सुस्सुसिदिदि, सुस्सुसिदिदि	सुस्सुसिदिदिन्ति, सुस्सुसिदिदिन्ते, सुस्सुसिदिदिरे
----------	----------------------------	--

म० पु०	सुस्सूसिदिहि, सुस्सूसिदसे	सुस्सूसिदित्था, सुस्सूसिदिह
उ० पु०	सुस्सूसिस्सं, सुस्सूसिस्सामि	सुस्सूसिस्सामो, सुस्सूसिद्दामो
	सुस्सूसिदामि	सुस्सूसिदिमो, सुस्सूसिस्सामु

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुस्सूसउ	सुस्सूसन्नु
म० पु०	सुस्सूसहि, सुस्सूससु	सुस्सूसद
उ० पु०	सुस्सूसमु, सुस्सूसामु	सुस्सूसमो, सुस्सूसामो, सुस्सूसिमो
	सुस्सूसिगु	

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में—

सुस्सूमेज्ज, सुस्सूमेज्जा, सुस्सूमन्तो, सुस्सूमामो

सन्नन्त—इच्छार्थक धातुओं के कर्मणि और भावि रूप

लिच्छ < लभ्—लिच्छीमइ (लिरन्ते)

सुण < गुप्—सुणीमइ (सुगुप्स्यते)

सुहुन्स < सुञ्—सुहुक्खीमइ (सुसुह्यते)

यङन्त, यङ्लुगन्त और नामधातु

(३७) व्यञ्जन से आरम्भ होनेवाली किसी भी एकाच् धातु के अनन्तर क्रिया को बार-बार करने अथवा क्रिया को खूब करने का बोध कराने के लिए संस्कृत में यङ् प्रत्यय लगाया जाता है। पर प्राकृत में यङन्त क्रियाएँ वर्गविदार द्वारा ही निश्चय होती हैं। यथा—

पेवीमइ, पेवीमए < पेवीयते

हालपइ, हालपए < हालप्यते

वरीवच्चइ, वरीवच्चए < वरीवृत्त्यते

सासम्कइ, सासम्कए < सासम्स्यते

जाजायइ, जाजायए < जाजायते

(३८) संस्कृत धातुओं में यङ् प्रत्यय का लोप हो जाने पर भी अतिशय या बार-बार अर्थ में क्रिया का प्रशोध होता है। प्राकृत में यह यङ्लुगन्त या यङ्लुगन्त भी वर्णचिह्न द्वारा अवगत किया जाता है। यथा—

चंम्मइ < चङ्खतीति

चंम्मणं < चङ्खम्मणम्

(१९) संज्ञा या प्रातिपदिक को 'नाम' कहते हैं; उससे किसी विशेष अर्थ में प्रत्यय होकर धातुस्वरूपों की जिवमें उत्पत्ति होती है, उसे नामधातु प्रक्रिया कहते हैं। तात्पर्य यह है कि जब किसी मुख्य संज्ञा के अनन्तर प्रत्यय जोड़कर धातु बना लेते हैं, तो उसे 'नामधातु' कहते हैं। नामधातुओं के विशेष विशेष अर्थ होते हैं। प्राकृत में नामधातु बनाने के निम्नलिखित नियम हैं।

(४०) नामधातु बनाने के लिए प्राकृत में निरुप से अ (य) प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

गुरुभाइ, गुरुभाअइ < गुरुवि आचरतीति—गुरुकायते

अमराइ, अमराअइ < अमर इय आचरतीति—अमरायते

तमाइ, तमाअइ < तमायते—अन्धकार में होनेवाला आचरण करता है।

अलसाइ, अलसाअइ < अलसायते—आलसी के समान आचरण करता है।

ऊन्दाइ, ऊन्दाअइ < ऊन्दायते—गर्मी में होनेवाला जैसा आचरण करता है।

दमदमाइ, दमदमाअइ < दमदमायते—दम-दम जैसा करता है।

धूमाइ, धूमाअइ < धूमायते—धूम मचाता है।

सुहाइ, सुहाअइ < सुहायते—सुखी होता है, सुख का अनुभव करता है।

सदाइ, सदाअइ < सदायते—शब्द करता है।

छोदिआए—इ, छोदिआअए—इ < छोदितायते—छाल होता है।

हंसाए—इ, हंसाअए—इ < हंसायते—हंस के समान आचरण करता है।

अच्छाए—इ, अच्छाआए—इ < अच्छरायते—अच्छरा के समान आचरण

करता है।

उन्मगाए—इ, उन्मगाअए—इ—उन्मगायते—उन्मना होता है।

कडाए—इ, कडाअए—इ < कडायते—बध का अनुभव करता है।

अस्थाअइ, अस्थाइ < अस्तायते—अस्व होता है।

सगुआइ, सगुआअइ < सगुआयति—दुबला होता है।

संभाअइ, संभाइ < संभायते—संन्या होती है।

सीदलाअइ, सीदलाइ < सीतलायति—शीतल होता है।

पुत्तीअइ, पुत्तीइ < पुत्तीयति—पुत्र की इच्छा करता है।

कुरुकुराअइ, कुरुकुराइ < कुरुकुरायते—कुरुकुरु करता है।

थरथरेइ < थरथरायते—थर थर करता है।

घणाअइ, घणाइ < घनायति—घन की इच्छा करता है।

अस्साअइ, अस्साइ < अस्सयति—मैथुनेच्छा करता है।

गब्बाअइ, गब्बाइ < गब्बयति—गो की इच्छा करता है।

- वाआअइ, वाआइ < वाच्यति—वाच करने की इच्छा करता है ।
 रायाअइ, रायाइ < राजायते—राजा के समान आचरण करता है ।
 असनाअइ, असनाइ < अशनायति—खाने की इच्छा करता है ।
 वापफाअइ, वापफाइ < वाष्पायते—भाप निकलती है ।
 नमाअइ, नमाइ < नमस्यति—नमस्कार करता है ।
 पुत्तकामाअइ, पुत्तकामाइ < पुत्रकाम्यति—पुत्र की कामना करता है ।
 जपकामाअइ, जसकामाइ < यशस्काम्यति—यश की इच्छा करता है ।
 खीराअइ, खीराइ < क्षीरस्यति—दूध की इच्छा करता है ।
 उभाअइ, उभाआअइ < उदकस्यति—पानी की व्यास है ।
 वैराअइ-ए, वैराइ-ए < वैरायते—वैर जैसा आचरण करता है, वैर करता है ।
 कलहाअइ, कलहाइ < कलहायते—झगड़ता है ।
 चपलाअइ, चपलाइ < चपलायते—चम्पल होता है ।
 करुणाअइ-ए, करुणाइ-ए < करुणायते—फरुणा करता है ।
 सपन्नाअइ-ए, सपन्नाइ-ए < सपन्नायते—कलह करती-फाता है ।
 हरिभाअइ, हरीअइ < हरितायति—हरा होता है ।
 मेहाअइ-ए, मेहाइ-ए < मेघायते—वर्षा होती है ।
 दुम्माअइ-ए, दुम्माइ-ए < दुमायते—गूँस जैसा मालूम होता है ।

कृदन्तविचार

कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं और उनके योग से संज्ञा, विशेषण अथवा अवयव के रूप बनते हैं। कृत् प्रत्ययों से सिद्ध शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

कृत् और तिङ् प्रत्ययों में यह अन्तर है कि कृत् प्रत्ययों से सिद्ध कृदन्त शब्द संज्ञा, विशेषण अथवा अवयव होते हैं। कहीं कहीं कृदन्त शब्द क्रिया या भी कार्य करते हैं। पर तिङ् प्रत्ययों से सिद्ध तिङन्त शब्द सदा क्रिया ही होते हैं। कृत् और तद्धित प्रत्ययों में यह अन्तर है कि तद्धित प्रत्यय सर्वदा किसी सिद्ध संज्ञा, विशेषण अथवा अवयव में जोड़े जाते हैं; किन्तु कृत् प्रत्यय धातु में ही लगते हैं।

वर्तमान कृदन्त

(४०) धातु में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से वर्तमान कृदन्त के रूप होते हैं। पर ई प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में ही जोड़ा जाता है।

(४१) धातु के प्रेरकरूप में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से प्रेरक कर्त्तरि वर्तमान कृदन्त के रूप होते हैं। यहाँ पर भी ई प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में जुड़ता है।

(४२) धातु के प्रेरक भावि और कर्मणि रूप में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से प्रेरक भावि और कर्मणि कृदन्त के रूप होते हैं।

(४३) वर्तमान कृदन्त के न्त, माण और ई प्रत्यय के परे पूर्ववर्ती अकार फों विकल्प से प्रकार होता है। यथा—

भण्—भण + न्त = भणन्त, भण + माण = भणमाण—

पुँलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भणंती, भणमाणो	भणंतं, भणमाणं	भणंती, भणंता
भणेंती, भणेंमाणो	भणेंतं, भणेंमाणं	भणेंती, भणेंता
पा—पाअंती, पाअमाणो	पाअंतं, पाअमाणं	पाअंती, पाअंता
पाएँती, पाएँमाणो	पाएँतं, पाएँमाणं	पाएँती, पाएँता
पांती, पामाणो	पांतं, पामाणं	पांती, पांता
		पाअमाणो, पाअमाणा
		पाएँमाणो, पाएँमाणा
		पामाणो, पामाणा
		पाअई, पाएँई, पाई

रु—ररंतो, ररमाणो
ररंतो, ररेमाणो

ररंतं, ररमाणं
ररंतं, ररेमाणं

ररंती, ररंता
ररंती, ररंता
ररमाणी, ररमाणा
ररेमाणी, ररेमाणा
ररई, ररेई

हृ—हरंता, हरमाणो
हरंतो, हरेमाणो

हरंतं, हरमाणं
हरंतं, हरेमाणं

हरंती, हरंता
हरंती, हरंता
हरमाणी, हरमाणा
हरेमाणी, हरेमाणा
हरई, हरेई

घृप्—घरिस्तो, घरिसमाणो
घरिस्तो, घरिसेमाणो

घरिस्तं, घरिसमाणं
घरिस्तं, घरिसेमाणं

घरिंती, घरिंता
घरिंती, घरिंता
घरिसमाणी, घरिसमाणा
घरिसेमाणी, घरिसेमाणा
घरिई, घरिई

नी—नेंतो, नेमाणो

नेंतं, नेमाणं

नेंती, नेंता, नेमाणी, नेमाणा
नेई

तुप्—तुस्तो, तुसमाणो
तुस्तो, तुसेमाणो

तुस्तं, तुसमाणं
तुस्तं, तुसेमाणं

तुस्तंती, तुस्तंता
तुस्तंती, तुस्तंता, तुसमाणी
तुसमाणा, तुसमाणी, तुसेमाणा
तुसई, तुसेई

दा—देंतो, देमाणो

देंतं, देमाणं

देंती, देंता, देमाणी, देमाणा
देई

चल्—चलस्तो, चलमाणो
चलस्तो, चलेमाणो

चलस्तं, चलमाणं
चलस्तं, चलेमाणं

चलस्तंती, चलस्तंता
चलस्तंती, चलस्तंता, चलमाणी
चलमाणा, चलेमाणी,
चलेमाणा, चलेई, चलेई

खिद्—खिजंतो, खिजमाणो
खिजंतो, खिजेमाणो

खिजंतं, खिजमाणं
खिजंतं, खिजेमाणं

खिजंतंती, खिजंतंता
खिजंतंती, खिजंतंता,
खिजमाणी, खिजमाणा
खिजेमाणी, खिजेमाणा
खिजेई, खिजेई

त्वर—	} तुर-तुरंतो, तुरमाणो } तूर-तूरंतो, तूरमाणो	तुरंतं, तुरमाणं तूरंतं, तूरमाणं	तुरंती, तुरंता तूरंती, तूरंता
	तुरंतो, तुरेमाणो	तुरंतं, तुरेमाणं	तुरंती, तुरंता
			तुरमाणी, तुरमाणा
			तुरेमाणी, तुरेमाणा
			तुरई, तुरेई
शुश्रूप्—	सुस्सूस्तो, सुस्सूसमाणो	सुस्सूस्तं, सुस्सूसमाणं	सुस्सूस्ती, सुस्सूस्तता
	सुस्सूसेतो, सुस्सूसेमाणो,	सुस्सूसेतं, सुस्सूसेमाणं,	सुस्सूपेती, सुस्सूपेता
			सुस्सूसमाणी, सुस्सूसमाणा
			सुस्सूसेमाणी, सुस्सूसेमाणा
			सुस्सूसेई, सुस्सूसेई
लाज्जप्—	लाज्जपंतो, लाज्जपमाणो	लाज्जपंतं, लाज्जपमाणं	लाज्जपंती, लाज्जपंता
	लाज्जपेतो, लाज्जपेमाणो	लाज्जपेतं, लाज्जपेमाणं	लाज्जपेती, लाज्जपेता
			लाज्जपमाणी, लाज्जपमाणा
			लाज्जपेमाणी, लाज्जपेमाणा
			लाज्जपेई, लाज्जपेई
गुरुक्षप्—	गुरुअंतो, गुरुअमाणो	गुरुअंतं, गुरुअमाणं	गुरुअंती, गुरुअंता
	गुरुपंतो, गुरुपमाणो	गुरुपंतं, गुरुपमाणं	गुरुपंती, गुरुपंता
			गुरुअमाणी, गुरुअमाणा
			गुरुपमाणी, गुरुपमाणा
			गुरुअई, गुरुपई
होअ भू—	होअंतो, होअमाणो	होअंतं, होअमाणं	होअंती, होअंता
	होपंतो, होपमाणो	होपंतं, होपमाणं	होपंती, होपंता
			होअमाणी, होअमाणा
			होपमाणी, होपमाणा
			होअई, होपई

भावि वर्तमान कृदन्त

भण् + इज्ज (भावि प्रत्यय)	= भणिज्ज + न्त = भणिज्जंतं	भण्यमानं
भण् + इज्ज (भावि प्रत्यय)	= भणिज्ज + माण = भणिज्जमाणं	”
भण् + ईअ (भावि इत्यय)	= भणीअ + न्त = भणीअंतं	”
भण् + ईअ (भावि प्रत्यय)	= भणीअ + माण = भणीअमाणं	”

कर्मणि वर्तमान कृदन्त

पुलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भण्—भणोअंतो, भणिज्जंतो	भणोअंतं, भणिज्जंतं	भणोअंती, भणीअंता
भणोभमाणो, भणिज्जमाणो	भणोभमाणं, भणिज्ज-	भणोभमाणी, भणीभमाणा
	माणं	भणिज्जमाणी, भणिज्जमाणा
		भणिज्जई, भणीज्जई
हण्—हण्मंतो, हण्ममाणो	हण्मंतं, हण्ममाणं	हण्मंती, हण्मंता
		हण्ममाणी, हण्ममाणा
		हण्मई

कर्त्तरि प्रेरक वर्तमान कृदन्त

कृ—कार (प्रेरक कर्त्तरि)—कार + न्त = कारंतो, करंतो < कारयन्
करावि (प्रेरक कर्त्तरि)—करावि + अ + न्त = करावंतो, करावेंतो < करावन्
कार (प्रेरक कर्त्तरि)—कार + माण = कारमाणो, कारेमाणो < कारयमाणः
करावि (प्रेरक कर्त्तरि)—करावि + अ + माण = करावमाणो, करावेमाणो < करावयमाणः

पु०	नपु०	स्त्री०
शुप्—सोसवितो, सोसंतो	सोसवितं, सोसंतं	सोसवित्ता, सोसवित्ता
सोसंतो, सोसावंतो	सोसंतं, सोसावंतं	सोसंती, सोसंता
सोसविमाणो सोसमाणो	सोसविमाणं, सोसमाणं	सोसंती, सोसंता
सोसमाणो, सोसावमाणो	सोसमाणं, सोसावमाणं	सोसावंतो, सोसावंता
सोसावेमाणो	सोसावेमाणं	सोसविमाणी, सोसमाणा
		सोसमाणी, सोसविमाणा
		सोसेमाणी, सोसेमाणा
		सोसावमाणी, सोसावमाणा
		सोसावेमाणी, सोसावेमाणा

प्रेरक भावि—वर्तमान कृदन्त

भण—भणाविज्ज + न्त = भणाविज्जंतो < भणाप्यमानम्
भणावी + अ + न्त = भणावीअंतो < भणाप्यमानम्

प्रेरक कर्मणि वर्तमान कृदन्त

भण—भणाविज्ज + न्त = भणाविज्जंतो < भणाप्यमानः
भणाविज्ज + माण = भणाविज्जमाणो
भणावी + अ + न्त = भणावीअंतो

पु०

नपु०

स्त्री०

भगाविज्जंतो, भगाविज्जमाणे	भगाविज्जंतं, भगाविज्जमाणं	भगाविज्जंती, भगाविज्जंता
भगावीअंतो, भगावीअमाणो	भगावीअंतं, भगावीअमाणं	भगाविज्जमाणी, भगाविज्ज- माणा, भगावीअंती, भगावीअंता, भगावीअमाणी, भगावीअमाणा

सुस्सूअंतो (शुधूपन्)	सुस्सूअंतं	सुस्सूअंती, सुस्सूअंता
सुस्सूसमाणो (शुधूपमाणः)	सुस्सूसमाणं	सुस्सूसमाणी, सुस्सूसमाणा
सुस्सूत्तिज्जंतो (शुधूपमाणः)	सुस्सूत्तिज्जंतं	सुस्सूत्तिज्जंती, सुस्सूत्तिज्जंता
सुस्सूत्तिज्जमाणो (शुधूपमाणः)	सुस्सूत्तिज्जमाणं	सुस्सूत्तिज्जमाणी, सुस्सूत्तिज्जमाणा
सुस्सूलीअंतो	सुस्सूलीअंतं	सुस्सूलीअंती, सुस्सूलीअंता
सुस्सूलीअमाणो	सुस्सूलीअमाणं	सुस्सूलीअमाणी, सुस्सूलीअमाणा
चंक्रमंतो < चङ्क्रमन्त	चंक्रमंतं	चंक्रमंती, चंक्रमंता
चंक्रममाण < चङ्क्रममाणः	चंक्रममाणं	चंक्रममाणी, चंक्रममाणा
चंक्रमिज्जंतो < चङ्क्रम्यमाणः	चंक्रमिज्जंतं	चंक्रमिज्जंती, चंक्रमिज्जंता
चंक्रमीअंतो < चङ्क्रम्यमाणः	चंक्रमीअंतं	चंक्रमीअंती, चंक्रमीअंता
चंक्रमीअमाणो < चङ्क्रम्यमाणः	चंक्रमीअमाणं	चंक्रमीअमाणी, चंक्रमीअमाणा
कर — करावीअंतो, करावीअमाणो	करावीअंतं, करावीअमाणं	करावीअंती, करावीअंता
कराविज्जंतो, कराविज्जमाणे	कराविज्जंतं, कराविज्जमाणं	करावीअमाणी, करावीअमाणा
कारीअंतो, कारीअमाणो	कारीअंतं, कारीअमाणं	कराविज्जंती, कराविज्जंता
कारिज्जंतो, कारिज्जमाणे	कारिज्जंतं, कारिज्जमाणं	कराविज्जमाणी, कराविज्जमाणा

कराविज्जमाणा
कारीअंता, कारीअंती
कारीअमाणी, कारीअमाणा
कारिज्जंती, कारिज्जंता
कारिज्जमाणी, कारिज्जमाणा

भूतकृदन्त

(४४) धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़ने से भूतकालीन कृदन्त के रूप बनते हैं ।

(४५) धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़ने पर भूतकाल में धातु के अन्त्य अ का ह होता है । यथा—

गम्—गम + भ = गमिभो (धनु के अन्त्य ठ को इ किया)	पठः—गया
गम + द = गमिदो	" < गतः—गया
गम + ण = गमिणो	" < गतः—गया
चल्—चल + भ = चलिभो	" < चरितः—चला
चल + द = चलिदो	" < चरित—चला
चल + ण = चलिणो	" < चरितः—चला
कृ०—कर + भ = करिभो	" < कृतः—किया
कर + द = करिदो	" < कृतः—किया
कर + ण = करिणो	" < कृत—किया
पठ्—पठ + भ = पठिभो	" < पठितः—पढ़ा
पठ + द = पठिदो	" < पठित—पढ़ा
पठ + ण = पठिणो	" < पठितः—पढ़ा
हस्—हस + भ = हसिभं	" < हसितम्—हँसा
हस + द = हसिदं	" < हसितम्—हँसा
हस + ण = हसिणं	" < हसितम्—हँसा
लस्—लस + भ = लसिभं	" < लसितम्—लगाता, लसा—बिपरी
लस + द = लसिदं	" < लसितम्— " "
लस + ण = लसिणं	" < लसितम्— " "
लृट्—लृ + भ = लृभिभं	" < लृभितम्—लीला की
लृ + द = लृभिदं	" < लृभितम्— " "
लृ + ण = लृभिणं	" < लृभितम्— " "
शुभ्रप्—शुस्सृ + भ = शुस्सृभिभं	" < शुभ्रपितम्—सेवा की, शुभ्रपा की
शुस्सृ + द = शुस्सृभिदं	" < शुभ्रपितम्— " "
शुस्सृ + ण = शुस्सृभिणं	" < शुभ्रपितम्— " "
कम्—चंरम + भ = चंरमिभं	" < चङ्क्रमितम्—चूसा या पड़ुन चला
चंरम + द = चंरमिदं	" < चङ्क्रमितम्— " "
चंरम + ण = चंरमिणं	" < चङ्क्रमितम्— " "
ध्—भा + भ = भाभि—भाय	" < भातम्—पान किया
भा + द = भाभिदं	" < भातम्—पान किया
भा + ण = भाभिणं	" < भातम्—पान किया
लृण्—लृ + भ = लृभिभं	" < लृणम्—काय
लृ + द = लृभिदं	" < लृणम्—काय
लृ + ण = लृभिणं	" < लृणम्—काय

हू-भू-हू + अ = हुआं < भूतम्—हुआ
 हु + इ = हुवं < भूतम्—हुआ
 हु + उ = हुतं < भूतम्—हुआ

प्रेरणार्थक भूतकृदन्त

(४६) धातु में प्रेरणामूवक आदि और इ प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त भूतकृत् प्रत्यय जोड़ने से प्रेरणार्थक भूतकृदन्त के रूप होते हैं । यथा—

कर—करावि + अ = कराविअं < कारितम्—कराया, करायाया
 करावि + इ = कराविदं < कारितम्—कराया, करायाया
 करावि + उ = करावितं < कारितम्—कराया, करायाया
 कर—कार + इ = कारि (इ प्रत्यय होने पर उपान्त्त्य अ को दीर्घ हो जाता है)—
 कारि + अ = कारिअं < कारितम्
 कारि + इ = कारिदं, कारि + उ = कारितम्—कराया, करायाया
 हस् + आवि = हसावि + अ = हसाविअं, हसावि + इ = हसाविदं, हसावि + उ = हसावितं < हासितम्—हँसाया, हँसायाया

अनियमित भूतकृदन्त

(४७) कुछ ऐसे भी भूतकालीन कृदन्त रूप मिलते हैं, जिनमें उपर्युक्त नियम लागू नहीं होता । ध्वनिपरिवर्तन के नियमों के आधार पर संस्कृत से निम्न कृदन्त रूपों को प्राकृत रूप बनाया जाता है । यथा—

मयं < मसम्—मध्ययती त का लोप हो गया है, और अवगोप स्वर के स्थान पर य भूति हुई है ।

मयं < मसम्—

कडं < कृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ और त के स्थान पर 'प्रत्याही ह' ।

(५१।२०६) मूय से ड हुआ है ।

हडं < हतम्—हकारोत्तर ककार को अ और त के स्थान पर ड ।

मडं < मृतम्—मकारोत्तर ककार को अ और त को ड हुआ है ।

जिअं < जितम्—मध्ययती तकार का लोप और अ स्वर जोष ।

तपं < तप्तम्—संयुक्त प् का लोप और त को द्वित्व ।

कयं < कृतम्—विकल्प से मध्ययती त का लोप होने से अ स्वर जोष और अ को य भूति ।

दडं < दप्तम्—संयुक्त प् का लोप और ड को द्वित्व तथा ड को ड, दकारोत्तर ऋ को अ ।

मिलानं, मिलानं < म्लानं—स्वरभक्ति के नियम द्वारा म और ल का वृधकरण और इकारागम ।

अकलायं < आक्यातम्—दीर्घ अ को ह्रस्व, क्वा के स्थान पर क्ख, त का लोप और अ स्वर शेष को य भुति ।

निदियं < निदितम्—उच्चार का लोप, अ स्वर शेष और य भुति ।

धाणत्तं < दाणत्तम्—ड के स्थान पर ण, संयुक्त प का लोप और त को द्विरप ।

संखयं < संखयम्—स्फुट के स्थान पर ख, त ऋ लोप, अ स्वर शेष और य भुति ।

आकुट्टं < आकुट्टम्—कृ में से संयुक्त रेफ का लोप, संयुक्त पूरा लोप, ट को ह्रस्व, द्वितीय ट को ठ ।

विणट्टं < विणट्टम्—न के स्थान पर ण, ट के स्थान पर ट्ट ।

पणट्टं < पणट्टम्—प्र के स्थान पर प, ट के स्थान पर ट्ट ।

मट्टं < मट्टम्—मकारोच्चर ऋ के स्थान पर अ, ट के स्थान पर ट्ट ।

इयं < इयम्—मध्यवर्ती त का लोप, अ स्वर शेष, य भुति ।

जायं < जायम्—

गिलानं, गिलानं < ग्लानम्—स्वर भक्ति के नियम से ग्ल का वृधकरण, अकार के स्थान पर इव ।

परुविजं < परुपितम्—प्र के स्थान पर, मध्यवर्ती प को य, त का लोप और अ स्वर शेष ।

ठियं < स्थितम्—स्थ के स्थान पर ठ, त लोप, अ स्वर शेष और य भुति ।

विदियं < विदितम्—त लोप, अ स्वर शेष और अ के स्थान पर य ।

पप्रत्तं, पणत्तं < प्रत्तम्—प्र के स्थान पर प, ङ को ण, संयुक्त प का लोप और त को ह्रस्व ।

पप्रियं < प्रत्तावितम्—प्र के स्थान पर प, ङ के स्थान पर ण, प को य, त लोप और अ शेष तथा य भुति ।

सखयं < संखयम्—स्फुट के स्थान पर ख, त लोप, य भुति तथा 'सं' के अनुस्वार का लोप ।

किलिट्टं < क्लिट्टम्—स्वरभक्ति के नियमानुसार वृधकरण, इकार का आगम, ण के स्थान पर ट्ट ।

मुयं < भुयम्—भु के स्थान पर मु, उच्चार का लोप, य भुति ।

ससट्टं < ससट्टम्—सकारोच्चर ऋ के स्थान पर अ, ट के स्थान पर ट्ट ।

पट्टं < पट्टम्—यकारोच्चर ऋ के स्थान पर अ, ट के स्थान पर ट्ट ।

भविष्यत्कृदन्त

(४८) धातु में इस्सव, इस्समाण और इस्सई प्रत्यय जोड़ने से भविष्यन्वचक कृदन्त के रूप बनते हैं ।

कृ—कर् + इस्सव = करिस्सवतो < करिष्यन्—करता होगा ।

कर् + इस्समाण = करिस्समाणो < करिष्यमाणः—करता होगा ।

कर् + इस्सई = करिस्सई < करिष्यन्तो—करती होगी ।

कर् + आवि = करावि + इस्समाण = कराविस्समाणो < कारावयिष्यमाणः ।

करावि + स्सवतो = कराविस्सवतो < कारावयिष्यन्—कराता होगा ।

हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय

(४९) धातु में तुं, हुं और चप हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय जोड़ने से हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं ।

(५०) उपपुंस्क हेत्वर्थ कृदन्तप्रत्ययों के जोड़ने पर पूर्ववर्ती अ को इ और ए हो जाता है ।

तुं (उं), हुं

भण्—भण + तुं (उं) = भणितुं (प्रत्यय जोड़ने के पूर्व अकार को इत्य हुआ) ।

भण + तुं (उं) = भणेतुं—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को एत्य हुआ ।

भण + तुं = भणितुं, भणेतुं—अकार जो इत्य एवं एत्य होने से दोनों रूप समंभ ।

भण + हुं = भणितुं, भणेतुं— " " < भणितुम् ।

हस—हस + तुं (उं) = हसितुं, हसेतुं—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्य और एत्य ।

हस + तुं = हसितुं, हसेतुं, हसितुं, हसेतुं < हसितुम् ।

हो < भू—होभ + तुं (उं) = होइतुं—अकार के खान पर इकार ।

होभ + तुं (उं) = होइतुं— " " एत्य ।

होभ + तुं, होभ + हुं = होइतुं, होइतुं, होइतुं होइतुं < भणितुं ।

प्रेरणार्थक हेतु कृदन्त

(५१) धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् तुं, हुं प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

भण्—भण + आवि = भणावि + तुं (उं) = भणावितुं

भण + आवि = भणावि + हुं = भणावितुं

कर्—कर + आवि = करावि + तुं (उं) = करावितुं

कर + आवि = करावि + हुं = करावितुं, करावितुं

कर्—कार + तुं (उं) = कारिउं, कारितुं, कारितुं

हस्—हास + तुं (उं) = हासिउं, हासेउं, हासितुं, हासितुं

शुश्रूप्—शुस्सुस् + तुं (उं) = शुस्सुसिउं, शुस्सुसेउं, शुस्सुसितुं, शुस्सुसितुं

चङ्कम्—चंक्म + तुं (उं) = चंक्मिउं, चंक्मेउं, चंक्मिदुं, चंक्मिदुं

त्तए

कृ-पर-पर + त्तए = करेत्तए, करित्तए < कर्तुम्—अकार को ए होने पर करेत्तए और इत्त्व होने पर करित्तए रूप बने हैं ।

सिज्ज्—सिज्ज + त्तए = सिज्जित्तए, सिज्जेत्तए < सेज्जुम्

उव्वज्ज्—उव्वज्ज + त्तए = उव्वज्जित्तए, उव्वज्जेत्तए < उपपपुम्

विहर-विहर + त्तए = विहरित्तए, विहरेत्तए < विहर्तुम्

पास-पास + त्तए = पासित्तए, पासेत्तए < प्पडुम्

गम्—गम + त्तए = गमित्तए < गन्तुम्

प्र + मज् पव्वज्—पव्वज + त्तए = पव्वज्जित्तए, पव्वज्जेत्तए < प्रमज्जितुम्

आ + ह-आहर-आहार + त्तए = आहारित्तए, आहारेत्तए—आहर्तुम्

दा-दल्—दल + त्तए = दलित्तए, दलेत्तए < दातुम्

अच्चासाद्—अच्चास,द + त्तए = अच्चासादेत्तए < अच्चासातयितुम्

समभिषोक्—समहिलोक् + त्तए = समहिलोक्कए, समहिलोक्कए < समभि-
लोकयितुम्

अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त

(५२) कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनमें हेत्वर्थक कृत्प्रत्यय नहीं जाड़े जाते हैं; बल्कि जिनकी सिद्धि ध्वनिपरिवर्तन के नियमों के आधार पर होती है । यथा—

कृ-क + तुं = का + तुं (उं) = काउं < कर्तुं—ककारोत्तर अ के स्थान पर आ आदेश होने से ।

मह् + तुं = मेत् + तुं = मेत्तुं < महीतुम्—संस्कृत की मह धातु के स्थान पर मेत् आदेश हुआ है और प्रत्यय का संयोग होने से मेत्तुं रूप बना है ।

त्वर + तुं = तुर + तुं (उं) = तुरिउं, तुरेउं < स्वरितुम्—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्त्व और एत्व होने से ।

हस् + तुं = दद् + तुं (उं) = द्दुत्तुं—हस् के स्थान पर द्द आदेश हुआ है ।

भुज् + तुं = भोत् + तुं = भोत्तुं < भोत्तुम्

मुच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं < मोत्तुम्

रुज् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं < रोदितुम्

वप् + तुं = वोत् + तुं = वोचुं < उचुम्

छद् + तुं = छवुं < छवुम्

रध् + तुं = रोधुं < रोधुम्

युध् + तुं = योधुं, जोधुं < योधुम्

सम्बन्ध भूतकृदन्त

(१३) घातु में तुं, तूण, तुभाण, अ, इत्ता, इत्ताण, ताव और भाप् प्रत्यय जोड़ने से सम्बन्धसूचक भूतकृदन्त के रूप बनते हैं ।

(१४) तुं, अ, इत्ता और आव प्रत्यय होने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को विकल्प से इ और ए आदेश होते हैं ।

(१५) तूण, तुभाण और इत्ताण प्रत्ययों में ण के स्थान पर सानुस्वार णं आदेश होता है ।

उदाहरण—

हो < भू—होअ + तुं (उं) = होइउं, होपउं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्त्व तथा एत्त्व किया है ।

होअ + अ = होइअ, होपअ < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्त्व तथा एत्त्व किया है ।

होअ + तूण (ऊण) = होइऊण, होइऊणं, होपऊण, होपऊणं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्त्व एवं एत्त्व के अनन्तर विकल्प से ण के ऊपर अनुस्वार किया गया है ।

होअ + तुभाण (उभाण) = होइउभाण, होइउभाणं, होपउभाण, होपउभाणं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्त्व एवं एत्त्व तथा ण के ऊपर विकल्प से अनुस्वार किया है ।

हस्—हस + तुं (उं) = हसिउं, हसेउं < हसित्वा—विकल्प से इत्त्व तथा एत्त्व ।
हस + अ = हसिअ, हसेअ < हसित्वा

हस्—हस + तूण (ऊण) = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊण, हसेऊणं < हसित्वा—विकल्प से इत्त्व एवं एत्त्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार ।

हस + तुभाण (उभाण) = हसिउभाण, हसिउभाणं, हसेउभाण, हसेउभाणं < हसित्वा—विकल्प से इत्त्व एवं एत्त्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार ।

भण्—भण + तुं (उं) = भणिउं, भणेउं < भणित्वा

भण + अ = भणिअ, भणेअ—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को इत्व एवं एत्व ।

भण + तूण (ऊण) = भणित्तण, भणित्तणं, भणेत्तण, भणेत्तणं

भण + तुआण (उआण) = भणित्तआण, भणित्तआणं, भणेत्तआण, भणेत्तआणं < भणित्त्वा ।

प्रेरणार्थक सम्बन्धसूचक कृदन्त

(५५) प्रेरणार्थक बनाने के लिए प्रेरणासूचक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर ही सम्बन्धक भूत घटप्रत्ययों को जोड़ना चाहिए ।

उदाहरण—

भणू—भण + आवि = भणावि + तु* (उं) = भणाविउं, भणावेउं;

भणावि + अ = भणाविअ, भणावेअ < भणयित्त्वा

भणावि + तूण (ऊण) = भणावित्तण, भणावित्तणं

भणावि + तुआण (उआण) = भणावित्तआण, भणावित्तआणं < भणयित्त्वा—

कहलाकर या कहलवाकर

भाण + तुं (उं) = भाणित्तं, भाणेउं

भाण + अ = भाणिअ, भाणेअ

भाण + तूण (ऊण) = भाणित्तण, भाणित्तणं, भाणेत्तण, भाणेत्तणं

भाण + तुआण (उआण) = भाणित्तआण, भाणित्तआणं, भाणेत्तआण, भाणेत्तआणं

कर—कर + आवि = करावि + तु* (उं) = कराविउं, करावेउं

करावि + अ = कराविअ, करावेअ

करावि + तूण (ऊण) = करावित्तण, करावित्तणं < वारयित्त्वा

कार + तुं (उं) = कारित्तं, कारेउं

कार + अ = कारिअ, कारेअ

कार + तूण (ऊण) = कारित्तण, कारित्तणं, कारेत्तण, कारेत्तणं

कार + तुआण (उआण) = कारित्तआण, कारित्तआणं, कारेत्तआण, कारेत्तआणं ।

शुद्धू—सुस्सू + तु* (उं) = सुस्सूतिउं सुस्सूतेउं

सुस्सू + अ = सुस्सूतिअ, सुस्सूतेअ

सुस्सू + तूण (ऊण) = सुस्सूतिउण, सुस्सूतिउणं, सुस्सूतेउण, सुस्सूतेउणं

सुस्सू + तुआण (उआण) = सुस्सूतिउआण, सुस्सूतिउआणं, सुस्सूतेउआण, सुस्सूतेउआणं ।

चङ्कम—चङ्क + तुं (उं) = चङ्कमिउं, चङ्कमेउं

चङ्क + अ = चङ्कमिअ, चङ्कमेअ

चंक्रम + तुण (ऊण) = चंक्रमिऊण, चंक्रमिऊणं, चंक्रमेऊण, चंक्रमेऊणं
चंक्रम + तुवाण = चंक्रमिउआण, चंक्रमिउआणं, चंक्रमेउआण, चंक्रमेउआणं

इत्ता प्रत्यय

इस् + इत्ता = इसित्ता, इसेत्ता < इसित्ता—विकल्प से इस्व और एस्व
कस् + इत्ता = करित्ता, कसेत्ता, < कस्त्वा— " "
कह + इत्ता = कहित्ता, कहेत्ता < कययित्वा— " "
गम + इत्ता < गमित्ता, गमेत्ता < गह्वा— " "

इत्ताण प्रत्यय

इस् + इत्ताण = इसित्ताण, इसेत्ताण, इसित्ताणं, इसेत्ताणं < इसित्ता—विकल्प से
इस्व, एस्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार
कस् + इत्ताण = करित्ताण, करित्ताणं, कसेत्ताण, कसेत्ताणं < कस्त्वा—विकल्प से
इस्व, एस्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार
गम + इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताणं, गमेत्ताण, गमेत्ताणं < गह्वा—विकल्प से
इस्व, एस्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार

आय प्रत्यय

गह + आय = गहाय

आए प्रत्यय

संपह + आए = संपहाए < संप्रेक्ष्य
आवा + आए = आयाए < अ दाय

अनियमित सम्बन्धक भूत कृदन्त

क + तुं = काउं—कहारोत्तर कहर के स्थान पर आकार ।
क + तुण = काऊणं— " " "
ह + तुआण = काउआण, काउआणं— " "
मह—घेत् + तुं = घेत्तुं—मह के स्थान पर नेत् आदेश होता है ।
मह—घेत् + तुण = घेत्तुण, घेत्तुणं— " "
मह—घेत् + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआणं— " "
त्वर—तुर + तुं (उं) = तुरिउं, तुरेउं—विकल्प से अ को इस्व तथा एस्व
तुर + अ = तुरिअ, तुरेअ— " "
तुर + तुण (ऊण) = तुरिऊण, तुरिऊणं, तुरेऊण, तुरेऊणं—विकल्प से इस्व, एस्व
तथा ण के ऊपर अनुस्वार ।

कृत्य प्रत्यय या विध्यर्थ प्रत्यय

अंग्रेजी में जो कार्य (Potential Participle) पोटेंशल् पार्टिसिप्ल से लिया जाता है, वही कार्य प्राकृत में कृत्य या विध्यर्थ प्रत्ययों से लिया जाता है । हिन्दी में विध्यर्थ प्रत्ययों का कार्य 'चाहिए' या 'योग्य' द्वारा प्रकट किया जाता है ।

(६७) धातु में तञ्ज, अणिञ्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़ने से विध्यर्थ कृदन्त रूप बनते हैं ।

(६८) तञ्ज या इञ्ज प्रत्यय जोड़ने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को ह तथा प आदेश होता है ।

(६९) संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'ज' प्रत्यय होता है ।

उदाहरण

धातु	तञ्ज	अणिञ्ज, अणीअ
ज्ञा—ज्ञाण	ज्ञाणिअर्थ, ज्ञाणेअर्थ	ज्ञाणणिज्जं, ज्ञाणणीअं
ज्ञा—मुण	मुणिअर्थ, मुणेअर्थ	मुणणिज्जं, मुणणीअं
स्था—थफ	थठिअर्थ, थढेअर्थ	थक्कणिज्जं, थक्कणीअं
स्था—चिट्ठ	चिट्ठिअर्थ, चिट्ठेअर्थ	चिट्ठणिज्जं, चिट्ठणीअं
पा—पिज्ज	पिज्जिअर्थ, पिज्जेअर्थ	पिज्जणिज्जं, पिज्जणीअं
धु—मुण	मुणिअर्थ, मुणेअर्थ	मुणणिज्जं, मुणणीअं
हन्—हण	हणिअर्थ, हणेअर्थ	हणणिज्जं, हणणीअं
धू—धुण	धुणिअर्थ, धुणेअर्थ	धुणणिज्जं, धुणणीअं
धू—धुज	धुजिअर्थ, धुजेअर्थ	धुजणिज्जं, धुजणीअं
भू—हुव	हुविअर्थ, हुवेअर्थ	हुवणिज्जं, हुवणीअं
हु—हुण	हुणिअर्थ, हुणेअर्थ	हुणणिज्जं, हुणणीअं
सु—सव	सविअर्थ, सवेअर्थ	सवणिज्जं, सवणीअं
स्तु—थुण	थुणिअर्थ, थुणेअर्थ	थुणणिज्जं, थुणणीअं
लृ—लुण	लुणिअर्थ, लुणेअर्थ	लुणणिज्जं, लुणणीअं
पु—पुण	पुणिअर्थ, पुणेअर्थ	पुणणिज्जं, पुणणीअं
कृ—कुण	कुणिअर्थ, कुणेअर्थ	कुणणिज्जं, कुणणीअं
कृ—कर (नाम)	कायअर्थ,	करणिज्जं, करणीअं
जृ—जर	जरिअर्थ, जरेअर्थ	जरणिज्जं, जरणीअं
धृ—धर	धरिअर्थ, धरेअर्थ	धरणिज्जं, धरणीअं

तुर + तुआण (उआण) = तुरिउआण, तुरिउआण्यं, तुरेउआण, तुरेउआणं—
विकल्प से इत्थ, एत्थ तथा ण के ऊपर अनुस्कार ।

दृग् + तुं = दृदुं; दृढ् + तुण = दृदूण, दृदूणं, दृढ् + तुआण = दृदुआण, दृदुआणं

भुत् + तुं = भोत् + तुं = भोत्तुं—भुत् के स्थान पर भोत् ।

भोत् + तुण = भोत्तूण, भोत्तूणं; भोत् + तुआण = भोत्तुआण, भोत्तुआणं

मुष् + तुं = भोत् + तुं = भोत्तुं

मुष् + तुण = भोत् + तुण = भोत्तूण, भोत्तूणं

मुष् + तुआण = भोत् + तुआण = भोत्तुआण, भोत्तुआणं

रोद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं

रोद् + तुण = रोत् + तुण = रोत्तूण, रोत्तूणं

रोद् + तुआण = रोत् + तुआण = रोत्तुआण, रोत्तुआणं

वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं

वच् + तुण = वोत् + तुण = वोत्तूण, वोत्तूणं

वच् + तुआण = वोत् + तुआण = वोत्तुआण, वोत्तुआणं

(११) सस्मृत के वृद्धत रूपों में ध्वनि परिवर्तन करने से प्राकृत के फुद्धत रूप बन जाते हैं । ध्वनिपरिवर्तन के नियम प्रथम अध्याय के ही प्रवृत्त होते हैं ।

आदाय > आयाय—संयुक्त व का लोप, आ स्वर सेप तथा यधुति ।

गस्वा > गत्ता, गच्चा—संयुक्त व का लोप और त रो द्वित्व, स्वा के स्थान पर संयुक्त ध्वनि परिवर्तन के नियमानुसार च ।

शास्वा > नच्चा, णच्चा—श को ह्रस्व तथा ण के स्थान पर न या ण और स्वा को चा ।

इब्स्वा > पुब्बा—संयुक्त व का लोप और इ के स्थान उब् ।

मुक्स्वा > भोच्चा—भकारोत्तर उकार के स्थान पर ओकार, और वस्वा के स्थान पर चा ।

मस्वा > मच्चा, मच्चा—संयुक्त व का लोप और त को द्वित्व, एर के स्थान पर च ।

वम्बिस्वा > वम्बिच्चा—संयुक्त व का लोप और त को द्वित्व ।

विप्रज्झाय > विप्पज्झाय—प्र मे से र का लोप और प को द्वित्व ।

सुप्स्वा > सुच्चा—संयुक्त व और व का लोप, त को द्वित्व ।

संहत्थ > साहट्ठ—अनुस्वार का लोप, अ को आह्, हकारोत्तर ञ्कार को अ तथा त्य के स्थान पर ट्ठ आदेश ।

हत्वा > हत्ता—हृत् धातु के ककार को अनुस्वार और संयुक्त व का लोप ।

हृप्—हरिस	हरिसिअन्त्रं, हरिमिअन्त्रं	हरिसिणिज्जं, हरिसिणीअं
मुह्—मुग्ग	मुग्गिअन्त्रं, मुग्गमेअन्त्रं	मुग्गणिज्जं, मुग्गणीअं
इप्—इच्छ	इच्छिअन्त्रं, इच्छेअन्त्रं	इच्छणिज्जं, इच्छणीअं
भिद्—भिन्द	भिन्दिअन्त्रं, भिन्देअन्त्रं	भिन्दणिज्जं, भिन्दणीअं
युध्—युज्ज	युज्जिअन्त्रं, युज्जेअन्त्रं	युज्जणिज्जं, युज्जणीअं
युध्—युज्ज	युज्जिअन्त्रं, युज्जेअन्त्रं	युज्जणिज्जं, युज्जणीअं
पत्—पड	पडिअन्त्रं, पडेअन्त्रं	पडणिज्जं, पडणीअं
सद्—सड	सडिअन्त्रं, सडेअन्त्रं	सडणिज्जं, सडणीअं
शद्—शड	शडिअन्त्रं, शडेअन्त्रं	शडणिज्जं, शडणीअं
वृध्—वड्ढ	वड्ढिअन्त्रं, वड्ढेअन्त्रं	वड्ढणिज्जं, वड्ढणीअं
नृत्—नध	नधिअन्त्रं, नधेअन्त्रं	नधणिज्जं, नधणीअं
रुद्—रुव	रुविअन्त्रं, रुवेअन्त्रं	रुवणिज्जं, रुवणीअं
नम्—नव	नविअन्त्रं, नवेअन्त्रं	नवणिज्जं, नवणीअं
वित्तृज्—वोस्तिर	वोस्तिरिअन्त्रं, वोस्तिरेअन्त्रं	वोस्तिरणिज्जं, वोस्तिरणीअं
अद्—अट्ट	अट्टिअन्त्रं, अट्टेअन्त्रं	अट्टणिज्जं, अट्टणीअं
कुप्—कुप्प	कुप्पिअन्त्रं, कुप्पेअन्त्रं	कुप्पणिज्जं, कुप्पणीअं
नद्—नट्ट	नट्टिअन्त्रं, नट्टेअन्त्रं	नट्टणिज्जं, नट्टणीअं
सिक्—सिक्ख	सिक्खिअन्त्रं, सिक्खेअन्त्रं	सिक्खणिज्जं, सिक्खणीअं
सृग्—सग्ग	सग्गिअन्त्रं, सग्गेअन्त्रं	सग्गणिज्जं, सग्गणीअं
घन्द्—घन्द	घन्दिअन्त्रं, घन्देअन्त्रं	घन्दणिज्जं, घन्दणीअं
प्रह्—पेत्	पेत्तअन्त्रं	
यच्—वोत्	वोत्तअन्त्रं	
रुद्—रोत्	रोत्तअन्त्रं	
भुज्—भोत्	भोत्तअन्त्रं	
मुच्—मोत्	मोत्तअन्त्रं	
दृश्—दट्ट	दट्ठअन्त्रं	
हस्—हस	हसिअन्त्रं, हसेअन्त्रं	हसिणिज्जं, हसणीअं

प्रेरक विधयर्थ कृदन्त

(३०) प्रातु में प्रेरक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर विधयर्थक सध्व, अणिच् और अणीअ प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

हस—हस + आवि = हसावि + तन्त्र्यं = हसावितन्त्र्यं, हसाविअन्त्रं < हसापयितन्त्र्यम्
हसावि + अणिज्जं = हसावणिज्जं, हसावणीअं < हसापणीयम्

तृ-तर	तरिअव्यं, तरेअव्यं	तरणिज्जं, तरणीअं
हृ-हर	हरिअव्यं, हरेअव्यं	हरणिज्जं, हरणीअं
सृ-सर	सरिअव्यं, सरेअव्यं	सरणिज्जं, सरणीअं
सु-सुमर	सुमरिअव्यं, सुमरेअव्यं	सुमरणिज्जं, सुमरणीअं
जगृ-जग्ग	जग्गिअव्यं, जग्गेअव्यं	जग्गणिज्जं, जग्गणीअं
शक्-तीर	तीरिअव्यं, तीरेअव्यं	तीरणिज्जं, तीरणीअं
शक्-सक	सकिअव्यं, सकेअव्यं	सकणिज्जं, सकणीअं
पच्, क्षिप्-सोह	सोहिअव्यं, सोह्येअव्यं	सोहणिज्जं, सोहणीअं
मुच्-मेह	मेहिअव्यं, मेहेअव्यं	मेहणिज्जं, मेहणीअं
सिच्-सिञ्च	सिन्चिअव्यं, सिन्चेअव्यं	सिन्चणिज्जं, सिन्चणीअं
गर्ज-बुक्क	बुक्किअव्यं, बुक्केअव्यं	बुक्कणिज्जं, बुक्कणीअं
राज्-छज्ज	छज्जिअव्यं, छज्जेअव्यं	छज्जणिज्जं, छज्जणीअं
लृज्-जीह	जीहिअव्यं, जीहेअव्यं	जीहणिज्जं, जीहणीअं
भुज्-भुज	भुज्जिअव्यं, भुज्जेअव्यं	भुज्जणिज्जं, भुज्जणीअं
कथ्-बोह	बोहिअव्यं, बोह्येअव्यं	बोहणिज्जं, बोहणीअं
सिध्-हक्क	हक्केअव्यं, हक्केअव्यं	हक्कणिज्जं, हक्कणीअं
खिद्-खिज्ज	खिज्जिअव्यं, खिज्जेअव्यं	खिज्जणिज्जं, खिज्जणीअं
कुध्-कुज्ज	कुज्जिअव्यं, कुज्जेअव्यं	कुज्जणिज्जं, कुज्जणीअं
स्वप्-छोट्ट	छोट्टिअव्यं, छोट्टेअव्यं	छोट्टणिज्जं, छोट्टणीअं
लिप्-लिम्प	लिम्पिअव्यं, लिम्पेअव्यं	लिम्पणिज्जं, लिम्पणीअं
लुभ्-लुग्ग	लुग्गिअव्यं, लुग्गेअव्यं	लुग्गणिज्जं, लुग्गणीअं
लुभ्-लुग्ग	लुग्गिअव्यं, लुग्गेअव्यं	लुग्गणिज्जं, लुग्गणीअं
भ्रम्-भुहुल	भुहुलिअव्यं, भुहुलेअव्यं	भुहुलणिज्जं, भुहुलणीअं
गम्-गोल	गोलिअव्यं, गोलेअव्यं	गोलणिज्जं, गोलणीअं
रम्-मोह्वाअ-य	मोह्वाअव्यं, मोह्वाअव्यं	मोह्वाअणिज्जं, मोह्वाअणीअं
भ्रंश-भुल	भुलिअव्यं, भुलेअव्यं	भुलणिज्जं, भुलणीअं
नश्-नस	नसिअव्यं, नसेअव्यं	नसणिज्जं, नसणीअं
दश्-देस	देसिअव्यं, देसेअव्यं	देसणिज्जं, देसणीअं
स्पृश्-फास	फासिअव्यं, फासेअव्यं	फासणिज्जं, फासणीअं
स्पृश्-छिव	छिविअव्यं, छिवेअव्यं	छिवणिज्जं, छिवणीअं
भप्-बुक्क	बुक्किअव्यं, बुक्केअव्यं	बुक्कणिज्जं, बुक्कणीअं
पुप्-पूस	पूसिअव्यं, पूसेअव्यं	पूसणिज्जं, पूसणीअं

हृप्—हरिस	हरिसिअन्, हरिमैअन्	हरिसणिज्जं, हरिसणीअं
मुह्—मुग्म	मुज्झिअन्, मुज्जेअन्	मुज्झणिज्जं, मुज्झणीअं
इप्—इच्छ	इच्छिअन्, इच्छेअन्	इच्छणिज्जं, इच्छणीअं
भिद्—भिन्द	भिन्दिअन्, भिन्देअन्	भिन्दिणिज्जं, भिन्दिणीअं
युध्—युग्म	युज्झिअन्, युज्जेअन्	युज्झणिज्जं, युज्झणीअं
बुध्—बुग्म	बुज्झिअन्, बुज्जेअन्	बुज्झणिज्जं, बुज्झणीअं
पत्—पड	पड्धिअन्, पडेअन्	पड्धिणिज्जं, पड्धिणीअं
सद्—सड	सड्धिअन्, सडेअन्	सड्धिणिज्जं, सड्धिणीअं
शद्—शड	शड्धिअन्, शडेअन्	शड्धिणिज्जं, शड्धिणीअं
वृध्—वृड्ढ	वड्धिअन्, वडेअन्	वड्धिणिज्जं, वड्धिणीअं
नृत्—नश्च	नच्चिअन्, नच्चेअन्	नच्चणिज्जं, नच्चणीअं
रद्—रघ	रघिअन्, रघेअन्	रघणिज्जं, रघणीअं
नम्—नय	नयिअन्, नयेअन्	नयणिज्जं, नयणीअं
यिसृज्—योसिर	योसिरिअन्, योसिरेअन्	योसिरणिज्जं, योसिरणीअं
अद्—अट्ट	अट्ठिअन्, अट्ठेअन्	अट्ठणिज्जं, अट्ठणीअं
कुप्—कुप्प	कुप्पिअन्, कुप्पेअन्	कुप्पणिज्जं, कुप्पणीअं
नद्—नट्ट	नट्ठिअन्, नट्ठेअन्	नट्ठणिज्जं, नट्ठणीअं
सिय—सिचर	सिचिअन्, सिच्चेअन्	सिचरणिज्जं, सिचरणीअं
सृग्—सग्ग	सग्गिअन्, सग्गेअन्	सग्गणिज्जं, सग्गणीअं
यन्द्—यन्द	यन्दिअन्, यन्देअन्	यन्दणिज्जं, यन्दणीअं
मह्—घेत्	घेत्तं	
बच्—घोत्	घोत्तं	
रुद्—रोत्	रोत्तं	
भुज्—भोत्	भोत्तं	
मुच्—मोत्	मोत्तं	
दृश्—दट्ठ	दट्ठं	
हस्—हस	हसिअन्, हसेअन्	हसिणिज्जं, हसणीअं

प्रेरक विध्यर्थ कृदन्त

(६०) पातु मे प्रेरक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर विध्यर्थक तन्व, अणिज्ज और यणीअ प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

हस—हस + आवि = हसावि + तन्व = हसावितन्वं, हसाविअन् < हसापवितन्वम्
हसावि + अणिज्जं = हसावणिज्जं, हसावणीअं < हसापवणीयम्

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

एज्जं < कार्यम्—आकार को ह्रस्व, संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व ।

किचं < कृत्यम्—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इकार, त्य के स्थान पर च ।

गेज्जं < ग्राह्यम्—ग्राह्य के स्थान पर गेज्ज आदेश होता है ।

गुज्जं < गुह्यम्—ह्य के स्थान पर ज्ज ।

यज्जं < यज्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, य लोप और ज को द्वित्व ।

यज्जं < वच्यम्—संयुक्त व का लोप, य के स्थान य ज और ज को द्वित्व ।

यचं < वाच्यम्—संयुक्त का लोप और च को द्वित्व ।

वक्कं < वाच्यम्—संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व ।

ज्जनं < ज्ञप्यम्—संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व ।

भव्यं < भव्यम्—संयुक्त य का लोप और य को द्वित्व ।

पेज्जं < पेयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज होता है ।

गेज्जं < गेयम्—

” ” ” ”

एक्कं < पाक्यम्—पकारोत्तर आकार को ह्रस्व, संयुक्त पकार का लोप और व को द्वित्व ।

जज्जं < ज्ञप्यम्—ज्ञ के स्थान पर ज्ज हुआ है ।

सज्जं < सहायम्—ह्य के स्थान पर ज्ज ।

देज्जं, देज्जं < देयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज, द्वितीय रूप में य का लोप और अ स्वर शेष ।

शीलधर्म वाचक

शील, धर्म तथा भली प्रकार सम्पादन इन तीनों में से किसी एक अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्राकृत में इर प्रत्यय होता है ।

उदाहरण—

हस + इर = हसिरो < हसनशीलः

नव + इर = नविरो < नमनशीलः

हसाव + इर = हसाविरो < हासनशीलः

हस + इर + आ (खी प्र०) = हसिरा } हसनशीला
हस + इर + ई (खी प्र०) = हसिरी }

अनियमित शीलधर्म वाचक कृदन्त

पायगो, पायओ < पायकः—चकार का छोप, अ स्वर शेष और य भुक्ति, ककार का छोप और विसर्ग को ओत्त्व, रिक्त्य से क के स्थान पर ग ।

नायगो, नायओ < नायकः—विकल्प से क के स्थान पर ग तथा विकल्पाभाव पक्ष में क का छोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्त्व ।

मेभा, मेता < तकार का छोप और आ स्वर शेष ।

विज्जं < विज्ञान्—ज्ञ के स्थान पर ज्ञ, आकार को ह्रस्व ।

कत्ता < कर्त्ता—संयुक्त रेफ का छोप और त को द्वित्व ।

विकत्ता < विकर्त्ता—संयुक्त रेफ का छोप और त को द्वित्व ।

यत्ता < यक्ता—संयुक्त ककार का छोप और त को द्वित्व ।

ऐत्ता < ऐत्ता

कुंभआरो < कुम्भकारः—ककार का ओर, आ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त्व ।

कम्मगरो < कर्मकरः—संयुक्त रेफ का छोप, म को द्वित्व, क को ग और विसर्ग को ओत्त्व ।

भारहरो < भारद्वाजः—विसर्ग के स्थान पर ओत्त्व ।

थणंधयो < स्तनंधयः—स्तन के स्थान पर थण आदेश हुआ है ।

परंतवो < परंतपः—प के स्थान पर र और विसर्ग को ओत्त्व ।

लेहओ < लेखकः—ख के स्थान पर ह, ककार का छोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्त्व ।

हंता < हन्ता—हन् धातु के लप्कार के स्थान पर अनुस्वार ।

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

इज्जं < कार्यम्—आकार को हस्व, संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व ।

किच्चं < कृत्यम्—ककारोत्तर ङकार के स्थान पर इकार, त्य के स्थान पर च ।

गेज्जं < ग्राह्यम्—ग्राह्य के स्थान पर गेज्ज आदेश होता है ।

गुज्जं < गुह्यम्—ह्य के स्थान पर ज्ज ।

वज्जं < वर्ज्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, य लोप और ज को द्वित्व ।

वज्जं < वयम्—संयुक्त व का लोप, य के स्थान प ज और ज को द्वित्व ।

वच्चं < वाच्यम्—संयुक्त का लोप और च को द्वित्व ।

वक्कं < वाक्यम्—संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व ।

ज्जन्नं < ज्ञम्—संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व ।

भव्वं < भव्यम्—संयुक्त य का लोप और व को द्वित्व ।

पेज्जं < पेयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज्ज होता है ।

गेज्जं < गेयम्—

”

”

”

पक्कं < पाक्यम्—पकारोत्तर आकार को हस्व, संयुक्त पकार का लोप और च को द्वित्व ।

जज्जं < जध्यम्—व्य के स्थान पर ज्ज हुआ है ।

सज्जं < सद्यम्—ह्य के स्थान पर ज्ज ।

देज्जं, देअं < देयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज्ज, द्वितीय रूप में य का लोप और अ स्वर लोप ।

शीलधर्म वाचक

शील, धर्म तथा भली प्रकार सम्पादन इन तीनों में से किसी एक अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्राकृत में इह प्रत्यय होता है ।

उदाहरण—

हस + इह = हसिरो < हसनशीलः

नव + इह = नविरो < नमनशीलः

हसाव + इह = हसाविरो < हासनशीलः

हस + इह + आ (खी प्र०) = हसिरा } हसनशील
हस + इह + ई (खी प्र०) = हसिरी }

अगध	√राज्, √मर्ह्	शोभना, चमकना; योश्य होना छायक होना
अगघा	भा + √प्रा	सुँघना
अच्च	√अर्च्	पूजना, सत्कार करना
अच्चासाय	अत्था + √धातम्	अपमान करना, हेरान करना
अचीकर	अर्चो + कृ	प्रशंसा करना
अच्छ	√भास्	बैठना
अच्छिद्	भा + √छिद्	छेद् करना, काटना
अच्छोढ	भा + √छोट्	पटटना, पछाड़ना, सींचना, छिटकना
अज्ज	√भज्	पैदा करना, उपार्जन करना
अज्जाय	भा + √ज्ञापय्	आज्ञा करना, हुक्म करना
अज्जयाय	अधि + √आप्	पढ़ना, सीखना
अज्जवस	अध्य + √वस्	विचार करना, चिन्तन करना
अज्जरस	भा + √मुश्	आकंश करना, अभिशाप देना
अज्जावस	अभ्या + √वस्	रहना, वास करना
अज्जोववज्ज	अभ्युप + √वृद्	अस्थासक्त होना, आसक्ति करना
अट, अढ	√भट्	भ्रमण करना, घूमना
अडरत्तम्	दे०	सँभालना, रक्षण करना
अडकरत्त	√क्षिप्	फेंकना, भिरना
अण	√भण्	आवाज बरना, जानना, समझना
अणुअंच	अनु + √चप्	पीछे खींचना
अणुरंप	अनु + √कम्प्	दशा करना
अणुरुद्ध	अनु + √कृप्	सींचना, अनुसरण करना
अणुकर, अणुकुम्	अनु + √कृ	अनुकरण करना, नकल करना
अणुरुह	अनु + √कृष्	दुहराना, अनुवाद करना, पीछे बोलना
अणुकम्	अनु + √कम्	अतिक्रमण करना
अणुगच्छ, अणुगम अनु + गम्		पीछे चलना, अनुगमन करना, अनु- सरण करना
अणुगवेस	अनु + √गवेष्	खोजना, शोधना, तलाश करना
अणुगिल	अनु + √गृ	मक्षण करना
अणुगाह	अनु + √गह	कृपा करना

धातुकोष

प्राकृत में उपसर्ग के साथ मिलने से धातु में अर्थ परिवर्तन हो होता ही है, पर उसको आकृति भी नयी हो जाती है। उपसर्ग या उपपद सहित धातु का मूलरूप (Root) तथा प्रतीत होता है। अतः सुविधा की दृष्टि से उपसर्ग सहित धातुकोष दिया जा रहा है।

अ

अइइ	अति + √इ	उत्सर्जन करना
अइकम	अति + √कम्	अतिक्रमण या उत्सर्जन करना
अइगच्छ	अति + √गम्	भीतना
अइच्छ	√गम्	जाना, गमन करना
अइट्टा	अति + √स्था	उत्सर्जन करना
अइयर	अति + √चर्	" "
अइवत्त	अति + √वृष्	अतिक्रमण करना
अइवय	अति + √जन्	उत्सर्जन करना
अइसय	अति + √शी	मात करना
अंगीकर	अङ्गे + √कृ	स्वीकार करना
अंच	√कृष्, √अञ्च	खींचना, जोतना, पूजना
अंवाड	√अण्ट्; तिरस् + √कृ	लेप करना, खरादना, उपाळम्भ देना, तिरस्कार करना
अर्कद्व	आ + √कन्द, धा + √वम्	रोना, चिल्लाना; आक्रमण करना
अकम	आ + √कम्	आक्रमण करना
अकस	√गम्	जाना
अक़ोस	आ + √कुन्	आक्रोश करना, गाली देना
अकस	आ + √कृता	कहना, बोलना
अकरड	आ + √कन्द	आक्रमण करना
अक़िरन	आ + √क्षिप्	आक्षेप करना, टीका करना, फेंकना, दोषारोपण करना
अक़खोड	√कृष्; आ + √स्फोट्य	म्यान से तलवार खींचना; धोका या पुरुष धार धार करना

अणुरंध	अनु + √रध्	अनुरोध करना, स्वीकार करना, बाड़ा का पालन करना, प्रार्थना करना
अणुलिप	अनु + √लिप्	पोतना, लेप करना
अणुलिह	अनु + √लिह्	घाटना, छूना
अणुवच्च, अणुवज्ज	अनु + √वच्	अनुसरण करना
अणुवज्ज	√वज्ज्	जाना
अणुवय	अनु + √वय्	अनुवाद करना
अणुवास	अनु + √वासय्	व्यवस्था करना
अणुबूह	अनु + √बूह्	अनुमोदन करना, प्रशंसा करना
अणुवेय	अनु + √वेय्	अनुभव करना
अणुसंचर	अनु + √चर्	परिभ्रमण करना
अणुसय	अनुसं + √यस्	योजना, हूटना, तलाश करना
अणुसंसर	अनुसं + √सृ, √सृष्ट्	गमन करना, स्मरण करना
अणुसज्ज	अणु + √सज्ज्	अनुसरण करना
अणुसर	अनु + √सृ, √सृष्ट्	अनुवर्तन करना; याद करना, चिन्तन करना
अणुसील	अनु + √सील्य्	पालन करना, रक्षण करना
अणुसोय	अनु + √सुच्	सोचना, चिन्ता करना
अणुहर	अनु + √हृ	अनुहरण करना, गकल करना
अणुहय, अणुहो	अनु + √हृ	अनुभव करना
अणुहुज	अनु + √हुज्	भोग करना
अण्ण, अण्ह	√अण्ण्	पाना, भोजन करना
अण्णे	अनु + √अ	अनुसरण करना
अण्णेस	अनु + √अप्	सोजना, हूटना
अतिउट्ट	अति + √उट्, √उट्ठ्	एत हटना, उत्तलपन करना
अत्य	√अर्थाय्	मगिना, याचना करना
अत्यम		गरत होना, अदृश्य होना
अत्पीकर	अर्थी + √कृ	प्रार्थना करना, याचना करना
अत्यु	आ + √सृष्ट्	मिछाना, सप्या करना
अह	√अह्	मारना, पीटना
अहह	आ + √अह्	उत्तालना
अपेकर	अप + √अह्	अपेक्षा करना, राह देक्षना
अपोह	अप + √अह्	निःप्रण करना

अणुग्वास	अनु + √प्रासय्	खिलाना, भोजन करना
अणुचर	अनु + √चर्	सेवा करना, अनुष्ठान करना, पीछे जाना
अणुचि	अनु + √च्युत्	मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना
अणुचित	अनु + √चित्	चिन्तना, याद करना, सोचना
अणुचिद्, अणुद्धा	अनु + √स्था	अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना
अणुजा	अनु + √या	अनुसरण करना, पीछे चलना
अणुजाण, अणुणव	अनु + √जा	अनुमति देना, सम्मति देना
अणुज्झा	अनु + √ज्झा	चिन्तन करना, ध्यान करना
अणुर्णा	अनु + √नी	अनुनय-विनय करना
अणुतप्प	अनु + √तप्	अनुताप करना, पछताना
अणुपरियट्	अनुपरि + √भट् ; युत्	घुमना, परिभ्रमण करना, फिरना, फिरते जाना
अणुपविस	अनुप + √विस्	प्रवेश करना, पीछे प्रवेश करना
अणुपस्स	अनु + √हन्	पर्यालोचन करना
अणुपाल	अनु + √पालय्	अनुभव करना, प्रतीक्षा करना
अणुप्पणी	अनुप + √णी	प्रणय करना
अणुप्पदा	अनुप + √दा	दान देना
अणुप्पवाय	अनुप + √वाचय्	पढ़ाना
अणुप्पसाद	अनुप + √सादय्	प्रसन्न करना
अणुप्पेह	अनुप + √ईक्ष्	चिन्तन करना, विचार करना
अणुवध	अनु + √वध	अनुसरण करना
अणुभव	अनु + √भू	अनुभव करना
अणुभास	अनु + √भाष्	अनुवाद करना, कही हुई बात को बुझाना
अणुभुंज	अनु + √भुज्	भोग करना
अणुभूस	अनु + √भूष्	भूषित करना, शोभित करना
अणुमण्ण	अनु + √मन्	अनुमति देना, अनुमोदन करना
अणुमाण	अनु + √मानय्	अनुमान करना
अणुमाल	अनु + √मालय्	शोभित होना, चमकना
अणुमोय	अनु + √मुद्	प्रशंसा करना, अनुमति करना
अणुरज्ज	अनु + √रज्ज्	अनुरक्त होना, प्रेमी होना

अभिद्व	अभि + √द्व	घोषा करना, दुःख उपशान्त
अभिनिष्क्रम	अभि निर् + √क्रम्	दोषा केना
अभिसंत	अभि + √सन्त्रप्	मन्त्रित करना
अभिमन्त्र	अभि + √मन्त्र्	अभिमान करना
अभिरम	अभि + √रम्	प्रोषा करना, मर्मोपेक्षा करना, प्रीति करना
अभिरय	अभि + √रय्	पपन्द करना, दधना
अभिरुह	अभि + √रुह्	रोहना, ऊपर चढ़ना
अभिलस	अभि + √लस्य्	धाहना, पाँटना
अभिवन्द	अभि + √वन्द्	नमस्कार करना, पशुना करना
अभिवद्ध्य	अभि + √वद्ध्य्	चढ़ना, चढ़ा होना, चढ़ाव होना
अभिसिच	अभि + √सिच्	अभिषेक करना
अभिहण	अभि + √हन्	मारना, क्षिप्ता करना
अम	√अम्	जाना, आजात्र करना
अय	√अय्	गमन करना, जाना
अयच्छ	√अय्	रोंचना
अरिह	√अरिह्	योग्य होना, पूजा करना
अरोअ	उत् + √रस्	उत्प्लास करना, रिक्त होना
अलंकर	अलं + √कृ	भूषित करना
अल्लिअ	उप + √अल्लिप्	समीप में जाना
अल्लिव	√अल्लिप्	अर्पण करना
अल्ली, अल्लीअ	आ + √ल्ली	आना, प्रवेश करना, आश्रय करना
अय	√अय्	रक्षण करना
अचअस्त्र, अचअस्त्रम्	अच + √अस्त्रम्	देयना
अचअच्छ	अच + √अच्छम्	आनन्द पाना, प्रपन्न होना
अउउम्	अउ + √उउम्	परिष्ठापन करना
अचक्र	अच + √आच्छ्	चादना, देखना
अचकर	अच + √कृ	अहित करना
अचक्र	अच + √कृ	स्थापन करना
अचक्रम	अच + √क्रम्	पीठे हटना, बाहर निकलना
अचखेर	दे	स्त्रिप्त करना, तिरस्कार करना
अवगाह	अव + √गाह्	अवभादन करना
अवगुण	अव + √गुण्य्	खोजना, उद्घाटन करना

अप्पाह	सं + √दिश्, अधि + √आपय् संदेश देना, खर पहुँचाना; पठाना, सिद्धाना
अपिण	√अपय् अपण करना
अप्फाल	आ + √स्फाल्य् आस्फोटन करना
अप्फुंद	आ + √क्रम् आक्रमण करना
अप्फोड	आ + √स्फोट्य् आस्फालन करना, हाथ से ताल डोरना
अभंग	अभि + √मञ्ज् तैल आदि से मर्दन करना, मालिश करना
अभरथ	अभि + √अर्थय् सत्कार करना
अभस, अभ्रास	अभि + √अस् सीखना, अभ्यास करना
अभाअच्छ, अभिगच्छ	अभ्या + √गम् सम्मुख आना, सामने जाना
अभिभउ	सं + √गम् संगति करना, मिलना
अभुक्ख	अभि + √उक्ष् सिचन करना
अभुट्ठ	अभ्युत् + √स्था श्राद्ध करने के लिए खड़ा होना
अभुत्त	√स्ना, प्र + √शेष् स्नान करना, प्रकाशित करना
अभुद्धर	अभ्युद् + √व उद्धार करना
अभुवगच्छ	अभ्युप + √गम् स्वीकार करना, पास जाना
अभिकख	अभि + √आहृक्ष् इच्छा करना, चाहना
अभिगज्ज	अभि + √गर्ज् गर्जना, जोर से आवाज करना
अभिगिउभ	अभि + √गृध् अतिक्रोभ करना, आसक्त होना
अभिघट्ट	अभि + √वह् वेग से जाना
अभिजाण	अभि + √ज्ञा जानना
अभिजुंज	अभि + √युज् मन्त्र तन्त्रादि से वश करना
अभिण्द	अभि + √नन्द प्रशंसा करना, स्तुति करना
अभिणिगिण्ह	अभिनि + √मिड् रोकना, अटकना
अभिणिमुञ्ज	अभिनि + √उध् इन्द्रियों द्वारा ज्ञान करना
अभिणी	अभि + √नी अभिनय करना, नाट्य करना
अभितज्ज	अभि + √तर्ज् तिरस्कार करना, डाटना, साड़न करना
अभिताव	अभि + √तापय् तपाना, गर्म करना
अभितास	अभि + √तासय् त्रास उपजाना, भयभीत करना
अभित्यु	अभि + √त्यु स्तुति करना, प्रशंसा करना

अग्रहर	अग्रन्, अग्रम्, अग्र + अ; अग्रयन करना; जाना; छीन लेना, अपहरण करना
अग्रहस	अग्र + अग्रम्
अग्रहार	अग्र + अग्रयम्
अग्रहाय	अग्र + अग्रम्
अग्रहीर	अग्र + अग्रहीरम्
अग्रहोल	अग्र + अग्रहोलम्
अग्रुफ	अग्र + अग्रयम्
अये	अग्र + अग्र, अग्र + अ
अयेकर	अग्र + अग्रम्
अयोह	अग्र + अग्रम्
अस	अग्रन्, अग्रम्
अस्तस, अस्तस	आ + अग्रम्, आ + अग्रयम्
अस्तसद्	आ + अग्रयम्
अहिगम	अग्रि + अग्रम्, अग्रि + अग्रम्
अहिजाण	अग्रि + अग्र
अहिज	अग्रि + अग्र
अहिह	अग्रि + अग्र
अहिगिवस	अग्रि + अग्रम्
अहिणु	अग्रि + अग्र
अहिद्व	अग्रि + अग्र
अहिपचुअ	अग्रि + अग्र, आ + अग्रम्
अहिरम	अग्रि + अग्रम्
अहिलिह	अग्रि + अग्रम्
अहियह	अग्रि + अग्रम्
अहिसर	अग्रि + अग्र
अहिहर	अग्रि + अग्र
अही	अग्रि + अग्र
	आग्रयन लेना, आग्रयन देना आग्रयन करना जानना, निर्णय करना, सामने जाना पहिमानना रहना, अभ्यास करना ऊपर चढ़ना, रहना, निवास करना वसना, रहना रुक्ता करना हैरान करना प्रहण करना, जाना प्रोढ़ा करना चिन्ता करना, छिन्ता भाना प्रवेश करना, अभिसरण करना लेना, उठाना पढ़ना

आ

आऊंछ
आअस्त्र

आऊंछ
आ + आऊंछ

हीचना, जेतना
कहना; बोझना, उपदेश देना

अवचि	अप + √चि, अव + √चि	हीन होना, कम होना, इकट्ठा करना
अवजाण	अप + √ज्ञा	अपलाप करना
अवट्ट	अप + √ट्ट	घुमाना, फिरोना
अवट्टव, अवठंभ	अप + √स्वम्भ्	अवलम्बन करना
अवडाह	उत् + √हुन्	ऊँचे स्तर से रुदन करना
अवणम	अप + √नम्	नीचे नमना
अवणी	अप + √नी	दूर करना, हटाना
अवस्थाव	अव + √स्थापय्	स्थिर करना, ठहरना
अवदाल	अव + √लप्य्	ऐलना
अवधार	अव + √गारय्	निश्चय करना
अवधाव	अप + √गार्य्	पीछे दौड़ना
अवधुण	अप + √ध्	परित्याग करना
अवघुउम	अव + √उध्	जानना, समझना
अवभास	अप + √भास्	चमकाना, प्रकाशित करना
अवमज्ज	अव + √वृज्	पीठना, साक करना, भाड़ना
अवमण्ण	अव + √मन्	विरहकार करना, अवज्ञा करना
अवयक्ख	अप + √विक्ष्	अपेक्षा करना, राह देखना
अवयर, अवरूह	अप + √र, √रूह	नीचे उतरना, जन्म ग्रहण करना
अवयास	√शिल्प्, अव + √क्राग्न	आलिगन करना, प्रकट करना
अवरउम	अप + √राध्	अपराध करना
अवरुड	दे०	आलिगन करना
अवल्ल	अव + √लप्, अप + √लप्	सहारा लेना, आश्रय लेना, असत्य बोलना
अवल्लोअ	अव + √लोक	देखना अलोकन करना
अववास	अव + √राश	अवकाश देना, जगह देना
अवसक्क	अव + √वप्पक्क	पीछे हट जाना
अवसप्प	अव + √सप्	पीछे हटना
अवसर	अव + √र	आश्रय करना
अवसिज्ज	अव + √सिद्	हारना, पराजित होना
अवसीय	अव + √सिद्	कठेन पाना, विभ्र होना
अवसुअ	उद् + √वा	मूखना
अवह	√रच्	निर्माण करना, बनाना
अवहृत्य	अप + √हस्त्वय्	हाथ को, ऊँचा करना

आण	√ज्ञा, आ + √नी	जानना, छाना, आनयन करना
आणंद	आ + √नन्द्	आनन्द पाना
आणम्स		परीक्षा करना
आणम		रमास छेना
आणव	आ + √ज्ञापय्	आज्ञा देना
आणाव	आ + √नायय्	संगराना
आणी, आणे	आ + √नी	छाना
आणे	√ज्ञा	जानना
आदिय	आ + √दा	ग्रहण करना
आधरिस	आ + √धर्यय्	परास्त करना, तिरस्कार करना
आपुच्छ	आ + √प्रच्छ	आज्ञा छेना, सम्पत्ति देना
आफाल	आ + √स्फालय्	आघात करना
आबंध	आ + √बन्ध	मज्जुत बांधना
आभोय	आ + √भोगय्	देखना, जानना
आमंत	आ + √मन्त्रय्	आह्वान करना, सम्बोधन करना
आमुय, आमिल, } आ + √हृ		छोड़ना, उत्तराना, स्वागता
आमुच		
आमुस	आ + √पृश्	थोड़ा स्पर्श करना
आमोअ	आ + √मुद्	सुप्त होना
आर्यच	आ + √वच्	सौचना, छिटकना
आयङ्ग	√वेप्	वापना, हिलना
आयण्ण	आ + √कृण्य	मुनना, श्रवण करना
आयम	आ + √वम्	आचमन करना
आयर	आ + √वर्	आचरण करना, व्यवहार करना
आयल्ल	√लम्ब	ध्याप्त होना
आया	आ + √वा, + √दा	आना, आगमन करना, ग्रहण करना
आयाम	आ + √यमय्	लम्बा करना
आयार	आ + √कारय्	उत्थाना
आयास	आ + √धासय्	कष्ट देना, लिप्त करना
आरंभ	आ + √रम्	आरम्भ करना
आरड	आ + √रट्	चिह्नावा
आराह	आ + √राधय्	सेवा करना, भक्ति करना
आरुस	आ + √रुप्	क्रोध करना, रोष करना

आअडु	दे०,	व्या + √ट्	परवश होकर चलना, काम में लगना
आअर		आ + √ट्	आदर करना
आअव्व		√रिप्	काँपना
आइ		आ + √दा	प्रदण करना, देना
आइरघ		आ + √घ्रा	सूँघना
आइस		आ + √दिश्	आदेश करना, आज्ञा देना
आईव		आ + √रीप्	चमकना
आडंच		आ + √कुञ्चय्	संकुचित करना, समेटना
आउच्छ		आ + √प्रच्छ्	आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना
आउट्ट		आ + √ट्ट्, आ + √कुट्ट्	व्यवस्था करना, उद्देश्य करना, हिसा करना
आउड, आउडु		आ + √जोडय्, +कुट्ट्, √लिख्, √मस्त्	जोडना, कृपना; लिखना, दूधना
आउस		आ + √वस्, + √कुश्, +चुन्, + √उप्	रहना, शाप देना, स्पर्श करना, सेवन करना
आऊर		आ + √रिप्	भरना, पूर्ति करना
आओड		आ + √लोडय्	प्रवेश करना, घुसेड़ना
आओध		आ + √युध्	लड़ना
आकद		आ + √कन्द्	रोना, चिल्लाना
आकंप		आ + √कम्प्	काँपना
आकुंच		आ + √आकुञ्चय्	सरोच करना
आगल		आ + √रुल्य्	जानना, लगाना
आगार		आ + √कारय्	हुलाना, आह्वान करना
आघस		आ + √घृष्य्	घर्षण करना
आघस		आ + √घस्	धिसना
आघुम्म		आ + √घृण्	ढोखना, हिलना
आघोस		आ + √घाष्य्	घोषणा करना
आडह		आ + √दह्	चारों ओर जलाना
आडुआल		दे०	मिथन करना, मिलाना
आडोव		आ + √शोष्य्	आडंथर करना
आढ		आ + √भ्	आरम्भ करना
आडा		आ + √ट्	आदर करना, मानना

आह	√ घ	कहना
आहल	आ + √ चल्	हिलना, चलना
आहा	आ + √ पा, + √ कया	स्थापन करना, कहना
आहार	आ + √ हारय्	खाना, भोजन करना
आहिड	आ + √ हिण्ड्	गमन करना, जाना
आहु	आ + √ ह्	दान करना, स्थाग करना
आहोड	√ ताडय्	ताड़ना करना, पीटना
इ		
इ	√ इण्	जाना, गमन करना
इच्छ	√ इप्	इच्छा करना, चाहना
इज्ज	आ + √ इ	माना, आगमन करना
ई		
ईर	√ ईर्	प्रेरणा करना
ईस	√ ईप्	ईर्ष्या करना, द्वेष करना
ईह	√ ईह्	देखना, विचारना
उ		
उअऊह	उप + √ गृह्	छिपाना, आलिंगन करना
उइ	उद् + √ इ, उप + √ इ	उदित होना, समीप जाना
उंघ	नि + √ ग्रा	नौद लेना
उंज	√ तिच्, √ जुन्	सौचना, प्रयोग करना, जोड़ना
उंभ	दे०	पूति करना, पूरा करना
उकंप	उत् + √ कम्प	काँपना, हिलना
उकत्त	उत् + √ कृत्	काटना, कतरना
उकम	उत् + √ कम्	ऊँचा जाना, उल्टे क्रम से रखना
उकर, उकिर	उत् + √ कृ	खोदना
उक्कुम्फुर	उत् + √ स्था	उठना, खड़ा होना
उक्कुज्ज	उत् + √ कुञ्ज्	ऊँचा होकर नीचा होना
उक्कुव	उत् + √ कुञ्	अव्यक्त आराज करना, चिह्नाना
उक्कोस	उत् + √ कुत्	रोना, चिह्नाना
उक्खंड	उत् + √ कण्डय्	तोड़ना, डुंढना करना
उक्खण, उक्खिण	उत् + √ वण्	उछाड़ना, उछेड़ करना
उक्खिण	उत् + √ क्षिप्	कैंटना

आरुह, आरोह, आरोव	} आ + √रुह्, + √रोपय्	ऊपर चढ़ना
आलम्ब	आ + √लभ्	ज्ञानना
आलभ	आ + √लभ्	प्राप्त करना
आलिप	आ + √लिप्	लीपना, पोतना
आलिह	आ + √लिह्	विन्यास करना
आली	आ + √ली	हीन होना, आसक्त होना
आलुंख	√दह्, √स्तृश्	जलाना; स्पर्श करना
आलुंष	आ + √लुम्प	हरण करना
आलोअ	आ + √लोय्	गुरु को अपना अपराध कहना
आलोड	आ + √लोडय्	मन्थन करना, हिलोरना
आलोव	आ + √लोपय्	आच्छादित करना
आव	आ + √या	आना, आगमन करना
आवज्ज	आ + √पद्	प्राप्त होना
आवट्ट, आवत्त	आ + √वृत्	चक्र की तरह घूमना, परिभ्रमण करना
आवर	आ + √वृ	आच्छादन करना
आवस	आ + √वस्	रहना, वास करना
आवह	आ + √वह्	धारण करना, बहन करना
आवा, आविअ	आ + √पा	पीना
आविध	आ + √व्यध्	विधना
आविस	आ + √विन्	सम्बद्ध होना
आविहव	आविर् + √भृ	प्रकट होना
आवीड	आ + √वीड्	पीवा देना, दधाना
आवेअ	आ + √विदय्	निवेदन करना
आवेस	आ + √विशय्	भूताविष्ट करना
आस	√आस्	बैठना
आसंक	आ + √शङ्	सन्देह करना
आसव	आ + √वृ	धीरे-धीरे भ्राना, टपटना
आसस	आ + √वसम्	विधाम लेना
आसाअ	आ + √स्वाद्, + √सादय्	स्वाद लेना; प्राप्त करना;
	+ √शातय्	अवज्ञा करना
आसास	आ + √शास्, + √श्यासय्	आशय करना, आश्वामन देना
आसेव	आ + √सेव	सेवन करना, पावन करना

आह	√ मू	कहना
आहस	आ + √चल्	हिलना, चलना
आहा	आ + √धा, + √धा	स्वापन करना, कहना
आहार	आ + √हारय्	खाना, भोजन करना
आहिंठ	आ + √हिण्ड्	गमन करना, जाना
आहु	आ + √हु	दान करना, त्याग करना
आहोड	√ताडय्	ताड़ना करना, पीटना
		इ
इ	√इण्	जाना, गमन करना
इच्छ	√इप्	इच्छा करना, चाहना
इज्ज	आ + √इ	साना, आगमन करना
		ई
ईर	√ईर्	प्रेरणा करना
ईस	√ईस्	ईर्ष्या करना, द्वेष करना
ईह	√ईष्	देखना, निचारना
		उ
उअऊह	उअ + √गूड्	छिपाना, आश्रयित करना
उइ	उत् + √इ, उप + √इ	उदित होना, समीप जाना
उंघ	नि + √दा	नौद लेना
उंज	√मिच्, √जुन्	सौचन, प्रयोग करना, जोड़ना
उंभ	दे०	पूति करना, पूरा करना
उर्ध्व	उत् + √रुम्	काँपना, हिलना
उक्षत्त	उत् + √कृत्	काटना, कतरना
उक्षम	उत् + √क्षम्	कैंचा जाना, उल्टे क्रम से रखना
उक्षर, उक्षिर	उत् + √कृ	खोदना
उक्कुम्कुर	उत् + √स्था	उठना, खड़ा होना
उम्कुल	उत् + √कुम्	कैंचा होकर नीचा होना
उक्कूव	उत् + √कुम्	अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना
उक्कोस	उत् + √कुन्	रोना, चिल्लाना
उक्कण्ड	उत् + √कण्डय्	खोदना, डुब्बा करना
उक्कण, उक्कियम्	उत् + √क्क	उपार्जना, उपज देना
उक्किय	उत् + √क्किप्	कैंकना

उक्खुड

उग, उग्गा, उग्गम

उग्गाह

उगिगल

उग्गोव

उग्घड, उग्घाड

उग्घोस

उधर

उच्चल

उच्चाड

उच्चार

उच्चाल

उच्चिड

उच्चिण

उच्चुड

उच्चुप्प

उच्चप्प

उच्चल

उच्चह

उच्च्छाह

उच्चिद

उच्चुभ

उच्चेर

उच्चोल

उज्जम

उज्जल

उज्जाल

उज्जोअ

उग्ग

उट्ठ, उट्ठाव

उट्ठंभ

उट्ठुभ

उट्ठाव

उत्तुड्

उत्त + √गम्, + √घाटय्

उत्त + √चम्, उट्ठ + √प्रह्

उट्ठ + √पृ

उट्ठ + √गोपय्

उट्ठ + √घाटय्

उट्ठ + √घोषय्

उत्त + √वर

उत्त + √चल्

दे०

उत्त + √चारय्

उत्त + √चालय्

उत्त + √स्था

उत्त + √चि

उत्त + √उड्

उत्त + √उड्

उत्त + √सर्पय्

उत्त + √शल

उत्त + √सह्

उत्त + √साहय्

उत्त + √छिड्

उत्त + √क्षिप्

उत्त + √क्षि

उत्त + √मूलय् + √क्षालय्

उट्ठ + √यम्

उट्ठ + √उयल्

उट्ठ + √उयालय्

उट्ठ + √योतय्

उत्त + √उज्जम्

उत्त + √स्था, + √स्थापय्

अव + √तम्भ्

अव + √ह्रीच्

उट्ठ + √आपय्

तोडना, टुकड़ा करना

उदित होना; खोलना

रचना, निर्माण करना; प्रवृण करना

डफार केना, बोलना, कहना

खोजना, प्रकट करना

खोलना

घोषणा करना

पार जाना, उच्चीर्ण होना

चलना, जाना

रोकना, निवारण करना

बोलना, उच्चारण करना

ऊँचा फैरना

खड़ा होना

एकत्र करना, इकट्ठा करना

अपसरण करना, हटना

चढ़ना, आरूढ़ होना, ऊपर बैठना

उग्रत करना, प्रभावित करना

उच्छलना, ऊँचा जाना

उत्साहित होना

उत्साह दिलाना

उन्मूलन करना

आफोश करना, गाली देना

ऊँचा होना, उग्रत होना

उन्मूलन करना; प्रक्षालन करना, धोना

उद्यम करना, प्रयत्न करना

जलना, प्रकाशित होना

उजाळा करना

प्रकाश करना

त्याग करना, छोड़ना

उठना, गढ़ा होना, उठाना

आलम्बन देना, सहारा देना

भूखना

उड़ाना

उण्णम, उण्णाम	उङ् + √नम्	ऊँचा होना, उन्नत होना; ऊँचा करना
उण्णी	उङ् + √नी	ऊँचा ठे जाना
उत्तम्म	उत् + √तय्	खिन्न होना, उद्विग्न होना
उत्तर	उत् + √तृ	बाहर निकालना, उतरना
उत्तस	उत् + √जस्	घास देना, पीड़ा देना
उत्ताड	उत् + √ताडय्	ताड़ना, तड़ाना करना
उत्तुय	उत् + √तृय्	पीड़ा करना, परेशान करना
उत्थंघ	उङ् + √नमय्, √रुध्	ऊँचा करना, उन्नत करना, रोकना
उत्थर, उत्थार	आ + √क्रम्, अब + √स्त्र्	आक्रमण करना, दबाना, आचलादन करना
उत्थल्ल	उत् + √वाल्	उल्लुना, कूदना
उदाहर	उदा + √ह	दृष्टान्त देना
उदि	उद् + √ह	ऊँच होना
उदीर	उद् + √दीरय्	प्रेरण करना
उदा	उद् + √दा	घनाना, निर्माण करना
उद्दाल	आ + √जिद्	खींच घेना, हाथ से छीनना
उद्दिस	उद् + √दिश्	नाम निर्देश पूर्वक वस्तु का निरूपण करना
उद्दंस	उद् + √धप्, उद् + √ध्वस्	मारना, माली देना, विनाश करना
उद्धम	उद् + √हृत्	उड़ाना, वायु से भरना, शंख फूँकना
उद्धर	उद् + √ह	कैसे हुए को निकालना
उद्धूल	उद् + √धूलय्	व्याप्त करना
उद्गन्ध	उद् + √नग्ध्	अभिनन्दन करना
उत्पन्न	उत् + √पद्	उत्पन्न होना
उत्पय, उत्पड, उत्पाड	उत् + √पत्	उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना, उलाड़ना
उत्पण	उत् + √प	फटकना, साफ करना
उत्पिय	उत् + √पि	आस्वादन करना
उत्पील	उत् + √पीडय्	बसकर बांधना
उत्पेक्ख	उत् प्र + √ईक्ष्	सम्भावना करना, कल्पना करना
उत्पेल	उद् + √नमय्	ऊँचा करना, उन्नत करना

उवनिस्त्रेव	उपनि + √नेपय्	धरोदर रचना
उवरंज	उप + √रञ्ज्	प्रस्त वरना
उवरम	उप + √रम्	निवृत्त होना, श्रित होना
उवरुंध	उप + √रुध्	वटकाव करना, रोकना
उवलंभ	उप + √रम्	प्राप्त करना, उछाहना देना
उवलाकख	उप + √रक्ष्	जानना, पहिचानना
उवला	उप + ला	ग्रहण करना
उवल्लोभ	उप + √लोभय्	लालच देना
उवल्लि	उप + ली	रहना
उवयूह	उप + वृंह्	पुष्ट करना, प्रशसा करना
उवसंधर	उपसं + √ह	उपसंहार करना
उवसप्प	उप + √सप्	समीप में जाना
उवसम, उवसाम	उप + √सम्, + √शामय्	क्रोध रहित होना, शान्त होना; शान्त करना
उवसोभ	उप + √सुभ्	शोभना, विराजना, शोभित होना
उवहृथ		बनाना, रचना करना
उवहर	उप + √ह	पूजा करना, उपस्थित करना
उवहुंज	उप + √भुज्	उपभोग करना, कार्य में लगना
उवाङ्ग, उवादा	उपा + √दा	ग्रहण करना
उवाय	उप + √पाय्	मनोवी मनाना
उवालह	उपा + √रम्	उछाहना देना
उवास	उप + √भास्	उपासना करना
उव्वम	उत् + √वम्	घमन करना, उन्नी करना
उव्वर	उत् + √वृ	शेष रहना, बच जाना
उव्वल	उत् + √वल्ल्	उपलेपन करना
उव्वह	उप + √वह्	धारण करना, उठाना
उव्विय, उव्विव	उत् + √विज्	उद्देग करना, उदासीन होना
उव्विल्ल	उत् + √विल्, प्र + √वृ	चउना, कांपना, फेलना, पसरना
उव्वील	अव + √वीह्व्	पीड़ा पटुचाना
उरसक्क	उत् + √रप्प	उत्पठित होना
उस्सर, ऊसर	उत् + √स	हटना, दूर जाना
उस्सस, ऊसस	उत् + √सस्	उच्छ्रान्त लेना, ऊँचा भास लेना
उस्सिच	उत् + √सिच्	सौंचना, सेक करना
उस्सिक्क	उत् + √सुच्	छोड़ना, त्याग करना

ऊ

ऊसल, ऊसुंभ	ऊल् + √लृ	ऊसलित, होना
ऊसार	ऊल् + √सारय्	तूर करना
ऊद्	√ऊद्	तीर्थ करना

ए

ए	भा + √इ	आना, आगमन करना
एड	√एड्	छोड़ना, हथाम करना
एस	भा + √इय्	खोजना, निर्दोष भिक्षा की खोज करना या ग्रहण करना
एह	√एय्	यहना, उन्नत होना

ओ

ओअंद्	भा + √जिन्	यक्षपूर्ण छीनना
ओअक्त्	√इन्	देखना, अवलोकन करना
ओअग्	वि + √आप्	ध्याप्त करना
ओअर	अर + √वृ	जन्म ग्रहण करना, अवतार लेना
ओअल्ल	अव + √बल्	चलना
ओअय	√साधय्	साधना, बच में करना, जीतना
ओआर	अप + √वारय्	हँकना, रोकना
ओईध	भा + √मुल्	छोड़ना, हथामना
ओक्कस	अव + √कृप्	निमग्न होना, गड़ जाना
ओक्कंड	अव + √खण्डय्	तोड़ना
ओगाह	अव + √गाह्	अवगाहन करना
ओगिम्भ	अव + √ग्रह्	आश्रय लेना
ओग्गाल	√रोमन्धय्	पगुराना, चलाई हुई वस्तु को पुनः खराना
ओच्छर	अव + √स्त्र्	विछाना, फैलाना
ओच्छाय	अव + √उादय्	आच्छादन करना
ओणंद	अव + √नन्द्	अभिनन्दन करना
ओणल्ल	अय + √लम्प्	छटकना
ओणिअत्त	अय नि + √वृत्	पीछे हटना, वापस छौटना
ओदंस	अव + √ध्वंस्	गिराना, हटाना

ओधाव	अध + १धाव्	पीउे दीवना
ओवुग्ग	अव + १वुग्	जानना
ओमिण	अउ + १मा	मापना, मान करना
ओमील	अय + १मील्	मुद्रित होना, बन्द होना
ओमुय	अय + १मुय्	पहनना
ओरस	अउ + १र	नीचे उतरना
ओरुम्मा	उरु + १रा	मृगना
ओलग	अय + १लग्	पीउे लगना
ओलिप	अय + १लिप्	लीपना, छेप छमाना
ओरुहय	उि + १रुहापय्	हुम्काना, टंश करना
ओवत्त	अप + १उत्तय्	उल्टा काना, घुमाना
ओमुण	१तिज्	छोश करना, तैज करना
ओइट्ट	अप + १इट्ट	कम होना, हास होना
ओहर, ओहिर	अप + १ह, अउ + १ह	अपहरण करना; देहा होना, प्रक होना
ओहाम	१हुल्य्	छोचना, तुलना करना
ओहार	अय + १हारय्	निद्रय करना
ओहाय	आ + १हय्	आक्रमण करना
ओहाय	अउ + १घान्	पीउे हटना
ओहीर	नि + १दा	सो जाना, निद्रा छेना

क

कंड	१कण्ड्	धान का छिलका भलग करना
कंडार	उरु + १क	सोइना, छोए-छाल कर टीक करना
कंद	१कन्द्	रोना, आक्रमण करना
कंप	१कम्प्	कापना, दिखना
कज्जलाव	१कुड	दूखना, मूखना
कट्ट, कत्त	१कुट्ट	काटना, छेदना
कडकर	१कटाक्षय्	कटाक्ष करना
कड्ड	१कड्ड	छोचना
कट	१कट्ट	काट करना, उवाभना, गरम करना
कण	१कण्	शब्द करना, आवाज करना
कप्प	१कप्प्	समर्थ होना, कल्पना काना
कम	१कम्	चादना

कयस्व	१/कयस्	होतान करना
कर, कुग, कुज	१/कृ	करना, बनाना
कराल	१/कराल्	काटना, छिन्न करना
कन	१/कन्	मंथना करना, जानना
कय	१/क	भावना करना, शब्द करना
कत	१/कत्	कमना, घिसना
कमाय	१/कमाप्	साधन करना, मारना
पद्	१/कयस्, १/कृ	कटना, धोना; काय करना, उपासना
पार	१/कारम्	काटना, बनाना
पास	१/कास्	कटाना, नाचना
रिट्	१/दीर्घ	रसायन करना, स्तुति करना
रिट्, कीळ	१/कीर्	होना, प्रीति करना
रि	१/रृ	कटना
रिनाम	१/रामप्	छानना करना, निद्र करना
रिलिस	१/रिन्	रोना, पक जाना, दुःखी होना
कीण, के	१/को	गरीबना, मोल देना
तुंच	१/तृन्	जाना, घटना
कुन्द	१/कृस्	निद्रा करना, चिह्नाना
कुम्भ	१/कुम्	मोष करना
कुट	१/कुट्	तूरना, पीसना, साधन करना
कुप्प	१/कृप्, १/भाप्	कोष करना, मोलना, कटना
कुरुकुरु	१/कुरुकाप्	कुण्डलाना, बड़बड़ाना
कुरुल	१/कृ	आगम करना, कौष का मोलना
कुह	१/कृम्	सक जाना, दुर्गन्ध देना, पद्म माना
केलाय	समा + १/रचस्	साक करना, ठोक करना
पोषा	व्या + १/ड	मुलाना, आह्वान करना

स

संच	१/कृष्	खींचना, वश में करना
संज	१/सज्	खंगड़ा होना
संड	१/सण्डप्	खोदना, दुरुद्धे करना
खंप	१/सिच्	खींचना, छिन्न करना
खच	१/पच्	पावन करना, पवित्र करना

खड्ड, खुड्ड	√खड्	मर्दन करना
खग	√खन्	खोदना
खम	√खम्	क्षमा करना
खर, खिर	√खर्	करना, टपकना, नष्ट होना
खरंट	√खरण्ट्य	दुवक्राना, निर्भर्त्सना करना
खल	√खल्	पड़ना, गिरना
खन	√खप्य	नाश करना
खस	दे०	खिलकना, पड़ना
खा	√खाद्	खाना, भोजन करना
खाम	√क्षम्य	माफी माँगना
खाल	√खाल्य	घोना, पत्तारना
खिल, खेल	√खिल्	क्रीडा करना, खेल करना
खिव	√खिप्	केंकना
खुट्ट, खुड्ड	√खुड्	साँवना, डुकड़े करना, खंडित करना
खुड्डक	दे०	नीचे उतरना
खुप्प	√मस्ज्	दूधना, निरुत्थन होना
खेअ	√खेइय्	चित्त करना, रोव करना
खेड, खेड्ड	√कृष्, √रम्	लेती करना; क्रीडा करना, तेजना
खोट्ट	दे०	खरलटाना, ठोकना
खोभ	√क्षोभ्य	विचलित करना, धैर्य से व्युत्त होना

ग

गंठ	√गथ्	गूँथना, गठना
गच्छ	√गम्	जाना, गमन करना
गज्ज	√गज्ज्	गरजना, घड़घड़ाना
गडयड	दे०	गर्जन करना, आगज करना
गण	√गण्य	गिनना, गिनती करना, गणना करना
गद्	√गद्	बोझना, कहना
गम	√गम्	जाना, गति करना, चञ्चना
गरह	√गर्ह	निन्दा करना, घृणा करना
गरुअ, गरुआ	√गुरुम्य	गुरु करना, चढ़ा बनाना
गल	√गल्	गल जाना, सड़ना
गवेस	√गवेप्य	गवेपगा करना, चप्पारा करना

गह	१'गह्	ग्रहण करना
गहगह	दे०	दुर् से भर जाना
गा, गाअ	१'गे	गाना, आलापना
गाल	१'गालय्	गालना, छानना
गाह	१'ग्राहय्	ग्रहण करना
गिम्भ	१'गृष्	आसक्त होना, लम्पट होना
गिर, गिल	१'गृ	खोलना, उद्धारण करना; निगलना
गुंठ	१'गुण्ठ	धूसरित करना, धूस के रंग का करना
गुभ, गुम्ह, गुंफ	१'गुम्फ्	गूँघना
गुड	१'गुड्	गुड के लिए सभ्यार करना, सजाना
गुण	१'गुणय्	गिनना
गुप्प	१'गुप्	व्याकुल होना
गुम	१'गुम्	धूसना, पर्यटन करना
गुम्म, गुम्मड	१'गुड्	गुग्ध होना, घबड़ाना, व्याकुल होना
गुलगुल	उत् + १'ग्लिप्, उत् + १'ग्लमव	ऊँचा फैलना, ऊँचा करना, उपव करना
गुलगुल	१'गुल्गुलाय्	गुल्गुल आवाज करना
गुल्ल	घाड १'गुल्	गुलामव करना
गूह	१'गूह्	छिपाना, गुप्त रखना
गोयह	१'गोय्	ग्रहण करना
गोवाय	१'गोवाय्	छिपाना, रक्षक करना

घ

घट्ट	१'घट्	स्पर्श करना, छूना
घड्ड, घडाव	१'घट्	घेष्ट करना, बनाना, मिछाना; धनगाना
घत्त, घल्ल	१'घिप्, १'घयेप्	फँडना, डापना, ठडना, गोथना
घत्त	१'घह्	भक्ष्य करना
घाड	१'घेन्	भट्ट होना, च्युल होना
पाय	१'घेन्	नारना, दिनाय करना
पिस	१'घम्	घमना, निगलना, भक्षण करना
पुहुक	१'घर्त्	मर्तना

धूम	√धुम्	धूमना, चक्राकार फिरना
धुरक	दे०	घुडकना, घुडकी देना
धुरधुर	√धुरुधुराय्	धुरधुराना
धुलधुल	√धुलधुलाय्	धुलधुल की आवाज करना
धुसल	√मथ्	मथना, बिम्बोडन करना
धे	√ग्रह्	ग्रहण करना
घोर	√घुर्	निद्रा में घुरघुर की आवाज करना
घोल	√घोळय्	विसना, रगड़ना
घोस	√घोषय्	घोषणा करना

च

चकम	√चङ्कम्	चारम्बार चलना, इधर-उधर भ्रमण करना
चंल, चच्छ	√तक्ष्	छीलना, सरासना, काटना
चंड	√पिप्	पीसना
चंप	दे०	चांपना, दबाना
चंप	√वर्ष्	चर्चा करना
चकम, चक्कम	√भ्रम्	धूमना, भटकना
चक्क	आ + √स्वापय्	चलना, स्वाद लेना, चीखना
चच्छुप्प	√अर्पय्	अर्पण करना
चज्ज	√टस्	देखना, अवलोकन करना
चट्ट	दे०	चाटना
चड	आ + √हृ	चढ़ना, ऊपर बैठना
चड्ड	√हृद्, √पिप्, √भुज्	मर्दन करना, मसलना, पीसना; भोजन करना
चप्प	आ + √कम्	आक्रमण करना
चमक्क	चमत + √कृ	विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना
चमड	√भुज्	भोजन करना
चय	√त्यज्, √तक्, √च्यु	छोड़ना, सरना, समर्थ होना; सरना
चर	√चर्	गमन करना, चलना
चल	√चल्	" "
चय	√रूपय्, √च्यु	कहना, बोलना; सरना, च्युत होना

चाव	√चर्व्
चाह	√चान्छ्
चिइच्छ	√चिनिस्त्
चित	√चिन्तय्
चिगिचिगाय	√चिक्रिकिक्
चिष्ट	√स्था
चित्त	√चित्रय्
चु	√चुय्
चुभ	√चुत्
चुंठ	√चि
चुंव	√चुम्
चुक्त	√क्षन्
चुण्ण	√चूर्णय्
चूर	√चूरय्
चूह	√क्षिप्
चेअ	√चित्
चोअ	√चोदय्

चवाना
चाहना, वाञ्छा करना
दरा करना, चिकित्सा करना
चिन्ता करना, विचार करना
चक्रकाट करना
वैठना, स्थिति करना
चित्र बनाना
सरना, जन्मान्तर में जाना
करना, टपकना
पुष्पचयन करना
चुम्बन करना
चूकना, भूलना
चूरना, टुकड़े-टुकड़े करना
खण्ड करना
फँकना, डालना
चेतना, सावधान होना
प्रेरणा करना, कहना

छ

छंद	√छन्द्
छज्ज	√छज्
छड	आ + √सह्
छड्ढ	√छर्दय्, √छृच्
छण	√क्षण्
छल	√छल्य्
छाय	√छादय्
छिद	√छिद्
छिव, छुव, छिह	√क्ष्यन्
छुंद	आ + √क्षम्
छुर	√छुर्
छेअ	√छिदय्
छोड	√छोदय्

चाहना, वाञ्छना
शोभना, चमकना
भारुड होना, बड़ना
बसना करना, छोड़ना, त्याग करना
हिंसा करना
ढगना, बर्षन करना, छल करना
आच्छादन करना, ढकना
छेदना, रिच्छेद करना
रपरी करना, छुना
आक्रमण करना
छेप करना, छिपना
छिन्न करना
छोड़ना, बन्धन मुक्त करना

ज

जअछ	√जअर्
जंप	√जम्प्
जंभा	√जम्भ्
जरग	√जागृ
जउजर	√जजंरय्
जण	√जनय्
जम	√जमय
जम्म	√जन्, √जम्
जय	√जि, √यत्
जर	√जृ
जल	√जल्
जप	√जापय्, √जप्
जह	√हा
जा	√जन्, √या
जाण	√जा
जाम	√जम्
जाय	√जाप्, √यातय्

जिअ, जीय	√जीय्
जिण	√जि
जिम, जेम	√जुज्
जीह	√जिह्व्
जुहु	√हु
जूर	√कुज्, √जिह्व्, √जृ

जो	√जन्
जोअ	√जुत्, √जोज्
जोह	√जुप्

झंख	सं + √तप्
झंख	वि + √कप्

हरा करना, शीघ्रता करना
घोसना, यदना
जंभाई लेना
√जागना, नींद से उठाना
जीर्ण करना, रोगका करना
उत्पन्न करना
कार में छाना, नियन्त्रण करना
उत्पन्न होना; पाना, भक्षण करना
जीतना, पूजा करना
जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना
जलना, दग्ध होना
गमन करना, भेजना; जाप करना
स्यागना, छोड़ना
उत्पन्न होना; जाना, गमन करना
जानना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना
साक करना, मार्जन करना
प्रार्थना करना, सांगना; पीड़ना,
यन्त्रणा करना
जीना, प्राणधारण करना
जीसना, पश करना
जीमना, भोजन करना
हज्जा करना
देना, भर्षण करना
क्रोध करना, गुस्सा करना; रोद
करना; मूखना, धुरना
दहनना
प्रकाशित होना, जोड़ना, युक्त करना
हड़ना, युद्ध करना

झ

संतप्प होना, संताप करना
विष्ठाप करना, दहनाद करना

भंर	उपा + √लभ्	उपालंभ देना, उलाहना देना
भंर	निर् + √रस्	निरवास देना
भंभग	√भंभगाय्	भन-भन करना
भंप	√भम्	भूमना, फिरना
भड	√भट्	भड़ना, टपकना
भडप्प	आ + √डिद्	भपटना, कपट मारना, छीनना
भग, भुग	√भृगुप्	धृणा करना
भर, भूर	√भर, √स्मृ	भरना, टपकना; याद करना
भा	√भवे	चिन्ता करना, ध्यान करना
भाभ	√भह्	जलाना, भस्म करना
भिल्ल	√भना	स्नान करना, जल गिराना
भुग, भूर	√भृगुप्, √क्षि	धृणा करना, निन्दा करना, क्षीण होना
भोड	√भोद्य्	पेव आदि से पत्तों को गिराना
भोस	√भवेपय्	रोजना, अन्वेषण करना
ट		
टिचिडिक्क	√मण्डय्	मण्डित करना
टिट्टियाय	दे०	गोलने की प्रेरणा करना
टिरिटिल्ल	√भम्	भूमना, फिरना
टुह	√भुट्	टूटना, फट जाना
ठ		
ठय	√स्थग्	बन्ध करना, रोकना
ठय, ठाय	√स्थापय्	स्थापन करना
ठा	√स्था	बैठना, स्थिर रहना
ठिब्ब	वि + √कुट्	मोड़ना
ड		
डर	√त्रस्	हरना, भयभीत होना
डल्ल	√पा	पीना
डप	आ + √भम्	आरम्भ करना
डह	√हह्	जलाना, दग्ध करना
डिभ	√क्षिप्	नीचे गिरना, ध्वस्त होना
डिक्क, डिक्क	√गर्ज्	साँद का गर्जना करना
डिप्प	√दीप्, वि + √गल्	दीपना, चमकना; मल्लजाना, सब जाना

हुं, हुल्ल
हुल, डोल
डेव

√अम्
√दोल्य्
उत् + √लंघ्

धूमना, चक्कर लगाना
डोलना, हिलना, फांपना
उल्लंघन करना, कूद जाना

ढ

ढंढल, डुम
ढफ
ढाल
डुकक

√अम्
√ढाश्
दे०
√ढौक्

धूमना, भ्रमण करना
ढकना, आकृतादन करना
टपकना, नीचे गिरना, नीचे पड़ना
भेंट करना, अर्पण करना

ण

णंद

√नन्द

णब, णट्ट
णज्ज, णप्प, णा
णड
णद
णस
णाम
णास, णासव
णिअ, णिअच्छ
णिअच्छ
णिअट्ट
णिअद
णिअम
णिउंज
णिउड्ड
णिद
णिमाय
णिकित
णिकुट्ट
णिकस
णिकिण

√णत्, √नट्
√ज्
√णप्
√नट्
नि + √अस्, √नश्
√नमय्
√नाशय्
√डश्
नि + √यम्
नि + √ट्
नि + √गट्
नि + √यम्
नि + √धुज्
√मस्ज्, नि + √डुड्
√निन्द
नि + √माचय्
नि + √ट्
नि + √कट्
निर् + √कस्
निर् + √की

सुख होना, आनन्दित होना,
समृद्ध होना
नाचना, नृत्य करना
जानना, समझना
ख्यात होना
नाद करना, आवाज करना
स्थापन करना; आगना, पलायन करना
नमाना, नीचा करना
नाश करना
देखना
नियमन करना
निरुत होना, बनाना
कहना, बोलना
निषन्धित करना
जोड़ना, संयुक्त करना
मज्जन करना, डूबना
निन्दा करना
नियमन करना, नियन्त्रण करना
काटना, छेदना
कूटना
निकासना, बाहर निकालना
निष्कष्य करना, खरीदना

णिगद्	नि + √गद्	कहना
णिगिण्ह	नि + √गिह्	निग्रह करना, दण्ड करना, दण्ड देना
णिगुञ्ज	नि + √गुञ्ज्	गूँजना, अव्यक्त शब्द करना
णिगूह	नि + √गूह्	छिपाना, गोपन करना
णिगाच्छ	निर् + √गच्छ्	बाहर निकालना
णिचल	√क्षल्, √चल्	करना, टपकना; दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना
णिच्छय	निस् + √चि	निश्चय करना, निर्णय करना
णिच्छल	√छिल्	छेदना, काटना
णिच्छुभ	नि + √क्षिप्	बाहर निकालना
णिच्छोड	निस् + √छोट्	बाहर निकलने के लिए धमकाना
णिच्छोल	निस् + √क्षल्	छीलना, छाल उतारना
णिज्जर	निर् + √जृ	क्षय करना, नाश करना
णिज्जा	निर् + √या	बाहर निकालना
णिज्जिण	निर् + √जि	जीतना, पराभय करना
णिज्जूह	निर् + √यूह्	परित्याग करना, रचना, निर्माण करना
णिज्मर	√क्षि	क्षीण होना
णिज्मा	निर् + √ज्यै	विशेष चिन्तन करना
णिट्ठ	√क्षल्	टपकना, चूना
णिट्ठय, निट्ठव	नि + √स्थापय्	समाप्त करना, पूर्ण करना
णिट्ठा	नि + √स्था	समाप्त होना
निट्ठुह	नि + √रुह्	निष्टम्भ करना, निर्वेष्ट होना
णिण्णास	निर् + √नाशय्	विनाश करना
णिण्हव	नि + √हु	अपलाप करना
णित्थर	निर् + √थ	पार करना, पार उतारना
णिदंस	नि + √दत्तय्	उदाहरण दत्तलाना, हटान्त दिखाना
णिहह	निर् + √हह्	ज्या देना, भस्म करना
णिहिस	निर् + √दिग्	उच्चारण करना, कथन करना
णिह्वाय	निर् + √धाव	दौड़ना
णिद्धुण	निर् + √धृ	विनाश करना, कुर करना
णिप्पेख	निर् + √पक्षय्	पक्षरहित करना, पंख तोड़ना
णिप्पज्ज	निर् + √पद्	उपजाना, सिद्ध होना

णिप्पिड	नि + √स्फिड्	बाह्य निरुद्धना
निबंध	नि + √बंध्	बांधना
निबुद्ध, निघोल	नि + √मस्	निमज्जन करना, डूबना
निबभच्छ	निर् + √मस्	चिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना
निबभर	निर् + √भृ	भरना, पूर्ण करना
निबिभद्	निर् + √भिद्	तोड़ना, विदारण करना
निभाल	नि + √भाल्	देखना, निरीक्षण करना
निभेल	निर् + √भेल्	बाह्य करना
निम, निप्त	नि + √भस्	स्थापन करना
निमंत	नि + √मन्त्र्	निमन्त्रण देना
निमज्ज	नि + √मस्	डूबना, निमज्जन करना
निमिद्ध	नि + √मील्	आँख मूँदना, आँख मीचना
निमे	नि + √मा	स्थापन करना
निम्म	निर् + √मा	चनाना, निर्माण करना
निम्मच्छ	नि + √मश्	विलेपन करना
निम्मह	√मश्	जाना, मग्न करना
निरस्स, निरिक्ख	निर् + √रिश्	निरीक्षण करना, देखना
निरथ	धा + √क्षिप्	आक्षेप करना
निरस	निर् + √भस्	अपारत करना
निराकर	निरा + √कृ	निषेध करना, बूर करना
निरिग	नि + √री	आश्लेष करना, भेंट करना
निरिणास	√गम्, √विष्, √वश्	गमन करना; पीसना; पछापन करना
निस्भ	नि + √रुष्	निरोध करना, रोकना
निरुवार	√मह्	ग्रहण करना
निरुव	नि + √रुप्	विचार कर कहना
निलिज्ज	नि + √ली	भेंटना, मिलना
निलीअ		दूर करना
निलुक्क	√नुड्	छोड़ना
निल्लस	उत् + √लस्	उल्टखना, चिक्खना
निल्लुंछ	√मुच्	छोड़ना, त्यागना
निवज्ज	निर् + √पड्, नि + √सद्	उपजना; बैटना
नियद्द	नि + √रिक्	निश्च होना, लौटना, हटना

णिगद्	नि + √गद्	कदना
णिगिण्ह	नि + √गह्	निग्रह करना, दण्ड करना, दण्ड देना
णिगुंज	नि + √गुज्	गूँजना, अव्यक्त शब्द करना
णिगूह	नि + √गूह्	छिपाना, गोपन करना
णिग्गच्छ	निर् + √गम्	बाहर निकालना
णिच्चल	√क्षर्, √मुच्	फरना, टपकना; दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना
णिच्छय	निस् + √चि	निश्चय करना, निर्यय करना
णिच्छल्ल	√छिञ्	छेदना, काटना
णिच्छुभ	नि + √क्षिप्	बाहर निकालना
णिच्छोड	निस् + √छोट्य्	वाहर निकलने के लिए धमकाना
णिच्छोल	निस् + √तक्ष्	छीलना, छारु उतारना
णिज्जर	निर् + √जृ	क्षय करना, नाश करना
णिज्जा	निर् + √वा	बाहर निकालना
णिज्जिण	निर् + √जि	जीतना, पराभव करना
णिज्जूह	निर् + √जूह्	परिष्ठाप करना, रचना, निर्माण करना
णिज्झर	√क्षि	क्षीण होना
णिज्झा	निर् + √ध्यै	विशेष चिन्तन करना
णिट्ठज	√क्षर्	टपकना, चूना
णिट्ठय, निट्ठव	नि + √स्थापय्	समाप्त करना, पूर्य करना
णिट्ठा	नि + √स्था	समाप्त होना
णिट्ठुह	नि + √स्तम्भ्	निष्ठम्भ करना, निश्चेष्ट होना
णिण्णास	निर् + √नाशय्	विनाश करना
णिण्हव	नि + √हु	अपलाप करना
णित्थर	निर् + √थि	पार करना, पार उतरना
णिदंस	नि + √दंशय्	उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना
णिदह	निर् + √दह्	जला देना, भस्म करना
णिदिस	निर् + √दिस्	उक्तावगण करना, कथन करना
णिद्धाव	निर् + √धाव	दौड़ना
णिद्धुण	निर् + √धृ	विनाश करना, ह्व करना
णिप्पंस	निर् + √पक्षय्	पक्षरहित करना, पंख तोड़ना
णिप्पज्ज	निर् + √पद्	उपजाना, सिद्ध होना

णिस्सम्म	निर् + √थम्	बैठना
णिस्सिच	निर् + √सिच्	प्रक्षेप करना, डालना
णिहण	नि + √हन्, + √खन्	मारना; मादना
णिहम्म	नि + √हम्	जाना, गमन करना
णिहर	नि + √ह्, + √ख्	पाखाना जाना, बाहर निकलना
णिहस	नि + √हृप्	घिसना
णिहा	नि + √धा, + √हा,	
	√हृश्	स्थापन करना; स्थाप करना; देखना,
णिहुव	√कामय्	संभोग की अभिलाषा करना
णिहोड	नि + √वारय्, √पातय्	निवारण करना; मिराना, नाश करना
णी, जीण	√गम्	जाना, गमन करना
णीरज	√मज्	तोड़ना
णीरव	आ + √क्षिप्	आक्षेप करना
णीहर	{ आ + √हृन्द्, नि + √ख्,	आक्रमण करना, बाहर निकालना,
	नि + √हृद्	प्रसिद्धि करना
णुमज्ज	नि + √सृ	बैठना
णुव्व	अ + √काशय्	प्रकाशित करना
णम्म	√आदय्	ढरना, छिपाना
णोल्ल	√क्षिप्, √कुट्	फेंकना, प्रेरणा करना
ण्हव	√स्नपय्	नहलाना, स्नान कराना
ण्हा	√स्ना	स्नान करना, नहाना

त

तक्क	√तर्क	तर्क करना
तक्ख	√तक्ष्	छीलना, काटना
तड, तड्ढ, तण	√तन्	विस्तार करना
तडप्फड	दे०	तवफदाना
तणुअ	√तनय्	पतला करना, घृश करना
तप्प, तव	√तप्	तप करना
तमाड	√अमय्	धुमाना, फिराना
तम्म	√तम्	छेद करना
तर	√तृ	तीरना
तलद्धट्	√सिच्	सींचना

णिवड	नि + √पठ्	नीचे पढ़ना, नीचे गिरना
णियस	नि + √वस्	निवास करना
णिवह	√गम्, √नद्, √पिप्	जाना, भागना, पलायन करना, पीसना
णिवार	नि + वारय्	निवारण करना, निषेध करना
णिविस	निर् + √विष्	बैठना
णिवेअ	नि + √विद्	सम्मानपूर्वक ज्ञापन करना
णिब्वड	√सुच्, √भू	हुस को टोड़ना; पृथक् होना, जुदा होना
णिठवण्ण	निर् + √वर्णय्	रङ्गाया करना, प्रशंसा करना, देखना
णिव्यत्त	निर् + √वर्तय्, + √वृत्तय्	घनाना, करना; मोल घनाना, वर्तुल करना
णिव्वय	निर् + √वृ	शान्त होना
णिव्वर	√रूय्, √छिइ	दुःख वहना; छेदन करना, काटना
णिव्वल	निर् + √वल्	निष्पन्न होना
णिव्वव	निर् + √वापय्	उंडा करना, बुझाना
णिव्वह	{ निर् + √वह्, } { उद् + √वह् }	निभाना, निर्बाह करना; धारण करना, ऊपर उठाना
णिव्वा	वि + √भ्रम्	विभ्राम करना
णिव्वज्ज	निर् + √विद्	निर्वेद पाना, विरक्त होना
णिव्विस	निर् + √विष्	त्याग करना
णिव्वेड्ड	निर् + √विद्	नाश करना, क्षय करना
णिव्वेल	निर् + √विल्	फुरना
णिव्वोल	√हृ	क्रोध से होठ काटना, होठ को मलिन करना
णिसम	नि + √शमय्	सुनना
णिसाण	नि + √शाणय्	ज्ञान पर चढ़ाना, तीक्ष्ण करना
णिसिर	नि + √सृज्	बाहर निकालना, त्याग करना
णिसीअ	नि + √पठ्	बैठना
णिसुंम	नि + √सुम्	मार डालना, मारना
णिसुण	नि + √धु	सुनना
णिसेव	नि + √सेव्	सेवा करना
णिसेह	नि + √पिप्	निषेध करना, निवारण करना

दम	√दमय्	निग्रह करना
दय	√दय्	रक्षण करना, कृपा करना, देना
दल, दा, दल	√दत्, √दत्स्, √दत्थ्	देना, दान करना, विक्रमना, फटना
दलिहा	√दरिद्रा	चूर्ण करना, दुस्त्रे करना
दव	√द्वु	दुर्गति होना, दरिद्र होना
दवाध	√दापय्	छोड़ना
दद	√ददस्	दिज्ञाना
दार	√दारय्	जलना, भस्म करना
दिक्ख	√दीक्ष्	विदारना, तोड़ना
दिगिच्छ	√जिघरस्	दीक्षा देना
दिप्प, दीव, धिप्प	√दीप्	जाने की इच्छा करना
दिष, देव	√दिव्	चमकना, तेज होना
दुक्खाव	√दु खप्	झोटा करना, जीतने की इच्छा करना
दुगुण	√द्विगुणय्	दु ख उपजाना, दु खी करना
दुरुदुल	√अम्	दुगुण करना
दुरह	आ + √वड्	खोपी हुई वस्तु की सलाख में घूमना, भ्रमण करना
दुह	√दुह्	आखड़ होना, चढ़ना
दुहाव, दूभ	√लिह्, √दु खग्	दुहना, दूध निकालना
दू, दूम	√दू	उड़ना, दु खी करना
दूजइ	√द्वु	उत्ताप करना, सन्ताप करना
दूस	√दुप्	गमन करना, विहार करना
देस	√दिशय्	कूपित होना, कूपण लगाना
दोल	√दोलय्	बहना, उपदेष्ट देना
		दिलना, झूटना

ध

धम	√धमा	धमना, भाग में तपाना
धर	√ध	धारण करना, पृथ्वी का पालन करना
धरिस	√धृष	सह्य होना, पृथ्वी होना
धवक्क	दे०	घट्टना, भय से व्याकुल होना
धवल	√धवलय्	सर्पद करना
धस	√धस्	धसना, नीचे जाना

वय, वाय	१'वपप्, १'वापप्	गर्भ करना
तस	१'वस्	उरना, आस पाना
वाढ	१'वाडप्	सावना
वालिअंठ	१'भानप्	पुमाना, पिढाना
विउट्ट	१'वुट्	दृष्टना
तिप्प	१'वर्षप्, १'विप्	गृह करना; कटना, घूना
तिम्म	१'वोम्	भीगना, आर्द्र होना
वीर	१'वक्, १'वीरप्	समर्थ होना; ममास करना, परिपूर्ण करना
तुआ	१'तुइ	व्यथा करना, पीडा करना
तुअर	१'तुइ	शीघ्रता करना, स्वरा करना
तुट्, तुळ	१'तुट्	दृष्टना
तुपट्ट	स्वप् + १'तुप्	पारर्थ का घूमना, कष्ट बर्हना
तुळ	१'तोळप्	सांझना
तूस, तोस	१'तुप्	गुना होना
तैअ	१'तेअप्	सेज करना
ध		
धंभ	१'धम्भ्	रहना, स्थब्ध होना, स्थिर होना
धक्क	१'स्था, १'कक्, १'धक्	रहना, बैठना; नोपे जाना; पकना, भान्त होना
धगधग	१'धगधगप्	कड़कना, काँपना
धण	१'स्तर	गर्जना, काँपना
धय	१'स्थगप्	भाषादान करना
धरयर	दे०	काँपना
धव, धुण	१'स्त	स्तुति करना
धिप	१'धप्	गृह होना, सन्तुष्ट होना
धिप्प	वि + १'गल्	गल जाना
धिम	१'स्तिम्	आर्द्र करना, गीला करना
धियधिय	दे०	धियधिय आवाज करना
धुक्क	दे०	धूकना
द		
दंस, दरिस, दाव	१'दर्शप्	दिखलाना, बतलाना
दक्ख	१'दन्	देखना, अवलोकन करना

दम	√दमय्	निग्रह करना
दय	√दय्	रक्षक करना, कृपा करना, देना
दल, दा, दल	√दा, √दल्, √दश्	देना, दान करना; विक्रयना, फटना
दलिहा	√दलिहा	चूर्ण करना, टुकड़े करना
दव	√दव्	दुर्गति होना, दरिद्र होना
दवाय	√दापय्	छोड़ना
दह	√दह्	दिखाना
दार	√दारय्	जलना, भस्म करना
दिक्रस	√दोक्ष्	विदारना, तोड़ना
दिगिच्छ	√जिघरस्	दीक्षा देना
दिप्प, दीय, धिप्प	√दीप्	खाने की इच्छा करना
दिय, देव	√दिर्	चमकना, तेज होना
दुक्खाय	√दुःखय्	क्रीड़ा करना, जीतने की इच्छा करना
दुगुण	√द्विगुणय्	दुःख उपभोग, दुःखी करना
दुरुतल	√धम्	दुगुण करना
		खोयी हुई वस्तु की तलाश में घूमना, अमण करना
दुरह	आ + √रुह्	आरुह होना, चढ़ना
दुह	√दुह्	दुहना, दूध निकालना
दुहाय, दूभ	√द्विह्, √दुःसम्	छेदना, दुःखी करना
दू, दूम	√दू	उत्थाप करना, सम्ताप करना
दूजज्	√दू	गमन करना, बिहार करना
दूस	√दुष्	दूषित होना, दूषण लगाना
देस	√दिशय्	बहना, उपदेश देना
दोळ	√दोळय्	हिलना, झूटना

ध

धम	√धमा	धमना, आग में तपाना
धर	√ध	धारण करना, पृथ्वी का पालन करना
धरिस	√धृष	संहत होना, एकत्र होना
धवक्क	दे०	धड़कना, भय से व्याकुल होना
धवल	√धवलय्	संनद्ध करना
धस	√धस्	धसना, नीचे जाना

धा, धाव	√धा, √ध्व, √धार्	धारण करना; ध्यान करना; दौड़ना
धाड	निर् + √ध, √धाड्	बाहर निकलना; प्रेरणा करना, नाश करना
धार	√धारय्	धारण करना
धिककार	धिक् + √कारय्	धिकारना, तिरस्कार करना
धीर, धीर	√धीरय्	धैर्य देना, सान्त्वना देना
धुअ	√धु	कपिना
धुव, धोअ; धुव	√धाव्, √धु	घोना, शुद्ध करना; कपाना, हिणाना
धे	√धा	धारण करना

प

पठंज	प्र + √युज्	जोड़ना, युक्त करना
पडत्त	प्र + √ट्	प्रवृत्ति करना
पठल	√पच्	पकाना
पडस	प्र + √द्विष्	द्वेष करना
पंस	√पांसय्	मस्तिन करना
पकत्थ	प्र + √कृय्	रक्षावा करना, प्रशंसा करना
पक्खर	स + √नाहय्	सत्रद्व करना, घोड़े को सत्राना
पक्खल	प्र + √क्खल्	गिरना, पड़ना
पगंथ	प्र + √कथय्	निन्दित करना
पगड्ड	प्र + √कुय्	खींचना
पगल	प्र + √गल्	करना, टपकना
पगा	√प्रह्	ग्रहण करना
पच	√पच्	पकाना
पच्चक्ख		स्वाग करना, छोड़ना
पच्चाअ	प्रति + √भाषय्	प्रतीति करना, विश्वास करना
पच्चाया	प्रत्या + √जन्	उत्पन्न होना, जन्म होना
पच्चोगिल	प्रत्यव + √गिल्	आश्वासन करना
पच्चोणिवय	प्रत्यव नि + √पत्	उछल कर नीचे गिरना
पच्चोयर	प्रत्यव + √य्	नीचे उतारना
पच्छ	प्र + √अर्थय्	प्रार्थना करना
पजह	प्र + √ज्ञा	त्याग करना
पज्ज	√पायय्	पिलाना, पान करना

पद्मर	पुष्पम्	पहुना, बोचना
पञ्जुवटा	पुष्प + पुष्पा	उपहित होना
पञ्जम्भ	प्र + पुष्पम्	भरना, टपटना
पट्ट	पुष्पा	पोना, पान भरना
पट्टिक्क	प्रति + पुष्प	समाना, समानता करना
पट्टिक्क	प्रति + पुष्प	प्रतीक्षा करना, बाइ जाहना
पट्टिरिज्ज	प्रति + पुष्प	खिन्न होना, बलवान् होना
पट्टिच्छ	प्रति + पुष्प	मार्ग करना
पट्टिवा	प्रति + पुष्पा	पीठ देना, दान का वचना देना
पट्टिक्क	प्रति + पुष्पावम्	पहुना
पट्टिपुच्छ	प्रति + पुष्प	पुष्पना
पट्टिवाह	प्रति + पुष्पा	रोटना
पट्टिमुक्क	प्रति + पुष्प	बोधि पाना
पट्टिबोह	प्रति + पुष्पावम्	जगना
पट्टिभेज	प्रति + पुष्प	हरना, भग्न होना
पट्टिक्क	प्रति + पुष्पा	उपगत जाना
पट्टिसर	प्रति + पुष्प	प्रतिष्ठा करना, दरीकार करना
पट्टिसा	पुष्पम्	शास्त्र होना, भाषना, पणान करना
पट्टिहण	प्रति + पुष्प	प्रतिपाद्य करना
पट्टिहा	प्रति + पुष्पा	मादम होना
पट्टुह	पुष्पम्	हुक्म होना
पट्ट	पुष्प	पहुना, भाषना करना
पणाम	पुष्पवम्, प्र + पुष्पम्	अर्पण करना, समाना
पणिहा	प्रति + पुष्पा	पुष्प विस्तार करना, पणन करना
पण्णव	प्र + पुष्पावम्	प्रकटन करना, उपरोक्त देना
पण्णा	प्र + पुष्पा	प्रकर्षणे जानना
पण्णअ	प्र + पुष्प	भरना, टपटना
पतार	प्र + पुष्पावम्	ठनना
पत्ति	प्रति + पुष्प	जानना, विरहाग करना
पत्थ	प्र + पुष्पवम्	प्रार्थना करना
पत्थर	प्र + पुष्प	विजाना
पत्ताव	पुष्प	नर्दन करना
पप्प	प्र + पुष्पावम्	प्रसन्न करना

धा, धाव धाड	√धा, √धै, √धाव् निर् + √ध्, √धाड्	धारण करना; ध्यान करना; दौड़ना बाहर निकलना; प्रेरणा करना, नाश करना
धार धिकार धीर, धीर धुअ धुव, धोअ, धुव धे	√धारय् धिक् + √कारय् √धीरय् √धु √धाव्, √ध् √धा	धारण करना धिकारना, तिरस्कार करना धैर्य देना, साहस देना कांपना धोना, लुढ़कना, कपाना, दिगाना धारण करना

प

पडंज पउत्त पडल पडस पंसु पकथ पकलर पकसल पगथ पगड्ड पगल पग्ग पव पवक्क पवाअ पवाया पवोगिल पवोणिवय पवोर पच्छ पजइ पज्ज	प्र + √युज् प्र + √वृत् √पच् प्र + √दिप् √पांसय् प्र + √कथ् स + √नाड्य् प्र + √खल् प्र + √कथय् प्र + √कृग् प्र + √गल् प्र + √ह् √पच् प्रति + √आपय् प्रत्या + √जन् प्रत्यय + √गिल् प्रत्यय नि + √पत् प्रत्यय + √ट् प्र + √अर्थय् प्र + √इ √पायय्	जोड़ना, युक्त करना प्रवृत्ति करना पढ़ना होप करना मलिन करना श्लाघा करना, प्रशंसा करना सज्ज करना, घोड़े को सज्जाना गिरना, पड़ना निन्दा करना खींचना करना, टपकना महण करना पढ़ना त्याग करना, छोड़ना प्रतीति करना, विधात करना उत्पन्न होना, जन्म होना आस्वादन करना उच्छ कर नीचे गिरना नीचे उतारना प्रार्थना करना त्याग करना पिछाना, पान कराना
---	---	--

पमञ्ज	प्र + √मृज्	मार्जन करना, साफ सुधरा करना
पमा	प्र + √मा	सत्य-सत्य ज्ञान करना
पमाय	प्र + √मद्	प्रमाद करना
पमिलाय	प्र + √म्लै	मुरझाना
पम्हअ, पम्हस	प्र + √स्मृ	भूल जाना
पय	√पच्, √रइ	पकाना, जाना
पयह	√ठ	शिथिलता करना, ढीला होना
पया	प्र + √या	प्रयाण करना, प्रस्थान करना
पयार	प्र + √वारय्	प्रचार करना, प्रतारण करना
पराइ	परा + √जि	हराना, पराजय करना
परामुस	परा + √मृज्	स्पर्श करना, छूना
परि	√क्षिप्	कैंटना
परिआल	√गिद्य्	घेष्टन करना, लपेटना
परिक्कम	परि + √श्म	पाँव से चलना, पैदल चलना
परिगिला	परि + √लै	रखाना होना
परिजव	परि + √जिच्	पृथक् करना
परित्ता	परि + √त्रै	रक्षण करना
परिथु	परि + √स्तु	स्तुति करना
परिमइल	परि + √मृज्	मार्जन करना
परिरहस	परि + √स्तु स्	गिर पड़ना, सरक जाना
परियइह	परि + √वृध्	बढ़ना
परिथा	परि + √वा	सूखना
परिस्सअ	परि + √स्वप्न	आलिंगन करना
परिह	परि + √वा	पहिरना
परी	परि + √इ, √क्षिप्, √अश्	जाना, कैंटना, भ्रमण करना
पलट्ठ	परि + √अस्	पलटना, बदलना
पलाय	परा + √गय्	भाग जाना
पविणी	प्र वि + √णी	दूर करना
पहास	प्र + √भाय्	बोहना
पहुश्च	प्र + √भू	पहुँचना
पाए	√पायय्	पिलाना
पागड	प्र + √कटय्	प्रकट करना

पाठ, पाठाव	√पाठ्य्	पठाना, अध्ययन कराना
पाण	प्र + √आनय्	जिछाना
पाणम		निःश्वास छेना
पाम		प्राप्त करना
पाधार		पधारना
पार	√शर्य्, √पारय्	सम्पन्ना, करने में समर्थ होना, पार पहुँचना
पारंभ	प्र + √भृ	आरम्भ करना, शुरू करना
पाल	पा०य्	पालन करना, रक्षण करना
पाय	प्र + √भाय्	प्राप्त करना
पाइ		प्रार्थना करना
पाहर	प्र + √ह	प्रत्यर्पण से छाना, छे भाना
पिज	√पिञ्ज्	छुई चुनना, पीजना
पिड		प्रकटित करना, संश्लिष्ट करना
पिध		ढकना
पिज्ज, पिय	√पा	पीना
पिट्ठ	√पीडय्	पीडा करना
पिडव	√भज्	पैदा करना, उपार्जन करना
पिस, पीस	√विप्	पीसना
पिह	√स्वृह्	इच्छा करना, चाहना
पुंज	√पुञ्ज्	इकट्ठा करना, फैलाना
पुंस	√सृज्	मार्जन करना, पीछना
पुज्ज, पूअ	√पूजय्	पूजन करना, आदर करना
पुण	√पू	परिश्रम करना
पेच्छ	√पृश्	देखना
पेर	प्र + √रिप्य्	भेजना, प्रेषण करना
पेल्ल	√क्षिप्	छेंटना
पेस	प्र + √एवय्	भेजना, पठाना, प्रेषण करना
पोस	√पुष्य्	पुष्ट होना

फ

फद	√फण्ड	थोडा दिखना, घड़कना
फंफ		टलछना

फंस—फसइ

फंस, फस, फास, } √स्फृन्
फुस, फरिस

फट् √स्फट्

फड √स्फड्

फल √स्फल्

फव्वीह् √स्फम्

फाड √स्फाडम्

फिट् √स्फिन्

फिर √स्फिम्

फुक्क—फुक्कइ

फुट् √स्फुट्

फुम, फुस √स्फम्, फृक् + √ह

फुर √स्फुर

फुरफुर

फुल्ल √स्फुल्ल

फेल √स्फिप्

फेल्लुस दे०

फोड स्फोड्

असत्य प्रमाणित होना

छूना, स्पर्श करना

फटना, टूटना

खोदना

फटना, फलान्वित होना

यथेष्ट लाभ प्राप्त करना

फाड़ना

नीचे गिरना, ध्वस्त होना

फिरना, चलना

फुफकारना, फू फू की आवाज करना

निकलना, खिलना

अमग्न करना, फूँक मारना

कड़कना, दिलना, अपहरण करना

धरधराना

फूलना, विकसित होना

फेंकना, बूर करना

फिसलना, घिसलना, खिसक कर

गिरना

फोड़ना, विदारण करना

घ

घइरा घप + √घिन्

घध √घन्ध

घडयड दे०

घल √घल्

घन, घुघ, घू √घम्

घाह √घाप्

बिंघ √घिम्घे

बिह् √घिह्

घीह् √घो

घुफ् √घार्ज्, √उष्

घैठना

घाँघना

घिलाय करना, बड़बड़ाना

घड़ण करना

घोलना

घिरोघ करना, रोकना

प्रतिबिम्बित करना

घोषण करना

ढरना, अवभीत होना

गर्जन करना, गरजना, कुपे का

भूँकना

बुझ्	√बुध्	ज्ञानना, ज्ञान करना
बुड्ढ	√मस्ज्	डूबना
बुब्बुअ		उ, बु, की आवाज
बोट्ट	दे०	छूटा करना, उच्छिद्य फरना
बोल		बुधाना
बोल्ल		बोळना
बोह	√योधय्	समझना, ज्ञान करना

भ

भज	√भज्ज्	तोड़ना, भग्न करना
भड	√भाण्डय्, √भण्ड्	भङ्गारा करना, समद करना, भर्त्सना करना
भस	√भग्	नीचे गिरना
भक्ख	√भक्षय्	भक्षण करना, खाना
भज्ज	√मस्ज्	पकाना, भूतना
भण, भण्ण	√मण्	बहना, बोलना
भम	√भग्	भ्रमण करना, भ्रमना
भय	√भज्	सेरा करना
भर	√भृ	भरना, धारण करना
भल	√भल्	सम्हालना
भव	√भृ	होना
भस	√भप्	भूँकना
भा	√भा	घमस्त्रना
भा	√भी	डरना, भय करना
भाव	√भावय्, √भाम्	वासित करना, विस्तन करना, दिवाना
भास	√भाप्, √भास्	बोलना, बोभना, प्रकाशना
भिद्	√भिद्	भेदना, कोढ़ना
भिकख	√भिध्	भीख माँगना
भिट्ट	दे०	भेंटना
भिड	दे०	भिदना, मिलना, सटना
भिलिंग	दे०	मालिश करना
भिस	√भृष्	जलाना
भुज	√भुज्	भाजन करना

भुल्ल	√भ्रंश्	च्युत होना
भूस	√भूष्य्	सजावट करना
भेल	√भेल्य्	मिछाना, मिथ्थण करना
भोअ	√भुज्	खिलाना, भोजन करना

म

मइल	.	मैला करना, मलिन धनाना
मइल	दे०	तेज रहित होना, फीका लगना
मउल		सकुचना, संकुचित होना
मंड	√मण्ड्	भूषित करना, सजाना
मंड	दे०	शामे घरना
मकल	√मक्ष्	लुपटना, स्तिरथ करना
मग्ग	√मार्ग्य्, √मग्	मार्गना; गमन करना, चलना
मज्ज	√मज्ज्, √मज्	स्नान करना; अभिमान करना
मड्ड, मड	√मृद्	मर्दन करना, चूर्ण करना, मसलना
मण	√मन्	मानना; जानना
मर	√मृ	मरना
मरह	√मृष्य्	क्षमा करना
मरह	दे०	मौज करना, लीला करना
मय	√माप्य्	नापना, पाप करना
मह	√रुहक्ष्, √मह, √मह	चाहना, वांछना; मथना; पूजा करना
माण	√मान्य्	सम्मान करना, आदर करना
मार	√मार्य्	ताड़न करना, हिंसा करना
माल	√माल्	शोभना, वेष्टित होना
मिट	दे०	मिटाना, छोप करना
मिण	√मा, √मी	नापना, तोलना
मिल	√मिल्	मिछना
मिल्ल	√म्लै	म्लान होना, निस्तेज होना
मिस	√मिस्	शब्द करना
मिसमिस	दे०	अत्यन्त घमरना, त्वर जड़ना
मिसल, मिस्स	√मिथ्य्	मिथ्थण करना, मिथाना
मिह	√मिष्य्	स्नेह करना
मील	√मील्	सङ्गठाना

मुअ, मुफर, मुअ	√मोदय्, √मुच्	मुअ होना; छोड़ना
मुंड	√मुण्डय्	मूँडना
मुच्छ	√मुच्छ्	मुच्छित होना
मुवम	√मुव्	मोह करना
मुण	√डा	जानना
मुह	√मुहय्	मोह लगाना
मुर	√मृड्	चिलास करना, जीभ चलाता, ज्याप्त करना

मुस	√मुप्	चोरी करना
मेछ	√मिलय्	मिलाना
मोड	√मोदय्	मोड़ना, टेढ़ा करना
मोह	√मोहय्	भ्रम में डालना

य

यंच	√यञ्च्	गमन करना
याण	√या	जानना

र

रंग	√रङ्	इधर-उधर जाना
रंग	√रङ्गय्	रंगना
रंज	√रञ्जय्	रंग लगाना
रध	√रध्	रंधना, पकाना
रंप	√रध्	छीलना, पतला करना
रंभ	√रम्भ्, आ + √रम्भ्	जाना, गति करना, आरम्भ करना
रक्त्त	√रक्ष्	रक्षण करना, पालन करना
रध, रञ्ज	√रञ्ज्	अनुराग करना, आसक्त होना
रड	√रट्	रोना, चिछाना
रप्प	आ + √रप्प	आक्रमण करना
रम	√रम्	फ्रीडा करना, समोग करना
रय	√रज्, √रचय्	रमना; बनाना, निर्माण करना
रय	√र	कहना, बोलना
रव, राव	दे०	आर्द्र करना
रस	√रस्	चिछाना, आवाज करना
रह	दे०	रहना

रह	√रह्	त्यागना, छोड़ना
रा	√रा	देना, दान करना
राण	वि + √नम्	विशेष मनना
राम	√रम्य्	रमण करना
राय	√राज्	चमकना, शोभित होना
रिअ	√रि, प्र + √रिश्	गमन करना, प्रवेश करना
रिग	√रिङ्	रेंगना, चलना
रिड	मण्डय्	त्रिभूषित करना
रुअ	√रुह्	रोना
रुच	√रुच्	कपास से उसके धीज अलग करने की क्रिया करना
रुज	√रु	सावाज करना
रुध	√रुध्	रोकना, अटकना
रुघ	√रुच्	रुचना, पसंद होना
रेह	√राज्	शोभना, चमकना
रौच	√रिष्	पीसना

ल

लघ	√लह्	लापना, अतिक्रमण करना
लघ	√लम्ब्	लहारा डेना
लंभ	√लभ्	प्राप्त करना
लन्त	√लक्ष्य्	जानना
लगा	√लग्	लगाना, सम्बन्ध करना
लड	√लृ	स्मरण करना
लभ	√लभ्	प्राप्त करना
लय	√ला	प्रदण करना
लल	√लल्	विछास करना, मौन करना
लय	√लृ, √लप्	काटना; बोटना, फटना
लस	√लस्	श्लेष करना
लाळ	√लाळ्य्	स्नेहपूर्णक पाछन करना
लिअ, लिप	√लिप्	छेपन करना, छीपना
लिच्छ	√लिप्स्	प्राप्त करने की चाहना
लित	√स्वप्, √लिप्	सोना, शयन करना, आलिंगन करना

लिङ्	√लिप्, √लिङ्	लिम्बना; घाटना
लुट्, लुट्, लूट्	√लुष्ट	लुट्ना
लुक्	√नि + √ली, √लुङ्	लुङ्ना, लिपना; लुट्ना
लृट्	√लृङ्	लृङ्ना, लृट्ना
लुभ्	√लुभ्	लोभ करना
लृस्	√लृप्	वध करना, मार डालना
लृह्	√लृञ्	पोछना
ले	√ला	लेना
लोढ	दे०	कपास निकालना

व

वञ्च	√वञ्	ठगना
वञ्ज	वि + √अञ्ज्	स्यक्त करना
वञ्	√वञ्	प्रणाम करना
वफ	√काङ्क्ष्	चाहना, अभिलाषा करना
वग	√वल्	पूचना, जाना, बर्ण करना
वज्ज	√वस्, √वङ्	हरना; वजना
वज्जर	√वध्	कहना, धोखना
वट्	√वट्	परोक्षना, व्यवहार करना, धरतना
वट्ट	√वट्	वटना
वट्टव	√वर्ध्	बढ़ाना, वृद्धि करना
वण्ग	√वर्ण्	वर्णन करना
वम	√वम्	उल्टी करना, वमन करना
वय	√वच्, √वङ्	बोलेना, कहना, मनन करना
वर	√वृ	सगाई करना, सम्बन्ध करना
वल	√वल	छोड़ना, वापस करना, प्रहृष्ट करना
वह्	√वह्, √वष्ट्, √वध्	पट्टेचना; मारना, पीड़ा करना
वा	√वा, √वली, √वने	गति करना, चलना; सूचना, पुनना
वाय	√वादय्	बजाना
वाल	√वालम्	मोड़ना, वापस लौटाना
वावर	व्या + √वृ	काम में लगाना
वावाअ	व्या + √वादय्	मार डालना, घिनारा करना
वास	√वाय्	पशु पक्षियों का धोखना
वाह	√वाहय्	बढ़ाना, बढ़ना

वाहर	व्या + ह	बोलना, कहना
विअ	√विइ	जानना
विअंभ	वि + √भृम्	उत्पन्न होना, विकसना
विअट्ट	वित्त + √भृ, वि + √भृत्	अप्रमाणित करना, विचारना, विहरना
विअर	वि + √वर, वि + √वृ	विहरना, धूमना, देना, अर्पण करना
विअप	वि + √कल्प	विचार करना, संशय करना
विअछ	√भृन्, वि + √गल्,	
	√ओज्य	मोड़ना; गल जाना; मजबूत होना
विअल्ल	वि + √चल्	धुन्ध होना
विअस	वि + √कस्	खिलना, विकसित होना
विआण	वि + √जा	जानना, मालूम करना
विआय	वि + √जनय्	जन्म देना, प्रसव करना
विआर	वि + √कारय्, + √चारय्,	विकृत करना; विचार करना;
	+ √दारय्	काटना, चीरना
विडकम	व्युत् + √कम्	परिस्थापन करना, उल्लंघन करना
विडकस	व्युत् + √कय्	गर्व करना, बढ़ाई करना
विडम्भ	वि + √उभ्	जागना
विडट्ट	वि + √ओटय्, + √ट्टय्,	
	√वर्तय्	तोड़ डालना, उत्पन्न होना; विकट होना
विउस	वि + √उन्, विट्स्	विशेष बोलना; विद्वान् की तरह आचरण करना
विभोज	वि + √गोजय्	अलग करना
विछ, विगभ	वि + √घट्	अलग होना
विट	√विष्टय्	वेष्टन करना, लपेटना
विध, विगभ	√व्यध्	बाँधना, ढेना, वेधना
विकंध	वि + √रथ्	प्रतंभा करना
विकट्ट	वि + √हट्	फाटना
विहर	वि + √ह	गिरा पाना
विक्रिग, विकर, विके	वि + √यो	धेपना
विकिर, गिरार	वि + √हृ	गिरना
विहृण्य	वि + √हृण्	कोव करना
विहृड	वि + √हृण्	प्रतिपाद्य करना

विकृण	वि + √कृट्	घृणा से मुँह मोड़ना
विक्रयोस	वि + √कृष्ट	चिल्लाना
विक्रिखय, विच्छुद्	वि + √क्षिप्	दूर करना, फेंकना
विगण	वि + √गणय्	निन्दा करना, घृणा करना
विगत्त	वि + √गृत्	काटना, छेदना
विगारह	वि + √गर्ह	निन्दा करना
विगाह	वि + √गाह	अवगाहन करना
विगिच	वि + √विच्	पृथक् करना, अलग करना
विगिला, विगिलाअ	वि + √ग्लै	विशेष रखाने होना, सिन्न होना
विगोय	वि + √गोपय्	प्रकाशित करना
विघुम्म	वि + √घूर्णय्	डोलना
विघ	वि + √भय्	व्यय करना
विघ	दे०	समीप में आना
विच्छड्ड	वि + √उद्वय्	परित्याग करना
विच्छुद्	वि + क्षुभ्	विक्षोभ करना, चंचल हो उठना
विज्ज	√विद्	होना
विट्टाल	दे०	अस्पृश्य करना, उच्छिष्ट करना
विडंय	वि + √डम्बय्	तिरस्कार करना, अपमान करना
विटप्प	व्युत् + √पद्	व्युत्पन्न होना
विढय	√भर्ज	उपार्जन करना, पैदा करना
विणड	वि + √नटय्, वि + √गुप्	व्याडल करना, विडम्बना करना
विणभ	√लेदय्	खिन्न करना
विणिच्छ	विनिष् + √वि	निश्चय करना
विणिज्जुज	विनि + √युज्	जोड़ना, कार्य में लगाना
विणिउट्ट	विनि + √उत्	निरुद्ध होना, पीछे हटना
विणिवाए	विनि + √वाटय्	मार गिराना
विणिवार	विनि + √वारय्	रोकना, निवारण करना
पिणिहा	विनि + √पा	व्यवस्था करना
विणोअ	वि + √नोदय्	खण्डित करना, टेल करना, कुतूहल करना
विण्णव	वि + √जापय्	बिन्ती करना, प्रार्थना करना
विण्णस	वि + √न्यामय्	स्थापन करना, रखना

वित्थर, वित्थार	वि + √स्त	फैलाना, बढ़ाना
विद्वा	वि + √दा	खराब होना
विद्ध	√व्यध्	चौधना, छेदना
विपरिणाम	विपरि + √णमय्	त्रिपरीत करना
विपलाअ	विपरा + √अय्	दूर भागना
विप्पजह	वि + √हा	परित्याग करना, छोड़ देना
विप्पलंभ	वि + √लभ्	ठगना
विप्पसीअ	विप्र + √सइ	प्रसन्न होना
विप्फाल	दे०	पूछना
विम्हय	वि + √स्मि	चमत्कृत होना, आश्चर्यान्वित होना, त्रिस्मित होना
विम्हर	√स्मृ	याद करना
विर	√भञ्ज्, √गुप्	तोड़ना; व्याकुल होना
विरमाल	प्रति + √शिक्ष्	राह देखना, घाट जोड़ना
विरल्ल	√तन्	विस्तारना, फैलाना
विरेअ	वि + √रेचय्	मल निकासना, दस्त लेना
विलस	वि + √लस्	मौल करना
विलुप	√काह्	अभिलाषा करना, चाहना
विवर	वि + √वृ	थाल सँवारना, व्याख्या करना
विवह	वि + वह्	विवाह करना
विस	वि + √वृ	दिसा करना, नष्ट करना
विसट्ठ	वि + √वस् √दन्	फटना, टूटना; विकसित होना, खिलना
विसिस	वि + √शिप्	विशेषण युक्त करना
विसुवम्भ	वि + √शुध्	शुद्धि करना
विसुर	√खिइ	खेद करना
वीसुंभ	दे०	पृथक् होना
वुज्ज	√प्रस	डरना
वुड्ढ	√रध्, √रधय्	बढ़ना, बढ़ाना
वेअ	√विदय्; √वेप्	शनुभव करना, भोगना, जानना; काँपना
वेआर	दे०	ठगना, प्रतारण करना

वेढ	√विष्ट्	छपेटना
वेल्ल	√विस्त्, √रम्	कांपना, छेटना; फ्रीडा करना
वेह	√व्यध्	बीधना
घोल	√गम्	चलना, गति करना
घोल्ल	√भा + √रुम्	आक्रमण करना
घोसर	व्युत् + √सृज्	परित्याग करना, छोड़ना

स

सअ	√रब्ध्	चलना, स्वाद लेना, प्रीति करना
संरु	√राड्क्	संशय करना, सन्देह करना
संफल	सं + √फल्य्	संवलन करना, जोड़ना
संफेअ	सं + √फेत्	इशारा करना
संरा	सं + √रस्वै	आवाज करना, सान्द्र होना, निविड बनना
संखुड्ड	√रम्	फ्रीडा करना, संभोग करना
संगह	सं + √मह्	संचय करना, संमह करना
संगा	सं + √गे	मान करना
संप	√रुध्	बहना
संचाय	सं + √शक्	समर्थ होना
संचिकर	सं + √रि	रहना, ठहरना
संछुह	सं + √क्षिप्	एकत्र करना, इकट्ठा करना
संजत्त	दे०	तेगर करना
संभाअ	सं + √भै, √सन्धाय्	छपाळ करना, चिन्तन करना
संगउम्भ	सं + √मह्	सन्ध्या की तरह आवरण करना
संद	√रुध्	कवच धारण करना, बखतर पहनना
संदाण	√रु	करना, टपकना
संध	सं + √धा	अनलम्बन करना, सहारा देना
संपाव	संप्र + √आप्	अनुसन्धान करना, खोजना, जोड़ना
संलुच	सं + √लुच्य्	प्राप्त करना
संर	सं + √रि	काटना
संविज	सं + √विह्	निरोध करना, रोकना
सवेह	दे०	विद्यमान होना
		संश्लेषना, समेटना, संवृत्ति करना

संस	संस, संस	खिसकना, गिरना; कटना, प्रशंसा करना
सक	सक, संक, संक	सकना, समर्थ होना; जाना, गति करना
सज्ज	सज्ज, संजज	आसक्ति करना, आर्त्तिगन करना; तैयार होना
सङ्ग	सङ्ग, संसङ्ग	सङ्गना, विषाद करना, रोद करना
सङ्ग	सङ्ग	विनाश करना, कृश करना
सद्द	अद् + संधा	अद्वा करना, विश्वास करना
सप्प	सप्प	जाना, गमन करना
सम	सम, संमय	{ शान्त होना, उपशान्त होना; { उपशान्त करना, दयाना
समत्थ	सम् + संमर्थ	सिद्ध करना, पुष्ट करना
समर	सम्	याद करना
समाण	संज्, सम् + संभाष	भोजन करना, खाना; समाप्त करना
समोसव	दे०	डुकषा-डुकड़ा करना
सम्म	संम	शान्त होना
सय	संशी, संस्रप् ; संस्वङ्	सोना, शयन करना; पचना, जीर्ण होना
सय	संज्, संभि	भरना, टपकना; सेवा करना
सर	संय, संस्म, संस्वर	सरङ्गना, खिसकना; याद करना; आवाज करना
सल्लह	संल्लह	प्रशंसा करना
सव	संशप्, संय, संज्	शप देना, गाली देना; उत्पन्न करना; करना, टपकना
सस	संस	श्वास लेना
सह	संशज्, संसह, आ + संज्ञा	शोभना; सहन करना; आदेश देना
सार	संसार, प्र + संह, संस्मार	ढीक करना; प्रहार करना; याद दिलाना
सार	संस्वर	डुङ्गवाना
साराय, साराव	साराय	सार रूप होना; विपश्चाना, लम्बवाना
सास, साह	संशास्, संशय	सजा करना, सीख देना; कटना
साह	संशास्	सिद्ध करना; बनाना
सिंगार	संशङ्कार	सिंगार करना, सजावट करना

सिध	√शिध्	सूचना
सिच	√सिच्	सौचना, छिद्रना
सिज	√शिञ्ज्	वस्तुष्ट आवाज करना
सिक्ख	√शिक्ख्	सीसना, पटना, अभ्यास करना
सिक्खाव	√शिक्खाव्	सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास कराना
सिज्ज	√सिज्ज्	पसीना होना
सिग्ग	√सिग्ग्	निष्पन्न होना, बनना, मुक्त होना
सिणा	√सिणा, √स्तिण्य्	स्नान करना, स्नान कराना
सिणिग्ग	√स्तिह्	प्रीति करना
सिर	√सिज्	यनाना, निर्माण करना
सिलाह	√सिहाव्	प्रशंसा करना
सिल्लेस	√सिह्व्	आखिन्न करना, भेंटना
सिच्च, सीय	√सोच्च्	सीना
सिह्	√सिह्	इच्छा करना, चाहना
सीअ	√सिअ	गिराव करना, लेव करना
सीआव	√सिआव्	शिथिल करना
सीमंत	दे०	वेचना
सील	√सील्य्	आभ्यास करना
सीस	√सिप्, √सिथ्य्	पथ करना, हिंसा करना; बहना
सुप्प, सुअ, सुव	√सुप्, √सु	सोना; सुनना
सुआ	√सो	शयन करना, सोना
सुघ	दे०	सूचना
सुक्क, सुक्कय	√सुक्क, √सोक्क	मूखना; मुखाना
सुग्ग	√सुग्ग्	शुद्ध होना
सुढ, सुमर	√सुढ्	वाद करना
सुण	√सु	सुनना
सुरह	√सुरभव्	सुगन्धित होना
सुस्स	√सुप्	सूचना
सुस्सुयाय	√सुस्सुयाय्, √सुस्कार्य्	सू सू आवाज करना, सत्कार करना
सुस्सूस	√सुस्सूप्	सेवा करना
सुद्ध	√सुद्ध	मुखी करना
सूअ	√सूअ्य्	सूचना करना, जानना
सस, सोस	√सुप्	सूचना

सेव	√सेव्	आराधना करना, आश्रय करना
सो	√सु, √स्वप्	दारु बनाना, पीढा करना, सोना
सोभ, सोद्	√शुम्, √शोभय्	शोभना, चमकना, शोभा युक्त करना, चमकना
सोस्त	√क्षिप्, √पच्, √रि	फेंकना, पकाना, प्रेरणा करना
सोद्	√शोधय्	शुद्धि करना, खोजना
ह		
हफ	दे०	पुष्टारना, आह्वान करना
हफार	दे०	ऊँचे फैलाना
हक्खुव	उत् + √क्षिप्	ऊँचा करना, उठाना, फेंकना
हण, हम्म	√हन्	वध करना, मारना
हम्म	√हम्म	जाना
हर	√ह, √मह, √हृ	हरण करना, छीनना, ग्रहण करना, आनाच करना
हरिस	√हृप्, √हृव्	खुशी होना, हृष से रोमाञ्चित होना
हरेस	√हृप्	गति करना
हय	√हृ	होना
हस	√हस, √हस्	हँसना, हास्य करना, हीन होना
		कम होना
हा	√हा	त्याग करना, गति करना
हार	√हारप्	नाश करना, हारना, पराभव होना
हाव	√हावप्	हानि करना, श्याम करना
हास	√हासय्	हँसाना
हिरि	√ही	लजित होना
हाल	√हृल्य्	अवज्ञा करना, तिरस्कार करना
हुण	√हु	हाम करना
हुळ	√क्षिप्, √हृञ्	फेंकना, मार्जन करना, साफ करना
हेर	√दि०	देखना, निरीक्षण करना
होम	√होमय्	होम करना

दशवाँ अध्याय

अन्य प्राकृत भाषाएँ

शौरसेनी

(१) शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति संस्कृत है।

(२) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असंयुक्त त का द होता है।^१ यथा—

मावदिशा, मन्तिहो—त के स्थान पर द।

पदाहि, पदाओ < पदस्मात्।

विशेष—(क) संयुक्त होने पर त का द नहीं होता। यथा—अज्जउत्त और सउत्तणे में त का द नहीं हुआ है।

(ख) आदि में होने पर भी त का द नहीं होता। यथा—

“तथाकरोथ जथा तस्स राहणो अणुरूपणीअ भोमि” में तथा और तस्स के तकारों को द नहीं हुआ।

(३) कहीं-कहीं शौरसेनी में वर्गान्तर के मघ—अनन्तर वर्तमान त का द होता है।^२ यथा—

महन्वो < महान्त —दकारोत्तर आकार को ह्रस्व और त को द।

निश्चिन्वो < निश्चित्त.—ध के स्थान पर च तथा त को द।

अन्वे-उरं < अन्त पुरम्—त को द और पकार का छेप।

(४) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार को विकल्प से दकार होता है।^३

यथा—

दात्त, तावत् < तावत्—विकल्प से तकार को द तथा ह्रस्व त् का छेप।

(५) शौरसेनी में थ के स्थान पर विकल्प से ध होता है।^४ यथा—

कथं < कथम्—थ के स्थान पर विकल्प से ध।

कथेदि < कथयति— ” ”

कथिर्द < कथितम्— ” ”

१. वो दोनादी शौरसेन्यामयुक्तस्य दा४।२६० हे०। २. मघ. कञ्चित् दा४।२६१।

३. बादस्तावति दा४।२६२ हे०।

४. यो घ. दा४।२६७।

नाधो, नाहो < नायः—य के स्थान पर विकल्प से ध और विकल्पाभाव में—
य को ह हुआ है ।

राजपधो, राजपहो < राजपथ —

(६) शौरसेनी में इक्षन्त शब्दों से आमन्त्रण—सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति के एक्यचन में विकल्प से इन् के न का आकार होता है । यथा—

भो कनुइभा < भो कनुविन् ।

सुहिभा < सुहिन् ।

अभ्यन्—भो तपस्ति < भो तपस्विन्

भो मणस्ति < भो मनस्विन्

(७) शौरसेनी में नकरान्त शब्दों में सम्बोधन एक्यचन में विकल्प से न् के स्थान पर अनुस्वार होता है । यथा—

भो राथं < भो राजन्—ज का छोप, अ स्वर छेप और न को य, न् का विकल्प से अनुस्वार ।

भो विभयवर्मन् < भो विजयवर्मन्—जछोप, अ स्वर छेप और न् को अनुस्वार ।

(८) शौरसेनी में भवत् और मगयत् शब्दों में प्रथमा विभक्ति के एक्यचन में नकार के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है । यथा—

एदु भवं, समणे भगवं महावीरे ।

(९) शौरसेनी में र्य के स्थान पर विकल्प से व्य आदेश होता है और विकल्पाभाव में ज आदेश होता है । यथा—

अव्यउत्तो, अजउत्तो < आर्यपुत्रः—र्य के स्थान पर व्य तथा विकल्पाभाव में ज और पठार का छोप, ण को च ।

कव्यं, कवं < कार्यन्—र्य को विकल्प से व्य, विकल्पाभाव में ज ।

पद्याकुलो, पञ्चाकुलो < पर्याकुलः—,, ,,

सुप्यो, सुब्बो < सर्वः—,, ,,

वजपरवत्तो < कार्यपरवशः—,, ,,

(१०) शौरसेनी में इह और ह्य आदेश के हकार के स्थान में विकल्प से ध होता है । यथा—

इध < इह—ह के स्थान पर ध हुआ है ।

होध < होह—मवय—,, ,,

परिचायध < परिचायह—परिचायध्वे—य को च और ह को ध ।

१. भा आग्राम्ये सौ वेनो न. दा४२६३ ।

२. भो वा दा४२६४ ।

३. मयज्जगववो दा४२६५ ।

४. न वा यो व्य दा४२६६ ।

५. इह-सोहंस्य दा४२६८ ।

(११) शौरसेनी में भू धातु के हकार को विकल्प से ञ आदेश होता है ।^१
यथा—

भोदि, होदि < भवति—प्राकृत में भू के स्थान पर हो आदेश होता है, शौरसेनी में विकल्प से भू के स्थान पर भ हुआ है ।

(१२) शौरसेनी में पूर्व शब्द के स्थान पर विकल्प से 'पुरव' आदेश होता है ।^२
यथा—

अपुरव नाळ्यं < अपूर्व नाळ्यम्—पूर्व के स्थान पर पुरव आदेश हुआ है ।

अपुरवागदं, अपुव्यागदं < अपूर्वागतम्— ” ”

(१३) शौरसेनी में इत् और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का विकल्प से आगम होता है ।

(१४) शौरसेनी में इदानीम् के स्थान पर दार्णि आदेश होता है ।^३ यथा—

अनन्तर करणीयं दार्णि आजेवदु अद्यो ।

प्राकृत—महाराष्ट्री प्राकृत में भी इदानीम् के स्थान पर दार्णि आदेश होता है ।

(१५) शौरसेनी में तस्मात् के स्थान पर ता आदेश होता है ।^४ यथा—

ता जाव पविसामि < तस्मात् तावत् प्रविशामि ।

ता अलं पुदिणा माणेण < तस्मात् अलं एतेन मानेन ।

(१६) शौरसेनी में इत् और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के णकार का आगम विकल्प से होता है ।^५ यथा—

जुत्ते णिमं, जुत्तमिमं—इकार के पर में रहने से ।

सरिस्सं णिमं, सरिसमिमं— ” ”

क्रिजेव्, क्रिमेव्—एकार के पर में रहने से

एथं जेव्, एवमेव्— ” ”

(१७) शौरसेनी में एव के अर्थ में व्येज निपात से सिद्ध होता है ।^६ यथा—

मम एवेव यम्भणस्स; सो व्येज एसो—एव के स्थान पर व्येव ।

(१८) चेटी के आह्वान अर्थ में शौरसेनी में हुञ्जे इस निपात का प्रयोग होता है ।^७ यथा—

हुञ्जे चदुरिके ।

१. भुवो मः ८।४।२६६ ।

२. पूर्वस्य पुरव. ८।४।२७० ।

३. इदानीमो दार्णि ८।४।२७७ हे० ।

४. तस्मात्ता. ८।४।२७८ ।

५. मोत्तपण्णो वेत्तेतोः ८।४।२७६ ।

६. एवार्यो व्येव ८।४।२८० ।

७. हुञ्जे चेत्पाह्वाने ८।४।२८१ ।

तृ०	तइया	ण, णं	हि, हिं
च०	चउत्थी	स्स, आय	ण, णं
पं०	पंचमी	आदु, आदो	आदो, चो, हितो, सुंतो, हि
प०	छट्ठी	स्स	ण, णं
स०	सचमी	सि, म्मि	सु, सुं

वीर शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प० वीरो	वीरा
वी० वीरं	वीरे, वीरा
त० वीरेण, वीरेण	वीरेहि, वीरेहिं
च० वीराय, वीरस्स	वीराणं, वीराण
प० वीरादो, वीरादु	वीरादो, वीराहितो, वीरासुंतो, वीरेहितो, वीरेसुंतो
छ० वीरस्स	वीराण, वीराणं
स० वीरंसि, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इसी प्रकार सभी आकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं ।

इसरान्त और उसरान्त शब्दों के विभक्ति चिन्ह

एकवचन	बहुवचन
प० दीर्घ	अड, अशो, णो
वी० अनुस्वार	णो, दीर्घ
त० णा	हि, हिं
च० णो, एय	ण, णं
प० दो, दु	चो, ओ, उ, हितो, सुंतो
छ० णो, स्स	ण, णं
स० सि	सु, सुं

शीरसेनी में इसि- \ll -अपि शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प० इमी	इसउ, इससो, इसिणो
वी० इसि	इसिणो, इषो
त० इसिणा	इसोहि, इसोहिं

एअ < एतद्

एकवचन

बहुवचन

प०	एस, एसो	एदे
वी०	एदे	एदे, एदा
त०	एदेश, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहिं
च०	एदरस	एदेसि, एदाण, एदानं
प०	एदादु, एदादो	एअत्तो, एआओ, एआहिंतो, एआहुंतो
छ०	एदस्त	एदेसि, एदाण, एदानं
स०	एस्थ, अयम्मि, ईअम्मि	एपसु, एपसुं
	एअम्मि, एअंस्ति	

क्रियारूप

(३९) शौरसेनी में ति के स्थान पर वि और ते के स्थान पर दे, दि आदेश होते हैं ।

(३६) शौरसेनी में भविष्यत् अर्थ में चिहित प्रत्यय के पर में रहने पर स्ति होता है । भविस्तिदि, करिस्तिदि, गच्छिस्तिदि, आदि ।

(३७) शौरसेनी में भूधातु के स्थान पर नो आदेश होता है । यथा—भोवि ।

(३८) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर दा धातु के स्थान में दे आदेश होता है और भविष्यत् में दहस्त होता है ।

(३९) शौरसेनी में कृन् धातु के स्थान में कर आदेश होता है । यथा करेमि ।

(४०) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर द्या धातु के स्थान में चिद् आदेश होता है ।

(४१) शौरसेनी में दृष्ट, दृश और अय धातुओं के स्थान में क्कमशः सुमर, पेक्कल और अच्छ आदेश होते हैं ।

(४२) तिप् के साथ अस् धातु के सकार के स्थान में स्थि आदेश होता है ।

(४३) भविष्यत्कारक में मिप् सहित अस् के स्थान में चिरूप ते स्त् आदेश होता है । चिरुपभाव में धातु के स्वर का दीर्घ भी होता है । स्त्, आस्त् आदि ।

(४४) बहुवचन में सकार का घञ भी होता है ।

(४५) उत्तम पुरुष में न्ह होता है तथा मिप् के स्थान पर स्तत् होता है ।

वर्तमान में शौरसेनी के धातु प्रत्यय

एकवचन

बहुवचन

प्रथम पुरुष (Third Person)	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second Person)	सि, से	इत्था, ध, ह
उत्तम पुरुष (First Person)	मि	भो, सु, म

शौरसेनी के भविष्यत्काल के प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० (Third Person) सिदि, सिदे	सिस्ति, सिस्ते, सिदरे
म० पु० (Second Person) सिस्ति, सिस्ते	सिद्ध, सिद्ध, सिद्धस्था
उ० पु० (First Person) स्सं, सिमि	सिमो, सिमु, सिम

भूतकाल, आज्ञा एवं रिधि में प्राकृत के समान ही प्रत्यय होते हैं।

हस् धातु के रूप

वर्तमानकाल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० हसदि, हसेदे	हसन्ति, हसते, हसिरे, हसरे
म० पु० हससि, हससे	हसिस्था, हसध, हसह
उ० पु० हसमि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम, हसिमो, हसिमु, हसिम, हसमो, हसमु, हसम

भविष्यत्काल—भण

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० भणिसिदि, भणिसिदे	भणिसिस्ति, भणिसिस्ते, भणिसिदरे
म० पु० भणिसिस्ति, भणिसिस्ते	भणिसिद्ध, भणिसिद्ध, भणिसिद्धस्था
उ० पु० भणिसिस्सं, भणिसिस्सिमि	भणिसिस्सिमो, भणिसिस्सिमु, भणिसिस्सिम

अन्य सभी धातुओं के रूप हस और भण के समान होते हैं।

कृत् प्रत्यय

(४६) शौरसेनी में भूत्वा प्रत्यय के स्थान पर इय, वृण और ता प्रत्यय होते हैं। यथा—

इय—

भू + वत्वा—इय = भविय < भूत्वा

हविय < भूत्वा

पद + इय = पदिय < पठित्वा

दूण—

भू + दूण = भोदूण < भूत्वा

हो + दूण = होदूण < भूत्वा

पढ + दूण = पढिदूण < पठित्वा

त्ता—

भू + ता = भोत्ता < भूत्वा

हो + ता = होत्ता < भूत्वा

पढ + ता = पढित्ता < पठित्वा

(४७) शौरसेनी में कृ और गम धातुओं से पर में आनेवाले कत्या प्रत्यय के स्थान में विकल्प से अहुअ आदेश होता है और धातु के रि का लोप होता है। यथा—

कृ + पत्वा = क + अहुअ (दि—अ का लोप) = कहुअ < कृत्वा।

गम् + +रत्वा = गम् + अहुअ (रि—अम् का लोप) = गहुअ < गत्वा।

विकल्पाभाव पक्ष में कृ—कर + ह्य = करिय < कृत्वा।

कर + दूण = करिदूण; कर + ता = करित्ता।

गम्—गच्छ + ह्य = गच्छिउय; गच्छ + दूण = गच्छिदूण।

(४८) अवशेष कृदन्त रूपों में त के स्थान पर द कर दिया जाता है। यथा—

भू + तब्ध—हो + तब्ध = होदब्ध < भवितव्यम्।

कुछ शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	क्रियारूप
भू	भो या हो	भोदि, होदि
इत्	पेछ	पेछदि
भू	बुछ	बुछदि
कथ	कध	कधेदि
ग्रा	जिग्ध	जिग्धदि
भा	भाअ	भाअदि
मृज्	फुस	फुसदि
घूर्ण	धुम्म	धुम्मदि
खु	धुण	धुणादि
भी	भा	भादि
सृज्	पस	पसदि
चर्व	चप्प	चप्पदि

ग्रह्	गेण्ड	गेण्डदि
गृह्	गेज्झ, घेप्प	गेज्झदि, घेप्पदि
शक	सरकुण, सक	सरकुणदि, सकदि
म्लै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप्	सुअ	सुअदि
शीङ्	सुआ	सुआदि
रघ्	रोव	रोवदि
रद्	रोद	रोददि
मस्ज	जुड्ड	जुड्डदि
बुझ	बुद्दीअ	बुद्दीअदि
बझ	बद्दीअ	बद्दीअदि
लिङ्	लिद्दीअ	लिद्दीअदि

चद्धि, समाप्त, कारक आदि सभी अनुशासन शौरसेनी में प्राकृत के समान ही होते हैं। वर्णपरिवर्तन के नियम भी शौरसेनी में प्राकृत के समान ही हैं। केवल व का द और थ का ध होना ही शौरसेनी की विशेषता है।

जैनशौरसेनी

नाटकीय शौरसेनी से भिन्न होने के कारण प्रचनसार, कार्तिकेयातुप्रेक्षा, गोम्मट-सार, समपसार आदि ग्रन्थों की भाषा को पृथक् भाषा माना गया है। इस भाषा की मूलप्रवृत्ति शौरसेनी की होने पर भी इसके ऊपर प्राचीन अर्धमानधी का प्रभाव है। जैनशौरसेनी का साहित्य नाटकों की अपेक्षा पुरातन है। पदखण्डागम के मूल सूत्र भी जैनशौरसेनी में लिखे गये हैं। कुन्दकुम्भाचार्य और स्वामिकार्तिकेय ईश्वरी प्रथम शास्त्राब्दी के विद्वान् हैं। अतः हमारा अनुमान है कि जैन शौरसेनी का विकसित और परिचित रूप ही नाटकीय शौरसेनी है। यही कारण है कि नाटकीय शौरसेनी में जैन शौरसेनी की अनेक प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। कुछ विद्वान् शौरसेनी के इस भेद को स्वीकार नहीं करते, पर हमारे विचार से यह नाटकीय शौरसेनी की अपेक्षा भिन्न है। जैनशौरसेनी की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(१) त के स्थान पर द और थ के स्थान पर ध का होना । यथा—

विगदशमो < विगदशमः — त के स्थान पर द (प्र० सा० मा० १४)

संयुतो < संयुतः —

" "

"

रहिता < रहिता—	त के स्थान पर थ	(दशा० का० गा० १२८)
पठित्य < पठितम्—	" "	(दशा० का० गा० ३९०)
ध = ध—सधष्पदेसा < सधाप्रदेसा—	थ के स्थान पर ध	(प्र० सा० गा० १३०)
जध < य गा—	" "	(प्र० सा० गा० १३७)
तथा < त गा—	" "	(प्र० सा० गा० १४६)
वाध < वाय—	" "	(प्र० सा० गा० १६३)
राजधा < अय गा	" "	(प्र० सा० गा० ८९)
कध < क म्—	"	(प्रव० सा० गा० १७, ११३, १०६)

(३) जौ शौरसेनी में अर्धमागधी के समान क के स्थान पर ग भी होता है ।

यथा—

वेदग < वेदक—क के स्थान पर ग (प्र० प्र० सं०)

पुग < पुक—

समं < स्वर्ग—	" "	(प्र० सा० गा० ९४)
पुगतेण < पुकातेम—	" "	(प्र० सा० गा० ६६)
शोगष्पगंहि < योगास्मके—	" "	(प्र० सा० गा० ७३)
सागासो < साकारः—	" "	(गो० सा० जी० गा० ७)
राजगासो < अनाकार—	" "	" "
उरसामगे < उरसामके—	" "	(गो० सा० जी० ६६)
रूपगे < शपके—	" "	" "
पुगविगळे < पुकविगळे—	" "	(गो० सा० जी० ७९)
पेदगा < पेदकाः—	" "	(गो० सा० जी० ९३)

(४) जौ शौरसेनी में क के स्थान पर क और व भी पाये जाते हैं । हमसे यह पता भी अर्धमागधी से मिलती-जुलती है ।

क = क

संसोसकुरं < संतोषकरं (दशा० का० गा० ३३६)

चिरफातं < चिरकातं—(दशा० का० गा० २६३)

मणयदकापदि < मनोरचनकावैः (दशा० का० गा० ३३२)

अणुरातं < अनुरातं (दशा० का० गा० ४६९)

ओमकोट्टाप < सवमकोट्टया (गो० सा० जी० गा० १३८)

दीनयमं < होनयमम् (गो० सा० जी० गा० १७९)

एकसमवदि < एरसमवे (प्र० सा० गा० १४२)

क = य

सामाहयं < सामायिकम् (स्वा० का० गा० ३७२)

कम्मविवायं < कम्मविपाकं (स्वा० का० गा० ३७२)

सुहयरो < सुवक्त्रः (स्वा० का० गा० ३७२)

नेरइया < नैरयिकाः (गो० सा० जी० ६३)

वियसिदिसेसु < विस्लेन्द्रियेषु (गो० सा० जी० ८९)

एययिलम्पा < एयविकलाक्षाः (गो० सा० जी० ९०)

गाहया < ग्राहकाः (गो० सा० जी० १७३)

पत्तेयं < प्रत्येकं (गो० सा० जी० १८४)

ओराळियं < औरालिकं (गो० सा० जी० १८४)

क = अ—स्वरसंज्ञ

अलिअं < अलीकं (स्वा० का० गा० १०६)

आलोओ < आलोकः (स्वा० का० गा० ३४४)

नरप < नरके (प्र० सा० गा० ११४)

पज्जपट्टिपण < पर्वोवाधिकेन (प्र० सा० गा० ११४)

पेडल्लिओ < पैक्रियिकः (प्र० सा० गा० १७१)

(५) जैन शौरसेनी में मध्यवर्ता क, ग, ख, ज, त, द, और प का छोप विकल्प से पाया जाता है। अथवा यों कह सकते हैं कि इनका छोप अनिवारित रूप से पाया जाता है। यथा—

सुपकेवलिमिसिणो < धृतकेवलिनमृषयः (प्र० सा० गा० ३३)—तकार का छोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भूति।

छोपग्दीयरा < छोकप्रदीपकरा—ककार का छोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में य भूति। (प्रवचनसार गा० ३९)

वपणेहि < उपनेः (प्र० सा० गा० ३४)—चकार का छोप अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भूति।

सयज्जं < सच्छम् (प्र० सा० गा० ५१)—फ का छोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भूति।

उरमोगो < उपयोगः (प्र० सं० गा० ४)—प के स्थान पर य।

षट्ठेपा < षट्ठेपा (प्र० सं० गा० ३५)—दकार का छोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भूति।

गुहाय < गुभायुः (प्र० सं० गा० ३८)—तकार का छोप और उ स्वर संज्ञ।

सायार्ह < सकार्ह (प्र० सं० गा० ४२)—ककार का छोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भूति।

(६) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान ही मध्यवर्ती व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट अ या आ स्वर के स्थान में ही य भुति पायी जाती है। यथा—

तिस्थयसो ऽ तीर्थङ्कर.—यहाँ क का लोप होने पर अवशिष्ट अ स्वर के स्थान में ही य भुति हुई है।

पयस्थ ऽ पदार्थः—दकार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में य भुति।

वेयणा ऽ वेदना—दकार का लोप और अवशिष्ट अ के स्थान में आ को य भुति।

आहारया ऽ आहारका—ककार का लोप और अवशिष्ट आ को य भुति।

(७) उ के, परचातृ लुप्त वर्ण के स्थान में यहुषा व भुति पायी जाती है। यथा—

वालुया ऽ बालुका—ककार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में य भुति।

यहुर्वं ऽ षट्कं—ककार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में य भुति।

यिहुव ऽ विधूत—तकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में य भुति।

(८) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान प्रथमा विभक्ति के एकवचन में ओ और अर्धमागधी के प्रभाव के कारण सप्तमी के एकवचन में म्मि और म्मि विभक्ति चिह्न पाये जाते हैं। षष्ठी और चतुर्थी के बहुवचन में लि प्रत्यय जोड़ा जाता है। षष्ठमी के एकवचन में शौरसेनी के समान आदो, आनु प्रत्ययों का योग पाया जाता है।

द्व-वसहाबो ऽ द्वयस्वभाव.—प्रथमा के एकवचन में ओ प्रत्यय जोड़ा गया है।

सद्वित्तिहो ऽ सद्विशिष्टः—

”

एकसमयम्हि ऽ एकसमये—(प्र० सा० गा० १४२)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

एगम्हि ऽ एगस्मिन् (प्र० सा० गा० १४३)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

अणदवियम्हि ऽ अन्यद्वये (प्र० सा० गा० १५९)—

”

सुदम्मि ऽ शुभे (प्र० सा० गा० ७९)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

चरियम्हि ऽ चरिके (प्र० सा० गा० ७९)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

गठमम्मि ऽ गर्भे (स्वा० का० गा० ७४)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

सत्तकवम्मि ऽ स्वस्वरूपे (स्वा० का० गा० ४८३)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

जोगम्मि ऽ योगे (स्वा० का० गा० ४८४)—

”

पुक्कम्भि, पुक्कम्भि, लोपम्भि, लोपम्भि, जैसे वैभृत्पिठ प्रयोग भी जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं।

तेसिं८तेभ्यः (प्र० सा० गा० ८२) च्चुर्मा के चटुग्रन् में ति प्रत्यय जोड़ा गया है।

सव्वेसिं८सर्वेषाम् (स्वा० का० १०३) पट्टी के चटुग्रन् में सिं प्रत्यय जोड़ा गया है।

(९) छ धातु का रूप जैन शौरसेनी में कुब्बदि भी मिलता है। इसका प्रयोग स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० ३१३, ३२९, ३४०, ३५७, ३८४ आदि में देखा जाता है।

(१०) स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा और प्रचनसार में शौरसेनीके समान करेदि का भी निम्न माथाओं में प्रयोग मिलता है। यथा स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—गा० ६१, २२६, २९६, ३२०, ३२, ३६०, ६६९, ३७८, ४२०, ४४०, ४४९ और ५५१। प्रचनसार में गा० १८५ में करेदि रूप आया है।

(११) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान छ धातु के रूप कुणेदि और कुणइ रूप भी निम्न माथाओं में पाये जाते हैं। यथा—

कुणेदि—स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० १८२, १८८, २०९, ३१९, ३७०, ३८८, ३८९, ३९६ और ४२०। प्रचनसार में माथा ६६ और १४९ में कुणादि क्रिया व्यवहृत की गयी है।

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में गा० २०९, २२७, २८५ और ३१० में छ धातु के कुणइ रूप का व्यवहार पाया जाता है।

जैन शौरसेनी में छ धातु का करेइ रूप भी मिलता है। स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० २२५ में यह रूप आया है।

(१२) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान में त्ता का व्यवहार होता है। यथा—
जाण + त्ता = जाणित्ता, त्रियाण + त्ता = त्रियाणित्ता।

णयस + त्ता = णयसित्ता, पेळ + त्ता = पेळित्ता।

(१३) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान पर य भी पाया जाता है। यथा—
भवीय (प्रचनसार गा० १२), संसृत्त के आशुक्क के स्थान पर आषिच्छ रूप आया है। गहियं८गृहीत्वा (स्वा० का० गा० ३७३)।

(१४) स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में क्त्वा के स्थान पर च्वा का व्यवहार मिलता है। यथा—किच्चा८कृत्वा, ठिच्चा८स्थित्वा।

शौरसेनी प्राकृत के वृण और महाराष्ट्री के ऊण प्रत्यय भी संस्कृत के क्त्वा के स्थान में जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं। यथा—गमिऊण (गोम्मन्मार गा० ५०),

मागधी

(१) मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गयी है । साधारण प्राकृत भी मागधी का मूल मानी जा सकती है ।

(२) मागधी में अकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के प्रथमा के एकवचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त होते हैं^१ । यथा—

एधे मेघे < एप मेप*, एधे पुलिङ्गे < एप पुरप., करोमि भन्ते < करोमि भदन्त ।

(३) मागधी में रेफ के स्थान पर लज्जर और दन्त्य सकार के स्थान पर तालव्य शकार होता है^२ । यथा—

नळे < नरः— र के स्थान पर ल और विसर्ग को एर

पळे < परः — ” ”

विभाळे < विचारः— ” ”

हंघे < हंसः — दन्त्य के स्थान पर तालव्य श और विसर्ग को एर

शालङ्गे < सारसः—आद्यन्त दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श और रेफ को ल

शुदं < भुतम्—शुदं—दन्त्य स को तालव्य श और शौरसेनी के समान त को व ।

शोभगं < सोदणं < शोभनम्—

(४) मागधी में यदि सकार और पकार—अलग अलग संयुक्त हों तो उनके स्थान में स होता है । प्रथम शब्द में उक्त आदेश नहीं होता^३ । यथा—

पत्रलज्जि हस्ती < प्रस्त्रलज्जि हस्ती—यहाँ स् और ॥ संयुक्त हैं, अतः संयुक्त स के स्थान पर तालव्य श नहीं हुआ ।

बुहस्परी < बृहस्पति.—संयुक्त स् को तालव्य श नहीं हुआ और दन्त्य स ज्यों का त्यों बना रहा ।^४

१. भव एस्सो वृत्ति मागध्याम् दा० १२८७ ।

२. र-सोर्ल-शी दा० १२८८ ।

३. स-पोः संयोगे सोऽप्रोप्ये दा० १२८९ ।

मस्त्री < मस्त्री—संयुक्त स ज्यों का त्यों और रेफ को छट्ट ।

मुस्दाहं < मुस्दाहं—प और क संयुक्त हैं, अतः संयुक्त मूर्धन्य प के स्थान पर साधव्य श न होकर दन्त्य स हो गया है और रेफ को छ हुआ है ।

कटं < कटम्—संयुक्त मूर्धन्य प के स्थान पर दन्त्य स हुआ है ।

विस्तुं < विष्णुम्—

”

”

निष्फलां < निष्फलम्—

”

”

धनुस्खंडं < धनुषखण्डम्—

”

”

निन्दुवाशके < निन्दुवाशकः—निन्दुवाशक में उक्त निन्दुवाशक नहीं हुआ है ।

(५) द्विरुक्त ट (ट्ट) और पकार से युक्त ठकार के स्थान पर मागधी में ट आदेश होता है ।^१ यथा—

पष्टे < पष्टः—ट्ट के स्थान में ट्ट ।

भस्टालिना < भट्टालिना—ट्ट के स्थान में ट्ट और रेफ के स्थान में छ ।

मुस्तु वदं < मुस्तु एतम्—स के स्थान श, ट्ट के स्थान पर ट्ट तथा ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर व पूर्ण त के स्थान पर द ।

फोस्तागालं < फोस्तागारम्—ट्ट के स्थान पर ट्ट और र के स्थान पर छ हुआ ।

(६) स्थ और र्थ इन दोनों वर्णों के स्थान में मागधी में सकार से संयुक्त वकार होता है ।^२ यथा—

उवस्थितवे < उपस्थितः—प के स्थान पर व, स्थि के स्थान पर स्थ तथा त के स्थान पर द और विसर्ग को पूर्व ।

मुस्थितवे < मुस्थितः—दन्त्य स के स्थान पर साधव्य श, स्थ के स्थान पर स्त, त के स्थान पर द और विसर्ग को पूर्व ।

अस्त्वदी < अर्थवती—र्थ के स्थान में स्त और त स्थान पर द होता है)

दास्त्ववादे < सार्थवाद्—दन्त्य स के स्थान पर स, र्थ के स्थान पर स्त और विसर्ग को पूर्व ।

(७) मागधी में ज, च और य के स्थान में थ आदेश होता है ।^३ यथा—

यणवेदे < जनपदः—ज के स्थान पर य और प के स्थान पर व हुआ है ।

अय्युणं < अयुनः—ज के स्थान पर य्यु और न के स्थान पर न ।

याणादि < जानादि—ज के स्थान पर य, न को ण और त के स्थान पर द ।

मय्यिदे < मयितः—ज के स्थान पर य्य और त को द, विसर्ग को पूर्व ।

१. ट्ट-ट्टोस्तः दा४१६० ।

२. स्थ-थ्योस्तः दा४१६१ ।

३. ज-य-या या दा४१६२ ।

दुय्यणे < दुज्जणे < दुर्जने: — जे के स्थान पर व्य और न को ण ।

वय्यिदे < वज्जित: — " " त को द और विपर्ग को एर ।

मय्यं < मय्यम् — य के स्थान में य्य ।

अय्य किल विव्याहणे आगदे < अय किल विवाधर आगत: ।

यादि < यादि — य के स्थान पर य ।

(४) मागधी में न्य, ण्य, ज्ञ और ज्ञ इन संयुग्माक्षरों के स्थान पर द्विकृत् ज्ञ होता है ।^१ यथा—

अहिमन्नुकुमाळे — अहिमन्नुकुमार: — न्य के स्थान पर ज्ञ ।

कज्जकायल्लं < कज्जकाजरणम् — न्य के स्थान पर ज्ञ; र को ल ।

अय्यद्वज्जं < अय्यद्वज्जम् — ण्य के स्थान पर ज्ञ आदेश ।

पुज्जाहं < पुज्जाहम् — ण्य के स्थान पर ज्ञ ।

पज्जाविशाले < पज्जाविशाल: — ज्ञ के स्थान पर ज्ञ ।

शब्बज्जे < सर्ज्ज: — इत्स्य स के स्थान पर दा और ज्ञ के स्थान ज्ञ ।

अवज्जा < अवज्जा — ज्ञ के स्थान पर ज्ञ ।

अज्जली < अज्जलि: — ज्ञ के स्थान पर ज्ञ ।

धणज्जपु < धनज्जप: — ज्ञ के स्थान पर ज्ञ ।

एज्जणे < एज्जर: — " " और रेफ को एर ।

(९) मागधी में अनादि से वर्तमान छ के स्थान में दानार संयुक्त च (ध) होता है ।^२ यथा—

गध < गधउ — 'उ' के स्थान पर ध ।

उधल्लवि < उधउल्लति — उउ के स्थान पर ध और त को द ।

तिरधि वेस्सदि < तिरिचिउ वेस्सदि < तिर्यक् प्रेक्षते — उउ के स्थान पर ध और छ के स्थान पर रु, त को द ।

भावन्नवश्रुते < भावन्नपरसल: — छाक्षणिठ होने से त्स के स्थान पर भी ध आदेश ।

(१०) मागधी में अनादि में वर्तमान छ के स्थान पर विद्वाम्-सीव × क आदेश होता है ।^३ यथा—

य×के < यल्ल: — छ के स्थान पर × क आदेश और तिसर्ग को एर ।

ल × फने < लल्लमा: — रेफ के स्थान पर ल, अनियमित द्वय, छ के स्थान पर × क, इत्स्य स के स्थान पर ताल्लय य और विपर्ग को एर ।

१. न्य-एय-ज्ञ-ज्जो इतः पा० २६३ ।

२. एय धोनादी पा० २६४ ।

३. एय × कः पा० २६६ ।

(११) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के स्थान पर स्क आदेश होता है ।^१ यथा—

पेस्कदि < प्रेक्षते—संयुक्त रेफ का खोप होने से प्र के स्थान पर प, स के स्थान पर स्क तथा त को द । मागधी में ति और ते इन दोनों के स्थान पर दि आदेश होता है ।

(१२) मागधी में हृदय शब्द के स्थान पर हृदक आदेश होता है ।^२ यथा—

हृदके आच्छे मम < हृदये आदरो मम—हृदय के स्थान पर हृदके आदेश, तथा द और र के स्थान पर ल, प्रथमा पुरुषचन में विभक्ति ए का संयोग ।

(१३) मागधी में अस्मद् शब्द को प्रथमा पुरुषचन में सु विभक्ति में हके, हगे और अहके ये तीन आदेश होते हैं ।^३ यथा—

हके, हगे, अहके भणामि < अहं भणामि ।

(१४) मागधी में शृगाल शब्द के स्थान पर शिभाल और शिभालक आदेश होते हैं ।^४ यथा—

शिभाळे आभच्छदि, शिभाळ्ळे आभच्छदि < शृगाल आभच्छति ।

शब्दरूपों के नियम

(१५) मागधी में प्रथमा पुरुषचन में एर होता है । यथा—पुलिजे < पुरयः ।

(१६) मागधी में अवर्ण से पर में आनेवाले टल्—यही के परवचन के स्थान में विकल्प से आह आदेश होता है । आह के पूर्ववर्ती टि का खोप होता है ।^५ यथा—

हगे न ईदिहाह कम्माह काळी < अहं न ईदत्तस्व कर्मणः कारी; भगदत्त-रोगि-
दाह कुंभे; पक्ष में—भीमयोगस्स पश्चादो हिप्पत्रीमदि ।

(१७) मागधी में अवर्ण से पर में विद्यमान आम् के स्थान में त्रिरूप से आह आदेश होता है और पूर्व के टि का खोप हो जाता है ।^६ यथा—

आहं—येवाम्; त्रिरूपाभाउ से—याणं < येवाम् ।

(१८) मागधी में अहम् और वयं के स्थान पर हगे आदेश होता है ।^७ यथा—

हगे शकावदानतिस्वणिवाशी धीउळे < अहं शक्राउतारकीर्थनिरासी धीवः ।

(१९) मागधी में अकारान्त शब्दों को सु पर रहते ह, ए होते हैं और सु का खोप होता है ।^८ यथा—

एशि लामा < एय राजा—यहाँ ए को श और अकार को इकार ।

एजे पुलिजे < एय पुरुषः—एर होने से एजे होता है ।

१. स्कः प्रेक्षाचक्षोः ८।४२२७ ।

२. हृदस्य हृदकः ११।६ वर० ।

३. अस्मदः सौ हके-हगे-अहके ११।६ वर० ।

४. शृगालशब्दस्य शिभालाशिभालकाः ११।१७ वर० ।

५. अवर्णादि ऊसो अहं ८।४।२६ हे० । ६. मामो आहं वा ८।४।३०० हे० ।

७. अहंवयमोहगे ८।४।३०१ हे० ।

८. अत इदेतो वुक्च ११।१० व० ।

(२०) इस अकारान्त शब्द के अन्तिम अकार को सम्बुद्धि पर रहते दीर्घ होता है । यथा—

पुलिशा आगच्छ < हे पुरुष आगच्छ—सम्बोधन होने से अकार को दीर्घ ।

मानुशा आगच्छ < हे मानुष आगच्छ ” ”

विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
पदमा	ए	आ
धीआ	अनुस्वार	आ
सहआ	ण, जं	दि, दि, दि
चउस्थी, छट्टी व, स्स		हँ, ण, जं
पंचमी	आदो, आनु	ओ, ओ, उ, दि, हिन्तो, हुँतो
सप्तमी	सि, म्मि	शु, शं

वील—वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पदमा	वीले	वीला
धीआ	वीलं	वीला
सहआ	वीलेण, वीलेणं	वीलेदि, वीलेदि, वीलेदि
चउस्थी	वीलाह, वीलस्स	वीलाहँ, वीलाण, वीलाणं
पंचमी	वीलादो, वीलाहु	वीलओ, वीलओ, वीलउ, वीलाहिन्तो, वीलाहुन्तो
छट्टी	वीलाह, वीलस्स	वीलाहँ, वीलाण, वीलाणं
सप्तमी	वीलंसि, वीलम्मि	वीलेशु, वीलेशुं
संबोधन	हे वीले	हे वीला

अव्य अकारान्त शब्दों के रूप भी वील शब्द के समान होते हैं ।

चतुसक लिङ्ग में शौरसेनी के समान ही शब्दरूप धनते हैं ।

सर्वनामवाची शब्द मामघी में वील < वीर के समान होंगे । यहाँ उदाहरण के लिए कुछ शब्द रूप प्रस्तुत किये जाते हैं ।

शब्द < सर्व के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
पदमा	शब्बे	शब्बा
धीआ	शब्बं	शब्बा

तइया	शब्बेण, शब्बेणं	शब्बेहि, शब्बेहिं, शब्बेहिं
चउत्थी	शब्बाह, शब्बस्स	शब्बाहं, शब्बाण, शब्बाणं
पंचमी	शब्बादो, शब्बादु	शब्बचो, शब्बभो, शब्बउ, शब्बाहिन्तो, शब्बाशुन्तो
छट्ठी	शब्बाह, शब्बस्स	शब्बाहं, शब्बाण, शब्बाणं
सप्तमी	शब्बंसि, शब्बम्मि	शब्बेशु, शब्बेशुं
संवोहण	हे शब्बे	हे शब्बा

त, ण तत् राब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	जे	ते, ने
धी०	तं, णं	ते, ता, ने, णा
त०	तेण, तेणं, तिणा	तेहि, तेहिं, तेहिं,
	जेण, जेणं	नेहि, नेहिं, नेहिं,
च०	ताह, तस्स	ताहं, तेशि, जेशि,
		तणं, ताण, गाण, गाणं
प०	तादो, ताहु	ततो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहितो, तेहितो, ताहुंतो, तेहुंतो
		जचो, जाओ आदि
छ०	ताह, तस्स	ताहं, तेशि, जेशि, ताण, गाण
स०	ताहे, ताअ, तइभा तम्मि, तस्सि, तहिं, तस्स, णम्मि, णस्सि, णस्स	जेण, जेणं

एअ तत् राब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	एअ, एअ	एदे
धी०	एदं	एदे, एदा
त०	एदेण, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहिं, एदेहिं
च०	एदे, एदाद	शि, एदाहं, एदाण, एदाणं
पं०	एदाहु, एदादो	एअचो, एआउ, एआओ, एआदि, एएहि, एआहितो, एएहितो, एआहुंतो, एएहुंतो

छ०	शे, एहाह	शि, एहाई
स०	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि, एअम्मि, एअस्सि	एएत्थ, एएत्थं

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के मागधी विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	दीर्घ	अउ, अओ, णो०
वी०	अनुस्वार	णो०
त०	णा	हि, हिं, हिँ
च०	ह	हँ, ण
प०	दो, दु	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, हुन्तो
छ०	ह	हँ, ण, णं
स०	शि	श, शं

इशि < ऋपि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	इशी	इशउ, इशओ, इशिणो, इशी
वी०	इशि	इशिणो, इशी
त०	इशिणा	इशीहि, इशीहिं, इशीहिँ
च०	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
प०	इशिओ, इशिउ	इशिओ, इशिओ, इशीउ, इशिहितो, इशीहुतो
छ०	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
स०	इशिशि	इशीशु, इशीशुं
सं०	हे इशि, हे इशी	हे इशउ, हे इशओ, हे इशिणो

मागधी में इन्-अन्तवाके शब्दों में सम्बोधन एरुवचन में विरुप से न के स्थान पर अकार आदेश होता है ।

हे वंझिअ, हे दण्डी < इण्डिन्

हे शुद्धिआ, हे शुद्धि < सुखिन्

हे तवशिशिआ, हे तवसि < तपस्विन्

उकारान्त—भाणु शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाणू	भाणुओ, भाणओ, भाणउ, भाणू
वी०	भाणु	भाणुओ, भाणू

त०	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहिँ
च०	भाणुइ	भाणुइँ
प०	भाणुदो, भाणुदु	भाणुसो, भाणुओ, भाणूड भाणूहिँतो, भाणूनुंतो
छ०	भाणुइ	भाणूहँ, भाणूण, भाणूखं
स०	भाणुशि, भाणुमि	भाणूशु, भाणूनुं
सं०	हे भाणु, हे भाणू	हे भाणुणो, हे भाणओ, हे भाणू

इसी प्रकार यउ, गुलु < गुरु, झाहु, मेलु < मेरु, कालु < कारु, लाहु < राहु आदि उकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं। उकारान्त या इकारान्त शब्दों के रूप मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार ही वर्णविवृति कर बनाने चाहिए। व्यञ्जनान्त वा शेष स्वरान्त शब्द प्राकृत की शब्दरूपावली में मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार वर्णविवृति करने से निष्पन्न होते हैं।

मागधी में प्रथमा, चतुर्थी, पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति में ही अन्तर पड़ता है। स्पष्टीकरण के लिए अकारान्त पितृ शब्द के रूप भी दिये जाते हैं।

पिउ, पिआ, पिआल < पितृ

	एकवचन	बहुवचन
प०	पिआ, पिअके	पिअला, पिउणो, पिअमो
दी०	पिअलँ	पिअले, पिअला, पिउणो
त०	पिअलेण, पिअलेणं, पिउणा	पिअकेहि, पिअकेहिं, पऊहिं
च०, छ०	पिअलाइ	पिअलाहँ, पिअलाण
प०	पिअलादो, पिअलादु	पिअलतो, पिअलामो, पिअलाहिँतो, पिअलानुंतो
स०	पिअले, पिअलंशि, पिअलमि, पिउशि, पिउमि	पिऊशु, पिऊशुं
सं०	हे पिअ, हे पिअके	हे पिअला, हे पिउणो

इसी प्रकार दाउ, दायाल < दातृ का प्रथमा के एकवचन में दायाले, चतुर्थी—षष्ठी के एकवचन में दायालाह और बहुवचन में दायालाहँ, पञ्चमी के एकवचन में दायालादो, दायालादु और सप्तमी के एकवचन में दायालंशि तथा सप्तमी के बहुवचन में दायालेशु, दायालेशुं रूप बनते हैं।

मागधी के धातुरूप

मागधी की धातुरूपावली शौरसेनी के समान होती है। अतः मागधी के धातुविह शौरसेनी के समान ही हैं।

(२१) मागधी में वज्र धातु के जकार को अ आदेश होता है । यथा—
वज्रदि < वज्रति ।

(२२) प्रेक्ष और आचक्ष धातु के अ के स्थान पर रु आदेश होता है । यथा—
पेस्कदि < प्रेक्षणे, आचस्कदि < आचक्षते ।

(२३) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ के स्थान पर चिष्ट आदेश होता है । यथा—
चिष्टदि < तिष्ठति । मतान्तर से प्राकृत के समान चिट्ठ भी आदेश होता है ।

हराधातु—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरावि, हरोदि	हरांति, हरन्ते
म० पु०	हराणि, हराणे, हरोज्ज	हराइस्था, हराध, हरोध
उ० पु०	हरामि, हरामि, हरोमि, हरोज्ज	हरामो, हरामो, हरिमो, हरोमो, हरसु, हरस

भविष्यत्काल—भण

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भणिसिदि, भणेस्सिदि भणिसिदे, भणेस्सिदे	भणिसिंति, भणेस्सिंति, भणिसिंते भणिसिंते, भणेस्सिंते, भणेस्सिइले
म० पु०	भणिसिणि, भणेस्सिणि भणिसिणे, भणेस्सिणे	भणिसिइ, भणेस्सिइ भणिसिध, भणेस्सिध, भणिसिइस्था
उ० पु०	भणिसिं, भणेस्सं, भणेस्सिमि	भणिसिमो, भणेस्सिमो, भणिसिसु, भणेस्सिसु

घेप सभी धातुरूप और दन्त रूप शौरसेनी के समान मागधी में होते हैं ।

मागधी के कृतिपय विशेष शब्द

माघे < माघः	दुप्यणे < दुर्जनः
विजाघे < विजासः	छस्के < राक्षसः
वायदे < जायते	दस्के < दक्षः
पलिवये < परिवयः	हरने, धइके, हगे < अहम्
गहिदुठळे < गृहीदुठळः	पलिआभा < पप राजा
विपळे < रिजळः	हशिनु, हशिदि, हशिद < हसितः
गिस्सणे < निर्गमः	पुधिणे < पुरुषः
हडळे < हृदयः	चिष्टदि < तिष्ठति
वाएळे < आदरः	कडे < दृष्टः
कम्ये < कादम्	मडे < मृतः
फारिदागि < दृष्ट्या	सहिदागि < सोद्ग
गरे < गतः	शिआळे, शिआळे < श्रमाळः

अर्धमागधी

साधारणतः अर्धमागधी शब्द की व्युत्पत्ति 'अर्ध मागध्या' अर्थात् जिसका अर्धार्थ मागधी का हो वह भाषा 'अर्धमागधी' कहलायेगी। परन्तु जैनसूत्र ग्रन्थों की भाषा में उक्त व्युत्पत्ति सम्यक् प्रकार घटित नहीं होती। हाँ, नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के अधिकोश लक्षण पाये जाते हैं।

अर्धमागधी शब्द की एक व्युत्पत्ति में "अर्धमगधस्येयं" अर्थात् मगध देश के अर्धांश की भाषा को अर्धमागधी कहा जायेगा। इस व्युत्पत्ति का समर्थन ईस्वी सन् सातवीं शताब्दी के विद्वान् जिनदासगणि महत्तर ने नितीधर्चूग-नामक ग्रन्थ में— "पोराणमदमागधभासानिययं हवइ तुत्त" द्वारा किया है। अर्धमगध शब्द की व्याख्या करते हुए 'मगधद्विषयभासानिर्ध्वं अदमागहं' अर्थात् मगधदेश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निघट्ट होने से प्राचीन सूत्रग्रन्थ अर्धमागध कहलाते हैं। अर्धमागधी में अट्ठाह देशी भाषाएँ मिश्रित मानी गयी हैं। बताया है— "अट्ठाहसदेशीभासानिययं ना अदमागहं"। अन्यत्र भी इसे सर्वभाषामयी कहा है।

अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध और शूरसेन (मधुरा) का मध्य-वर्ती प्रदेश अयोध्या है। तीर्थङ्करों के उपदेश की भाषा अर्धमागधी मानी गयी है। आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव अयोध्या के निवासी थे, अतः अयोध्या में ही इस भाषा की उत्पत्ति हुई मानी जायगी। पर भाषा की भौगोलिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने पर अवगत होता है कि शूरसेनी या पूर्वी हिन्दी के साथ इस भाषा का विशेष सम्बन्ध नहीं है। महाराष्ट्री प्रारुत या आधुनिक मराठी के साथ इस भाषा का घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर डॉ० हार्नेले ने बताया है कि अर्धमागधी ही

१. सर्वार्धमागधी सर्वभाषासु परिणामिनीम्।

सर्वेषा सर्वतो वाचं सर्वज्ञो प्रणिदम्बहे॥

—वाग्भट्ट काव्यानुशासन पु० २

भारिसवयले सिद्ध देवाण अदमागहा धाणी।

—काव्यालकार की नमिसाधुद्धत टीका २, १२।

२. "It thus seems to me very clear, that the Prakrit of chanda is the Arsha or ancient (Purana) from the Ardhamagadhi, Maharashtra and Sauraseni"—Introduction to Prakrit Lakshana of chanda Page XIX

आर्ष प्राकृत है, और इसीसे परवर्ती काल में नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी निकली हैं। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के अध्ययन से भी यही निष्कर्ष निश्चयता है कि एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री कहा गया है। आर्ष प्राकृत से अर्धमागधी अभिप्रेत है। उन्होंने “आर्षम्” ८।१।३ सूत्र में ‘अर्षं प्राकृतं बहुलं भवति’ तथा ‘आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्पन्ते’ कथन में आर्ष—अपिभाषित प्राकृत के अनुशासन की बात कही है।

अर्धमागधी के प्रथमा एकवचन में मागधी के समान ए प्रत्यय जोड़ा जाता है। ऋ में समाप्त होनेवाले धातु के त स्थान में अर्धमागधी में ऌ होता है। अर्धमागधी की यह प्रवृत्ति भी मागधी से मिलती जुलती है। अर्धमागधी की वर्णपरिवर्तनतन्त्राधी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) अर्धमागधी में दो स्वरों के मध्यवर्ती अर्धयुक्त क के स्थान में सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होते हैं। यथा—

ग—पाप्म < प्ररूप—प्र के स्थान पर प, क को ग और संयुक्त ल का लोप तथा इ को द्वित्व।

आगर < आकर—क के स्थान पर ग।

आगास < आकास—क को ग और श के स्थान पर दन्त्य स।

पगार < प्रकार—प्र को प और क को ग।

सावग < आवक—संयुक्त रेफ का लोप, श को स और क के स्थान पर ग।

विवज्जग < विवर्जक—संयुक्त रेफ का लोप, ज को द्वित्व और क को ग।

अद्धिगरण < अधिगणन—घ के स्थान पर ह और क के स्थान पर ग।

णिसेवग < निषेवक—न के स्थान पर ण, मूर्धन्य य को स और क को ग।

छोगे < छोरुः—क के स्थान पर ग और एकवचन का ए प्रत्यय।

आगइ < आहृतिः—क के स्थान पर ग, ककारोपर ऋ को अ, तकार का लोप।

त्त—आराहत्त < आराधक—घ के स्थान ह, क के स्थान पर त।

सामातित < सामायिक—य के स्थान पर त और क के स्थान पर त।

विमुद्धित < विशुद्धिक—तालव्य श को दन्त्य स और क को त।

अहित < अधिक—घ के स्थान पर ह और क को त।

साउणित < शाकुनिक—तालव्य श को दन्त्य स, ककार का लोप और उ स्वर लोप, न को ण त रा अन्तिम क के स्थान पर त।

णेतज्जि१ < नैवधिक—रेकार के स्थान पर एकार, प को स, घ के स्थान पर ज और क को त हुआ है।

वीरासणित < वीरासनिक—न को ण और क के स्थान पर त।

षष्ठति < षर्षकि—रेफ का छोप, ष को द्वित्व और मूर्धन्य ष, पूर्वर्ती व को व तथा फ के स्थान पर त ।

नेरतित < नैरयिक—ऐकार का पृकार, य को त और क को त ।

सीर्मतत < सीर्मतरु—क को त हुआ है ।

नरतातो < नरकात्—क के स्थान पर त ।

मादधित < भादधिक—रु के स्थान पर त ।

कोदुनित < कौदुम्यिक—मौकार को ओकार, उ को व तथा रु को त ।

सचन्तुत्तेण < सचक्षुत्तेण—छ के स्थान पर क्ल और क के स्थान पर त ।

वृणित < कृणिक—क को त ।

य—काश्चं < कायिक—मध्यवर्ती यकार का छोप और क को य ।

लोय < लोक—क को य हुआ है ।

अययारो < अवकारो—फ के स्थान पर य ।

(२) दो स्वरों के बीच का असंयुक्त ग प्रापः कायम रहता है । कहीं कहीं त और य भी होता है । यथा—

ग—आगम < आगम—ग के स्थान पर ग रह गया है ।

आगमर्ण < आगमर्न—ग के स्थान पर ग और न को ण हुआ है ।

अणुगामिय < अनुगामिरु—ग के स्थान पर ग, न के स्थान पर ण और क के स्थान पर य हुआ है ।

आगामिस्स < आगमिधत्—ग के स्थान पर ग, संयुक्त य का छोप और स को द्वित्व; अन्तिम हल् त् का छोप ।

भगव्य < भगवन्—ग के स्थान पर ग और न् को अनुस्वार ।

त—अतित < अतिग—ग के स्थान पर त ।

य—सावर < सगर—ग के स्थान पर य ।

(३) दो स्वरों के बीच में आनेवाले असंयुक्त च और ज के स्थान में त और द दोनों हो सकते हैं । यथा—

त—णारात < नाराच—न के स्थान पर ण और च के स्थान पर त ।

वति < वचस्—अन्त्य इल् स् का छोप और च के स्थान त तथा इकार ।

पावतण < प्रवचन—प्र के स्थान पर प और च के स्थान पर त ।

य—कयातो < कदाचित्—दकार का छोप, या नेप और ऋ ध्रुति, च के स्थान पर य और अन्तिम व्यञ्जन त् का छोप एवं पूर्ववर्ती इ को दीर्घ ।

वायणा < वाचना—च को य और क को ण ।

आर्ष प्राकृत है, और इसीसे परवर्ती काल में नाटकीय अर्धमागधी, मदाराष्ट्री और शौरसेनी निकली हैं। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के अध्ययन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्धमागधी रूप को मदाराष्ट्री कहा गया है। आर्ष प्राकृत से अर्धमागधी अभिप्रेत है। उन्होंने “आर्षम्” ८।१।३ सूत्र में ‘आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति’ तथा ‘आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते’ कथन में आर्ष—क्षपिभाषित प्राकृत के अनुशासन की बात कही है।

अर्धमागधी के प्रथमा पुरुषवचन में मागधी के समान ए प्रत्यय जोड़ा जाता है। ऋ में समास होनेवाले धातु के त स्थान में अर्धमागधी में उ होता है। अर्धमागधी की यह प्रवृत्ति भी मागधी से मिलती जुलती है। अर्धमागधी की वर्णपरिवर्तनसम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) अर्धमागधी में दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में ङ और य होते हैं। यथा—

ग—पगप्प < प्रकल्प—प्र के स्थान पर प, क को ग और संयुक्त ल का लोप तथा द को द्वित्व।

आगर < आकर—क के स्थान पर ग।

आगास < आकाश—क को ग और श के स्थान पर दन्त्य स।

पगार < प्रकार—प्र को प और क को ग।

सावग < धावक—संयुक्त रेफ का लोप, श को स और क के स्थान पर ग।

विवज्जग < विवर्जक—संयुक्त रेफ का लोप, ज को द्वित्व और क को ग।

अह्गिरणं < अधिकरणं—घ के स्थान पर ह और क के स्थान पर ग।

णित्तेवग < निपेवकः—न के स्थान पर ण, मूर्धन्य ष को स और क को ग।

लोगं < लोहः—क के स्थान पर ग और पुरुषवचन का ए प्रत्यय।

आगह < आहृतिः—क के स्थान पर ग, ककारोपर ऋ को अ, तकार का लोप।

त—आराहत < आराधक—ध के स्थान ह, क के स्थान पर स।

सामावित < सामायिक—य के स्थान पर त और क के स्थान पर त।

विमुद्धित < विशुद्धिक—तालव्य श को दन्त्य स और क को त।

अहित < अधिक—ध के स्थान पर ह और क को त।

सावणित < शाकुनिक—तालव्य श को दन्त्य स, ककार का लोप और उ स्वर शेष, न को ण तथा अन्तिम क के स्थान पर त।

णेयज्जिह < नैवधिक—रेफार के स्थान पर एकार, ष को स, ध के स्थान पर ज और क को त हुआ है।

वीरासणित < वीरासनिक—न को ण और क के स्थान पर त।

चरेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यों का त्यो ।

चते < सत — विसर्ग को एत्व, , ,

सल्लगति < संलपति—प को ञ और , ,

पमिति < प्रमृति—प्र को प, मकारोच्चर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यो

बना रहा ।

करयल्ल < करतल्ल—मध्यप्रती त के स्थान पर य हुआ ।

(५) दो स्वरों के बीच में स्थित द दा द और त ही अधिमात्रा में देखा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है । यथा—

द—पदिसो < प्रदिश.—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है ।

अणाद्विर्ध < अनाद्विर्ध—न के स्थान पर ण, द को व और क के स्थान पर ग ।

वदमाण < वदण्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है ।

णद्वि < ण्वति—न के स्थान पर ण और व को व दो रह गया है ।

अणउद < अणउद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द ।

वेदिहिती < वेदिप्यति—संयुक्त य का लोप, प को स और स के स्थान पर ह तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों उर्ण ही निगमान हैं ।

त—जता < जता—ग के स्थान पर ज और व को त ।

पात < पाद—द के स्थान पर त ।

निसाल < निपाद—मूर्धन्य प को स और द को स ।

नती < नदी—द को त ।

सुसागत < सुसागद—सकारोच्चर ऋ के स्थान पर उ, प को स और द के स्थान पर त हुआ है ।

वावित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त ।

अज्ञता < अज्ञता—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और द को त ।

मताती < रुदाचित्—द के स्थान पर व, घ को त और अन्तिम हल् त् का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ ।

जति < यदि—य को ज और द को त ।

चिरातीत < चिरादित्—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ ।

य—पटिच्छावण < प्रतिच्छाद—प्रति के स्थान पर पटि, द को य और न को ण ।

अउप्य < अउप्य—तजार का लोप, उ स्वर छेप, संयुक्त प का लोप, प को द्वित्व और द के स्थान पर य ।

कपरयो < कद्वय—द के स्थान पर य, य को स्थ ।

उपचार < उपचार—प को व और घ को य ।

छोय < लोच—च के स्थान पर य ।

आयरियं-आचार्य—च को य और स्वरमन्त्रि के नियमानुसार र् तथा य का प्रथमरण, इ स्वर का आगम ।

ज = त—भोति < भोजिन्—ज के स्थान पर त और अन्तिम नू का छोप ।

वतिर < वज्र—व के स्थान पर त और रू का पु गदरण तथा त में हस्व हकार का संयोग ।

पूजा पूजा—ज के स्थान पर स ।

रातीसर राजेसर—ज के स्थान पर त, ऐकार को ह्रस्व, संयुक्त का छाप और वाच्य श को दन्त्य स।

भक्तते \triangle आत्मजः—संयुक्त म का सोप और त को द्वित्व तथा ज को त ।

पयाय प्रजात—प्र के स्थान पर प, जकार को य और त का छोप, ऊ स्वर होय तथा यभति ।

कामज्जश Δ कामध्वजा—ध्व के स्थान पर ज, ज के स्थान पर य ।

अक्षयः आत्मज्ञ—संयुक्त म का लोप, त को द्वित्व और ज को य ।

(४) दो स्वरों का सम्भवतो त प्रायः घन रहता है; कहीं-कहीं इतना घन होता है। यथा—

चंदति—यन्दते—त के स्थान पर त ही बना रहा। आत्मनेपद की श्रिया परस्मैपद में परिवर्तित हो गई।

नमसति नमस्यति—संयुक्त य का लोप श्रौं म के ऊपर अनुस्वार ।

पञ्जरासति पयुंवास्ते—संगुत रेफ का छोर, य को ज ओर द्वित्व । प के स्थान पर व और स्वरभक्ति के अनुसार वृथकरण, ए का इत्त्व ।

जित्तिदिद \triangle जित्तेन्द्रिय—एछार को इत्य, संयुक्त रेफ का छाप और त ज्यों का ह्यों बना हुआ है।

सखत \triangle सखत—तक्रार जैसे का तेसे बना हुआ है ।

अंतरित द अन्तरित—, " "

धेयत < धेयत— " "

जाति द जाति— " "

आगति Δ आरुति— क के स्थान पर ग, ऋरर को इ और त की स्थिति ज्यों की

हयों बनी हुई है ।

विहरति \Leftarrow विहरति—त की। स्थिति ज्यों की त्यों पनी है।

पुरतोऽपुस्तः—विसर्ग को विस्मृत हो ओल्ट और त ज्यों का स्थों बना है।

करोति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यो का त्यों ।

तते < तत—विसर्ग को एत्व, , ,

संछति < संछति—प को न और , ,

पभिति < प्रभृति—प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यों बना रहा ।

करयल < करतल—मध्यवर्ती ल के स्थान पर य हुआ ।

(६) दो स्वरों के बीच में स्थित द वा द और त ही अधिकांश में देजा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है । यथा—

द—पदिसो < प्रदिशः—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है ।

अणादियं < अनादिकं—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य ।

वदमाण < वदत्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है ।

णदति < नदति—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है ।

अणवत् < अणवद्—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द ।

वेदिद्विती < वेदिष्यति—संयुक्त य का लोप, प् को स और स के स्थान पर द तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों ण ही विद्यमान है ।

त—जतः < यदा—य के स्थान पर ज और द को त ।

पात < पाद्—द के स्थान पर त ।

निसाव < निपाद्—मूर्धन्य प को स और द को त ।

नती < नदी—द को त ।

मुसावात < मृषावाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, य को स और द के स्थान पर त हुआ है ।

यातित < कादिकं—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त ।

अन्नता < अन्नपदा—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और द को त ।

कताती < कदाचित्—द के स्थान पर त, च को स और अन्तिम हल् त् का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती हकार को दीर्घ ।

जति < यदि—य को ज और द को त ।

पिरातीत < चिरादिकं—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ ।

य—पडिच्छावण < प्रतिच्छादः—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण ।

चण्णय < चतुष्पद—नवार का लोप, उ स्वर शेष, संयुक्त प का लोप, प को द्वित्व और द के स्थान पर य ।

कयत्यो < कदर्य—द के स्थान पर य, र्य को त्य ।

उपवार < उपचार—प को व और च को य ।

छोय < छोच—च के स्थान पर य ।

आयरिय < आचार्य—च को य और स्वरभक्ति के नियमानुसार र् तथा य का पृथक्करण, इ स्वर का आगम ।

ज = त—भोति < भोजिन्—ज के स्थान पर त और अन्तिम न् का छोप ।

वतिर < वज्र—ज के स्थान पर त और र् का पृथक्करण तथा त में ह्रस्व इकार का संयोग ।

पूता < पूजा—ज के स्थान पर त ।

रातीसर < राजेश्वर—ज के स्थान पर त, ऐकार को ईस्व, संयुक्त व का छोप और साक्ष्य क्ष को दन्त्य स ।

अत्तते < आत्मजः—संयुक्त म का छोप और त को द्वित्व तथा ज को त ।

पयाप < प्रजात—प्र के स्थान पर प, जकार को य और स का छोप, ऊ स्वा छेप तथा यभ्रुति ।

कामज्जका < कामज्जजा—ज्ज के स्थान पर ज्ज, ज के स्थान पर य ।

अत्तन < आत्मज—संयुक्त म का छोप, त को द्वित्व और ज को य ।

(४) दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः बना रहता है; कहीं-कहीं इसका य होता है । यथा—

वदति < वन्दते—त के स्थान पर त ही बना रहा । आत्मनेपद की क्रिया परस्मैपद में परिवर्तित हो गई ।

नमंसति < नमस्यति—संयुक्त य का छोप और म के ऊपर अनुस्वार ।

पज्जुपासति < प्युपास्ते—संयुक्त रेफ का छोप, य को ज और द्वित्व । प के स्थान पर व और स्वरभक्ति के अनुसार पृथक्करण, प् का इत्य ।

जित्तिदिय < जितेन्द्रिय—एकार को इस्व, संयुक्त रेफ का छोप और त ज्यों का स्थान बना हुआ है ।

सतत < सत्तत—तकार जैसे का तेसे बना हुआ है ।

अंतरित < अन्तरित—,, ,, ,,

धेयत < धेवत—,, ,, ,,

जायि < जाति—,, ,, ,,

आगति < आहति—क के स्थान पर ग, ककार को ह और त की स्थिति ज्यों की स्थान बना हुई है ।

विदरति < विहरति—त की स्थिति ज्यों की स्थान बना हुई है ।

पुरतो < पुस्तः—विसर्ग को विसर्ग से ओट्ट और त ज्यों का स्थान बना है ।

परेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यों का त्यो ।

तते < तत—रिसर्ग को एत्व, , ,

संखवति < संस्पति—प को व और , ,

पभिति < प्रभृति—प्र को प, मकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यो बना रहा ।

करयल < करवल—मध्यवर्ती ल के स्थान पर य हुआ ।

(५) वो स्वरों के बीच में स्थित द टा द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है । यथा—

द—पदिसो < प्रदिश,—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है ।

अणाद्विर्घ < अनारद्विर्घ—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य ।

षदमाण < षदत्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है ।

णद्वि < नद्वि—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है ।

जणवद < जनषद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द ।

वेदिद्विती < वेदिष्यति—संयुक्त य का शोष, प् जो स और स के स्थान पर ह तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों वर्ण ही विद्यमान हैं ।

त—जता < यदा—य के स्थान पर ज और द को त ।

पात < पाद्—द के स्थान पर त ।

निसात < निषाद—मूर्धन्य प को स और व को त ।

नती < नदी—द को त ।

मुसामात < मृयानाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, प को त और द के स्थान पर व हुआ है ।

वातित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त ।

अध्रता < अध्रदा—संयुक्त य का शोष, न को द्विस्व और द को त ।

कलाती < कदाचित्—द के स्थान पर त, घ को त और अन्तिम इल् त् का शोष तथा त् के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ ।

जति < यदि—य को ज और द को त ।

चिरातीत < चिरादिक—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ ।

य—पडिच्छायण < प्रतिच्छाद—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण ।

चउप्पय < चतुप्पद—तकार का शोष, उ स्वर शोष, संयुक्त प का शोष, प को द्विस्व और द के स्थान पर य ।

कयरयो < कदर्थ—द के स्थान पर य, र्थ को स्थ ।

उयरं < उदरम्—ए को य ।

पयादिणा < पदक्षिणा—प्र को प, द के स्थान पर य और क्ष के स्थान पर इ हुआ है ।

(६) दो स्वरों के मध्यवर्ती प के स्थान पर व होता है । यथा—

पाउम < पापक—मध्यवर्ती प को व और अन्त्य क को ग हुआ है ।

संलपति < संलपति—

सोरवार < सोपचार—प को व और च के स्थान पर य हुआ है ।

अतिवास < अतिपात—प के स्थान में व हुआ है ।

उवणीय < उवणीत—प के स्थान में व और न को ण, तथा त को थ हुआ है ।

अउभोववयण < अधुपपन्न—भ्य के स्थान पर उभ, उ को ओस्व, उत्तरवर्ती

दोनों प्रकारों को व तथा न को ण ।

उवगूढ < उपगूढ—प को व हुआ है ।

आदेवच < आधिपत्य—ध के स्थान पर ह, इकार को एस्व, प को व और त्य को च ।

तवय < तपक—प को व और क को य ।

ववरोपित < व्यरोपित—संयुक्त य का लोप, प को व हुआ है ।

(७) स्वरों का मध्यवर्ती य प्रायः ज्यों का त्यों रह जाता है और कहीं-कहीं उसका त भी हो जाता है । यथा—

वायव < वायव—य ज्यों का त्यों स्थित है ।

पिय < प्रिय—प्र के स्थान पर प और य ज्यों का त्यों वर्तमान है ।

निरय < निरय—य ज्यों का त्यों वर्तमान है ।

ईदिय < इन्द्रिय—संयुक्त रेफ का लोप, और य ज्यों का त्यों ।

गायइ < गायति—य ज्यों का त्यों, त लोप और इ शेष ।

त—सिता < सिया—य के स्थान पर त ।

सामातित < सामाधिक—य के स्थान पर त और क को भी त हुआ ।

पालतिस्सति < पालयिष्यन्ति—य के स्थान पर त और त्य को स्त ।

परिवात < पर्याय—स्वरभक्ति के नियम से र्य का गुणकरण और इ का आगम दोनों य के स्थान पर त ।

पातग < नायक—ग के स्थान पर ण, य को त और क के स्थान पर ग ।

गातति < गाति—य के स्थान पर त ।

ठाति—स्थायिन्—स्था के स्थान पर ठा, य को त और अन्त्य न् का लोप ।

साति < शायिन्—शालव्य श को स, य के स्थान पर त और अन्त्य न् का लोप ।

नैरतिव < नैरथिक—ऐकार को एकार, य के स्थान में छ और क को भी त ।

इदित < इन्दिथ—संयुक्त रेफ का छोप और य के स्थान पर त ।

(८) दो स्वरों के मध्यवर्ती व के स्थान पर व, त और य होता है । यथा—

व—वायव < वायव—व के स्थान पर व हो रह गया है ।

गारर < गौरव—गोकार के स्थान पर भाकार और व के स्थान पर य ।

भरति < भवति—व के स्थान पर व ही रहा ।

धणुवीति < अनुविधित्य—ॠ के स्थान पर ण, इ को ईत्य, व के स्थान पर व और चिह्न के स्थान पर ति ।

त—परितरल < परिवार—य के स्थान पर त और र के स्थान ल ।

कति < कवि—व के स्थान पर त ।

य—परिवट्टण < परिवर्तन—य के स्थान पर य, त के स्थान पर इ और न को ण ।

परिवट्टणा < परिवर्तना— " "

(९) शब्द के आदि, मध्य और संयोग में सर्वत्र ण की तरह न भी स्थित रहता है । यथा—

नई < नदी—न ज्यों का त्यों और द का छोप, ई स्वर श्रेय ।

नायपुत्त < ज्ञातपुत्र—उ के स्थान पर न, त को व और ॠ के स्थान पर त ।

भारनाल < भारनाल—म के स्थान पर न ही रह गया है ।

अनिल < अनिल— " "

पञ्चा < प्रज्ञा—प्र को प और ज्ञा के स्थान पर घा ।

विन्तु < विद्ध—त के स्थान पर धु ।

सव्यन्तु < सर्वज्ञ—संयुक्त रेफ का छोप, व को द्वित्व और उ के स्थान पर झ और अकार को डत्व ।

(१०) एव के पूर्व अम् के स्थान में आम् होता है । यथा—

जामेव < यमेव—य के स्थान पर ज और एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम् ।

तामेव < तमेव—एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम् ।

खिन्पामेव < क्षिप्रमेव—छ के स्थान पर ख, संयुक्त रेफ का छोप और प को द्वित्व तथा एव के पूर्ववर्ती अम् को आम् ।

एवामेव < एवमेव—एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम् ।

पुन्वामेव < पूर्वमेव—पूर्व के स्थान पर पुन्व और एव के पूर्ववर्ती अम् को आम् ।

(११) दीर्घ स्वर के बाद इति या के स्थान में ति या और इ या का प्रयोग होता है । यथा—

इदमेहं ति वा < इन्द्रमह इति वा—इति वा के स्थान में ति वा ।

इदमेहं वा < इन्द्रमह इति वा— " " इ वा ।

(१२) यथा और यात् शब्द के य का लोप और ३ दोनों ही दिये जाते हैं ।
यथा—

अहमस्मात् < यथास्मात्—यथा के स्थान पर अह और स्मात् को स्थाय होता है ।

अहामात् < यथाजात्—यथा के स्थान पर अहा हुआ है ।

जडागामत् < यथानामत्—य के स्थान ज, थ को द, न को ण और स्वार्थिक क के स्थान पर ए ।

धामस्मात् < यावस्मात्—य का लोप, अ स्वर शेष, अन्त्य हल् त् का लोप और थ के स्थान पर ह ।

जामजीवत् < यावजीवत्—य के स्थान पर ज हुआ है ।

(१३) दिवत् शब्द में व और सकार के स्थान पर विकल्प से यकार और हकार आदेश होते हैं । यथा—

दिवहं, दिवसं < दिवसं—विकल्प से व के स्थान पर य और स के स्थान पर ह; स के स्थान पर ह न होने पर दिवसं रूप बनेगा ।

दिवहं, दिवसं < दिवसं—स के स्थान पर ह होने से प्रथम रूप और विकल्पाभाव में द्वितीय रूप बनता है ।

(१४) गृह शब्द के स्थान पर गह, घर, हर और गिह आदेश होते हैं । यथा—

गहं < गृहम्—गृह के स्थान पर गह आदेश होने से ।

घरं, हरं, गिहं < गृहम्—गृह के स्थान पर घर, हर और गिह आदेश होने से ।

(१५) म्लेच्छ शब्द के छ के स्थान पर म्लिच्छ से क्ख आदेश होता है तथा पकार के स्थान पर विकल्प से पकार और उकार होते हैं । यथा—

म्लेच्छ, म्लिच्छ, म्लिच्छत् < म्लेच्छ.—स्वर भक्ति के नियम से म और छ का पृथक्करण, इकार का आगम, छ के स्थान पर क्ख तथा पकार के स्थान पर विकल्प से थकार और उकार होते हैं ।

(१६) रियां शब्द के यां भाग के स्थान पर विकल्प से रियागं, 'रिआग और व्याग आदेश होते हैं । यथा—

परियागो, परिआगो, पव्यागो < पर्याय ।

(१७) चुषादिगण पठित शब्दों के धकार के स्थान पर विकल्प से हकार आदेश होता है । यथा—

उसो \leq तुपदे— μ के स्थान पर h और μ को μ पर ।

रुधिरं < रुधिरं—ध के स्थान पर न आदेश हुआ है ।

पड़तो \triangle पधगो—ध के स्थान पर नू हुआ है ।

गुहा < गुया—य के स्थान पर द आदेश हुआ है ।

(१८) पर्ये आदि शब्दों में व के स्थान पर विष्णु मे व आदेश होता है ।

पद्या—

भाउजो, भायजो व भावर्यः — य के रंगान पर विद्यम से, उदार और संयुक्त रूप का जोष तथा ज को दित ।

आडलागे, आरम्भणें आरंभम्—,, ,, ,, ,,

(१९) धनु शब्द के स्थान पर विद्यत्य से धनुर्त्त, धनुसं का आगम होना है ।

धनुर्, धनुस्तं, धनुं < धनुः

(१०) पुट और पुर शब्द के ये प्रकार का लोप विदित होता है । यथा—

वाङ्मय, वाङ्मय < वाङ्मय—पञ्चम का लोप, उ शर में और वाङ्मय के स्थान पर ह ।

• गोडरं, गोपुरं < गोपुम्—विकृत्य तं प्रकार का लोप।

(२१) अर्धमागधी में सेते दण्ड भी प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं, जिनका प्रायः महाराष्ट्री में अभाव है । यथा—

अथकतिपयः अजम्बुवृक्षः, अगुशीति, आर्यमा, गायत्रेयम्, आगावान्, आश्वमेध
यज्ञः, केमहालयः, पञ्चविंशतिः, पाउकुटी, पुष्टिः मित्रः, पोरेयश्च, मन्दिनश्चापि,
परः, पिडत ।

(२२) अर्धमागधी में ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत अधिक है, जिनके रूप महाराष्ट्री से भिन्न होते हैं । उदाहरणार्थ कुछ शब्दों की शब्दिका इसी जाती है ।

अधभागधी	महाराष्ट्री	अर्धभागधी	महाराष्ट्री
अभियोग	अन्वय	निर्णय	निर्णय
भाउरण	भाउचन	निर्णय	निर्णय
आहरण	उदाहरण	पदपत्र	पदपत्र
उत्पि	उत्पि; अन्वय	पदपत्र	पदपत्र
क्रिया	क्रिया	पद	पद
धीम, धेम	धेम	उद्दे (धेम)	उद्दे, धेम
धेमचिबर	धेमचिबर	पुरेकम्	पुरेकम्
मेहि	मेहि	पुरि	पुरि
धिरण	धिरण	मात्र	मात्र, मेच

छच्च	छक्क	माहण	बम्हण
जाया	जत्ता	मिलवत्तू, मेच्छ	मिलिच्छ
णिगण, णिगिण	णग्ग	वग्गू	वाया
णिगिणिण	णग्गत्तण	वाहणा (उपानह्)	उवाणभा
तच्च (तृतीय)	तद्ध	सहेज्ज	सद्दाम
तच्च (तथ्य)	तच्चउ	सीआण, सुसाण	मसाण
तेगिच्छा	चिद्धच्छा	सुमिण	सिमिण
दुयाल्लग	वारसग	सुद्धम, सुद्धम	सण्ह
दोच्च	दुद्ध	सोद्धि	सुद्धि

दुवाल्ल, वारस, तेरस, अउणाउोसइ, यचीस, पणसीस, इगवाल, तेयलीस
पणवाल, अठवाल, एगट्टि, वावट्टि, तेवट्टि, छावट्टि, अठसट्टि, अउणत्तरि, वावत्तरि,
पणत्तरि, सत्तइत्तरि, तेयासी, छप्पसीइ, बाणउइ आदि सख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी
में महाराष्ट्री से भिन्न हैं।

शब्दरूप

(२३) अर्धमागधी में पुष्टि अकारान्त शब्द के प्रथमा एकवचन में प्रायः सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है।

(२४) सप्तमी एकवचन में स्ति प्रत्यय होता है।

(२५) चतुर्थी के एक उचन में आने या आते प्रत्यय जाड़े जाते हैं।

(२६) अर्धमागधी में कुछ शब्दों में तृतीया के एकवचन में सा प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा आदि। महाराष्ट्री में मणेण, वपण आदि रूप बनते हैं।

(२७) कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एकवचन में पालि की तरह कम्मणा और धम्मणा रूप होते हैं। महाराष्ट्री में कम्मेण और धम्मेण रूप बनते हैं।

(२८) अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के एकवचन में तेम्हो रूप भी पाया जाता है।

(२९) पुष्पद् शब्द के पष्ठी के एकवचन में तय और दुस्मद् शब्द के पष्ठी के बहुवचन में अस्माक रूप पाये जाते हैं। ये रूप महाराष्ट्री में नहीं होते हैं।

अर्धमागधी के विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	ए, ओ	आ
द्वि०	अनुस्वार	ए

तृ०	इण, सा	इहि, हि
च०	आण, आत्ते	अणं
प०	ओ, आतो	इहितो
प०	स्स	अणं
स०	सि, मि	इणु

अकारान्त जिण शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जिणे	जिणा
द्वि०	जिणं	जिणे
तृ०	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहि
च०	जिणाए, जिणात्ते	जिणाणं
प०	जिणाओ, जिणातो	जिणेहितो
प०	जिणस्स	जिणाणं
स०	जिणंसि, जिणम्मि	जिणेषु
सम्बो०	ओ जिणे, ओ जिणा	ओ जिणे

इसी प्रकार गोयम, देव, गीर आदि अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

वर्धमानधी में भगवत् (भगवन्त) शब्द का प्रथमा के एकवचन में भगव और भगवन्तो; मत्तिमन्त का मत्तिम और मत्तिमन्तो; कारव और कारवन्तो; प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में भगवन्तो, मत्तिमन्तो, कारवन्तो पर तृतीया के एकवचन में भगवया और भगवता रूप बनते हैं। पद्य के एकवचन में भगवओ और भगवतो रूप होते हैं। इन शब्दों के रूप रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

(३०) तार प्रत्यान्त शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में पुरार और ओकार आदेश होते हैं। पद्या—

पत्तरथारे, पत्तयारो; कत्तारे, कत्तारो, भत्तारे, भत्तारो पर तृतीया के एकवचन में तार के स्थान पर तु आदेश होने से पत्तथुणा, कत्तुणा, भत्तुणा रूप भी विरुद्ध से बनते हैं। येप शब्द रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

राय शब्द के रूप (राजन् शब्द)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	राया	राये
द्वि०	रायं, रायाणं	रायाणो
तृ०	राया	रायंहि

च०	रायाप, रायाते	राईणं
प०	रायाभो, रायातो	रायेहितो
प०	रन्नो	राईणं
स०	रायंसि, रायमि, राये	रायेसु

संस्कृत के आत्मन् शब्द के स्थान पर अर्धमागधी में, अत्त और अप्प आदेश होते हैं । अतः इस शब्द के रूप निम्न प्रकार चलते हैं ।

अत्त, अप्प < आत्मन्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अत्ता, अप्पा	अत्ते, अप्पे
द्वि०	अत्ताणं, अप्पाणं	अत्ते, अप्पे, अप्पा
तृ०	अत्तणा, अप्पणा	अत्तेहि, अप्पेहि
च०	अत्ताप, अप्पाप	अत्ताणं, अप्पाणं
प०	अत्ताभो, अप्पाभो	अत्ताहितो, अप्पाहितो
प०	अत्तणो, अप्पणो	अत्ताणं, अप्पाणं
स०	अत्तंसि, अप्पंसि, अत्तमि, अप्पमि	अत्तेसु, अप्पेसु

जस, मण, वय, काय, तेय, चरन्तु और जोग शब्द के तृतीया एकवचन में जससा, मणसा, वयसा, कायसा, तेयसा, चरन्तुसा; जोगसा; पृथी के एकवचन में जससो, जसस्स; मणसो, मणस्स; वयसो, वयस्स, कायसो, कायस्स; तेयसो, तेयस्स; चरन्तुसो, जोगसो, जोगस्स एवं सप्तमी विभक्ति एकवचन में मणसि, मणंसि, मणंसि, वयसि, वयंसि, वयंसि, कायसि, कायंसि, कायंसि, तेयसि, तेयंसि, तेयंसि, चरन्तुसि, चरन्तुमि और जोगसि, जोगंसि, जोगंसि रूप बनते हैं ।

इकारान्त मुणि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	मुणी	मुणिणो, मुणी
द्वि०	मुणि	मुणिणो, मुणी
तृ०	मुणिजा, मुणिस्स	मुजोहिं, मुजोहिं
च०	मुणिगो, मुणिस्स	मुणीणं
प०	मुणिणो, मुणीभो	मुजोहितो
प०	मुणिगो, मुणिस्स	मुणीणं
स०	मुणिसि, मुणिमि, मुणी	मुणीसु
सं०	भो मुणि, भो मुणी	भो मुणिणो

इकारान्त शब्दों के अतिरिक्त उकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत—महाराष्ट्री प्राकृत के समान चलते हैं।

पितृ शब्द का प्रथमा के एकवचन में पिता, पिता, पितरो, पितरो, द्वितीया के एकवचन में पितरं, पितरं एवं चतुर्थी के एकवचन में पिउण्, पिउस्स और पिउणो रूप बनते हैं।

सर्व शब्द के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

क < किम् के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	के, को	के
द्वि०	कं	के
तृ०	केणं, केण	केहिं, केहि
च०	काए	केसि
प०	कम्हा, काओ	कम्होहिन्तो
प०	कस्स	केसि
स०	कस्सि, कसि, वमि, के	केसु

अय < इद्म्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अयं, इमे	इणमो, इमो
द्वि०	इणं, इय	इमे
तृ०	अणेण, इमेण, इमेण	इमेहिं, इमेहि
च०	इमाए	इमेसि
प०	इमाओ, इमा	इमेहिन्तो
प०	अस्स, इमस्स	इमेसि
स०	अस्सि, इमस्सि, इममि	इमेसु

एस < एत्तद्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एसो, एसे, ए	एए
द्वि०	एय	एए
तृ०	एएण, एएण	एएहिं, एएहि
च०	एयाए	एएसि
प०	एयाओ, एया	एएहिन्तो
प०	एएसस	एएसि

स० एएस्सि, एएंसि, एएंसि एएसु
इसी प्रकार अन्य सर्वनाम शब्दों के रूप होते हैं ।

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग माला शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	माला	मालाओ, माला
द्वि०	मालं	मालाओ, माला
तृ०	मालाए	मालाहिं
च०	मालाप	मालाणं
पं०	मालाओ	मालाहितो
प०	मालाप	मालाणं
स०	मालाप	मालासु
सं०	ओ माले	ओ माला

स्त्रीलिङ्ग इकारान्त विट् < ट्टिः

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	दिट्ठि	दिट्ठीओ, दिट्ठी
द्वि०	दिट्ठि	दिट्ठीओ, दिट्ठी
तृ०	दिट्ठीए	दिट्ठीहिं
च०	दिट्ठीप	दिट्ठीणं
पं०	दिट्ठीओ	दिट्ठीहितो
प०	दिट्ठीप	दिट्ठीणं
स०	दिट्ठिसि	दिट्ठीसु
सं०	ओ दिट्ठी	ओ दिट्ठीओ

इकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत के समान ही होते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग में जा < यद् सर्वनाम शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जा	जाओ
द्वि०	जं	जाओ
तृ०	जाए, जाय	जाहिं
च०	जासे, जाप	जासि
पं०	जाए, जाओ	जाहितो

प०	जीसे, जाय	जासि
स०	जीसे, जाय	, जासु
सं०	हे जा	हे जाओ

नयुंसकलिङ्ग में शब्दों के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं ।

तद्धित

अर्धमागधी में संस्कृत के समान तद्धित प्रत्ययों को अपत्यार्थक, देवतार्थक, समूहार्थक, अभ्यवनाथार्थक, विकारावयवार्थक, अनेकार्थक, मनुवर्थक और दशार्थक इन आठ भागों में विभक्त किया जा सकता है । ऐपिक प्रत्यय भी अर्धमागधी में पाये जाते हैं ।

अपत्यार्थक और समूहार्थक

(३१) समूह, सम्बन्ध और अपत्यार्थक दत्तलाने के लिए इय, अण् और इज् प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

वरिष्ठस्स इयं—वरिष्ठियं < कापालिकम्—कविल + इय—लकारोत्तर अकार का छोप और वृद्धि होने से, विभक्ति चिह्न जोड़ने से उक्त रूप बनता है ।

उत्तरस्स इमं—उत्तरिज् < औत्तरेयम्—उत्तर + इज्—रकारोत्तर अकार का छोप और विभक्तिचिह्न जोड़ने से उक्त रूप बना है ।

कोसस्स इमं—कोसेज् < कोसेयम्—कोस + इज्—गुण और विभक्ति चिह्न जोड़ने से ।

समूहार्थ—

सगडार्ण समूहो—सगडं < शाकटम्—सगड + अ—वृद्धि और विभक्तिचिह्न ।

वेसालीय अवचर्चं—वेसालिओ < वैशालिकः — वेसालिस्तावपु < वैशालिक-

भावः—इय (अ) प्रत्यय जोड़ा गया है ।

पण्डवस्स अण्णार्णि—पाण्डवा—पाण्डव + अण् (अ) पाण्डवा, पण्डवा; इसी प्रकार अण् प्रत्यय जोड़ देने से—छाघर्च, अज्जरं, महरं आदि रूप भी बनते हैं ।

व्यापार यो वृत्ति अर्थ—

चोरस्स वावारी—चोर्ज् < चोर्यम्—चोरियं में इज् और इय प्रत्यय जोड़े गये हैं ।

वणिजस्स वात्रारी—वाणिज् < वाणिज्यम्—व्यापार अर्थ में इज् प्रत्यय ।

(३२) अप्पण शब्द से सम्बन्ध दत्तलाने के लिए इच्चिय और इज्जिय प्रत्यय होते हैं । यथा—

अप्पणस्स इयं—अप्पणिच्चियं < आहमीयम्—अप्पण + इच्चिय = अप्पणिच्चियं,

अप्पण + इज्जिय = अप्पणिज्जियं ।

पयासीणं समूहो—पायत्तं < पदात्तम्—पायत्त + अण् = पायत्तं ।

पडिहारीए इयं—पाडिहैरं < प्रातिहार्यम्—पडिहारी + अम्—पडिहारी शब्द में हा के स्थान पर हे आदेश हुआ है और रकारोच्चर इकार का छोप ।

मम + इय—ममाई, ममाइए < ममत्वी, ममायितः ।

(३३) पर शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए कीय प्रत्यय होता है । यथा—
पर + कीय—परकीयं ।

(३४) राय शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए ण प्रत्यय होता है । यथा—
राय + ण—राइणं, रायणं—य कार के स्थान पर इकार ।

(३५) कम्म शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए ण और अ प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।
कम्म + ण = कम्मणं < कम्मणम्, कम्म + अ = कम्मअ

भगार्थक प्रत्यय

(३६) भगार्थ में इम, इह, इज्ज, इय, इक, क आदि प्रत्यय जोड़े होते हैं ।

अब्भंतरे भयो—अब्भंतरिप, अब्भंतरगो < आभ्यन्तरकः—अब्भन्तर + इय = अब्भन्तरिप, त्रिकल्पाभाव में अब्भन्तर + क (ग) = अब्भन्तरगो । अवरित्तं < आपरम्

पुरा भनं—पुरकिम्मं, पुरत्तिमं < पौरस्त्यम्—पुरत्थ + इम = पुरत्तिमं, पुरत्थ के स्थान पर पुरच्छ होने से पुरकिम्मं रूप बनता है । अन्ते भवं—अन्तिमं—अन्त + इम = अन्तिमं ।

उपरि भनं—उवरित्तं—उवर + इत्थ = उवरित्तं < उपरित्तं; उपरि + इम = उपरिमं ।

भंडारे अहिगडो—भाण्डारिप < भाण्डारिः—भाण्डार + इयण् (इय) = भाण्डारिप ।

स्वार्थिक

(३७) स्वार्थ बतलाने के लिए अण्, इक्, इय्, इज्जन्, इय, इयण्, इम, इल्ल, क और मेत्त प्रत्यय होते हैं ।

जायमेत्तं, जायमिधं < जातमात्रम्—जाय + मेत्त = जायमेत्तं—एको इत्य होने से जायमिधं रूप बनता है ।

णियद्विउरा < निवृत्तिमत्ता—णियउ + इत्थ = नियद्विउल धीलिङ्गवाजी वा प्रत्यय जोड़ने से नियद्विउरा । उत्तर + इत्तं = उत्तरित्तं < गोपरेयन्, आग + इत्त + इय = आगिद्विउयं < आगोत्तरकम्; उ + य = छय, उ + छलं < पट्ठम् ।

(३८) पोष शब्द से उत्पन्न और पक्ष तथा मुक्क शब्द से स्वार्थिक इत्थग प्रत्यय होता है । यथा—

पोष + उत्त = पोपुल्लओ < पोषकः, पक्ष + इत्थग = पक्षेत्थगो < पक्षकः ;
मुक्क + इत्थग = मुक्केत्थगो < मुक्कयः ।

(३९) लोभादि शब्दों से स्वार्थिक चा प्रत्यय होता है और चा के स्थान पर विकल्प से या हो जाता है । यथा—

गवेसग + चा = गवेसगचा < गवेपणिङ्ग; लोभ + चा = लोभचा, लोभया < लोभन्; सीछ + चा = सीछचा, सीछया < सीछन्; लीण + चा = लीणचा, लीणया < लीणन्; अणुकंपण + चा = अणुकंपणचा, अणुकंपणया < अनुकम्पनन्; दुक्खण + चा = दुक्खणचा, दुक्खणया < दुक्खन्; छिप्पण + चा = छिप्पणचा, छिप्पणया < छिप्पनन्; विट्ठण + चा = विट्ठणचा, विट्ठणया < विट्ठनन् ।

मड + इत्थि = मडत्थिओ < मृतकः — यहाँ ड का लोप हुआ है और विभक्ति का ओ चिह्न जोड़ दिया है ।

(४०) पढस शब्द से स्वार्थ में डल्ल प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

पढस + डल्ल = पढमिट्ठु < प्रथमकः

(४१) एग (एऊ) शब्द से स्वार्थ में णगि, इणिय, इय प्रत्यय होते हैं ।

एग + णगि = एगामी < एकाकी, एग + अणिय = एगाणिप, एगाणिपु; एक + इय—एक्किया—क को द्वित्व हुआ है ।

(४२) नीसोहि शब्द से स्वार्थ में क प्रत्यय होता है । यथा—

नीसोहि + क = निसोहिगा, क के स्थान पर य होने से निसोहिया < निसोधिक, नैपेधिकी वा ।

(४३) अपेक्षा कृत अतिशय—त्रिशिष्ट अर्थ बतलाने के लिए तर प्रत्यय होता है । यथा—अइसएण तुच्छं—तुच्छतरं

(४४) तर के स्थान पर तराय आदेश होता है । यथा—बहुतराय, अप्पतराय

(४५) धम्मादि शब्दों को अतिशय अर्थ बतलाने के लिए इट्ठ प्रत्यय होता है । यथा—अइसएण धम्मी—धम्मिट्ठो < धर्मिष्ठः, अइसएण अधम्मी—अइमिट्ठो < अधर्मिष्ठः ।

(४६) धेर, धीर, पिय शब्दों से अतिशय अर्थ प्रकट करने के लिए इज्ज प्रत्यय होता है और धेर के स्थान पर य, धीर के स्थान पर च और पिय के स्थान पर प आदेश होते हैं । यथा—

धेर + इज्ज—य + इज्ज = येज्ज < स्थैर्यम्

धीर + इज्ज—ध + इज्ज = धेज्ज < धैर्यम्

पिय + इज्ज—प + इज्ज = पेज्ज < प्रियतरम्

(४७) यद्धति और करोति अर्थ में इय और क प्रत्यय होते हैं तथा अर्जकार शब्द में विकल्प से आदि स्वर की वृद्धि होती है । यथा—

अभितेकमर्हति—अभिसिक्को—अभितेक+क = अभिसिक्क < अभिविभ्यः; अलं-
कारं करोइ च्ति—अलंकार + इय = अलंकारिण, अलंकारिण < अलंकार्यः; पत्तिणं करोइ
च्ति—पासणिण < प्रादिनकः ।

अनेकार्थक प्रत्यय

(४८) नृत्तोर्यान्त से निवृत्त, ष्ठीत, चरति, व्यवहरति और जीरित अर्थ में इत्ता,
इय, इम, आउ, इल और अ प्रत्यय होते हैं । यथा—

अबोधगमेन निवृत्ता—अबोधगम + इत्ता = अबोधगमिया (त के स्थान
पर य हुआ है) < आभ्युपगमिकी; अहिगरण + इत्ता—या + अहिगरणिया < आधि-
करणिकी; दण्डेण निवृत्तं दण्डितं—दण्ड + इय = दण्डियं < दण्डिमन्; सवेण कीर्यं—
सत्तिथं; सइयं—सत + इय = सत्तिथं, तकार का छोप होने पर सइयं < सतरम् ।

णाएणं व्यवहरति—नेयाउओ, नेयाइयो < नेयायिकः ।

तेह्लेणं जीवइ—तेह्लिओ—तेह्ल + ह्लिअ = तेह्लिओ < तेह्लिकः ।

आहारयणं खवरइ = आहारायणियं < यथारात्रिमन्; तेयदियं < तैजोहितम् ।

चन्नुणा णिणिहज्जइ—चन्नुसं < चाधुपम् ।

अस्तिणिण पुणमासी—आसोई, अस्तोई < अचिनी; असाओ < आपाओ,
कत्तिवा < कात्तिओ, जेट्टाम्वा < जेट्टान्ओ, कग्गुणी < कात्तुणी, विसाही < वैसाही,
मगसिरा < मार्गशीर्षा, साविट्ठी < आविष्टा, पोडवती < प्रौष्ठपत्ती, पोसी < पौषी, माही <
माषी, चेती < चैती ।

आसोइ पुणमासी अस्ति मार्समि—आसोओ मासो—असोइ + मण् =
आसोओ मासो < आचिनी मासः; वातेग डबइयं—वालीणं, वार्डणं—वात + इन =
वासीर्जं, वार्डणं—तकार का छोप होने पर ।

पसंगाओ आगयं—पासद्वियं < प्रासंगिकम् । पारितोसियं < पारितोषिकम् ।

(४९) पाई शब्द से अवार्थ में ण प्रत्यय होता है । यथा—

पाई + ण = पाईणं, पाशीणं < प्राचीनम्

(५०) पहादि सप्तम्यन्त शब्दों से साधु अर्थ में एज्जण् प्रत्यय होता है । यथा—
येइ साहू—पादेज्जं < पादेयः ।

(५१) सप्तम्यन्त पात शब्द से इल्ल प्रत्यय होता है । यथा—

पात + इल्ल—पासिल्लओ < पारिवलः ।

(५२) वहि शब्द को अण् प्रत्यय के पदे म और र का आगम होता है ।

तथा—

पहि + अ = वहिमं, वहिरं < वाहम् ।

(५३) मज्झ शब्द से म और इल्ल प्रत्यय होते हैं । यथा—

मज्झमं, मज्झिमं, मज्झिहल्लं < मध्यमम् ।

मतुषर्थक प्रत्यय

(५४) हिन्दो में जो अर्थ वान् या वाला आदि प्रत्ययों के द्वारा सूचित किया जाता है, अर्धमागधी में बहु अर्थ मन्त, न्त, इण् आदि प्रत्ययों से । मन्त प्रत्यय जोड़ते समय म के स्थान पर विकल्प से व आदेश होता है । यथा—

वण्ण + मन्त = वण्णवन्तो—विकल्प से व का छोप न् का अनुस्वार होने से वण्णवन् < वण्णवान् रूप धरनेगा ।

भग + मन्तो = भगवन्तो, भगवन् < भगवान्; वीह + मन्तो = वीहमन्तो < वीचिमान्; जाति + मन्तो = जातिमन्तो < जातिमान्; तिसूत्रो इमस्य अस्थि—तिसूत्रिओ—तिसूत्र + इय = तिसूत्रिओ < तिसूत्रिकः, गंडी अस्थि अस्ति—गंडिओ—गंडि + छ = गंडिओ < गन्धिमान्; माया अस्थि इमस्स—माइछो—माया + इछ-यकार का छोप = माइछो < मायायी; ऋतुगा अस्थि इमस्स—कलुणो < कदगः; धाउस + न्त—भाउसन्तो < आयुष्मान् ।

गो + मन्त—गोमो, गोमिणी—मन्त प्रत्यय के रजान पर मी और मिणी आदेश होता है ।

जस + मन्त—जसवन्तो, जसमन्तो < यशस्वीन्

आयार + मन्त—आयारवन्तो, आयारमन्तो < माचारवान्; णसि + मन्त = णसिवन्तो, णइयं < जातिवान्; वुसि + मन्त = वुसिमन्तो < उशी ।

जय + इण—जइणो < जयी; दोसि + वुणो = दोसिणो < दोषी; वरहि + इण = वरहिणो < बर्ही; किमि + ण = किमिणो < इमिमान्; पंक + मन्त—पङ्गलिङ्गविवक्षा में आकारान्त आदेश और म के स्थान पर न, न का छोप तथा णीप् प्रत्यय होने से पङ्कावती रूप चलता है ।

(५५) गन्ध, तुन्द आदि शब्दों से इछ प्रत्यय होता है । यथा—

गन्ध + इछ = गन्धिओ, तुन्द + इछ = तुन्दिओ < तुन्दिकः ।

(५६) जडा शब्द को इछ प्रत्यय होने से प्रत्यय सहित विकल्प से जडुल और जडियाल का निपातन होता है । यथा—

जडा + इछ = जडुलो, जडियालो, जडिलो < जडिलः ।

(५७) रय शब्द से विकल्प से रसल प्रत्यय होता है । यथा—

रय + रसल = रयस्वल, रइल—विकल्प से इछ प्रत्यय होने पर; < रजस्वला ।

(५८) पम्हादि शब्दों से मतुषर्थ में विकल्प से छ प्रत्यय होता है । यथा—

पम्ह + छ = पम्हुओ < पम्हलः, पत्त + छ = पत्तलो < पत्रलः, तणु + छ =

तणुओ < तनुलः ।

(५९) दया आदि शब्दों से मतुवर्थ में आलु प्रत्यय होता है । यथा—
दया + आलु = दयालु < दयालुः ; वीरारण + आलु = वीरारणालु—विनाशीकः ।

(६०) मतुवर्थ के रज्जा शब्द से उ प्रत्यय होता है ।

रज्जा + उ = रज्जु < रज्जालुः ।

(६१) मतुवर्थ में जसादि शब्दों से अंसी और स्सी प्रत्यय होते हैं । यथा—

जस + अंसी = जसंसी, जस + स्पी = जसस्सी < यशस्वी, तेय + अंसी = तेयंसी,
तेयस्सी < तेजस्वी; वषंसी, वषस्सी < वर्षस्वी ; ओयंसी, ओयस्पी < ओजस्वी ।

भावार्थ तथा कर्मार्थ

(६२) किसी शब्द से भावराचक संज्ञा बनाने के लिये अर्थमागधी में च और तण प्रत्यय होते हैं । यथा—

अपर + च = अपरत्तं < अपरत्वम् ; उत्सुग + च = उत्सुगतं < उत्सुगत्वम्,
अंध + तण = अंधत्तणं < आन्ध्रत्वम्, सीय + तण = सीयत्तणं < तृतीयत्वम्, पट्ट + तण
= पट्टत्तणं < प्रसुत्रम्, अंध + तण = अंधत्तणं < अन्धत्वम् ।

(६३) भाव अर्थ में ता, अद् और इयन् प्रत्यय भी होते हैं । जैसे—अरि +
ता = अरिता < अरिता ।

उष्णलवण + ता = उष्णलवणता < उष्णलवणदृष्टा ।

आहातद्विषं, आहातद्विषं < याधातधिरम्—इयन् प्रत्यय हुआ है ।

अहातर्ह < यथातधम्—अद् प्रत्यय हुआ है ।

(६४) जडादि शब्दों से भाव अर्थ में इण प्रत्यय होता है । यथा—

जडा + इण = जडिणो < जडत्वम् ; णग + इण = णगिणो, णिगिणो < नग्नत्वम् ।

मुंड + इण = मुंडिणो < मुण्डत्वम् ; संघाउ + इण = संघाडिणो < संघाटत्वम् ।

(६५) इस्तरादि शब्दों से भाव अर्थ में इय प्रत्यय होता है ।

इस्तर + इय = इस्तरियं < ऐश्वर्यम् ।

अज्जअ + इय = अज्जअविथं < धार्ज्वम् ;

सामग्ग + इय = सामगियं <

सामग्र्यम् ।

अप्पायहु + क + अप्पायहुगं, अप्पायहुकं, अप्पायहुयं, अप्परवहुत्तं < अल्पपदुत्वम् ।

(भावार्थ में क प्रत्यय हुआ है ।)

(६६) उवमादि शब्दों से भाव अर्थ में अण् प्रत्यय होता है । यथा—

उवमा + अण् = ओरम्मं < औपम्यम् ;

आद्विकं < आधिस्यम्, दोदग्गं < दौर्भाग्यम्, सोदग्गं < सोभाग्यम्, तेउरकं <

त्रैलोक्यम्, तेओवकं < त्रैलोक्यम् ।

जुगण् + अण् = जुगण्, जोगण्, जोगण्, जोगण् + औगण्—वर्ण के आकार को ह्रस्व और च को विरूप से दित्य हुआ है।

दूय + अण् = दोच्चं < दौत्यम्—य के स्थान पर च आदेश हुआ है।

अहावर्चं < यावावर्चम्, वेयावर्चं < वैवावर्चम्।

विवावर्च + हण् = वेवावर्चं < वैवावर्चम्।

फलुण् + अण् = फोलुणं < फालुणम्।

सइ + अण् = साइलं, साफलं < साफलम्।

सुडुमार + अण् = सोडुमारं < सोडुमार्यम्—सुडुमार के स्थान पर सुडुमार आदेश होता है।

विवारार्थक और सूत्रार्थक प्रत्यय

(६०) विवारार्थ में प्रधानरूप से अण् और मय प्रत्यय होते हैं। यथा—

अधो + मय = अधोमयम्, फलिह + मय = फलिहमयं < स्फटिहमयम्; धमो + मय = धमोमयं < वधोमयम्।

वै + मय = वैमयं < पादमयम्; रथ + मय = रथामयं, रथमयं < रजतमयं—विकल्प से भकार आदेश हुआ है।

(६८) संख्यावाचक शब्दों में पूर्ण अर्थ में य प्रत्यय होता है। यथा—

सप्त + य = सप्तयं < सप्तमम्, अष्ट + य = अष्टयं < अष्टमम्, नव + य = नवयं, शतारस + य = शतारसयं < शतारसम्, वीतय + य = वीतयं < विषतिमम्।

(६९) तु और ति शब्दों से ह्य, त्रि और त्रिष्य होते हैं। यथा—

वि + ह्य = विहयं, त्रि + त्रिष्य = त्रिष्यं,

वित्तिजं, दोच्चं < द्वितीयम्—य के स्थान पर च आदेश।

वि + ह्य = त्रिष्यं, त्रिष्यं, त्रिष्यं, त्रिष्यं—तृतीयम्।

(७०) छ शब्द से पूर्ण में छ प्रत्यय होता है। यथा—

छ + छ = छछं < पछम्।

(७१) षु शब्द से पूर्ण में षु प्रत्यय होता है। यथा—

चतु + षु = चतुष्यं, चतु + षु = चतुष्यं < चतुष्यम्।

(७२) कदि शब्दों से निर्धारण अर्थ में क् प्रत्यय होता है। यथा—

क + क् = ककरो < कक्तर, एगकरो < एक्तर, अन्नकरो < अन्नक्तरः।

षडु + सो = षडुसो < षडुशः।

कम + सो = कमसो < कमशः पगाम + सो = पगामसो < पगामशः, एगन्त + सो = एगन्तसो < एगन्तशः। कुंभ + सो = कुंभसो < कुंभशः। एक्क + सि = एक्कसि < एक्कशः। एगय + तो = एगयतो, एगयतो < एक्कशः।

द्वय + ओ = द्वयो, द्वयतो = द्वयतः, पिठो, पिठतो < पृष्ठत, कम्म + तो = कम्मओ, कम्मतो < कम्मतः ।

अत्थ + तो = अत्थतो, अत्थओ < अर्थत ।

धम्म + तो = धम्मतो, धम्मओ < धर्मतः ; दुह + तो = दुहओ, दुहतो < द्विषा ।

(७३) संख्यावाचक शब्दों से धारंवार अर्थ चलाने के लिए क्युत्तो प्रत्यय होता है । यथा—

दु + क्युत्तो < द्विष्टयः ; ति + क्युत्तो = निर्युत्तो < त्रिकृतयः ; सहस्त + क्युत्तो = सहस्तस्युत्तो < सहस्रमृतयः ; अर्णत + क्युत्तो = अर्णतस्युत्तो < शतस्युत्तयः ।

स्ति—एकस्ति < पुरुषः ।

(७४) प्रकार अर्थ में हा प्रत्यय होता है । यथा—

सव्य + हा = सव्यहा < सर्वथा ; अण्ण + हा = अण्णहा < अन्वया ;

अह + हा = अहहा < अर्था ; ज + हा = जहा < यथा ; त + हा = तहा < तथा ।

(७५) ज और त शब्दों से ह और हं प्रत्यय होते हैं । यथा—

ज + ह = जह, ज + हं = जहं < यथा ; त + ह = तह, त + हं = तहं < तथा ।

(७६) प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है । यथा—

त + धा = तथा < तथा ।

(७७) इयर शब्द से प्रकार अर्थ में इहरा शब्द का विस्मय से निपातन होता

है । यथा—

इहरा, इयहा < इतरथा ।

(७८) प्रकार अर्थ में क शब्द से लह, अहं, इह और इण्णा प्रत्यय होते हैं ।

यथा—

क + लह = लह, क + अहं = अहं, क + इह = इह, क + इण्णा = इण्णा <

कथम् ।

(७९) इहं शब्द से प्रकार अर्थ में एहं का निपातन होता है । यथा—

इहं—एहं, इहं < इहम् ।

(८०) एह शब्द से च प्रत्यय होता है । यथा—एह + च = एमच ।

(८१) इन शब्द से एव प्रत्यय होता है । यथा—

इम + एव = इहव—इम के स्थान पर इ आदेश ।

इम + एव = एतव—इम के स्थान पर ए आदेश ।

इम + एव = इयरव < इतरा—इम के स्थान पर इयर आदेश ।

इम + ह = इहव—मकार का लोप ।

इम + हं = इहं—,, ”

द्वय + ओ = द्वयो, द्वयतो = द्वयतः, विद्वयो, विद्वतो < वृष्ट, कम्म + तो = कम्मओ, कम्मतो < कर्मतः ।

अत्य + तो = अत्यतो, अत्ययो < अर्थतः ।

धम्म + तो = धम्मतो, धम्मओ < धर्मतः ; दुह + तो = दुहयो, दुहतो < द्विधा ।

(७३) संख्यावाचक शब्दों से यारंवार अर्थ यतनाने के लिए क्खुत्तो प्रत्यय होता है । यथा—

दु + क्खुत्तो < द्विद्वयः, ति + क्खुत्तो = तिस्रुत्तो < त्रिद्वयः ; सदस्स + क्खुत्तो = सदस्सक्खुत्तो < सहस्रद्वयः ; अणंत + क्खुत्तो = अणंतक्खुत्तो < अनन्तद्वयः ।

स्सि—एकस्सि < एकरः ।

(७४) प्रकार अर्थ में हा प्रत्यय होता है । यथा—

सव्व + हा = सव्वहा < सर्वथा ; अण्ण + हा = अण्णहा < अन्यथा ,

अट्ठ + हा = अट्ठहा < अष्टथा ; ज + हा = जहा < यथा ; त + हा = तहा < तथा ।

(७५) ज और त शब्दों से ह और हं प्रत्यय होते हैं । यथा—

ज + ह = जह, ज + हं = जहं < यथा ; त + ह = तह, त + हं = तहं < तथा ।

(७६) प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है । यथा—

त + धा = तधा < तथा ।

(७७) इयर शब्द से प्रकार अर्थ में इहरा शब्द का विस्मरण से निपातन होता है । यथा—

इहरा, इयरहा < इतरथा ।

(७८) प्रकार अर्थ में क शब्द से अह, अहं, इह और इण्णा प्रत्यय होते हैं । यथा—

क + अह = कह, क + अहं = कहं, क + इह = किह, क + इण्णा = किण्णा < कथम् ।

(७९) इहं शब्द से प्रकार अर्थ में एत्थं का निपातन होता है । यथा—

इहं—एत्थं, इत्थं < इत्थम् ।

(८०) एउ शब्द से च प्रत्यय होता है । यथा—एउ + च = एउच ।

(८१) इन शब्द से त्थ प्रत्यय होता है । यथा—

इम + त्थ = इत्थ—इम के स्थान पर इ आदेश ।

इम + त्थ = एत्थ—इम के स्थान पर ए आदेश ।

इम + त्थ = इयरत्थ < इतरत्थ—इम के स्थान पर इयर आदेश ।

इम + ह = इहव—मकार का लोप ।

इम + हं = इहं—, ,

धातुप्रत्यय

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ	न्ति
म० पु०	सि	द्
उ० पु०	मि	मो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्तइ, हिइ	स्तन्ति, हिनति
म० पु०	रससि, हिसि	रसद्, हिद्
उ० पु०	स्तामि, हामि	स्वामो, हामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में ईत्तु प्रत्यय होता है । महाराष्ट्री में इसका अभाव है ।

विध्यर्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इज्ज, एज्ज, इज्जा, एज्जा, ए	इज्ज, एज्ज इज्जा, एज्जा, ए
म० पु०	इज्ज, एज्ज, एज्जासि	इज्ज, एज्ज, एज्जाह
उ० पु०	इज्ज, एज्ज, एज्जामि	इज्ज, एज्ज, एज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	उन्तु
म० पु०	हि	ह, एइ
उ० पु०	मि	मो

कर्मणि में इज्ज प्रत्यय और प्रेरणा में आवि प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर धातु प्रत्यय जोड़ने से कर्मणि और प्रेरणा के रूप होते हैं ।

गच्छ—गमन करना

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छइ	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छद्
उ० पु०	गच्छामि	गच्छामो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिस्सद्, गच्छिद्दिद्	गच्छिस्सन्ति, गच्छिद्दिन्ति
म० पु०	गच्छिस्ससि, गच्छिद्दिमि	गच्छिस्समद्, गच्छिद्दिद्
उ० पु०	गच्छिस्सामि, गच्छिद्दामि	गच्छिस्सामो, गच्छिद्दामा

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिन्	गच्छिन्
म० पु०	गच्छिन्	गच्छिन्
उ० पु०	गच्छिन्	गच्छिन्

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिन्, गच्छेज् (जा) गच्छे	गच्छिन्, गच्छेज् (जा) गच्छे
म० पु०	गच्छिन्, गच्छेज् (जा) गच्छे, गच्छेज्जामि	गच्छिन्, गच्छेज् (जा) गच्छे, गच्छेज्जामि
उ० पु०	गच्छिन्, गच्छेज् (जा) गच्छे, गच्छेज्जामि	गच्छिन्, गच्छेज् (जा) गच्छे, गच्छेज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छत	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छताहि, गच्छत	गच्छद्, गच्छेद्
उ० पु०	गच्छतामि	गच्छामो

कर्मणि रूप

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिज्	गच्छिजन्ति
म० पु०	गच्छिजसि	गच्छिज्यद्
उ० पु०	गच्छिज्यामि	गच्छिज्यामो

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	गच्छिजिस्सइ, गच्छिजिहिइ	गच्छिजिस्सन्ति, गच्छिजिहन्ति
म० पु०	गच्छिजिस्ससि, गच्छिजिहिसि	गच्छिजिस्सइ, गच्छिजिहिइ
उ० पु०	गच्छिजिस्सामि, गच्छिजिहामि	गच्छिजिस्सामो, गच्छिजिहामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी वचन और सभी पुरुषों में गच्छिजिस्सु रूप बनता है ।

विधि

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	गच्छिज्जे, गच्छिज्जे (ज्जा)	गच्छिज्जि, गच्छिज्जे (ज्जा)
	गच्छिज्जे	गच्छिज्जे
म० पु०	गच्छिज्जि, गच्छिज्जे (ज्जा)	गच्छिज्जि, गच्छिज्जे (ज्जा)
	गच्छिज्जेज्जसि	गच्छिज्जेज्जाइ
उ० पु०	गच्छिज्जि, गच्छिज्जे (ज्जा)	गच्छिज्जि, गच्छिज्जे
	गच्छिज्जेज्जामि	गच्छिज्जेज्जामो

आज्ञा

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	गच्छिज्जउ	गच्छिज्जन्तु
म० पु०	गच्छिज्जाहि, गच्छिज्ज	गच्छिज्जइ, गच्छिज्जेइ
उ० पु०	गच्छिज्जामि	गच्छिज्जामो

प्रेरणार्थक

वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	गच्छावेइ	गच्छावेन्ति, गच्छावेन्ति
म० पु०	गच्छावेसि	गच्छावेइ
उ० पु०	गच्छावेमि	गच्छावेमो

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	गच्छाविस्सइ, गच्छाविहिइ	गच्छाविस्सन्ति, गच्छाविहन्ति
म० पु०	गच्छाविस्समि, गच्छाविहिसि	गच्छाविस्सइ, गच्छाविहिइ
उ० पु०	गच्छाविस्सामि, गच्छाविहामि	गच्छाविस्सामो, गच्छाविहामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में गच्छादिभ्यो रूप होता है ।

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छायेज्, गच्छायेजा गच्छाविज्, गच्छाविजा	गच्छायेज्, गच्छाविज् गच्छायेजा, गच्छाविजा
म० पु०	गच्छायेज्, गच्छाविज् गच्छायेजा, गच्छाविजा गच्छायेज्यासि	गच्छायेज्, गच्छाविज् गच्छायेजा, गच्छाविजा गच्छायेजाद्
उ० पु०	गच्छायेज्, गच्छाविज् गच्छायेजा, गच्छाविजा गच्छायेज्यामि	गच्छाविज्, गच्छायेज् गच्छाविजा, गच्छायेजा गच्छायेज्यामी

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छायेड	गच्छाविन्तु, गच्छायेन्तु
म० पु०	गच्छायेहि	गच्छायेद्
उ० पु०	गच्छायेमि	गच्छायेमो

अस—सत्ता

वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
अस्ति	अस्ति
सि	इ
आसि, मि	मी

आज्ञा में सभी पुरुष और सभी वचनों में अस्तु और भूतकाल में प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के सभी वचनों में आसि और आसी तथा उत्तम पुरुष के एक वचन में आसि, आसी और बहुवचन में आसिमी रूप होते हैं ।

कुछ धातुरूपों का संकेत

धातु	अर्थ	कर्त्तरिरूप	कर्मणि	द्रेणा
अच्छ	बैठना	अच्छद्	अच्छिज्	अच्छारेद्
अण	जानना, आवाज करना	अणद्	अणिज्	आणायेद्
आ + अण	उच्छ्वास ग्रहण करना	आणमद्	आगमिज्	आगमायेद्

अय	गमन करना	अयइ	अइजइ	आयावेइ
उव + अय	उपासना करना	उवायइ	उवाइजइ	उआयावेइ
इ	गमन करना	इइ	इजइ	इभावेइ
अइ + इ	उल्लंघन करना	अईति	अईजइ	अईवेइ
उव + इ	उदय होना	उवेइ	उविजइ	उवावेइ
प + इ	परलोक गमन	पेचइ	पेचिजइ	पेचावेइ
पति + इ	विश्वास करना	पत्तिपइ	पत्तिजइ	पत्तिआवेइ
वि + इ	व्यय करना	वेइ	वेइजइ	वेभावेइ
अहि + इ	अध्ययन करना	अहिजइ, अहीयइ	अहिजइ	अज्जावेइ
इच्छ	इच्छा करना	इच्छइ	इच्छिजइ	इच्छावेइ
पडि + इच्छ	हरीकृति करना	पडिच्छइ	पडिच्छिजइ	पडिच्छावेइ
उंच	कुटिलता करना	उंचइ	उंचिजइ	उंचावेइ
पलि + उंच	अपलाप करना	पलिउंचइ	पलिउंचिजइ	पलिउंचावेइ
उंज	योग करना	उंजइ	उंजिजइ	उंजावेइ
उय + उंज	उपयोग	उयउंजइ	उयउंजिजइ	उयउंजावेइ
वि + उंज	वियोग-वियुक्त करना	विउंजइ	विउंजिजइ	विउंजावेइ
आरण्य	सुनना	आयसइ	आयसिजइ	आयसावेइ
कप	आश्चर्य	कसइ	कसिजइ	कसावेइ
का	करना	काइ	काइजइ	कापेइ
कुण	करना	कुणइ	कुणिजइ	कुणावेइ
खा	खाना	खाइ, खायइ	खाइजइ	खावेइ
खम	सहना	खमइ	खमिजइ	खामेइ
गम	चलना	गमइ	गम्मइ	गमावेइ
आ + गम	आगमन	आगमइ	आगम्मइ	आगमावेइ
गा	गाना	गाइ	गिजइ, गीयइ	गानेइ
गिज्झ	आसक्ति	गिज्झइ	गिज्झिजइ	गिज्झावेइ
गिला	रहानि	गिलाइ	गिलाइजइ	गिलावेइ
गुर	उद्यम करना	गुरइ	गुरिजइ	गुरावेइ
ग्घा	सुंघना	जिग्घइ	घाइजइ	घावेइ
चिगिच्छ	चिरित्सा	चिगिच्छइ	चिगिच्छिजइ	चिगिच्छावेइ
चिणइ	चयन करना	चिणइ	चिजइ	चिणावेइ
उव + चिण	उपचयन	उवचिणइ	उवचिजइ	उवचिणावेइ

सम् + विज	संचय करना	संचिजइ	संचिजइ	संचिजावेइ
अंय	घोलना	अंपइ	अपिजइ	अंसावेइ
जय	जय—जीतना	जयइ	जपिजइ	जयावेइ
परा + जय	हारना	पराजयइ	पराजपिजइ	पराजयावेइ
वि + जय	विजय करना	विजइ	विजपिजइ	विजयावेइ
जहा	रक्षण करना	जहइ, जहाइ	जहाइजइ	जहावेइ
जा	जाना, उत्पन्न होना जाइ, जायइ		जाइजइ	जावेइ, जावेइ
उद् + जा	ऊपर गमन करना	उजइ	उजाइजइ	उजावेइ
पति + भा + जा	प्रत्यागमन	पचाभाइ	पचापाइजइ	पचापावेइ
जाण	अवबोध—जानना	जागाइ, जागइ	जापिजइ	जागावेइ
अभा, भिना	अपान करना	अभाइ, अभाइ	अभाइजइ	अभावेइ
ईम	काटना	ईसइ	ईतिजइ	ईसावेइ
डी	आकाश में चकना	डीइ	डीइजइ	डीमावेइ
उद् + डी	„ „	उडुइ	उडुइजइ	उडुमावेइ
दा	ढाना	दाइ	दाइजइ	दावेइ
तिप्प	दुःख देना, गुसि			
	तर्पण करना	तिप्पइ	तिप्पाइ	तिप्पावेइ
गुम	सन्तोष करना	गुसइ	गुमिजइ	गोमेइ
तस	उद्देश्य करना	तसइ	तसिजइ	तामेइ
थुण	स्मृति	थुणइ	थुमिजइ	थुणावेइ
दल	दान देना	दलइ	दलिजइ	दलावेइ
दव	धारण करना	दवइ	दविजइ	दहावेइ
सद् + दव	भ्रष्ट करना	सदइ	सदविजइ	सदहावेइ
दिस	देखना, देना	देइ	दिसिजइ	दिपावेइ
दुस	विट्ति, द्वेष	दुसइ	दुमिजइ	दुमावेइ
देव	विश्राप	देवइ	देविजइ	देसावेइ
पुन	केंपना, कम्पन	पुमइ,	पुमइ	पुगावेइ
नम	नम्र होना, प्रणमन			
	करना	नमइ, नमइ	नमिजइ	नामेइ
नस्स	नाश होना	नसइ	नासिजइ	नामेइ
ने	के जाना	नेइ	निजइ	नेमावेइ
न्हा	स्नान करना	न्हाइ	न्हाविजइ	न्हावेइ

पज	गमन करना	पज्जइ	पज्जिज्जइ	पज्जावेइ
उद् + पज	उत्पत्ति होना	उप्पज्जइ	उप्पज्जिज्जइ	उप्पज्जावेइ
णि + पज	निष्पत्ति	णिप्फज्जइ	णिप्फज्जिज्जइ	निप्फज्जावेइ
पड	पतन—गिरना	पडइ	पडिज्जइ	पादेइ
पा	पीना	पिवइ	पाइज्जइ	पजेइ
पुच्छ	पूछना	पुच्छइ	पुच्छिज्जइ	पुच्छेइ
बंध	बंधन	बंधइ	बंधिज्जइ	बंधावेइ
बीह	भयभीत होना	भीमइ	बीहिज्जइ	बीहावेइ
भव	सत्ता—होना	भवइ	भविज्जइ	भावेइ
भिद्	विदीर्ण करना	भिद्इ	भिदिज्जइ	भिदावेइ
भुंज	भोजन करना	भुंजइ	भुज्जइ	भुंजावेइ
माइ	प्रमाद करना	मादइ	मादिज्जइ	मादावेइ
मिल	मिलना	मिलइ	मिलिज्जइ	मिलावेइ
रंभ	आरंभ करना	रंभइ	रंभिज्जइ	रंभावेइ
रिम	गमन करना	रिमइ	रिइज्जइ	रियावेइ
रुद	रोना	रोवइ	रुदिज्जइ	रुदावेइ
लभ	प्राप्त करना	लभइ	लब्भइ	लाभेइ
लुण	छेदना, काटना	लुणइ	लुणिज्जइ	लुणावेइ
लुभ	खोभ करना	लुब्भइ	लुभिज्जइ	लोभेइ
सुण	सुनना	सुणेइ, सुणइ	सुण्वइ	सुणावेइ
वच्च	बोलना	वच्चइ	उच्चइ	वच्चावेइ
वह	पहुँचाना	वहइ	वुव्वइ	वहावेइ
वा	हवा चलना	वाइ	वाइज्जइ	वावेइ
सास	अनुशासन	सासइ	सासिज्जइ	सासावेइ
सिर	बनाना, निर्माण करना	सिरइ	सिरिज्जइ	सिरावेइ
सिञ्च	सीना, बाँधना	सि वइ	सिञ्चिज्जइ	सिञ्चावेइ
सीय	शोर करना, विषाद करना	सीयइ	सीइज्जइ	सीयावेइ
सुय	साना	सुवइ, सुयइ	सुइज्जइ	सुयावेइ
सुस्तुल	सेवा करना	सुस्तुमइ	सुस्तुसिज्जइ	सुस्तुसावेइ
दण	हिंसा करना	दणइ	दम्मइ	दणावेइ

कर	करना	करेइ	किन्इ, कन्इ	कारेइ, कारावेइ
अच	पूजा	अचेइ	अचिज्जइ	अचावेइ
कास	प्रकाश, चमकना	कासेइ	कासिज्जइ	कासावेइ
किलाम	बलानि करना	किलामेइ	किलामिज्जइ	किलामावेइ
तक	कल्पना करना	तकेइ	तकिज्जइ	तकावेइ
ताड	ताड़ना करना	तादेइ, ताडेइ	ताडिज्जइ	ताडावेइ, ताडावेइ
दा	देना	देइ	दिज्जइ	दावेइ
दीव	दीप्ति	दीवेइ	दीविज्जइ	दीयावेइ
धार	धारण करना	धारेइ	धारिज्जइ	धारावेइ
उस	निम्ना करना	उसेइ, उसइ	उसिज्जइ	उसावेइ
फह	फहना	फहेइ, फहइ	फहिज्जइ	फहावेइ
वि + फीर	त्रिकीर्ण करना	विक्खिरइ	विक्खीरिज्जइ	विक्खीरावेइ
किण	क्षरीदना	किणेइ, किणइ	किणिज्जइ	किणावेइ
वि + किण	वेचना	विकणेइ	विक्खणिज्जइ	विकणावेइ
खिर	भ्रमण	खिरेइ	खिप्पइ	खेवावेइ
खुभ	खुग्ध होना	खुम्भइ	खुमिज्जइ	खोमेइ
गिणह	ग्रहण करना	गेणहइ	गेणइ, गिणहइ	गिणहावेइ
चल	हल-चल करना	चलइ, चलेइ	चळिज्जइ	चाळेइ
चिट्ठ	ठहरना	चिट्ठइ	चिट्ठिज्जइ	चिट्ठावेइ
जर	जीर्ण होना	जरेइ, जरेइ	जरीज्जइ	जरावेइ
धा	धारण, पोषण	धाइ	धीयप्प	धारेइ
पास	देखना	पासेइ	पासिज्जइ	पासावेइ
भास	भाषण करना	भासइ	भासिज्जइ	भासावेइ
मन्न	समझना	मन्नेइ	मन्निज्जइ	मन्नावेइ

कृदन्त

(८७) अर्थमागधी में सम्बन्धार्थक कर्त्वा प्रत्यय के स्थान में त्ता, तु, त्ण इ, उँ, ऊण, हय, इत्ता, इत्ताणं, एत्ताणं, इत्तु, अ आदि प्रत्यय होते हैं । यथा—

इत्ता—कर + इत्ता = करित्ता, च + इत्ता = चइत्ता, पास + इत्ता = पासित्ता, विवट्ट + इत्ता = विवट्टित्ता, एभ + इत्ता = एभित्ता ।

एत्ता—कर + एत्ता = करेत्ता, पास + एत्ता = पासेत्ता ।

एत्ताणं—पास + एत्ताणं = पासेत्ताणं, कर + एत्ताणं = करेत्ताणं ।

इत्ताणं—पास + इत्ताणं = पासित्ताणं, कर + इत्ताणं = करित्ताणं, चइ + इत्ताणं = चइत्ताणं, मुँज + इत्ताणं = मुँजित्ताणं ।

इत्तु—दुह + इत्तु = दुहइत्तु, जाण + इत्तु = जाणइत्तु, वध + इत्तु = वधइत्तु ।
 चा—कि + चा = किचा, ज + चा = जचा, सो + चा = सोचा, भुज + चा =
 भोचा, वय + चा = चेचा ।

इया—परिजाण + इया = परिजाणिया, दुह + इया = दुहइया ।

हु—रु + रुहु, साह + हु = साहहु, जवह + हु = जवहहु ।

उं—सुण—सो + उं = सोउं, वड + उं = वडुं, छोड + उं = छोडुं ।

तूण—भुज + तूण = भोत्तूण, मुंज + तूण = मोत्तूण + तूण = मोत्तूण, मुत्तूण ।
 म्हु + तूण = मेत्तूण ।

ऊण—अभिवाह + ऊण = अभिवाहऊण, छम + ऊण = लद्धूण, सुण + ऊण =
 सोऊण, दुम + ऊण = छोडूण, नि + ऊण = निजिऊण; मम + ऊण = गामिऊण, निः +
 चिण + ऊण = निच्छिऊण ।

हेत्वर्थ कृदन्त

(८८) हेत्वर्थक कृदन्त के अर्थ में इत्तप, इत्तते, पुं, उं प्रत्यय होते हैं ।

इत्तए—रु + इत्तए = करित्तए, प + कर + पत्तए = पकरेत्तए, वागर + पत्तए =
 वागरित्तए, विरागरित्तए, फारवेत्तए, कारावित्तए, कारावेत्तए ।

इत्तत्ते—उवत्ताय + इत्तते = उनसमित्तते ।

तुं—वच् + तुं = वत्तुं ।

उं—वारस + उं = वास + उं = वासिउं, वरिसेउं

वर्तमानकृदन्त

वर्तमान अर्थ में प्राकृत के समान स्त और माण प्रत्यय अर्धमागधी में भी होते
 हैं । यथा—

न्त—कर + न्त = करिन्तो, करेन्तो; गाय + न्त = गायन्तो, जणय + न्त =
 जणयन्तो, समावयन्तो ।

माण—पडज + माण = पडजमाणो, विह्वाय + माण = विह्वायमाणो, चिप्प +
 माण = चिप्पमाणो, परिमिजक + माण = परिमिजकमाणो, जाय + माण = जायमाणो,
 आदिय + माण = आदियमाणो ।

(८९) ऋकारान्त धातु के त प्रत्यय के स्थान में ड होता है । यथा—

कृ + ड = कड, म + ड = मड, अभिहड, वाग्ड, संवुड, विपड, विस्थड ।

जैन महाराष्ट्री

अर्धमागधी के आगम ग्रन्थों के अतिरिक्त चरित, कथा, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल और स्तोत्र आदि विषयक प्राकृत का मिश्रण साहित्य है। इस साहित्य की भी भाषा को चैयाकरणों ने जैन महाराष्ट्री नाम देकर महाराष्ट्री और अर्धमागधी से पृथक् इस भाषा का अस्तित्व बताया है। यद्यपि काव्य और नाटकों की भाषा से यह भाषा बहुत कुछ अंशों में मिलती-जुलती है, फिर भी यह एक स्वतन्त्र भाषा है। इसका रूप महाराष्ट्री और अर्धमागधी के मिश्रण से निर्मित हुआ है। आगम ग्रन्थों पर रचे गये वृहत्तरूपभाष्य, व्यवहारसूत्रभाष्य, विधेयावश्यकभाष्य एवं निरीयचूर्ण प्रभृति टीका और भाष्य ग्रन्थों में भी इस भाषा का प्रयोग पाया जाता है। धर्मसंग्रहणो, समरादिकहा, कुवलयमाला धनुदेवहिण्डी, पञ्चमचरिय प्रभृति ग्रन्थों में भी इसी भाषा का प्रयोग हुआ है। हमें ऐसा लगता है कि काव्यों और नाटकों की भाषा से यह जैन महाराष्ट्री प्राचीन है। अर्धमागधी की भाषागत प्रवृत्तियों में थोड़ा-सा परिवर्तन होकर जैन महाराष्ट्री का विकास हुआ होगा और इसी जैन महाराष्ट्री से व्यंजन वर्णों का लोप होकर काव्य और नाटकों की महाराष्ट्री का प्रादुर्भाव हुआ है। जैन महाराष्ट्री की मूल-प्रवृत्ति अर्धमागधी से सम्बन्ध रखती है। इसमें अधिक व्यंजनों का लोप नहीं होता है। य और य जैसे मृदुल व्यंजनों का अत्यधिक स्थान प्राप्त है। अर्धमागधी और शौर-सेनी के समान इस भाषा की मूलप्रवृत्ति पर संस्कृत का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

ध्वनिपरिवर्तन सम्बन्धी जैन महाराष्ट्री की निम्न विशेषताएँ हैं :—

(१) क के स्थान में अनेक स्थलों में ग पाया जाता है। यथा—

सावग < श्रावक—क के स्थान पर ग हुआ है।

गिगर < निकरम्—अभ्यवर्तो क के स्थान पर ग।

तित्थगरो < तीर्थकरः—क के स्थान पर ग।

लोगो < लोहः— " "

आगरिसो < आरयः— " "

आगारो < आकारः— " "

उवासगो < उपासकः— " "

दगुब्बो < दुष्टम्— " "

गेदुब्ब < कन्दुब्बम्— " "

इस शब्द का विकल्प से जैन

महाराष्ट्री में कन्दुक रूप भी पाया जाता है।

(२) लस व्यंजनों के स्थान पर य भ्रुति होती है। यथा—

यहाणयं < कथानकम्—यहाँ लस क के स्थान पर य भ्रुति।

भगयया < भगवता—लस त के स्थान पर य।

चेयणा < चेतना—लुस त के स्थान पर य ।

भणियं < भणितम्—

वितायं < विपादं—लुस द के स्थान पर य ।

महारायस्स < महाराजस्य—लुस ज के स्थान पर य ।

रयथं < रजतम्—लुस ज और त के स्थान पर ण ।

पथावई < प्रजापतिः—लुस ज के स्थान पर य ।

गया < गदा—लुस द के स्थान पर य ।

कयरगहो < कचग्रहः—लुस च के स्थान पर य ।

कायमणो < काचमणिः—

छायणं < छादणम्—लुस व के स्थान पर य ।

मयणो < मदनः—लुस द के स्थान पर य ।

यह प्रवृत्ति काव्य और नाटकों की भाषा में नहीं पायी जाती है और न अर्धमागधी में सार्वत्रिक मिलती है । महाराष्ट्री में व्यन्जन्यों का छोप होने पर मात्र स्वर घोप रह जाते हैं । य भुक्ति की प्रवृत्ति जैन महाराष्ट्री का प्रमुख चिह्न है ।

(३) शब्द के आदि और मध्य में ओ ण की तरह न रह जाता है । यह प्रवृत्ति अर्धमागधी की देन है । यथा—

नाणुमयमेपसि < नानुमतमेतयोः—आदि न ज्यों का त्यों स्थित है ।

नियमोववसिहिं < नियमोपगसैः—

नियट्टीप < निट्टस्य—

नूणमेसा < नूनमेपा—

भत्तिनिभरा < भक्तिनिर्भरा—मध्य न ज्यों का त्यों स्थित है ।

अणुन्नविय < अनुज्ञाप्य—

फइमन्नया < कथमन्यथा—

अलहनिहा < अलब्धनिद्रा—

उववन्नाओ सि < उपपन्ने इति—

अन्नहा < अन्वया—

कप्पयाए < कन्यकायाः—

पडिन्नया < प्रतिपन्ना—अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है ।

नुवन्ना एसा < निषन्ना एसा—आदि और अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है ।

नुवन्नाओ < निषन्नाः—

समुप्पन्ना < समुत्पन्ना—अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है ।

उरपन्नाओ < उत्पन्नाः—

विहाहजन्नाओ < विबहवन्नाः—

(४) यथा और यावत् के स्थान में क्रमशः जहा और जाय ये तरह महा ओर धाय भी होते हैं ।

(१) कुछ पदों में समास होने पर उत्तरपद के पूर्व म् का आगम हो जाता है ।
यथा—

अन्नमन्न < अन्न + अन्न—उत्तर पद के अन्न के पूर्व मकारागम ।

एगमेग = एग + एग—उत्तर पद एग के पूर्व मकारागम ।

चित्तमाणंदियं = चित्त + आणंदियं = उत्तर पद आणंदियं के पूर्व मकारागम ।

(६) पाय, माय, तेगिच्छिग, पडुप्पण, साहि, सुहुम आदि शब्दों का पत्त, मेत्त, पेह्णत्त आदि की तरह उपयोग होता है ।

(७) मृतीया के एकवचन में अर्धमागधी के समान कहीं-कहीं सा का प्रयोग भी पाया जाता है । और प्रथमा विभक्ति के एकवचन में महाराष्ट्री के समान ओ पाया जाता है । यथा—

मन + सा = मणसा < मनसा;—जिण—जिणो ।

वय + सा = वयसा < वचसा; वीर—वीरो ।

काय + सा = कायसा < कायेन; गायम = गायमो ।

(८) आइक्खइ, कुब्बइ, सडइ, सोछइ, वोसिइ प्रभृति धातुरूप उपलब्ध होते हैं ।

(९) वस्वा प्रत्यय के रूप अर्धमागधी के था और चु प्रत्यय जोड़ने से भी बनाये जाते हैं । महाराष्ट्री तूण और ऊण भी पाये जाते हैं । यथा—

सुण + था = सो + था = सोथा < भुत्वा ।

कृ + था = कि + था = किथा < कृत्वा ।

वदितु—वदि + तु = वदितु < वदित्वा ।

आलोचि + ऊण = आलोचिऊण < आलोच ।

चवि + ऊण = चविऊण < च्युत्वा ।

सुप् + तूण = मोत् + तूण = मोत्तूण < मुवत्वा ।

(१०) स प्रत्ययान्त रूप ड में परिवर्तित दिखलायी पड़ते हैं । यथा—

कड < इत्तम्—स के स्थान पर ड ।

बावड < व्यावृत्तम्— " "

संडुड < संवृत्तम्— " "

(११) अस् धातु का सभी काल, वचन और सभी पुरुषों में अर्धमागधी के समान भासी रूप पाया जाता है । सभी कालों के बहुवचन में महाराष्ट्री के समान भदेसी रूप भी उपलब्ध होता है ।

अवशेष नियम प्राकृत के समान ही जैन महाराष्ट्री में प्रवृत्त होते हैं ।

पैशाची

पैशाची एक बहुत प्राचीन प्राकृत भाषा है। इसकी गणना पालि, अर्धमागधी और शिलाखेरीय प्राकृतों के साथ की जाती है। चीनी-तिब्बत के खरोष्टी शिलाखेरीयों में पैशाची की विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। डा० जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची पालि का एक रूप है, जो भारतीय आर्यभाषाओं के विभिन्न रूपों के साथ मिश्रित हो गयी है।

पैशाची की प्रकृति शोरसेनी है। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पञ्चाळ इन तीन भेदों में विभक्त किया है। अतः सिद्ध होता है कि पैशाची भाषा पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेशों में बोली जाती थी। अब यहाँ यह आशंका उत्पन्न होती है कि इतने दूरवर्ती इन तीनों प्रदेशों में एक ही भाषा का व्यवहार क्यों और कैसे होता था ? इसका उत्तर यह हो सकता है कि पैशाची भाषा एक जातिविशेष की भाषा थी। यह जाति जिस जिस स्थान पर गयी, उस उस स्थान पर अपनी भाषा को भी लेती गयी। अनुमान है कि यह कैकय देश में उत्पन्न हुई और बाद में उसीके समीपस्थ शूरसेन और पञ्चाळ तक फैल गयी। डा० सर जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची का आदिम स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्तान प्रांत है। यहाँ से इस भाषा का अन्यत्र विस्तार हुआ है। डा० हार्नेलि का मत है कि अनार्य लोग आर्यजाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे, वह विकृत रूप ही पैशाची भाषा का है। दूसरे देशों में जो कहा जा सकता है कि द्राविड भाषा से प्रभावित आर्यभाषा का एक रूप पैशाची प्राकृत है। पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान और काश्मीर की भाषाओं पर इसका प्रभाव आज भी दृष्टि होता है।

पारमह ने पैशाची को भूतभाषा कहा है। पिशाच नाम की एक जाति प्राचीन भारत में निवास करती थी। उसकी भाषा को पैशाची कहा गया है। पैशाची की व्याकरण सम्वन्धी निम्न विशेषताएँ हैं—

(१) पैशाची शब्दों में आदि में न रहने पर, वगों के तृतीय और चतुर्थ वर्णों के स्थान पर उसी वर्ग के क्रमशः प्रथम और द्वितीय वर्ण हो जाते हैं। यथा—

गकनं < गगनभू—ग के स्थान पर क हुआ है।

मेणो < मेघ—वर्ग के चतुर्थ वर्ण घ के स्थान पर उसी वर्ग का द्वितीय वर्ण ख हुआ है।

राजा < राजा—चर्या के तृतीय वर्ण ३ के स्थान पर उमी वर्म का प्रथम वर्ण च हुआ है ।

णिच्छरो < निष्करो—ऋ के स्थान पर ऋ ।

दसवतनो < दसवदनो < दशवदनः—मध्यवर्ती द के स्थान पर त ।

सल्लो < सल्लो < शल्लोः—भ के स्थान पर फ ।

(२) पैशाची में ङ के स्थान पर ञ आदेश होता है जैसे—

पञ्जा < प्रजा—ञ के स्थान पर ञ हुआ है ।

सञ्जा < संजा— ” ”

सर्वञ्जो < सर्वङ्गः— ” ”

विञ्जानं < विज्ञानम्— ” ”

(३) राजन् घनद के रूपों में जहाँ-जहाँ ञ रहता है, यहाँ-वहाँ ञ के स्थान में विकल्प से विञ् आदेश होता है । यथा—

राचिना छपितं, रञ्जा छपितं < राज्ञा छपितम्—विकल्प से ञ के स्थान में विञ् आदेश होने पर राचिना और निरुदगभाव में ञ के स्थान पर ञ आदेश होने से ररञ्जा रूप बना है ।

राचिजो धनं, रञ्जो धनं < राज्ञो धनम् ।

(४) पैशाची में न्य और ण्य के स्थान में ञ आदेश होता है । यथा—

कञ्जका, अभिमञ्ज् < कन्या, अभिमन्युः—न्य के स्थान पर ञ ।

कुञ्जहं < कुन्याहम्— ” ”

(५) पैशाची में णकार का नकार होता है । यथा—

गुणगणयुक्तो < गुणगणयुक्तः—सौरसेनी के ण के स्थान १। न ।

गुणेन < गुणेन— ” ”

(६) पैशाची में सरार और दसर के स्थान में सरार हो जाता है । यथा—

भगवती, पथ्वी < भगवती, पार्थी—सरार के स्थान ॥ हुआ है ।

मदनपवसो < मदनपरवशः—द के स्थान पर न आदेश हुआ है ।

सतनं < सदनम्— ” ”

सामोदरो < दामोदरः— ” ”

होतु < होदु—सौरसेनी के दु के स्थान पर तु हुआ है ।

(७) पैशाची में छ के स्थान छकार हो जाता है । यथा—

१. शी ३३ पैशाच्याम् ८।४।३०३ हे०

२. राज्ञो वा विञ् ८।४।३०४ ।

३. न्य-ण्योर्ञः ८।४।३०५ ।

४. खो नः ८।४।३०६ ।

५. ततोस्तः ८।४।३०७ ।

६. लो छः ८।४।३०८ ।

सखिळं < सखिलम्—ख के स्थान पर छ हुआ है ।

कमळं < कमलम्— " "

(८) पैशाची श और प के स्थान स आदेश होता है । यथा—

सोभति < सोभते—श के स्थान पर स हुआ है ।

सोभनं < सोभनं— " "

ससी < सशी— " "

विसमो < विषमः—मूर्धन्य प के स्थान पर स हुआ है ।

पित्तानो < विषाणः— " "

(९) पैशाची में हृदय शब्द के यकार के स्थान में पकार दो जाता है । यथा—

हितपकं < हृदयकम्—द के स्थान पर त और य के स्थान प आदेश होता है ।

(१०) पैशाची में टु के स्थान पर बिरूप से तु आदेश होता है । यथा—

वुतुम्बकं, कुटुम्बकं < वुडुम्बकम् ।

(११) पैशाची में कहो-कहीं र्य, रन और छ के स्थान में रिय, सिन और सद आदेश होते हैं । यथा—

भारिषा < भार्या—स्वरभक्ति के नियमानुसार र और य का वृधक्करण होकर इत्व हो गया है ।

सिनातं < स्नातम्— " "

कसटं < कष्टम्— " "

सनानं < स्नानम्—स्वरभक्ति के नियमानुसार स और न का वृधक्करण ।

सनेहो < स्नेहः— " "

(१२) पैशाची में यादृश, तादृश आदि के द के स्थान पर ति आदेश होता है । यथा—

यातिसो < पादृशः—द के स्थान पर ति और श को स ।

तातिसो < तादृशः— " "

भवातिसो < भवादृशः— " "

अज्जातिसो < अज्यादृशः—ज के स्थान पर ज्ज और ट को ति ।

युम्हातिसो < युप्मादृशः—प्प के स्थान पर म्हा और द के स्थान पर ति ।

अम्हातिसो < अस्मादृशः—स्म " "

(१३) पैशाची में शौरसेनी के ज के स्थान में छ आदेश होता है । यथा—

वक्कं < कक्कं < कार्यम्—शौरसेनी के ज के स्थान पर छ ।

(१४) पैशाची में शौरसेनी का मुञ्ज शब्द ज्यों का त्यों रह जाता है ।

मुञ्जो < सूर्यः—शौरसेनी में र्ज के स्थान में ज् आदेश होता है और पूरवर्ती ऊकार को ह्रस्व होने से मुञ्ज बनता है । पैशाची में भी यही रूप पाया जाता है ।

(१५) पैशाची में स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, घ, ङ, च, छ, ज, ञ और ष का छोप नहीं होता । यथा—

छोक < एक—क का छोप नहीं हुआ ।

हंगार < अंगार—ग का छोप नहीं हुआ है ।

पतिभास < प्रतिभास—प के स्थान पर फ और त का छोप नहीं हुआ ।

फरणीय < करणीय—य ज्यों का त्यों रह गया है ।

सपथ < शपथ—थ का छोप नहीं हुआ ।

(१६) पैशाची में ख, भ, और य के स्थान पर ह नहीं होता । यथा—

साखा < खाखा—ख के स्थान पर स और ख के स्थान पर ह नहीं हुआ ।

पतिभास < प्रतिभास—भ के स्थान पर ह नहीं हुआ ।

सपथ < शपथ—प के स्थान में त भो नहीं हुआ और त थ को ह ही हुआ ।

(१७) पैशाची में ट के स्थान पर ड और ठ के स्थान पर ढ नहीं होता ।

यथा—भट < भट—ट के स्थान पर ट ही रह गया है ।

मठ < मठ—ठ के स्थान पर ठ ही रह गया है ।

(१८) पैशाची में रेफ के स्थान में ल और ह के स्थान में घ नहीं होता ।

यथा—गरुड < गरुड—र के स्थान में ल नहीं हुआ ।

रेफ < रेफ—

” ”

दाह < दाह—ह के स्थान में घ नहीं हुआ ।

शब्दरूप

(१९) एकवचनी के एकवचन में आतो और आतु प्रत्यय होते हैं । यथा—

जिनातु, जिनातो ।

(२०) पैशाची में तद् और ह्रस्व सम्बन्ध में टा प्रत्यय सहित पुलिङ्ग में नेन और छोलिंग में ताप् आदिष्ट होते हैं । यथा—

नेन कतसिनानेन < तेन वृत्तस्नानेन अथवा धनेन ।

पूजितो च नाप् < पूजितश्चात्मया ।

वीर शब्द के रूप

एकवचन

बहुवचन

प० वीरो

वीरा

वी० वीरं

वीरे, वीरा

त० वीरेन, वीरेनं

वीरेदि, वीरेहि

च० वीराय, वीरस्स	वीरान; वीरानं
प० वीरावो, वीरातु	वीरावो, वीराहितो; वीरायुन्तो, वीरेहितो, वीरेयुन्तो
छ० वीरस्स	वीरान, वीरानं
स० वीरंसि, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इकारान्त इसि शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प० इसी	इसउ, इसमो, इसिनो
वी० इसिं	इसिभो, इसी
त० इसिना	इसीहि, इसीहिं
च० इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
प० इसितो, इसिस्स	इसीभो, इसीठ, इसीहिंवो, इसीसुंवो
छ० इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
स० इसिसि	इसीसु, इसीसुं

इसी प्रकार धम्मि, सुनि, पोहि और कवि आदि इकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

भानु शब्द

एकवचन	बहुवचन
प० भानू	भानुनो, भानवो, भानूभो
वी० भानुं	भानुनो, भानू
त० भानुना	भानूहि, भानूहिं
च० भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
प० भानुवो, भानुतु	भानुवो, भानूभो, भानूउ भानूहिंवो, भानुमुंतो
छ० भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
स० भानुंसि, भानुम्मि	भानूसु, भानूसुं

नपुंसकलिङ्ग के शब्दरूप शौरसेनी के समान होते हैं।

सर्वादि गण के शब्दों के रूप पञ्चमी विभक्ति एकवचन की छोड़, अवशेष रूप शौरसेनी के समान ही होते हैं। पञ्चमी विभक्ति एक वचन में अतो और अतु प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

इम इदम् शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प० अयं, इमो	इमे
वी० इमं, इलं, नं	इमे, इमा, ने, ना

त०	इमेन, इमेन, नेन	इमेहि, इमेहि, इमेहि
च०	इमस्स, अस्स, से	सि, इमेमि, इमान, इमानं
पं०	इमात्तु, इमात्तो	इमच्चो, इमात्त, इमात्तो
		इमाहित्तो, इमागुत्तो
छ०	इमस्स, अस्स, से	इमान, इमानं
स०	इमस्सि, इमस्सि, अस्सि, इत्त	इमेत्तु, इमेत्तुं

एअ < एतद्

एकवचन	बहुवचन
प० एत्त, एत्तो	एत्ते
वी० एत्तं	एत्ते, एत्ता
त० एत्तेन, एत्तिना	एत्तेहि, एत्तेहि, एत्तेहि
च० एतस्स	एत्तेसि, एत्तान
पं० एत्तात्तो, एत्तात्तु	एत्तात्त, एत्तात्तो, एत्तात्ति, एत्ताहित्तो, एत्ताहित्तो
छ० एतस्स	एत्तेसि, एत्तान
स० एत्थ, अयस्मि, एत्तस्सि	एत्तेत्तु, एत्तेत्तुं

राया < राजन्

एकवचन	बहुवचन
प० राया	रायानो, रायानो
वी० राइनं रायं	राये, राया, रायिनो, रज्जो
त० राचिना, राचिज्जा	रायहि, रायहि, रायहि
च० राचिनो, रज्जो	रायिन, रायिनं, रायान, रायानं
पं० रायात्तो, रायन्तु, राचिओ, रज्जो	राइनो, रायिओ, रायिहित्तो, रायिहुत्तो
छ० राचिनो, रज्जो	रायिन, रायिनं, रायान, रायानं
स० राचिज्जि, रज्जि	रायेत्तु, रायेत्तुं, रायिन्तु, रायिन्तुं
सं० रायं, राया, रायो	रायानो, रायानो

क्रियारूप

(२०) पैशाची में खौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों के स्थान पर ति आर ते प्रत्यय होते हैं ।

(२१) पैशाची में भविष्यत्काळ में रिस्स प्रत्यय के स्थान पर एव्य प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—हुवेय < भविष्यति ।

(२२) पैशाची में भाव और कर्म में ईअ तथा इन् के स्थान में इव्य प्रत्यय होता है ।

हस धातु—वर्तमानकाल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० हसति, हसेते	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे, हसेहरे
म० पु० हससि, हससे	हसित्वा, हसध, हसद
उ० पु० हसमि, हसेमि	हसमो, हससु, हसम

कृदन्त

कृत्वा प्रत्यय के स्थान में कृन्, कृन्तुन् और कृन् प्रत्यय होते हैं। यथा—
 पठितुन् < पठित्वा—पठ धातु में कृन् प्रत्यय जोड़ने से।
 गन्तुन् < गत्वा—गम् धातु में कृन् प्रत्यय जोड़ने से।
 नष्टुन् < नष्ट्वा—नश् धातु में कृन् प्रत्यय जोड़ने से।
 सत्तुन् < दृष्ट्वा—दृश् धातु में कृन् प्रत्यय जोड़ने से।
 नदुन् < नद्व्वा—नद् धातु में कृन् प्रत्यय जोड़ने से।
 तदुन् < दद्व्वा—दद् धातु में कृन् प्रत्यय जोड़ने से।

पैशाची के कुछ शब्द

पैशाची	संस्कृत	अभिनवपरिवर्तन
मेखो	मेखः	घ के स्थान पर ख हुआ है।
गरुन	गरुन्म्	ग के स्थान पर क।
राषा	राजा	ज के स्थान पर च।
णिच्छरो	निर्भरः	झ के स्थान पर चउ।
वसि	वसिन्म्	ड के स्थान पर ट।
दशवचनो	दशवचनः	द के स्थान पर त।
माधयो	माधवः	ध के स्थान पर य।
गोविन्दो	गोविन्दः	व के स्थान पर ल।
केसरो	केसरः	श के स्थान पर स।
सरभस	सरभस	भ के स्थान पर फ।
सल्लभो	सल्लभः	” ”
संगामो	संग्रामः	म के स्थान पर ग।
पिब	इव	इव के स्थान पर पिब आदेश।
तलुनी	तलुनी	र के स्थान पर ल।
कसट	कटम्	स्वरभक्ति के नियम से ट का वृथकरण।
सदानं	स्नानम्	” स्न का ”
स्नेहो	स्नेहः	” ” ”
भारिभ	भार्यो	” र्यो का ”

विज्जातो	विज्ञातः	ज के स्थान पर पालिके समान ज्ञ ।
सर्वज्जो	सर्वज्ञः	” ”
कज्जा	कन्या	न्य के स्थान पर ज्ञ ।
वच्चं	कार्यम्	र्य के स्थान पर च ।
दातूनं	दत्त्वा	वत्त्वा के स्थान पर तून ।
घेत्तूनं	गृहीत्वा	” ”
द्विषशकं	हृदयकम्	हृदयक के स्थान पर द्विषभकं आदेश ।

चूलिका पैशाची

यद्यपि यस्वचि आदि वैयाकरणों ने पैशाची के लक्षणों के अन्तर्गत ही चूलिका पैशाची का अनुशासन बताया है पर हेमचन्द्र और षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता पं० छद्मोदर ने इस भाषा का भी स्वतन्त्र अस्तित्व मानकर इसकी विशेषताओं का निर्देश किया है। चूलिका पैशाची के कुछ उदाहरण हेमचन्द्र के कुमारपाल और जयसिंह सूरि के हृन्मीरमर्दन नामक नाटक तथा षड्भाषा स्तोत्रों में पाये जाते हैं। यह सत्य है कि चूलिका पैशाची पैशाची का ही एक भेद है। इसमें पैशाची की अपेक्षा अधिक विशेषताएँ दृष्टिगोचर नहीं होतीं। अग्नि परिवर्तन सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) चूलिका पैशाची में र के स्थान में विकल्प से ल होता है। यथा—

गोली < गोरी—र के स्थान पर ल।

बल्लन < बालन—र के स्थान पर ल और न को व।

लुद < रुद—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का छोप और द को द्वित्व।

लावा < राजा—र को ल और ज को व।

लामो < रामो—र के स्थान पर ल।

हल्ल < हरं—र के स्थान पर ल।

(२) चूलिका पैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान पर प्रथम और द्वितीय अक्षर होते हैं। यथा—

मकनो < मार्गणः—संयुक्त रेफ का छोप और ग के स्थान में क तथा ङ को द्वित्व और ण को न।

नको < नगः—ग के स्थान पर क।

मेखो < मेघः—घ के स्थान पर ख।

बखो < व्याघ्रः—संयुक्त ङ का छोप तथा संयुक्त रेफ का छोप और घ को ख।

चीमूतो < जीमूतः—ज के स्थान में च।

छलो < क्लरः—क्ष के स्थान पर छ और रेफ को ल।

तराकं < तडाकं—ड के स्थान में ट।

टमलुको < टमरुकः—ड को ट और रु के स्थान में ल।

काढं < गाढम्—ग के स्थान में ङ।

ठम्का < ढक्का—ड के स्थान में ठ।

मवनो < मदनः—द के स्थान में त।

चामोवखो < दामोदरः—द के स्थान में त और रेफ को ल।

मधुलो < मधुरो—ध के स्थान ध और रेफ को छ ।

धाछा < धारा—ध के स्थान में ध और रेफ को छ ।

पाटपो < पाटपः—प के स्थान में प और ट को ट ।

पाछो < पाछः—च के स्थान पर प ।

छफतो < रभतः—र के स्थान पर छ और भ के स्थान पर फ ।

संफा < संभा—

”

”

फवो < भवः—भ के स्थान पर फ ।

फरुयतो < भगरुयो—भ के स्थान पर फ और ग को क ।

पनमथ < प्रणमत—ण के स्थान में न और त को थ ।

नरतत्पनेसु < नरतत्पणेसु—दर्प के स्थान पर तत्प और ण को न ।

चछदरग < चरणाम—र को छ, ण को न और संयुक्त रेफ का छोप और ग को द्विस्व ।

परातस < पकादश—द को त और श को स ।

तनुधल < तनुधर—ध के स्थान पर ध और र को छ ।

पातुवसेन < पादोस्त्रेपेण—द को त, छ के स्थान पर वल ।

पयुधा < ययुधा—य को थ ।

नमथ < नमत—त को थ ।

(३) चूळिका पैशाची में आदि अक्षरों में उक्त नियम लागू नहीं होता । यथा—

गती < गतिः—ग के स्थान पर हेमचन्द्र के मत से क नहीं हुआ ।

धम्मो < धर्मः—ध के स्थान पर ध नहीं हुआ ।

जीमूतो < जीमूतः—ज के स्थान पर घ नहीं हुआ ।

डमरको < डमरकः—ड के स्थान पर ट नहीं हुआ ।

नियोजितं < नियोजितम्—युज धातु में भी उक्त नियम नहीं लगा ।

पनो < घनः—घ के स्थान पर स नहीं हुआ ।

जनो < जनः—ज के स्थान पर घ नहीं हुआ ।

कल्लरी < कल्लरी—क के स्थान पर छ नहीं हुआ ।

(४) दान्वरूप और धातुरूप चूळिका पैशाची में पैशाची के समान ही होते हैं, परन्तु वर्षपरिवर्तन सम्बन्धी नियमों का प्रयोग कर केना आवश्यक है । यथा—

फोति < भवति—भ को फ हुआ है ।

फरते < भवते—

”

फरति < भवति—

”

फोद्व्य < भोद्व्य—

”

ग्यारहवाँ अध्याय

अपभ्रंश

प्राकृत वैयाकरणों ने अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद माना है। काव्यालंकार की टीका में नमिसाधु ने “प्राकृतमेवापभ्रंशः” (२।१२) अर्थात् शौरसेनी, मागधी आदि की तरह अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद बताया है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है “भूयांसोऽपभ्रंशाः अल्पीयांसः शब्दा इति। एतैस्त्व हि शब्दस्य बहुवोऽपभ्रंशाः। तथा गौरित्यस्य शब्दस्य गावी गोणी गोता गोपोतलिकेत्यादयो बहुवोऽपभ्रंशाः।” अर्थात् संस्कृत व्याकरण में असिद्ध शब्दों को अपभ्रंश बताया है। ढण्डी ने अपने काव्यभूषण में प्राकृत और अपभ्रंश का अलग-अलग निर्देश किया है। पतञ्जलि के भाष्यवाक्ये उपर्युक्त कथन से भी स्पष्ट है कि संस्कृत से भिन्न सभी प्राकृत भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं। उनके गावी, गोणी, गोता और गोपोतलिका आदि उदाहरण उक्त अर्थ में ही चरितार्थ हैं।

डा० हार्नलि का मत है कि आर्यों की बोलचाल की भाषाएँ भारत के आदिम निवासी अनार्य लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं, वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। सर जार्ज ग्रियर्सन प्रभृति विद्वान् डा० हार्नलि के मत को नहीं मानते। इनका मत है कि साहित्यिक प्राकृतों की व्याकरण के नियमों में आबद्ध हो जाने पर जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई, वे भाषाएँ अपभ्रंश कहलायें। अपभ्रंश भाषा का साहित्य में प्रयोग ईस्वी सन् की पाँचवी शताब्दी के पहले ही होने लगा था। अपभ्रंश भाषा के बहुत भेद हैं। प्राकृत चन्द्रिका में इसके सत्ताईस भेद बतलाये गये हैं। प्राचड, लाटी, वैदर्भी, उपनागर, नागर, यावर्, अवन्ती, पञ्जाली, टाक, मालवी, कैकयी, गौडी, कौन्तली औड़ी, पाश्चात्या, पाण्ड्या, कौन्तली, सैहली, कालिङ्गी, प्राच्य, कर्णाठी, काष्ठी, द्राविडी, गौर्जरी, साभीरी, मध्यदेशीया एवं वैतालिकी इन २७ भेदों का उल्लेख मार्कण्डेय ने भी अपने प्राकृतसर्वस्व में किया है। प्रधान रूप से अपभ्रंश को नागर, उपनागर और प्राचड इन तीन भेदों में ही विभक्त किया गया है।

१. पातञ्जल-महामायम् (प्रदीपोद्घोतसमन्वितम्) पृ० १७; सन् १६३५।

२. टाक्ष द्रुमापानागरोपनागरादिभ्योऽवधारणीयम्। तु-बहुला मालवी। वाडीबहुला पाञ्जाली। उल्लप्राया वैदर्भी। संकोचनाञ्चा लाटी। ईकारोकारबहुला ओड़ी। सवीप्सा कैकेयी। समात्ताञ्चा गौडी। दकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। गुकाञ्चा

आचार्य हेमचन्द्र ने सामान्य अपभ्रंश के नाम से अनुशासनसम्बन्धी नियम दिये हैं। अतः इस प्रकरण में भी सामान्य अपभ्रंश के अनुशासन सम्बन्धी नियम दिये जाते हैं।

(१) अपभ्रंश में अ, इ, उ, ँ और ओ॑ ये पाँच ह्रस्व स्वर और भा, ई, ऊ, ए और ओ॑ ये पाँच दीर्घ स्वर माने गये हैं। ऋ, ॠ, ऐ और औ का अभाव है।

(२) ऋ स्वर के स्थान पर अपभ्रंश में अ, इ, उ, भा, ए, और रि आदेश हो जाया है। कुछ स्थानों में ऋ ञों का र्वों भी पाया जाता है। यथा—

ऋ = अ	तणु८८८, षट्ति८८८, षडनु८८८
ऋ = आ	काणु८८८, कृत्प;
ऋ = इ	तियु८८८, विट्ति८८८
ऋ = उ	गुट्ति८८८
ऋ = ए	गेड८८८
ऋ = रि, री	रिण८८८, रिसहो८८८, रूपम; रीउ८८८

(३) ॠ के स्थान पर अपभ्रंश में इ और इलि आदेश होता है। यथा—
किणो, विलिणो८८८

(४) ऐ के स्थान पर अपभ्रंश में ँ, ए और अइ तथा औ के स्थान पर ओ, ओ॑ और अउ आदेश होते हैं। यथा—

ऐ = ँ	अवरै८८८, अपरै८८८
ऐ = ए	दैर८८८
ऐ = अइ	दइम८८८
औ = ओ॑	गौरी८८८
औ = ओ	जो८८८, यौरन
औ = अउ	पउर८८८, गउरी८८८

(५) अपभ्रंश में एड के अन्त में स्थित ञं, हुं, विं और हं का भी लघु—ह्रस्व उच्चारण होता है। यथा—

- (ऋ) अणु उ तुच्छउं ते धनदे ।
(ए) दणु घणउद यणि तरहुं ।
(ग) तणहुं तदञ्जो भंगि नरि ।

सैहमी । हियुच्छा काविङ्गी । प्राच्या तदेद्योयमापान्ना । ज (न) दृष्टिबहुता फामोरो ।
यणविषयपातु काणायो । मध्यदेद्योमा तदेद्योनाम्ना । संस्कृताम्ना च गौर्जरो । चक्रान्
पूर्वोत्तद्वद्भापाग्रहणम् । ख (त) ह्यो व्यत्ययेन पायारनम् । रेच्यत्ययेन शान्तिरो ।
डकारबहुता वैतालिकी । एषोबहुता काञ्ची ।

(६) अपभ्रंश में एक स्वर के स्थान पर प्रायः दूसरा स्वर हो जाता है^१ । यथा—

अ = इ	क्रिणिण < कृपण ।
अ = उ	मुणह < मनुजे ।
अ = ए	बेरिह < बल्ली ।
आ = अ	सीय < सीता ।
आ = उ	उल्ल < आर्द्र ।
आ = ए	देइ < दा, केइ < ला, मेत्त < मात्र ।
इ = अ	पदियत्त < प्रतिपत्ति ।
इ = ए	वेल्ह < विलय, एस्था < इत्थु ।
ई = अ	हरदइ < हरीतिकी ।
ई = आ	कम्हार < कारमीर । :
ई = ऊ	विहूण < विहीन ।
ई = ए	परिस < ईदरा । वेण < वीणा ।
ई = ऐ	छेडुभ < श्रीडा ।
उ = अ	मउड < मुकुट; बाइ < बाहु; सउमार < सुउमार ।
उ = इ	पुरिस < पुरुष ।
उ = ओ	मोँगर < मुद्गर, पोस्थय < पुस्तक, कौँसत < कुन्त ।
ऊ = ए	नेउर < नूपुर ।
ऊ = ओ	मोँल्ल < मूल्य ।
ऊ = ओ	थोर < स्थूल; तायोल < ताम्बूल ।
ए = इ, ई, ऐ	विह, छीह, केह < खेया ।

(७) अपभ्रंश में स्वादि विभक्तियों के आने पर प्रायः कभी तो प्रतिपादिक के सम्बन्ध स्वर का दीर्घ और कभी ह्रस्व हो जाता है^२ । यथा—

ढोला सामला < विट श्यामल — विट में रहनेवाले ॥ को ढोला में दीर्घ कर दिया है । सामला में भी ल को दीर्घ हुआ है ।

धण < धन्या — दीर्घ को ह्रस्व हुआ है ।

मुग्गणरेह < मुग्गणरेजा — दीर्घ को ह्रस्व हुआ है ।

विदीप < पुत्रि — स्त्रीलिङ्ग में ह्रस्व का दीर्घ हुआ है ।

पइटि < प्रविष्टा — स्त्रीलिङ्ग में दीर्घ का ह्रस्व हुआ है ।

निसिमा जग < निसिता खड्गा ॥ ”

१. स्वराणां स्वराः प्रागोपभ्रंशे नास्ति ३२६ हे० ।

२. स्यादौ दीर्घ-ह्रस्वी नास्ति ३३० ।

(८) अनुस्वारयुक्त ह्रस्व स्वर के आगे र श प स और ह हो तो ह्रस्व को दीर्घ और अनुस्वार का लोप हो जाता है । यथा—

घोस < विशति; सीह < सिंह ।

(९) अपभ्रंश में छन्द के कारण ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है । कई स्थानों पर ह्रस्व को दीर्घ न करके अनुस्वार कर देते हैं ।

ईतण < दर्शन ।

फंस < स्पर्श ।

अंसु < अभ्यु ।

व्यञ्जनविकार

सामान्यतः शब्द के आदि व्यञ्जन में विकार नहीं होता । पर ऐसे भी कुछ अपवाद हैं जिनमें आदि व्यञ्जन में परिवर्तन पाया जाता है । यथा—

विद्धि < धृति—यहाँ शब्द के आदि ध के स्थान पर द हो गया है ।

धुअ वा धुभा < दुहितः—शब्द के आदि व्यञ्जन ध के स्थान पर द हुआ है ।

यादि < जाति—शब्द के आदि में ज के स्थान पर य अपभ्रंश में प होता है ।

(१०) अपभ्रंश में पद के आदि में वर्तमान किन्तु स्वर से पर में जानेवाले और असंयुक्त क, ख, त, ध, प और फ वर्णों के स्थान में प्रायः ग, घ, द, ध, य और भ होते हैं । यथा—

विभमाणसविष्णोहगरु < प्रियमतुष्यविशोभकरम्—रु के स्थान पर ग ।

सुषिं चित्तिज्जइ माणु < सुखं चिन्त्यते मानः—ख के स्थान पर घ ।

कथिदु < कथितम्—ध के स्थान पर ध और त के स्थान पर द ।

तयथु < तपयम्—प के स्थान पर व और थ के स्थान पर ध ।

समलठ < सफलम्—फ के स्थान पर भ ।

(११) कुछ शब्दों में अपभ्रंश में दो स्वरों के बीच में स्थित र, प, ध, ध, क और भ को ह होता है । यथा—

साहा < शारा—तालव्य श के स्थान पर स और र को ह ।

पटुल < पृथुल—पकारोत्तर फ को अकार और थ के स्थान पर ह ।

अहर < अघर—घ के स्थान पर ह ।

मुत्ताहल < मुक्ताफल—संयुक्त क का लोप, त को द्वित्व और फ को ह ।

(१२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान ट के स्थान पर ड, ढ के स्थान पर ठ और प के स्थान पर थ होता है । यथा—

तड् < तट, कयड् < कपट, सुड्ड < सुभट—ट के स्थान में ड हुआ है।

मठ < मठ, पीठ < पीठ—ठ के स्थान पर ड हुआ है।

दीव < द्वीप, पात्र < पाप—प के स्थान पर व हुआ है।

(१३) अपभ्रंश में कुलशब्दों में अल्पप्राण वर्गों के स्थान पर महाप्राण वर्ण हो जाते हैं।

खेड्ड < क्रीड, खप्पर < कर्पर, नोक्खि < नवस्की—अल्पप्राण क के स्थान पर महाप्राण ख हुआ है।

भारथ < भारत, वसथि < वसति—अल्पप्राण त के स्थान पर थ हुआ है।

कंसड्ड < संशति, कासु < परशु—अल्पप्राण प के स्थान पर महाप्राण क हुआ है।

(१४) अपभ्रंश में दन्त्य व्यञ्जनों में मूर्धन्य व्यञ्जन हो जाते हैं। यथा—

पड्डिठ < पत्तिठ—त दन्त्य वर्ग के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

पडाव < पताका— ” ” और क के स्थान पर य।

गडिपाल < गन्धिपाल—य के स्थान पर ठ हुआ है।

डहह < ददति—दन्त्य द के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

खुडिय < क्षुधित—दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य ख हुआ है।

खोखह < खोलायते— ” ड के ” ”

हुक्कर < दुक्कर ” ” ”

विक्खड्ड < विदग्ध—दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य व हुआ है।

(१५) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान असंयुक्त मकार के स्थान में विकल्प से अनुनासिक वकार होता है^१। यथा—

कवैल्लु < कमलम्—म के स्थान में विकल्प से सांनुनासिक वै हुआ है।

भवैरु < भ्रमरः— ” ”

जिवै < जिम— ” ”

तिवै < तिम— ” ”

(१६) अपभ्रंश में संयोग के बाद में आनेवाके रेफ का विकल्प से लुक् होता है^२। यथा—

जइ केवैह पावोषु पिउ < यदि कयन्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्—संयुक्त रेफ का लोप हुआ है।

(१७) अपभ्रंश में कहीं-कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है^३। यथा—

१. मोञ्जुनासिको वो वा ८१४३६७। २. वापो रो लुक् ८१४३६८।

३. ममूतोऽपि क्वचित् ८१४३६९।

प्रिय < पउ—र का छोप और य को उ ।

पेम्मा < प्रेम— " "

सर < स्वर—य का छोप ।

दीय < द्वीप— " और य को व ।

(२२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान त्य के स्थान पर ख, ख्य के स्थान पर छ और य के स्थान पर ज आवेश होता है । यथा—

अघांत < अत्यन्त—त्य के स्थान पर ख ।

मिच्छत्त < मिथ्यात्य—ध्य के स्थान पर छ ।

अज्जु < अज—य के स्थान पर ज ।

(२३) अपभ्रंश में क्ष के स्थान पर ख, छ, झ, घ, क्ल और ह आदेश होते हैं । यथा—

खार < क्षार; खरग < क्षरण—क्ष के स्थान पर ख ।

छग < क्षग—प्राकृत के समान क्ष के स्थान पर छ ।

मिक्खइ < क्षीयते—क्ष के स्थान पर झ आवेश ।

कडक्ख < कटाक्ष—ट को ड और क्ष को क्स आदेश हुआ है ।

निह्वित्त < निक्षिप्त—क्ष के स्थान पर ह और संयुक्त प का छोप और त को द्वित्व ।

अपभ्रंश में वर्णोन्मेष, वर्णविपर्यय (Metathesis), वर्णछोप और स्वरभक्ति आदि भी उपलब्ध हैं ।

(२४) वर्णोन्मेष में स्वर या व्यञ्जन का आदि, मध्य और अन्त्य स्थान में आगम होता है । यथा—

इस्थी < स्त्री—स्त्री का स्थी हो जाता है और आदि में इ स्वर का आगम होजाने से इस्थी पद बनता है ।

मायु < व्यास—मध्य में र व्यञ्जन का आगम हुआ है ।

मध्य में स्वर के आगम को स्वरभक्ति (Anaptyxis) कहा जाता है । यथा—

समासण < समसान—पृथक्करण होकर मध्य में आकार का आगम हुआ है ।

सल्लइ < रत्नापते—पृथक्करण होकर अ स्वर का मध्य में आगम हुआ है ।

दीहर < दीर्घ— " " "

(२५) स्वर भक्ति का एक भेद अपनिहित्वा (Epenthesis) है, जिस शब्द के अन्त में इ, उ, ए और ओ में से कोई एक हो तो बीच में इ या उ का आगम हो जाता है तथा तृतीय स्वर भी परिवर्तित हो जाता है । यथा—

वेत्ति < वत्ति—वत्त + इ—इस स्थिति में वत्त के पहले व का आगम होने पर व + इ + वत्त + इ = वेत्ति—पूर्ववर्ती व का ज के साथ गुण हुआ है ।

अपभ्रंश में वर्णविपर्यय (Metathesis) के भी उदाहरण पाये जाते हैं ।

यथा—

हर < गृह—वर्णविपर्यय ।

रहस < हर्ष—

वर्णनिकार में समीकरण (Assimilation) और विपरी (Disassimilation) के भी उदाहरण मिलते हैं । यथा—

जुष < युक्त—य के स्थान पर ज और त के संयोग से क ध्वनि भी त में परिवर्तित है ।

रक्त < रक्त—त के संयोग से क ध्वनि त् में परिवर्तित है ।

सह < शब्द—द के संयोग से ध्वनि द में परिवर्तित है ।

अग्नि < अग्नि—ग के संयोग से न ध्वनि ग में परिवर्तित ।

सप्त < सप्तमी—प यो व और त के संयोग से न ध्वनि त में परिवर्तित ।

वर्णलोप में भी आदि, मध्य और अन्त्य वर्ण का लोप होता है । यथा—

वि < अवि—आदि स्वर का लोप (Aphaerasis)

रण < अरण्य—

पोष्कल < पूगष्कल—मध्य वर्ण का लोप (Syncope)

भविष्यत्तर्ह्य < भविष्यदुक्तया—यहाँ अक्षर लोप (Haplology) है ।

शब्दरूपावलि

(१६) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में अकारान्त शब्दों के अन्तिम अ को उ होता है । यथा—

दसमुह < दसमुखः—स को ह और ख को ह, प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिविह ।

सोसिभ-संनह < सोपित-संदरः—प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिविह ।

चतस्रह < चतुर्मुखः—द्वितीया के एकवचन में उ विभक्तिविह ।

छस्रह < पञ्चमुखः—पट् के स्थान पर छ और द्वितीया के एकवचन में उ विभक्तिविह ।

जिणु < जिनः—प्रथमा के एकवचन में उ विभक्तिविह ।

(२७) अपभ्रंश में पुंलिङ्ग में वर्तमान अकारान्त शब्दों के प्रथमा के एकवचन में विकल्प से अन्तिम अ के स्थान में ओ होता है । यथा—

जो < यः—य के स्थान पर ज और विभक्ति प्रत्यय ओ ।

सो < सः—विभक्ति प्रत्यय ओ जोड़ा गया है ।

(२८) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के पुरुषचन में अन्तिम अ के स्थान पर प हो जाता है ।^१ यथा—

पवसन्ते < प्रवसता—तृतीया के पुरुषचन में अ को प हुआ है ।

नदे < नरोन—

अपभ्रंश में तृतीया पुरुषचन में ण और अनुस्वार दोनों होते हैं । अतः तृतीया पुरुषचन में तीन रूप चलते हैं । यथा—

देवे, देवै, देवेण < देवेन ।

(२९) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अकार और छि—सप्तमी पुरुषचन के स्थान में झकार और पङ्कार होते हैं ।^२ यथा—

तलि धल्लह, तळे धल्लह < तळे क्षिपति ।

(३०) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के बहुवचन में अन्त्य अकार के स्थान में विस्वरूप से पङ्कार आदेश होता है और हि प्रत्यय जुड़ जाता है ।^३ यथा—

लक्ष्मेहि, गुणहि < लक्ष्मेः, गुणैः ।

(३१) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पञ्चमी विभक्ति के पुरुषचन में द्वे और हु प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।^४ यथा—

वच्छेद्वे गृण्हह < वृक्षात् गृह्णाति—द्वे प्रत्यय जुड़ने से ।

वच्छद्वु गृण्हह < वृक्षात् गृह्णाति—हु प्रत्यय जुड़ने से ।

(३२) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों में पञ्चमी विभक्ति के बहुवचन में हु प्रत्यय जोड़ा जाता है ।^५

यथा—गिरिसिंहहु < गिरिशिर्मेभ्यः ।

(३३) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से, पर में आनेवाले पठ्ठी के बहुवचन में सु, हो और स्सु ये तीन प्रत्यय होते हैं ।^६ यथा—

तसु < तस्य— सु प्रत्यय जोड़ा गया है ।

दुल्लहहो < दुर्लभस्य—हो , ,

सुभणस्सु < सुभनस्य—स्सु प्रत्यय जोड़ा जाता है ।

(३४) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाली पठ्ठी विभक्ति के बहुवचन में हँ प्रत्यय जोड़ा जाता है ।^७ यथा—

१. एहि ढा४।३३३ ।

२. मित्येदा ढा४।३३५ ।

५. म्यसो हुं ढा४।३३५ ।

७. मामो हँ ढा४।३३९ ।

२. हियेनेव ढा४।३३४ ।

४. डसेहँहु ढा४।३३६ ।

६. डसः सु-हो-स्सवः ढा४।३३८ ।

तणहं < तृणानाम्—तकार का ण होकर तण शब्द बना है, इसमें पछी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय जोड़ दिया गया है।

(३५) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले आम् प्रत्यय—पछी के बहुवचन में हुं और हूं दोनों आदेश होते हैं।^१ यथा—

सउणिहं < सकुनीनाम्—पछी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय होता है।

ससमी विभक्ति बहुवचन में भी हं प्रत्यय होता है। यथा—

हुहं < द्वयोः—

(३६) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पञ्चमी के एकवचन, पञ्चमी बहुवचन और सप्तमी के एकवचन में क्रमशः हे, हुं और हि आदेश होते हैं।^२ यथा—

गिरिहे < गिरेः गिरि + हे = गिरि + हे = गिरिहे।

तखे < तरोः—तख + हे = तख + हे = तखे।

तरुहं < तरुण्यः—तख + भ्यस्—तख + हुं = तरुहं।

कलिहि < कलौ—कलि + डि = कलि + हि = कलिहि।

(३७) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से तृतीया विभक्ति के एकवचन में एं, ण और अनुस्वार आदेश होते हैं।^३ यथा—

अरिगए < अरिना—अरिग + एं = अरिगए।

अरिगणं < अरिना—अरिग + णं = अरिगणं।

अरिगं < अरिना—अरिग + न् = अरिगं।

(३८) अपभ्रंश में ए, अम्, जस् और षस् विभक्तियों का लोप हो जाता है^४। यथा—

एइ ति घोडा < एते ते घोडकाः—जस् का लोप।

षासइ वग < षालयति वङ्गाम्—अम् का लोप।

अपभ्रंश में पछी विभक्ति का प्रायः लुक् हो जाता है।^५ यथा—

गय कुम्भहं दारम्भु < गजावा कुम्भान् दारयन्तम्।

(३९) अपभ्रंश में यदि किसी शब्द के सम्बोधन में जस् विभक्ति आयी हो तो उसके स्थान में हो आदेश होता है^६। यथा—

तरुणहो, तरुणहो < हे तरुणाः, हे तरुण्यः—जस् के स्थान में हो आदेश हुआ है।

१. हुं चेदुत्तम्याम् वा०१३४०।

२. इति-भ्यस्-डिना हे-हं-ह्यः वा०१३४१।

३. एं चेदुत्तः वा०१३४२।

४. स्पृजस्-डिना लुक् वा०१३४४।

५. पछ्याः वा०१३४५।

६. भामह्ये जसो होः वा०१३४६।

अपभ्रंश में भिस् और सुप् के स्थान में हि आदेश होता है^१। यथा—
गुणहि < गुणैः, मार्गेहि तिहि < मार्गेषु त्रिषु ।

(४०) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में उ और ओ आदेश होते हैं^२। यथा—

अंगुलिउ < अङ्गुल्यः—यहाँ जस् के स्थान में उ हुआ है ।

सर्वगाउ < सर्वाङ्गी—रहाँ शस् के स्थान में उ हुआ है ।

विलासिणीओ < विलासिनीः—शस् के स्थान पर ओ हुआ है ।

(४१) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले टस् (पष्ठी एकवचन) और ढस् (पञ्चमी एकवचन) के स्थान में हे आदेश होता है^३। यथा—

मज्झहे < मज्झयायाः—पञ्चमी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है ।

सहे < तस्याः—पष्ठी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है ।

धणहे < धन्यायाः—पञ्चमी के एकवचन में हे आदेश ।

वाळहे < वालायाः— ” ”

(४२) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में भ्यस् (पञ्चमी बहुवचन) में और भास् (पष्ठी बहुवचन) के स्थान में हु आदेश होता है^४। यथा—

वयसिअहु < वयस्याभ्यः; अथवा वयस्याभास्—हु प्रत्यय हुआ है ।

अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में सप्तमी एकवचन में हि आदेश होता है^५। यथा—
महिहि < मह्याम् ।

(४३) अपभ्रंश में नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में हं आदेश होता है^६। यथा—

कमळहं < कमलानि ।

(४४) अपभ्रंश में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान वान्त—जिसके वान्त में अ सहित क हो, शब्दों से पर में आनेवाले प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में उ आदेश होता है^७। यथा—

कुळउउ < कुळउउम्; भग्गउउ < भग्नवम् ।

(४५) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों की पञ्चमी के एकवचन में हाँ आदेश होता है^८। यथा—

१ भिस्सुपोहि ण।४।३४७ ।

२ त्रियां जस्-शसोक्तोत् ण।४।३४८ ।

३ उस्-उस्योहं ण।४।३४९ ।

४ म्यसामोहं ण।४।३५१ ।

५ डेहि ण।४।३५२ ।

६ क्लीवे जस्-शसोरि ण।४।३५३ ।

७ कान्तस्यात् उ स्योः ण।४।३५४ ।

८ सबदिउयेहाँ ण।४।३५५ ।

जहां होस्तउ आगदो, तहां होस्तउ आगदो < यस्मात् भवान् आगतः, तस्मात् भवान् आगतः ।

कहां < कस्मात् ।

(४६) अपभ्रंश में अकारान्त क (किम्) शब्द हो पञ्चमी के एकवचन में इहे आदेश होता है और क के अकार का छोप होता है^१ । यथा—

किहे < कस्मात् ; कहां < कस्मात् ।

(४७) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों से सप्तमी के एकवचन में छि के स्थान में हि आदेश होता है^२ । यथा—

जहि < यस्मिन्, तहि < तस्मिन्, एकहि < एकस्मिन् ।

(४८) अपभ्रंशमें य, त, क (यद्, तद्, किम्) शब्दों को षष्ठी के एकवचन में आसु आदेश होता है^३ । यथा—

जासु < यस्य, तासु < तस्य, कासु < कस्य ।

(४९) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में या, ता, का (यद्, तद्, किम्) से षष्ठी के एकवचन में अहे आदेश और आ का छोप भी होता है^४ । यथा—

जहे केरउ < यस्याः एते; तहे केरउ < तस्याः एते; कहे करउ < कस्याः एते ।

(५०) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में यद् और तद् के स्थान में क्रमशः भ्रु और प्र रिरह से आदेश होते हैं^५ । यथा—

प्रगणि चिट्ठि नाहु भ्रु प्र रणि करदि न भ्रति—प्रादने तिष्ठति नाथः यद् यद् रणे करोति न भ्रान्तिम् ।

(५१) अपभ्रंश में नपुंसकलिङ्ग में इहं शब्द के स्थान में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में इसु आदेश होता है^६ । यथा

इसु कुलु तुह तणउँ; ॥ कुलु देस्सु < इहं कुलं ।

(५२) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एतद् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में एह, पुंलिङ्ग में एहो और नपुंसकलिङ्ग में एहु रूप होते हैं^७ । यथा—

एह कुमारी < एषा कुमारी, एहो नर < एष नरः; एहु माणीरह-ठाणु < एतन्मनोरथस्थानम् ।

१ किमो किहे वा ८।४।३५६ ।

२ डोहि ८।४।३५७ ।

३ यत्किम्हो डसो जगुनं वा ८।४।३५८ ।

४ खियां डहे ८।४।३५९ ।

५ यतदः स्यमोध्रुं वा ८।४।३६० ।

६ इदम इसुः क्लीवे ८।४।३६१ ।

७ एतदः स्त्री-पुं-क्लीवे एह एहो एहु ८।४।३६२ ।

(६३) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में अदस् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है । यथा—

ओइ < अमूनि ।

(६४) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में एतद् शब्द के स्थान पर एइ आदेश होता है । यथा—

एइ पेच्छ < एतान् प्रेक्षस्व ।

(६५) अपभ्रंश में इदम् शब्द के स्थान पर आय आदेश होता है । यथा—

आयह' < इमानि, आयेण < एतेन, आयहो < अस्य ।

अपभ्रंश में सर्व शब्द के स्थान में विरूप्य से साह आदेश होता है । यथा—

साहु वि छोउ, सणु वि छोउ < सर्वोऽपि लोकाः ।

(६६) अपभ्रंश में विम् शब्द के स्थान में विकल्प से काह' और कवण आदेश होते हैं । यथा—

काह' न दूरे देक्सह < किं न दूरे पश्यति ।

ताहँ पराई कवण घृण < < तयोः परकीया वा घृणा ।

किं गज्जहि खल मेह < किं गर्जसि खल मेघः ।

युत्तिङ्ग अकारान्त शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	उ, ओ, ०	०
पी०	उ, ०	०
त०	ए, एं ण	हि
च०	उ, स्तु, हो, ०	हं, ०
पं०	हु, हे	हु
छ०	उ, स्तु, हो, ०	हं, ०
स०	ह, ए	हि
सं०	उ, ०	हो, ०

देव शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	देउ, देवो, देव	देव, देवा
पी०	देउ, देव, देवा	देव, देवा
त०	देवें, देवे, देवेण	देवाहि, देवेहि
च०	देव, देवणु, देवस्सु, देवहो,	देवहं

प०	देवदे, देवहु	देवहु
छ०	देव, देवसु, देवहो, देवस्सु	देव, देवह
सं०	देवे, देमि	देम, देवा, दमहो

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वीर, वीरो	वीर, वीरा
	वीर, वीरा	
वी०	वीरु, वीर, वीरा	वीर, वीरा
त०	वीरेण, वीरेणं, वीरें	वीरहिं, वीराहिं, वीरहिं
च० छ०	वीरसु, वीरस्सु, वीरासु, वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा	वीराहुं, वीरहुं, वीर, वीरा
पं०	वीराट्, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहुं, वीरहु
स०	वीरि, वीरे	वीराहिं, वीरहिं
सं०	वीरु, वीरो	वीराहो, वीरहो
	वीर, वीरा	वीर, वीरा

पुल्लिङ्ग इकारान्त ओर उकारान्त शब्दों के विभक्ति-प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०
वी०	०	०
त०	पं, ण, म्	हि
च०	०	हु, ह
पं०	ह	हु
छ०	०	०, हु, ह
स०	हि	हिं, हु
सं०	०	हो, ०

इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	इसि, इसी	इसि, इसी
त०	इमिण, इमिणं, इसीण, इसीणं	इमीहिं, इसीहिं
	इसिपं, इसीपं, इति, इसी	

च० छ०	इसि, इसी	इसिहुं, इसीहुं इसिहं, इसीहं
पं०	इसिहे, इसीहे	इसिहुं, इसीहुं
स०	इसिदि, इसीदि	इसिहिं, इसीहिं, इसिहुं, इसीहुं, इसीहो
सं०	इसि, इसी	इसि, इसी

गिरि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी
त०	गिरिहं, गिरिण, गिरि	गिरिहिं, गिरीहिं
च०, छ०	गिरि, गिरी	गिरीहिं, गिरिहं, गिरिहुं, गिरीहुं
पं०	गिरिहे, गिरीहे	गिरिहुं, गिरीहुं
स०	गिरिदि, गिरीदि	गिरीहुं, गिरिहुं, गिरिहिं
सं०	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी, गिरिहो

उकारान्त भाणु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाणु, भाणू	भाणु, भाणू
वी०	" "	" "
त०	भाणुण, भाणुणं, भाणूण	
	भाणूखं, भाणूरुं, भाणूरुं,	भाणूहिं, भाणूहिं
	भाणू, भाणू	
च०, छ०	भाणु, भाणू	भाणूहुं, भाणूहुं, भाणूहं, भाणूहं
पं०	भाणूहे, भाणूहे	भाणूहुं, भाणूहुं
स०	भाणूदि, भाणूदि	भाणूहिं, भाणूहिं, भाणूहुं, भाणूहुं
सं०	भाणु, भाणू	भाणूहो, भाणूहो, भाणु, भाणू

खीलिङ्ग शब्द

खीलिङ्ग में प्रायः दीर्घ ईकारान्त शब्द ह्रस्व हो जाते हैं। ककारान्त शब्द उकारान्त हो जाते हैं और देव शब्द के समान उनके रूप बनते हैं।

खीलिङ्ग के विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	"	०, उ, ओ
वी०	०	" "
त०	ए	हि

च०, छ० हे	ह
पं० हे	ह
स० हि	हि
सं० ०	०, हो

माला शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प०, वी० माला, माल	मालाउ, मालाओ, माल, माला
त० मालाए, मालए	मालाहि, मालहि
च०, छ० मालाहे, मालहे, माला, माल	मालाहु, मालहु
पं० मालाहो, मालतो, मालाओ,	मालाहु, मालहु, मालतो, मालाओ,
मालाहु, मालाहितो	मालाहु, मालाहितो, मालामुत्तो
स० मालाहि, मालहि	मालाहि, मालहि
सं० माला, माल	मालाओ, मालहो

मइ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०, वी० मइ, मई	मइउ, मईउ, मइओ, मईओ, मइ, मई
त० मइए, मईए	मइहि, मईहि
च०, छ० मइहे, मईहे, मइ, मई	मइहु, मईहु, मइ, मई
पं० मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
स० मइहि, मईहि	मइहि, मईहि
सं० मइ, मई	मइ, मई

पइट्टी < प्रविष्टा

एकवचन	बहुवचन
प०, वी० पइट्टी, पइट्टि	पइट्टिउ, पइट्टीउ, पइट्टिओ, पट्टीओ,
	पइट्टीओ, पइट्टी, पइट्टि
	पइट्टी, पइट्टि
त० पइट्टिए, पइट्टीए	पइट्टिहि, पइट्टीहि
च० छ० पइट्टिहे, पइट्टीहे,	पइट्टिहु, पइट्टीहु,
पइट्टी, पइट्टि	पइट्टी, पइट्टि
पं० पइट्टिहे, पइट्टीहे	पइट्टिहु, पइट्टीहु
स० पइट्टिहि, पइट्टीहि,	पइट्टिहि, पइट्टीहि
सं० पइट्टि, पइट्टी	पइट्टिओ, पइट्टीओ
	पइट्टी, पइट्टि

घेणु < घेनु

	एकवचन	बहुवचन
प०	घेणु, घेणू	घेणुउ, घेणूउ
		घेणुओ, घेणूओ
बी०	घेणु, घेणू	घेणुउ, घेणूउ, घेणुओ, घेणूओ.
		घेणु, घेणू
त०	घेणुए, घेणूए	घेणुहि, घेणूहि
च० छ०	घेणुहे, घेणूहे	घेणुहु, घेणूहु
प०	घेणुहे, घेणूहे	घेणुहु, घेणूहु
स०	घेणुहि, घेणूहि	घेणुहि, घेणूहि
सं०	घेणु, घेणू	घेणुहो, घेणूहो

बहु < बधू

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	बहु, बहू	बहुउ, बहुउ, बहुओ, बहुओ
त०	बहुए, बहूए	बहुहि, बहूहि
च० छ०	बहुहे, बहूहे	बहुहु, बहुहु
प०	बहुहे, बहूहे	बहुहु, बहुहु
स०	बहुहि, बहूनि	बहुहि, बहूहि
सं०	बहु, बहू	बहुहो, बहुहो

नपुंसकलिङ्ग के विभक्ति चिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०, इं
बी०	०	०, इं

शेष विभक्तिचिह्न पुंलिङ्ग के समान होते हैं ।

कमल शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं
बी०	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं
	शेष रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं ।	

हलन्त शब्द अपभ्रंश में नहीं होते । अतः उनके स्थान पर भजन्त हो जाते हैं ।
अग्निम हल् हाने से प्रायः हलन्त शब्द अकारान्त होते हैं ।

सर्वनाम (Pronoun)

सञ्च < सर्व—सर्व (अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष)

	एकवचन	बहुवचन
प०	सञ्चु, सञ्चो, सञ्च	सञ्चे, सञ्च, सञ्चा
धी०	सञ्चु, सञ्च, सञ्चा	सञ्च, सञ्चा
त०	सञ्चे, सञ्चेण	सञ्चेहि
च०, छ०	सञ्चसु, सञ्चस्सु, सञ्चहो	सञ्चहं, सञ्च, सञ्चा
प०	सञ्चहो, सञ्चाहां	सञ्चहुं, सञ्चाहुं
स०	सञ्चहिं	सञ्चहिं

सञ्च के स्थान पर अपभ्रंश में साह आदेश होता है। अतः साह शब्द के रूप भी अकारान्त पुल्लिङ्ग वाच्यों के समान बनते हैं।

तुम < युष्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	तुहुं	तुम्हे, तुम्हइ
धी०	तहं, तहं	तुम्हे, तुम्हइ
त०	तहं, तहं	तुम्हेहि
च०, छ०	तउ, तुउळ, तुध (तुहु)	तुम्हइ
प०	तउ, तुउळ, तुध	तुम्हइ
स०	तहं, तहं	तुम्हासु

अहं < अस्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	हउं	अम्हे, अम्हइ
धी०	मइं	अम्हे, अम्हइ
त०	मइं	अम्हेहि
च०, छ०	महु, मञ्जु	अम्हइ
प०	महु, मञ्जु	अम्हइ
स०	मइं	अम्हासु

एह < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एहो	एह
धी०	"	"

येष रूप सञ्च के समान होते हैं।

जो < यत्—सम्बन्धी सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०	जु, जो	जे
वी०	जं	जे
त०	जेण, जि, जें	जेहि
च०, छ०	जासु, जसु, जस्स, जहो, जहे	जाहं, जाह
पं०	जउ, जहे	जहु
स०	जहि, जम्मि	जहि

सो < तद्—वह—निर्देशवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०	सो, सु, स	ते
वी०	तं	ते
त०	तेण, तहं, तें, ति	तेहि, ताहें, तेहि
च०, छ०	सासु, सहो, सहि, सु	तहु
पं०	सहे, सउ	सहु
स०	सहि, सहि	तहि

फ < किम्—क्या, कौन—प्रश्नवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	फो, कु	के
त०	केण, कहं	केहि
च०, छ०	कहो, कहु, कस्स, कासु	काहं
पं०	कउ, किहे, कहाँ	कहु
स०	कहि, कहि	कहि

कवण के रूप सर्व के समान होते हैं।

आय < इदम्—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	भायु, आयो, आय, आया	आये, आय, आया
वी०	आसु, आय, आया	आय, आया
त०	आयेण, आयेणं, आयें	आयेहि, आयहि, आयाहि

येष शब्दरूप सन्ध के समान बनते हैं।

खीलिङ्ग न सन्ध शब्द के रूप माला के समान होते हैं। एतद् शब्द के स्थान पर खीलिङ्ग में एह अदेय होता है। अतः प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एह और इन विभक्तियों के बहुवचन में एहउ, एहाऊ रूप बनते हैं।

स्त्रीलिङ्ग जा < यत्—जो

	एकवचन	बहुवचन
प०	जा	जाव
दी०	जं	जाव
त०	जाइं, जाणं, जिण	जेहिं
च०, छ०	जाहि	जाहिं
पं०	जाहे	जाहिं
स०	जाहि	जाहि

सा < तद्—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	सा, स	साव, ति
दी०	सं	साव
त०	साइं, तिण, ताण, तण	तेहि
च०, छ०	साहि, साहि, तहे	साहि
पं०	साहूँ, तहूँ	साहिं
स०	साहि, साहिं	साहिं

का < किम्—कौन, क्या ?

	एकवचन	बहुवचन
प०, दी०	का, क	कायउ, काउ
त०	काइं, काण	केहि, काहि
च०, छ०	काहि, काहि	काहि
पं०	काहे	काहिं
स०	काहि	काहिं

नपुंसकलिङ्ग—सब्व

	एकवचन	बहुवचन
प०, दी०	सब्व, सब्बु, सब्बा	सब्बाइं, सब्बइं

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

ज < यत्

	एकवचन	बहुवचन
प०	जं, भुं	जाइं
दी०	जं, उ	जाइं

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

स < तद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	तं, तु	ताइ'
वी०	तं, तं	ताइ'

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान बनते हैं ।

क < किम्

	एकवचन	बहुवचन
प० वी०	किं	काइ'

अवशेष रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं ।

इदम्

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	इम्	आयाइ', आयइ'

सर्वनाम शब्दों से निष्पन्न विशेषण

परिणामवाचक

जेयइ, जेतुल—जितना	जेरइ, केतुल—कितना
तेवइ, तेत्तिन—उतना	एवइ, एतुल—इतना

गुणवाचक

जइमो, जंहु—जैसा	तइलो, तेहु—तेसा
कइलो, केहु—कैसा	अइलो, एहु—ऐसा

सम्बन्धवाचक

परिस—इस जैसा	तुम्हारिस—तुम्हारे जैसा
हम्हारिस—हमारा जैसा	तुम्हार < तुम्हारा

रीतिवाचक

जेम, जिम, जिइ, जिब—जिस प्रकार	केम, किम, किइ, किध—किस प्रकार
तेम, तिम, तिइ, तिध—तिस प्रकार	

अन्यय

स्थानवाचक अन्यय

एत्थु—यहाँ	जेत्थु, जत्तु—जहाँ
तेत्थु, वत्तु—तहाँ	केत्थु—कहाँ
एत्तेह तेत्तेह—यहाँ वहाँ	केत्तेह—कहाँ
तेत्तेह—तहाँ	

समयवाचक अन्यय

जामाहिं, जाम, जाउं—जय सक
तो—तवसे

तामाहिं, ताम, ताउं—तव सरु

अन्य अन्यय

अम्भ, अम्भह्—अन्यथा—

अन्य प्रकार से ।

अवसें—अवसेन

वश में न होने से ।

अवस—अवश्यम्

अवश्य ही ।

अद्यह्—अथवा—

आहरजाहर, ऐहिरैयाहिरै—

पुम्यहिं—इदानीम्

इस समय ।

उद्रवत्स—उत्तिष्ठति

उठने का इच्छुक ।

इक्कसि—एकः

एक बार ।

एत्तेह—अथ

यहाँ

एत्तेह—इतः

यहाँ से अथवा वाक्पारम्भ के लिए ।

जि

जिससे ।

पुम्य—एवं

इस प्रकार, ऐसे या वाक्य जोड़ना ।

पुम्यह्—एवं

” ”

फहंतिहु—कुतः

कहाँ से ।

किह, किह—कथम्

क्यों या किस तरह ।

किह—किह

किल, निश्चय ।

केत्थु—कुत्र

कहाँ ।

केहि

सादृश्य बतलाने के लिए या चित्तके ।

खाहं

निरर्थक वाक्य पूर्ति के लिए ।

घहं

” का अनुकरण करने में ।

धुगध

जो ।

सुड—यदि

जानना या श्व की सूचना के लिए ।

जणि, जणु

जहाँ ।

जेत्थु, जत्थु—यथा

जैसा ।

जेम, जिम, जेम्ब, जिम्ब—यथा

जिह, जिध

जय सक ।

जाम, जाउं, जामहिं—यावत्

सादृश्य की सूचना के लिए ।

सणेण

तेम, तेम्य, तिम, तिम्य < तथा	इसी प्रकार, वैसे ।
तिह, तिध	
ताड', ताम, तामहिं < तावत्	तब तक ।
तेत्थु, तत्तु, तेहिं < तत्र	वहाँ
तो < ततः, तदा	अनन्तर, तब ।
दिवे < दिवा	दिवस ।
भुवु < भुवम्	निश्चय
नउ, नाह, नावह, नं	ज्ञानने के अर्थ में ।
नाहिं < नहि	निषेध अर्थ में, ह्वार्थ में ।
पक्कलिउ < प्रत्युत	इसके विपरीत ।
पक्कह < परचाह	पीछे ।
पर < परम्	परन्तु ।
अवरोप्परं, अवहोप्परं < परस्परम्	आपस में ।
पाडिककं, पाडिएककं < प्रत्येकम्	एक-एक ।
प्राउ, प्राहव, प्राहम्ब, परिगम्ब < प्रायः	प्रायः, बहुधा ।
पुणु < पुनः	फिर ।
मगाड' < मनाक्	थोड़ा
मं < मा	निषेधार्थक, मत ।
रेत्ति, रैत्ति	साक्ष्य वसलाने के तिप् ।
बहिल्ल < सीधम्	सीध ।
बिणु < बिना	बिना ।
समाणुं < समानम्	समान ।
सव्वेत्तेह < सर्वत्र	सब जगह ।
हुहुव	आवाज करना ।

तद्धित

(५७) अपञ्चरा में संज्ञा से परे स्त्रार्थ में अ, अइ और उल्ल प्रत्यय होते हैं और स्वाधिक क प्रत्यय का छोप होता है^१ । स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है^२ । यथा—

पथिउ —अ प्रत्यय जोड़ा गया है—

१. अ-उड-डुल्ला. स्वाधिक-क-मुक् च दा।।।४२६ । २. लिया तदन्ताहीः दा।।।४२६ ।

ये दोसवा < दो दोपौ—यहाँ अट् प्रत्यय हुआ है ।

कुडुलछी < कुण्डलिनी—दुल्ल प्रत्यय हुआ है ।

दिभट्ट—अट् + अ प्रत्यय जोड़ा गया है ।

पुडुलछउ—दुल्ल + अ ” ”

पलुलछवा—दुल्ल + अट् ” ”

गोरट्ट + ई—गोरट्टी—छीछिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा है ।

(५८) अपभ्रंश में भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए ट् और तत् प्रत्यय के स्थान में प्पण और ण्ण प्रत्यय जोड़े जाते हैं । ण्ण का ण भी होता जाता है । यथा—

यट्टप्पण, यट्टण्ण, यट्टण्णहो < मट्टणम्—यट्टप्पन ।

छीछिंग बनाने के लिए अपभ्रंश में आ और ई प्रत्यय में से कोई एक प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

गोरट्टी, धूळट्टिआ ।

क्रियारूप

(५९) अपभ्रंश में संस्कृत की व्यञ्जनान्त धातु में अ प्रत्यय जोड़ कर रूप बनाये जाते हैं । यथा—

कह + अ + इ = कहइ—अ विवरण के रूप में जोड़ा गया है ।

पढ + अ + ई = पढइ— ” ”

(६०) उकारान्त धातुओं का उव, ईकारान्त की ए और ऋकारान्त धातुओं में ऋ स्वर को अर होता है । कुछ धातुओं में उपान्त्य स्वर को दीर्घ भी हो जाता है । यथा—

तु—तुवइ—तु = तु + उव + इ = तुवइ—मोता है ।

नी—नेइ—न + ए + इ = नेइ—के जाता है ।

फु—फइ—फु + अर् + इ = फइ—करता है ।

ह—हरइ—ह + अर + इ = हरइ—हरता है ।

तुप्—तुसइ—उपान्त्य स्वर उकार का दीर्घ हुआ है ।

उप्—उमइ— ” ”

(६१) अपभ्रंश में कुछ धातुओं में एउ स्वर का दूसरा स्वर हो जाता है । यथा—

चिन्—चुनइ—चिनइ—चुनता है । इअर को उकार हुआ है ।

(६२) अपभ्रंश की कुछ धातुओं में धातु के अन्तिम व्यञ्जन को द्वित्व हो जाता है । यथा—

फुट्—फुट्ठ—फूटा है । यहाँ ट को द्वित्व हुआ है ।

तुट्—तुट्ठ—तोड़ता है ।

लग्—लग्ग—लगाता है । ग को द्वित्व हुआ है ।

कुप्—कुप्प—उपित होता है । प को द्वित्व हुआ है ।

(६३) अपभ्रंश में प्राकृत के समान संस्पृत के घ के स्थान पर ज होता है ।

यथा—

संपज्ज् < संपज्जे—संपादित होता है ।

खिम्मह् < खिम्मते—खिन्न होता है ।

(६४) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के प्रथमपुरुष बहुवचन में विकल्प से हि प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

सद्धिं < शोभन्ते ।

परहिं < वरुतः ।

(६५) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के मध्यम पुरुष एकवचन में विकल्प से हि आदेश होता है । यथा—

रुअहिं < रोदिषि—हि प्रत्यय जोड़ा गया है ।

लद्धिं < लभसे—

(६६) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान के मध्यम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हु आदेश होता है । यथा—

हच्छुहु < हच्छथ—हु प्रत्यय जोड़ा गया है ।

(६७) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल उत्तमपुरुष एकवचन में विकल्प से उं प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

कद्धुवउं < कर्षामि—उं प्रत्यय जोड़ा है । विकल्पाभाव में—कद्धामि ।

(६८) अपभ्रंश में धातु से पर में आनेवाले वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हुं आदेश होता है । यथा—

लद्धुं < लभामहे, जाहुं < यामः, वलाहुं < वलामहे ।

(६९) अपभ्रंश में हि और स्व के स्थान पर ह्, उ और ए ये तीनों आदेश होते हैं । यथा—

सुमरि < स्मर; मेल्लि < मुञ्च; विलम्बु < विलम्बस्व; करे < कुरु ।

(७०) अपभ्रंश में भविष्यत्काल में स्य के स्थान में स विकल्प से आदेश होता है । यथा—

होसइ, पक्ष में होदिइ < भविष्यति ।

अपभ्रंश का धात्वादेश

धातु	आदेश	उदाहरण
भू	हुच	अहरि पट्टपट्ट नाहु < अघरे प्रभवति नापः ।
भू	भुव	भुवद् सुहासिउ किपि < भूत सुभाषितम् किञ्चित् ।
भू	भोप्प	वेप्पिणु < उगत्वा ।
भज	युज	युजद्, युजेप्पि, युजेप्पिणु ।
हृश	प्रस्स	प्रस्सदि ।
मह	रुण्ड	पट्ट गृण्हेप्पिणु मृगु < १३ गृहीत्या मतम् ।
सक्ष	छोक्क	ससि छोल्लिजन्तु < शशो भविक्षिप्पत् ।
सावि	कल्लक	तासानल्लजाज्झ कल्लकिअउ < रासानल्लज्यालो- सन्तापितम् ।
शल्याय	शुहुळ	हिअइ शुहुळइ < हृदयं शल्यायते ।
गर्ज	घुहुळ	घुहुळइ मेहु < गर्जति मेवः ।
धंच	धंणइ	जाता हे ।
भज	भज्जइ	भग्न करता हे ।
धुद्द	धुद्द अइ	वगर्थ शब्द करता हे ।

क्रियाओं में जुड़ने वाले प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ, ए	हि
म० पु०	दि	इ
उ० पु०	उं	हुं

आह्वार्थ एवं विध्यर्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	हुं
म० पु०	इ, उ, ए	हु
उ० पु०	उ	उं

भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ	हि
म० पु०	हि, सि	हु, हो
उ० पु०	मि, मो	ई

कर धातु के रूप वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करह, करेह	करहिं, करन्ति
म० पु०	करहि, करसि	करहु, करह
उ० पु०	करिमि, कराउं	करहुं, करिमु

आज्ञार्थ एवं विध्यर्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिज्जउं	करिज्जंतु, करिज्जंतु
म० पु०	करिज्जहि, करिज्जह	करिज्जहु
उ० पु०	करिज्जउ	रिज्जउं

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करेसह, करेहह	करेसहिं, करेहिति
म० पु०	करेसहि, करेससि, करिहिसि	करेसहु, करेसहो
उ० पु०	करेसमि, करोहिमि, करिमु	करेसहुं

भूतकाल के लिए भूतकृदन्त का ही प्रयोग होता है। यथा—

गर्गं < गतम्, कियं < कृतम्, पइहं < प्रविष्टितम्।

कर्मणि प्रयोग के लिए हज्ज या ह्य प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जाते हैं।।

हज्ज—गणिज्जह, कहिज्जह, बणिज्जह।

ह्य—फिहियह, बणियह।

कृदन्त

(७१) वर्तमान कृदन्त अंत और माण प्रत्यय जोड़कर बनाया जाता है।

अंत प्रत्यय परस्मैपद में और माण प्रत्यय आत्मनेपद में जुड़ता है। यथा—

अंत—इउअ + अंत = इउअंत—परस्मैपद में।

सिच + अंत = सिचंत— ”

कर + अंत = करंत— ”

पइस + अंत = पइसंत— ”

वज्ज + अंत = वज्जंत— ”

उगगम + अंत = उगगमंत— ”

माण—पविस्स + माण = पविस्समाण—आत्मनेपद में।

वट्ट + माण = वट्टमाण— ”

भग + माण = भगमाण— ”

हुच्च + माण = हुच्चमाण— ”

भूतकृदन्त

(७२) भूतकालिक वृद्धन्त बनाने के लिये अ, इअ, और इय प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

अ-ह + हण, मुक+अ = मुक, ग + अ = गअ ।

द्वय—गाल + हय = गालिभ, भयस + हय = भयसिभ ।

१. इय—कह + इय = कहिय, छह + इय = छहिय, उप्पह + इय = उप्पाहिय । .

11 12 13 14

सम्बन्धक कृदन्त

(७६) 'पूर्वाहिक क्रिया या समयबद्ध श्रुति के लिए संरुद्ध में वरु और वरु प्ररुव होते हैं। अरुअरु में पूर्वाहिक क्रिया के लिए, निम्न आरु प्ररुव जोड़े जाते हैं।

$$I - EV + I = \text{छवि} \subset \text{छाया}.$$

इउ—कर + इउ = करिउ ॥ इत्वा ।

इवि—कर + इवि = करिवि \leq कृत्या ।

अवि-कर + अदि = परवि + कृत्वा ।

एट्पि—ए + पृष्णि = करेपि Δ कृत्या ।

एत्तिपण—कर + एत्तिपण = करेत्तिपण < कृता ।

पणिण—क + पणिण = करिणि ऽपत्या ।

एधि—कर + एधि = करेधि + क्त्वा ।

हेत्यर्थं कुदन्त

(७४) क्रियायुक्त क्रिया या हेतुवर्धक कृदन्त के छिद् अपभ्रंस में निम्न आद प्रत्यय जोड़ने से रूप बनाये जाते हैं। संस्कृत में यह कार्य तुमुन् प्रत्यय से और हिन्दी में 'ना' प्रत्यय लगाकर कलाया जाता है। यथा—

एवं—चप + पुरं = चपयं < स्यत्तुम्—टोडना ।

दा + एवं + देयं = दातुम्—देना

अण-भञ्ज + अण = भञ्जणम् भोक्तुम्-भोगना ।

कर + अण = करण < कर्तुम् — करना ।

अणहं—सेव + अणहं = सेवणहं < सेवितुम्—सेवना ।

भञ्ज + अणहं = भञ्जणहं < भोक्तुम्—भोगना ।

एटिप्—कृ + एटिप् = करेटिप् < कर्त्तुम्—इना ।

जि + एष्यि = ग्रेष्यि < जेषुम्—जीतना ।

एत्पिण्—इ + प्पिण् = करेप्पिण् < कर्त्तुम्—काना ।

अयं + अपिगु = अपिगु < त्यङ्—डोहना ।

एवि—कृ + एवि = करेवि < कर्तुम्—करना ।

पाल् + एवि = पाळेवि < पालयितुम्—पालना ।

एविणु—कृ + एविणु = करेविणु < कर्तुम्—करना ।

छा + एविणु = छेविणु < छातुम्—छाना ।

विध्यर्थ कृदन्त

(७१) अपभ्रंश में 'चाहिण्' या किसी विधिविशेष के छिपे इएव्वडं, एव्वडं एवं एवा प्रत्यय जोड़े जाते हैं । संस्कृत में जिस अर्थ में सव्य प्रत्यय जोड़ा जाता है या हिन्दी में 'चाहिण्' जोड़ते हैं, उसी अर्थ में उक्त प्रत्यय लगाये जाते हैं । यथा—

इएव्वडं—कर + इएव्वडं = किरएव्वडं < कर्तव्यम् ।

मर + इएव्वडं = मरिएव्वडं < मर्तव्यम् ।

सह + इएव्वडं = सहिएव्वडं < सोढव्यम् ।

एव्वडं—कर + एव्वडं = करेव्वडं < कर्तव्यम् ।

मर + एव्वडं = मरेव्वडं < मर्तव्यम् ।

सह + एव्वडं = सरेव्वडं < सोढव्यम् ।

एवा—कर + एवा = करेवा < कर्तव्यम् ।

मर + एवा = मरेवा < मर्तव्यम् ।

सह + एवा = सरेवा < सोढव्यम् ।

सो + एवा = सोएवा < स्वप्नव्यम् ।

जग्ग + एवा = जग्गेवा < जागरितव्यम् ।

शीलार्थक

(७६) संस्कृत में शीलधर्म को बतलाने के छिपे वृ प्रत्यय लगाया जाता है ; या अपभ्रंश में शील, स्वभाव और साध्वर्ग्य में अणअ प्रत्यय जोड़ा जाता है ।

अणअ—हस + अणअ = हसणअ—हसणउ—हसनशील ।

भस + अणअ = भसणअ—भसणउ—भौकनेवाला ।

कर + अणअ = करणअ—करणउ—करनेवाला ।

मार + अणअ = मारणअ—मारणउ—करनेवाला ।

उउ = अणअ = उउणअ—उउणउ—वाहनेवाला ।

क्रियाविशेषण

वरिष्ठउ—शीघ्र, निश्चट्ट—प्रगाढ़, कोट्ट—कौटिक, टट्टरि—अवृभुत, ददवद—शीघ्र एवं सुअंशुअ—अलग-अलग आदि है ।

विद्याल्लु—नीच संसर्ग, अप्पणु—आहमीय, सड्डल्लु—असाधारण, रवण्ण—सुन्दर, नाळिअ, यड—मूर्ख और नरक—नया-वचित्र आदि विशेषण भी अपभ्रंश में उपलब्ध हैं ।

परिशिष्ट १

उदाहृतशब्दानुक्रमणिका

अभाहणं	६०	अच्छेदं	३०, ७७, १२७	अन्तो-वीसम्भ-	
अ आणिअ	८	अज्जा	३३, ६९, १३३	निसेसिआणं	३१
अ आणतेण	८	अज्जू	३३, ८९	अहो	६८
अहसुत्तयं	१८	अज्जोगो	६३	अहं	३४
अहसुत्तयं	१८	अज्जकाओ	७८	अधणो	५६
अहरेगअट्ठवास	॥	अज्जिअं	१६	अधीरो	५६
अहसरिअं	४८, १०६	अट्ठो	१३६	अनुमई	२१४
अओ	६३, ६८	अट्ठो	१२३	अग्रं	१०७
अक्खह	५६	अट्ठं	१३६	अग्रारिओ	१०३
अओ	२७	अण्णा	६९	अग्रारिसो	४७, १०३
अगह	५२	अणिउत्तयं	१८	अनुत्तं	१०७
अगहं	९४	अणिउत्तयं	१८, ११४	अप्पउत्तय	१०
अगओ	१५	अणिउत्तयं	११९	अप्पज्जो	६९, १६३
अरिगणी	२१	अणिउत्तं	७५, १३०	अप्पणू	६९, १३३
अरघह	५६	अणोउय	९	अप्पा	१३७
अरघो	५३, ६९	अणं	१०५	अप्पाणो	१३७
अरुणो	१६	अत्तमाणो	१२३	अप्पिअं	३१
अरुणो	२९	अत्थि	१३०	अप्पेह	३१
अरुणो	१३७	अन्तरायं	३१	अमुगो	५३, १०९
अरुणसा	२५, १३८	अन्तराप्या	२३	अमूरिओ	१०४
अरुण	२४, २५, ७७, १२७	अन्तराप्याओ	२३	अमूरिसो	१०३
अरुणरिअं	८६, १३७	अन्तरिदा	२३	अम्हकेरं	७२
अरुणरिजं	१३७	अन्तरं	१६	अम्हकेरं	७२
अरुणीअं	१३७	अन्तारेई	११	अम्हारिओ	४७, १०४
अरुणं	१२५	अन्तेआरी	३१	अम्हारिसो	४७, ८०, १०४, १३१
अरुओ	७२	अन्तेउरं	३१	अम्हेह	२०
अरुओ	४१	अन्तेपरि	२४	अम्हेह	२०
		अन्तोवीसंभो	१५		

पञ्चोपत्य	१२	फउक्तेमो	६०	कम्पह	१७
एअं	६०	कउरवो	६०, १०८	कमो	८१
एकमेकेण	१८	कउला	६०	कम्मो	१३८
एकमेकं	१८	कउलो	१०८	कम्हारा	८०, ९२, १३१
एकेकेण	१८	कउसलं	१०८	कम्हारो	८०
एकेळ	१८	कउहा	२६, १३८	कयग्गहो	६१, ९३
एको	७१, १३७	कउहं	११६	कयण्णू	८६
एगाल्लं	६३	कउसारा	१४	कयणं	११५
एगिदिय	१४	ककोहो	१७	कयन्धो	६२, ११८
एगल	१४	ककछा	७३, १२६	कयं	११३
एगो	६३, ११७	ककजो	७२, १२९	कयलं	१३७
एत्तिभमेत्तं, एत्तिभमत्तं	९०	ककं	७८, १२८	कयं	९६
एथ	३१, ८६	कक्कुओ	१६	करीली	११६
एमेव	१२३	कहं	७६, १३०	करणिज्जं	६३
एरावजो	४७, १०७	कडणं	११५	करणीअं	६३
एरिज्जो	१०४	कडं	११३	कररुहोरेप	११
एरित्तो	३९, ९४, १०४	कणअं	६१	करिभरोह	९
एव	१९	कणयं	११७	करित्तो, करित्तो	३८, ९३
एवमेअं, एवमेइं	१६	कणवीरो	१२०	कळभो	८८
एवं	१९	कणेरु	१३८	कळमो	३२
एवंनेइं	१६	कणेरु उस्सिअं	८	कळुणो	६४, १२०
एवमो	२०	कणेरसिअं	८	कळंपो	१७, ११६
कमारगहो	९२, ९१	कण्णुप्पल	१४	कलहारं	८०, १३३
कभावराह	७	कण्टमो	१६	कलहिओ	११६
कमं	४२, ६०	कण्हं	१६	कल्लो	१३६
कइअयं	४८, १०६, ११९	कण्णठरं	२२	कलाओ	६४
कअण्णं	२२	कणिणमारो	१३७	कविणो	८४
कइमो	२९, ८४	कण्हो	४४, ७९, १३२	कवोओ	६४
कइरयं	४७, १०७	कल्लो	७०	कसणपन्नो	९७
कइलाओ	४८, १०७	कल्लह	६६	कसाओ	६६
कइराइं	११९	कल्लिमो	७६	कमापो	१२२
कं	९२	कमरो	६६	कय	१९
		कमथो	६२, ११८	कइइ	११५

कदमवि, कहुँपि	१९	किदी	९८	कुदारो	५६
कहावणो	७०	किमवि, किपि	२०	कुदलं	१२०
कहेहि	५५	किमेअं, किमेदं	१६	कुदो	१५
कहुं	१९, ५५	किलम्मइ	१३४	कुप्पलं	७३
काउभाण, काउभाणं	१८	किलिहं	८१	कुप्पिसो, कुप्पासो	९८
काउण	१८	किलिहं	१३४	कुम्भआरो	१३
काउणं	१९	किलिणं	८१	कुमरो	३२
काउंओ	११९	किलिणं	१३४	कुमारो	३२
कावमणी	५३	किलिस्सइ	८१	कुम्भारो	१३
कायरो	११४	किळेसाणळ	७	कुम्हाणो	८०, १३१
काळओ	३२	किळेसो	८१, १३४	कुसुमुप्पयरो	७०
काळायासं	६३	किलंतं	१३४	कुसो	६६, १२१
काळासं	६०, १२३	कियणो	४२	केठवो	४८, ५७, १०७
कालेण, कालेणं	१८	किवा	४२, ९८	केणवि, केणायि	१९
काळो	५३	किवाणं	४३, ९८	केरवं	४८, १०७
कासइ	२७	किविणो	२९, ९८	केरिचठो	१०७
कासओ	२७	किवो	४४, ९८	केरिसो	३९, ४७, ९४
कासवो	२६	किसरा	९८	केखासो	४८, १०७
कासा	९८	किसरो	४३	केलं	१३७
कासं	१९	किसरं	१०५	केवटो	७६, १२९
काहळो	६५, ११४, १२०	किसलं	६५, १२३	केसरं	१०५
काहावणो	१३७	किसळवं	६७	केसुअं, किमुअं	९२
फि, फि	१९	किसा	९८	कोउहलं, कोऊहलं	७१, ९६
फिअं	५१	किसाणू	४२, ९८		९५, ९६
फिई	४२, ९८	किसिओ	९८	कोउहलं	७१, १३७
फिवा	९८, १२६	किमुअ, किमुअं	१९	कोत्थुदो	१०९
फिची	९८, १३५	किसो	४३	कोंचो	४९, १०९
फिचं	४३	फिति	२०	कोट्टिमं	४१
फिचठं	४३, ९८	कीळइ	५७	कोट्टागारं	१३०
फिटी	१२०	कीळा	११२	कोत्थुदो	४९
फिणेवं	१६	कुक्खेअओ	५०	कान्तलो	४२
फिण्हो	४४	कुचउअयं	१२५	कोप्परं	९६
फिलो	७६	कुचळी	७३, १२५	कोसुई	४९, १०८

कोसिओ	४९, १०९	खाणू	७२	गरुओ, गुरुओ	४०, १२४
कोसवी	४९, १०९	खीणं	७२, १२४	गरुई	४१, १२४
कोहण्ढी	९६, १३७	खीरं	१२४	गरुळो	४१, १३७
कोहलं	१३७	खीसओ	१०९	गरुहो	१२४
कोहं	९७	खीलो	१०९	गळोह	१२४, १३७, १४९
कंकोडो	१७	खुजो	१०	गहिरं	१३७, १४९
कंखुजो	१६, १२४	खुडुगेगावलि	१०	गहोसिअं	१३९
कंटओ	१६	खुडिओ, खंडिओ	८९	गहो	१३७, १४९
कंटमुत्तडरस्थ	१०	खुडिओ	३०	गहं	१३७
कंडुअइ	९९	खोडओ	१२४, १२६	गहं	१३७
कंडुया	९६	खोडओ	१२४	गहं	१३७
कंडुयणं	९६	खंदो	१२६	गहं	१३७
कंडं	१६	खंधावरो	१०७	गहं	१३७
कंधा	९६	खंधावरो	१२६	गहं	१३७
कंधं	१७	खंधुवखेज	१३१	गहं	१३७
कंधं	१९, ८७, १३३	खंधो	७४, १२९	गहं	१३७
कंसिओ	३३, ८७	खंओ	९६, १३०, १३९	गहं	१३७
खओ	७२, १२४	गभा	९२	गहं	१३७
खइअं	३२	गओ	९१, ६०	गहं	१३७
खइरं, खइरं	८८	गइद	१३	गहं	१३७
खगडसभ	१०	गड	१०८	गहं	१३७
खगो	२१	गडभा	३०, ८९, १०८	गहं	१३७
खहा	९७	गडयो	३०, ८९, १०८	गहं	१३७
खइगो	९७	गडरवं	१०८	गहं	१३७
खणो	७३	गडओ	९६, १०८	गहं	१३७
खण्डिओ	३०	गऊ	१०४	गहं	१३७
खणू	७२	गऊध घणो	९६	गहं	१३७
खण्वरं	१०९	गऊन्ते रो मेहा	१९६	गहं	१३७
खमा	७३	गहो	१२६	गहं	१३७
खडिओ	३३	गण्य	१३	गहं	१३७
खडीओ	३३	गण्यो	९३	गहं	१३७
खसिओ	१११	गडिओ	११४	गहं	१३७
खइअं	३२	गमणूमुअ-	११४	गहं	१३७

गुफद्व	६१	घचरं	१२६	चंद्रो, चंद्रो	१०, ६८
गूढ उभरं, गूढोभरं	९	घट्ट, घाट्ट	३२	छट्टी	१२२
गेरुभं	९०	घन्टो	१७	छट्टो	२३, १२२
गेदुभं	३१	घण्डिछा	६७	छट्टी	१३६
गैदुभं	८६, ११०	घमरं	३२	छट्टो	१३६
गोटी	२२	घम्रं	२२	छणो	७३, १२४
गोदमो	४९	घगह	१२६	छत्तपण्णो	२९, १२२
गोरिहरं, गोरीहरं	११	खलणो	६४	छत्तिपण्णो	२९
गोरी	१४९	खवेडा	१०९	छप्पहो	१४२
गंभीरिखं	१३५	खमिडा	९७, १०९	छमा	७३, १२४
गिटी	१७	खमिछा	११२	छमी	१२१
गुंछं	१७	खामो	१२६	छमुहो	१२२
घभं	४२	खाई	१२६	छयं	७३, १२४
घट्टो	४२, ९७	खाउरन्त	२८	छारो	७३, १२४
पड्ड	९७	खारैडा	११९	छाखी	१११
परो	९७, ११२	खिह	९७	छाखो	१११
परं	१३८	खिहं	३९	छायो	१२१
घाणिदिय	१४	खिलाभो	६४, ११०	छाहा	६४
विको	१३८	खिहुरो	११०	छिरा	१२१
घिणा	९८	खुळुं	११३	छिदा	१००, १३६
घुसिणं	४२, ९८	खेण्हं	३९	छोभं	४०, ७२
घंटा	९७	खुण्णो	३४	छोणं	७२, १२४
पड्पो	४९, १०७	खेत्तो	४९, १०७	छोयं	१२४
पड्त्तं	१०६	खोगुणो	१३७	छोरं	७२
पउट्टो	१३६	खोच्चारो	१३८	खुळुं	११३
पउट्थी	३६, १३७	खोत्थी	१६, १३७	खुण्णो	७३, १२४
पउत्थो	१३७	खोत्थो	१३७	खुरो	१२४
पउट्थी	३६, १३८	खोदसी	३६, १३८	खुहा	२९, ७३, १२३
पउट्ठ	१३७	खोदइ	१३७	खुदं	१३८
पउत्थारो	१३८	खोरिअं	१३६	छेचं	७३, १२९
पकाभो	१३	खोरो	६३	छंमुहो	१६
पकं	६८	खंदिमा	११०	खमा	३३
				खमो	६०

જડ	૩૩, ૬૨	ઝારિચ્છો	૧૦૪	ઝહિલો	૧૧૧
જદ્દથ	૨૦	ઝારિસો	૪૭, ૧૦૪	ઝાળં	૭૮, ૧૨૮
જદ્દમા	૨૦	ઝારો	૬૨	ઝાયદ	૧૨૮
જદ્દસં	૪૭	ઝાલા • • ઘેવ્વન્તિ	૬૭	ઝિન્નહ	૭૨, ૧૨૬
જદ્દદં	૨૦	ઝાલોલિ	૧૦	ઝીળં	૧૨૬
જડ્ડેળયદ્	૧૧	ઝાવ	૨૩	ઝુળી	૨૧, ૮૬
જડ્ડેળા	૧૧૯	ઝિઝદ, ઝિઝડ	૩૮	ટકકો	૬૭
ઝરસો	૧૨૪	ઝિળધમ્મો	૬૬	ટગરો	૧૧૩
ઝઝો	૭૮, ૧૨૮	ઝિળ્ળો	૩૯	ટસરો	૧૧૩
ઝટ્ટો	૧૨૬	ઝિળ્હુ	૧૩૨	ટૂચરો	૧૧૩
ઝહિલો	૧૧૧	ઝિર્ગિલ	૧૩	ઠહ્લો	૧૩૬
ઝહલં	૬૬	ઝિઝ્મા	૧૩૧	ઠવિઓ, ઠાવિઓ	૮૮
ઝળ્હુ	૭૯, ૧૩૩	ઝિર્મિલિય	૧૪	ઠવિઝં, ઠાવિઝં	૩૨
ઝળ્ળવલ્લેળ	૨૧	ઝિલ્લ	૧૩	ઠાર્	૬૭
ઝમો	૬૨, ૧૧૯	ઝીમા	૮૨	ઠીળં	૩૩, ૮૯
ઝમ્મો	૭૯, ૧૩૧	ઝીમો	૬૨	ઠહ્લો	૧૧૬
ઝલ્લારો, ઝલ્લારો	૬૩	ઝીર્મ	૧૨૩	ઠમ્મો	૧૧૬
ઝલ્લમહ્લં, ઝલ્લમર્મ	૮૭	ઝીહા	૯૧, ૧૩૧	ઠરો	૧૧૬
ઝલ્લોહ	૧૧	ઝી	૧૨૭	ઠસદ	૬૦
ઝલં	૧૬	ઝુગ્મ	૬૭, ૧૩૧	ઠસર્ળ	૧૧૬
ઝલ્લિર્ગિ, ઝલ્લગીર્મ	૬૩	ઝુકઠહ	૭૭, ૧૨૭	ઠદ	૧૧૬
ઝસો	૨૩, ૬૨, ૧૧૯	ઝુળ્ળો	૩૯	ઠહ્લ	૬૦
ઝદ, ઝદા	૩૨, ૮૯	ઝુળ્ળં, ઝિળ્ળં	૯૩	ઠાહો	૧૧૬
ઝહળં	૬૬	ઝુલ્લિર્મિળ, ઝુલ્લિર્મિળ	૧૬	ઢિમો	૬૭
ઝહિલિલો	૩૯	ઝુમ્મં	૧૩૧	ઢોલા	૧૧૬
ઝહુલિલો	૩૯, ૬૪, ૯૨	ઝેળ્હં	૭	ઢોહલો	૧૧૬
ઝા	૧૨૩	ઝોઓ	૧૨૭	ઢંદો	૧૧૬
ઝાદ	૬૨, ૧૧૩	ઝોદ્દિસિલ	૧૩	ઢંમો	૧૧૬
ઝાળં	૪૭	ઝોગો	૨૧	ઢંલ	૧૧૬
ઝાલિલં	૪૭, ૬૯	ઝોળ્હા	૭૯, ૧૩૨	ઞમ્મં	૬૨
ઝામાઝઓ	૪૬, ૧૦૧	ઝામ્મળં	૪૯, ૭૧, ૧૦૯	ઞમ્મરં	૬૧
ઝામાઝુમો	૪૬	ઝં	૧૬, ૨૬	ઞમો	૬૧
ઝારિ	૧૦૪	ઝમ્મો	૧૨૬		

न आणामि	८	निर्ध	७९	तप	२१७
न आणामि	८	निर्दालं	२९, ६९, ८९	तारको	७४
न आणीयदि	८	निहा	३९	तर्क	७७, १३९
नई	६१, ११७	निराभी	३७	तर्क	८२, ९७
न उणा, न उणाई	३२	निरावाध	२३	तर्क	७७
नउळो	६१	निरुधर	२३	तम	२३
नरकचरो	६२	निरुद्ध	३७	तमसि	२०
नरुळो	६९	निधुर्ग	४४	तमसि	६८, ९३
नरुवा	७९, १२६	निधुर्ग	४९	तम	९३
नरुभो	७६	निधुर्ग	४४	तमोर्ट, तामोर्ट	३२, ८८
नरुलं	२९, ६९, १२१	निसाभरो	३३	तमोपो	९७
नरुलो	६६	निसासो	३७	तमप	११२
नपहुर्पत	८	निसिभरो	३३	तद, तदा	३२, ८९
नपर	९१	निस्तडो	३७	तदाच, तदाचि	२०
नराभो	३२	निदुर्ग	४९	तदा	३२
नरी	६१, ११७	नुमज्ज	३७, ९१	ताभो	६७
नरुत्त	८	नुमणो	३७	तासि	४७
नरेला	१०	नुमचो	९१	तादिम	४७
नसहिअपडियोह	८	नेह	११७	तारि	१०४
नसहिआलोभ	८	नेहा	३९	तारिचो	१०४
नह	२३, ९९	नोभा	९१	तारिसा	४७, १०४
नहुप्पल	१४	नोमसिआ	३९	तार	२३
नागभ	७	नगर्ग	१२१	तिअसीपो	१३
नाजं	६९, ८९, १२९	नहाभो	१३२	तिरं	१३९
नाळगह	७	नहाऊ	७९	तिग्ग	१३१
नाळिअह	७	नहारं	७९	तिग्ग	१३३
नालंदिदा	७	नहारिभो	११७	तिग्गी, तग्गी	८१
नाहळो	६९, १२१	तभा	३३	तिचिरो	९०
निअसं	९७	तभो	६०	तिचं	९८
निउभं	४९	तह	३३	तिरुपरो	९१
निउककण्ड	२४	तहअं	३८, ९३	तिरुप	३४, ३९
निचळो	२२, ७७	तहजो	११९	तिरुप	४३
निचोडा	९	तहसं	४७	तिरुम	१३१

तिरिच्छि	१३२	थुई	७९, १२९	दण्डन्दरुहिरलितो	१२
तीसा	१९, ९१, १३८	थुछो	७१	दण्डवहो	१०३
तुण्डभो	७२	थूणो	१०५	दणू	१०३
तुण्डछो	७२, १३७	थिण्णं	३३, ७२	दरिओ	१०३
तुम्ह	११९	थीणं	३३, ७२, १२९	दरिसणं	१३४
तुम्हकेरो	११८	थूळभरो	१२१	दलिदाइ	६४, १२०
तुम्हारि	१०५	थूळो	१२१	दलिहो	६४, १२०
तुम्हारिच्छो	१०५	थुबभो	८९	दगगी, दावगी	३२
तुम्हारिसो	४७, ६३, १०५	थेणो	१०५	दवो	५३
तुरिअं	८५	थेरिअं	१३५	दस	६६, १२१
तुहं	३९, ९३, १३७	थेरो	१३८	दसणं	१७
तेणं	१८	थेवं	१३८	दसमुहो	६६
तेनीसा	१३८	थोअं	७९, १२९	दसरहो	६६
तेरह	११६, १२०, १३८	थोळं	१३८	दह	१२२
तेरहो	३०	थोणा	९९	दहवलो	६६, १२२
तेलुक्कं	१०७	थोचं	७८, १२९	दहमुलो	१२२
तेळोळं, तेळोळं	७०	थोरो	७१	दहमुहो	६६
तेललं	७०, १३७	थोरं	६५, ९६, १२१	दहरहो	६६, १२२
तेपीसा	१३८	थोवं	१३८	दहीसरो	८
तेणीरं	९६	दआलू	५२	दशो	१३८
तेणं, तणं	९६	दहअवं	१०६	दाडा	१३८
तेण्डं	४१	दइचो	४८, १०६	दारं	३४
तं	१५, २५	दइणं	४८	दालिहं	६४, १२०
तचेअ, तंचेअ	७२	दइवअं	४८	दालिणो	२८, ८३, १३७
तंचेव...दणिहं	१२	दइवजो	६९	दिअरो	१०५
तंपि	२०	दइवणू	६९	दिअहो	५२
तंवो	७९	दहवं	७२	दिओ	३७
तंथोळं	९६	दइचो	१३७	दिउओ, दुइओ	३७
तंवं	३४, १३७	दइव्वं	७२	दिउणो	३७
तंमं	१७	दचा	१२६	दिहो	७४, ९८, १२०
थंभो	१२९	दछजो	७३, १२५	दिहं	४२, ९८
थंभो	१२९	दहो	१३०	दिहंवि	२०
थंभो	१२९	दहलो	१३६	दिणं	२९, ८४, १३६

दिप्यद्	६०	दुगाई	३०	दोहो, मोहो	१८
दिरभो	३०	दुगारिभो	४९, १०८	दुमग	१७
दिउहो	१२३	दुहिहो	९१	घट्टो	१००
दिवा	२५	दुवे	३०	घगुई	२१, १३८
दितोभ	९	दुमभो	४१	घणू	२५
दीभो	६३	दुस्सहो, नुसहो	२३, ९९	धन	१९
दीअ	१५	दुवभो	४१	धर्माभो	५२
दीआ	६३	दुहमहभं, दुहमभं	८०	धरज	६८
दीदाउलो	२५	दुहा	११	धम्मकदायमान	०
दीदाऊ	२५	दुहाऊभं	३०	धम्मिअ, धम्मेल	३५
दीनदिसा उदहीणं	१०	दुवादिअइ	३०	धम्मो	२१
दीहो	१३०	दुई	१३७	धर्ष	९१
दुमणो	३७	दुदिमलायमान	७	धिई	४३, ९९
दुमल्लं	९५	दुमहो	२३, ४१	धिहो	१००
दुगाई	९१	दुमासणो	२०	धिजा	४३
दुभारं	३४	दुहभो	४१, ९५	धिज्जइ	६०, ११६
दुहभो, विहभो	९२	दुहगो	९५, ११६	धीव	११५
दुहभं	३८, ९३	दुहलं	१२३	धीरिअं	१३५
दुउभो	९२	दुपरो	१०५	धीरं	४०, १०१
दुवधं	५९, ९७, ११३	दुई	३४, ६०	धुतो	०१
दुवधं	११३	दुपज्जो	१३३	धुरा	२४
दुवधं	७४	दुपणू	१३३	धुभा	१३८
दुरगमाहं	२४	दुप-रुपइ	००	नहरगामो	७०
दुपल्लं	११०	दुपिउडि	१४	नहमोअं	११
दुगगावी	१०३	दुपिइ	१३	नई	५२, ११
दुव	२२	दुपेपुएथ	१२	नरया	०१
दुमपो	९१	दुपभणं	३०	नरयो	१३०
दुरागधं	२४	दुपयणं	९२	नरयो	६०
दुरचरं	२४	दुपदमो	४९	न जुएवि	२०
दुरेहो	९१	दुपयो	११५, ११६	नगहाइ	१२८
दुस्सहो	५६	दोदा, दुदा	९२	नदइ	१२९
दुवमधं	३०	दोदाऊभं	३०	नडो	११२
दुवयणं	९२	दोदा किज्जइ	३०	नधिभो	४३, ९९

ननुओ	४६, १०१	निवुअं	१०१	पइक्को	१३८
नमोकारो	३१, ७४, ८६	निवुई	१०१	पइद्दा	२६, ५९
नपणं	११७	निवुदी	५९	पइद्दाणं	५९
नयरं	५१, ५३	निसदो	११६	पइद्दिअं	२६
नराओ, नाराओ	८८	निसाअरो	१२	पइण्णा	५९
नरिंदो	१३, ३४	निसिअरो	१२, ८९	पइसमयं	५९
नरो	६१	निसिचो	२७	पइदरं	११
न वेरिअग्गेविअवयासो	१२	निसीदो	११५	पई	५४
नहा	७१	निसंसो	६६, ९९, १२२	पईवं	५९
नहं	११८	निस्तहं	२३	पउअं	३२
नाइदूरं	७	निहसो	११०, १२२	पउटो	१०२, १०७
नाभिजाणइ	७	निहुअं	१०१	पउचो	४४, १०१
नावा	१०९	नीचअं	१०५	पउमं	३१
नाहो	५५, ११५	नीअं	३९, ७१	पउरिसं	४०, ५०, १०८
निअत्तं	४५	नीमी	६५, १२१	पउरो	५०, १०८
निउअं	१०१	नीमो	११८	पअं	२१, २९
निउरं, नुउरं	९५	नीलुप्पअं	३४	पअलीणं	१२४
निक्काओ	७४	नीवी	६५	पअलेवो	१२४
निक्कामं	७३	नीसरइ	९१	पअलो	५६
निक्खं	१२५	नीसदो	२७	पअुरणं	१३८
निरवसेअं	२३	नीसहं, निस्तहं	२३, ९१	पअओ	७५, १२६
निअं	७५	नीसासुसा	१३	पअअउं	७५
निट्ठुरो	२२, ६७, १२१	नीसो	२७	पअअसो	७५, १२६
निट्ठुओ	६५, १२१	नूणं	१९	पअअदो	७५
निणं	७८, १२९	नेउरं, नूउरं	९६	पअअ	७७, १२७
निण्णाओ	१३०	नेअं	३९, ७१, ९४	पअिअमं	७७, १२७
निण्णेमो	७९, १३०	नेअं	७१, १३७	पअ्छीणं	१२५
निम्मअं	२६	नेदो	२२	पअ्छेअम्मं, पअ्छाअम्मं	१०
नियो	९९	नोणीअं	१३८	पअउं	७७, १२७
निवत्तओ	७६	नोमाअिआ	१३८	पअत्तं	१२८
निवत्तणं	७६	पअअं	२७	पअन्तं	७८
निपुअं	४५	पअओ, पमओ	३२	पअ्वा	६९, १३३
नियो	४३	पमापई	५१	पअ्वाओ	७८, १२८

पञ्चगुणो	७८, १२६	पण्डो	१३२	पल्हाओ	८०, १३३
पञ्चमीर्णं	१२६	पस्थरो	३२, ७९, १३०	पवट्टो	१०७, ११०
पञ्चो	१३३	पस्थाओ	३२	पयत्तओ	७६
पक्ष्णं	१३४	पत्थवो, पत्थावो	३२	पवयणउवघोयग	१०
पट्टं	१००	पन्थो	१६	पयासु	२८
पठमं	३०	पमुळं, पम्मुळं	७०	पवाहो, पवहो	३२
पठमसमय उवसंलं	१०	पमुहेण	६६	पव्वदुम्मुळिदं	१४
पडसुभा १७, ५८, ११३		पम्हळं	१३२	पसहयो	१३०
	३५, ९०	पम्हाइ	१३२	पसिअ	३८
पदापा	५८, ११३	पम्हाइं	८०	पसिदिलं	९१
पट्टिकरट्ट	५८, ११३	पयट्टइ	७६, १२८	पसिदी	२८
पट्टिनिधत्तं	५८, ११३	पयत्तयं	७६	पसिओ	१३
पट्टिप्फद्धी	२८, ७९, १३१	पययं, पावयं	८८	पमुत्तं	२८
पडिमा	५८, ११३	पयागज्जं	५२	पदरो	३२
पडिअआ	२४, २८	पवारो	६६	पदा	११८
पडिवणं	५८	पयावई	५४	पदाओ	६६
पडिवही	६०	परहुओ	४४, १०१	पदारो	३२
पडिवया २४, ५८, ११३		परासुट्टो	४४, १०१	पहावलिउरुओ	१२
पडिलो	५८	परिट्टविओ	८८	पहुवि ५८, १०१, ११३	
पडिलारो	५८, ११३	परिट्ठा	२६	पहुवि	४४
पडिलिदि	२८, ५८	परिट्ठिअं	२६	पहो	३५, ९०
पडिहारो	५८	पल्लिविअं, परिठाविअं	३२	पहोळि	१०१
पडिहारां	५८, ११३	परुवेइ	२१४	पाभरंइ	९
पडिमुर्व	११८	परोप्पई	३१, ८६	पाभरं	२७
पद	११३	परोहो	२८	पावओ	१०२
पउमो	११४	परंमुहो	१६, २६	पाउअं	३२, ४५
पट्टमं	३०	पळिअं	११४	पाउरणं	१३८
पणट्टभओ	५६	पळिअं	६०, ११६	पाउवणे	४६
पण्णाह -	१३६	पळिलं	११४	पाउसो २५, ४४ १०२	
पण्णा ६९, ७८, १३३		पळिविअं	३८, ९३	पाडिफदी, पडिफदी	८४
पण्णासा	१३६	पळीवेइ	६०, ११६	पाडिफद्धी	२८, ५८
पण्णो	१३३	पलंअवणो	५६	पाडिविअ, पडिविअ	२८, ५८
पण्डओ	१३२	पलहयो	१३०	पाडिलिदी	२८, ८४

पाणिर्ग, पाणीअं ३८, ९३	पियगमणं ६२	पुद्गुरी ४५, ८१
पातुक्खेव ११	पिलुट्टं ८१, १३४	पुहं ४६
पायडं, पयडं ८३	पिलोसो १३४	पुंछं १७
पाय्यं ९७	पिसल्लो १११	पूसो २७
पायालं ५४	पिसागो १११	पेमा ६३
पारको १२३	पिहडो ११२, १२०	पेजसं ३९, ९४
पारकं, परकं २८, ८३	पिहं १५, १८, २६, ४६	पेज्जा ६३
पारकेरं, पारकेरं २८, ८३	पोमलं ११४	पेट्टं ३५
पारळी ११८	पीठं ३९	पेठं ३९, ९४
पारेवओ, पारावओ ३४	पीवलं ११४	पेण्डं ३५
पारो ६६, १२३	पुछं १७	पेम्म १३७
पारोहो, परोहो २८, ८४	पुटो ७०, १०३, १३०	पेम्मं ७१
पावड्यं १२३	पुट्ठं ४५	पेरसो, पमसो ८६
पावयणं २८	पुंढमं ३०, ८५	पेरसं ३०
पावासुओ ९२	पुहुमं ३०	पोक्खरिणी ७४, १२५
पावासू, पवासू २८, ९१	पुडवी ३५, ११५	पोक्खरं ७१, ७४, १२५
पावीठं १२२	पुणा ८३	पोग्गलं ४२
पावं ५३	पुणाइ, पुणो ८७	पोत्थमं ४१
पासइ २६	पुंनाभाइ १११	पोप्फलं १३८
पासिद्धी, पासिद्धी २८, ८४	पुप्फं ६१, ७९, १३०	पोम्मं ३१, ८७
पासुओ, पसुओ ८४	पुरओ १५	पोरो १३८
पासुत्तं २८	पुरा २४	पंको, पळो १६
पासू १९	पुरिमुत्ति २०	पंचूण १४
पाहुडं, ४४, ५८, ११३	पुरिसो ४०, ९४	पंडवो ८७
पिओत्ति २०, ३६	पुरिसोत्ति २०, ३६	पंदिओ ५४
पिठओ ४५, १०१	पुरेकई ९७	पंति, पंती १६
पिडन्ति २०	पुरंदरो ५२	पंथो १६
पिळं, पळं २१, २९, ६८	पुलोमी ४९, १०८	पंसणो ३३, ८७
पिच्छी ७५, ९९, १२६	पुणण्हो ३२, ८०, ८८	पंसू १९, ३३, ८७
पिट्ठं ३६, १००	पुण्णण्हो ३२	फणसो ११७
पिडो ११२	पुहई ३५, ४५, ९०, १०१	फणी ६१
पिण्डं ३५	पुहयी ४५	फन्दनं २३
पित्थी ४४	पुहवीथ ८	

फरसो	११७	बहुदग	७	भाणु उरम्काभो	॥
फलिहा ६५, ११७, १२०		बहुसुद	११	भाणुइम्काभो	८
फलिहो ५८, ६५, ११०		बहेडो	९०, ३५, ३९	भामिणी	१११
फल	१५	बाम्हणो	३२	भाण	१२३
फसो	१७	बाह	११६, १२५	भित्ती	४०, ५९
फात्रि	११७	बाहइ	११७	भिऊ	४२
फाडेइ	५७	बाहो	११६	भिगासो	४३
फाफिहो	६६, ११७	विहओ	६३	भिगो	४३, ९९
फाछेइ	५७, ११२	बीओ	६३	मिम्भओ	१२१
फासिदिय	१४	सुम्भा	७५, १२६	मिसअ	२५
फुछेला	१०	बुधो	१७	मिसिणी	२६, ११८
फंदण	७९, १३१	बुधो	१७	सुममंत, सुमामंत	११
फाँसो	१७, ७९	घोर	३५, १३८	सुर	४५, १०२
घडलो	६५	बघयो	१७	सुत	२२
यन्दारओ	९७	बंभचर	८०, १३७	सुमया	९६
यन्दारया	४५	बंभणो	८०	सुमओ	९०
यन्धइ	५६	यसो	१२२	मेदो	१२०
यन्धयो	१७	भइरयो	४८, १०६	भोगमसेत	९०
यम्भण	१३६	भगो	६७	भोया	७५, १२६
यम्भहो	१३१	भजा	७८, ११८	मभणो	५२
यम्भचरिअ	१३५	भजो	५६, ११२	मभळाछग	९७
यम्भचेर	३१, ८०, ८६	भई, भई	६८	मभवह	९७
यम्भणो	३२, ८०, ८८	भसरो	६२	मभो	४२, ५२, ९७
यम्हा	८०, १३२	भरिया	१३५	मदल	१३८
यलया	८८	भवओ	१५	मईद	१३
यलही	५७	भरगो	१५	मडआ	९७
यदफई	१००	भवारि	१०४	मडअं	९८
यदिणी	१३८	भवारिजो	१०४	मडदो	९४
यहिरो	११६	भवारिसो	४७, १०४	मडई	३९
यहुअर	८	भसलो	६२, ६५, ११८	मडण	५०, १०८
यहुआइन'अंगे	१२	भाइरही	५१	मडचण	९८
यहुअभर	८	भाउओ	४४, १०२	मडर	५४
यहुतं	७१, १३७	भागूण	१४	मडछो	५०, १०८

मउखो	९४	मणोष्णं	६९	महु-छट्टी	६३
मउलं	३९, ६१	मणोरहो	६९	महुसव	१४
मऊरो	३६	मणोसिखा	१९	महोसि	९
मऊहो	३६, १३८	मणोहरं	१०७	महो	६६
मन्मिअ	१२४	मणंसिनी	२८	माहमंडलं	४६, ९०१
मरगओ	१६	मणसिखा	१७	माहहरं	४६, १००
मरगो	२२, ७३	मणंमी	१७, २८	माहदजाळ	१३
मळयु	९७, १०१	मम्मणं	१३१	माहं	९९
मळरुओ	७७, १२७	मम्महो	७९	माठवा	४९, १०२
मळिआ	७३, १२६	मयगळो	११०	माठभो	१०२
मळाया	१२८	मयणो	११७	माठभं	७१
मळारो	१७, ३२	मयं	११४	माठळं	७१, ९८
मळं	७७, १२८	मयंको	६१, १००	माठमंडलं	४६
मळिभसो	२९, ८४	मरगयं	११०	माठळिगं	११४
मळळं	७८, १२८	मरळो	३२	माठहरं	४६
मळळं	८०	मरहट्टो	८७	माऊ	४९
मट्टिभा	१३६	मरहट्टं, मरहट्टं	३३	माळारो	३२
मट्टिओलित्त	१०	मराळा	३२	माणुसो	६१
मट्टिया	९७	मळय सिहरक्खण्डं	७०	माणंसिणो	८४
मट्टं	९७	मसाणं	१३८	मानंसी, मणंसी २८, ८४	
मट्टयं	११३	मसु	१७	मादु	४९
मट्टं	११४	महुण्णयसमा सट्टिभा	६७	मादुमंडलं	४६
मट्टियो	१३६	महाभातंद्, महाक्खण्ड ७		मादुहरं	४९
मडा	६६	महाउदग	१०	माओहड	१०
मगहरं	१०७	महाराआधिराओ	७	मासलं	१९
मगसिणी, मणंसिणी	१७	मट्टिडुडिय	४१	मासं	१९
मगसिखा	११, १०, २७	मट्टिवाळो	६४	माटणी	६९
मगमी	१७	मट्टिविट्टं	४४	माट्टिणं	११४
मनयो	२०	मट्टिर	१३	माहो	६९
मगासिअ	११	महुअमदुरगिरा	२४	मिहंयो	४९, ९९
मगुभं	१२	महुअं, महुअं	९६	मिधू	१०१
मगुअं	१३३	महुआ	६६	मिअ	१२०
मनोअं	६९, १३३	महुअं	१२	मिहं	४३, ९९

मिचं	२२	मूलावभो	११५	रयर्थ	५३
मियतण्हा	१००	मेहला	५५	रसाभलं	५१
मियसिराभो	१००	मेहो	५५	रसायलं	५३
मिथंको	१००	मोडं	४१, ५७	रस्सी	६७, ८०
मिरिथं	२९, ८४	मोछा	४१	राभो	३२
मिछाह	१३४	मोललं	१५	राईसर	१४
मिलानं	८१, १३४	मोसा	४६, १०३	राउलं	१३
मिछिऊओ	३४	मोसावभो	४६	रापुसि	९
मिहुणं	५५, ११५	मोरो	३६	रामऊण्हो	९७
मीलं	२६	मोहो	३६, १३८	रामा इभरो	९
मुहंगो	१९, ४६, ८४	मंजरो	१७, १३८	रामे अरो	९
मुको	७२, १३७	मंढूको	७१, १३७	रायवहयं	७१, १२९
मुरगु	२२	मंसलं	१९	राहा	५५
मुडी	७४, १३०	मंस्	१७	रिऊ	४७, ५२, १०५
मुढालं	४४	मंसं	१९, ३३, ८७	रिक्खो	१२४
मुडं	१७	रभभो	५१	रिक्खं	७३
मुणालं	१०२	रभजं	६०	रिछो	१०३, १२५
मुणिइणो, मुनीणो	८	रभढं	५१	रिऊं	७३
मुणिईसरो, मुणीसरो	८	रभणं	५२	रिण्णु	४६, १०५
मुत्ताहलं	६१	रभर्यं	५९	रिणं	४६, १०५
मुत्तो	७७	रभउा	७७	रिखी	४६, ४७
मुत्तो	७७	रउणी	१२३	रिसहो	४६, १०५
मुत्तं	६७	रचो	६८	रिसी	४७, १०५
मुणिदो	३४	रमणिजं	६३	रुमखादो जाभभो	१२
मुसा	४६, १०३	रमणीअरो	१२	रुक्खो	१३८
मुहलो	६४, १२०	रमणीअं	६३	रुण्ण	१३८
मुहं	५५	रमाअदीणो	७	रुदो	६८
मुहुत्तो	७७	रमाआरामो	७	रुप्पिणी	७३, १३०
मुंजायणो	४९, १०८	रमाउवचिअं	९	रुण्यं	७३
मूओ	७२	रमारामो	७	रेभ	६१
मूसओ	३५	रमादीणो	७	रोअदि	५१
मूसलं, मुसलं	४०, ९५	रमोवचिअं	९	रुक्खणं	७२, १२४
मूसा	४६, १०३	रयणुज्जल	१४	रुग्गो	६७

वाउल्लो	७१	विच्छद्दो	१२६	विलगईसो, विलयेसो	९
वाणारसो	१३८	विच्छुओ	३६	विलिअं	२८, ३८, ९३
वायरणं	६६	विछिओ	१७, १२७	विलीअं	८५
वाया	२४	विछिओ	१७	विल्लं	३५
वारणं	६६, १२३	विज्जं	१२६	विसद	१२२
वारिमई, वारीमई	११	विज्जा	७७	विसओ	६२, ११८
वारं	३४	विज्जु	२४	विममद्वअं	८७
वावओ	५८	विज्जुलामघमिअं	९	विसो	४३, ९९
वास	९	विज्जं	७५, १२५	विसेमुअओगो	१४
वासईसरो	९	विज्फो	१६	विसेसो	६६
वामा	२७	विज्फो	१२८	विसो	४४
वासेणोल्ल	१०	विटं	४६, १०१, १०३	विदत्थी	११४
वासेसी	१९	विट्ठी	४६, ९९	विदप्फई	४६, १००
वासो	२७	विट्ठो	९९	विहल्लो	७०, १२१, १३१
वाहइ	५५	विडवो	४६, ५७	विहा	४३, ९९
वाहा	५५	विड्डा	७१, १३७	विहिओ	७१
वाहिअं	०९	विट्ठो	४३	विहिसो	७१
वाहिल्लं	४३	विण्णणं	७८, १२९	विह्मओ	४३, ९९
वाहो	१, १३७	विण्णू	८६	विहीणो	३९
विअ	१२	विण्ह	३५, ७९, १३२	विह्मो	३९, ९४
विअड्डो	१३६	वित्तिण्हो	४३	वीरिअं	१३५
विअणा	१०५	वित्ती	४३, ९९	वीसओ	२७
विअण	२८, ८५	वित्तं	४३, ९९	वीसमइ	३६
विआणं	५१	विस्सओ	४३	वीससइ	२७
विआओ, विओहो	५२	विद्वकई	९९	वीरा	१९, ९१, १३८
विइज्जो	११९	विडो	१०१	वीसाणो	२७
विइण्हो	९९	विप्पो	५४	वीसामो	२६
विउअं	४५, १०२	विम्हओ	८०, १३२	वीसुं	१५, ९६, २७, ८५
विउदं	६०	विम्हयणिज्जं	६३	उट्ठी	४६, १०२
विउल्लं	५२	विम्हदणीअं	६३	उट्ठो	४६, १०२
विकासरो	२७	विम्भल्लो	१२१, १३१	उट्ठो	४४, १०१, १०२
विक्रयो	२१, ६८	विरहङ्गो	३४	उत्ततो	१०२
विञ्चुओ	४३, ९९	विल्लया	१३८	उच्चान्तो	४५

हुंदा	४६, १०२	वंसिओ	३३	सण्ह	६८, ९६, १३३
हुंदायया	४६	वंसियो	८८	सण्णा	६९
हुंदावणो	४६, १०२	वंसो	६६	सणिच्छो	१०६
हुंहुं	३०	समदं	५१	सत्तरी	११४
हुदफफइ	१३१	समयं	६१	सत्तावीसा	११, २२
वेअणा	१०६	समा	३३	सत्तुअं	१९
वेआलिओ	४९	सइ	३३, ४३, १००	सहो	६६, ६८, १२२
वेकुंठो	५७	सइरं	१०६	सद्दा	२३
वेज्जं	७७	सई	५१	सन्तो	१५
वेज्जो	१०७, १२८	सठण	५३	सण्णओ	६७
वेटं	४६, १०१, १०३	सउरा	५०, १०८	सण्णो	५४
वेडिसो	२८, ८६, ११४	सउहं	५०, १०८	सण्हं	७९, १३०
वेणुछट्टी	६३	सकलं	११०	समत्तं	७९
वेणू	११२	सकअं	१९	समरी	६१
वेण्ह	३६	सकयं	७४	समत्तं	६१
वेरं	४८, १०७	सक्यारो	१९, ७४	समरो	१२१
वेल्ही, वल्ली	३०, ८६	सक्यालो	६४, १२०	समवाओ	५२
वेल्ह	११२	सहो	२१	सम्मं	१५
वेल्हवणं	१४	सक्कं	१५, २५	समिद्धी २७, ४४, १००	
वेल्हळ	३५	सज्जो	१६	समुदो	६८
वेसमणो	१२१	सवायं	५२	सम्मं	२६
वेसळिअं	१३८	सचं	७५, १२६	सयओ	५७, ११२
वेसयणो	४९, १०७	सच्छाहं	१२०	सयळ	८
वेसिओ	४९	समो	२२, ६७	सरअ	२५
वेसिअं	१०७	सज्जसं	१२६	सरयहं	१०७
वेसंपाअणो	४९	सज्जमाओ	७८, १२८	सरि	१०५
वेसंपायणो	१०७	सज्जओ	१२८	सरिअ	२४
वेहुअं	४८, १०७	सज्जं	१२८	सरिअओ २८, ७३, १०५	
पोफगं	४२	सज्जमा	१६	सरिया	२४
पोटं, पोण्टं	४६, १०३	सठा	५७, ११२	सरितो	१०५
पंफ, पंफ	१७	सठो	५६	सरो	६७, ८०
पंफइ	१७	सद्धा	१३६	सरोदई	१००
		सण्हो	१६, ६६	सयओ	५१

सयहो	५४, ५५	सारसं	२७	सीतां	२७
सध्व	८	साह	५५, ११७	सीहो	१९, ६६, ८१
सध्वभो	१५	साहमवो	८	सुभद	८५
सध्वभो ३०, ६८, १३३		सिभाछो	१००	सुभरिमो	१३, ५१
सध्वणू ३०, ६८, ८६		सिगारो	४२, १००	सुभरी	५९
सध्वोदय	९	सिगं	१०१	सुभलं	१३५
सहभरो, सहभारो	५३	सिघ	१९, ६६, १२३	सुभलं	५९, ११४
सहकारो	५३	सिद्धी	४२, ७४, १००	सुभयं	११५
सहचरो	५३	सिद्धं	४४, १००	सुभयुर्म	५२
सहरी	६१	सिद्धिछो	६४, ११५, १२०	सुभयुर्मयो	८१
सहलं	६१	सिद्धिर्ल	९१	सुभभो	५२
सहस्सातिरेक	७	सिद्धिदो	६७	सुभयत्तनं	४९
सहा	५५, ११८	सिद्धो	१३२	सुभद	१३०
सहावो	५५, ११८	सिद्धं	६७	संघो	१०८
सहिभो	१२३	सिद्धूरं	३५	सुभदा	८९, १२२
सही	५५	सिद्धयं	१०६	सुभो	२२
साभरो	५१	सिद्धं	१०६	सुभरिसनं	१३४
साऊभयं	८	सिद्धी	१३८	सुभोभनी	१०९
सामभो	३३, ८८	सिभा	६१	सुभं	१२२
सामज्ज	१२७	सिमिनी २८, ६५, १२१		सुभद्विभं	४९, १३५
सामा	१२२	सिगछो	४३	सुभद्वै ३०, ४९, ७०	
सामिद्धी, समिद्धी	८४	सिरिसो	३८, ९३	सुभयणभो	१०९
समोभभं	९	सिरोविमणा	१०७	सुभियो	२८
सापरो	५१	सिरं	२३	सुभदा	८०, १३२
सारिखं	१२४	सिखदो	९७	सुभदा	१३०
सारिखजो	२८, ८४	सिखाखिभं	११	सुभो	७०
सारिखजं	७३, १२५	सिखिद्धं, सिखिद्धं	८१ १३५	सुभद	३१
साखवाहणो	११४	सिखिद्धा	१३५	सुभयिभो	४९
साखहणो	१३	सिखेसो	१३४	सुभेकभं	८२
सायगो	११०	सिखोभो	८१, १-५	सुभेचना	८२
सावो	५४	सिखिनी	२८, ६५, ८५	सुभयं	१३८
सासज्जसा	९	सीभरो	सीभरो, ११०	सुभभा	४०, १११
सासाणज्ज	७	सीहरो	११०	सुभमदं	८७

सुहुमं	८१	सोद्वह	५५, ६६, ११८	संभट्टो	१३६
सुण्डो	४९	सोद्वर्ग	४९	संमुह	१९
सूयर्ष	५१	सोद्वर्ण	५५	सवच्छ्रो	१२७
सूर्य	५१	संकंतो	६९	संवट्टिअं	७६, १२९
सूरिओ	१३५	संकरो	५२	संवत्तओ	७६
सूरिसो	१३	संक्खा	१११	संयत्तणं	७६
सूद्वओ	४०, ९५, १११	संखो	१६, ५६	संवरो	५२
सूसासो	१०८	संगं	१०१	संयुअं	१०३
सेहव	४७	संधारो	६६	ससिद्धिओ	३३, ८८
सेजा	३०, ७८, ८६, १२८	संजतिओ	८८	संहारो	६६
सेदूरं	३५	संजत्तिओ	३३	हस्थो	७८
सेमालिभा	६१	संजदो	५९	हदो	५९, ६८
सेर्ष	१०६	संजमउवघाय	११	हरडइ	५८, ९२
सेळग जक्खमारुहण	८	संजमो	६२	हरो	२९, १३८
सेला	१०७	सजा	६९, १३४	हलहा	३५, ९०
सेलो	४७	संजादो	६०	हलही	३५
सेन्वा	७१	संजोओ	६२	हलिमारो	१३२
सेसो	६६	संक्का	१६, ६९	हलिओ	३२, ८९
सेहालिभा	६१	संठविओ	८८	हलिहा	१२१
सोअमव्वं	४०, ९४	संठविअं	३२	हलिहो	६४
सोईदिय	१४	संडो	४९, १२२	हलुअं	१३८
सोचिअ	७२	संणा	७८, १३४, १३९	हिअअं	४३, १००
सोचवा	७०, १२६	संदेअमोचिअ	९	हिअं	४३, १२३
सोचिचभा	८१	संदेओ	७५	हीणो	३९, ९४
सोचम्	७१	संपभा, संपया	२४	हीरो, हरो	३९, ८५
सोमालो	६४, १२०, १३८	संपअं	६०	हुअं	७१
सोमो	६७	रूपदि	६०	हुअं	७१
सो य, सो अ	५३	संफस्वो	२७	हुणो	३९, ९४
सोरिअं	१३५	संफासो	२७	हेट्ठिमउगरिव	१०
सागद, युगद	८७	संडुदी	५९	होहदद	१३

परिशिष्ट २

लिङ्गानुशासन एवं स्त्रीप्रत्ययप्रयोगानुक्रमणिका

अजा	१४२	पसा वादा,	रादगं	१४१	
अओ	१४७	एसो बाहो	१४२	राणई	१४३
अचल	१४३	पसा महिमा,	रात्तियो, रात्तिवा,		
अचउी	१४०, १४१	एसो महिमा	१४१	रात्तियाणी	१४६
अचउीई	१४०	ऊअली	१४३	गट्टई	१४३
अचउं	१४१	कचउओ-कचउरी	१४६	गिहउइ, गिहयणी	१४५
अयलो-अयला	१४७	करइ, कारइ	१४१	गुणो	१४१
अहिउइ-अहिउणी	१४६	कामुओ-कामुआ,		गुणं	१४१
आपरियाणी	१४४	कामुई	१४६	गोणा	१४४
आपरिओ-आपरिआणी,		काछी	१४३	गोरी	१४३
आपरिआ	१४६	काछी-काछा	१४४	गोवाळिआ,	
इरपी	१४६	किछो, किछरी	१४६	गोवाळओ	१४६
इमाणं-इमीणं	१४४	किसोरी	१४३	गोवो, गोरी	१४६
इमीए-इमाए	१४४	कोए, काए	१४४	गंठी, गंठी	१४२
ईदाणी	१४४	कीओ-नाओ	१४४	गंघिओ, गंघिआ	१४६
ईदो-ईदाणी	१४६	कीसु-कासु	१४४	घोडी	१४३
उवज्जायाणी	१४४	कुंड़ी, कुंडा	१४४	चउरा	१४३
उवज्जाओ-उवज्जाया-		कुमारी	१४३	चउर	१४०
उवज्जायाणी	१४६	कुंरुची, कुंरुचरा	१४३	चउआ	१४२
एईए-एआए	१४४	कुंरंगी	१४३	चउओ, चउआ	१४७
एईणं-एआणं	१४४	कुलो	१४०	चन्दसुहो, चन्दसुही	१४६
एसा अचउी	१४०	कुलं	१४०	चरम	१४०
एसा अंजली,		कुसला	१४२	चयला	१४२
एसो अंजली	१४२	कुसी, कुसा	१४४	चउओ	१४७
एसा गरिमा,		कुंभआरी	१४३	चोरिओ, चोरिआ	१४२
एसो गरिमा	१४१	कुंभआरो	१४६	चंदाळी	१४३
एसा पुत्तिमा, एसो		कोइला	१४२	छन्दो, छन्दं	१४०
पुत्तिमा	१४१	खग्यो	१४१	छाया	१४४

छाही	१४४	पओ	१३९	साआ	१४६
जम्मो	१३९	पढ	१४६	माउलो, माउली,	
जगणाणी	१४४	पडी	१४३	माउलाणी १४४, १४५	
जसो	१३९	पढ, पढन्ती	१४६	माणुसो, माणुसी	१४५
जागवदी	१४४	पढमो, पढमा	१४७	माइणो, माइणी	१४६
जीओ, जाओ	१४५	पढमा	१४३	माइण्यो, माइण्य	१४०
जुवा, जुई	१४५	पण्हा, पण्हो	१४१	मिडाणो	१४४
जंघुई	१४३	पडिई	१४३	मुगि, मुणी	१४५
जमणो, जमण	१४०	पाउसो	१३९	मुसिया	१४५
जई	१४३	पाणिमहीदा	१४४	मंडहरगं, मंडहरगो	१४१
जायणी, जायिका	१४७	पाणिमहीदी	१४४	मंडली	१४३
तमो	१३९	पिओ	१४६	रक्खसी	१४३
तरणी	१३९	पीवरो, पीवरी	१४६	रस्सी, रस्सी	१४३
तरणी, तरणो	१४७	पुई	१४१	रायर, राणो	१४५
ताओ, तीओ	१४४	पुत्तवई	१४३	रन्जा, रन्खाइ	१४१
हुअंसी	१४५	पुरिसो	१४६	रहो, रहानी	१४७
तेओ	१३९	वाळओ, वालिआ	१४६	रदाणी	१४४
थली	१४३	वाला	१४२	रोअगो	१४०
थली, थला	१४४	वीवो, वीया	१४७	वअणो, वअण	१४०
हुक्खा, हुक्खाई	१४०	वअणी	१४३	वरघी	१४३
देवा, देवाणि	१४१	वहिणी	१४६	वज्ज	१४२
घणवई	१४३	अज्जा	१४३	वम्मो	१३९
घीवरी	१४६	अवाणी	१४४	वयं	१३९
घीवरो, घीवरी	१४५	भवो, भवाणी	१४७	बिउसो, बिउसो	१४५
नडो, नडी	१४६	भागा, भागी	१४४	बिडाली	१४३
नम्मो	१३९	भायणा	१४०	बिही, बिही	१४२
नई	१४०	भायणाई	१४०	घोया	१४३
निउणा	१४३	भाया	१४६	बुत्तिगारो, बुत्तिगारी	१४५
निउणो, निउणा	१४७	मई	१४३	सम्मं	१४०
निसाअरी	१४३	मऊरो, मऊरी	१४६	सरओ	१३९
निही, निही	१४२	मच्छो, मच्छी	१४५	सरो	१३९
नीली, नीला	१४४	मलिणा	१४३	सज्जाणी	१४४
		महिखी	१४७, १४३	सहा, सदी	१४५

सारसी	१४३	सुदा, सुहो	१४५	सूयरी	१४३
साहणी, साहणा	१४३	सुझरी	१४३	सेट्टि, सेट्टिनी	१४६
साहु, साहु	१४५	सुप्पणहो, सुप्पणहा,		संखपुष्को, संखपुष्की	१४७
सियाली	१४३	सुप्पगद्दी	१४७	हत्थि, हत्थिणी	१४६
सिरीमई	१४३	सुप्पगद्दी, सुप्पणहा	१४४	हरिणी	१४३
सिरं	१४०	सुमणं	१४०	हलद्दी, हलहा	१४४
सीसो, सीसा	१४६	सुपुसा, सुपुसी, सुपुसो	१४५	हसमाणी, हसमाणा	१४४
सीही	१४३	सुयणमारो,		हंसी	१४३
सुत्तमारो, सुत्तगारी	१४६	सुयणमारो	१४६		

परिशिष्ट ३

अव्ययप्रयोगानुक्रमणिका

अओ	२१६	अत्थि	२१५	अहव	२१६
अइ	२१५	अत्थं	२१५	अहवा	२१६
अईओ	२१४	अनुमई	२१४	अहा	२१६
अईव	२१५	अपरजु	२१५	अहिममर्षा	२१४
अगओ	२१५	अप्पणो	२१५	अदिप्पाओ	२१४
अगो	२१५	अप्पव	२१६	अदिरोइइ	२१४
अच्चवत्तं	२१४	अभिरुण	२१६	अहीइ	२१४
अज्ज	२१५	अभितो	२१६	अहे	२१६
अज्झाओ	२१४	अभिहणइ	२१४	आयन्तो	२१५
अण, मज्	२१५	अळादि	२१६	आयाता	२१५
अणुगमइ	२१५	अळा	२१६	आवि	२१६
अणुजाणइ	२१४	अवहरइ	२१४	आसमुइ	२१५
अणुहरइ	२१३	अवमाणो	२१४	आहच्च	२१६
अणत्तरं, अणयं	२१५	आवरि	२१६	आहरइ	२१३
अणमण्णं	२१५	अवस्सं	२१६	आअरइ	२१४
अणण्हा	२१५	अस्सइ	२१६	ओअरो	२१४
अरुथ	२१५	अहत्ता	२१६	ओआसो, अययासो	२१४

त	२१७	पर्येद	२१४	त्रिभुज	२१४
सजहा	२१७	परोपपर	२१८	त्रिभो	२१४
यू	२१७	पर	२१७	त्रिगा	२१८
दा	२१७	परमुर्व	२१८	त्रिहरद	२१३
दिवारत्त	२१७	पछिहो	२१८	बोमु	२१८
दुदु	२१७	पस्यद	२१८	वे	२१८
दुद्रे नियमद	२१९	पहरद	२१३	वेणभा	२१४
दुजयो	२१४	पाभो, पायो	२१८	व	२१८
दुहओ, दुहा	२१७	पातो	२१८	स	२१८
दुहयो	२१७	पि	२१८	सस्त्तं	२१८
धु	२१७	पिहं	२१८	सम्मा	२१८
णामओ	२१९	पुणरुत्तं	२१८	सद्धि	२१८
निगमओ	२१४	पुणरपि	२१८	सन्निवेमो	२१९
निम्मवत्तं	२१४	पुरओ	२१८	सपक्खि	२१८
निविसह	२१९	पुरस्था	२१८	सर्म	२१८
नीलहो	११४	पुरा	२१८	सम्मं	२१८
पगे	२१७	पुहं	२१८	सपा	२१८
पञ्चुभ	२१७	पेच	२१८	सयं	२१८
पञ्जा	२१७	यहिदा	२१८	सञ्चओ	२१८
पत्तिहो	२१९	यहिया	२१८	सह	२१८
परज्जु	२१७	यहि	२१८	सहमा	११८
परसये	२१८	भुजो	२१८	सिग, सिप	२१८
परापाओ	२१४	मगतो	२१८	सुभर	२१४
पराजिणद	२१४	मणव	२१८	सुवरिय	२१८
पत्तिहो, परिहो	२१९	मा	२१८	सुवे	२१८
पत्तिगारो	२१९	सुह	२१८	सूओ	२१४
पत्तिमा	२१९	सुता	२१८	सेधं	२१८
पडिरुवं	२१७	मोदवत्ता	२१८	सत्तिरद	२१४
परिगमद	२१९	व्हो	२१८	सत्तिचं	२१४
परितो	२१८	रहो	२१८	ह्वं	२१८
परिवुओ	२१९	रहु	२१८	हेहा	२१८
परिहरद	२१३	यहवतो	२१४	हं	२१८
परप्परं	२१८				

परिशिष्ट ४

कारकप्रयोगानुक्रमणिका

अद्देवा किमणो २३७	कों अत्थो पुत्तेण... २३९	णई अणुवसिमा सेना २३७
अणुहरिं सुरा २३७	कोहत्तो मोहो अहिजाअह २४१	णाणं २३९
अणुउद्धिं अणुजा व २३८	गमणेण रामं अणुहरह २३८	सस्स...पंसिआ २४१
दीवह २३८	गवाणं गोसु वा सामी २४२	सस्स...रोयह २३९
अज्झणेण वसह २३८	गयाणं गोसु वा पमुओ २४२	तिणेण...हसराणं २३९
अज्झायेणत्तो पराजयह २४१	गमे वसामि २४३	सिलेसु तेलं २४२
अलं मल्लो मल्लस्स २४०	गामं गळह २३६	चिसु...पुद्दी २४३
अत्तेउरे रमिडं आगयो २४३	गामं समया २३७	सिस्सा सुद्धस्स भरिमो २४२
राया २४३	गोत्तेण गगो २३८	सुह...वंगाणि २४१
अन्नस्स हेउस्स वसह २४१	गोरी...सहाहह २३९	सेसिमेअमणा इण्णं २४२
अहिओ कित्ताणं २३७	गोवी...चिहह २३९	तेणं काळेणं २३९
अहिचिहह वहुउटं हुरी २३६	गोरी सवह २३९	तेणं समणं २३९
अहिनिवसह सम्मगं २३६	घिस्स मुक्का २४२	दुहाण को न धीहह २४१
अहिउमह वहुउटं २३७	घोरओ धीहह २४१	दुवाख...सुगह, २३८
अत्थं चिहह २४६	घोरस्स धीहह २४१	देवदत्तो...नहाति २३८
आवसह वहुउटं २३७	घोरेण धीहह २४१	देवस्स देवाय नमो २४०
इअराई...सद्धिआण २४२	जडाहि तावसो २३८	दडेण घडो जामो २३८
एत्थंतरम्मि...त्ति २४३	जळत्तो २३८	धणस्स लुद्धो २४२
फडे आसह कागो २४२	जळेन २३८	धम्मत्तो पमायह २४०
कण्णेन बहिरो २३८	जलं २३८	नमो माणस्स २४०
काअस्स अंगाणि पसंसेह २४१	जलं विना...सखह २३८	नयरे न जामि २४३
कामत्तो कोहो अहिजाअह २४१	जिओ २३९	निरुहा लंकं २३७
	झाणं झाहअह २३६	पआणं सुत्थि २४०
		पहईअ चारु २३८

पञ्चुलो	२३५
पयेन धोदनं भुञ्जइ	२३६
परिजलो' 'चिह्नइ	२३७
परिओ क्रियणं	२३७
पापण रंजो	२३८
पायणो दृग्गच्छइ	
विमइ वा	२४०
विमरणं सुहा	२४०
विमरेण' 'सण्णणइ	२४८
विमं रामेण,रामं वा	२३८
पुण्णेण विट्ठो हरि	२३८
पुणेण सदाभओ पिआ	२३६
पुण्यकं पडइ	२३६
पुण्णार्णं तिहइ	२३९
पालकस्स मोअभा	
रोअस्ते	२३९
पंभगस्स दिअं सुदं वा	२४०
अणहस अत्ताय वा पाइ	
मोरप्पं हरी	२३९
अत्ती णाणाय कप्पइ	२४०
अत्ती णाणाय संवज्जइ	
जाअइ वा	२४०
अत्तो विसलुं पडि	
अणु वा	२३७
अम वर विचारां रोपइ	२३९

माणयअं धम्मं तामइ	२३६
माणयअं पदं पुच्छइ	२३६
मासेसु वस्सं वषडइ	२३५
मुत्तिणो हरिं भजइ	२४०
मुत्तिस्स, मुत्तिणं देइ	२४०
मोअस्ते इच्छा अत्थि	२४१
मोहणं अनुमच्छइ हरी	२३७
रत्तेण महुरो	२३८
रामत्तो	२३८
रामेण पायेन हओ	
पालो	२३७
रामो जलेन कउं	
पच्छाछइ	२३७
रामो कइहत्तो बोहर	२४१
रामो कइअइ	२३९
दासो मोचिअइ	
कण्णइ	२३८
छम्माणो रामेण	
साअं गच्छइ	२३८
रच्छी हरिं पडि	
अणु वा	२३७
वच्छं पडि विट्ठुअइ	
विट्ठु	२३७

रच्छं रच्छं पडि विट्ठु	२३७
वाउ	२३७
विट्ठुअणं' 'मेओअउ	२३६
विट्ठुअओमं भाइ रत्ति	२३६
विट्ठाय वा विट्ठस्स	
मारं देइ	२३९
वोअं पडइ	२३६
मत्तओ अयं	२४१
सत्तेण मत्तस्स वा	
परिणीतइ	२४०
सयंयु	२३५
मामो अस्सयइत्तो	
मइं धरइ	२३९
सोमापरस्स जइ	२४१
सुत्तिअं वच्छं	२३७
सुं यु आइ	२३८
संजइ	२४०
हरिणो गमो	२४०
हरिणो रोपइ अत्तो	२३९
हरिं भजइ	२३६
हरी वइअइं वययइ	२३७
हा विट्ठुअणं नत्तं	२३७

परिशिष्ट ५

समासप्रयोगानुक्रमणिका

अहपल्लंको	२४८	आरूढवानरो	२६०	गिहजाओ	२४७
अहमदगो रहो	२६२	आसंवरा	२६०	गिहस्थो	२४८
अकथं	२४८	ईसरकडे	२४६	गुडमिस्त	२४६
अरिगपडिओ	२४६	ईदियातीतो	२४६	गुणसंपन्नो	२४६
अजियसंतिणो	२६३	उत्तरगामो	२४६	गावसभो	२४८
अणवज्जो मुणी	२६२	उन्नेलो	२४८	घोरबंधचेरो, जंबू	२६०
अणवज्जं	२४८	उसहवीरा	२६३	घडककसार्यं	२६०
अणायारो	२४८	पुगदंतो	२६१	घडदिसा	२६०
अणाहो	२६६	फण्णवो	२४८	घडम्मुहो	२६१
अणिद्धं	२४८	फट्ठावण्णो	२४६	घक्कपाणी	२६१
अणीसो	२४८	कडाहपक्को	२४७	चत्तकहस्थो, भरहो	२६१
अणुजमो, पुरिसो	२६२	कण्हपक्खो	२४८	चन्दमुहं	२४९
अणुयरा	२६२	कप्तामुहं	२४७	चरणधणा, साहवो	२६१
अदिद्धं	२४८	कमलनयणा	२६१	चोरभयं	२४७
अदेवो	२४८	कम्मवुसलो	२४७	चंदमुही कप्ता	२६१
अज्ञाणसिमिहं	२४९	कयत्थो, कण्हो	२६०	चंदायणं	२४९
अज्ञाणभयं	२४७	कलससुत्तणं	२४६	जिअकामो, अकलंओ	२६१
अपच्छिडमो	२६२	कलात्तुसलो	२४७	जिअदरीसहो, गोयमो	२६०
अर्धभणो	२४८	किसणसिओ	२४६	जिअकामो, मद्दादेवो	२६०
अभयो	२६२	कुंभआरो	२४८	जिआरिगणो, अजिओ	२६१
अलोमो	२४८	कुंभनद्धिआ	२४६	जिअंदिओ, मुणी	२६०
अउरकायो	२४९	कुमारगम्भिणी	२४९	जिअसरिसो	२४६
अवरओ	२६२	कुमारीसमणा	२४९	जिअ	२६४
अविरहं	२४८	कुसुणसरिसो	२४६	जिअन्दो	२४७
असत्थम्	२४८	गज्जाणणी	२६१	जिओत्तमा	२४७
असणपाणम्	२६३	गंभीरकरो, अज्जुओ	२६१		
अहिओ	२४८	गणिआउकावओ	२४७		
आवारनिउणो	२४६	गवहिअं	२४६		

जोवाजीवा	२५३	निलच्छो	२५२	महारायो	२४९
जहभिणो	२४६	निध्वया	२४८	महारीतो	२४८
सप्तसंज्ञ	२५३	नीयगा	२४८	मट्टमयो	२४६
सप्तधर्म	२४९	नेच्छाई	२५४	माउगरिमी	२४६
तिणोहो हरो	२५१	पत्तनागो मुणो	२५१	निध्वयगा	२५१
तिणोहो	२५०	पत्तपुण्ड्रकानि	२५३	मेवाइमहो	२४६
तिणोयं	२५०	पपुणो जगो	२५३	मोरद्वनानं	२४६
तिणोया	२५०	परपटम	२४९	रत्तवहो	२४६
धेणभीभो	२४७	परमपर्य	२४८	रत्तवीर्य वर्य	२४९
धोवमुत्तो	२४७	परिज्जया परिहा	२५२	रत्ततोमो	२४८
धंभकट्ट	२४६	पल्लयमभो	२४६	रत्तगुणं	२४६
दवाठणा	२४६	पापरिभो	२४८	राभदोवभमोई	२५२
देवदानवगंध्या	२५३	पाययो	२४८	रिणमुत्तो	२४७
देवपुज्जभो	२४७	पायनासभो	२४८	रुरसमागा	२४६
देवदेराभो	२५३	विभरा	२५४	रुयमोद्वगमोभ्रगानि	२४६
देवमदिरं	२४७	पीभवर्थ	२४८		२४६
देवपुई	२४७	पीआलो	२५०	सादनाहा	२५३
देविश	२४७	पुण्णपागोई	२५३	खेहुमाण	२४७
दिण्णवया साहवो	२५१	पुण्णपाईजं	२४९	लोममुत्तो	२४६
दिरगभो	२४६	पुट्टकायो	२४९	लोपदिभो	२४६
दंसणमट्टो	२४७	पट्टलिणो	२४६	वरयभयं	२४७
घणसामो	२४९	पचयतो सीहो	२४६	वज्जोईहो	२४९
धम्मपुत्तो	२४७	बहुअण्णिभो	२४६	विज्जाठानं	२४७
मट्टमोई, साह	२४७	बट्टमुई	२४७	विज्जादग्गो	२४७
मट्टदंसगो मुणो	२५१	वाण्णिरो	२४६	विज्जाद्विरो	२४७
नम्मवा	२४८	वानरमोरहसा	२५३	विद्वरा	२५३
नरसेट्टो	२४७	वंभलोचमा	२४७	वीरजिनिदो	२४९
नरिदो	२४७	वंभउदिअं	२४६	वीरजिन्नो	२४८
नरत्तं	२५०	भस्साभस्साणि	२५३	वीररो	२५०
नाणदंसणधरितं	२५३	भट्टागारा जना	२५०	वीरस्वभो	२४६
नाणधर्म	२४९	भट्टपयो	२४६	वुत्तिभारो	२४८
नाण्णभो	२४७	भस्सभो	२४८	समद्विज	२४८
निककासी	२४८	भूयवधो	२४६	समवत्तंमर्मादो	२५०
निहवो जगो	२५२				

सभापदिओ	२४७	साहुवंदिओ	२४६	सुदपत्तो	२४६
समत्थो	२४८	सिक्कओ	२४६	सुंदरपडिमा	२४८
समाहिदाणं	२४७	स्त्रीउपहं जलं	२४९	सेयंबरा	२५१
सव्वण्णु	२४८	सुत्तआरो	२४८	संजमधणं	२४९
समुरा	२५४	सुत्तसिद्धा गुहा	२५१	संसारभीओ	२४७
सारासारं	२५३	सुदपम्प्यो	२४८	हत्थपाया	२५३
सावअसारविआओ	२५३	सुरासुरा	२५३	हंसगमणा	२५१
सामूअहओ	२५३	सुहदुक्खाहं	२५३		

परिशिष्ट ६

तद्धितप्रयोगानुक्रमणिका

अण्णहा	२६१	अन्धलो, अन्धो	२६०	अया	२६१
अस्तिअओ	२६१	इत्तिअं	२५८	अण्णदुत्तो	२५७
अप्रचो, अन्नदो, अन्नओ	२५७	इओ, इदो, इओ	२५८	अहि, अह, अत्थ	२५८
अप्प, कणीगत, कणिट्ठ, कणिट्ठम	२६२	ईसाल	२५७	काणीणो	२६१
अप्प, अप्पअर, अप्पअम	२६१	उज्जअ, उज्जअअर, उज्जअअम	२६१	कुत्तो, कुदो, कुओ	२५८
अप्पणपं	२६०	उत्तरिअलं	२५६	केत्तिअं	२५९
अप्पुअलं	२५६	पुत्तो, पुत्तो, पुत्तओ	२५७	केत्तिलं	२५९
अण्णुअरं	२५६	परत्तो, परओ	२६०	केरुं	२५९
अण्णुअरं	२५६	पुत्तहा	२५९	कोत्तेयं	२६१
अपरिअओ	२५०	पुत्तसि	२५९	गुह, गुहअर, गुहअम	२६२
अदिम, अदिमअर, अदिमअम	२६१	पुत्तसिअं	२५९	गच्छिओ	२५७
आरितं	२५१	पुत्तसिअं	२५९	गामित्थं	२५९
अण्णुअरं	२५८	पुत्तसिअं	२५९	चंदओ, चंदो	२५८
अन्तिअ, नेरोअर, नेरिअ	२५२	पुत्तसिअं	२५९	छादण्णो	२५७
		पुत्तसिअं	२५९	जजालो	२५६
		पुत्तसिअं	२५९	जणो, जरो, जओ	२५८
		पुत्तसिअं	२५९	जग	२६१

अदि, जद, जस्थ	२५८	धणरंतो	२५७	पुण्डिमा	२५६
जामदल्लो	२५७	धणी	२५१	पुरिल्लो, पुरा	२५८
जेद, जेद्वर, जेद्वम	२५२	धणी, धणिगर,		पुरिल्ल, पुरिल्ली	२५६
जिचिअं	२५८	धणिअम	२५२	फडाळो	२५७
जेचिअं	२५९	धम्मी, धम्मीअस,		चहु, भूयम, भूदद	२५२
जेचिलं	२५९	धम्मिद	२५२	चहुअं, यहुअं	२५८
जेदहं	२५९	नवल्ली, नगो	२५०	चहुळ, चंदोअस,	
जोणहालो	२५७	नयहल्ली	२५६	चंहिद	२५२
तया	२५१	नेहाल्ल	२५७	चोहामणो	२५७
तवरलं	२५६	परगदिय, परगदियअर,		भत्तिरंतो	२५७
तरस्सो, तपस्सो	२५१	परगदियतम	२५१	भगया	२५९
सहि, सद, सस्थ	२५८	पड, पडुअर, पडुअम	२५२	भमिरं	२५९
सिरल, सिरलअर,		पल्लं, पल्लं	२५०	भिरलं	२५१
सिरलअम	२५१	पारकं	२५९	मदम, मदअस, मदद	२५२
तित्तिअं	२५८	पारं	२५१	मईयं	२५१
सिउत्तं	२५६	पल्लसिल्लो, पल्लसो	२५८	मउअत्तया	२५९
सेत्तिअं	२५९	पहिओ	२५०	मगधं	२५०
सेत्तहं	२५९	पाचअ, पाचअअर,		मणियं	२५०
सेहिलं	२५९	पाचअअम	२५२	महा, महत्तर, महत्तम	२५२
मुम्हकेरो, मुम्हकेरं	२५९	पावी, पावीअस,		मागइत्तो	२५७
मुम्हचयं	२५९	पाविद	२५२	मिउ, मिउअर,	
धूल, धूलअर,		पिअ, पिअअर,		मिउअम	२५२
धूलअम	२५२	पिअअम	२५१	मीमालिअं	२५०
धोव, धोवअर,		पिअअमहो	२५१	मीसं	२५०
धोवअम	२५१	पितल्लो, पिआ	२५८	मुइअ	२५६
दण्णुल्लो	२५७	पीअलं, पीअलं, पीअं	२५०	मंणुल्लो	२५७
दणल्ल	२५७	पीणत्तं	२५६	रसाळो	२५६
दीदर, दीदरअस,		पीणत्तं	२५०	रादळं	२५१
दीदरअम	२५२	पीणया	२५१	रापकं	२५९
दीदरं	२५०	पीणिमा	२५६	रायणो	२५१
दुदत्तं	२५६	पुणमंतो	२५७	रोचिरो	२५९
दूर, दूरीअस, दूविद	२५२	पुण्णत्तं	२५६	एअालु	२५७
धणमणो	२५७				

लब्धालुभा २५७	सणिअं २६०	सोहामणो २५७
लज्जिरो २५५	सहालो २५७	सोहिल्लो २५७
विउल, विउलअर,	सयहुत्तं २५६	हणुमंतो २५७
विउलअम २६२	सव्वचो, सव्वदो,	हस्थुल्लो, हत्थो २५८
विउस, विउसअर,	सव्वओ २५७	हल्ल, हल्लअर,
विउसअम २६२	सव्वंगिओ २६१	हल्लअम २६१
विज्जुला, विज्जू २६०	सगय्या २६१	हसिरो २५५
विपारल्लो २५७	सहस्सहुत्तं २५६	हिअयअं, हिअयं २५८
वुद्ध, जायस, जेह २६२	सिरिमंतो २५७	हेट्ठिल्लं, हेट्ठिल्ली २५६

परिशिष्ट ७

यङन्त, यङ्लुगन्त और नामधातु प्रयोगानुक्रमणिका

अकळारप्,	चंकमइ ३१२	मेहाअइ, मेहाइ ३१४
अकळाराभाए ३१३	चंकमणं ३१२	रायाअए, रायाए ३१४
अत्ताअइ, अत्थाइ ३१३	चवळाअइ, चवळाइ ३१४	लालप्पइ, लालप्पए ३१२
अमराअइ, अमराइ ३१३	जसकामाअइ,	लोहिआअइ,
अलसाअइ, अलसाइ ३१३	जसकामाइ ३१४	लोहिआए ३१३
असनाअइ, असनाइ ३१४	जाजाअइ, जाजाअए ३१२	वरीवच्चइ, वरीवच्चए ३१२
अस्ताअइ, अस्ताइ ३१३	तणुआअइ, तणुआइ ३१३	वाआअइ, वाआइ ३१४
उअआअइ, उअआइ ३१३	तमाअइ, तमाइ ३१३	वापक्काअइ, वापक्काइ ३१४
उम्मणाअए,	थरथरैइ ३१३	वराअइ, घेराइ ३१४
उम्मणाए ३१३	दमदमाअइ, दमदमाइ ३१३	सहाअइ, सहाइ ३१३
ऊन्हाअइ, ऊन्हाइ ३१३	दुम्माअइ, दुम्माइ ३१४	सपन्नाअइ, सपन्नाइ ३१३
कट्ठाअए, कट्ठाए ३१३	घणाअइ, घणाइ ३१३	सासकइ, सासकए ३१२
करणाअइ, करणाइ ३१४	धूमाअइ, धूमाइ ३१३	सीदलाअइ, सीदलाइ ३१३
कलहाअइ, कलहाइ ३१४	नमाअइ, नमाइ ३१४	सुआअइ, सुआइ ३१३
कुरुकुराअइ, कुरुकुराइ ३१४	पुत्तकामाअइ,	संभाअइ, संभाइ ३१३
खीराअइ, खीराइ ३१४	पुत्तकामाइ ३१४	हरिआअइ, हरीअइ ३१४
गव्वाअइ, गव्वाइ ३१३	पुत्तीअइ, पुत्तीइ ३१३	हंसाअए, हंसाए ३१३
गुयआअइ, गुयआइ ३१३	पेरीअइ, पेरीअए ३१२	

परिशिष्ट =

कृदन्तप्रयोगानुक्रमणिका

अपराधं	३२२	कराविस्तृतो	३२३	कारिर्, ३२१
अधासादेत्तए	३२४	करारंतो, करारंतो	३२८	करंता, करंतो ३२८
अहिभरं, अहिजिजं	३२९	करिभो	३२०	किं ३२२
आकुटं	३२२	कस्तो	३२०	कुम्भकर्म,
आणत्	३२३	करिषा, करेसा	३२४	गुम्भजिजं ३३०
आयाए	३२७	करिषाण, करिषाण,		गुम्भिभरं, गुम्भिजं ३२९
आयाय	३२८	करेसाण, करेसाण	३२७	गुम्भिभरं, गुम्भिजं ३३१
आहारिषए,		करिश्	३२०	गुम्भिभरं ३३३
आहारिषए	३२४	करिस्मई	३२३	निम्भिभरं,
इकिटभन्, ३३१		करिस्संतो	३२३	निम्भिजं ३३०
इक्कजिजं	३३१	करिस्समानो	३२३	गुम्भिभरं,
उपरजिषए,		करेसए, करिषए	३२४	गुम्भिजं ३३०
उपपजिषए	३२४	कहिषा, करेसा	३२७	गसा, गसा ३२८
कई	३२९	काउभाण, काउभाण	३२७	गमिभो ३२०
कसा	३२३	काउं	३२७	गमिषए ३२४
कम्मगरो	३२३	काऊयं	३२७	गमिषा, गमेसा ३२०
कयं	३२९	कायजं, करिजं	३२९	गमिषाणं ---
करविजं	३२९	कासमानो, कारेमागो	३२८	गमेसां ३२०
करारमानो,		कारि	३२९	गमिषो ३२०
कावेमानो	३२८	कारिभ, कारेभ	३२९	गमिरो ३२०
कराविभ, कावेभ	३२९	कारिभं	३२९	गयं ३२१
कराविजं '३२३, ३२६		कारिउभाण, कारिउभाणं,		गहाय ३२२
कराविऊण,		कारेउभाणं,		गिलाणं, गिलाणं ३२२
कराविऊणं	३२६	कारेउभाण	३२६	गुम्भं ३२१
कराविषं	३२९	कारिउं, कारेउं	३२४, ३२६	गेयं ३२२
कराविइं	३२९	कारिऊण	३२६	घई ३२२
कराविउं, कराविउं	३२३	कारिऊण	३२६	पेयं ३२९
कराविस्समानो	३२३			

चेत्तुभाण, चेत्तुभाणं ३२७	कुंडुल्लिखय्यं ३२०	नायओ, नायगो ३२३
चेत्तूण, चेत्तूणं ३२७	तत्तं ३२१	निद्वियं ३२२
चलिओ ३२०	तरिअय्यं, तरणिज्जं ३२०	नेआ, नेता ३२३
चलितो ३२०	तीरिअय्यं, तीरणिज्जं ३२०	एयं ३२२
चलिदो ३२०	तुरिअ, तुरेअ ३२७	पडिअय्यं, पडणिज्जं ३२१
चंक्रमिअ, चंक्रमेअ ३२६	तुरिअं ३२०	पडिओ ३२०
चंक्रमिअं ३२०	तुरिअभाण ३२०	पडितो ३२०
चंक्रमिअं, चंक्रमेअं ३२४	तुरेअभाणं ३२८	पटिआ ३०२
चंक्रमिअभाण ३२७	तुरिअं, तुरेअं ३२७	पणहं ३२२
चंक्रमिअग ३२७	तुरिअण, तुरेअणं ३२७	पणणत्तं ३२२
चंक्रमेअणं ३२७	तुरितं ३२०	पणत्तं ३२२
चंक्रमितं ३२०	तुरिअं ३२०	पणवियं ३२२
चंक्रमिदं ३२०	धणिअय्यं, धणिज्जं ३२९	परुअिअं ३२२
चिट्ठअय्यं, चिट्ठणिज्जं ३२९	धणंधयो ३२३	परिअवां ३२३
छज्जिअय्यं, छज्जणिज्जं ३२०	धुणिअय्यं, धुणिज्जं ३२९	पट्टइत्तए, पट्टएत्तए ३२४
छिअिअय्यं, छिअिणिज्जं ३२०	इट्ठय्यं ३२१	पायओ, पायगो ३२३
छेत्ता ३२३	इट्ठुआण, इट्ठुआणं ३२८	पासिअए, पासिअए ३२४
जग्गिअय्यं, जग्गणिज्जं ३२०	इट्ठण, इट्ठणं ३२८	पिअिअय्यं,
जयं ३२२	इहं ३२१	पिअिणिज्जं ३२९
जाणिअय्यं,	इहइत्तए, इहएत्तए ३२४	पिअियं ३२२
जाणणिज्जं ३२९	इविअय्यं,	पुणिअय्यं, पुणिज्जं ३२९
जयं ३२०	इकअणिज्जं ३२०	पूअिअय्यं, पूअणिज्जं ३२०
जग्गिअय्यं, जग्गणिज्जं ३२९	इयं ३२२	पेयं ३२२
जायं ३२२	धरिअय्यं, धरणिज्जं ३२९	फाणिअय्यं,
जिअं ३२१	धुणिअय्यं,	फाणिज्जं ३२०
जीहिअय्यं,	धुणिज्जं ३२९	वग्गिअय्यं, वग्गणिज्जं ३२९
जीहिणिज्जं ३२०	नया, नया ३२८	पुअिअय्यं, पुअिणिज्जं ३२०
जुअिअय्यं,	नअिअय्यं, नअणिज्जं ३२१	पुअ्फा ३२८
जुअणिज्जं ३२१	नअिअय्यं, नअणिज्जं ३२१	पुअिअय्यं,
भाणं ३२०	नअिओ ३२२	पुअ्फणिज्जं ३२१
भाइं ३२०	नअिअय्यं,	वोअिअय्यं,
टिअ ३२२	नअ्फणिज्जं ३२०	वोअणिज्जं ३२०
		अगाअिअ, अगाअेअ ३२९

सखिमध्यं, सखणिज्जं ३३०
 सज्जं ३३२
 सडिअब्बं, सडणिज्जं ३३१
 समहिणोएत्तए, ३२४
 समहिणोएत्तए ३२४
 सरिअब्बं, सरणिज्जं ३३०
 सविअब्बं, सवणिज्जं ३२९
 साइट्टु ३२८
 सिद्धिअब्बं,
 सिद्धिणिज्जं ३३०
 सिद्धिअब्बं, ३२४
 सिद्धिअब्बं,
 सिध्यणिज्जं ३३१
 सुणिअब्बं, सुणिज्जं ३२९
 सुत्ता ३२८
 सुमरिअब्बं,
 सुमरणिज्जं ३३०
 सुयं ३२२
 सुस्सुत्तिअ, सुस्सुत्तेअ ३२६
 सुस्सुत्तिअ ३२०
 सुस्सुत्तिअभाण...
 सुस्सुत्तेअभाणं ३२६
 सुस्सुत्तिअ...
 सुस्सुत्तिअं ३२४, ३२६
 सुस्सुत्तिअ...
 सुस्सुत्तेअं ३२६

सुस्सुत्तिअं ३२०
 सुस्सुत्तिअं ३२०
 सोल्लिअब्बं,
 सोल्लिणिज्जं ३३०
 संखयं ३२२
 संपहाए ३२७
 संसट्ठं ३२२
 हउं ३२१
 हविअब्बं, हवणिज्जं ३३०
 हणिअब्बं, हणिज्जं ३२९
 हन्ता ३३३
 हयं ३२२
 हरिअब्बं, हरिणिज्जं ३३०
 हसायणिज्जं,
 हसायणीअं ३३१
 हसाविअब्बं,
 हसापित्तब्बं ३३१
 हसिअं ३२०
 हसितं ३२०
 हसिअं ३२०
 हसात्तिअं ३२१
 हसात्तिअं ३२१
 हसाविअं ३२१
 हसाविरो ३३२
 हसिअ, हसेअ ३२६
 हरिसिअब्बं,
 हरिमणिज्जं ३३१

हसिअब्बं, हसिणिज्जं ३३१
 हसिउभाण...
 हसेउभाणं ३२९
 हसिउं, हसेउं ३२२, ३२९
 हसिऊण... हसेऊणं ३२९
 हसिच्चा, हसेच्चा ३२७
 हसिच्चाण...
 हसेच्चाणं ३२७
 हसितं, हसेतं,
 हसितुं, हसेतुं ३२३
 हसिरा, हसिरी ३२२
 हसिरो ३३२
 हासिउं... हासेउं ३२४
 हउं ३०१
 हुणिअब्बं, हुणिज्जं ३२९
 हुयं ३२२
 हुयं ३२१
 हुयिअब्बं, हुयणिज्जं ३२९
 होइअ, होएअ ३२९
 होइउभाण...
 होएउभाणं ३२६
 होएउं ३२६
 होइउं, होएउं ३२९
 होइऊण, होएऊणं ३२९
 होइयं, होएयं ३२३
 होण ३२८

परिशिष्ट ९

शौरसेनीशब्दानुक्रमणिका

अक्षरिअं	३८७	गच्छिअवृण	३९२	भो चरहित	३८४
अन्दे-उरं	३८३	गिहो	३८६	भोत्ता	३९२
अपुरवागदं,		जज्जो	३८६	भोदि, होदि	३८६
अपुरवागदं	३८५	जुत्तंणिमं, जुत्तमिमं	३८६	भोवृण	३९२
अपुरवं नाथं	३८५	जेव्व	३८७	भो मगदि	३८४
अम्मह्वं... सुपक्षि-		णं मक्खोदया	३८६	भो राथं	३८४
गदिहो भवं	३८५	णं अत्थमिस्तेहिं		भो विभववम्मं	३८४
अत्थपत्तो, अज्जत्तो	३८४	पुवमंक्खेअ आपत्तं	३८६	मन्तिदो	३८३
अहह अक्षरिअं,		णं भवं मे मग्गदो		मद्वदो	३८३
अक्षरिअं	३८७	चरुदि	३८६	मारुदिणा	३८३
हाथो	३८७	ता अलं पदिणा		राजपरो, राजपहो	३८४
हप	३८४	माणेअ	३८५	विअ	३८७
इगिअणो	३८७	ता जाव पात्रिसामि	३८५	विओ	३८६
एदादि, एशमो	३८३	हाव, ताव	३८३	सक्खणो	३८७
एवंजेव्वं, एवमेव	३८५	नाथो, नाहो	३८४	सरिस्सणिमं,	
कज्जा	३८६	निक्खिद्वदो	३८३	सरिस्सिमिअं	३८५
कज्जपरवसो	३८४	पप्पाकुलो, पन्नाकुलो	३८४	मुप्पो, मुब्बो	३८४
कज्जभ	३९२	पटिय	३९१	सुहिव्वा	३८४
कपेदि	३८३	पठित्ता	३९२	हज्जे च्छुरिके	३८५
कपिदं	३८३	पठिवृण	३९२	हरिव	३९१
कंथं	३८३	परिचायध	३८४	होत्ता	३९२
कज्जं, कज्जं	३८४	पुब्बो, पुत्तो	३८६	होदज्जं	३९२
कारिय	३९२	सम्भज्जो	३८६	होवृण	३९२
किणेदं, किमेदं	३८५	वावब्बो	३८६	होघ	३८४
गहुअ	३९२	अविय	३९१	हीही भो संपत्रा	३८६
		भो कब्बुहया	३८४		

परिशिष्ट '१' ८

जैनशौरसेनीशब्दालुक्रमणिका

अत्रलातोदो	३९४	गन्धम्मि	३९७	पदिमद्विदो	३९४
अज्जना	३९५	गम्मिज्ज	३९८	पयत्थ	३९५
अणमारो	३९६	गयं	३९५	पयासवि	३९५
अण्णद्विपम्हि	३९७	गहिय	३९८	परिणमदि	३९९
अण्णुल्लं	३९६	गाहया	३९६	पेच्छित्ता	३९८
अदिदिभो	३९७	चरियम्हि	३९७	यहुभेया	३९६
अधिष्ठतेजो	३९४	चिरकालं	३९६	यहुवं	३९७
अलिअं	३९६	जघ	३९६	बालुवा	३९७
आलोभो	३९६	जलतरंगचपला	३९४	विदुव	३९७
आदाशया	३९७	जाणदि, जाणदि,		अणिदो	३९४
ओगप्यगेहि	३९६	णादि	३९६	अणिया	३९४
ओमकोट्टाप	३९६	जादो	३९४	आसवि	३९९
ओडाणियं	३९६	जायदि	३९६	भूदो	३९४
उण्णज्जि	३९९	जोगम्मि	३९७	मणयकापदि	३९९
उण्णदो	३९४	ठिकवा	३९८	मणजि	३९९
उन्नभोगो	३९६	ठिदि	३९४	मदिणानं	३९४
उन्नसामगे	३९६	तथा	३९६	महव्वयं	३९४
पणस्तपम्हि	३९६, ३९७	तिस्थयो	३९७	मुत्तममुत्तं	३९४
पण	३९६	तिग्गितिसाप	३९४	मुत्तिगदो	३९४
पणम्हि	३९७	तिहुवणत्तिण्यं	३९४	रहिया	३९९
पणविगळे	३९६	तेसि	३९६	रहियं	३९४
पण्तेण	३९६	दव्वसहानो	३९४	खेपप्यदोवया	३९६
पययियलसला	३९६	नण	३९६	यट्ठदि	३९९
फयं	३९६	नेरहया	३९६	चयणेदि	३९६
फम्मविराय	३९६	परिवज्जिदो	३९४	वाध	३९९
किचा	३९८	पञ्चयट्ठिण	३९६	विगदरागो	३९३
खयगे	३९६	पडियं	३९६	विजागदि	३९९
धीयदि	३९९	पत्तेयं	३९६	विज्जादि	३९९

वितीद	३९४	सम्भूदो	३९४	मुमुयो	३९५
चेयणा	३९७	सगलं	३९६	मुदाय	३९६
वियसिदियेमु	३९६	सज्वेसि	३९८	संवाया	३९४
बियागित्ता	३९८	ससरम्मि	३९७	संजुतो	३९३
विसदते	३९४	सामातो	३९६	संति	३९४
घेउरियओ	३९६	सामादियं	३९६	संतोसरर	३९५
घेदग, घेदगा	३९५	सागारं	३९६	सपछो	३९४
सग	३९५	सुयकेरलिमिसिगो	३९६	हयदि	३९४, ३९५
सद्विसिदो	३९७	सुयिदिता	३९४	हीनकर्म	३९५
सप्यगयं	३९४	सुदम्मि	३९७	होदि, जावि	३९५

परिशिष्ट ११

मागधीशब्दानुक्रमणिका

अजली	४०२	एचे पुलिघे	४०२	शुल	४०७
अजम्हणं	४०२	गुं मेरो	४००	बिहदि	४०८
अज्य निळ बिज्याहणे		कज्जकादणं	४०२	गिरधणे	४०८
आगवे	४०२	कडे	४०८	तिरिध	४०२
अज्युणे	४०१	कय्ये	४०८	दळे	४०८
अलळे	४०८	कळे	४००	हुम्यणे	४०१, ४०८
अज्जला	४०२	कस्ट	४०१	घयज्जण	४०१
अरसवड़ी	४०१	करिदाणि	४०८	अनुस्वंडं	४०१
अहणे हुगै	४०८	कालु	४०७	नळे	४०८
अहिमण्डकुमाळे	४०२	छोस्यगालं	४०१	निरकलं	४०१
आचरुदि	४०८	गध	४०२	पत्तयदि	४००
आवजवअळे	४०२	गडे	४०८	पज्जळे	४०२
उअछदि	४०२	गन्दिदे	४०१	पज्जाविघाळे	४०२
उवस्तिदे	४०१	गदिदयळे	४०२	पल्लिये	४०८
पशिलाआ	४०२, ४०८	गिम्हवाघळे	४०१	पदे	४०१

पुष्पाहं	४०२	यादि	४०२	शुद्धं	४००
पुलिशा भागच्छ	४०४	यायदे	४०८	शुस्वदालं	४०१
पुलिशे	४०२, ४०८	लस्कये	४०८	शुमुकदं	४०१
पेरकदि	४०३, ४०८	छाह्	४०७	शुस्तिदे	४०१
शुद्धस्वदी	४००	वज्यादि	४०८	शोमर्ण	४००
भस्तालिका	४०१	वच्चिदे	४०२	सहिदाणि	४०८
मध्यं	४०२	विभाळे	४००	हके, हगे,	
मडे	४०८	वियळे	४०८	अहके भनामि	४०३
मस्कली	४०१	विलाशे	४०८	हके	४०८
माणुशा भागच्छ	४०३	विस्तुं	४०१	हगे न ईदिताह	
माशे	४०८	शब्दज्जे	४०२	कम्माह काली	४०३
मेल्ल	४०७	शस्तवादे	४०१	हगे धीवळे	४०३
यणवदे	४०१	शालशे	४००	हहके आलळे मम	४०३
याणादि	४०१	शिभाळे, शिभालळे	४०८	हशिनु, हशिदि, हशिद	४०८
याणं	४०३	शिभाळे भागच्छदि	४०३	हंशे	४००

परिशिष्ट १३

अर्धमागधीशब्दानुक्रमणिका

अहसपण तुच्छ	४२९	अणुवीति	४१६	अतिल	४१६
अञ्जावियं	४२८	अणतकसुत्तो	४३०	अज्जता	४१३
अडम्भोवदयण	४१४	अणहा	४३०	अज्जयरो	४२९
अट्ठमं	४२९	अतित	४११	अपरलं	४२८
अट्ठहा	४३०	अतिवात	४१४	अप्पणस्सइयं	४२३
अट्ठारसम	४२९	अत्त, अप्प	४२०	अप्पणिच्चियं	४२३
अणादिय	४१३	अत्तत्ते	४१२	अप्पावट्ठयं,	
अणुकंपणया,		अत्तय	४१२	अप्पवट्ठुत्तं	४२८
अणुकंपणत्ता	४२९	अहयभो, अत्थत्तो	४३०	अब्भोगमिया	४२६
अणुगामिय	४११	अन्तिमं	४२४	अब्भंतंरिय,	
				अब्भंतंरगो	४२४

अभिसिस्को	४२६	आदत्तद्वयं	४२८	अंधत्तर्णं	४२८
अरिष्ठा	४२८	आदारायणियं	४२६	अर्धत्तर्णं	४२८
अवधारो	४११	आदिकं	४२८	कताती	४१३
अवरिस्तं	४२४	आदेवच्च	४१४	कति	४१५
अहन्त्याय	४१६	इचो	४३१	कत्तारे, कत्तारो	४१९
अहमिद्वो	४२५	इदार्णि	४३१	कत्तिवा	४२६
अहाजात्	४१६	इयरत्थ	४३०	कत्तो	४३१
अहात्तच्चं	४२९	इस्सरियं	४२८	कत्थ	४३१
अहिगरणिवा	४२६	इत्तरा, इयरदा	४३०	कम्मसो	४२९
अहिगरणं	४१०	इंदमेहे इ वा	४१६	कम्म	४१५
अहित	४१०	इंदमेहे ति वा	४१६	कम्मणं	४२४
अहुणा	४३१	इंदित	४१५	कम्मणो	४३०
आउज्जणं,		उत्तरस्म इमं	४२३	कयत्थो	४१३
आवज्जणं	४१७	उत्तरिस्सं	४२४	कयरो	४२९
आडस्सो	४२७	उत्पणकंदत्ता	४२८	कयाती	४११
आगद्ध	४१०	उयरं	४१४	करयल	४१३
आगति	४१२	उयगूड	४१४	करेति	४१३
आगमणं	४११	उउणीय	४१४	कलुणो	४२७
आगम	४११	उउयार	४१२	कस्सिस्सइयं	४२३
आगर	४१०	उस्सुगत्तं	४२८	काइयं	४११
आगामिस्स	४११	एक्कस्सि	४२८	कामज्जका	४१२
आगास	४१०	एक्कस्सि	४३०	कायसा	४१८
आणिल्लियं	४२४	एगत्तसो	४२९	काइ	४३१
आयरिय	४१२	एगयभो, एगयतो	४२८	किण्ण	४३०
आयारमत्तो	४२७	एगयरो	४२९	किमिणो	४२७
आरनाल	४१०	एगामी	४२९	रुमित	४११
आराहत्त	४१०	एगानिये, एकाणिये	४२९	केरविं	४३१
आलंकारिण,		एत्थं, इत्थं	४३०	कोटुवित	४११
अलंकारिण	४२६	एवामेय	४१९	कोलुणं	४२९
आयवद्धा	४१६	एहंतो	४१७	कोसस्म इमं	४२३
आसाढी	४२६	ओयस्सी	४२८	कुंभगतो	४२९
आसोई, अस्सोई	४२६	ओवम्म	४२८	कोसस्स इमं	४२३
आसोओ, मासो	४२६	अंतरित	४१२	किप्पामेय	४१९
				कुत्ता	४१७

ગવેસળતા	૪૨૬	જાવજીવ	૪૨૬	તેલોઝં	૪૨૮
ગહં	૪૧૬	જિતિદિય	૪૧૨	તેલિઓ	૪૨૬
ગાસતિ	૪૧૪	જુમ્યણં	૪૨૯	થેઝં	૪૨૬
ગાયહ	૪૧૪	જેટ્ટામૂલા	૪૨૬	દષ્ટિય	૪૨૬
ગારવ	૪૧૬	જોગસા	૪૧૮	દયાલુ	૪૨૮
ગોડરં, ગોપુરં	૪૧૭	જોગળં, જોરળં,		દદગં	૪૨૮
ગંઢિલ્લો	૪૨૭	જોવ્વળં	૪૨૯	દિયહં, દિયસં	૪૧૬
ઘરં, હરં, ગિહં	૪૧૬	ઠાતિ	૪૧૪	દિઘં, દિયસં	૪૧૬
ઘટસ્થ	૪૨૯	ળગિળો, ળિગિળો	૪૨૮	દુસ્સળતા,	
ઘંડપ્પય	૪૧૩	ળદતિ	૪૧૩	દુવલ્લગયા	૪૨૯
ઘનપુસં	૪૨૬	ળાહવં	૪૨૭	દુહઓ, દુહતો	૪૩૦
ઘિરાલીત	૪૧૩	ળાતમ	૪૧૪	દ્રોષં	૪૨૯
ઘેતો	૪૨૬	ળારાત	૪૧૧	દોસિળો	૪૨૭
ઘોરસ્સ વાગારો	૪૨૩	ળિયડિલ્લયા	૪૨૪	ધણુહં, ધણુલં,	
ઘઠં	૪૨૯	ળિતેવમ	૪૧૦	ધણુ	૪૧૭
ઝમો, ઝતો	૪૩૧	ળેયાહઓ,		ધમ્મ	૪૧૮
ઝફળો	૪૨૭	ળેયાઢઓ	૪૨૬	ધમ્મતો, ધમ્મઓ	૪૩૦
ઝહુલો, ઝહિયાલો,		ળેસજિ	૪૧૦	ધમ્મિટ્ટો	૪૨૬
ઝહિલો	૪૨૭	તપ્	૪૩૧	ધેઝં	૪૨૬
ઝળરદ	૪૧૩	તણુલો	૪૨૭	ધેવત	૪૧૨
ઝતા	૪૧૩	તતે	૪૧૩	ધર્મ	૪૧૬
ઝતિ	૪૧૩	તધા	૪૩૦	નતી	૪૧૩
ઝતરગ્તો	૪૨૭	તવય	૪૧૪	નમંસતિ	૪૧૨
ઝમંસવી	૪૨૮	તહા	૪૩૦	નરસાતો	૪૧૧
ઝદા	૪૩૦	ઘહં	૪૩૦	નાવપુષ્પ	૪૧૬
ઝદાળામપ્	૪૧૩	ઘમેર	૪૧૬	નિરવ	૪૧૪
ઝદાતહં	૪૨૮	ઘાઝહં, ઘાલપુહં	૪૧૭	નિમાત	૪૧૩
ઝહં	૪૩૦	તિનગુષ્ઠો	૪૩૦	નિસોહિયા,	
ઝાપ્	૪૨૧	તિગૂલિઓ	૪૨૭	નિમીદિયા	૪૨૬
ઝાથિ	૪૧૨	ઘીપક્ષાં	૪૨૮	મેરલિવ	૪૧૧, ૪૧૬
ઝાતિમગ્તો	૪૨૭	ઘુમ્મિટ્ટો	૪૨૭	વમલ્લ	૪૧૦
ઝામેર	૪૧૬	ઘેવસી	૪૨૮	વમામતો	૪૩૧
ઝાપમેધં, ઝાપમિધં	૪૨૪	ઘેવહિં	૪૨૬	વમામતો	૪૨૬

वेदिद्विती	४१३	सव्यन्तु	४१५	सावित्री	४२६
वेयावच्च	४२९	स चदा	४३०	सादृक्त्वं	४२९
वेयावडियं	४२९	सहस्रम्बुच्चो	४३०	सिता	४१४
वेसालीपु समूहो	४२३	सातणित	४१०	सीमंतत	४११
वंदति	४१२	साति	४१४	सीलचा, सीलया	४२५
सहयं	६२६	सामागियं	४२८	सोममल्ल	४२९
सगङ्गानं समूहो	४२३	सामावित्त	४१०, ४१४	सोमगार	४१४
सचरन्तुत्तेण	४११	सापर	४११	सोदरगं	४२८
सतत	४१२	सावग	४१०	संवादिणो	४२८
सत्तमं	४२८			संलज्जति	४१३, ४१७

परिशिष्ट १३

जैनमहाराष्ट्रीशब्दानुक्रमणिका

अणुग्रथिप	४४२	मेदुंअं	४४१	मणसा	४४३
अग्रहा	४४२	पविऊण	४४३	मयणो	४४२
अलहनिहा	४४२	वेधणा	४४२	महारायस्त	४४२
आगरिसो	४४१	णिगरं	४४१	सोत्तण	४४३
आगारो	४४१	तिरुधगरो	४४१	रययं	४४२
आलोचिऊण	४४३	दुगुस्त	४४१	हावणं	४४२
अयप्रभो सि	४४२	माणुमयमेपुसि	४४२	लोमो	४४१
अयप्रभो	४४२	नियट्टीप	४४२	ययसा	४४३
अयसगो	४४१	नियमोरयसिदि	४४२	वायडं	४४३
फडं	४४३	नुवघा पसा	४४२	बिराहज्जमो	४४२
फप्रयाप	४४२	नुरजो	४४२	रिसायं	४४२
फप्रगहो	४४२	नूनमेसा	४४२	यंदित्त	४४३
फहमप्रया	४४२	पविरघा	४४२	समुत्पन्ना	४४२
फहाणयं	४४१	पवारई	४४२	सारग	४४१
फायमणी	४४२	भगउया	४४१	सीलचा	४४३
फायसा	४४३	भणियं	४४२	संनुटं	४४३
क्रिया	४४३	भतिनिम्भरा	४४२		
गया	४४२				

परिशिष्ट १४

पैशाचीशब्दानुक्रमणिका

अज्ञातिसो	४४६	दातून	४५०	राया	४५०
अभिमज्जु	४४५	दाह	४४७	रेफ	४४७
इम	४४८	नत्पून	४५०	छोक	४४७
इंगार	४४७	नवधून	४५०	घटिस	४५०
कच	४४६	नेन पत्तसिनानेन	४४७	विज्जातो	४५१
कज्जा	४५१	पज्जा	४४५	विज्जान	४४५
कमळ	४४६	पटितून	४५०	विसमो	४४६
करणीय	४४७	पतिभास	४४७	रिसानो	४४६
कसट	४४६, ४५०	पव्वरी	४४५	सत्तन	४४५
कुटुंबक	४४६	पिव	४५०	सनान	४४६
केसवो	४५०	पुज्जार्ह	४४५	सनेहो	४४६
मकन	४४४	पूजितो च नापु	४४७	सपथ	४४७
मन्तून	४५०	भगवती	४४५	सव्वज्जो	४४५
मदह	४४७	अट	४४७	सरफस	४५०
मुनेन	४४५	अवातिसो	४४८	सरफो	४४५
गोविन्दो	४५०	भारिआ	४५०	सरिल	४४६
घेत्तून	४५१	भारिया	४४६	ससी	४४६
णिच्चो	४४५	मठ	४४७	साया	४४७
तत्पून	४५०	मत्तनपरवसो	४४५	सिनात	४४६
सव्वधून	४५०	माथयो	४५०	सुज्जो	४४७
तलुनी	४५०	मेखो	४४४	सोभति	४४६
तातिसो	४४६	यातिसो	४४६	सोभन	४४६
तामोवरो	४४५	युम्हातिसो	४४६	सगामो	४५०
दसवत्तनो	४४५	रज्जो धन	४४५	दित्तभक	४५१
दसवत्तनो	४५०	राचा	४४५	दित्तपक	४४६
				होतु	४४५

परिशिष्ट १५

चूलिकापैशाचीशब्दानुक्रमणिका

पुढातस	४६३	वटाक	४६२	फजो	४६३
फाव	४६२	वनुयलं	४६३	फोड्प्य	४६३
गाती	४६३	तामोवलो	४६२	फोवि	४६३
गोळी	४६२	थाला	४६३	मळनो	४६२
घनो	४६३	धम्मो	४६३	मठनो	४६२
चछन	४६२	नको	४६२	मधुळो	४६३
चछ-रा	४६३	नखतप्पनेमु'	४६३	मेळो	४६२
चीमूतो	४६२	नमथ	४६३	ळफमो	४६३
छलो	४६२	नियोजित	४६३	छाचा	४६३
छनो	४६३	प्रमथ	४६३	छामो	४६३
जीमूतो	४६३	पातुक्खेवेन	४६३	छब	४६२
झछरी	४६३	पाटपो	४६३	छप्ता	४६३
झमळुको	४६२	पालो	४६३	वखो	४६२
ठका	४६२	फकवती	४६३	वनुया	४६३
झमळको	४६३	फववि	४६३	वख	४६३
		फक्ते	४६३		

परिशिष्ट १६

अपभ्रंशशब्दानुक्रमणिका

अग्नि	४६१	एम्ब, एम्बई	४७१	क्रिय	४८०
अग्निपर्व	४६३	एम्बहि	४७६	क्रिर	४७६
अग्निगर्ज	४६३	परित	४७६	क्रिछिप्रो	४७६
अर्धत	४६०	पुड	४७१	क्रिगिण	४७६
अजु	४६०, ४६४	पुह कुमारी	४६६	क्रिद, क्रिप	४७६
अन्न	४६९	पुहोनर	४६९	क्रिह	४६६
अलसी	४६९	ओह	४६४	कीक	४६९
अग्ने-क	४६९	अंगुलिड	४६१	केरु	४७६
अपरोक्ष	४७६	अंमु	४६०	कुडुली	४७७
अवस	४७२	क	४७२, ४७४	कम्पर	४६८
अहर	४६७	कडकर	४६९	कडण	४६०
अहनि, एहुषह नगु	४७२	कडु	४६९	कार	४६०
अहवह	४७२	कडुड	४७८	गिग्रह	४७८
अहं	४७१	कडिनु	४६७	गुडिप	४६८
आप	४७२	कमलड	४६४	रोडुअ	४६६
आपहं	४६६	कडहार	४६६	गेउड	४६८
आवेण	४६६	कडि	४७८	गडरी	४६६
आपहो	४६६	कलिहि	४६३	मयुम्भई दारनु	४६३
आहर, जाहर	४७६	कडड	४६८	गथ	४८०
इकलि	४७६	कडु	४२८	गिम्भो	४६९
इण्डु	४७८	कडई	४६९	गिगिगिगुं	४६२
इस्थी	४६९	कडकरड	४६६	गिगिह	४६३
उडुवइस	४७६	का	४७३	गुर्गि	४६४
उछ	४६६	काई न पूरे देनखड	४६६	गुह	४६६
पडति घोडा	४६३	काणु	४६६	गोरी	४६६
पडपेण्ड	४६३	कामु	४६६	गिगिगि	४६८
पडहि	४६६	कि गम्भहि सलनेह	४६६	कडुह	४६१
पडि	४७६	किप्रो	४६६	कडन	४६१

बुडुलुड	४७७	तरुहे	४६३	धण्डे	४६४
छ	४६९	तरुहं	४६३	धुअ, धुआ	४६७
छग	४६९	तलि धछुइ	४६२	धुव	४७६
छसुहु	४६१	तळाउ	४६९	नउ, नाइ, नावइ, नं	४७६
छुडु	४७६	तसु	४६२	नहे	४६२
ज	४७३	तहि	४६६	नार्हि	४७६
जडकेवई पावीसु पिउ४६८		तंहेकरउ	४६६	नियल	४६९
जमुना	४६९	ताउं, ताम, तामहि	४७६	निसिआ खरग	४६६
जहां, जॉन्तउ,		तासु	४६६	निहिच	४६९
जागरो	४६६	ताहं पराई कवण		नेउर	४६६
जसु	४६९	घुण	४६६	नोन्निख	४६८
जहि	४६६	तिणु	४६६	पइडि	४६६
जइ केरउ	४६६	तिवै	४६८	पउर	४६६
जा	४७३	तुऊउउं	४६७, ४६४	पऊवा लिउ	४७६
जामु	४६६	तुम	४७१	पऊछइ	४७६
जिणु	४६१	तेसु, तसु, तेहि	४७६	पट्टि	४६६
जिबै	४६८	तेम, तेम्य, तिम, तिम्य	४७६	पडाय	४६८
जुच	४६१	तो	४७६	पडिउ	४६८
जेसु, जसु	४७६	तोसिअ-संकस	४६१	पडिच	४६६
जेम, जिम, जिम्य,		थोर	४७६	पड गृणेरपिणु हुत	४७९
जैम्य	४७६	दइअ	४६६	पपट्ट	४६९
जो	४६१, ४७३	दवसुहु	४६१	पर	४७६
जोइसिउ	४६९	दिडि	४६७	पवसन्ते	४६२
जोव्यण	४६६	दिवे	४७६	पहुलु	४६७
जिज्जर	४६९	दीव	४६८, ४६०	पाकिं, पादिपुळं	४७६
खइइ	४६८	दीहर	४६०	पाउ	४६८
तुकर	४६८	दुछदहा	४६२	पाहाव	४६९
दोछद	४६८	दुहु	४६३	विअमाणुस-	
दोछा सामछा	४६६	देइ	४६६	बिछोहगर	४६७
तउ	४६७	देव	४६६	पिडि	४६६
तणई	४६३	देवेण	४६२	पिउ	४६०
तणु	४६६	दंणण	४६७	पोलिय	४६९
तणुहो, तरणिहो	४६३	धण	४६६	पंम	४६९

पुष्टि	४९६	यादि	४९७	युजइ	४७९
पुष्ट	४७६	रण	४६१	थेलि	४९६
पुरिस	४९६	रघ	४६१	स	४७४
पेम्म	४९६	रहस	४९६, ४६१	सठगिह	४६१
पोरपय	४६०	रिसहो	४९५	सव्यु	४९७
पोरफल	४९६	रीछ	४९६	समलउ	४९७
फारेसु	४९८	रुअहि	४७८	समारु	४७६
फंम	४९७	रुअहिदि	४६२	समासण	४६०
फंसइ	४९८	रुइहि	४७८	सर	४९६
मलुसुडा	४७७	रुइहुं	४७८	सलइह	४६०
मालेहे	४६४	लिइ, लीह	४९६	सगधि	४६१
मीस	४९७	लेह	४९६	सग	४७१
मुबइ सुदासिउ किपि	४७९	वचउहु गिणइह	४६२	सज्जचेहे	४७६
वे दोखडा	४७७	वचउहे गिणइह	४६२	सज्जु वि छोउ	४६६
बेल	४९६	वचंसिअहु	४६४	सज्जमाउ	४६४
बेल्लि	४९९	वसधि	४९८	ससि छोमिअजमु	४७९
मरगउं	४६४	वहिल	४७६	सहहि	४७८
मव्वे	४९८	वामोह	४९९	संपजइ	४७८
मविसचरुडा	४६१	वालइवरग	४६३	सा	४७३
भारथ	४९८	वावारउ	४९९	साहा	४९७
मउउ	४७६	वासेण वि भारहर-		सीय	४९६
सगोहि तिहि	४६४	खम्भि बढ	४६१	सीह	४९७
मज्जहे	४६४	मासुमहारिसि पउं		मुअणस्सु	४६२
मउ	४९७	भणइ	४६१	मुधिचिन्तिअइमाणु	४९७
मगाउं	४७६	विच्छ	४९९	मुमरि	४७८
महिहि	४६४	विज्जुलिया	४९९	मुवणमरेह	४९६
मं	४७६	विहीए	४९६	सो	४६१, ४७२
मिच्छत्त	४६०	विणु	४७६	सोअस	४९९
मुणइ	४९६	वियउउ	४६८	हर	४६१
मुआहल	४९७	विलासिणीओ	४६४	हरइ	४९६
मो०रग	४९६	विहण	४९६	हिअइ सुउअइ	४७९
मो०ल	४९६	वीढ	४९८	हिअउउं	४७७
				होसइ	४७८

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

डा. नेमिचन्द्र शास्त्री

तारा पब्लिकेशन्स
वाराणसी